॥ श्रीः ॥

इतिहासगुरुखालसा।

(अर्थात् सिक्खोंका इतिहास)

जिसमें

सिक्ख मतके दशों गुरुओंका जीवन चरित्र तथा सिक्खोंका शौर्य, पराक्रम, देशहित और प्राणपनसे देशके स्वातन्त्र्यकी रक्षा पूर्णरीतिसे वर्णित है।

जिसको

काशीनिवासीपरमोदासीननिर्मलसाधुश्रीगोविन्दसिंहजी द्वारा निर्मित कराय,

उसीको

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासने

अपने "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापेखानेमें

छापकर प्रसिद्ध किया।

संवत् १९८२, शाक १८४७.

कल्याण--मुंबई.

भूमिका ।

जिस सिक्खजातिकी प्रतिमा भारतवर्षके इतिहासमें सूर्यके समान चमक रही है, जिस खालसाजातिके शौर्य, पराक्रम, देशहित और प्राणपनसे देशके स्वातंत्र्यकी रक्षाको देखकर वीर अंगरेज शिर झुकाते हैं, जिस सिक्खजातिने अंग्रेजी सेनामें उच्चासन पाकर अपने धवल-यशसे दिशा विदिशाओंको धवलकर रक्खा है, जो सिक्खजाति दुर्दान्त यवनोंके चंगुलसे हिन्दूधर्मको छुडानेके लिये अपना प्यारा रक्त बहा चुकी है, उसी सिक्खजातिका उसी सिक्खजातिके पूज्य गुरुओंका यह इतिहास है। इतिहासमें जो बातें होती हैं सबही इसमें हैं। इसमें धर्मोपदेश है, शूरता है, पराक्रम है, स्वदेश प्रीति है, आत्म-विसर्जन है और परोपकार है। पुस्तकमें क्या २ विषय हैं भूमिकामें उल्लेख करना एक बृहत् सेनाको छोटे स्थलमें भरदेना है।

यह "इतिहास गुरुखालसा" परमोदासीन निर्मलसाधुश्रीगोविन्द-सिंहजी महाशयका लिखा हुआ है। वह संस्कृतके असाधारण विद्वान् थे, हिन्दीके बडे प्रेमी थे, बडे शान्त थे, बुद्धिमान् थे और सामायिक बातोंके अच्छे ज्ञाता थे। खेद है कि, पुस्तक छपते २ ही उनका देहान्त होगया। वह खालसा संप्रदायके बडे प्रेमी थे। उन्हें खालसा इतिहासका बडा अनुभव था और उन्होंने खूबही इस विषयका अनुशीलन किया था। बस यह पुस्तक उसीका निचोड है, यह पोथी केवल सिक्खधर्मके अनुयायियोंकेही कामकी नहीं है, बरन् भारतवर्षका एक सच्चा इतिहास है। भाषा इसकी इतनी रोचक है कि, इसे इतिहासके साथही उपन्यासकाभी यदि नाम दिया जाय तो अनुचित नहीं है।

प्रकाशक-गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयाध्यक्ष-कल्याण.

श्रीः ।

इतिहासगुरुखालसाविषयानुक्रमः ।

विषय. पृष्ठ.

विषय. पृष्ठ.

अध्याय १०.

अध्याय ११.

अध्याय १२.

अध्याय १३.

अध्याय १४.

अध्याय १५.

अध्याय १६.

विषय. पृष्ठ.

विषय. पृष्ठ.

अध्याय २८

अध्याय २९

अध्याय ३०.

अध्याय ३१.

अध्याय ३२.

अध्याय ३३.

विषय. पृष्ठ.

अध्याय ३९.

अध्याय ४०.

अध्याय ४१.

अध्याय ४२.

अध्याय ४३

अध्याय ४४.

विषय. पृष्ठ.

अध्याय ४५.

अध्याय ४६.

अध्याय ४७.

अध्याय ४८.

अध्याय ४९.

अध्याय ५०.

विषय. पृष्ठ.

विषय. पृष्ठ.

विषय. पृष्ठ.

अध्याय ६३.

अध्याय ६४.

अध्याय ६५.

अध्याय ६६.

अध्याय ६७.

अध्याय ६८.

अध्याय ६९.

अध्याय ७०.

विषय. पृष्ठ.

अध्याय. ७१.

अध्याय ७२.

इतिहासगुरुखालसाविषयानुक्रमः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास, "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस्, कल्याण-मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस्. खेतवाडी-मुंबई.

ॐ ।

सद्गुरुप्रसाद ।

अथ

इतिहास गुरुखालसप्रारम्भ ।

प्रथमोऽध्याय १.

कालिमलिनमतीनां शोधयन्मानसानि
स्वयमुदयमुपेतः शास्त्रयोनिः स्वयम्भूः ॥
अकिरदविशयां यो ज्ञान वैराग्यधारां
स जयति करुणाब्धिर्नानको योगिवर्यः ॥ १ ॥

इतिहासमात्रका मूल सृष्टिक्रम है अर्थात् जो विचारशील विद्वान् पुरुष किसीभी इतिहासके लिखनेका विचार करता है तो सबसे प्रथम उसके चित्तमें यही आता है कि, प्रारम्भमें सृष्टिक्रम लिखकर आगे सविस्तर लिखना उचित है जो लोग सृष्टिक्रमको न लिखकर अपने इतिहासको पूरा करडालते हैं उनका इतिहास विद्वानोंकी दृष्टिमें मूलहीसे अधूरासा प्रतीत हुआकरता है इसलिये हम सबसे प्रथम संक्षेपसे सृष्टिक्रम अर्थात् संसारकी उत्पत्तिका वर्णन करते हैं ।

प्रपञ्चोत्पत्ति विचार ।

श्रुति स्मृति इतिहास पुराण दर्शनशास्त्र तथा मतमतान्तरोंकी धर्मपुस्तकोंके देखनेसे स्पष्ट यही प्रतीत होता है कि, इस प्रपञ्च रचनाके विषयमें भी इन सबकी सम्मति नहीं है किन्तु जैसा जिसकी बुद्धिमें आया है उसने वैसाही लिखडाला है। "तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः" इत्यादि तैत्तिरीय श्रुतिमें आत्मासे आकाश आकाशसे वायु तथा वायुसे अग्नि इत्यादि प्रपञ्च उत्पत्ति क्रम लिखा है। एवं 'तत्तेजोऽसृजत्' इत्यादि छान्दोग्य श्रुतिसे तेज आदि क्रमसे प्रपञ्च रचनाका निरूपण है ऐसेही मूलमन्त्रोंमें तथा तत्तच्छाखाके ब्राह्मणभागोंमें अनेकस्थलोंमें अनेक

प्रकारसे प्रपञ्चरचनाका निरूपण है एवं मनुस्मृतिके आद्यहीमें परमेश्वरसे सबसे प्रथम जलकी उत्पत्ति लिखी है ।

याज्ञवल्क्य स्मृतिमें कोशकार जन्तुके उदाहरणसे परमेश्वरसे प्रपञ्चरचनाका निरूपण है ऐसेही और धर्मशास्त्रोंमें भी कहीं तो सृष्टिक्रमका लेख ही नहीं और यदि कहीं है तो विलक्षण ही है एवं रामायण महाभारत आदि इतिहासग्रन्थोंमें तथा भागवतादि पुराणग्रन्थोंमें भी कहीं २ तो सृष्टिक्रम दर्शनोंके अनुसार लिखा है और कहीं २ ब्रह्मा, विष्णु, शिव, शक्ति, गणेशादि देवोंहीको यावत् प्रपञ्चरचनाका मूलकारण बतलाया है एवं दर्शनोंकी ओर दृष्टि करनेसे भी महर्षिलोगोंकी सृष्टिक्रममें सम्मति प्रतीत नहीं होती कापिल तथा पतञ्जलिके मतसे चतनपुरुषके आश्रित हुई प्रकृति ही प्रपञ्चका मूलकारण है और कणाद तथा गौतमके मतसे पृथिवी आदि चारके परमाणु ही प्रपञ्चके मूलकारण हैं और निर्माता ईश्वर है एवं व्यासदेवके मतसे परमेश्वर आप ही जगत्का मूल है तथा व्यासके शिष्य जैमिनिके मतसे प्रपञ्च उत्पन्न विनाश होता ही नहीं ऐसे ही और भी मतमतान्तरके विचार करनेवाले लोगोंने परस्पर भिन्न २ मनमाना लिखा है यथा जैनलोगोंने इस संसारको द्रव्यार्थिक नयके मतसे अनादि अनन्त सदा शाश्वत माना है और पर्यार्थिक नयके मतसे समय २ में उत्पत्ति विनाशका होना भी माना है ।

भाव इस कथनका यही है कि, अखण्ड ब्रह्माण्ड तो सर्वदा नित्य शाश्वत है परन्तु घटपटादि पदार्थोंकी उत्पत्ति विनाश भी होता रहता है । एवं बौद्ध तथा चार्वाकके सिद्धान्तसे भी इस संसारका उत्पत्ति, विनाश नहीं होता भाव उनके कथनका यह है कि, इन यावत् पदार्थोंका निर्माता ईश्वर कोई नहीं है किन्तु ये पृथिवी जलादि सबही पदार्थ प्रवाहरूपसे नित्य हैं तथा क्षण २ में दीपशिखावत् परिणत होतेरहते हैं ऐसे ही यवन तथा ख्रीस्टीलोग अपनी २ धर्म्मपुस्तकोंके भरोसेपर यह कहते हैं कि, सामग्रीके विना ही इस यावत् प्रपञ्चको ईश्वरने सात रोजमें बना डाला इत्यादि ऐसी २ और भी

सहस्रोंतरहकी कल्पनायें इस प्रपञ्चरचनाके विषयमें प्रचलित हैं तथा इनके पूर्वजोंने भी करी होगी तथा आगे होनेवाले भी करते ही रहेंगे परन्तु पूरा मर्म इस रचनाका किसीको न मिला था न मिला है और न मिलेहीगा. विशेष केवल यही है कि, जिस २ पुरुषके विचारमें न्यून या अधिक उचित या अनुचित जैसा जो कुछ आया उसी २ पुरुषने अपना एक भिन्न सिद्धान्त स्थिर किया और कई एक भोले-भाले मनुष्योंको अपने अनुगामी बनाकर आप ऋषि, महर्षि अवतार पीर, पैगम्बर तथा वली इत्यादि पवित्र नामोंसे प्रख्यात होनेलगा इसीवार्ताको श्रीगुरुजीने भी कहा है कि" जिन जिन तनिक सिद्धिको पायो। तिन तिन अपनो राह चलायो" ॥ अर्थात् जिस २ पुरुषको थोडीसी विचारशक्ति भी प्राप्त हुई है उसी २ पुरुषने अपना २ भिन्न ही मार्ग चलाया है। परन्तु पूरी रीतिसे मर्म किसीको भी नहीं मिला। यद्यपि संसारमात्रमें केवल दोही मार्ग हैं अर्थात् एक साधुपुरुषोंका मार्ग है और दूसरा असाधुपुरुषोंका मार्ग है। जैसे क्षमाशील होना, दयालु होना परोपकारी होना, सत्यमितभाषी होना, न्यायशील होना इत्यादि साधु पुरुषोंका मार्ग है और इन उक्त गुणोंसे विपरीत स्वभाववाले होना असाधु पुरुषोंका मार्ग है ॥

तथापि पूर्वोक्त साधारण धर्मोंका प्रचार विचारशील विद्वान् पुरुषोंने परस्पर सुखलाभ करनेके लिये सम्यक् विचारपूर्वक किया है। असाधुलोग उन सज्जन पुरुषोंके नियमोंको न पालन करके अनेक प्रकारके दुःख भी इस संसारमें उठाते हैं. परन्तु जिन सृष्टिक्रमादि विषयोंको मनुष्यकी बुद्धि यथावत् नहीं विचारसकती उन सृष्टिक्रमादि अचिन्तनीय विषयोंमें प्रत्येक विचारशील पुरुषके विचारका पृथक् २ होना या परस्पर विपरीत होना कोई अनुचित नहीं है जो जिस विषयको पूर्णरूपसे नहीं जानता है उसमें उसकी भूल होना कोई आश्चर्यकी वार्ता नहीं है. सृष्टिक्रमादि गहन विषयोंका मर्म अन्तर्यामी परमात्माने सिवाय अपने और दूसरे किसीको बतलायाही नहीं तो कि-

सीकी क्या सामर्थ्य है जो कि,पूर्णरूपसे निःसन्देह लिखे या उपदेश करे अब हम भी इतिहास लिखनेको बैठे हैं यहां पर हमसे भी कोई सृष्टि-क्रमका प्रश्नकरें तो उसका उत्तर हम अपने श्रीगुरु नानकजीके वचनसे यही करते हैं कि,'जोकरता सृष्टिकोसा जे आपे जाने सोई' अर्थात् जिस परमात्माने इस प्रपंचकी रचना करी है इसका पूरा मर्म वही जानता है इसका जानना जीवबुद्धिसे पृथक् है उक्त सिद्धान्तहीकी पुष्टिमें श्रीगुरु गोविन्दसिंह महाराज भी लिखते हैं कि " आप अपनी बुद्धि है जेती ॥ वर्णित भिन्न भिन्न तव तेती ॥ तुम्हरा लखा न जाय पसारा ॥ केहि विध सजा प्रथम संसारा ॥१॥" अर्थात् हे परमेश्वर ! ये जीव अपनी २ बुद्धिके अनुसार आपका वर्णन करते हैं परन्तु आपने प्रपंचरचना कैसे करी ? इस मर्मको पूरी तौरपर कोई भी नहीं जानता है इत्यादि ॥

अब हम अचिन्तनीय प्रकृत विचारको त्यागकर यदि वर्तमान प्रपञ्चकी ओर दृष्टि देते हैं तो यह भी अचिन्तनीय तथा विचित्र ही प्रतीत होता है सूर्य चन्द्रादि भूगोलोंकी घुमावट तथा समयानुसार वनस्पतिका प्रादुर्भाव तिरोभाव एवं चार खानी प्राणीका जन्म, मृत्यु इत्यादि अनेक घटनायें कौन विचारशील पुरुषके हृदयको विस्मित नहीं करती उनमें भी प्राणिमात्रकी सोपस्करण दुःख निर्मूलपूर्वक सुखसम्पादनकी इच्छा प्रतीत होती है अर्थात् परमात्माकी सृष्टिमें ऐसा कोई भी जीव नहीं है जो कि, दुःखकी निवृत्ति तथा सुखकी प्राप्तिकी वाञ्छा न करे. इस विचित्र प्राणि पुर प्रवाहको हमारे महर्षि लोगोंने चौरासी लक्ष जीवयोनिके भेदसे विभक्त बतलाया है परन्तु विचित्र उस महाशक्तिमान्की रचना है न तो एककी दूसरेसे कल ही मिलती है न स्वभाव मिलता है किन्तु इतना मात्र समान है कि,सुखकी इच्छा प्राणिमात्रके चित्तमें एकतान लगी रहती है उस सुखका सामग्रीसे सम्बन्ध है अर्थात् सुखकी सामग्री हो तो सुख मिले और सामग्रीका बुद्धिसे सम्बन्ध है अर्थात् बुद्धि हो तो सामग्री जुटे जिस विमलबु-

द्धिसे सुखकी सामग्री सम्पादन होसकती है वह बुद्धि कृपालु परमात्माने चौरासी लक्ष जीवयोनिमेसे पुरुषहीको विशेषकर प्रधान करी है। यद्यपि 'कईबेर पसरचो पासारा। सदा सदा इक एकंकारा' अर्थात् इस प्रपञ्चका उत्पत्ति विनाश अनेकवार हुआ और सर्वदा एकरस रहनेवाला तो एक परमेश्वरही है इत्यादि श्रीगुरुवचनोंसे इस प्रपञ्चका प्रादुर्भाव तथा तिरोभाव अनेकवार हुआ प्रतीत होता है.इसलिये किस२समयमें किस २ योनिके जीवोंने कैसी २ उन्नति वा अवनति करी इस वार्ता का पूरा पता लगना भी कठिन है। तथापि वर्तमान समयको देखकर यही निश्चय होता है कि, दयालु परमात्मने जैसे मनुष्यको अपनी पूर्ण उन्नतिकेलिये पूर्ण बुद्धि दी है ऐसी बुद्धि और योनिके जीवोंमें कहीं भी दिखलाई नहीं देती यदि किसी एक कालमें इस वर्तमानसृष्टिके प्रथम आरम्भकी कल्पना भी करली जाय और उस कालमें जल, स्थल जंगलादिमें होनेवाले सबही जीवोंकी समान दशा ही मानली जाय तो भी वर्त्तमान कालको देखकर यही प्रतीत होता है कि सृष्टिआरंभसे लेकर जैसी उन्नति मनुष्यने करी है और योनिके जीवोंने उससे शतांश न्यूनभी नहीं करी, यद्यपि पशु पक्षि आदि जंगलके जीव भी अपने निवासस्थान नीडादि उत्तमरीतिसे बना सकते हैं तथापि अपने निवासस्थान बनानेकी तथा खानपानादिकेलिये विचित्र सामग्री पैदा करनेकी जैसी बुद्धि परमात्माने मनुष्यको दी है वैसी और किसी भी प्राणीमें दिखाई नहीं देती. भाव यह कि, स्वभावहीसे प्राणीमात्रमें दो शक्ति देखनेमें आती हैं। एक प्राकृत दूसरी वैकृत इनमें प्राकृतशक्ति फिर दो प्रकारकी है एक साधारण दूसरी असाधारण. उनमें साधारण प्राकृतशक्तिका स्वरूप जैसे खाना, पीना, सोना बैठना, ईर्षा, भीति इत्यादि सबही प्राकृत गुण यावत् जीवमात्रमें समान हैं असाधारण प्राकृत शक्ति जैसे गगनमार्गमें पक्षीही उडसकता है मनुष्य या पशु इत्यादि नहीं जिनका जीवप्रकृतीसे अनायास ही सम्बन्ध बनारहे उन गुणोंका नाम प्राकृत है और जिनका यत्नसे सम्पादन कियाजाय उन

गुणोंका नाम वैकृत है जैसे लिखना बाँचना, खान, पान, पहरान। आदिके उपयोगी पदार्थोंका विशेषरूपसे सम्पादन करना बनाना इत्यादि सबही वैकृत गुण हैं. इनका विशेषरूपसे स्वाराज्य मनुष्यशरीरहीके साथ प्रतीत होता है. इसलिये जानाजाता है कि, मनुष्यपर परमात्माका पूर्ण अनुग्रह है. वर्तमानकालको देखकर अनुमान किया जासकता है कि, कोई एक समय ऐसा अवश्य होना चाहिये कि, जिस समयमें यह मनुष्यवर्ग पशुपक्षियोंकी तरह कुछभी न जानताहो और फिर धीरे २ विचार करते २ उन्नति करी हो क्योंकि, अब भी अनेक जंगलदेश ऐसे देखने तथा सुननेमें आते हैं कि, जिनमें सहस्रों प्राणी मनुष्यके आकारवाले निवास करते हैं परन्तु उनमें शिक्षाके प्रचारके न होनेसे पशुओंसे उनका किञ्चित् भी अन्तर नहीं है जैसे जंगलके और जीव परस्पर सबल निर्बलको मारडालते हैं तथा निर्बल सबलसे सदा भयभीत रहता है वैसेही जंगली मनुष्यभी अपनेसे निर्बल पशु पक्षीवर्गको मारकर अपना पेट भरते हैं तथा सिंहादि सबल जीवोंसे भयभीतभी रहते हैं परन्तु अन्न वस्त्र पैदा करनेकी या निर्भय स्थान निर्माणकरनेकी उनमें बुद्धि नहीं है उनहींको यदि शिक्षा दी जाती है तो वे लोग धीरे धीरे सबही कुछ सीखजाते हैं । मनुष्यमें तथा पशुमें यह भारी अन्तर है कि, मनुष्यमें परमात्माने शिक्षा लाभ करनेकी योग्यता दी है तथा पशु पक्षी आदि इतर योनियोंके जीव शिक्षा देनेसेभी नहीं सीखसकते । इसीलिये श्रीगुरुजीने भी इस मनुष्यदेहीकी प्रशंसा करते हुए कहा है कि,"और योनि तेरी पनिहारी । सब ऊपर तेरी सिकदारी"अर्थात् हे मनुष्य ! तेरेको उस परमेश्वरका अवश्य स्मरण रखना चाहिये जिसने और सबही योनियोंके जीव तेरे सेवक बनाये तथा तेरी उन सबहीपर हाकिमी स्थापनकी इत्यादि इस पूर्वोक्तविचारसे यही सिद्ध हुआ कि, अन्तर्यामी परमात्माने अपने पूर्ण अनुग्रहसे इस मनुष्यदेहीको बनाया है ॥

इति प्रथमोऽध्यायः ।

द्वितीयोऽध्यायः । २

मनुष्यकी उन्नतिका विचार।

परमात्माने मनुष्यके स्वरूपहीमें विशेष योग्यता प्रदान करी है यह सत्य है परंतु यह मनुष्य पशुतुलनासे लेकर अपनी कहांतक उन्नति कर सकता है तथा कहांतक इसने करी है यह विचार भी अवश्य कर्तव्य है. इस विषयमें सामान्यरूपसे ऐसा विचारमें आता है कि, प्रत्येक मनुष्यकी स्वाभाविक ही व्यावहारिक तथा पारमार्थिक भेदसे दो प्रकारकी बुद्धि रहती है. खान पान पहरना आदिमें प्रयत्नशीलबुद्धिका नाम व्यावहारिक बुद्धि है तथा मैं कौन हूं कैसा हूं किसका हूं कहांसे आया और कहां जाऊं इत्यादि विचारशील बुद्धिका नाम पारमार्थिक बुद्धि है। इनमें किसी पुरुषकी प्रथम बुद्धि अच्छी होती है तथा किसी पुरुषकी दूसरी बुद्धि अच्छी होती है उसमें भी इतना भेद अवश्य रहता है कि, प्रथम बुद्धिकी पूर्ति विना दूसरी बुद्धि यथार्थरूपसे नहीं होती अब यहां पर प्रथम यदि पुरुषकी व्यावहारिक उन्नतिकी ओर दृष्टि करी जाय तो इसकी उक्त जांगलीदशासे लेकर वर्तमान समय-तक रात्रि दिवसका या अस्ताचल उदयाचलकासा अन्तर प्रतीत होता है. प्रथमकालमें कहीं ग्राम या वस्ती न होगी परन्तु वर्तमानमें मनुष्योंने अनेक प्रकारके ग्राम नगर निर्माण किये हैं प्रथम कालमें कहीं गिरिकन्दराओंमें या कक्षोंको कुटीरोंमें लोग निवास करते होंगे परन्तु वर्तमानमें अनेकप्रकारके प्रासाद मन्दिर शीशमहलादि तैयार किये जाते हैं प्रथमकालमें किसीको विविध अन्न पैदाकरनेकी बुद्धि न होगी परन्तु वर्तमानमें रंग रंगके अन्न तथा उनसे तरह तरहके खाने बनाये जाते हैं प्रथमकालके लोग वनके फल फूलोंसे पेट पोषण करते होंगे परन्तु वर्तमानमें तरह तरहके पक्व भोजन बनाये जाते हैं, प्रथमका-लमें जंगलीजीवोंका कच्चा मांस खायजाते होंगे परन्तु वर्तमानमें अने-कप्रकारके मसालोंसे पूरितकर अनेक तरहका स्वाद बनायाजाता है

प्रथमकालमें घास फूसकी बिछाईपर सोना होता होगा परन्तु वर्तमानमें तरहतरहके गलीचे बिछौने पलँग तथा मखमली गद्दे बनाये जाते हैं. प्रथमकालमें भोजपत्रादिसे अपने अंग प्रत्यंग आच्छादन किये जाते होंगे परन्तु वर्तमानमें अनेकप्रकारके वस्त्र तथा आभूषणोंसे शरीर पूरित किया जाता है ।

प्रथमकालमें जंगलोंमें मोटा मलिन पानी पीकर निर्वाह होताहोगा परन्तु वर्तमानमें तरहतरहके अर्क शर्बत पान करनेकेलिये बनाये जाते हैं प्रथमकालमें रोगीकी औषधी कदापि सम्यक् न होती होगी परन्तु वर्तमानमें हरएक रोगका प्रतिकार अनेकप्रकारके औषधोंसे किया जाता है. प्रथमकालमें परस्पर दश कोश दूरतक निवास होनेसे भी आपसमें मेल जोल न रखते होंगे अर्थात् दुःसाध्य था परन्तु वर्तमानकालमें रेल तथा आगबोटोंके प्रभावसे सहस्रों तथा लक्षों कोशोंके दूरनिवासी लोग भी परस्पर प्रेमपूर्वक मिलाप करते हैं तथा अनायास ही द्वीप द्वीपान्तरोंमें जाते आते हैं । प्रथम कालमें नदी नदोंके पार होना लोगोंको कष्टसाध्य होता होगा परन्तु वर्तमानमें जनसमुदायसे पूरित रेलादि यान भी क्षणोंमें पार होजाते हैं । प्रथम कालमें पाँचमन बोझेको भी दो चार पुरुष मिलकर उठाते होंगे परन्तु वर्तमानमें सहस्रों मन भारी वस्तुको एकही पुरुष यन्त्रोंसे उठा सकता है । प्रथमकालमें सूर्य्य चन्द्रादि ग्रहगोलोंकी घुमावटकी किसीको खबरभी न होगी परन्तु वर्तमानके विद्वानोंके यह विद्या हस्तामलक होरही है. प्रथमकालमें परस्पर दो चार कोश दूर होनेसे भी समाचार दिनोंमें मिलताहोगा. परन्तु वर्तमानमें डाक तारादिके प्रबन्धसे सहस्रों लक्षों कोशोंका समाचार दिनमें प्रहर घटिका तथा क्षणोंमें भी मिलसकता है । प्रथम कालमें रागद्वेषाक्रान्त लोग लाठी सोंटा पत्थर तथा मुष्टिसे लडते होंगे परन्तु वर्तमानमें दशों दिशामें अनेक प्रकारके अस्त्र शस्त्र तथा राज्यप्रबन्ध विराजमान है । प्रथमकालमें जनसंख्याके अति न्यून होनेके कारण परस्पर राग द्वेष लडाई टंटे बहुत ही कम होते होंगे परन्तु वर्तमानमें

भाई ही भाईयोंपर तल्वार बंदूक तोपें बरछे दौडते तथा परस्पर विनाश होते हैं। प्रथमकालमें नृत्य गीत वाद्यादिकोंकी लोगोंको कुछ भी खबर न होगी परन्तु वर्तमानमें तरह २ के नृत्य गीत वाद्यादि निर्माण कियेगये हैं। प्रथमकालमें अक्षरसंकेत या लिखने पढनेका कोई नाम भी न जानता होगा परन्तु वर्तमानमें (मुद्रापणयंत्र) (छापेखाने) में सहस्रतरहके सांकेतिक अक्षर छपकर पुस्तक तैयार होते हैं। प्रथमकालमें वडेसे वडे या छोटेसे छोटे सभीकाम हाथोंसे किये जाते थे परन्तु वर्तमानकालमें ऐसी कोई क्रिया ही नहीं जो कि,, कलाकौशलसे न हो सके अर्थात् कपडा बीनना आटा पीसना घास काटना मार्ग साफ करना लोह लकडी चर्म अस्थि आदिसे वस्तुओंका बनाना इत्यादि अनेक प्रकारके काम कला कौशलहीसे होते हैं। प्रथमकालमें अन्धकारकी निवृत्तिके लिये लोग घास फूस जलाकर चाँदनी करते होंगे परन्तु वर्तमानमें सूर्य्यास्त होतेही बिजली तथा गेसकी रोशनी चारोंतरफ चमचमाती हुई दीखपडती है प्रथमकालमें यदि कोई किसीकी प्रतिकृति बनाया चाहता होगा तो मट्टीका पुतला बनाकर धर देता होगा परन्तु वर्तमानमें फोटोग्राफ विद्याके प्रभावसे ज्योंका त्यों पुरुषके शरीरका आकार पत्रपर क्षणमात्रमें उतर आता है। प्रथमकालमें लोग परछाईको देखकर दिनके तथा तारोंको देखकर रात्रिके गत शेषभागका विचार करते होंगे परन्तु वर्तमान कालमें ऐसा कोई सभ्य पुरुषही नहीं कि; जिसकी जेबमें या हाथमें क्षण क्षणमें घटीयन्त्र न टणटणावे. प्रथमकालमें एकवारका किया गायन या दिया व्याख्यानादि उनही शब्दोंमें उस पुरुषके विना सुनानेकी बुद्धि बृहस्पतिको भी न स्फुरण हुई होगी परन्तु वर्तमानमें एक फोनोग्राफी विद्या ऐसी विचित्र निकली है कि, जिस द्वारा किसीभी पुरुषका गायन या व्याख्यान यन्त्रपेटीमें बन्दकर जब चाहो एक वार फिरभी ज्योंका त्यों सुनलो. प्रथमकालमें शीशोंमें कोई मुख देखनेभी न जानता होगा परन्तु वर्तमानमें ऐसे रंग २ के शीशे (दूरवीने) तैयार किये गये हैं

कि, जिनसे सहस्रों कोशोंकी वस्तु समीपवत् दीखपडती है तथा परमाणुवत सूक्ष्मवस्तुभी घटवत् स्थूल दीख पडती है । प्रथमकालमें मृतप्राणीका कोई अंग प्रत्यङ्ग भी पुरुषके काममें न आता होगा परन्तु वर्तमानमें मृत प्राणीका कोई अंश भी व्यर्थ जाता दीख नहीं पडता. इत्यादि अनेक तरहकी उन्नतिका प्रभाव वर्तमानमें पुरुषने प्रसारित किया है यहांतक कि क्या क्या कैसा २ किया है उसका स्मरण होना भी मेरे जैसे साधारण मनुष्यकी बुद्धिसे अलग हो रहा है. आगे इस उन्नतिको यह मनुष्य कहांतक और करेगा तथा कर-सकता है इसका कहना यद्यपि विना देखे असम्भव सा है तथापि वर्तमानको देखकर भावीकी कल्पना भी करें तो संभावना है कि, यह मनुष्य सूर्य चन्द्रादिलोकोंमें जासके या एक शरीरको छोड-कर यथेष्ट दूसरे शरीरको धारण करलेवे या संकल्प मात्रसे दूसरेके चित्तके भावको समझ लेवे । या संकल्पमात्रसे जहां चाहे जासके इत्यादि भाव यह कि, योगशास्त्रके विभूतिपादमें जो कुछ लिखा है वह सबही इस मनुष्यके लिये अबही करणीय है. जबतक न किया-जावे तबतक वहभी पूर्वोक्त यावत् विद्याओंकी तरह मिथ्या ही प्रतीत होता है ।

तार यंत्रादि भी जबतक प्रचलित नहीं हुएथे तबतक कोई पुरुष भी सत्य नहीं मानता था इत्यादि ।

इति द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः ३.

एवं दूसरी शाखा इस पुरुषकी उन्नतिकी पारमार्थिकरूपा है इसका स्मरण इसको सदैव ही पेट भरनेपर आया करता है वेदादि प्राचीन पुस्तकोंके देखनेसे प्रतीत होता है कि प्रथमकालमें लोग विशेषकर पृथिवी जलादि भूतोंहीके उपासक थे उसके कुछ काल पीछे इन्द्र वरुणादि

देवताओंकी कल्पना कर उनकी उपासना करनेलगे शारीरिक निर्वाह केवल जंगलके फल फूलोंसे हुआ करता था उनका होना वर्षाके अधीन था इसलिये वर्षाका स्वामी इन्द्रदेवता कल्पना कियागया। बत २ जब २ वर्षा न होतो लोग दुःखी होकर इन्द्रदेवताको मनाया करते थे कदाचित् वर्षाके अधिक होनेसे जलवृद्धिका भय हो तो उसके शान्तकरनेके लिये वरुण देवताकी कल्पना हुई। इसीतरह तत्तत्स्वार्थके वशवर्ती होकर पुरुषोंने अपने अनेक देवी देवता कल्पना करलिये तथा उनकी प्रशंसाके मनमाने गद्य पद्य भी बनाये उसको पीछे सबहीदेवोंको मनुष्योंने अग्निमुख कल्पलिया अर्थात् जो जिस देवताको भेट पूजा देनीकरनी होती अग्निमें जलाई जाती। उसके पीछे लोग कुछ चतुर हुए और स्वार्थ भी अधिक हुआ तो सर्वस्व दक्षिणा युक्त यज्ञोंसे स्वर्गसुख होनेका उपदेश तथा प्रचार हुआ उसके पीछे लोग अपने पूर्वजोंहीको देवी देवता मानकर उनकी प्रतिकृति बनाकर पूजनेलगे।

उसके कुछ काल पश्चात् कपिल महर्षिने आत्मज्ञानार्थ सांख्य शास्त्रका प्रचार किया उसके कुछकाल पश्चात् लक्षणादिद्वारा पदार्थोंके स्वरूपका बोधक वैशेषिक शास्त्र कणाद महर्षिने रचा। उसके कुछकाल पश्चात् अनेक प्रकारकी युक्ति प्रमाणोंसे भूषित तथा वादिविजयद्वारा प्राचीन कपिल महर्षि सिद्धान्तका पोषक गौतममहर्षिने न्यायशास्त्रका प्रचार किया। उसके कुछकाल पश्चात् आत्मज्ञानी पुरुषोंके जीवन्मुक्ति सुखके सम्पादनार्थ महर्षि पतञ्जलिने योगशास्त्रका प्रकाश किया, उसके कुछकाल पश्चात् महर्षि व्यासदेवने कपिल महर्षिके कहे अर्थको श्रोतार्थ निरूपण करनेके लिये वेदान्तशास्त्रका प्रचार किया उसके कुछ काल पश्चात् आत्मज्ञानके अनधिकारी अज्ञानी लोगोंकोलिये महर्षि जैमिनिने कर्मकाण्ड प्रधान पूर्वमीमांसाका प्रचार किया इसके सिवाय जैन बौद्ध चार्वाकादि और भी अनेक पुरुष दार्शनिक विचारोंके करनेवाले हो चुके तथा विद्यमान हैं ऐसे

ही शंकर, रामानुज, माध्व, निम्बार्क इत्यादि सांप्रदायिक आचार्योंने भी यथासम्भव इसी विषयोंमें विचार किया है । यह व्यवस्था मैंने अपने देशमात्रहीके ख्यालसे लिखी है । बहुधा इसीतरह और देशोंमें भी जानलेनी चाहिये ।

विदेशी लोगोंमें भी प्रायः एकतरफ बुतपरस्ती अर्थात् प्रतिमा पूजा देखनेमें आती है तथा एकतरफ सायन्स फिलासफी इल्म मारफत देखनेमें आता है इत्यादि विचारसे समान ही दशा सब देशोंकी प्रतीत होती है भेद है तो केवल इतना ही है कि, जैसा वर्तमानकालमें हमारा देश व्यवहार कोटिमें गिरतीदशामें है वैसा दूसरा नहीं है हमारा देश वर्तमान कालमें और देशोंसे गिरती दशामें है इस वार्ताको हम अब अधिक शोकके साथ प्रकाश नहीं करते क्योंकि हमारे पूर्वजोंने हमारे धैर्य्यकेलिये–

" सुखस्यानन्तरं दुःखं दुःखस्यानन्तरंसुखम् ।
पर्य्यायेणोपसर्पंते नरं नेमिमरा इव ॥ १ ॥ म० भा०व० प०
कस्यात्यन्तं सुखमुपगतं दुःखमेकान्ततो वा ।
नीचैर्गच्छत्युपरी च दशा चक्रनेमिक्रमेण ॥ १ ॥ कालिदासः।

अर्थात सुखके अनन्तर दुःख तथा दुःखके अनन्तर सुख यह दोनों यथाक्रम पुरुषोंको चक्रकी नेमियोंकी तरह आते जाते ही रहते हैं अर्थात् जैसे चक्रकी कोई नेमि भी अरोंसे खाली नहीं होती वैसे ही कोई पुरुष भी सुख दुःखसे मुक्त नहीं है । ऐसे ही कौन यह पुरुष है जिसको कैवल्य सुख या दुःख ही प्राप्तहो किन्तु जीवमात्रकी दशा चक्रनेमिक्रमसे अर्थात् चक्रकी नेमियाकी तरह ऊपर तथा नीचे होती ही रहती है । इत्यादि अनेकतरहके संतोषकारक वचनोंसे उपदेश किया है । यद्यपि यह हमें अच्छी तरह स्मरण है कि, किसी एक कालमें यह देश भी विविधविभूतियोंसे विभूषित होचुका है । राम, कृष्ण, भीम, अर्जुनादि महापुरुष भी इस भारत भूमिहीके सुयोग्यरत्न थे, ईरान यूनानके प्रतिष्ठित हकीम लुकमान अफलातु अरस्तु आदि

विद्वान् लोग भी इसी देशके शिष्य थे तथापि वर्तमानकालमें इत्यादि बातोंके स्मरणके सिवाय शोकाक्रान्तहोनेके कुछ अधिक लाभ नहीं है किन्तु सर्वथा उचित यही है कि, वर्तमान कालमें हमलोग विदेशियोंसे शिक्षा लाभ करें तथा उनके अनुगामी होकर जहांतक बनपडे लाभ उठावें ।

इसदेशका बसना ।

यह आर्य्यावर्त देश प्रथम कैसे बसा किन लोगोंसे बसा तथा वे लोग कहासे आकर बसे इस विषयका पूरा २ निश्चय होना बहुतही कठिन है क्योंकि इतिहासवेत्ता लोगोंकी इस विषयमें भिन्न २ मति हैं कोई कहता है कि, तिब्बतके पहाडोंसे आकर बसे हैं । और कोई कहता है हिमालयसे उतरकर बसे हैं । अनेकोंकी सम्मति है कि, ये लोग प्राचीन कालके यहां हीके निवासी हैं । जो कुछ जैसे भी हो परन्तु यह अवश्य है कि, यह देश कोई दो चार या दशवी शताब्दीका नूतन बसाहुआ नहीं है किन्तु सहस्रों लक्षों शताब्दियोंसे भी प्राचीन है । प्राचीनकालमें अर्थात् इस देशके बसनेके आरम्भहीमें इतिहासोंसे प्रतीत होता है कि, इस देशमें आर्य्य तथा "दस्युः" इस भेदसे दो जातिके लोग निवास करते थे । उनमें न्यायशील सत्यपरायण जनसमुदायकी आर्य्यसंज्ञा थी. तथा अन्यायशील अनृतपरायण लोगोंकी 'दस्युः' संज्ञा थी इन दोनों जातियोंके खान पान रीति रसम बोल चाल वर्तन व्यवहारमें परस्पर रात्रिदिनका अन्तर था. धीरे २ न्यायपरायण तथा बुद्धिशील आर्यलोगोंकी उत्तरीय भारतप्रान्तमें उन्नति हुई तो उन लोगोंने बुद्धिहीन दस्युलोगोंको अपने देशसे निकाला तो वे लोग दाक्षिणीय भारतके शून्य प्रान्तोंमें जाकर बसे । जब आर्य्यलोग अतिवृद्धिको प्राप्त होकर भारतमात्रमें व्याप्तहुये तो उस कालमें अनेक दस्युलोग देशान्तर अर्थात् द्वीपान्तरमें जा बसे तथा जो इसी देशमें रहे शरणागत होकर

शान्तिपूर्वक निर्वाह करने लगे । अब यहांपर यदि यह विचार किया जाय कि. सबसे पहले इस देशमें विद्याका तथा भक्ति ज्ञानादि सदाचारोंका तथा राज्यप्रबन्धका क्रम किसने चलाया तो हम अपने, इतिहासोंसे तथा अपनी धर्मपुस्तकोंसे इसका उत्तर यही देते हैं कि सर्वान्तर्यामी सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञपरमात्माके प्रतिनिधिरूप तथा उनकी पूर्णकृपाके पात्र जो आदिपुरुष ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव इन तीनोंने चलाया ये तीनों पुरुष स्वयम्भू हैं अर्थात् परमात्माकी इच्छामात्रसे प्रादुर्भूत हैं । सर्वान्तर्यामी परमात्माके ईक्षणामात्रसे अपनी त्रिगुणात्मिका मायाके योगसे रजःप्रधान ब्रह्मा प्रादुर्भूत हुआ सत्त्वप्रधान विष्णु प्रादुर्भूत हुआ तथा तमःप्रधान शिव प्रादुर्भूत हुआ तीनों ही स्वयं ज्ञानी सर्वशक्तिसम्पन्न तथा भावी होनेवाले जनसमुदायके नियन्ता हुए । इनमें ब्रह्माको रजःप्रधान होनेसे अनेक तरहकी सृष्टि निर्माणकी इच्छा हुई इसीके हृदयमें परमेश्वरकी तरफसे कर्मउपासना तथा ज्ञानभेदसे त्रिकाण्डरूप वेदका प्रकाश भी हुआ । इसीने अपनी अनेकप्रकारकी प्रजाको निर्माण कर प्रथम यथायोग्य विद्यासे विभूषित किया. इसीका अनेकप्रकारकी प्रजापर भूगोलमात्रमें चक्रवर्ति राज्य भी हुआ तथा वह राज्य सहस्रों वर्षतक एकरस नियत रहा इसीलिये आर्य्यावर्त देशमात्रमें यावत् सृष्टिका आदिकर्ता ब्रह्मा ही माना जाता है ।

वैसे ही विष्णु महाराजनेभी उक्त प्रजापर परमानुग्रहकर ज्ञानभक्ति वैराग्यादि अनेक प्रकारकी शिक्षाका प्रचार कर सहस्रों वर्षतक प्रजाका पालन किया वैसे ही शिवाजी महाराजने भी दण्डनीति गुरुत्वभावादि अनेकप्रकारकी शिक्षाका प्रचार कर प्रजाका संरक्षण किया. इन तीनों आदिदेवोंका नाममात्र या कायमात्रहीसे भेद था वस्तुतः तीनों एक ही स्वरूप तथा एक ही उद्देशके विधाता थे । यद्यपि इस वार्ताको हम पूर्व कह आये हैं कि, इस संसारका प्रादुर्भाव तथा तिरोभाव अनेकवार हुआ होगा. तथा होवेगा तथापि वर्तमान कल्पके इतिहास

देखनेसे सृष्टिक्रम हमारे प्राचीन इतिहासोंमें ऐसे लिखा है कि, ब्रह्मा-जीने इच्छामात्रसे अपने दो पुत्र उत्पन्न किये उनमें एकका नाम मरीचि तथा दूसरेका नाम अत्रि था ये दोनों भी अपने पिताकी तरह अनेकशक्तिसम्पन्न थे इनमें मरीचिने इच्छामात्रसे कश्यप तथा कश्यपसे सूर्य्यादि अनेकतरहकी प्रजाको उत्पन्न किया तथा अत्रिने एकसोमनामक पुत्रहीको उत्पन्न किया कश्यपके पुत्र सूर्य सूर्य्यसे सूर्य्यवंशका प्रचार हुआ तथा अत्रिके पुत्र सोमसे चन्द्रवंशका प्रचार हुआ सूर्य्यवंशमें एक महाप्रभावशाली राजा मनु हुआ जिसके नामसे इस सृष्टिके पुरुष मानव कहानेलगे उसके पीछे इसी वंशमें एक भरत नामक राजा महाप्रतापशाली हुआ जिसके नामसे इस भूमिका नाम भारतवर्ष प्रख्यात हुआ. इसक पश्चात् इसी वंशमें एक रघु नामक महाराजा महाप्रतापशाली हुआ जिसके नामसे यही वंश राघववंश कहानेलगा इत्यादि यह सब सूर्य्यवंशकी विकृतिका स्वरूप है ।

ऐसे ही अत्रिके पुत्र सोम अर्थात् चन्द्रवंशमें भी अनेक प्रख्यात राजे हुए हैं परन्तु जिसके नामसे वंशका नाम पलटजाय या दूसरा हो जाय ऐसा एक यदु ही हुवा है । प्राचीन इतिहासोंसे ऐसा भी प्रतीत होता है कि, प्रथमकालमें सूर्यवंशी लोगोंने अपने राजधानीका स्थान अयोध्या पुरीको नियत किया था तथा चन्द्रवंशी लोगोंने अपनी राजधानी हस्तिनापुर अर्थात् दिल्लीमें बनाई थी अब यहांपर यह शंका अवश्य उत्पन्न होती है कि, इस सृष्टिमात्रका आदिकर्ता तो ब्रह्मा ही ठहरा प्रजामात्र ब्रह्माहीकी सन्तान है तो जिन दस्युलोगोंको आर्योंने देशसे निकालादिया तथा वे लोग द्वीपान्तरोंमें जो बसे. वे लोग क्या इससे भी प्रथमसृष्टिके थे या कि उनकी वंशपरंपरा कोई पृथक् किसी इतिहाससे सम्बन्ध रखती है इसका उत्तर यह है कि, दस्यु लोग भी कहीं बाहरसे नहीं आये थे किन्तु बीचहीमेंसे विटल २ के दस्यु भी साथके साथही बनते जातेथे जैसे कि, प्रायः सत्यप्रधान व्यवहारशीलोंकी देवसंज्ञा हुई मिश्रितप्र-

धान अर्थात् न्यायप्रियलोगोंकी आर्य्य संज्ञा हुई । तथा अनृतप्रधान अर्थात् अन्यायपरायण लोगोंकी अनार्य्य दस्यु इत्यादि नामोंसे प्रख्यात हुई ।

इतितृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः ४.

वर्णाश्रमविचार ।

प्रजा यह भी सबही ब्रह्माकी अथवा अत्रि या कश्यपहीकी समझनी चाहिये प्रथमकालमें किसी जाति या वर्णाश्रमका विभाग कुछ भी न था किन्तु प्रजाकी वृद्धि होनेसे विद्वान् विचारशील लोगोंने पीछेसे कल्पना करी है अर्थात् विशेष कर विद्यासे सम्बन्ध रखनेवाले तथा शम दम शान्ति आदि गुणोंके पालन करनेवाले मनुष्यदलका नाम 'ब्राह्मण' रक्खा तथा शूरवीर, तेजस्वी, चतुर, युद्धप्रिय, मनुष्यदलका नाम 'क्षत्रिय' रक्खा. एवं कृषिकार गोपालक तथा व्यापारादि करनेवाले मनुष्यदलका नाम 'वैश्य' रक्खा । एवं इन उक्त क्रियाओंके सिवाय शेष घट, पट, कुडच, कुशूलादि यावत् क्रियाओंके करनेवाले मनुष्यदलका नाम 'शूद्र' नियत किया । इस रीतिसे चार वर्णोंकी विद्वानोंने कल्पना करी । उसके कुछ काल पश्चात् जब और भी प्रजाकी वृद्धि हुई तो लोगोंकी दशाको देखकर विद्वानोंने चार आश्रम भी नियत किये । अर्थात् जैसे पूर्व कहे चार वर्णोंका मनुष्यके स्वभावसे सम्बध है जैसे कि, शमदमादिस्वभाववाला ही ब्राह्मण होसकता है दूसरा नहीं. एवं शूर वीर तेजस्वी ही क्षत्रिय होसकता है दूसरा नहीं. ऐसे ही इन चार आश्रमोंका प्रत्येक पुरुषके शरीरकी अवस्थाहीसे सम्बन्ध है अन्यत्र नहीं जैसे पाँच सात या आठ वर्षकी अवस्थासे लेकर बीस या बत्तीस वर्षतक 'ब्रह्मचर्य्यआश्रम' विद्याभ्यासकेलिये नियत किया । उसके पश्चात् सन्तान उत्पत्तिकेलिये कोई चालीसवां पचासवर्षकी आयुतक 'गृहस्थआश्रमनियत किया ।

उसके पश्चात् संसारके अनेकतरहके चक्रसे दुःखितपुरुषके एकान्तमें आराम लेनेकेलिये 'वानप्रस्थआश्रम' को नियत किया। उसके पश्चात् अपने आयुभरके सम्पादन किये विचित्र बोधका विरक्त होकर संसारमें उपकारार्थ प्रगटकरनेकेलिये संन्यासाश्रमको नियत किया। यह वर्ण आश्रमोंकी कल्पना प्रथमकालमें यद्यपि ऐसी उलटी तौरपर उलझी है कि सबका पितामह ब्रह्माभी यदि इसको साफ करना चाहे तो विचारहीमें पडजावे यह वर्णाश्रमोंकी कल्पना कोई हमारे भारतवर्षहीमें नूतन नहीं है किन्तु सबही देश देशान्तरोंमें समान है भेद केवल इतना ही है कि, हमारे पुस्तकोंमें वर्णाश्रमोंके स्वरूपका निरूपण है विदेशियोंके पुस्तकोंमें नहीं है। परन्तु वर्णाश्रमव्यवस्था जैसे कि, हमारे पूर्वजोंने प्रथम नियत करी थी उसका प्रचार देशान्तरोंमें भी अनायासहीसे विराजमान है। किन्तु इस देशके दुर्भाग्यके वशसे वही क्रम जो कि, हमारे पूर्वजोंने नियत किया था विपरीत हुआ अर्थात् कुछ भी पढे लिखे शूद्र कहानेलगे सबकी सबतरहकी सेवा चाकरी करनेवाले ब्राह्मण बोलेजानेलगे। क्षात्रधर्मका तो बीज नाश ही हुआ। झूठ कपट छल छिद्रसे पेटभरनेवाले वैश्य बोले जानेलगे। सत्यविद्याके सूर्यका इस देशसे निर्मूल होगया। स्वार्थअन्धकारने जीव जीवको व्याप्त किया। बिच्छुओंकी तरह आपसमें काट काटकर खानेलगे। होतेहोते शेषमें यह दशा इस देशकी हुई जो कि, आप देखरहे हैं। इस वार्ताको स्मरणकर शोक अवश्य होता है कि, कहां तो यह देश देशान्तरोंका गुरु था परंतु वर्तमानमें शिष्यबननेकी योग्यताभी नहीं रखता। एवं कहां तो यह देश देशान्तरोंका शासक था परन्तु वर्तमानमें शासनामें रहनेकी योग्यता भी नहीं रखता एवं कहां तो यह देश धनधान्यादि सर्वसम्पत्तियोंका आगार था परन्तु वर्तमानमें भूख, प्यास तथा रोगादि आपत्तियोंका आगार होरहा है। इत्यादि सबही बातोंका कारण क्या है? क्या हुआ? कैसे हुआ? कुछ समझमें नहीं आता। कोई कहता है कि, इस देशका भाग्य ही ऐसा था। कोई कहता है कि, ग्रहोंकी दशा

बिगडनेसे ऐसा हुआ । दूसरा कहता है कि, आलस्यने देशकी यह दशा करी । उससे दूसरा कहता है कि, स्वार्थने देशका नाश किया। तीसरा बोलता है कि, समाजकी कुरीतियोंने इस देशको रसातलमें पहुँचादिया चौथा कहता है कि, अनेक प्रकारके मतमतांतरों तथा संप्रदायोंने इस देशका सत्त्व नाश किया । पांचवाँ कहता है कि, वर्णाश्रम धर्मोंके उल्लंघन करनेसे यह हाल हुआ है । छठा कहता है कि, वर्णाश्रम तथा जातिविभागहीने इस देशको डुबाया । सातवाँ कहता है कि, एक देशके प्रान्त प्रान्तमें अनेक भाषाओंका वदलजाना ही देशकी अवनतिका कारण है । आठवाँ कहता है कि, क्षत्रियलोगोंकी गौ ब्राह्मणोंपर भक्तिके अभावहीने इस देशको निर्वीर्य्य किया है । नवमाँ कहता है कि, मूर्तिपूजा, बालविवाह, विधवाका होना इत्यादि अनेक तरहके कुधर्मोने देशकी दशा बिगाडी है । दशवाँ कहता है कि, हमारी धर्मपुस्तकें ही हमारे विनाशका मूल हैं । ग्यारहवाँ कहता है कि, सत्यविद्याओंके अभावहीसे देशकी वर्तमान दशा हुई है । बारहवाँ कहता है कि, परस्पर कुसमयने देशका नाश किया है इत्यादि अनेक तरहकी और भी भिन्न २ सम्मतियोंके देनेवाले तथा देशकी वर्तमान दशापर विचार करनेवाले लोग विराजमान हैं देशके दुर्भाग्यके वशसे सम्मतियें सबकी भिन्न २ रहें । कौनका कहा यथार्थ तथा सयुक्तिक है इसका विचार करना जरा कठिन है। क्योंकि विचित्र सामग्री विचित्र कार्य्यहीको उत्पन्न करती है और कोई एक नियत कार्य्य किसी एक नियत सामग्रीहीसे होनाचाहिये । उस सामग्रीके विचारमें भिन्न अभिप्राय है तो प्रयत्नकरनेवाला पुरुष किसको उचित मानकर प्रयत्नकरे ? जिस वस्तुके कारणमें विद्वानोंका विवाद होजावे उसका शीघ्र निःसन्देह होना कठिन होता है । अथवा ऐसे कहो कि, सर्वत्र सम्भूय सामग्री ही कार्य्यजनका होती है । यह पूर्वलिखित लोगोंका अभिप्राय कोई भिन्न २ सम्भूय सामाग्रीरूप नहीं है । किन्तु सबने आंशिक विचारकिये हैं ।

यह सब मिलकर एक ही सम्भूय सामग्री है यदि ऐसा मान लें तो तो भी ठीक परन्तु वे अभिप्राय देनेवाले लोग प्रायः अपनी २ रायको सम्भूयसामग्रीरूप ही मानते हैं तथा दूसरोंके अभिप्रायोंका परस्पर खण्डन मण्डन भी करते हैं। इसलिये विचारशील पुरुष तो इन विचारोंको करताहुआ भी कुछ व्याकुलसा होजाता है धैर्य्य छूटजाता है उच्छ्वास भर भर आता है। क्या करना चाहिये कैसा करना चाहिये कुछ समझमें नहीं आता अब यहांपर हमसे यदि कोई पूछे कि, आपका इस देशकी अवनतिके विषयमें क्या अभिप्राय है अर्थात् यह देश कैसे तथा कबसे इस दशाको प्राप्त हुआ ? तो प्रथम तो मैं यही कहता हूं कि, ऐसे २ विचारशीलोंके आगे मैं क्या अपने तुच्छ अभिप्रायको प्रगट करूं और जो करूं भी तो पूर्वोक्त अभि-प्रायोंसे कुछ पृथक् न होगा-इस लिये मैं भी यही कहता हूं कि, प्रथम स्वार्थ दूसरे विद्याके अभावने इस देशका ऐसा हाल किया है, स्वार्थ किसने किया, तथा विद्याका अभाव कैसे हुआ, कबसे हुआ, इसका पता इतिहासोंसे मिलना कठिन है किन्तु आनुमानिक कल्प-ना है स्वार्थसे मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि, पुरुषमें स्वार्थ होना न हीं चाहिये क्योंकि ऐसा कथन तो 'सर्वःस्वार्थं समीहते' अर्थात् सबही स्वार्थको चाहते हैं इस नीतिसे विरुद्ध है. किन्तु यह अभिप्राय है कि, समुदायकी हानिकारक नीच स्वार्थ पुरुषमें नहीं होना चाहिये आनुमानिक कल्पनाका स्वरूप यद्यपि सर्वथा सबका सम्भावित होना कठिन है तथापि पक्षपातरहित विचारपर सहमत होनेवाले कतिपय सज्जन पुरुषोंके अनुरोधसे उसको यथावत् स्वरूपका चित्र खेंचना आवश्यकीय है। हम पूर्व लिखचुके हैं कि, वर्णाश्रमोंकी कल्पना हमारे पूर्वजोंने लोकोपकारार्थ सृष्टिके आरम्भके कुछ ही काल पश्चात् करके सबको यथायोग्य अधिकारपर अर्थात् जो पुरुष जिस कार्यको करसके उसको उसी कार्यपर नियत किया था प्रजा-का समुदाय बहुत ही न्यून था इसलिये वर्णविभागने बहुत शीघ्र

प्रचार पायाथा जैसे किसी राजाके चार पुत्र हों और उनको उनका पिता उनकी बुद्धिके अनुसार यथायोग्य अधिकार बाँट देवे । अर्थात् बडे छोटेका विचार न करके किन्तु केवल उनके स्वाभाविक आचरण स्वभावपर दृष्टि देकर एकको विद्याअभ्यास धर्म नीति इत्यादिके आन्दोलनकी आज्ञा देवे । तथा दूसरेको अपने देशको शत्रुओंसे संरक्षणकी आज्ञा देवे । एवं तीसरेको कृषिगोरक्षणादिकी आज्ञा देवे । चौथेको तीनोंकी समय २ पर शुश्रूषाके वास्ते नियत करे तो क्या उस राजाने अपने चारों पुत्रोंपर कुछ अन्यायका वर्ताव किया था कि, उनके परस्पर भातृभावको तोडा नहीं राजाने अपने बच्चोंके सुखकेलिये उचित प्रबन्ध किया सिवाय इस प्रबन्धके वे चारों भ्राता पिताकी विभूतिका कदापि भोग न कर सकते यही दशा ज्योंकी त्यों हमारी वर्णाश्रमकल्पनामें भी समझलेनी चाहिये । परन्तु भेद है यहां तो दिनसे रात्रि होगई । अमृतसे विष होगया । इसका क्या कारण इसका कारण है समुदायविरोधी स्वार्थ वह कहांसे आया तथा उसने अग्निरूप होकर कैसे भस्मीभूत करडाला उसका कारण यों प्रतीत होता है हमारे पूर्वजोंने सर्वविद्यासम्पन्नपुरुषोंका नाम ब्राह्मण रक्खाथा भावीसन्तानको यथा योग्य अर्थात् जैसा अधिकारी हो वैसी ही शिक्षा देना उन ब्राह्मणोंका काम नियत किया था, इस पूर्वजोंके नियमसे नियमितहुए ब्राह्मणलोग वैसे ही करते थे । चारों वर्णोंकी सन्तानको अपनी संततिके समान जानकर उत्तम शिक्षा दिया करते थे । जो जिस विद्याका अधिकारी समझते थे तथा जिसकी जिस विद्यामें रूचि देखते थे उसको उसी विद्याके सिखलानेका प्रयत्न करते थे परन्तु चारों वर्णोंके बच्चोंमें भ्रातृभाव समान ही बनारहता था राजकुमारोंकी तरह कोई अपनेको ऊंच या नीच भूलकर भी न मानता था उन सिखलानेवाले अध्यापक ब्राह्मणलोगोंकी जीविकाका प्रबन्ध पूर्णरूपसे राज्यदर्बारोंहीसे हुआ करता था जीविका भी इन लोगोंकी कोई साधारण न होती थी किन्तु जो

चाहें सो राजालोग हाथ बाँधे खडेरहते थे धनकी तो कथा ही क्या है अपनी बेटियाँ तकका देना भी राजालोगोंको उन ब्राह्मणोंकी सेवामें अपना सौभाग्य समझ रक्खा था अधिक क्या कहना है राज्यके बखेडोंके सिवाय सबही राज्यैश्वर्यका सुख उन गुरुलोगोंकी सेवामें विराजमान था ऐसे ही उन महापुरुष गुरु लोगोंकी अनेक गादी थीं। ऐसी संसारमें कोई विद्या भी न थी जो कि, उन गुरु लोगोंके अपरिचित हो अर्थात् सर्वविद्यासम्पन्न ही गुरुगादीके अधि कारी बनते थे ऐसे ही चाहे कोई किसीका पुत्र हो जो सर्वविद्यासम्पन्न होता था वह गुरुगादीको पाता था तथा ब्राह्मण कहाने लगजाताथा शेष सबही शिष्यमण्डली अपनी पठनअवस्थाको पूर्णकर यथायोग्य विद्या लाभकर तत्तत् कार्यपर नियत कियेजाते थे ऐसे होनेसे ब्राह्मण के बेटेको क्षत्रिय कहानेमें कुछ लज्जा न थी तथा क्षत्रियके बेटेको ब्राह्मण बननेमें कोई प्रतिबन्धक भी न था भाव यह कि, ये सबही पदवियें वंशपरंपराके साथ सँठीरहनेवाली नहीं नियत करी गई थीं किन्तु वर्तमानमें जैसे अध्यापक मास्टर प्रोफेसर या सिपाही कानिस्टेबल जमादार या व्यापारी सौदागर दुकानदार या पाचक बबरची नानबाई इत्यादि पदवियां प्रचलित हैं वैसेही ब्राह्मणादि पदवियांभी थीं जैसे वर्तमानकालमें एक पिताके चार पुत्र जो कि, अपनेको सबसे उच्चकुलक मानते हो दूसरेका छुआ पानी भी जिनकेलिये विषसा होजाता हो उनमें भी यदि दैवात् एक भाई लिख पढके कहीं अध्यापक बनजाय और दूसरा हृष्ट पुष्ट पुलीसमें भरती होजाय तीसरेको कहीं काम न मिले तो खोंचा बेचने लगे। चौथा किसी बनियेकी रोटी बनानेपर नौकर रहजाय तो समय २ पर मिलनेसे वे चारों भाई आपसमें किसीतरहका खान पानादिमें या बडाई छुटाईमें अन्तर नहीं रखते किन्तु प्रेमपूर्वक बर्ताव करते हैं वैसेही प्रथम था सहस्रों वर्षोंतक यही पृथा चली तो देश भी अपनी स्थितिपर नियत बना रहा। पश्चात् धीरे २ स्वार्थ महाराजने आन पांव जमाया। शिष्यमण्डलीके साथ ही गुरुलोगोंके-

पुत्र भी पढाकरते थे गुरु सबको समान ही शिक्षण देता है परन्तु बहुतसे लडके उसमें बहुत शीघ्र सीखजाते हैं । तथा बहुतसे लडकोंको विलम्बसे समझपडती है इसमें उनकी बुद्धि ही कारण है कोई गुरुको दोष नहीं है । परन्तु गुरुजीके मनमें यदि ऐसा सँठजावे कि, ऐसी रचना करें जिसे यह मेरी गादी मेरे पुत्रहीको मिले तो उसके शेष शिष्यवर्गके मूर्ख रहजानेमें या उसकी गादीके विनाश होजानेमें कोई सन्देह ही नहीं क्योंकि न तो उसका पुत्रही ऐसा बुद्धिमान् है कि, सर्वविद्यासम्पन्न होकर गुरुकी गादीको बनाईरक्खे और न गुरुजीने ही अपनी नियत साफसे सब शिष्योंको समानदृष्टिसे विद्या सिखलाई जो कोई सुयोग्य शिष्य निकल ही आता जैसे कैसे भी मरणसमय ओडको गुरुजीकी इच्छा ही हुई गादी उनके पुत्रहीको मिली तो आप सोचसकते हैं कि, अपने पिताकी गादीपर बैठकर वह पुत्रकि, जिसने स्वयं अच्छीतरह नहीं पढा है कितना पढा सकेगा तथा कैसी उन्नति करेगा एकको देखकर दूसरेने तथा दूसरेको देखकर तीसरेने भी वैसेही किया तो बस फिर विनाशमें देरही क्या थी एक शतवर्षके भीतर भीतर पिछले सबही विद्वान् लोग नष्टहुए तो रागद्वेषके पुतले स्वार्थके सम्पुट मूर्खमण्डल शेष रहा फिर उस मूर्खमण्डलने क्या किया ? उसने यह किया कि, अपने बडोंके नामसे मनमाने ग्रंथ बनाये और उन ग्रंथोंको सुनाकर अपने बडोंकी सच्ची प्रतिष्ठा जैसी प्रतिष्ठा जमानी चाही परन्तु काठकी हँडिया ठहरे कहांतक शेषमें धीरे धीरे परिणाम यह हुआ कि, एकदम विदेशियोंने आनकर लूटा खसोटा तथा दास बनाया पूर्वोक्त रीतिसे इस देशका जब विद्यारूपी सूर्य अस्त हुआ तो चारोंतरफ अज्ञानान्धकारके होनेसे देशी स्वार्थियोंने भी ठगों चोरों तथा डाकुओंकी तरह अनेकप्रकारके मत मतान्तर सम्प्रदाएँ चलाकर अपना २ स्वार्थ साधा परन्तु सर्वस्वविनाशकी तरफ किसीने जरा भी दृष्टि न दी अब हमारे इस ऊपरलिखेको देखकर कोई सज्जन अप्रसन्न होकर कहे कि, तुम्हारी इस ऊटपटाङ्ग मन-

मानी कल्पनामें प्रमाणही क्या है तो उसकेलिये प्र प्रेमपूर्वक यही कहसकता हूं कि, हे प्रिय ! प्रचीनग्रन्थोंके देखनेसे ऐसे ही प्रतीत होता है । यदि कहो कि, प्राचीनग्रन्थोंसे इस व्यवस्थाका कैसे लाभ होता है ? तो सुनिये मैं आपको दिक्प्रदर्शन मात्र दिखलाता हूं ।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ॥ ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याँशूद्रोऽअजायत॥[यजु॰अ॰ ३१मं११]

यह प्राचीनकालके महापुरुषोंका अनेकभावोंसे भराहुआ पवित्र उपदेश है भाव इसका यह है कि, यावत् देश देशान्तर तथा लोकलोकान्तर सबही विराट् पुरुषरूप है अर्थात् विराट्पुरुषका शरीर है उसमें ब्राह्मण अर्थात् सर्वविद्यासम्पन्न पुरुष उस विराट् पुरुषका मुखरूप है । भाव यह कि,जैसे शरीरमात्रकी पुष्टिका मूल कारण मुख है अर्थात् मुखद्वारा पदार्थ खाने पीनेहीसे बाकी शरीर स्वयं पुष्टरहता है वैसे ही विद्वान् ब्राह्मणोंके पोषणमात्रसे देशरूप विराटपुरुष पुष्ट रहेगा क्षत्रियबाहुस्थानापन्न हैं अर्थात् जैसे शरीरपर आपत्ति आनेसे विशेष कर बाहू ही निवारण करते हैं वैसे ही देशकी आपत्तियोंके निवारक क्षत्रिय नियतकिये। ऐसे ही देश देशान्तरकी वस्तु संग्रहकेलिये ऊरूस्थानापन्न वैश्योंको कहा । शरीर मात्रका बोझा अपनेपर लेनेके लिये शूद्रोंको पादस्थानापन्न कहा हमारे पूर्वजोंने इस मन्त्रसे देशमात्रको विराट्पुरुष बनाकर उसके मुख्य ४ चार अङ्गोंका निरूपण किया है भाव इसका यह है कि, जैसे शरीरके अंग आपसमें रागद्वेषको न करके परस्पर शरीरमात्रकी पुष्टिमें प्रयत्नशील रहते हैं वैसे ही चारों वर्ण भी हमारे बाँधे नियमसे सुखलाभ करें परन्तु फल उलटा हुआ मुखने पाओंको थुत्कारा और पाँवोंने अपनी धूलि उडाके मुखपर डारी इत्यादि भावोंका पूरा हाल कोई नहीं जानता परन्तु उस समय हमारे पूर्वजोंकी कल्पना अपूर्व ही थी इसमें सन्देह नहीं है उदाहरणके लिये स्मरण रहे कि, वर्तमानमें अमेरिकादेशवालोंने अपने देशके लिये जो प्रबंध नियत किया है वही ऐन ऊपर कहे मंत्रका

आशय था परन्तु शोक है कि, रागद्वेष तथा स्वार्थने विपरीत करडाला पूर्वोक्तरीतिसे जब गुरुगादियोंका वंशपरंपराहीमें प्रचार होने लगा तब तो राज्यगादी भी पुत्रहीको मिलने लगी प्रथम तो यावत् विद्या गुरुगादीही पर सीखी जाती थी फिर वंशपरंपरामें गुरुगादीके होनेसे अपने अपने पेशेकी गुरुगादी सबहीने नियत करली फिर वे सिखलानेवाले लोग अपने २ समुदायमें गुरु तथा ब्राह्मण भी कहाने लगे परन्तु इतना विशेषहुआ कि, जिनको प्राचीन अर्थात् अपने पिताकी पुरानी जमीजमाई गादी मिली उनकी गादीके अनुरोधसे प्रतिष्ठा अधिक रही क्षत्रिय राजाभी अपनी गुरुगादी जानकर उनहींको मानतेरहे इसलिये उन ब्राह्मणोंका तथा राजालोगोंका मेलजोल भी कुछ कालतक बनारहा उसी मेलजोलका लेश पाण्डवोंतक भी प्रतीत होता है द्रोणाचार्य प्राचीन परम्पराप्राप्त गुरुगादीका ब्राह्मण होकर भी अस्त्र शस्त्रादि अनेक तरहकी विद्याके जाननेवाला प्रतीत होता है । भिन्न २ पेशेवालोंने जब गुरुगादी स्थापन कर ब्राह्मण कहवाना आरम्भ किया तो प्राचीन गुरुगादीवालोंने क्षत्रियलोगोंकी सहकारतासे उनको दबाया तो उसी समयके उभयत्र सन्तोषकारकलोगोंके—

"तपः श्रुतं च योनिश्च एतद्ब्राह्मणकारकम् ॥
तपःश्रुताभ्यां यो हीनो जात्या ब्राह्मण एव सः" ॥१॥

यथा वा—गौरः शुच्याचारः पिङ्गलः कपिलकेश इति—इत्यादि वचन प्रतीत होते हैं । ये वचन भी बहुत ही प्राचीन हैं क्योंकि महाभाष्यकार महर्षि पतञ्जलिने इनका उदाहरणरूपसे संग्रह किया है भाव इनका यह है कि तपस्वी विद्वान् तथा प्राचीनसे जो ब्राह्मण कहाता चला आया हो उसका बेटा ही ब्राह्मण होसकता है । और जो तपोविद्यायुक्त नहीं है वह केवल अपनी वंशपरंपराके अनुरोधसे जातिमात्र ब्राह्मण है । अर्थात् पूरा ब्राह्मण नहीं है । उसी समय दूसरे महापुरुषने यह राय दी कि,तप या विद्या न भी हो तथापि गौरवर्ण शुच्याचार-

तथा पिंगल या कपिलकेशोंवाला भी ब्राह्मण कहासकता है यह कथन भी उनका उस कालके बहुत ही अनुकूल था शरीरका गौर या पिंगल-केशादियुक्त अधीन है भोजनकी स्वच्छताका होना । उस कालमें वेही परंपराप्राप्तगुरुगादीवाले ब्राह्मण सबसे श्रीमान् थे मनमाने उत्तम भोजनके प्रभावसे वर्तमानके यूरोपियनों जैसे उनके शरीर होते थे। और इतरलोगोंकी शारीरिकदशा भिन्न २ पेशेके प्रभावसे तथा मोटा सोटा खाने पीनेसे कुछ बदल ही चुकी थी मध्यस्थोंकी ऐसी समयानुसारिणी नीतिगर्भित व्यवस्थाको सुनकर शेष लोग चुप होगये । तथा वृथा विवादको छोडकर अपने २ कृत्यमें प्रवृत्तहुए । बस फिर क्या था प्राचीनप्राप्तगुरुगादीवालोंकी बनपडी जो कुछ मनमें आया लिखा पढा पढाया और छत्रियलोगोंको मिलाकर सबहीको वशवर्ती कर जहांतक बनपडा अपना स्वार्थसिद्ध किया उन लोगोंने सबके वशवर्ती करनेके लिये कुछ कम प्रबन्ध नहीं कियाथा अनेकों धर्मसूत्र बनाये अनेकों धर्मशास्त्र बनाये अनेकों ही इतिहास पुराण मनमानी गाथाओं-को निर्माणकर देशमात्रकी ऐसी बुद्धि नष्ट करी कि, बिना यह अपने नाश किये फिर उठही न सके परन्तु स्मरण रहे कि, वे भिन्न२ पेशोंमें प्रवृत्त होनेवाले लोग भी जहांतक बनतारहा अपने २ कार्यसे फुरसत मिलनेके कालमें सत्यका प्रचार करतेही रहे । परन्तु उन गुरुलोगोंके यहा आडम्बरके आगे नगारोंमें तूतीकी आवाजको सुनता ही कौन था । वे पुस्तकें उनलोगोंकी बनाई हुई जैसीकी तैसी रही यह भी बात नहीं किन्तु उनलोगोंके विरोधियोंने अनेक वचन मनमाने बना बना-कर उनकी पुस्तकोंमें प्रक्षेपण किये अब वर्तमानकालमें तो ऐसा घो-टाला हुआ है कि, ऐसा कोई इतिहास पुराण ही प्रसिद्ध नहीं जो जिस में ब्राह्मणत्व जातिके खण्डन या मण्डनके श्लोक न मिलें । सबसे प्रतिष्ठित तथा प्रसिद्ध इतिहास महाभारत है उसमें भी अनेकस्थलोंमें किसी न किसीके नामसे शंका करके जात्या ब्राह्मण नहीं होता किन्तु गुणोंहीसे होता है, ऐसा लिखा है । जैसे वनपर्वमें प्रसंग आता है एक

सर्पने युधिष्ठिरसे पूछा कि, हे राजन्! ब्राह्मण किसको कहते हैं? युधिष्ठिरने उत्तर दिया कि, जिसमें सत्य, दान, क्षमा, शील इत्यादि गुणसमुदाय होवें वही ब्राह्मण है सर्पने कहा हे राजन्! ऐसे गुण तो वर्तमानमें जिनको शूद्र कहके पुकाराजाता है उनमें भी प्रतीत होते हैं। युधिष्ठिरने कहा हे सर्प!

"शूद्रे तु यद्भवेल्लक्ष्म द्विजे तच्च न दृश्यते ॥
न वै शूद्रो भवेच्छूद्रो ब्राह्मणो न च ब्राह्मणः"॥२९वनप०

अर्थात् जिसको वर्तमानमें शूद्र कहते हैं यदि मेरा कहा सत्य, दान, क्षमा, शीलादि सद्गुणोंका समुदाय उसमें होय तथा जिसको वर्तमानमें ब्राह्मण कहते हैं उसमें न होय तो तुम उस शूद्रको शूद्र मत समझो अर्थात् ब्राह्मण समझो तथा ब्राह्मणको भी ब्राह्मण मतसमझो अर्थात् शूद्रही समझो इत्यादि अनेक तरहके प्रश्न उत्तररूप इतिहासोंसे जात्य ब्राह्मणपनकी बहुत ही धूलि उडाई हैं तथा गुणकर्मोंसे ही ब्राह्मणत्व को सिद्ध किया है।

इति चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः ५.

ऐसे ही अबभी प्रायः जो नीचजातियोंके साधु थोडासा लिखपढ जाते हैं वे भी जहांतक बनपडे जात्या ब्राह्मणपनेको खण्डनही करा-करते हैं। परन्तु मेरे विचारमें वर्तमानमें या इससे कुछ काल पूर्व जिस जिसने ऐसा खण्डन किया है उसीने अपनी अधमता तथा मूर्खता सूचन करी है। क्योंकि, जबतक तो हिन्दुओंके हाथमें राज्य रहा है तबतक तो सिवाय इनहीं ब्राह्मणोंके दूसरेकी किसीने सुनीही नहीं है। जब हिंदुओंके हाथसे राज्य जाचुका है तब सबसे प्रथम इसही जातिके शिर आफत पडी है अर्थात् जो बहुत उन्नतिपर हो उसीको बहुत नीचे गिरना पडता है।

इसलिये सबसे प्रथम भारतीय ब्राह्मणजातिकी जैसी शोचनीय दशा है वैसी और किसीकी भी नहीं प्रतिसहस्र दैवात् यदि एक लिख पढभी जाय तो उसको गवर्नमेण्ट (सर्कार) नौकरीकी जगह नहीं देती किन्तु ब्राह्मण, इतना सुनकरही जगह नहीं है यह उत्तर मिलता है। जबतक कोई नीचजातिका लिखापढा मिले तबतक ब्राह्मणको जगह मिलना कठिन है। बाकी रहा ब्राह्मणोंका मूर्खमण्डल उनके दो काम हैं भिक्षावृत्ति और दूसरेकी सेवा उठानेके लिये नौकरी, सो भिक्षावृत्तिका तो यह हाल है कि, यदि ब्राह्मणका लडका चार २ छः २ छत्तोंके बीस मकान चढे उतरे तो कदाचित एक दो घरमें आटेकी चुटकी मिलजाय तो मिलजाय. प्रायः ऐसा प्रतीत होता है कि, क्या जाने इन घरोंमें किसीने खाया पकाया होगा या नहीं. शेष रहे सेवा उठानेवाले उनको हमारे देशी आस्तिक तो रखतेही नहीं क्योंकि उनके चित्तमें भक्ति बनी रहती है वे उनसे सेवा लेनीही नहीं चाहते परन्तु विना सेवासे देतेभी कुछ नहीं शेष रहा श्रद्धाभक्तिहीन दल सो वह स्वयं संकोचसे अपना पेटही भरता है दूसरेको आश्रय क्या देगा और कोई इस जातिका पेशा ही नहीं जो जिससे यह कमा खावे. इसलिये वर्तमानमें ब्राह्मणजातिकी दशा सबसे प्रथम शोचनीय है। इन सब ऊपर लिखी बातोंका मूल इतिहास है किस कालमें किस जातिने तथा किस देशवालोंने कैसे उन्नति करी इन सब बातोंके जाननेका मूल इतिहास ही है । कौन कब हुआ तथा उसने क्या २ काम किये विना इतिहाससे इन बातोंका पूरा पता मिलना बहुत ही कठिन है। हरएक जातिमें धैर्य्य साहस बल वीर्य्यादि प्रबलगुणोंके वृद्धि करनेवाला एक इतिहासही है। इतिहासोंहीमें ऐसी २ घटनाएँ आती हैं कि, जिनको सुनकर पुरुष अपने असह्य दुःखोंको भी तुच्छ समझकर सन्तोष करता है इतिहासोंहीमें अनेक महापुरुषों के ऐसे सद्गुणगुणोंका वर्णन आता है कि, जिनको सुनकर स्वयं आत्मामें शान्ति आती है। भलेकी भलाई तथा बुरेकी बुराई उत्तमकी

उत्तमता या नीचकी नीचताको चिरस्थायी करनेके लिये एकमात्र उपाय इतिहासही है । परस्पर जातियोंके उपकार अनुपकार या राग द्वेषके भाविप्रजाको दिखलानेका दर्पण एकमात्र इतिहासही है । मरती गिरती या रसातलको जाती हुई अनेक जातियोंके फिर उज्जीवनका हेतु एक इतिहासही है । उस इतिहासका जन्म प्रायः लेखकके अधीन है । लेखक इतिहासोंके प्रायः चार तरहके देखनेमें आते हैं । एक पक्षपाती दूसरा साक्षी अर्थात् मध्यस्थ तीसरा निन्दक और चौथा मूढ । पक्षपाती वह जो कि अपने बडोंकी प्रशंसनीय क्रियाके सिवाय निन्दनीय क्रियाको दिखलावेही नहीं । साक्षी वह जो कि इतिहासकी बातमें अपने पाससे कुछ न मिलावे अर्थात् ज्योंका त्यों लिखे तथा अपनी रायको जुदा अपने नामसे प्रकाश करे । तीसरा निन्दक जो कि, पवित्र इतिहासको नष्ट करनेके लिये वृथाश्रम करे तथा सिवाय निन्दाके और कुछभी न लिखे । चौथा मूर्ख जो कि, लिखने पढनेकी शक्तिसे विना तथा इतिहासोंके मर्म्मसे विना इतिहास लिखनेका साहस करे । इनमें तीन पुरुष तो अधम ही हैं इन लोगोंके लिखे इतिहासोंसे देशका या इतिहास जिज्ञासुमण्डलीका कुछ विशेष उपकार नहीं होता प्रत्युत तुच्छहृदयके पुरुषोंके लिखे महापुरुषोंके इतिहासोंको देखकर भी इतिहास जिज्ञासुपुरुषका चित्त व्यग्रसा हो जाता है । इसलिये मैं परमेश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि, हरएक जातिमें तथा हरएक देशमें इतिहासका लिखनेवाला मध्यस्थ पुरुष होना चाहिये । मध्यस्थ पुरुषोंके लिखे इतिहासोंसे संसारका क्या उपकार होता है तथा कैसे होता है ? होनेका कारण यह है कि; जब हम किसी भी इतिहासको उठाकर देखते हैं तो वह हमको अनेक तरहके प्रसंगोंसे "शिक्षा; शिक्षा शिक्षा " यही पुकार२ कर सुनाता है । शिक्षाका गौरव शिक्षाके उदाहरण शिक्षाका प्रभाव शिक्षाकी प्रणाली तथा शिक्षाके विनाशसे विनाशका विषदरूप जैसा इतिहाससे प्रतीत होता है वैसा प्रकारान्तरसे होना दुर्घट है । तात्पर्य यह कि, इतिहास अनेक

प्रकारसे शिक्षणके गुणानुवाद करता है इसलिये शिक्षाही इस पुरुष की स्थितिका मूल है। यदि पुरुष स्वयं शिक्षित न हो तो दूसरेकी शिक्षाके लिये गुरु नहीं बन सकता यदि सुशिक्षित न हो तो शासन भी नहीं करसकता यदि सुशिक्षित न हो दूसरेकी शासनोंमेंभी अनेक प्रकारके क्लेश उठाता है। यदि सुशिक्षित न हो तो दूसरेको सेवासे भी प्रसन्न नहीं करसकता। यदि सुशिक्षित न हो तो दूसरेके साथ वार्तालापसे भी लाभ नहीं उठासकता। यदि सुशिक्षित न हो तो अपने शरीरको नैरोग्य भी नहीं रखसक्ता। यदि सुशिक्षित न हो संसारमें होनेवाले किसी एक रोजगार पेशेको भी पूरी रीतिपर नहीं करसक्ता। शिक्षा तथा साहससे विना इस पुरुषका इस संसारमें होना केवल व्यर्थ है। जिस पुरुषमें जिस घरमें जिस वंशमें जिस देशमें जिस जातिमें शिक्षाका अभाव हुआ है वस्तुतः उस पुरुषको उस घरको उस वंशको उस देशको तथा उस जातिको अपना भी अभाव ही समझना चाहिये यह हमारा देशभी शिक्षाहीके अभावसे रसातलको जारहा है। वर्तमानमें विदेशीलोग गुरु हैं परन्तु हमलोगोंमें शिष्य बननेकी योग्यता भी नहीं. वर्तमानमें विदेशी लोगोंकी उन्न॰ तिका शिखर अचिन्तनीय है। वैसेही हमारी गिरीदशाका गर्त भी अथाह है। वर्तमानमें जैसे विदेशियोंसे बुद्धि निर्मलताकी अवाधि है। वैसेही हमलोग स्थूलबुद्धिकी अवधि हैं। वर्तमानमें जैसे विदेशी पर स्पर ऐक्यके सम्पुट हैं वैसेही हमलोग भी परस्पर रागद्वेषके पुतले हैं। क्या होनेवाला है? कैसा होनेवाला है? इत्यादि विचार हमको वर्तमान दशाको देखकर बहुतही होते हैं। परन्तु मनुबाबा लिखता हैकि "नात्मान मवमन्येत" अर्थात् अपने आपको धिक्कृति कदापि न करे इसलिये इस नीतिवचनसे डरते हम अपनी दशाके अधिक लिखनेसे उपराम ही होते हैं। यह देश कैसे उज्जीवनको लाभ करेगा इसका विचार हम पीछे लिखेंगे। प्रथम यही लिखना आवश्यक प्रतीत होता है कि,— इसकी किस समयसे लेकर अवनति होनेलगी जो यह इस हालततक

पहुँचा जो अब देखरहे हैं । तो इसका विचार इतिहासोंसे ऐसा प्रतीत होता है कि, पाँच सहस्र वर्ष प्रथम अर्थात् पाण्डवोंके समयतक यह देश जैसे तैसे सर्वथा स्वतंत्र था अनेक शताब्दियोंसे इस देशके क्षत्रिय सूर्य्य या चन्द्रवंशी राज्य करते चले आतेथे विशेष केवल इतना ही था कि, कदाचित् सूर्य्यवंशी लोगोंका अधिक प्रताप हुआ था और कदाचित् चन्द्रवंशी लोगोंका हुआ था परन्तु विदेशसे कभी इस देशमें पाण्डवोंके कालतक चिडिया भी नहीं आई थी देशियोंके साथ सम्बन्ध अवश्य था परन्तु यहां विजयार्थ आनेका किसीका साहस न पडता था ये पाण्डव सबही चन्द्रवंशी राजे थे उस समय इनके तीन दल भारी प्रख्यात थे अर्थात् कौरव पाण्डव तथा यादव ये तीनों दल चन्द्रवंशहीके थे कौरवों तथा पाण्डवोंका परस्पर लडकर विनाश हुआ यादवोंका मद्यपीकर आपसमें रागद्वेषसे विनाश हुआ पीछे वचे युधिष्ठिरादि पांचों भ्राता अभिमन्युके पुत्र तथा अपने पौत्र परीक्षित्को राज्य देकर हिमालयमें गलकर मरगये उसके पीछे परीक्षित्ने यथाबुद्धि राज्यशासन करा पश्चात् राज्यगद्दी अपने पुत्र जनमेजयको दई जनमेजयका ब्राह्मणोंके साथ वैमनस्य हुआ शेषमें इसका कुष्ठादिरोगाक्रान्त होकर शरीर परित्याग लिखा है, बस यहांतक प्राचीन इतिहासकी अवधि है । इसके पीछे क्या हुआ कैसा हुआ इसके जाननेकेलिये कोई इतिहास नहीं मिलता । फिर जबसे विदेशी इस देशमें आने जाने लगे हैं, उस समयसे लेकर आजतकका हाल साफ खुलासा मिलता है परन्तु वीचके अढाई तीन सहस्र वर्षमें इस देशमें क्या क्या हुआ इसका कुछ पता नहीं मिलता यदि कहीं कुछ मिलता भी है तो केवल पुरुषोंके नाममात्र लिखे हैं परन्तु उनके इतिहासका लेश भी नहीं इसलिये विना चरित्रके उनकी नामपरंपरा भी व्यर्थ तथा मिथ्यासी प्रतीत होती है । पाण्डवोंका समय अन्दाज अबसे पांच सहस्र वर्ष पूर्व था जनमेजय भी पाण्डवोंके वहुत काल पीछे नहीं हुआ है किन्तु उनका पौत्र ही था इसलिये यदि शत वर्ष

उनके पीछे भी उसका सत्त्व मानलिया जाय तो आजतक चार सहस्र नवशतवर्ष होते हैं। इनमें दो सहस्र पांचसौ वर्षसे लेकर विदेशी लोगोंके इस देशपर आक्रमणका हाल मिलता है बस बीचके दो अढाई सहस्र वर्षका वृत्तान्त न किसीने पूरा लिखा और न लिखनेकी योग्यता ही रही थी इसलिये हम भी यही कहते हैं कि, जनमेजयके पश्चात् तैसे जैसे अढाई हजार वर्ष गुजरे तो विदेशी लोगोंको मालूम हुआ कि, इस समय आर्य्यावर्तदेश अज्ञाननींदमें सोचुका है कोई प्रतापी पुरुष उसमें नहीं है तो सबसे प्रथम कोई विक्रमी संवत्‌केचार सवाचार शतवर्ष पूर्व तातार देशके शेष नामक राजाका आक्रमण इस देशपर लिखा है । उसने इस देशको वशवर्ति किया राजधानी अपनी शहर पटनामें स्थापन करी और चैनसे शून्यदेशमें राज्य करने लगा। उसके पश्चात् संवत् विक्रमीके तीन सवातीन शतवर्ष पहिले अर्थात् उक्त राजाके एकही शतवर्ष पीछे फारश देशसे चढाईकर दारा नामक राजाने इस देशको अपने अधीन किया इस दाराके पास और भी अनेक देश थे परन्तु जैसी पैदा इसको इस देशसे थी वैसी और सबहीसे मिलकर भी न होती थी। उसने चढाईकर देशको विजय कर अपना सूबा कायम किया था। मालगुजारीमें अर्थात् राज्य भागमें यहांसे स्वर्णका शिक्का फारसको जानेका हुक्म था इस ऊपर कहे दारा नामक राजाके कोई दोसौ, वर्ष पश्चात् अर्थात् संवत् विक्रमीके एकशत वर्ष पूर्व यूनान देशसे सिकन्दर नामक बादशाहने इस देशपर आक्रमण किया पुरुषनामके एक हिन्दु राजाने सिकन्दरका सामना किया सिकन्दरका प्रभाव प्रबल था पुरु राजाने सिकन्दरसे हार खाई सिकन्दर प्रसन्नतासे उसीको अपना सूबा बनाकर कुछ भेट पूजा लेकर अपने देशको लौटगया। यह सिकन्दर विजयप्राप्तिका बहुत ही अभिलाषी था कोई भी देश अपने वर्तमानमें इसने विना विजय छोडा न था या जिसकी इसको खबर न लगी हो वह छूटा हो तो आश्चर्य्य नहीं बाकी परिचित देश इसने सबही विजय कर २ छोड

दिये थे वरूश दिये थे। सिकन्दरके विजयके कोई तीस वर्ष पीछे एक पूर्वोक्त शेष राजाकी वंशमेंसेही एक महानन्द नामक राजाने कुछ काल राज्य किया। उसके पीछे उसीके पुत्र चन्द्रगुप्त नामक राजाने चौबीस वर्ष राज्य किया पश्चात् सूर्य्यवंशान्तर्गत अग्निकुलकी परंपरामें महाप्रतापी विक्रमादित्य राजा हुए। अपने सद्गुणोंसे सारे देशमात्रको स्वाधीन किया अनेक प्रकारकी विद्याकी तथा धर्मकी उन्नति करी। पिछले महानन्दादि राजा लोग बुद्धके धर्मको तथा धर्मकी उन्नति करी। पिछले महानन्दादि राजा लोग बुद्धके धर्मको मानते आते थे परन्तु विक्रमने विक्रमसे फिर वैदिक धर्मको उन्नति दई। बस यह विक्रम नाममात्रका हिन्दुओंका अन्तिम राजा है इसके पश्चात् मुसलमानोंहीके आक्रमण इस देशमें विशेष कर हुए हैं।

इति पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठोऽध्यायः ६.

सबसे प्रथम मुसलमान जातिमेंसे इस देशपर संवत् ७६१ विक्रमीमें खलीफा वलीद् नामक मुसलमानने अपनी राजधानी बगदादसे इस देशपर आक्रमण किया जहांतक बनपड़ा देशको लूटा खसोटा फिर सूबा कायमकर अपने देशको चलागया। (१) उसके पीछे खलीफा माभूँने उसी देशसे इसपर आक्रमण किया परन्तु उसने हिन्दुवोंसे पराजित होकर अपने घरका मार्ग लिया (२) इसके पश्चात् कोई डेढशत वर्षतक बगदादके खलीफा लोगोंकी हकूमत इस देशपरसे उठही गई। पश्चात् उसके संवत् १०३३ विक्रमीमें गजनीके सुबक्तगीन नामक बादशाहने हिंदुस्तानपर आक्रमण किया उस कालमें लाहोरका राजा जयपाल नामक राजपूत था उसके साथ भारी जंग हुआ उस सुबक्तगीनने जयपालको विजय करके इस देशको यथेष्ट लूटा और फिर पीछे अपनी राजधानी गजनीको चलागया उसके जानेके

पीछे जयपालको फिर होश हुई सोचा कि, यदि मुसल्मानोंको पूरी तौरपर दमन न किया जावेगा तो ये लोग जब चाहें समय २पर हमारे देशको लूटा करेंगे ऐसा विचार कर जयपालने गजनीपर चढाई करी मुसल्मानोंके साथ फिर घोर युद्ध हुआ अन्तमें जयपालही हारखाकर कैद हुआ शरणागत होकर जयपालने छूटनेकी प्रार्थना करी तो बादशाहने एक वर्षका भूमिकर प्रथम लेकर छोड देनेकी आज्ञा करी परन्तु उस समय जयपालके पास कुछ भी न था इसलिये उसने लाहौरमें सबही उचित भूमिकरका धन अदा करनेका इकरार किया गजनीका मानों सूबा होकर जयपाल छूटकर आया लाहौरमें आकर अपना दर्बारलगाया और उसी दर्बारमें बादशाह गजनीको भूमिकर देनेकी चर्चा चलाई ब्राह्मणों तथा राजपूतोंकी सभा भरी थी जयपालने सबहीसे जुदी २ संमति पूँछी तो दाहिनी तरफ सबही ब्राह्मण लोग बैठे थे उन्होंने नाह करी और वाम भागमें राजपूत लोगोंसे पूँछा तो उन्होंने कहा कि यदि आप वचन दे आये हैं तो अवश्य उचित धन भेज ही देना योग्य है। जयपालने राजपूतोंको डरपोक बतलाकर ब्राह्मणोंहीकी मानी कुछ देना तो दूर रहा उन बादशाही सिपाहियोंको भी कैद कर लिया जो कि, वहांसे साथ भूमिकर लेनेके लिये भेजे गये थे ऐसी घटना सुनकर गजनीके बादशाह सुबकतगीनको आग लग उठी फिर बडे जोरसे हिन्दुस्तानपर चढाई करी, इधर जयपालने भी देहली, कन्नौज राजपूतानेके अनेक हिंदू राजाओंको साथ लेकर मुसल्मानोंको मुलतानके समीप रोका भारी युद्ध हुआ अन्तमें हिन्दू राजे सबही हारगये, सुबकतगीनने विजय पाया फिर हिन्दुओंको खूब सताया मारा-लूटा बीस वर्षतक इसी देशमें रहकर बादशाही करी पीछे अपनी मौतसे मरा तो उसका छोटा बेटा अस्माइल राज्यगादीपर बैठा उसके दो चार महीनेहीके पीछे उससे उसके बडे भाई महमूदने अपने पिताकी-गादी लेली (३) यह महमूद गजनवी अपने पिताकी राजधानी गजनीमें रहा करता था इसने समय पर वारम्बार हिन्दुस्तानपर आक्रमण

किया है प्रथम आक्रमण संवत् १०५७विक्रमीमें किया उसमें जहांतक उससे वन पडा पंजाब देशको खूब लूटा खसोटा और अनेक तरहका माल गजनीमें पहुँचाया जयपालको फिर कैद किया शरण होकर छूटा तो जयपालने ऐसे जीवनको अच्छा न समझ अन्तमें जीता ही चीता चिनवा कर जल मरा तो उसके स्थानपर महमूदने उसके पुत्र आनन्दपालको लाहौरमें अपना सूबा बनाकर नियत किया फिर महमूद अपने देशको चला गया (१) प्रथम आक्रमणके तीन ही वर्ष पीछे महमूदने दूसरा हमला हिन्दूस्तानपर इस कारणसे किया कि, एक पंजाबप्रान्तमें बठिण्डेका राजा भूमिकर भेजनेसे उपराम हुआ था महमूदने आकर उसको विजय किया उसका किला तोड डाला और माल लूटकर अपनी राजधानी गजनीको चलागया (२) तीसरा आक्रमण महमूदका एकही वर्ष पीछे फिर इस कारण हुआ कि, लाहोरका आनन्दपाल तथा मुलतानका सूबा लोदी यह दोनों महमूदसे बागी होगये थे अर्थात् भूमिकर देनेसे इन्कार करते थे। अन्तमें महमूदने आकर फिर दोनोंसे युद्ध किया दोनोंको विजय करके जो मिला लूटा खसोटा और अपनी राजधानीको चला गया (३) तीन वर्षपीछे फिर महमूदने इस देशपर आक्रमण किया कारण उसका यह था कि, हिन्दुस्तान मात्रके हिंदू राजाओंने मिलकर यह मता किया था कि, मुसलमानोंको अपने देशमें घुसने देना अपने धर्म तथा धन दोनोंकी हानिका मूल है सबहीने मिलकर मुसलमानोंसे खूब युद्ध किया कई सहस्र मुसलमान मारेगये चालीस दिन लडाई हुई फिर महमूदने हार तो न खाई परन्तु सामने होकर लडाई करनी उचित न समझी इधर उधर डाके मारने आरम्भ किये राजपुत्रोंका जुडाव कम होगया तो उसने नगरकोटपर हमला किया अर्थात् कोट कांगडा ज्वालामुखीके देवमन्दिरोंको लूटा वहांसे उसको बहुत धन मिला मन्दिरके खजानेमेंसे साठ लाख मुहर मिला और सातसौ मन स्वर्ण तथा चांदीकी ईंटें मिलीं एवं दोसो

मन स्वर्ण शुद्ध तथा दो हजार मन चांदी जैसी तैसी अर्थात् अशुद्ध मिली एवं बीस मन जवाहिरात जिसमें अनेक तरहके मोती, हीरा मूँगा, लाल इत्यादि मिले हुएथे कहते हैं कि, राजा भीमके वक्तके जमा किये हुए चले आये थे। अन्तमें मिले मिलाये सबही समेटकर महमूदने अपने घरका मार्ग लिया (४) दो वर्ष पीछे फिर महमूदने आक्रमण किया मुलतानके राजाको लूटके तथा उसको बाँधके गजनीमें लेगया (५) दो वर्ष पीछे फिर महमूदने थानेसर अर्थात् कुरुक्षेत्रपर आक्रमण किया मन्दिरको तोडकर जो माल था सबही लूटा और थानेसर शहरको अग्निसे दग्ध कर दिया जातीवेर अनेक अच्छे २ हिन्दुओंको कैदकर अपनी राजधानी गजनीमें लेगया (६) फिर तीन वर्ष पीछे उसने दो बार देश काश्मीरपर आक्रमण किया परन्तु दोनों बार शरदीके समय समीप आनेसे वह कार्यकर न हुआ कुछ सेनाकी हानि हुई तो पीछे अपने देशको चला आया (७) (८) फिर दो वर्ष पीछे अर्थात् संवत् १०७३ विक्रमीमें महमूदने एक लाख सवार तथा बीस हजार प्यादाको साथ लेकर हिन्दोस्तानपर आक्रमण किया पिशावरके रास्ते काश्मीरके नीचे २ गंगा यमुना नदीसे पार होकर कनौज शहरको लूटना चाहा परन्तु कनौजका राजा महमूदको सुनकर ही अपने बालबच्चेको लेकर महमूदकी शरणागत हुआ महमूदने उसको अपना कृपापात्र जानकर कनौज उसीको देदिया। फिर महमूद मथुरापर आया मथुराको खूब लूटा मन्दिर तोडे मन्दिरोंका खजाना लूटा मथुरा शहर बरबाद कर दिया अन्तमें मथुरा शहरकी ५३००० सहस्र प्रजाको कैदकरके महमूद अपनी राजधानीमें लेगया (९) फिर पाँच वर्ष पीछे अर्थात् संवत् १०७८ विक्रमीमें महमूदने कनौजके राजाकी मदत करनेके लिये एक बुन्देल खण्डके राजापर आक्रमण किया बुन्देलखण्डको मनमाना लूटा और पीछे अपने देशको चलागया (१०) फिर एकही साल पीछे महमूदने लाहौरकी गादीपर विराजमान दूसरे जयपाल पर चढाई करी यह

गादीपर बैठताही महमूदको भूमिकरसे जवाब देचुका था अर्थात् कर नहीं देताथा उसको महमूदने विजय किया और मुसल्मानी फौज सदाके लिये लाहोरमें जमी रहनेके लिये प्रबन्ध करके फिर अपनी राजधानी गजनीको चलागया (११) उसके पीछे संवत् १०८० विक्रमीमें महमूदने फिर बारहवां आक्रमण किया यह आक्रमण उसका सबसे बडा तथा सबसे अन्तिम समझना चाहिये। यह अन्तिम आक्रमण उसका सोमनाथके मन्दिरपर हुआ वह बहुतदिनसे सुना करता था कि, जितनी दौलत हिंदोस्थानमें सोमनाथके मन्दिरमें है उससे चौथाईभी और दुनियाँमें नहीं है इसलिये इसके पहले ग्यारह आक्रमण भी सोमनाथके जानेका मार्ग साफकरनेके लिये समझने चाहिये अबकी बार महमूदको किसीने मार्गमें नहीं रोका वह सीधा सोमनाथको लक्ष रखकर ,देश काठियावाड प्रान्तमें पहुँचा काठियावाडके जिमींदार लोगोंने मन्दिरके पूजारी लोगोंसे महमूदके रोकनेका मत पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया कि, हमारा देवता प्रबल है इस म्लेच्छका विध्वंस करडालेगा ऐसा सुनकर काठीलोगभी विश्वाससे शान्त रहे मन्दिरकी बनावट बहुतही विचित्र थी साथही उसके पूजारी लोगोंकी ऐसी प्रबल धूर्तता थी कि, कोई राजा महाराजाभी उस मर्मको जान नहीं सकताथा यही कारण था कि,उन्होंने काठी लोगोंको महमूदके साथ लडनेसे भी रोका यह धूर्तता क्या थी,? किस कारण थी ? कारण उसका यह था कि, पण्डालोगोंने देवमन्दिरको कई वर्षोंसे सिद्धपीठ प्रसिद्ध कररक्खा था अब यदि काठी लोगोंसे सहकारिता चाहें तो उनके सिद्धपीठमें बट्टा लगता है और यदि नहीं चाहते तो मन्दिरमें हानि पहुँचती है परन्तु पण्डालोगोंने इन दोनों कोटिका उत्तर यह सोचा था कि, महमूदको बहुतसा धन देकर प्रसन्न कर लेंगे और मन्दिर बचवा लेंगे ऐसे होनेसे काठी लोगोंमें भी सिद्धपीठका पोल नहीं खुलेगा यह विचार पूजारी लोंगोका उचित तो था परन्तु हुआ नहीं विपरीत हुआ महमूदने धन लेना मञ्जूरही नहीं किया कारण कि,

महमूद भी मन्दिरकी करामात देखनेको बहुतही इच्छा रखता था परन्तु करामात उसमें बनावटी थी जिसका मर्म्म महमूदको क्या अच्छे २ विचारशीलोंको भी नहीं मिलता था अतिविस्तृत अनेक प्रकारके शिल्पोंसे सुशोभित विविध मणिमय प्रभावशाली मन्दिरके मध्यप्रदेशमें शिवलिङ्गका स्थापन था वह शिवलिङ्ग भी मणिमय ही था उसके स्थापनेके समय उसके नीचे कई मन जवाहरात दबाई गई थीं भाव यह कि, मन्दिरकी ऐसी सुन्दर तथा विचित्र बनावटथी यही चित्त चाहता था कि, इसके चौतरफ फिरकर देखते ही रहा करें धूर्त्तता उसमें यह थी कि, एक लोहेकी पोली प्रतिमा पुरुषाकार शंकरकी बनाकर भूमिसे कोई आठ फिट ऊंची निराधार स्थिर कर रक्खी थी आकर्षण उस प्रतिमामें ऊपर तथा नीचे चारों तरफ चिनी हुई अयस्कान्त पाषाणकी शिलाओंका था उन पाषाणोंके चारों ओर खैंचनेसे लोहेकी मूर्त्ति गिरती न थी बस यही वहां विचित्र रचना थी। कि, जिसका मर्म्म महमूदको मन्दिर गिरादेनेतक भी नहीं मिलाथा अन्तमें महमूदने दर्याफ्त करनेमें बहुत प्रयत्न किया तो इसी देशके एक पदार्थविद्याकुशल पुरुषने बतलाया महमूद उस कारीगरसे चुम्बक पाषाण तथा लोहेके योगको सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ तथा उस पुरुषको बहुत धन इनाम दिया मन्दिरके गिराने कालमें काठी लोगोंने देवताके भरोसेपर न रहकर मन्दिर बचानेके लिये महमूदके साथ बहुत युद्ध भी किया परन्तु कुछ पेश नहीं गई उभयत्र अनेक पुरुषोंकी हानिभी हुई और मन्दिर भी गिरादिया गया कहते हैं कि, इस मन्दिरमें महमूदको चांदी सोना हीरे लाल मोती मूंगा मणि मुक्ता इत्यादि इतना माल मिला है कि, जितना उसकी सात पीढीतक भी किसीने न देखाहोगा किसीकी कुछभी न सुनी लूट-मार करके फिर अपने देश गजनीको चलागया, देश जाकर छःवर्ष-मात्र जीतारहा फिर अपनी मौतसे ६३ वर्षका होकर मरगया।

इति षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

प्रिय पाठक इस महमूदके मरनेके पीछे इसीके दो पुत्र थे उनमें बडेका नाम सुलतानमुहंमद था और छोटेका नाम मसऊदथा इनमें बडा बेटा बडा ही नेक तथा रहमादिल था और छोटा अपने पिताकी तरह बहुतही क्रूर था महमूद ही के किये प्रबन्धसे राज्याधिकारी बडा बेटा ही हुआ छोटा द्वेषसे थोडी दूर ग्रामान्तरमें जा बसा और वहां जाकर अपने बडे भाईको पत्र लिखा कि, हमको राज्यगद्दीकी दरकार नहीं है परन्तु तीन प्रान्त जो कि, पिताहीके कालमें हमने जयकरके स्वाधीन किये थे वे हमारे हैं हमको मिलने चाहिये यह वार्ता उसकी सुलतान मुहंमदने न मानी उसने कुछ सेना जुटाकर गजनीपर चढाई करी जंग करके बडे भाईको विजय करके राजगादीपर आप बैठगया। और उसी वक्त हुकम देकर अपने बडे भाईकी आंखे निकलवा डाली अर्थात् अन्धा करदिया । यह सभी बातें महमूदके मरने पीछे एकही सालमें होगई दूसरे साल मसऊदने काश्मीरपर आक्रमण करके उसको खूब लूटा तथा स्वाधीन किया अनेक मन्दिर गिरवादिये । फिर गजनीमें वापिस गया उसके पीछे संवत् ११०२ में फिर मसऊदने हिन्दोस्थानपर आक्रमण किया हांसी हिसारके किलेमें बहुत धन सुना था सभी लूट लेगया शहर उजाड दिये मन्दिर गिरा दिये और गजनीको लौटती बार अपने पुत्रको मुलतानका सूबा बनाकर छोडगया जब मसऊदने हिन्दोस्थानपर हमला किया था उसी कालमें उसके शत्रुगणने गजनीका विनाश भी किया था मसऊदके गजनी पहुंचतेही उनके साथ जंग हुआ मसऊदने हार खाई उनकी शरण होकर रहनाभी कबूल किया परन्तु वे प्रबल शत्रु फिर भी इसको क्लेश देनेसे शान्त न हुए अंतमें मसऊदने गजनीको छोडदेनेकी इच्छाकरी । खच्चर ऊंटोपर अपना माल लादके तथा सेनाको भी साथ लिया अपने बडेभाई जिसको नौ वर्ष प्रथम अन्धा करचुका था उसकोभी साथ लेकर हिन्दोस्थानको

चला आया दरयाय सिन्धपर आकर उसकी सेना उससे विपरीत होगई सेनाने उसका सभी माल लूटलिया और अपना राजा फिर उसी अन्धेको मान लिया मसऊदको उसकी सेनाहीने कैद करलिया अन्धेने राज्य कार्य्य अपनेसे न चलता देखकर अपने बडे पुत्र अहमदको राजा बना दिया अहमदने तख्तपर बैठतेही सबसे प्रथम अपने पिताका बदला लेनेके वास्ते अपने चाचा मसऊदको जीवितहीको भूमिमें गडवा दिया इसी मसऊदका पुत्र मौदूद नामक बलख बुखारेका सूबा था उसने अपने पिताका मरण सुना तो गजनीको चला आया उसके आतेही गजनीकी प्रजाने उसको वहांकी राज्यगादी दी इसने नव वर्षतक गजनीके तख्तपर राज्य किया इतनेमें इधर हिन्दोस्थानमें हिन्दू लोगोंने फिर जोर पकडा मन्दिर जैसे वैसे फिर बना लिये लडनेको सेना तैयार करली मौदूद नव वर्षतक राजगादी भोगकर अपनी मौतसे मरा तो उसके पीछे गजनीके तख्तपर इब्राहीम नामक बैठा इस इब्राहीमका इतिहास लिखने वाले मुसलमानोंने बहुतही अच्छा तथा न्यायप्रिय लिखा है परन्तु लिखते हैं कि, इसने हिंदोस्थानपर आक्रमण किया तो जहांतक कोई प्रथम नहीं पहुंचा था यह वहांतक भी पहुँचा इसनेभी हिंदुओंको खूबही लूटा सताया और गजनीको जाता हुआ एक लाख हिन्दुओंको कैद करके साथही गजनीमें लेगया.

इब्राहीमके मरनेके पीछे चार पांच पुरुषोंने यथाक्रम गजनी राजगादीको भोगा परन्तु उनका हमारे देशके साथ विशेष सम्बन्ध नहीं था इसलिये उनको यहां लिखनेका अनुपयोग जानकर जिसने इस देशपर आक्रमण या इसदेशमें राज्य किया ह उन्हींको लिखते हैं। इब्राहीमके पीछे संवत् १२४७ विक्रमीमें सुलतान मुहमँद गौरीने जिसको शहाबुद्दीन गौरीभी कहते हैं आक्रमण किया। इससे प्रथम महमूद गजनवीसे लेकर आजतक किसीने देहलीके राजसिंहासनपर पादारोपण न किया था। केवल मुलतान या लाहौर ही अपना पूरा सम्बंध

मान रक्खा था । परन्तु शहाबुद्दीनने सबसे प्रथम बठिण्डेके किलेपर चढाई करी उस समय दिल्लीके तख्तपर राजापृथ्वीराज विराजमान था इसने शहाबुद्दीन आनेको सुनकर आगेसे आपभी तैयारी करी । भटिण्डेके किलेकी तरफ कूंच करा तो थानेसर शहरसे सात आठ कोश पर दोनों दलोंका मिलाप होगया आपसमें खूब युद्ध हुआ यहांपर पृथ्वीराजकी सेनाने विजय लाभ किया । मुसलमानोंने हार खाई । पृथ्वीराजको विजयकी बहुतही प्रसन्नता हुई । अपने मनसे मुसलमान जातिको तुच्छ जानकर निर्भीत होकर अनेक प्रकारके विषय सुखभोगमें मग्न हुआ परन्तु शहाबुद्दीनको अपनी हारसे बहुतही लज्जा हुई वह हिन्दोस्थानमें विजय पानेके लिये अनेक उपाय सोचने लगा बहुतही यत्नसे उसने बीस हजार तातारदेशका सवार अपने साथ लिया और दरयाय सिन्धसे पार उतरआया । पार उतरकर शहाबुद्दीनने पृथ्वीराजको पत्र लिखा कि, तुमको उचित है कि, तुम दीन इसलामको स्वीकार करो अन्यथा इसका नतीजा अच्छा न होगा पृथ्वीराजने इस पत्रके उत्तरमें लिखा कि, तुम लोग यदि अपना अच्छा चाहते हो तो जहांसे आयेहो वहांही चले जाओ अन्यथा तुम लोगोंको क्लेश उठाना पडेगा उस कालमें दिल्लीके राजा पृथ्वीराजके सहायक डेढसौ सरदार लोगथे और तीन लाख सवार थे। तथा प्यादा लोग और भी अधिक थे । तीनहजार हाथी थे इतनी सेना मिलकर पृथ्वीराजकी तरफसे शहाबुद्दीनके सामने आई । दरियाय घाघरके वार पर दोनों सेनाका उतारा हुआ मुसलमानोंकी सेनाको बहुतही थोडी जानकर हिन्दूलोग प्रसन्नतापूर्वक सुखनींदसे सोने लगे । मुसलमानोंने उनको गाफिल जानकर आक्रमण किया पृथ्वीराजकी सेना सोती २ उठकर भागने लगी उस समय सामना करनेका किसीका साहसही न रहा । शेषमें पृथ्वीराजको मुसलमानोंने कैद करलिया । इस वार्ताको चितौडके राजाने सुना तो उसने अनेक राजपूतोंको साथ लेकर मुसलमानोंका सामना किया भारी जंग हुआ अन्तमें चितौडका राजाभी मारा गया उस

स्थानसे बहुतही दौलत मुसलमान लोगोंके हाथ लगी। ऐसी हारकी खबरें सुनकर अनेक ग्रामोंके जिमींदार लोग आपसे आप मुसलमानों के दास होगये। फिर शहाबुद्दीनने चितौड शहरपर आक्रमण करके उसको लूटा तथा उसमें निवास करनेवाले अनेक राजपूतोंको मरवा डाला उसके पश्चात् शहाबुद्दीनने दिल्लीपर आक्रमण किया यहां पर पृथ्वीराजका पुत्र अपने पिताकी गादीपर बैठचुका था उसने सुनतेही शहाबुद्दीनकी शरण ग्रहण करी। ऐसा करनेसे शहाबुद्दीन उसपर प्रसन्न होगया और शहर दिल्लीको न लूटा। शहाबुद्दीनने दिल्लीमें रह-नेके लिये अपने प्यारे तथा चतुर गुलाम कुतबुद्दीनको नियत करदिया थोडीसी सेना भी उसको देदी और आप गजनीको चलागया। पीछे कुतबुद्दीनने अपनी बुद्धिसे सेना बढाकर शहर मेरठको अपने हाथमें करलिया और दिल्लीके तख्तका पूरा मालिक बनगया। बस यहांसे हिन्दूलोगोंकी राज्यश्री पूर्णरूपसे निर्मूल हुई। शहाबुद्दीनने गजनीमें जाकर अपनी सेनाकी और वृद्धि करी और थोडेही दिन पीछे फिर हिन्दोस्तानपर आक्रमण किया इस आक्रमणसे कनौजके राजा जयचंद्र को विजय किया शहाबुद्दीनकी यह चढाई कुतबुद्दीनको साथ लेकर हुई थी कनौजके राजा जयचंद्रके साथ भारी संग्राम हुआ शेषमें कुतबुद्दीनके तीरसे कनौजका राजा मारा गया। मुसलमानोंने कनौजको मन माना लूटा उजाडा। पीछे कुतबुद्दीन तो फिर पीछे अपनी राजधानी दिल्ली में चला आया। और शहाबुद्दीन बनारसको बरबाद करनेके इरादेसे बनारसको गया। वहां जाकर अनेक प्रकारसे हिन्दुओंको सताया उनके और मन्दिर तोडडाले घर लूट लिये अच्छे २ पुरुषोंको कैदकर लिया और अन्तमें अपने भाईको बीमार सुनकर गजनीको चला गया। थोडे दिनों पीछे फिर हिन्दोस्तानको लूटनेकी इच्छासे आया दिल्ली प्रान्तको लूटकर गजनीको जा रहा था कहते हैं कि; मार्गमें खँखर जातिके लोगोंने मार डाला। परन्तु लडकर मारना नहीं लिखा है किन्तु छिपके धोखा देकर सोते पडेका गला काटा गया इस सहा-

बुद्दीन गौरीके किसी इतिहासवालेने नव आक्रमण इस देशपर लिखे हैं और किसीने बारह ग्यारह तथा चौदह भी लिखे हैं । मरनाभी इसका किसी इतिहासवालोंने किसीतरह लिखा है । तथा किसीने किसी तरह लिखा है इतिहास रासावालेने इसका शब्दवेधी बाणसे चन्द्रभाटके हाथसे मरना लिखा है जो भी हो इसके नीच तथा हिन्दू लोगोंके अकारणिक शत्रु होनेमें कुछ सन्देह नहीं है ।

इस ऊपरलिखे शहाबुद्दीनका कोई पुत्र न था । इसलिये इसके पीछे इसके मुल्कका मालिक इसका भतीजा हुआ । उसमेंसे काबुल तथा कंधारपर एक उसीके सूबेने अपना तहद जमालिया । और हिन्दोस्तानमें दिल्लीके तख्तपर शहाबुद्दीनका गुलाम कुतबुद्दीन स्वतन्त्र हुआ चार वर्षतक उसने दिल्लीके तख्तपर बादशाही करी और संवत् १२६६ में घोडेसे गिरकर मरगया । इसके मरनेके पश्चात् दिल्लीके तख्तपर इसका आराम नामक पुत्र नियत हुआ । परन्तु उसको नालायक जानकर शमससदीनने अधिकारसे च्युत किया । अर्थात् उसको उतारकर तख्त दिल्लीका स्वामी आप बन बैठा । यह समस्सदीन भी शहाबुद्दीनका गुलामही था । इसको शहाबुद्दीनने मोल बिकता खरीदा था । फिर अच्छा बुद्धिमान् जानकर शहाबुद्दीनने इसको अपनी बेटीभी विवाह दी थी । इसने दिल्लीके तख्तपर बैठकर अनेकबार हिन्दुप्रजाको सताया है । इसने सूबा बंगालपर चढाई करके बंगालके हिन्दुओंको बहुतही सताया और वहांका सूबेदार अपने पुत्र नसीरुद्दीनको बनाकर दिल्लीमें आया । इस शमस्सदीनने हिन्दुओंपर अनेकबार प्रजा होनेपर भी आक्रमण किये हैं तख्तपर बैठनेके एकही वर्ष पीछे गवालियरको लूटा । मंदिर तोडे फिर देश मालवा की तरफ दौडा । उज्जैन पुरीको लूटा उसके मन्दिर गिराये वहांपर दो मूर्ति एैनीं थीं उनमेंसे एक तो शंकरकी थी दूसरी राजा विक्रमादित्यकी थी । इसने दोनोंको उठवाकर दिल्लीमें जुमा मस्जिदके दरवाजेपर रखवाई उनके हाथ पांव नाक कान तोड डाले कहा॰

तक लिखें इस नीचके हिन्दूजातिपर अनेक तरहके अत्याचार करने लिखे हैं अन्तमें इतना ही समझना चाहिये कि, इसने हिन्दूजातिके पूरे शत्रु होकर चौबीस वर्षतक हाकिमी करी और शेषमें अपनी मौ-तसे मरगया। उसके पीछे उसका रुक्नुद्दीन नामक पुत्र तख्तपर बैठा परन्तु इसको बदचलन जानकर दीवानोंने तख्तसे उतार दिया। और उसके स्थानपर उसकी भगिनीको दिल्लीके तख्तपर नियत किया इस औरतने भी अपने पिताके तख्तपर बैठके अच्छी हकूमत करी। परन्तु अन्तमें एक अपने हफशी गुलामपर आशिक हुई उसके साथ फँसनेसे दीवान लोगोंने इसकोभी तख्तसे जुदा करना चाहा परन्तु यह स्त्री बडी चतुर थी इसने युद्धकी तैयारी करदी दीवानोंके साथ खूब युद्ध हुआ अन्तमें पकडी गई और दीवानोंने बाठिण्डेके किलेमें उसको कैद करदिया।

इस चतुर स्त्रीने उस किलेमें भी साहस नहीं छोडा किलेके हाकि-मको अपना स्नेही बनालिया फिर उससे विवाहभी करलिया। और उसके साथ मिलके कुछ फौजभी जुटाई। तथा दिल्लीके तख्तके लिये दो बार खूब युद्ध किया। अन्तमें अपने शत्रुओंके हाथसे सहित अपने पतिके मारी गई। इस स्त्रीने कुल तीन वर्ष तक तथा छःमहीने राज्य किया था इस स्त्रीके पीछे छ- वर्ष तक तीन चार मुसलमानोंने थोडे २ दिन राज्य किया फिर संवत् १३०१ विक्रमीमें नसीरुद्दीन नामक दिल्लीके तख्तका मालिक हुआ। इसको मुसलमानोंने अपने इतिहा-सोमें बहुतही नेक पुरुष लिखा है। बीस वर्षतक दिल्लीके तख्तपर बादशाही करके अन्तमें अपनी मौतहीसे मरा है। इसके हाथसे हिन्दूजातिका भी बहुत कम सताना लिखा है। इस लिये कुछ अच्छा भी हो तो आश्चर्य नहीं।

नसीरुद्दीनके पीछे इसका वजीर गयासुद्दीन दिल्लीके तख्तपर बैठा इसको राज्यकार्योंमें बहूतही कुशल लिखा है। इसने अपने चालाक २ कर्मचारियोंको संग्रहकर दूसरे सभी निकाल दिये थे।

इसका यह भी हुक्म था कि, मेरी बादशाही मात्रमें किसी हिन्दुको हकूमतके स्थानपर नियत न किया जावे । इसी बादशाहका एक बङ्गाल प्रान्तका सूबा बिगड बैठा उसने भूमिकर भेजना बन्द किया बादशाहने उसपर दो बार फौज भेजी दोनों बार बादशाही फौजकी हार हुई तीसरी बार बादशाहने स्वयं बंगालपर आक्रमण किया तो तुगरलखान नामक सूबा भाग गया । बादशाहने सूबा अपने पुत्र कराखानको बनाया । और प्रथम सूबेका घर बार स्त्री बच्चे सभी धूलिमें मिला दिये । इसके पीछे बादशाह आप दिल्लीमें आगया इसका पुत्र शत्रुओंके हाथसे एक जंगलमें मारागया । उसीके शोक से संवत् १३४१ में इस बादशाहने भी प्राण देदिये । उसके पीछे दिल्लीशहरके प्रतिष्ठित लोगोंने कराखानके पुत्र कैयकवादको तख्तपर नियत किया । कैयकवादने तख्तपर बैठतेही अनेक प्रकारके सुख आराम भोगकरने प्रारम्भ किये । राज्यका यावत् अधिकार अपने नजामुद्दीन वजीरके हाथ देदिया वजीर भीतरसे बदमाश था ।

समय पाकर बादशाहको निकालकर स्वयं गद्दीपर बैठना चाहता था यह सभी वार्ता दिल्लीका हाल कराखानने बंगालमें सुनपाया । अपने पुत्रको समझानेके लिये उसने अनेक पत्र शिक्षामय लिखे । परन्तु ऐश आराममें मग्न हुआ पुत्र पिताके पत्रको बांचकर फेंक दिया करता था । लाचार होकर पिताने कुछ सेना लेकर बङ्गालसे दिल्ली-पर चढाई करी दिल्लीके पास दर्याय घघरके किनारे पर आकर डेरा जमाया तो पुत्रने भी सेनाको तैयार होकर जानेका हुक्म दिया । यह कार्य्यवाही सभी वजीर बदमाशही की थी पिताके आनेसे पुत्र मिल-नेको जाना चाहता था परन्तु वजीर नीचने रोक दिया । कराखानने फौज आती देखकर निश्चय किया कि, लडाई अवश्य होगी । परन्तु फिर भी उसने अपने पुत्रको प्रेमसे पत्र लिखा लडाईसे प्रथम पिता पुत्रका आपसमें मिलाप होना चाहिये फिर जैसा होगा किया जायगा कैयकवादने पत्र बांचते ही फिर अपने पिताके मिलनेकी तैयारी

करी। परन्तु वजीर बदमाशने कहा आप बादशाह हैं वह आपका सूबा है। बादशाह किसीको मिलने जावे, ऐसा कायदा नहीं है। कैयकबाद फिर रुक गया। और पिताको कहला भेजा कि यदि मुलाकात करनेकी इच्छा हो तो बेशक चले आइये।

फिर वजीरने कहा कि, पिता हैं तो क्या हुआ वर्तमानमें तो सेना लेकर शत्रु बनके आया है। इसलिये मुलाकात एकान्तमें नहीं होनी चाहिये किन्तु शाही दर्बारमें आवे और तीन वार शाही तख्तके सामने (ताजीम) प्रणाम करके बकायदे बैठकर बात चीत करे मूर्ख बादशाहने वजीर ही की मानी अपने पिताको वैसाही लिखभेजा पुत्रस्नेहाक्रान्त पिताने स्वीकार किया समयपर दर्बार ही में मुलाकात करने आया। और बादशाही तख्ततपर बैठे पुत्रके आगे सबके सामने तीन वार दण्डवत् प्रणाम किया परन्तु साथही पिताके छम २ आंसू बह निकले ऐसी दशाको देखकर बादशाही दर्बार भी स्तब्धसा होगया पुत्रसे भी न रहा गया झट तख्तसे उठकर अपने पिताके कमरमें जा लिपटा पिताने पुत्रको गलेसे लगाया। पीछे पुत्रने पिताको तख्तपर बैठाकर प्रणाम किया और साधारण बात चीत होनेलगी उसके पीछे एकान्तमें भी पिताने बहुत ही समझाया परन्तु उसके बंगाल चले जानेके पश्चात् वह जैसेका वैसाही रहा अर्थात् उसने अपने ऐश आराम को छोडकर राज्यकी तरफ कुछ भी दृष्टि न दई थोडे दिन पीछे बादशाही दर्बारमें कईएक दल होगये। जो कि, बादशाहको निकालकर अपना बादशाह बनाया चाहतेथे। उनमें खिलजी लोगोंने मुगलोंका तिरस्कार करके अपना राजा जलालुद्दीनको नियत करलिया था। और किला दिल्लीमें बादशाही महलमें गुप्तचर लोगोंद्वारा बादशाह कैयकबादको मरवाकर दरयाय यमुनामें फेंकवा दिया था। बस इसके मरने पीछे गुलामोंकी बादशाही तथा गौरीके खान दानकी समाप्ति हुई।

इति सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

उसके पश्चात संवत् १३४४ विक्रमीमें खिलजी जातिका जलालुद्दीन फिरोज दिल्लीके तख्तपर बैठा । इसने तख्तपर बैठते ही कैयकबादके पुत्रको जो कि, अभी बालकही था मरवा डाला पीछे दक्षिण देशपर आक्रमण करके उसको विजय किया । जहांतक उससे बनपडा धन लूटा मन्दिर तोडे अच्छे २ हिन्दु जातिके लोगोंको कैदकरके दिल्लीमें लाया । उसके पश्चात् उसने दिल्लीमें एकही वर्ष आराम लिया पीछे गुजरात देशपर चढाई करी तो उसके भाईके पुत्र अलाउद्दीनने कहा कि मेरेको आज्ञा हो तो इस देशको मैं ही विजयकर आताहूं । जलालुद्दीनने अपने भतीजेको प्रसन्न होकर आज्ञा दई वह सुन्दर सेना सजाकर दर्याय नर्मदासे पार हुआ और गुजरात काठियावाडके सभी छोटे २ राजे विजय किये । सारे देशके बडे २ नगरोंको लूट लिया हिन्दू लोगोंके अनेक अच्छे २ मंदिर गिराकर उनके स्थानपर मस्जिदें बनवा दई. कहते हैं कि ,इस यात्रामें अलाउद्दीनको हीरा मोती मूंगा सोना चांदी इतना इस गुजरात देशमें मिला था कि, जितना वह बडी कठिनतासे अपने घरमें पहुँचा सका तात्पर्य यह कि, इतना धन उस कालमें और किसी बादशाहके खजानेमें भी न था । इस वार्ताकी खबर उसके चचा जलालुद्दीनको भी मिली उसने चाहा कि, लूट की दौलत बादसाही खजानेमें आनी चाहिये परन्तु अलाउद्दीनको स्पष्टरूपसे ऐसा कह न सका किन्तु समयकी प्रतीक्षा करने लगा । उस तरफ अलाउद्दीनको भी मालूम था कि, शाही दर्बारमें मेरे शत्रुलोग बहुत हैं । इस लिये वह भी प्रतिक्षण सावधान होकर रहने लगा और बादशाहको कैद करनेके अनेक प्रबन्ध सोचने लगा एक दिन उसने अपने भाई अलमासबेगको बादशाहके पास भेजा—कहा कि, आपके दर्बारमें मेरी बुरी कहनेवाले लोग बहुत हैं । इसलिये मैं खुद सेवामें हाजर नहीं हुआ परन्तु चित्तसे तो मैं आपका आज्ञाकारी पुत्रही हूं यदि आपको दौल-

तकी इच्छा हो जो कि मैं देश गुजरातसे लूटके लाया हूं तो आप मेरे साथ एकान्त किसी नियत स्थानपर मुलाकात करना स्थिर करें। वहां मैं अपने दिलका सारा हाल सुनाऊंगा और दौलत भी आपके अर्पण करूंगा। भाईने उक्त सन्देशको वैसेही बादशाहको पहुँचाया। बादशाहने मुलाकात करना स्वीकार किया स्थान नियत हुआ तो फिर अलाउद्दीनने कहला भेजा कि, मुलाकातके कालमें बहुत भीड भाड नहीं होनी चाहिये। बादशाहने वैसेही किया तब बादशाहको अकेला देखकर अलाउद्दीनके लश्करने उसीवक्त उसका शिर काट-कर बरछेपर टांगलिया और सारी फौजमें फिराया यह सभी वृत्तान्त संवत् १३५१ विक्रमीमें हुआ इसलिये इसने कुल सात वर्षतक दिल्ली-के तख्तपर बादशाही करी पूर्वोक्त रीतिसे अपने चाचाको मारकर अलाउद्दीन दिल्लीके तख्तपर बैठा इसने अपने समयमें पश्चिमकी तरफ मुगलोंसे और दक्षिणकी तरफ राजाओंसे सदाही लडाई चलती ही रक्खी। अजमेर शहरको इसने खूब लूटा और सोमनाथको फिर गिरवाकर उसके बराबरपर एक मस्जिद बनवाई। वहांपर एक बुद्धकी मूर्ति भी थी उसको इसने तुडवाकर फेंकवा दिया और वहांपर हिन्दुलोगोंके बहुतसे पुस्तकालय थे जलवा दिये। वहांके राजाको मरवादिया और उसकी कमला देवी नामक राणी जो कि अपने कालमें संसार भरमें एकही सुन्दरी थी अपने स्वाधीन किया। उस राणीका एक कर्पूरनामक लडका सेवक था वह भी बहुतही सुन्दर था ये दोनों रत्न अलाउद्दीनके हाथ लगे। इसने हिन्दू मुसल-मानोंके एक करनेका प्रयत्न भी किया था परन्तु इस कामसे दीवान मुसाहिब लोगोंने उसको रोकदिया। कहते हैं कि, इसने अपनी फौजमें चार लाख चौहत्तर हजार सवार रक्खा हुआ था इसने दोबार चितौडपर आक्रमण किया। कारण उसका यह था चितौडके राणे भीमचन्द्रकी स्त्री पद्मिनी थी वह उसने सुनपाई। राणोंको कहलवा भेजा कि यदि तुं अपनी स्त्री मेरेको देदे तो आपको कुछ नहीं कहेंगे आपका

राजभी बना रहेगा परन्तु राजाने इस वार्ताको स्वीकार न किया फिर अलाउद्दीनने लिखा कि, तुम अपनी स्त्रीको यदि हमको दिखला भी दो तौ भी हम आपके साथ प्रसन्न रहेंगे इस वार्ताको भीमचन्द्रने मान लिया । एक शीश महलमें अलाउद्दीनको अपने घरमें बुलाया और शीशेके परदेमें अपनी पद्मिनी स्त्रीका दर्शन उसको कराया अलाउद्दीन पद्मिनीके स्वरूपको देखता ही स्तब्धसा होगया । उधर राजाके कैद करनेका प्रबन्ध उसने करही रक्खाथा । उसी समय धोखेमें आकर भीमराणा पकडा गया। दिखला कर जब शहर चितौडसे थोडी दूर बाहरतक राणा अलाउद्दीनके साथ शिष्टाचारके लिये गया तो वहां उनके सवारोंने राणाको कैद करलिया । अलाउद्दीनने फिर कहा कि. अबभी छोडदेते हैं तुम अपनी पद्मिनी देना स्वीकार करो राणा चुप रहा उसी कालमें भीतरसे राणी पद्मिनीनें अलाउद्दीनको पत्र लिखा कि, मैं खुद आपके पास आजातीहूं परन्तु मेरे साथ मेरी सखी दासी सात सौ और भी डोलीमें सवार होकर आवेंगी सबका पालन आपको यथायोग्य करना स्वीकार हो तो लिख भेजिये मैं आती हूं । उस मूर्ख बेसमझ स्त्रीजितने इस वार्ताको प्रसन्नतापूर्वक मान लिया। राणीने सात सौ डोलीमें सात सौ सिपाही सजाकर भेजदिया। उनको राजदारा जानकर अलाउद्दीनके सिपाही तो दूर ही रहे उनमेंसे एक सिपाहीने उतरकर झट राणाको उसी डोलीमें बिठलाकर शाही फौजके बाहर करदिया । थोडा आगे जाकर राणा तेज घोडे पर सवार होकर चितौडके किलेमें पहुंचा। पीछे अलाद्दीनने डोलियोंकी तरफ देखा तो सभी सिपाही भरे हुए जानकर अपने साथ हांसी हुई ऐसा मनमें विचारकरके बहुत दुःख माना अलाउद्दीनने इसी दुःखसे दुःखी होकर फिर चितौडको घेरा परन्तु विजय न कर सका । कुछ दिन पीछे फिर अलाउद्दीनने चितौडपर आक्रमण किया । इस युद्ध में राजाके सभी पुत्र मारेगये । केवल एक जिसको स्वयं चितौडसे भगादिया था कि, मेरी वंश बनी रहे वही बचा । जब राणाको कोई

उपाय अपने बचनेका न जान पडा तो एक काष्ठकी बडी चिता चिनवाकर उसमें अपनी कुलस्त्रियोंके जलानेका उपाय किया। चितौडके किलेहीमें एक भारी चिता बनवाई। और उसमें उस पद्मिनीके समेत सभी प्रसन्नतापूर्वक जलकर मरगई। धन्य वह कुलीन स्त्रियां थीं जिन्होंने परपुरुषके अङ्ग सङ्गसे अग्निमें जलना अच्छा समझा पीछे राजाने किलेसे बाहर मैदानमें होकर युद्ध किया और मारागया। पीछे बादशाहने चितौड भीतर जाकर किलेको तोड डाला और जो माल मिला लूट लिया। कपूर जिसका कि, वृत्तान्त थोडा पीछे आचुका है उसको बादशाहने बडे दर्जेपर नियत किया था बादशाहकी आज्ञासे इसी कपूरने दक्षिण देशके कर्णाटक प्रान्तको विजय किया था यहांतक कि, बादशाहको इसपर इतना विश्वास तथा प्रेम था कि, सारा राज्यका प्रबन्ध इसीके ऊपर डालके ऐश आराममें दिन व्यतीत करने लगा जब कपूरने सारा प्रबन्ध अपने हाथमें करलिया पीछे बादशाहको विष देकर मारा डाला बस यहांतक बीस वर्षपर्यन्त अलाउद्दीनने दिल्लीके तख्तपर राज्य किया।

पीछे कपूरका हुक्म तेज था उसने बादशाहके दो बडे बेटोंकी बिना किसी अपराधके आंखें निकलवाडालीं और सबसे छोटे बेटेको तख्तपर बिठला दिया। तात्पर्य उसका यह था कि, इसको नाम मात्रका राजा बनाकर मैं हकूमत करूंगा परन्तु यह वार्ता उमराव लोगोंको अच्छी न लगी। इसलिये उन लोगोंने मिलकर पैंतीस दिनके भीतर ही उसको कतल करवा दिया और दिल्लीके तख्तपर अलाउद्दीनके मुबारक नामक चौथे बेटेको बिठलाया। इसने भी गुजरात देशको तथा दक्षिण देशको खूब सताया पीछे इसने मलिक खसरोंको अपना मुसाहिब नियत किया। मलिक खसरो स्वयं बादशाह होना चाहता था इसने मुबारकको खूब ऐश आरामोंमें प्रवृत्त कर दिया। जब वह अच्छी तरहसे बदनाम होगया तो उसको मलिक खसरोंने मरवा डाला कुल चार वर्ष इसने दिल्लीके तख्तपर राज्य किया। बस यहां

तक खिलजी जातिवाले मुसलमानोंका राज्य भी समाप्त हुआ।

जब मलिक खसरो मुबारकको मारकर आप तख्तपर बैठा तो मुसाहिब लोग तथा प्रजागण उसके अत्याचारसे बहुत ही दुःखी हुए उसको तख्तपर बैठे एक वर्ष भी न हुआ था। जो गाजीबेग तगलक नामक मुलतानका सूबा बहुतसी फौज लेकर दिल्लीपर चढकर आया। मलिक खसरोको उसने कतल किया और मुसाहिब लोगोंकी संमतिसे आप दिल्लीके तख्तपर बैठ गया यह तगलक असलमें पीछे कहे बलबन बादशाहका एक गुलाम था। अपने शुभ आचरणोंसे मुलतानका सूबा बन गया था। पीछे संवत् १३७७ विक्रमीमें यह दिल्लीके तख्त पर बैठा और अपना खिताब गयासुद्दीन तगलक नियत किया। इसने भी अपने सत्त्वकालमें तैलङ्ग देशको खूब लूटा अनेक मंदिर तुडवाये। लक्षों अच्छे २ हिंदू लोग कतल करवाये कुल चार वर्ष राज्य करके एक मकानके नीचे दब कर मर गया।

उसके पीछे संवत् १३८१ में उसका पुत्र सुलतान मुहंमद दिल्लीके तख्तपर बैठा। इसने भी अपने सत्त्वकालमें बंगाल कनौज पंजाब तथा गुजरात प्रान्तको जहांतक बन पडा खूब सताया है। यह पुरुष बहुत ही क्रूरस्वभावका था। अन्तमें सताईस वर्ष राज्य करके संवत् १४०७ विक्रमीमें मर गया। उसके पीछे उसका फिरोजशाह नामक भतीजा दिल्लीके तख्तका बादशाह हुआ। इसको इतिहासवेत्ता लोगोंने भला पुरुष लिखा है। इसने अपने सत्त्वकालमें किसी तरफ चढाई नहीं करी किन्तु मुल्क हाथमें रहा उसीको अच्छी तरहसे आबाद रखना इसने अच्छा समझा, कहते हैं कि, इसने देशको अच्छी तरह बसानेके लिये तीस नहरें खुदवाई थीं एकसौ पुल बन्धवाया था। और चालीस मस्जिदें बनवाई थीं। तथा तीस स्कूल भी नियत किये थे। अपने जीते जी इसने हिन्दू लोगोंको भी नहीं सताया है बस इतने काम पिछले मुसलमान बादशाहने किसीने नहीं किये थे इसीने किये इसलिये इसको पिछलोंकी अपेक्षा अच्छा अवश्य कहना चाहिये।

इसने कुल अठतीस वर्ष दिल्लीके तख्त पर बादशाही करी और अन्त-
में संवत् १४४४ में अपनी मौतसे मरगया। फिरोशाहके मरनेके पी-
छे तख्तशाहीका भारी विवाद हुआ। एक छःवर्ष होके भीतर चार
बादशाह हो गये। सबसे प्रथम सुलतान मुहंमद बैठा वह परस्पर
रागद्वेषसे एकही वर्षमें समाप्त हुआ उसके पीछे अबूबकार वह भी ए-
कही वर्षके भीतर समाप्त हुआ उसके पीछे नासरुद्दीन बैठा वह दो व-
र्षके भीतर मारागया उसके पीछे हिमायु बेग बैठा वह भी तीनवर्षके
भीतर रागद्वेषसे समाप्त हुआ इन चारोंके पीछे उक्त फिरोजशाहका
प्रपौत्र सुलतानमहमूद तख्तपर नियत हुआ। इसके बैठनेके प्रथमही
देशमें शान्ति स्थापित न थी किन्तु चारोंतरफ कोलाहल मचरहा था।
अनेक सूबे तख्तशाहीसे विमुख होकर स्वतन्त्र हकूमत करते थे मुस-
लमानोंके आपसमें रागद्वेषसे अनेक प्रान्त इस देशके बैरान हो गये थे
ऐसी खबर समरकन्दमें तैमूरबादशाहने सुनी तो अपने पौत्र पीरमुहं-
मदको हिन्दोस्तानकी तरफ फौज देकर भेजा उसके पीछे संवत्-
१४५४ विक्रमीमें समरकन्दसे चलकर तैमूरभी मुलतानमें पहुँचा
उसके आनेके प्रथमही उसका पौत्र मुलतानपर विजय पाही चुका था
तैमूरने आगे बढनेके लिये लश्कर एकत्र किया और जंगलके मार्गसे
बीकानेर भटनेरके किलेपर धावा किया। दोनों किले लूटलिये। अ-
नेक हिन्दूलोग कतल करवादिये एक लाखको कैदकर लिया फिर
दिल्लीपर चढाई करी। वहां आकर वह कैदी भी कतलकरवा दिये
तैमूरकी सेना अधिक देखकर सुलतानमहमूद अपनेबाल बच्चेको लेकर-
गुजरात देशको भाग गया। पीछे शून्य शहरपर तैमूरने अपना कब्जा
किया। सभी शहरके लोगोंने तैमूरही को अपना बादशाह मानलि-
या। फिरभी तैमूरने शहर लूटा और आधेसे अधिक फुंकवा दिया
हिन्दोस्थानमें तैमूरने अपने तीन सूबे नियत किये और पंद्रह दिल्ली
के तख्तपर बैठके पीछे हरिद्वारको जाकर बैरान किया उसके पीछे अने-
क पहाडी राजे लूटकर लाहोरमें पहुँचा। उसको भी खूब लूटा अनेक

हिन्दू कतल किये कैद किये पीछे बुखारेपर चढाई करी उसको भी फ-तह किया । परन्तु! इसके जानेके पीछे हिन्दुस्थानमें इसके राज्यका तेज कुछभी न रहा किन्तु जिन सूबोंको वह नियतकर गया था वही अपने २ रियास्तोंके मालिक बन बैठे । तथापि नाममात्रका दिल्लीक तख्तका बादशाह तैमूरही रहा ।

एवं नाममात्रका बीस वर्षतक बादशाही करके संवत् १४७० में वह भी मरगया । उसके पीछे मुलतानके सूबा खजरखानने दिल्लीके तख्तपर पाँव जमाया।इसने सात वर्षतक बादशाही करी फिर मरगया उसके पीछे उसके पुत्र सैयद मुबारक शाहने चौदह वर्षतक दिल्लीके तख्तपर बादशाही करी वह रागद्वेषसे अपने शत्रुओंके हाथसे मारागया तो उसके पीछे उसके पुत्र सयद मुहंमदशाहको दिल्लीका तखत मिला। इसके पिताको एक वजीरने मरवादिया था । किसी कारणान्तरको लेकर इसने उसको मरवादिया इसके समयमें भी प्रजामें कोलाहल बहुत रहा । एक वहलोलनामक मुलतानके सूबेने इसपर चढाई भी करी थी । चार महीनेतक दिल्लीके किनारे पडा रहा परन्तु विजय न पाई । अन्तमें हैरान होकर मुलतानको चला गया । पीछे मुहंमदशाह भी दस वर्षतक दिल्लीके तखत पर बादशाही करके मर गया । उसके पीछे संवत् १४९९ में उसका पुत्र सयद अलाउद्दीनशाह दिल्लीके तखतपर नियत हुआ । यह पुरुष बहुतही ऐसा आराम करनेवाला था । इसके वक्तमें सबी सूबे लोग स्वतंत्र होगये थे । हुकमशाहीको कुछ भी न समझते थे । और इसने एक बदाउं शहरमें उमदा बाग बनवाया था । उसीमें चैन किया करता था । इसकी एक वजीरके साथ कुछ बिगड गई थी । उसको इसने कयद करदिया था । परन्तु चालाक वजीर कयदसे भागकर दिल्लीमें पहुंचा । वहां जाकर शाही खजाना लूट लिया । और उसी वक्त मुलतानके सूबे बहलोललोदीको लिखा कि मैदान खाली है । वहलोलने उसी वक्त मुलतानसे कूंच किया । और बहुत ही जल्दी दिल्लीमें पहुंचा । आगे तखतशाहीको

खाली देखकर आप उस तखतपर नियत हुआ । अलाउद्दीनने बदा-ऊंके बगीचेमें दिल्लीका हाल सुना परन्तु अपनेको असमर्थ जानकर शान्त रहा । बहलोलने भी इसको शान्ति देखके कुछ पिनशन मुकरर करदई । बस यह उसीमें आनन्द रहा और उसी बागमें जो कि इसने शहर बदाऊंमें बनवायाथा अठाईस वर्षतक आराम लेकर अन्तमें संवत् १५३४ विक्रमीमें मरगया बस यहातक दिल्लीके तखतके बंधमें सयदोंका खानदान समाप्त हुआ ।

इति अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ नवमोऽध्यायः ॥ ९. ॥

उसके पश्चात् दिल्लीके तखतपर अफगानोंका खानदान नियत हुआ । यह अफगान लोग दरयाय सिन्धुके पारके किनारेके निवासी हैं । वह लोग प्रायः व्यापारी होते हैं बादशाहोंकी मिहरबानीसे इनको मरतबे मिलने लगे । अब समय आया तो स्वयं बादशाह भी बनगये । इनमें सबसे प्रथम बहलोलशाह ही दिल्लीके तखतपर बैठा है । इसने बैठते ही राज्यका प्रबन्ध उचित किया । जोरवाले वजीरोंको निकाल दिया चारों तरफके सुबोंको स्वाधीन किया । परन्तु सूबा जौनपुर अधिक बलिष्ठ था इसलिये वह कईबार यतक-रनेसे भी हाथमें न आया । किन्तु उसके मरनेके पीछे उसके पुत्रने बादशाही अधीन मानली । पीछे बहलोलने अपना राज्य अपने जीते ही पुत्रोंको बांट दिया । उनमें सकन्दरलोदी नामक बडे पुत्रको दिल्लीका तखत दिया । और दूसरोंको जहां तहांके सुबे नियत किये । अन्तमें अठतीस वर्षतक दिल्लीके तखतपर बादशाही करके संवत् १५४४ विक्रमीमें अपनी मौतसे मर गया उसके पीछे सकन्दरलोदीने उनतीस वर्षतक दिल्लीकी बादशाही करी इसने अपने सूबोंसे लडकर देशको वैरान कर दिया था । जहां यह चढकर गया कहीं भी विजय न पाई । परन्तु अपने जीवनमें यह आरामसे नहीं बैठा हिन्दु

ओंको भी इसने थोडा नहीं सताया था । मथुरा शहरको लूटा मंदिर तोडे उनकी जगापर मसजिदें बनवादीं अच्छे २ हिंदुओंको कतल करवाया इत्यादि अनेक अनर्थ किये थे पीछे संवत् १५७४ बिक्रमीमें यह मरा तो इसके स्थानपर इसका बडा पुत्र इब्राहीमशाह-लोदी दिल्लीके तखत पर नियत हुआ इसने भी अपने सूबोंके साथ लडाई टंटा करने प्रारम्भ किये प्रजाके लोग बहुत दुःखी हुए । तो दुखी होकर मुलतानके सूबा दौलतखानने काबुलमें शाह बाबरको लिखा कि हिन्दोस्थान वैरान होरहा है यदि आपसे बनपडे तो उपाय कीजिये । बाबरने इस पत्रके बांचते ही हिंदोस्थानपर चढाई करी पेशावरके रस्ते होकर पहले देश पंजाबको लूट लिया । पीछे दिल्लीपर धावा किया पानिपततक आपहुँचा तो इब्राहीमकी भी आंख खुली उसको वहां ही रोका । पानीपतमें खूब युद्ध हुआ इब्राहीम इसी युद्धमें मारागया कुल सातवर्ष इसने बादशाही करी । बस लोदीखान-दानका यही अन्तिम बादशाह था । उसके पीछे संवत् १५८१ विक्र-मीसे दिल्लीका तखत मुगललोगोंके हाथ आया.

बाबरने दिल्लीके तखतपर बैठकर अनेक उलट पलट किये इसकी राजपूतोंके साथ बहुतही बिगडगई थी । इसलिये इसने राजपूतोंको बहुत सताया और दीवान मुसाहिब भी अनेकों निकालकर नये नियत कर दिये केवल चारवर्षतक दिल्लीके तख्तपर राज्यकरके संवत् १५८६ में अन्तमें अपनी मौतसे मरगया.

उसके पीछे उसका पुत्र हिमायु दिल्लीके तखतपर बैठा । परन्तु इसने तखतपर कुछ आराम नहीं पाया इसके समयमें दंगे फसाद लडाई टांटे इतने हुए हैं कि जिनका स्मरणकरनाभी भयदायक प्रतीत होता है अन्तमें यह दिल्लीसे काबुलको चलागया था । वहां उसके जानेका कारण यह था कि उसका पुत्र अकबर उस कालमें वहां इसके एक भाईके पास था कि जिसके साथ इसकी भीतरसे मित्रता न थी । इसलिये हिमायु दिल्लीको छोडकर पहले देश फारसमें गया ।

वहांसे शाह ईरानसे कुछ मदद मिली तो काबुलपर आया। उसको आते देखकर उसका भाई काबुल छोडकर भागगया। वहां हिमायुंका पुत्र अकबर उसको मिलगया फिर हिमायु नौ वर्षतक काबुलहीमें राज्य करता रहा। परन्तु उसके भाईने उसको आराम न लेनेदिया। अन्तमें भाईको पकडकर हिमायुंने उसकी आंखें निकलवा डालीं फिर वह लाचार होगया तो प्रार्थनासे मक्केके हजके लिये कयदसे मुक्त होकर मक्केही की तरफ जाकर मरगया।

हिमायुंके काबुलकी तरफ जानेके पीछे ही एक सोरी जातिका शेरशाह कोई राज्याधिकारी था। उसने दिल्लीके तखतको लाभ किया इसने अपने सत्त्वकालमें अच्छे २ कामाकिये हैं पांचवर्षतक बादशाही करके यह भी मरगया तो इसके स्थानपर इसका पुत्र सलेमशाह दिल्लीके तखतपर बैठा। नववर्षतक इसने भी बादशाही करी उधर हिमायुंने काबुलसे चढाईकर फिर इस देशको स्वाधीन किया तब अकबर तेरह वर्षका था अन्तमें हिमायुं दिल्लीमें संवत् १६११ विक्रमीमें एक सीढीपरसे गिरकर मरगया। उसके पीछे उसका पुत्र अकबरशाह दिल्लीके तखतपर बैठा यह अकबर राज्यकार्य्योंमें अच्छा चतुर था। हिन्दूलोगोंको इसने बहुत सताया नहीं। परन्तु राजपूतानेके अच्छे २ सबी रजपूतोंकी लडकियां इसने अनेक यत्नकरके विवाहीं थीं। किसी मतमतान्तरका आग्रही न था।

सभी मतवालोंकी बातें सुना करता था। इसके समयमें प्रजामें कुछ शान्ती भी बनी रही। यह पुरुष तेरा वर्षकी उमरसे दिल्लीके तख्तपर बैठकर दीर्घ कालतक राज्य करके अन्तमें संवत् १६६१ विक्रमीमें शहर अकबराबादमें मरा है।

उसके पीछे वहांही उसका पुत्र जहांगीर तख्तपर नियत हुआ है। यह पुरुष बहुत ऐश आराम करनेवाला था। शराब भी बहुत पीता था। एक अपनी बेगमके वशवर्ती था। इसके सत्त्वकालमें भी प्रजामें कोलाहल मचा रहता था। राज्यविद्रोह भी आपसमें खूब चलता था।

यह भी बाईस वर्षतक राज्याधिकारको भोगकर संवत्१६८४विक्रमीमें अपनी मौतहीसे मरगया उसके पीछे उसका शाहजहां नामक पुत्र दिल्लीके तख्तका मालिक बना। इसने भी अपनी बुद्धिके अनुसार थोडा काल दिल्लीके तख्तपर राज्य किया। परन्तु परस्पर राज्यविद्रोह अति वृद्ध हो रहा था। इससे वह रुक न सका। उसी कारणसे यह अपने पुत्र औरंगजेबके फरेबसे संवत्१७१३विक्रमीमें कारागारमें दिया गया अर्थात् कयद किया गया। अपने पिताको कयद करके दिल्लीके तख्त पर औरंगजेब स्वयं नियत हुआ। सातवर्ष पीछे अर्थात् संवत् १७२० विक्रमीमें शाहजहां कयदखानेहीमें मरगया। उधर औरंगजेबने दिल्लीके तखतपर अपना अधिकार जमाकर हिन्दोस्थानदेशमात्रमें ऐसा कोई प्रतिष्ठित हिन्दु न होगा जिसको उसने सताया न हो। तथा ऐसा कोई प्रसिद्ध देवमन्दिर न होगा जिसको उसने तुडवाकर उसके स्थानमें मसजिद न बनवाई हो बस हिन्दुओंके सतानेमें इसकी अंतिम शिखा समझनी चाहिये। जैसे दीप निर्वाण होनेपर आता है तो अंतमें शिखा निकाल कर जलता है वैसेही यहां तक हिन्दूलोगोंके सताये जानेकी अवधि है। संवत् विक्रमीके चार सवाचार सहस्र वर्ष प्रथमसे लेकर संवत् १७६३ विक्रमीतक अर्थात् दो सवा दो हजार वर्षतक६२ विदेशी पुरुषोंने हिन्दोस्थानमें जैसा मनमें आया वरकी नीतिसे राज्य किया है। इनमें प्रथम चार पुरुष ईरान तथा फारसके थे। उनके पीछे सात पुरुष खलीफा कुलके थे। उनके पीछे दस पुरुष गजनवी कुलके थे उनके पीछे चार पुरुष गौरी कुलके थे। उनके पीछे दश पुरुष बादशाही गुलाम घरानेके थे। उनके पीछे तीन पुरुष खिलजी जातिके थे उनके पीछे आठ पुरुष तगलक जातिके थे। उनके पीछे चार पुरुष सैयद थे। उनके पीछे तीन पुरुष लोदी घरानेके थे। उनके पीछे औरंगजेबतक नौ पुरुष मुगल घरानेके थे। बस इस रीतिसे बासठ विदेशी लोगोंने इस देशपर अधिकार जमाकर कालक्रमसे पाँउ उठालिया। इन बासठ पुरुषोंमेंसे एकका इतिहास भी ऐसा नहीं है कि जिसने हिन्दुलोगोंको कुछ भी वस्तु समझकर उचित वर्ताव किया हो। किन्तु जिस

२ ने आपसमेंकी राग द्वेषसे जिस २ वक्त फुरसत पाई उसी २ कालमें हिन्दुओंको सताना इन लोगोंने अपना स्वर्गका साधन परम धर्म समझ रखा था । यह ऊपर मैंने मुसलमान बादशाहोंके विषयमें जो कुछ लिखा है उसके केवल उनके नियत होने तथा परिवर्तन होनेका सन् संवत् मात्रही समझना चाहिये क्योंकि इस लेखमें उनके अत्याचार प्रदर्शन नहीं कराये गये हैं । परन्तु यदि हम उनके अत्याचारोंको भी थोडासा यहांपर दिखलावें तो वर्तमान गवर्नमेण्टकी राज्यशासनाको देखकर तथा उन लोगोंके अत्याचारोंको स्मरणकर पाठकलोगोंके चित्तमें यह अवश्य निश्चय होगा कि वे लोग धार्मिक सुशिक्षित तथा न्यायशील न थे किन्तु जाहल लुटेरे तथा पतित थे । राजाका धर्म प्रजामें शान्ति स्थापन करके अपना भाग उपार्जन करनेका है । लूट खसोटके अपने घरको भागना डाकू लूटेरोंका काम है राजाओंका नहीं है । एक अंगरेज अपने इतिहास हिन्दमें लिखता है कि महमूद गजनवीने बगदादके खलीफाके सामने यह प्रतिज्ञा करी थी कि मैं हिन्दोस्थानपर अनेक बार आक्रमण करके हिन्दुलोगोंको कतल करूंगा जो दिन इसलामको कबूलकरेंगे उनहीको जीता छोडूंगा । बाकी सभीको मारडालूंगा । इसी जवाँमरदीकी प्रतिज्ञापर खलीफाने उसको एक ऊटपटांग खिताब (उपाधि) भी दिया था उसी प्रतिज्ञाके पूरी करनेके लिये महमूदने इस देशपर अनेक हमले किये । और उनमें कोई भी हमला उसका ऐसा न था कि, जिसमें अनेक हिन्दुलोगोंके सुन्दर सुन्दर लडके लडकियोंको अपने गुलाम लौंडे लौंडियांके बनानेकेलिये बटोरकर न लेगया हो । तात्पर्य्य यह कि जब जब आया तभी तभी सोमनाथ जैसे अच्छे २ प्रतिष्ठित अनेकों मन्दिर गिराये । उनमेंसे लक्षों रुपयोंका माल लूटकर अपने देशको लेगया । मथुरा शहरको इसने बीस दिनतक लूटा है सैकडों ऊंट चान्दी सोनेके लादकर अपने देशको भेजे थे । अच्छे२मन्दिर सभी गिराये थे । मथुराका राजा इसी आपत्तिमें अपने हाथसे अपनी सन्तानको कतलकर आत्मघात

करके मरगया था। यहांसे महमूदने पांच हजार तीनसौ आदमीको कयदकरके अपने देश गजनीमें भेजा था। थानेसरके अनेक मन्दिर गिराये मूर्तियांतोड डालीं और एक मूर्ति बनी तनी गजनीमें भेजी गई। वहां शाहीदर्बारके सामने उसको गडवायाकि मुसलमानलोग उसपर पाउं रखकर दर्बारमें आया करें। वहांसे भी दोलाख हिन्दु कयद करके गुलाम बनानेके वास्ते गजनीमें भेजे गये। यह सभी हिन्दुके इतिहासमें मुसलमानोंहीने लिखा है। इतिहास ताजअल मासरमें लिखा है कुतवल्दीनने जब मेरठ तथा अलीगढको विजय किया है। उसने हिन्दुलोगोंके यावत् मन्दिर तोडकर उनके स्थानपर मस्जिदें बनवाई थीं और उस कालमें जिसने उन दोनों शहरोंमें दीन इसलामको न स्वीकार किया मरवा दिया गया। सुन्दर सुन्दरोंको गुलाम और लौंडे बनालिया गया। इसी कुतवल्दीनके विषयमें तबकात नासरीमें ऐसा लिखा है कि इनसे जिस कालमें बिहार प्रांतको लूटा था उस कालमें उसी प्रान्तका एक लाख ब्राह्मण कतल करवाया था। और हिन्दू लोगोंका एक प्राचीन पुस्तकालय भी वहांपर जलवा दिया था अमीर खसरीने इतिहासअलाईमें लिखा है कि–फीरोजशाहने दक्षिणको विजय करके अपने रहनेवाले शहरके चौतरफ हिन्दू लोगोंके अनेक मन्दिरोंमेंसे सहस्रों मूर्तियां मङ्गवाकर चिनवाई थी और कई वर्षतक प्रतिदिन एक हजार हिन्दू कतल करके उन बूत्तोंको स्नान कराया जाता था इसी फिरोजशाहका दोवार मुलक मालवेका ऐसा लूटना लिखाहै कि उसके पीछे कई वर्षतक मुलक मालवामें लोगोंको रोटी कपडासे भी लाचार होना पडा था। एवं अलाउद्दीन खिलजीके विषयमें अमीर अबदुल्लाखान साहिब यों लिलिखते हैं कि, यह बादशाह नाम तो दीन दीनका पुकारा करता था परन्तु भीतरसे इसका मतलब लूट मारहीमें रहता था। इसने गुजरात प्रान्तके खम्भात शहरके आसपास दीन इसलामकी उन्नतिके लिये अनेक हिन्दुलोगोंके खूनकी नदी बहाई थी। इसने भी इस देशको

लूटकर सोना चान्दी हीरा मोती मूंगा इत्यादि अनेक तरहका माल इतना अपने देशमें पहुंचाया था कि, यदि अकल होती तो पीढ़डी पर पीढ़डी कियामततक खाते रहते तो भी कमती न था। इसके सिवाय हजारों छोटे २ बच्चे तथा बीस हजार सुन्दर २ स्त्री इस देशकी अपने देशमें गुलामी करवानेके लिये कैद करके भेजी थीं। लूट मार करना तो उसके समीप एक साधारण काम था। प्रबन्ध करनेमें भी ऐसा चतुर था कि, बाजारमें दालरोटी भी उसीके बांधे हुए निरखसे बिका करती थी एकवार किसी कोतवालने विना उसके हुकुमके थोडा महसूल अधिक लेलिया था। तो उसको अपने सामने चाबूकोंसे मरवा डाला था। बाजारमें यदि कोई तोलमें कमती तोलता पकडा जाता तो उसके शरीरके मांससे वही वस्तु पूरी कराकर दई जाती थी। इतिहास देखनेसे इसकी अनेक बातें ऐसीही देखनेमें आती हैं एक दिनका वृत्तान्त है अलाउद्दीनने काजी लोगोंसे पूछा कि हिन्दूलोगोंके वास्ते शरहका क्या हुकूम है। काजी लोगोंने कहा जहांपनाह शरहमें हिन्दुलोगोंको बतौर जमीनके लिखा है इनसे जब चांदी तलब करली जावे। तो दूसरी बार सोना तलब करनेकी कोशिश करना चाहिये खुदाका हुकुम है कि, मैंने हिन्दुलोगोंको मुसलमानोंकी खिदमतके लिये पैदा किया है। पैगम्बर साहिबके कथनानुसार हदीसजियालदिनमें लिखा है हिन्दूकाफर जब तक दीन मुहम्मद कबूल न करे उनको कयद करो कतल करो गुलाम बनाओ धन माल लूटकर लाचार करो और उनको दीन इसलाममें लानेके लिये अनेक तरहका भय तथा तकलीफ दिखलाओ क्योंकि काफरोंको मुसलमान करना तुम्हारा फर्ज है इत्यादि काजीलोगोंकी ऐसी सम्मति सुनकर बादशाहने प्रसन्न होकर कहा कि काजी साहिब शरह तो दूर रही मैंने खुदही यह हुकुम दे रखा है कि, किसी भी हिन्दुके पास विना मोटा माटा खाने पीने या पहरनेकी वस्तुके बहुत जरमाल न रहने पावे। इस बादशाहके समयमें हजारों हिन्दुओंकी ऐसी दशा होगई थी जो कि

रोटी कपडेसेभी तंग आगये थे यहांतक सख्ती होगई थी अच्छे २ घरानोंकी रीति रसमोंको भी हुकुमसे बन्द कर दिया गया था सारी प्रजा त्राहि त्राहि शब्दको पुकारती हुई प्राणोंसे भी उदास होचुकी थी इसके मकानकी डेहुडी आगे चालीस पचास हिन्दुओंकी लाशें हमेशां धरी रहा करती थी दौलतवाले हिन्दूको पकडकर इसीलिय सजा दी जाती थी कि तैने अपना माल शाही खजानामें क्यों नहीं दाखिल किया यह अलाउद्दीन जालम ऐसा था कि इसने अपने भाई तथा भानूजेको भी वागी होजानेके भ्रममें खाल खिचवा दी थी और उनके गोस्तका पुलाउ पकाकर उनके बाल बच्चेको खिलवाया था। उनके हमुराहीलोगोंको हाथियाओंसे चिरवा डाला था। शहर दौलताबादको इसने ऐसा बरबाद किया कि, उसका कुत्ता बिल्ली भी जानसे बाकी न छोडा। बडे २ मजबूत स्थानोंको गुबारोंसे उडवाया अन्धोंको घोडेकी पूंछके साथ बांधके मरवाया। इसी अलाउदीनने शहर पटनाको जिसकी इमारत सारी सङ्गमरमरकी थी धूलीमें मिलाया। और यहांका एक प्राचीन पुस्तकालयभी जलाया। जो किला इसने दिल्लीमें बनवाया था उसके लिये पत्थर मसाला सबी हिन्दुलोगोंके बरबाद किये मन्दिरों तथा बुत्ताहीका था। जलालदीन खिलजीको अमीर सखरोंने अपने इतिहासमें नरम मिजाज लिखा है। कारण उसका यह है कि, वह प्रायः चोरोंको विना दण्ड दियेही छोड दिया करता था परन्तु जो जो उसने हिन्दूलोगोंके साथ वर्ताव किये हैं उनसे उस का नरम मिजाज होना सिद्ध नहीं होता। हाँ इतना अवश्य अनुमान होता है कि जिन चोरोंको वह मेहरवानी करके छोड दिया करता था वे जातिके अवश्य मुसलमान होते होंगे तथा चोरी हिन्दुओंके घरोंमें किया करते होंगे। इसलिये ऐसा होनेपर उनको आदलशाही दर्बारसे रिहाई मिलनी भी कुछ आश्चर्य नहीं है। परन्तु इतिहास मात्रमें इसका हिन्दुओंपर नरम मिजाजका उदाहरण कोई भी नजर नहीं आता। इसहीने मुलक मालवा गुजरात तथा कच्छको लूटके तबाह कर दिया

था किसी हिन्दूके घरमें इसने सिवा मट्टीके बरतनोंके तथा फटे पुराने कपडोंके और कोई भी कीमती वस्तु न छोडी थी। हिन्दु जातिके बीसहजार लडके लडकियां इसने उनके माता पिताओंसे जुदा करके अपनी मजलिसके मुसलमानोंको गुलाम लौंडे बनानेके लिये इनामें बांट दिये थे तथा चौदहहजार हिन्दू रईसोंके सिर कटवाकर किलेकी दीवारोंपर रखवाके हरएकपर जुदा दीपक प्रज्वलितकरवाकर दरियाव यमुनामें फेंकवाया था। प्रजाको ऐसा कंगाल करडाला था कि वस्तु खरीदनेके लिये एक पैसा भी किसीके पास न मिलता था इस पापी बादशाहके वक्तमें अनेक लोग भूँखके मारे दरियाओंमें डूब डूबकर मरे थे। हाल इसकी नरम मिजाजका है यदि तेज मिजाज होता तो क्या जाने क्या २ करता अमीर खसरोंने इतिहास लिखनेके कालमें बादशाहकी खुशामदका बहुतही ख्याल रखा है। इधर तो बादशाहको नरम मिजाज ठहराया है। और उधर हिन्दुलोगोंको कौवे लिखा है। परन्तु अमीर खसरोंको बादशाही खुशामदके शब्द कुछ अनुचित नहीं है। क्योंकि उस समयमें तो हिन्दूलोगोंका भी यह हाल था कि सिवाय बिसमिल्ला अलरहमान रहीम इत्यादि शब्दोंके अपनी जबान भी नहीं खोलते थे। हिन्दूलोगही खुद अपनी जातिको काफर बेसमझ बेशहूर इत्यादि शब्दोंसे वर्ताव करते थे। यदि कोई हिन्दू युद्धमें सामने मरकर शहीद हुआ तो उसके दोजकमें जानेवाला लिखा। और यदि मुसलमान हुआ तो उसको बहिशत गामी लिखा तात्पर्य यह कि उस कालमें हिन्दूलोग भी अपनी हिन्दीभाषाको छोडकर फारसी तथा अरबीहीको पसन्द करते थे। इसी वार्ताको श्रीगुरुजीने भी कहा है कि–क्षत्रियों तो धर्म छोडिया म्लेच्छ भाषा गही। सृष्टी सब इकवर्ण होई धर्मकी गति रही॥ १॥ लोकमें कहावत भी प्रचलित है कि 'यथा राजा तथा प्रजा' क्या वर्तमान समयको देखकर भी आश्चार्य्य नहीं होता कि देशने एकदम कैसे पलटा खाया है। जिसके शिरमें टोपी गलेमें कोट मुखमें चुरुट

हाथमें छडी पाउंमें बूट तथा आंखमें चशमा न हो वह जंटलमैनही नहीं कहा सकता । तथा जो कम हियर माई डीयर—इत्यादि शब्दोंको बोलना न जाने उसको वर्तमानके जंटलमैन लोग लिखा पढा ही नहीं मानते इसी ही तात्पर्य्यसे भीष्मने युधिष्ठिरको उपदेश किया है कि—

कालो वा कारणं राज्ञां राजा वा कालकारणम् ॥
इति ते संशयो मा भूत् राजा कालस्य कारणम् ॥

अर्थात् भीष्म कहता है हे युधिष्ठिर ! राजाके अच्छे बुरे होनेमें काल कारण है अथवा कालके अच्छे बुरे करलेनेमें राजा कारण है ? यह तेरेको संशय नहीं होना चाहिये किन्तु यही निश्चय होना चाहिये कि काल राजाके अधीन है जैसा चाहे करे । फीरोजशाहको लोग बहुतही नेक कहते थे । उसने आपभी अपनी बनाई किताब दिनचर्य्यामें लिखा है कि मेरेसे प्रथम होनेवाले बादशाह लोग जरा जरा बातपर पुरुषको नेस्त नाबूद करदेते थे । और हिन्दुओंको जीतोंको अग्निमें जलवा देते थे । किसीका नाक किसीका कान कटवा दिया करते थे । थोडेसे कसूरपर किसीकी आँखें निकलवा डालते थे । तात्पर्य्य यह कि उन लोगोंने ऐसा २ किया कि जैसा उनको करना उचित न था परन्तु मैंने उनकी तरह नहीं किया है इत्यादि-सच है अपने दधिको कौन अपने मुखसे खट्टा बताता है । या अपने मुखका कौन मियाँ मिट्ठू नहीं बन सकता परन्तु इतिहासफरिशतामें आप हीके विषयमें ऐसा लिखा है कि जब इस बादशाहने नगरकोट कांगडा फतह किया तो उसने वहांके सभी हिन्दूलोगोंके मन्दिरोंको गिरवा दिया था । और बुत्तोंको तोडकर उनपर गौका गोश्त लपेटकर ब्राह्मण लोगोंके गलेमें बँधवाया था । तेरह हजार हिन्दू बुत्तपरस्तोंको कैद करके सबके मुखमें गौका गोश्त दिलवाकर गुरुजोंसे मरवा मरवाकर नेस्त व नाबूद करदिया था । इसी बादशाहको किसी कालमें एक सूचक पुरुषने आनकर सूचना दीई कि- एक ब्राह्मण दिल्लीमें छिपकर बुत्तपरस्ती कर रहा है । बादशाहने उसी कालमें उसको पकड मंग-

वाया। काजीसाहबसे उसके लिये सजा पूछी गई तो उसके जीतेको अग्निमें जलाकर भस्म करदेनेका हुकम हुआ। जब हिन्दूलोगोंने टैक्स देना मंजूर किया। तो थोडेदिन उनको आराम रहा। अन्यथा सदा यही खबर सुननेमें आया करती थी कि, आज फलाने हिन्दूकी खाल खैं- चीगई। अमुक हिन्दू जला दिया गया। अमुक कतल करवादिया गया। अमुक दरियामें डुबवा दिया गया। अमुकको जीतेको जमीन- में गडवादिया इत्यादि। जब हिन्दू लोगोंने लाचार होकर अपने आरामके लिये बादशाही टैक्स मंजूर किया तो उस कालमें प्रसन्न होकर बादशाहने हुकम देदिया कि, तुम लोग अपने पाठ पूजाके लिये मन्दिर शिवालय बनवा लेवो बादशाह आपलोगोंसे प्रसन्न हैं। बादशाही हुकमहीसे जब फिर अनेक मन्दिर शिवालय बने तो थोड दिनोंके पीछे काजीलोगोंके बहकानेसे फिर बादशाहने हिन्दूलोगोंके मन्दिर गिराकर उनके स्थानमें मसजिदें बनवानेका हुकम दिया। हिन्दूलोग फिर हाथही मलते रहगये। उनके देखते ही उनके देवालये गिरा दिये गये तथा उनके स्थानमें मसजिदें बनवा दी गई। इसलिये शोक है ऐसे बादशाह पर जिसको अपनेही हुकमसे विपरीत करनेकी कुछ भी लज्जा नहीं है। इसी बादशाहके न्यायके विषयमें एकवारका वृत्तान्त ऐसे लिखा है कि, दो सराफोंने आनकर हजूरमें अर्ज करी कि–जापनाह–आपकी टकसालसे जो शशगानी निकलती है वह आ- ज कल तौलमें कुछ कम होती है। आप टकसालवाले दारोगाको बुलाकर पूछे उनमें जिसका कसूर हो उसको सजा देवें। बादशाहने इसी वार्ताके विषयमें अपने वजीरके साथ विचार किया तो वजीर साहबने जवाब दिया कि हजूर शशगानीके कमती बढती होनेकी इतनी चिन्ता नहीं है जितनी कि, कुमारी लडकीकी चिन्ता होती है। क्योंकि कुमारी लडकीकी यदि एकवार भी कहीं झूठी सच्ची बदनामी उडजावे तो हिन्दुओंमें फिर उसको कोई लेताही नहीं बादशाहने वजीरकी इस वार्ताको सुनकर कुछ भी न सोचा कि, मैं क्या पूछता हूं और वजीर मेरेको

क्या बकता है। किन्तु यह हुक्म दिया कि, इन दोनों सराफोंको कैद करलिया जावे । और इनका घर बार लूटलिया जावे बादशाही हुक्मसे वैसाही हुआ। अहो बुद्धि अहो विचार अहो न्याय तथा अहो मंत्रिगणकी सम्मति वेह सभी इतिहासमें स्मरणीय है। कुछ आश्चर्य्यकी वार्ता नहीं है जो कि, ऐसे २ न्यायभी उस समयके लोगोंको अच्छे ही लगते हों क्योंकि यह जीवका स्वभाव है कि, जबतक अच्छी वस्तुको न देखे सुने तबतक बुरीकोभी अच्छीही माना करता है। परन्तु जब उसके समीप अच्छी देखलेता है तो तब उस बुरीको देख उसको तुच्छ समझ कर उससे घृणा करता है। ऐसेही वर्तमान गवर्नमेण्टके न्याय सूर्य्यके आगे हमको मुसलमानोंका न्याय तो घोर कालरात्रिवत् प्रतीत होता है। नाममात्रके बादशाह तथा राजा कहे जाते थे परन्तु बुद्धि उन लोगोंमें राजालोगोंके अनुगामी होनेकी भी न थी किन्तु डाकू अथवा लुटेरे ठीक थे।

इति नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथ दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

प्रियपाठक ! मुसलमानोंके अत्याचारकी अवधि आपको कहाँतक लिखके सुनावें गयासुद्दीनका वृत्तान्त है कि, इसने सुना कि,राणा मल्ल भट्टीकी लडकी बहुतही सुन्दरी है।इसने राणाके पास कहवा भेजा कि, यदि आपको हमारे साथ मित्रता रखनी हैतोअपनी लडकीका डोला हमें देना। राणाको यह वार्ता स्वीकृत न हुई। गयासुद्दीनने चढाई करके राणाको निहायत तंग किया। लाचार होकर लडकीने कहा हे पितः ! यदि मेरे एकके जानेसे सारा घर सुखी होजाय तो मेरेको तुम जाने देवो तुमने समझलेना कि, मेरी बेटी मरगई राणाने लाचार होकर लडकीके कहनेसे वैसेही किया लडकी गयासुद्दीनके पास भेज दई तो जान बचाई उसी लडकीके पेटसे फिरोजशाह पैदा हुआ ऐसे २ अत्याचारोंहीसे इस देशमें अच्छे २ घरानोंमें लडकीका मार डालना

प्रवृत्त होगया था । जो कि, वर्तमान गवर्नमेण्टकी कृपासे फिर निवृत्त होगया है । इसी बादशाहके समयका वृत्तान्त है कि, एक बार जयसलमेरमें आठ हजार स्त्रियों मिलकर जीते जी अग्निदाह लिया । कारण उसका यही था कि, यवनलोग उनके सतीत्व नष्ट करनेमें प्रवृत्त हुए थे । ऐसेही चौबीस हजार स्त्रियों मिलकर बठिण्डेके किलेमें भी किया था, अर्थात् इसी बादशाहके जुल्मसे डरती जलकर मर गई थीं । बादशाही कालमें मार्गका प्रबन्ध ऐसा उम्दा था कि, जब फिरोजशाहने किला नगर ठठाकी चढाईमें हार खाई तो उसको छोडकर गुजरात देशपर चला । चलता चलता मार्ग भूलगया तो सहित अपनी सारी सेनाके कच्छ देशके मैदानमें जा पहुँचा उसी देशमें अपनी सेना समेत छः मासतक भूला फिरता रहा । परन्तु किसी तरफ जानेका मार्ग न मिला । उस कालमें डाकका प्रबन्धभी ऐसा था कि, बादशाहके मार्ग भूल जानेकी खबर भी वजीरको दिल्लीमें तबतक नहीं पहुँची । इस बादशाहके विषयमें ऐसा भी सुननेमें आता है कि, इसने अपनी प्रजापर इतने टैक्स महसूल जेजिये प्रचलित किये थे कि, प्रजाके नाकमें दम आगये थे घरका चरखा चक्की चारपाई इत्यादि कोई भी वस्तु बिना टैक्ससे न बची थी । पगडी बाँधनेवाला बनियाँ तेली मोची धोबी कहार नाई इत्यादि एसा कोई भी पुरुष न था जो कि, बादशाही टैक्स न भरा करे । भाण्ड भडुए हीजडेतक भी टेक्स बादशाहीको दिया करते थे । तेरह लाख रुपया मासिक तो केवल वजीर साहबको दिया जाता था । क्यों कि, वजीर साहबके पास दो हजार बेगम थीं । बादशाह समझता था कि, इसके घरका खरच बहुत है इसलिये कुछ और भी मदत कर दिया करता था ।

यह हाल तो फिरोजशाहके समयमें था । अब थोडा तैमूरके समयका भी सुनिये । इसने दयालपुर प्रान्तके पांच हजार हिन्दुओंको तथा अयोध्याके चौदह हजार हिन्दुओंको तथा बनारसके बीस हजार हिन्दुओंको बुत्तपरस्ती (मूर्तिपूजा) करते पकडकर बिना अपराधसे

कतल करवादिया था और इनके स्त्री बची बच्चोंको बटोरकर लौंडे लौंडियाँ तथा गुलाम बना लिया था और भटनेर शहर पर महसूल लगानेके तकरारमें इसने उनतीस हजार हिन्दुओंको एक मकानमें कैद करके आग लगाके जीते जला दिये थे शेष जो उनमें भाग निकले थे। वह भी दश हजारके अन्दाज होंगे उनको तलवारसे कतल करवा दियाथा। जब इसने नवनीके किलेको घेरा है तो वहांके राजपूत लोगोंने अपने जीवनसे उदास होकर प्रथम अपने बाल बच्चेको अपने हाथसे कतल किया है और पीछे उसके सामने आप सभी सहीद हुए हैं। इसने सारे शहरको सहित किलेके लूट मार करके धूलीमें मिला दिया तात्पर्य यह कि उस कालमें जो हिन्दू सामने आया जानसे मारा गया। बाकी जो उनके स्त्री बच्चे बचे उनको गुलाम बनाया। उसने एकलाख पचास हजार तुरकी सिपाहियोंको इसीलिये रखा हुआ था कि वह लोग सदा हिन्दूलोगोंको लूटा करें। वेही लोग अन्तमें बडे बडे धनी होकर थोडेही कालमें अपनी नोकरीका इस्तीफा देकर अपने २ देशको चले गये थे। अब यह इधर उधर मार कूट करके दिल्लीमें पहुँचा तो वहां केवल पंद्रह दिन निवास करके कहने लगा कि मैं तो हिन्दोस्थानमें केवल हिन्दूलोगोंके नेस्तनाबूद करनेहीके लिये आया हूं। किन्तु बादशाही सुखको भोग करनेको नहीं आया हूं।यद्यपि प्रथमभी मैंने लाखों हिन्दू कतल किये हैं। तथापि फिर भी मेरेको आरामसे बैठना हराम है। ऐसा विचारकर उसी कालमें शहर मेरठपर हमला किया। वहां भी असंख्यात हिन्दू कतल किये। और मन्दिर तोडे गिराये। तात्पर्य्य यह कि गंगाके आर पार प्रान्तोंको लूट मार करके कंगाल करदिया। तथा उनके असंख्यात सुन्दर सुन्दर बच्ची बच्चे गुलाम और लौंडे बना लिये। बहुतसे बडे बडे जिमींदार राजालोग मुकाबला करके सहीद हुए। जिन २ ब्राह्मणादि हिन्दू लोगोंने वशवर्ती होकर दीन इसलामको न स्वीकार किया उनके मुखमें गौका गोश्त देकर उनका नाश किया। इतिहासतोजकबाबरीमें लिखा है कि जो हिन्दूलोग लडा

ईमें पकडकर कैद किये जाते थे वह फिर पीछे बादशाहके सामने कतल करवादिये जाते थे। कतल पुरुषोंकी लाशें इतनी जमा होगई कि बादशाहको अपने खेमामें स्थान बदलना पडा। इस हिन्दोस्थान देशमें जितने ऊंचे ऊंचे टिल्ले देखनेमें आते हैं वे सभी इनहीं बादशाहोंके अत्याचारकी स्पष्ट गवाही देरहे ह। भाव यह कि यह ऊंचे २ टिल्ले किसी कालमें शहर नगर वस्तीरूपसे आबाद होगें। परन्तु इन लोगोंके अत्याचारके प्रभावसे ऐसी दशा हुई है अब वह प्राचीन शहर कनौज कहां है जिसमें केवल बीस हजार दुकान तो पान बेचनेवालों की थीं। शहाबुद्दीन गौरीनें इस शहरका नाम निशान भी नहीं छोडा था। वह प्राचीन शहर मथुरा है कि, जिसकी आबादी चौबीस मील मुरब्बा थी इसको महमुद गजनवीने उजाडकर जमीनके साथ मिला दिया था। और उसी शहरके एक बडे मन्दिरकी प्रशंसामें जो कि उसी कालमें गिराकर भूमिमें मिला दिया गया था बादशाहका मीरमुनशी यों बियान करता है कि, अगर ऐसा मन्दिर बनाया जावे तो करोडाहां दीनारें खर्च हो। इस मन्दिरकी शान व शौकत व बुलन्दीके प्रतिपादन करनेमें जिह्वा भी असमर्थ है। यह मकान जवाहरातकी खान महमूद शाहके हाथ लगा। जितना चाहा उतना उसने तथा उसकी फौजने लूटा इत्यादि सिवाय इसके एक और बडा मन्दिर शहर भलसामें था। जो कि एक सौ पाँच गज ऊंचा था तथा आधा कोश लम्बा तथा चौडा था। कई वर्षोंमें करोडों रुपये खर्च करके तैयार हुआ होगा। उसको शमसलद्दीनने एकदममें तोडकर खाकमें मिला दिया था। अमीर खसरो साहिब लिखते हैं कि इस शिवालयके तोडनेमें लक्षों आदमी मारे गये खूनकी नदीयें वह निकलीं। करोडों रुपयोंकी जवाहरात जो कि शिवालय दीवारोंमें जहां तहां जडी हुई थीं फौजने लूटी। और वहांपर मसजिद बनवाई गई जो कि अबतकभी विराजमान है मुहंमद मौसीने अपने इतिहास सिन्धमें मुहंमदकासमके विषयमें यों लिखा है कि, इस बादशाहने जब शमसाबादको उज़ाड़ा तो उस

कालमें लक्षों हिन्दूओंको जानसे मरवाडाला और बीस हजार हिन्दुको कैद करके देश बगदादमें भेजवा दिया । उनके साथही सिन्धु देशके एक राजाकी यहाँ दो सुन्दर लडकीयां बगदादके खलीफाको बतौर सौगातके भेजी गई वह चतुर लडकीयां जब बगदादमें खलीफा वलीद साहिबके पास पहुंचीं । खलीफा साहिब उनसे एकान्त सेवन करने लगे तो लडकीओंने कहा । हजरत हम तो आपके कामकी नहीं रही आगे आपकी रजा खलीफाने पूछा क्यों ? लडकीओंने कहा कि, हम को मुहंमदकासमने पहलेही खराब कर डाला था । इस वार्ताको सुन-कर खलीफा वलीदको बहुत गुस्सा आया आश्चर्यमें आकर उसी वक्त अपने हाथसे लिखकर फौजके सामने भेजा कि मुहंमद इबनकासमको जीवित बैलकी खालमें बन्दकरके मेरे पास रवाना करदो । फौजके सिपाहियोंने हुकुम खलीफाको बांचकर वैसेही किया । मुहमदइबनका समको लिखे बमुजिब बान्धकर भेज दिया । मुहंमदकी लाश बग-दादमें पहुंची तो लडकीयां देखकर हंसी और खलीफाको कहा कि, आपने यह काम बिना विचारे करडाला जो ऐसा शूरवीर आदमी हमारे कहनेपर इतबार करके मरवा दिया सच्च तो यह है कि हमको उस बेचारेने हाथ भी नहीं लगाया था । हमने जो ऐसा झूठ आ-पके पास कहा तो अपने पिताका बदला लेनेके तात्पर्यसे कहदिया था सो उसने हमारे बापको मारा था हमने वहानेसे उसको मरवा दिया । परन्तु आपने यह काम बिचारके नहीं किया । खलीफा उन लडकीयोंकी बुद्धिपर भी आश्चर्य करने लगा । और बहुत विचारके पश्चात् उस लडकीओंको भी कतल करवा दिया । मीरमासूम साहिब अपने इतिहासमें लिखते हैं कि, मुलक सिन्धके भाटीये लुवाना जाट कोरी इत्यादि जातियोंके लिये खलिफा उमरने यह कानून जारी कर रखा था कि कोई अच्छा कपडा न पहने स्वच्छ खाना न खावे । घोडे पर सवारी कोई न करे । दो मंजलका मकान कोई न बनावे । खूब-सूरत (सुन्दर) लडका लडकी न घरमें रखे किन्तु बादशाहकी भेंटमें

दिया करें अथवा और किसी अच्छे मुसलमानको नजर किया करें। हिन्दूलोगोंपर इस कदर टैक्स लगा रखा था कि वे लोग तंग होकर खुद बखुद मुसलमान हो जाते थे। परन्तु शतशः धन्यवाद इस हिन्दू जातिके लोगोंको है कि जिन्होंने लक्षों मुसीबतें उठाई परन्तु अपना सनातन धर्म नहीं छोडा है। खलीफाउमरने वह भी हुकम जारी कर रखा था कि हिन्दू लोगोंकी कुल पैदावारी सालके साल ले ली जावे और उनके पास केवल खाने पीनेके गुजारेके लिये छोड दिया जावेइतिहास चचनामामें लिखा है कि जब इसने सिन्धदेशान्तर्गत किला राऊको फतह किया है। वहांसे कोई तीन हजारके अन्दाज हिन्दू स्त्री पुरुषोंको कैद करके बगदादमें खलीफा वलीदके पास भेज दिया था। उनमेंसे कुछ तो वहाँ लेजाकर बेचडाले गये। और कुछ अच्छे २ मुसलमानोंको इनाम (पारितोषिक) में बाँट दिये गये। खलीफाने बगदादसे मुहंमदइबन-कासमको लिखा कि, तुमसे जहाँ तक बनपडे काफरोंको आराम मत लेने देना। जैसे होसके इनको दीन इसलाम कबूल कराना। जो किसी तरहसेभी न माने उसको कतल कर डालना। इसीने खलीफाका हुकम पाकर शहर देपालपुरके अनेक बडे २ मन्दिर गिरवा दिये। और लक्षों रुपयोंका माल लूटके खलीफाके पास भेज दिया। और सारे देशको वैरान करडाला। तैमूरशाह अपने दिन चर्य्याके पुस्तकमें यों लिखता है कि मेरा इस देश हिन्दोस्थानमें इतनी तकलीफ उठाकर आना केवल दो बातोंके लिये है। एक तो इन हिन्दू काफरोंको दीन इस-लाममें लाना या कतल करना। और दूसरा इनका माल जर लूटके मुसलमानोंको फायदा पहुंचाना इत्यादि। तैमुरने इस सारे देशके बडे २ शहरोंको जलाया। वहाँके रहनेवाले हिन्दूलोगोंको बरबाद कर दिया मौरखीन इसलामिया लिखते हैं कि जब तैमूरको यह निश्चय हुआ कि जितने कैद किये हैं सभी काफर हैं तो उनमेंसे छाटकर अच्छे २ एक लाख कतल करवाडाले। ऐसे कतल होते देखकर उस अत्यन्त प्रस-न्नता हुआ करती थी। और किसी २कालमें जब बहुतसे खून होजाते

थे उनकी लाशोंका एक वडा मीनारसा बनवाया करता था । अकबर बादशाह जोकि सभी बादशाहोंमें भला तथा न्यायशील गिना जाता है । इसके विषयमें लिखा है कि इसने अबदुलशाहकी औरतको छीन कर अपने घरमें रखलिया था । और अनेक हिन्दूलोगोंको डर बतलाकर उनकी सुन्दर सुन्दर लडकीयाँ ले लेतारहा । प्रजाके जिमीदार लोगोंसे प्रत्येक बीघा पाँचमन दाना वसूल किया करता था । चाहे उनको उसमेंसे पैदायश एक मनकीभी न हो ।

टाडसाहिब अकबरके विषयमें अपनी किताबमें यों लिखते हैं कि जब राजा यशवन्तसिंह जोधपुर या जो कि इसका बहुत शुभचिन्तक था काबुलकी मुहिम्मपर मारा गया तो उसने उसके स्त्री बाल बच्चोंके लिये जो कि उस कालमें दिल्लीहीमें थे मुसलमान बनानेके लिये हुकुम दिया । परन्तु राजाके पक्षके राजपूतलोगोंने बडे बुद्धिके चातुर्य्यसे यशवन्तके पुत्रोंको छिपाकर निकाल दिया । और स्त्रियां तथा लडकीयां जो कि न निकलसकी उनको एक कोठरीमें बन्द करके बारूदसे उडा दिया । और राजपूत आपभी बादशाहके सामने लडकर शहीद होगये शतशः धन्यवाद है उन राजपूतवीरोंको कि जिन्होंने इस अनित्य शरीरकी तरफ जरा भी दृष्टि न करी परन्तु सदाके सङ्गी पवित्र धर्मको पीछे न दिया यह समय दिल्लीमें ऐसा भयानक था कि शहरके बाजार बाजारमें तथा गली २ में मनुष्योंकी लाशोंके ढेर लग गये थे ! रुधिरकी नदी वह निकली थीं ! यह वृत्तान्त दिल्लीमें जिन दिनोंमें हुआ था । उनही दिनोंमें जोधपुरमें सालके साल अब तक कुछ न कुछ खुशी मनाई जाती है, और यही अकबरही उदयपुरके राजा जयमलकी लडकी लेनेके लिये चितौडके किलेपर अनेक वर्षतक लडता रहा और कईबार हार भी खाई । अन्तमें बहुत वर्षतक तंग होकर राजपूतलोगोंने संवत् १६७७ विक्रमीके वैशाख महीनेमें किलेके बीचही पहले अपने बाल बच्चोंको कतलकर डाला और पीछे सामने होकर अनेकोंको मारकर आप शहीद हुए । इसी

शूर बीरताके कारण उनका नाम आजतक संसारमें गाया जाता है।

औरंगजेबका अत्याचार तो संसारमात्रमें प्रख्यात है। छोटे २ बच्चे भी जानते हैं कि यह बादशाह बडाही दुनियाँको सतानेवाला जालिम पुरुष हो गुजरा है। इसका सवा मन यज्ञोपवीत उतारकर खाना खानेकी प्रतिज्ञा सभी लोगोमें प्रसिद्ध है। यद्यपि यह प्रतिज्ञा अत्युक्तिसे पूरित है तथापि उसके अत्याचारकी स्पष्ट रूपसे बोधिका है।

एक दिनका वृत्तान्त है कि इसको एक दिन रघुनाथ योगी दैवात् बाजारमें जाता दीखपडा इसने उसी वक्त पकड मँगवाया। और उसको मुसलमान होनेके लिये बहुतही कहा। लाचार उसने न माना तो उसको कतल करवाके उसका शिर दिल्लीके चान्दनी चौकमें लटकवा दिया सरमध जैसे विचारशील ज्ञानी पुरुष भी इसने अनेक कतल करवा दिये थे। तात्पर्य यह कि इस बादशाहने प्रजापर जैसे २ अत्याचार किये हैं। उनका पूर्ण रूपसे स्मरण करना भी कठिन तथा चित्तसन्तापका हेतु है। अनेक शहरोंके शहर तथा ग्रामोंके ग्राम इसने मुसलमान कर डाले थे। ब्राह्मण क्षत्रिय राजपूत जाट लुवाणे पचादे इत्यादि अनेक कोमोंके लोग इसी बादशाहके बलात्कारसे मुसलमान किये हुये अबतक विद्यमान हैं। जब उनकी वंश परम्परापर या रीति रस्मपर विचार किया जाता है तो थोडिही दूर चलकर दोनों एक होजाते हैं। वर्तमानमें भी इस देशके प्रायः सभी प्रान्तोंमें ऐसे अनेक पुरुष देखनेमें आते हैं जो कि नाममात्रके मुसलमान हैं परंतु चाल चलन रीति रवाज या खान पान सभी हिन्दुओंके समान है। वे सभी इसी अन्यायशील पुरुषके बलात्कारसे मुसलमान हुये हुये प्रतीत होते हैं। इस बादशाहके जुलमका सबूत और कहाँतक दिया जावे जिसने खुद अपने बापहीको कैदमें डालके मार दिया। और भाईयोंको कतल करके आप बादशाह बनगया। इसने जो जो कार्य्य किया सब संसारके सताने तथा दुःख देनेहीका किया। अथवा ऐसेही कहो कि मुसलमान लोगोंकी बादशाही इस देशके दुःख तथा अनर्थका

मूल था। कोई भी ऐसा मुसलमान न हुआ कि जिसने अपनी चलतीमें चार दिन आरामसे गुजारे हों। किन्तु जो आया सवायसे सवायही आया। इतिहासफरिशतामें लिखा है कि, मुहंमदबादशाहने गुलबरगामें तेलंग राजाकी बेटीकी जबान निकलवाकर उसको जीतीको अग्निमें जलवा दिया था। कैलाख मनुष्योंको फाँसीपर लटकवा दिया था और जिस महीनेमें बीश हजारसे अधिक हिन्दू मरवा देता था उस मासमें बहुतही प्रसन्नतासे अपनेको कृतकार्य्य समझता था। विषयी ऐसा था कि स्नानके कालमें सुन्दर स्त्रियोंकी पंक्ति बान्धके उनके बीचमें आपभी नग्न होकर पानीमें नाचा कूदा करता था।

टामसन्साहिबके अनुसार फीरोजशाहके कालमें सात करोड रुपया बाबरशाहके कालमें तीस करोड अकबरशाहके कालमें बत्तीस करोड जहाँगीरके कालमें बाईस करोड तथा औरंगजेबके कालमें एकतीस करोड रुपया हिन्दोस्थानसे वसूल होकर बादशाही खजानेमें दाखिल हुआ करता था।

इति दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अथैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

यह सभी वृत्तान्त जो कि मैंने ऊपर लिखा है सो इतिहास लिखनेवाले मुसलमान लोगोंने अपने बादशाहोंकी प्रशंसामें लिखा है अर्थात् उन लोगोंने यह बोध न किया है कि हमारे सभी बादशाह दीन इसलामके पूरे भक्त थे रात्रि दिन इसीहीकी उन्नति करा करतेथे इसीसे वह लोग आगबतमें बखशशके उमेदवार हैं। अर्थात् परलोकमें दीन इसलाम उन लोगोंको सद्गति देगा इत्यादि। परन्तु ऐसी २ प्रशंसाके मिससे यदि ऐसा सच्चा वृत्तान्त कदाचित् न लिखा जाता तो इतिहास रूपसे ऐसे जालिम बादशाहोंका पूरा पूरा वृत्तान्त लिखनेकी सामर्थ्यही किसकी थी। किन्तु जो लिखता वही फौरन कतल किया जाता। अब

लिखनेवालोंके लेखोंसे यह लाभ हुआ कि उन लोगोंने तो दीन इस-लामकी सेवा बजानेमें मुसलमान बादशाहोंकी प्रशंसा लिखी परन्तु न्यायशील पुरुषोंको उनही लेखोंसे उनका जुलम अत्याचार अन्याय तथा प्रजापर दुराचार साबूत हुआ। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऐसे अन्यायपरायण स्वार्थलोलुप विषयोंके दास अत्याचारी प्रजाके शत्रु दुराचारी तथा धर्मके द्वेषी बादशाहलोग इस भूमिके परदेपर आगे कभी न हुए होंगे। शोककी बार्ता यह है कि इन लोगोंमेंसे एक भी ऐसा न निकला कि जिसको हिंदुओंके कतल करवानेके या लूट-नेके या उनके सुन्दर २ बच्चो बच्चे खोसकर गुलाम बनानेके या नगर शहर ग्रामोंके बरबाद करनेके या देशको उजाड करडालनेके या हिन्दुओंको मुसलमान बनानेके सिवाय प्रजाका पालन करना लूटेरोंको दण्डित करना धर्मपूर्वक नीतिका वर्ताव करना प्रजामात्रको अपनी सन्तान समझना अनाथोंका पालन करना देशको अनेक प्रका-रसे सुधारना विद्वानोंका सत्कार रखना विद्याको आश्रय देना इत्यादि सत्कार्य्योंका कभी स्वप्न भी आया हो। सच तो यह है कि जो स्वयं मूर्ख है वह विद्याकी कदर नहीं करसकता जो स्वयं डाकू है वह प्रजाको डाकुओंसे नहीं बचा सकता इत्यादि यह हजरत स्वयं सभी कुछ आपही बन जाते थे। इसलिये किस बातका शोक करना तथा किसका न करना मौनही विश्रांतिका मूल है रोशवतका बाजार भी उस कालमें ऐसा गरम था कि जिसको सुनकर पुरुषको आश्चर्य हो। इतिहाससिन्धुमें लिखा है कि नगरठठाके हाकिमने सुना कि मेरा काजी रोशवत लिया करता है। हाकिमने काजीको बुलाकर पूछा तो काजी साहिबने कहा कि जहांतक होसके मुद्दई तथा मुद्दालेह इन दोनोंसे तो ले लेताहूं परन्तु शोक है कि गवाह लोगोंसे कुछ नहीं मिलता। हाकिम काजी साहिबकी इस बातोंको सुनकर मुसकुराकर चुपकर रहा। अब कहिये जहाँके हाकिमों तथा काजीलोगोंका यह हाल है वहाँ इनसाफका क्या काम है। मुसलमानोंकी बादशाहीके

कालमें कोई कायदे कानूनकी पुस्तक भी न थी । किन्तु एक 'शरह मुहम्मदी' के अनुसार हिन्दू मुसलमान दोनोंका फैसला हुआ करता था जिसमें भङ्ग चरसादि नशेवाली वस्तुओंका सेवन तो मुसलमानोंके लिये मना लिखा है। परन्तु हिन्दुओंका कतल करना लूटलना उनकी औरतोंकी इज्जत बिगाडना अनेकप्रकारके दुःख देना उनको बलात्कारसे अपने दीनमें लाना मुसलमानोंके लिये महासवाब (पुण्य) लिखा है परन्तु आप जानते हैं अत्याचारकी अवधि बहुतही थोडी होती है। मुसलमानोंका सताया हुआ यह सारा देश त्राहि त्राहि कर उठा। मन्दिरोंके न होनेसे भी अपने २ इष्ट देवताओंकी लोग मानसी पूजा करनेलगे। और शेषमें रोरोकर अपने इष्ट देवोंको पुकारने लगे। रामचन्द्रजीके भक्तलोग हे राम ! हे दीनबन्धो ! हे भक्तवत्सल ! हे प्राणनाथ ! हे आर्तिहर ! इत्यादि अनेक पवित्र संबोधनोंसे पुकारने लगे। तथा श्रीकृष्णदेवके भक्तलोग दुःखी होकर हे मुरारे ! हे श्रीकृष्ण ! हे यादव ! हे वासुदेव ! हे मधुसूदन ! हे गोविन्द ! पाहि पाहि इत्यादि पवित्र संबोधनोंसे पुकारने लगे उस भयानक कालमें छोटा या बडा बूढा या बालक स्त्री या पुरुष ऐसा एक भी हिन्दू न होगा कि जिसने एकाचित्त होकर आर्तस्वरसे अपने दुःखकी निवृत्तिके लिये सर्वान्तर्यामी परमात्माके आगे प्रार्थना न करी हो। ऐसे होनेपर फिर पीछे बिलम्बही क्या था आप जानते हैं जिस सर्वान्तर्यामी परमात्माके दर्बारमें केवल एक शरणवृत्तिही अपेक्षित है फिर रक्षा होनेमें किञ्चित् विलम्ब भी नहीं होता। प्रल्हाद जैसे बालकोंकी पुकार एक क्षणमें सुनी गई। द्रौपदी जैसी स्त्रियोंकी पुकार सुननेमें भी अधिक विलम्ब न हुआ। गज जैसे पशु भी जिस दर्बारमें पुकारसे उचित शरणको लाभकर सकते हैं उस ऐसे प्रख्यात खुलासे दर्बारमें अनाथ दीन भारतवासी लोगोंकी पुकारका सुना जाना कोई आश्चर्यकी वार्ता नहीं है जिस पूर्ण परमात्माने अपने विश्वासी भक्तोंके धैर्यके लिये अपने प्रतिनिधि श्रीकृष्णदेव द्वारा इस प्रतिज्ञाको प्रख्यात कर रखा है कि–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ॥
अभ्युत्थानमधर्म्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥ ७ ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ॥
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥ ८ ॥

भगवद्गीता अ० ४ ॥

अर्थात् श्रीकृष्णदेव अर्जुनको कहते हैं कि हे भारत ! जिस जिस कालमें धर्मकी ग्लानि तथा अधर्मका अभ्युदय होता है । उसी२कालमें साधू पुरुषोंकी रक्षाके लिये तथा दुष्ट पुरुषोंके विनाशके लिये और हरएक युगमें दुष्टोंसे व्यचालित करे हुए धर्मके स्थापन करनेके लिये मैं अपने किसी एक शरीरको धारण करता हूं इत्यादि उसको वर्तमानमें भी अपना कोई एक प्रतिनिधि भेजकर उक्त प्रतिज्ञाका पालन करना आवश्यकीय है वह भारतवासी दुःखित लोगोंका एकमात्र रक्षक परमेश्वरकी तरफसे प्रतिनिधि कौन था कैसा था कब हुआ कहां हुआ और उसने यवनपीडित आर्य्यसन्तानको कैसे बचाया इत्यादि अनेक विकल्पोंका समाधान उस कालमें मुसलमानोंके अत्याचारोंको दुःख का अनुभव करनेवाले तथा पश्चात् श्रीगुरुजीको शरण लाभ करके उक्त दुःखसे रक्षा पानेवाले श्रीमान् भाई गुरुदासजी कहते हैं कि, 'सुनी पुकार दातार प्रभु गुरु नानक जगमांह पठाया ।' अर्थात् परमेश्वरने दीन भारतवासियोंकी पुकार सुनी तो रक्षाके लिये श्रीगुरुनानकजीको भेजा । फिर उन्हींका दूसरा वचन यह है कि ' सद्गुरु नानक प्रगट्या मिटी धुन्द जग चानण होया ॥ ज्योंकर सूर्य निकले तारे छपे अन्धेर पलोया ॥ , अर्थात् भाई गुरुदासजी सूचन करते हैं कि श्रीगुरुनानकजीके प्रगट होतेही यवनोंका अत्याचार तथा स्वार्थि लोगोंका अज्ञान प्रचाररूप अन्धकार दूर हुआ और चारोंतर्फ जगत् मात्रमें न्याय तथा ज्ञानका प्रकाश होने लगा जैसे सूर्य्यकी किरणोंके निकलनेसे तारे छिप जाते हैं तथा अन्धेरा दूर हो जाता है वैसेही देशमात्रमें स्वाभाविकही ज्ञान तथा नीतिका प्रकाश होने लगा ।

अत्याचार करनेवाले अन्धकारकी तरह निर्मूल हुए तथा धर्मकी ओटमें स्वार्थ सिद्ध करनेवाले तारोंकी तरह फीके दीखने लगे । इत्यादि ।

गुरुनानककी वंशावली ।

श्रीगुरुनानकजीकी वंश परंपराका पूर्व प्रचलित प्रवाह श्रीरामचन्द्रजीके पुत्र कुशके साथ मिलता है । इसी वार्ताको श्रीगुरुगोविंदसिंहजीने स्वयं विचित्र नाटक नामक ग्रन्थमें सविस्तर प्रतिपादन किया है । वहाँ यों लिखा है कि सूर्य्यवंशी श्रीरामचन्द्रजीके दो पुत्र थे । उनमें एकका नाम लव तथा दूसरेका नाम कुश था । उनमें लवने लवपुर (लाहौर) को आबाद किया तथा कुशने शहर कसूरको बसाया । दोनोंने बहुत कालतक इन दोनों नगरोंको बसाकर उसमें राज्य किया बहुत कालके पीछे उनकी वंशपरंपरामें कुशके वंशमेंसे ' कालकेतु ' तथा लवके वंशमेंसे 'कालराय' यह दो राजे ऐसे प्रतापी उत्पन्न हुए कि उनका आपसमें बहुत कालतक युद्ध होता रहा । अन्तमें कुशके वंशके कालकेतु नामक राजाने विजय पाई । और कालराय, पराजित होकर सनौढ देशको चलागया । मथुरा और भरतपुरसे लेकर अमरकोटतक प्रान्तका 'सनौढदेश' नाम है वहाँ जाकर एक राजाकी पुत्रीसे विवाह करके फिर सन्तान पैदा करी । जो वहाँ पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम उसने देशके अनुरोधसे सोढीही रखा उसी सोढीके वंशके सोढी क्षत्रिये अबतक प्रख्यात है ।

उसी सोढीरायके वंशपरंपरामें पाँचवाँ पुरुष एक विजयराय नामक बहुतही शूरबीर राजा हुआ है । उसने पंजाब देशके विजय करनेके लिये चढाई करी और कुशके वंशके सभी राजे युद्धसे विजयकर स्वाधीन कर लिये । वे विचारे दुःखी होकर भागके पूर्व देशमें जाकर बसे । वही अवध तथा कानपुरके प्रान्तमें ठाकुर जातिसे प्रख्यात क्षत्रिय अबतक विराजमान हैं । और कई एक उनमेंसे संसारसे उदास होकर श्रीकाशीजीमें विद्या अभ्यास करने लगे । वे लोग वेदों

को पढकर बेदी कहावने लगे। उधर विजयराय सोढीके वंशपरंपरामें मुलकराय नामक राजाको वेदादि विद्या पढने सुननेका बहुतही अनुराग था। उन वेदादि विद्याके पढनेवाले क्षत्रियोंमेंसे एक वेदीने उस राजा मुलकरायको ऐसा उत्तम रीतिसे वेद सुनाया कि वह राजा सुनानेवालेको अपना सर्वस्व अर्पण करके राज्यसे किनारे हुआ। अर्थात् संसारसे विरक्त होकर एकान्त सेवन करने लगा। शल्यराजा जो कि कौरव पाण्डवोंके युद्धमें विद्यमान था उसी वेदी वंशका था। उसके पीछे राजा भोजभी उसी वेदी वंशका था। कालक्रमके चक्रके परिवर्तनसे इस भोजराजाके पास बहुतही थोडासा राज्य था। शेषमें महमूदगजनवीके आक्रमणोंसे नाथजी नामक वेदीके हाथसे वह भी जाता रहा। यह बेदीलोग वर्तमानकालमें विशेष रूपसे लाहौरके प्रान्तमें पिण्डीभट्टीयाँ नामक ग्राममें निवास करते हैं। उनमेंसे कई लोगोंने अपनी इच्छाके अनुसार वहांसे उठकर गौण्डे नामक ग्राममें निवास किया। उसी ग्रामका निवासी एक रामनारायण नामक बेदी क्षत्रिय जिसके पुत्र शिवरामदासके दो पुत्र थे। उनमें बडेका नाम कल्याणचन्द्र, इसका जन्म संवत् १४९२ विक्रमीमें हुआ था और छोटेका नाम लालचन्द्र, इसका जन्म संवत् १५०० विक्रमीमें हुआ था। इनमें बडा भाई कल्याणचन्द्र तलवंडी शहरके रायबुलार नामक हाकिमका प्रबन्धकर्ता कारकुन था। यह रायबुलार पूर्वोक्त लोदी जातिके पठानोंमेंसे था उस कालमें इनका बहुत जोर था। यह लोग बडेही जालम निर्दय अन्यायशील तथा हिन्दू जातिके अकारण विद्रोही थे। इन्होंने उस कालमें हिन्दू लोगोंपर सैकडों तरहके टैक्स करें प्रचलित कररखीं थी। यहांतक कि हिंदू लोगोंके धर्मसे च्युत कर डालनेमें या इनको दीन इसलाम स्वीकार करवानेमें इन लोगोंने कोई उपाय शेष नहीं रक्खा था। उस कालमें अनाश्रित हिन्दू लोग एक भारी विपत्तिमें फंसे हुए थे किसी हिन्दुकी कोई प्रार्थना या पुकारभी नहीं सुनता था। सिवाय एक परमेश्वरके

उनका दूसरा कोई रक्षक या आश्रयदाता भी नहीं दीख पडता था । उनके आर्तस्वरोंके नादकी सुनाई ऊपर सातवें लोकतक पहुंच चुकी थी । वही अनाथ हिन्दू लोगोंका आर्तनाद श्रीअ-कालपुरुषके दर्बारमें भी सुना गया । तो पूर्वोक्त भाई गुरुदास-जीके वचनानुसार संसारमें धर्मका प्रचार करनेके लिये अकाल पुरुष-की तरफसे श्रीगुरुनानकजी भेजे गये । इसलिये सुलतान वहिलोल लोदीके कालमें संवत् १५२६ विक्रमी तथा सन् १४१९ ईसवीमें कार्तिक शुक्ल पूर्णमासीकी चार घटिका रात्री शेष रहे श्रीगुरुनानक-देवका जन्म माता तृप्ताके गर्भसे उक्त श्रीकल्याणराय नामक क्षत्रिय-के घरमें शहर तलवंडी तहसील शरकपुर जिला लाहौर प्रान्तमें हुआ ॥ इनके प्रथम एक इनकी भागनी थी उसका नाम नानकी था । इन दोनोंके ऐसे नाम होनेका कारण इनका अपने नानाके घर उत्पन्न होना प्रतीत होता है । अब हमको यहांपर श्रीगुरुजीके जन्म अवसर-में 'दिशः प्रसेदुः' इत्यादि लंबा चौडा अलंकार बांधनेकी आवश्यक-ता नहीं है । क्योंकि इत्यादि लेखोंको आजकलके लोग प्रायः अर्थवाद वाक्य मानते हैं । और यह भी है कि हमको तो केवल संक्षेपसे इति-हास मात्र दिखलाना है इसलिये भी ऐसी २ बातोंके लिखनेमें मन नहीं चलता । परन्तु इतना हम अवश्य कहते हैं कि धर्मके प्रचारक आचार्य या अवतार या ऋषि महर्षि या पीर पेगम्बर वली लोग जो जो हुए हैं उन सभीमेंसे यह महापुरुष जिसका हम ऊपर जन्म लिख चुके हैं किसी भी अंशमें न्यून न था । प्रत्युत औरोंकी अपेक्षा इस महापुरुषमें कई एक अंशमें अधिकता थी । औरोंमेंसे किसीने अपनेही अपराधसे प्राण दिये परन्तु अपने पर विश्वासी लोगोंको कहा कि मैं तुम्हारे लिये मरता हूं किसीने चालीस वर्षके होकर मि-थ्याही लोगोंको कहा कि मेरेको खुदाने तुम लोगोंके उपदेशके लिये भेजा है मेरे कहनेपर ईमान लाओ अन्यथा कतल किये जाओगे किसीको सुन्दर या सदाचार देखकर लोगोंने माना । किसीको

व्यवहारदक्षताको देखकर लोग उसके पीछे लग गये। एवं किसीको बहुत दयालु न्यायशील या क्रूर देखकर लोगोंने पीछा किया। किसीको तीव्र विरक्त देखकर लोग मोहित हुए। किसीने यथाशक्ति अपनी विद्याकी चपलता दिखलाकर लोगोंको अपने पीछे लगाया परन्तु इस महापुरुषके पास परोपकारी सचाईके भरे हुए उपदेश सिवाय जो कि इसकी वाणीसे अब भी निकलता है बनवाटी किञ्चित् भी न था।

उलटा और जिस २ ने धर्मप्रचारक होकर उपदेश किया उसने लोगोंको पंजेमें लानेके लिये ऐसा किया कि भाई भाईको एक जगापर बैठकर भोजन करना तो दूर रहा परस्पर शत्रु बना दिया। परन्तु इस महापुरुषका केवल सचाईसे भराहुआ सन्मार्गका उपदेश जिसको हिन्दू मुसलमान दोनों जातिके लोग अबतक भी सत्कारपूर्वक सुनते तथा मानते चले आये हैं। इसलिये और धर्मप्रचारकोंके जन्मकालमें दैवात् जो कुछ होना किसीको स्वीकार हो वही या उससे अनेक गुण-अधिक इस महापुरुषके समयमें भी उस श्रद्धालु पुरुषको अवश्य जानलेना चाहिये किसी एक नीच मूर्ख कुतर्कीके सिवाय विचारशील ऐसा कोईभी पुरुष न होगा जो कि इस महापुरुषकी पाठक्रमेण विशेषविशाधायिका सन्मार्गोपदेष्ट्री पवित्र वाणीको वांच या श्रवण कर इसको कोई परमेश्वरकी तरफसे विशेष पुरुष न माने जब कल्याणराय पिताको अपने पुत्र उत्पन्न होनेके सुसमाचार मिले तो उसने बहुतसा अन्न वस्त्र तथा धन साधु अभ्यागत अनाथोंको प्रदान किया उसके पश्चात् कल्याणरायने पण्डित हरिदयाल शर्माको बुलाकर अपने पुत्रकी जन्म पत्रिका तैयार करवाई। पण्डितने शीघ्रही जन्मपत्रिका तैयार करी।

श्रीगुरुनानकजीकी जन्मकुण्डली.

और कुछ मन माने ग्रहोंको स्पष्ट करके कहा कि हे कल्याणराय- आपके बहुतही उत्तम भाग्य हैं जो कि ऐसापुत्र आपके गृहमें उत्प- न्न हुआ है । यह कोई साधारण पुरुष नहीं है किन्तु महापुरुष है । यह बहुतही प्रतापशील होगा । इसको सारी दुनियाँके लोग पूजेंगे । हिन्दू मुसलमान दोनों इनके वचनोंपर विश्वास करेंगे । इसके सभी चिह्न चक्र तथा ग्रह अवतारीपुरुषोंके समान हैं । इसी कालमें इसी वार्ताकी पुष्टि दौलता नामक धात्रीने भी कहा कि सच है महाराज मैंने भी अपनी उमरमें हजारों बच्चे पैदा किये हैं परन्तु ऐसा प्रभावशी- ल मैंने आजतक सिवाय इसके दूसरा नहीं देखा । जिस स्थानमें श्रीगुरुजीका जन्म हुआ था वह भूमि नानकानासाहिब इस नामसे बडी मजबूत इमारत (मन्दिर) रूपसे अबतक प्रख्यात है । वहां पर अबभी उनके जन्मके दिनपर सहस्रों नहीं किन्तु लक्षों पुरुषोंके जुटा- उका मेला हुआ करता है । श्रीगुरुनानक देवके संसारमें आतेही स्वयं ही दैवात् लोगोंके चित्तोंमें धर्मके न्यायके परोपकारके संकल्प विक ल्प स्फुरण होने लगे एक वर्षही की उमरमें आपके दाँतभी निकल आये और खडे होकर चलने फिरनेभी लगे । लोकोक्त प्रसि द्ध ही है कि, होनहार विरवानके होत चीकने पात ॥ जब कहीं स्वाभाविक बैठ जाते तो सदाही पद्मासन मारकर बैठते । और कुछ न कुछ मुखसे स्मरणकीया भजनकी तौर पर अवश्य उच्चारण किया करते ।

जब पाँचवर्षके हुए तो अपने साथ फिरने बैठने वाले लडकोंको ऐसी २ कहावतें तथा बातें सुनाया करते कि जिनमें परमेश्वरकी प्रशंसा तथा बडाईकी शिक्षा लडकोंको मिले समय २ पर जो कुछ आपको घरसे मिला करता था वह फकीरों अभ्यागतोंको बाँट दिया करतेथे।

जब श्रीगुरुजी सात वर्षके हुए तो एक दिन उनकी मासी अपनी भगिनी माता तृप्तास मिलन आई। श्रीगुरुजीके चाल चलनको देखकर कहने लगी कि यह लडका तो कुछ पागलसा प्रतीत होता है। क्योंकि यह घरसे जो वस्तु उठा लेजाता है किसी न किसीको बाहिर देकर चला आता है मासीकी इस वार्ताको श्रीगुरुजीने भी सुना। मासीसे कहा कि—हे मासी! मेरे जैसा पगला एक तेरे घरमें भी होगा। ईश्वरकी इच्छासे उस मासीके घरमें एक रामरत्न नामक महापुरुष हुआ जो कि वैरागी साधू लोगोंमें बडा प्रख्यात तथा आत्मज्ञानी हुआ है। उसका स्थान भी शहर कसूरमें अभीतक प्रसिद्ध है। वैशाखकी संक्रान्तिको वहां पर भी भारी मेला हुआ करता है।

इति एकादशोऽध्यायः॥ ११॥

अथ द्वादशोऽध्यायः॥ १२॥

श्रीगुरुजी लडकोंके साथ खेलते फिरते भी प्रतिक्षण परमेश्वरक स्मरण किया करते। अथवा कोई भजन गाया करते थे। स्वाभाविक भी जो कुछ किसीको कह दिया करते उसके साथ वैसेही हुआ करता। संवत् १५३२ में कल्याणरायने श्रीगुरुजीको हिन्दी पडनेके लिये गोपाल पण्डितके पास पाठशालामें बिठलाया। गोपाल पण्डितन आपको प्रथम हिन्दीके अंक लिखकर याद करनेको दिये। श्रीगुरुजीने पण्डितसे कहा किं यह संसारका हिसाब किताब जिस २ पुरुषने पढा है उसको अन्तकालमें बहुतही क्लेश उठाना पडा है इसलिये मेरेको इस सांसारिक हिसाब किताबसे कुछ प्रयोजन या लाभ

नहीं है मैं तो परमेश्वरको नाम पढन पढाने आया हूं । इस लिये मेरेको तो आपके लिये भी यही उचित प्रतीत होता है कि आपभी इस सांसारिक झूठे पठन पाठनको छोडकर सच्चे पठन पाठनकी तरफ दृष्टि देवें । यह कहकर उसी कालमें पण्डितके उद्देशसे कुछ शब्द भी श्रीगुरुजीने उच्चारण किये । तथा अनेक तरहके दृष्टान्त प्रमाणोंसे पूरित प्रेममयी पवित्र मनोहर वाणीसे कुछ सदुपदेश भी किया । जो कि तिथिपट्टीके नामसे श्रीगुरुग्रन्थसाहिबमें प्रख्यात है । जिसको श्रवण करके पण्डितजीके चित्तमें आश्चर्य हुआ तथा श्रीगुरुजीके सारगर्भित सदुपदेशके अनुसार आपभी प्रयत्न करने लगा । अर्थात् लडकोंके पठन पाठनादि साधारण कार्यको परित्याग कर केवल अपना पर-लोक सुधारनेके लिये स्नान ध्यान ईश्वरउपासना साधुसेवा इत्यादि सत्कार्योंमें अपना काल व्यतीत करने लगा। और समय २ पर श्रीगुरुजीके पास आकर उनके सदुपदेश सदाचारादि व्यवहारोंको देख कर विमोहित होने लगा ।

उसके तीन वर्ष पश्चात् अर्थात् संवत् १५३५ विक्रमीमें कल्याण-रायने अपने पुत्रको संस्कृत विद्या सीखनेके लिये पण्डित ब्रजनाथ शर्म्माके पास भेजा । पण्डितजीने विधिपूर्वक प्रारम्भ करवाकर श्रीगुरुजीको सबसे प्रथम ' ॐम् नमः सिद्धम् ' इतनामात्र पटीयापर लिख-कर याद करनेके लिये दिया । श्रीगुरुजीने पटीया हाथमें लेकर पण्डितजीसे कहा कि आप इसका अर्थ भी साथही बतला दीजिये पण्डि-तने कहा अर्थका कुछ प्रयोजन नहीं । गुरुजीने कहा अर्थसे विना शब्दहीका क्या प्रयोजन है । पण्डितने कहा कि शब्द याद करले-नेसे बडे २ ग्रन्थ बांचनेकी शक्ति होजाती है । गुरुजीने कहा कि उन

---

(१) जाल मोह धस मसि कर मति कागजकर सार ॥ भानु कलम कर चित्त लिखारी गुरु पुच्छ लिखा विचार ॥ लिख नाम सालाह लिख लिख अन्त न पारावार । बाबा ऐसो लेखा लिख जान । जिथे लेखा मंगीये तिथे होय सच्चा निसान ॥

ग्रन्थोंके बांचनेसे भी उनका तात्पर्यार्थ जाने विना क्या लाभ है। इत्यादि श्रीगुरुजीके उचित वचन श्रवणकर पण्डित ब्रजनाथको आश्चर्य हुआ। और गुरुजीको बडे प्रेमसे बोला कि क्या आपको इसके अर्थ भानहोते हैं। श्रीगुरुजीने कहा हां यथाबुद्धि भान होते हैं। पण्डितने कहा कि आप सुनाइये। तो श्रीगुजीने ॐ कारके व्याख्यानमें पण्डितजीको बहुत कुछ सुनाया जिसको श्रवणकर पण्डितजीके स्वान्तमें सद्बोधका अंकुर स्वयं उद्बुद्ध होय आया तथा समय समयपर श्रीगुजीके अनेक प्रकारके सदुपदेशोंसे अपनेको कृतकृत्य तथा महाभाग्य समझने लगा। समय २ पर श्रीगुरुजी छोटों बडोंमें जहा बैठते वहां ही कुछ न कुछ परमेश्वरके गुणानुवाद या परमेश्वरके इस जीवपर उपकारोंको वर्णन किया करते। बालपनमें इस विलक्षण चेष्टाको देखकर शहर मात्रके लोग जो देखे सुने आश्चर्य होने लगे। घर घरमें चर्चा फैली कोई कहे कि यह कल्याणरायका बालक पागल है। कोई कहे कि पागल नहीं परन्तु इसको दुनियाँकी होश नहीं। कोई कहे कि बातें तो अच्छी २ सुनाता है इसलिये कोई परमेश्वरका भक्त है। कोई कहे कि भक्त काहेका है आप भी बेकार है और इधर उधरकी बातें सुनाकर हमारे बच्चोंको भी इसने निकम्मे कर छोडा है। इत्यादि ऐसी ऐसी अनेक तरहकी चर्चा लोगोंके मुख द्वारा कल्याणरायने भी सुन पाई। इस लिये उसको भी अपने पुत्रके विषे अनेक तरहके विचार होने लगे। कल्याणरायने अपने पुत्रको जब पढने सुननेसे सर्वथा उपराम देखी तब ऐसा विचार किया कि इसको भी किसी कार्यमें अवश्य लगाना उचित है। अन्यथा प्रतिदिन विपरीतही होनेकी सम्भावना होती है। ऐसा विचार कर श्रीगुरुजीको गौ चरानेके लिये नियत किया। पिताकी आज्ञाके अनुसार प्रतिदिन श्रीगुरुजी गौएँ चराने लगे। शहरके और चरवाल लडकोंके साथ मिलकर प्रातः जंगलमें जाना तथा सायंको आना। एकदिन ऐसा हुआ कि सभी लडके जंगलमें गौएँ छोडकर एकठे मिलकर श्रीगुरुजी

के उपदेश सुनने लग गये । उस कालमें लडकोंकी पूर्ण अधिकारी जानकर गुरुजीने ऐसा उत्तम उपदेश किया कि सुनते २ उनकी चित्तवृत्ति स्थिर हो गई । हम कहां हैं क्या करते हैं तथा क्या करना चाहिये ऐसी विवेचना बुद्धि बालकोंमेंसे जाती रही तबतक गौओंने पडकर एक जिमींदारके खेतको उजाड डाला । जिमींदारने सब गौओं को लडकों समेत स्थानेमें पहुँचाया । थानेदारने सब लडकोंसे पूँछा तो उन्होंने कहा कि हम लोगोंको इस नानकने ऐसी बातोंमें लगा रक्खा था कि हम लोगोंको अपने आपेतककी खबर भी नहीं रही थी। उसी कालमें गौओंने इस जिमींदारका खेत खाया होगा । फिर थानेदारने गुरुजीसे पूछा तो गुरुजीने उत्तर दिया कि इस जिमींदारका खेत आप चलकर देख लीजिये यदि कुछ गौओंने खाया होगा तो हम लोगोंको जो चाहो दण्ड देना । थानेदारने इस बातको उचित समझा और झट सवार होकर जिमींदारको साथ लेकर उसके खेतमें पहुँचा देखा तो खेत ज्यों का त्यों हरा भरा देखपडा । जिमींदार शर-मिंदा हुआ । और थानेदारने लडकोंको दिलासा देकर उनको अपने२ घरोंमें भेज दिया । पीछे जिमींदारको बहुत समझाया । कहा कि ऐसा फैसला कभी फिर तुम हमारे पास लाओगे तो हम तुमहीको सजा देंगे ।

उसके पश्चात् ग्यारह वर्षकी उमरमें अर्थात् संवत्१५३९विक्रमीमें पिता कल्याणरायने अपने पुत्रको फारसी इलमके अभ्यास करनेके लिये कुतबुद्दीन मौलानाके पास भेजा । उस मौलानाके साथ भी श्री गुरुजीका वार्तालाप प्रायः पूर्वोक्त दोनों पण्डितोंहीकी तरहपर हुआ । मौलाना साहिबने श्रीगुरुजीको याद करनेके लिये अलिफ बे पे ते इत्यादि फारसीके अक्षर लिखके दिये थे श्रीगुरुजीने मौलाना साहिबसे कहा कि इनके माने भी साथके साथही बतला दीजिये । मौलाना जी गुरुजीकी प्रख्यातिसे परिचित थे । इसलिये मौलाना साहिबने कहाकि हरएक हर्फ तो किसीभी मानेको नहीं कहता किन्तु हरूफ मिलकर जब लफज बनता है तब अलबत माने हुआ करते हैं । श्रीगुरुजीने कह

तो क्या जुदा २ हरूफ बे माने हैं ? मौलानाजी बोले हां मैंतो ऐसा ही समझता हूं । श्रीगुरुजीने कहा कि यह आपकी समझ सही नहीं । जब हरूफोंमें माने नहीं तो हरूफोंहीके तो मिलकर लफज़ बनेंगे फिर उनमें माने कहांसे आजावेंगे । इसलिये हरूफ भी अवश्य कुछ न कुछ अपने माने रखते हैं । मौलवी साहिबने कहा यदि ऐसा है तो आपही फरमाइये श्रीगुरुजीने कहा । अलफअल्लानुं यादकर गफलत मनो विसार ॥ श्वास पलटे नाम बिन धिक् जीवन संसार ॥ १ ॥ बे बदअतको दूरकर कदम तरी कत राख ॥ सभना आगे निंब चलन मन्दा किसी न आंख ॥२॥ ते तो वहकर आजजी सांई बे परवाह ॥ साथन चले कुतब्बदीन जन्म गँवायो वाद ॥ ३ ॥ से सनाकर रब्बदी खालकनुं कर याद ॥ यादन की तो कुतब्बद्दीनो जन्म गवायो बाद॥४॥ इन चार दोहोंका संक्षेपसे भाव यह है कि अलफ अल्लाको याद करन को कहता है । बे बुराईके छोडनेका उपदेश करता है । और यह भी कहता है कि किसीको बुरा मत कह । तथा व्यर्थ झगडोंमें अपने जन्मको मत बरबादकर । ऐसेही ते तोबह करनेका उपदेश करता है । तथा से परमेश्वरकी पहिचान करनेका उपदेश करता है इसी तरहसे श्रीगुरुजीने सभी हरफोंके माने करके मौलाना साहिबको सुनायेथे जो कि ग्रन्थजन्मसाखीमें पूर्ण रूपसे लिखे हैं । जिनको सुनकर मौलाना कुतब्बदीन साहिबके चित्तपर बहुत कुछ असर हुआ । और सांसारिक कार्य्योंसे उपराम होकर परमेश्वरके मार्गमें प्रवृत्त हुआ ।

उसके पश्चात् उसी ही वर्षमें पिताने शुभदिन विचारकर पुरोहितको बुलाकर अपने पुत्रका उपनयन संस्कार करना चाहा ॥ पुरोहितजी सभ सामग्री लेकर आये । भूमिको पोतसाफकर चावलोंके आटेसे चौक पूरा । यज्ञोपवीत निकालकर थालमें रखा । कई एक मन माने श्लोकोंका पाठ उच्चारण करके या इधर उधरकी आपातरमणीय क्रियाको करके अन्तमें पुरोहितजीने श्रीगुरुजीके कंठमें यज्ञोपवीत पहिराना चाहा । तब श्रीगुरुजीने जबाब दिया कि इस यज्ञोपवीतसे हमको

कुछ लाभ नहीं है। पुरोहित बोला कि, और कैसायज्ञोपवीत तुमको चाहिये। तब श्रीगुरुजी बोले। 'दयाकपास सन्तोष सूत जतगंठी सत वट। एह जनेऊ जीवका है ईतो पाण्डे घत ॥ ना एह तुटे न मल लगे न यह जले न जाय॥ धन्य सोमसनानका जे गल चले पाय॥१॥ इत्यादि वचनोंको सुनकर पुरोहितजी शान्त होगये नातेके लोग तो श्रीगुरुजीके स्वतंत्र स्वभावसे प्रथमही परिचित थे। इस लिये कुछ न बोले। पिताको अपने पुत्रकी ऐसी चेष्टा बहुतही बुरी लगी परन्तु कई एक भले पुरुषोंके समझानेसे शान्त रहा। परन्तु श्रीगुरुजीका ऐसे समय पर यज्ञोपवीतका न पहिरना एक भारी भावसे पूरितथा। वे जानते थे कि यह यज्ञोपवीत पुरुषको एकदेशसी बनानेके लिये एक तरहके मजहबकी फाँसी है। उसीको यदि हमभी पहिरलेंगे तो हमारी गणना भी अवश्य एक देशिओंहिमें होगी परन्तु हमने तो हिंदू मुसलमान दोनोंको समान जानकर उनके हितके उपदेश तथा मक्के मदीने तकका सैर करना है। यज्ञोपवीत इत्यादि सभी कार्य्योंमें पूर्णरूपसे प्रतिबन्धक अवश्य होगा और सिवाय इसके हमारी किसी तरहकी हानि है ही नहीं, इत्यादि अनेक तरहके लाभ सोचकर यज्ञोपवीतका पहिरना श्रीगुरुजीको स्वीकार नहीं हुआ।

उसी सालमें एक दिनका वृत्तान्त है कि श्रीगुरुजी अकस्मात् घरसे निकल कर बाहर एकान्त जंगलमें चले गये। वहां जाकर कुछ देरतक ईश्वरके गुणानुवाद गायन कर ध्यान स्मरण किया पश्चात् एक चित्त होकर समाधि लगाकर निश्चल हुए तो एक महासर्प अपने फनको फैलाकर उनके मुखपर छाया करने लगा उसीकालमें रायबुलार नामक हाकिम भी शिकार खेलनेके लिये उसी जंगलकी तर्फ निकला था। जंगलमें लडके पर सर्पके फणकी छायाको देखकर रायबुलार हाकिमके चित्तमें बहुतही आश्चर्य हुआ और उसके मनमें विश्वास हुआ कि यह लडका कोई साधारण नहीं है ! किन्तु वली अल्लाह है। तात्पर्य्य यह कि इसी तरह श्रीगुरुनानकजी बहु-

तही छोटी अवस्थामें अच्छे लोगोंमें प्रख्यात होचुके थे । परन्तु उन-
कों एकान्त बहुतही पसन्द पडता था । इसलिये प्रायः जङ्गलहीको
चले जाया करते थे । यदि कदाचित् घरमें भी बैठना होय तो
किनारे होकर बैठ रहा करते थे । यदि कोई वार्तालाप करना चाहे तो
परमेश्वरहीके गुणानुवाद सुनते या कहते थे। परन्तु दुनियोंकी बातोंका
हुङ्कारभी नहीं भरा करते थे ऐसी दशाको देखकर बहुतसे पुरुषोंने
कल्याणरायसे कहा कि आपका पुत्र कहीं किसी रोगसे रोगाक्रान्त
न हो इसलिये किसी अच्छे वैद्यको बुलाकर कुछ औषधी करवानी
उचित है । बहुत लोगोंके कहनेपर कल्याणरायने एक वैद्यको बुला-
कर अपने पुत्रको दिखलाया वैद्य श्रीगुरुजीकी नाडी देखने लगा तो
श्रीगुरुजीने शब्द कहा कि 'वैद्यबुलाया वैद्यगी पकड टटोले बाँह ।
भोला वैद्य न जानहीं दर्द कलेजे मांह ॥ जाहु वैद्य घर आपने मेरीथाह
न लहु । हममरते शहु आपने तूं किस दारू देह ॥ १ ॥ ' अर्थात्
वैद्य चिकित्सा करनेके लिये बुलाया गया है । इसीलिये यह बाँह
पकडकर नाडी देखने लगा है परन्तु वैद्य भोला है अर्थात् अज्ञान है ।
यह नहीं जानता कि यहां तो परमेश्वरके प्रेमकी दर्द (पीडा) हरवक्त
हृदयमें लगीही रहती है । इसलिये हे वैद्य ! तुम अपने घरमें आराम
करो हमारे रोगका पता आपको मिलना कठिन है । क्योंकि हमको
तो अपने पति परमेश्वरके साथ अनुराग है । और तुम किस रोगकी
औषधी करते हो । इत्यादि सारगर्भित उपदेशको सुनकर वैद्यराजने
श्रीगुरु जीको वस्तुतः महापुरुष जानकर प्रणाम किया और शान्तचित्त
होकर अपने घरमें जाकर श्रीगुरुजीके किये उत्तम उपदेशका विचार
करने लगा ॥

ऐसेही फिर एक दिनका वृत्तान्त है कि श्रीगुरुजी बाहर जंगलमें चले
गये । वहां पर एकचित्त होकर सर्वान्तर्यामी परमात्माके गुणानुवाद गाने
लगे । पीछे ध्यानारूढ होकर वृक्षके नीचे बैठ गये । बहुत देरी होगई
सभी वृक्षोंकी परिछाहीं अपने मूलकी समीपताको छोड २ कर दूर दूर

चली गयी परन्तु जिस वृक्षके नीचे श्रीगुरुजी विराजे थे उस वृक्षकी छाया जैसीकी तैसीही बनी रही । ऐसी अवस्थाकालमें भी वही रायबुलार नामक हाकिम शिकार खेलता हुआ । फिर अकस्मात्‌ही वहां आन पहुँचा वह हाकिम श्रीगुरुजीकी ध्यानावस्थाको देखकर तथा वृक्षकी छायाको यथावत् देखकर आश्चर्य हुआ । और उसके हृदयमें श्रीगुरुजीके ऊपर कुछ भाव भक्तिका विशेष रूपसे अंकुर जाग उठा । यद्यपि श्रीगुरुजीकी अवस्थाके अतिलघु होनेके कारण कोईभी बूढा या बडा मनुष्य इनके पर श्रद्धाभक्ति होते भी संकोच रखा करता था । परन्तु रायबुलारने अकस्मात् दोबार परीक्षणपूर्वक निश्चय करके सभीको स्पष्टरूपसे विदित किया कि यह पुरुष कोई साधारण नहीं है किन्तु वली अल्लाह है । यहांतक कि रायबुलारने श्रीगुरुजीके पिताको पास बुलाकर विशेष रूपसे कहा कि यह लडका तुम्हारा बहुतही खुदादोस्त है इसलिये उनको किसी तरहकी तकलीफ न होने देना । यदि इसके बारेमें तुमको खर्चकी तंगी हो तो हमारे नाम लिखकर करना । परन्तु इनको जैसे हो खुश रखना इत्यादि । रायबुलार हाकिमकी आज्ञा सुनकर कल्याणरायने हाकिमसे कहा कि हजूर उसको तो बहुत लोग पागल बतलाते हैं। हाकिमने कहा जो उसको पागल बतलाते हैं वेही पागल हैं । दुनियाँमें फँसे हुए बन्दोंको वली लोगोंकी पहिचान होना बहुत कठिन है । इसलिये जो जिसके मनमें आया उसने वैसाही कहा । इत्यादि रायबुलारके वचन सुनकर कल्याणरायने कहा कि, जैसी आपकी आज्ञा होगी वैसेही होगा और सलाम करके घरमें चला आया ॥

जैसे रायबुलार हाकिमका विश्वास ऊपर दिखलाया गया है वैसेही और भी अनेक लोगोंका गुरुजीके सद्गुणोंको देखकर दिनोंदिन प्रेमं बढ्ढ होने लगा । छोटीही उमरमें श्रीगुरुजीकी संसारी पुरुषोंसे विलक्षण चेष्टाकी प्रख्यात दूर दूर तक पहुँची ।

इति द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अथ त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥

उसी समयमें एकदिनका वृत्तान्त है श्रीगुरुजीके पास भाई मर्दाना, जो कि, उनके घरहीका मिरासी (भाट) था आया। श्रीगुरुजीसे कहने लगा कि शहर पाकपटनमें बाबा फरीदका मेला है। वहांपर अनेक प्रकारके साधु, सन्त, फकीरलोग एकत्र होंगे। यदि आप भी उस मेलेको देखने चलें तो बहुतही आनन्द हो। और आपके सङ्गसे मैं भी उस मेलेको देख लूंगा तो मेरेको भी बहुत लाभ होगा श्रीगुरुजीने मर्दानेका कहा स्वीकार किया। और नियत समयपर चलकर श्रीगुरुजी जेष्ठमासकी १९ संवत् १५४१ में शहर पाकपटनके मेलामें पहुँचे वहां बाबाफरीदके स्थानपर उस कालमें शेख इब्राहीम शहजादा था। उसके साथ श्रीगुरुजीका जो कुछ वादाविवाद हुआ है। वह सब गुरुग्रन्थ साहिबके अन्तर्गत मारू रागकी वारमें यथावत् लिखा है। जब तीन दिनके पश्चात् मेला देखकर घरमें आये तो पिता कल्याणरायने मनमें जाना कि, मेरे पुत्रको साधु फकीरोंके मिलनेका उमङ्ग बहुत रहता है। कहीं ऐसा न हो कि, फकीरही होजाय इस लिये इसको कोई भी धन्दा सिखलाना उचित है। ऐसा मनमें दृढ विचार जमाकर पुत्रको पास बुलाया। कहा कि देखो बेटा अब तुम योग्य हुए इसलिये कुछ भी दुनियाँका धन्दा करना चाहिये। गुरुजीने कहा पिताजी जैसी आज्ञा होय वैसेही किया जावे।

पिताने कहा कि, बेटा मेरी इच्छा ऐसी है कि, तुम कुछ व्यापार करना सीखो जिसमें खूब लाभ हो। गुरुजीने कहा पिताजी ऐसा व्यापार कौन है। पिताने कहा बेटा खूब समझ सोचके सच्चा सौदा करना जिसमें अन्तमें घाटा न पडे बस ऐसा करनेसे सभी व्यापार अच्छे हैं। गुरुजीने कहा जैसी आपकी आज्ञा। तब कल्याणरायने कुछ रुपया देकर और एक जाट जातिका भाई बाला नामक भला

पुरुष साथ देकर अपने पुत्रको लाहौर शहरकी तर्फ कोई माल जिन्नस खरीदनेको भेजा । श्रीगुरुजी पिताकी आज्ञापूर्वक घरसे चलकर एक चूहडकाने नामक ग्राममें पहुँचे। तो देखा कि, वहांपर एक साधु लोगोंकी भारी जमात उतर रही है । समीप जाकर दर्शन किये चित्तसे प्रसन्न हुए । परन्तु उसी कालमें किसी पुरुषने धीरेसे गुरुजीको कहा कि, यह सभी साधु तीन दिनसे यहांपर पडे हैं । परन्तु इनको अभीतक किसीने पानीतक नहीं पूछा ऐसा सुनकर श्रीगुरुजी बहुत आश्चर्य तथा दुःखी हुए । उसी कालमें वह रुपयोंकी रकम जो कि, पिताने सच्चा सौदा करनेके लिये दई थी भाई बालाको दई; कहा कि, इन सबकी भोजन बनानेकी सामग्री खरीद लाओ भाई बालाने श्रीगुरुजीकी आज्ञासे वैसेही किया. शहरमें जाकर आटा दाल घृतादि सभी सामग्री खरीद लाया । वह सामग्री श्रीगुरुजीने साधुलोगोंको अर्पण करी । वे लोग भोजन बनाय पायकर तृप्त हुए तो श्रीगुरुजीने अपने पिताके निवासके ग्राममें चले आये । ग्रामके समीप आकर आप तो एक पीलूके वृक्षके नीचे जो कि, अबभी तम्बु साहिबके नामसे प्रसिद्ध है आसन मारकर बैठ गये । और भाई बालाको घोडी खाली देकर घरको भेज दिया । भाई बालाने जाकर सौदेका सभी हाल कल्याणरायको सुनाया । वह सुनकर बहुत खफा हुआ । और क्रोधाविष्ट होकर गुरुजीको पकडकर रायबुलार हाकिमके पास ले गया । और सौदेका सभी हाल भी सुनाया । उस कालमें श्रीगुरुजीने कहा कि, पिताजी आपकी आज्ञा बहुत खरा तथा लाभवाला सौदा खरीदनेका था परन्तु यह नहीं आपने कहा था कि, अमुक वस्तुही खरीदके लाना । इसलिये मेरेको यही सच्चा तथा अधिक मुनाफेवाला सौदा प्रतीत हुआ । श्रीगुरुजीके इस जुबाबको सुनकर रायबुलार किञ्चित् मुसकुराया । और कल्याणरायको कहने लगा कि, महता साहिब तुम कबतक इस कामल कंभी तथा आमल अमीरसे बेखबर रहोगे । हमने तो तुमको पहले

भी कह रखा है और आज फिर कहते हैं कि, यह जिस कदर रुपया खर्च किया करे तुम हमारे नाम लिखा करो । अथवा हमारे खजानेसे उसी वक्त लेजाया करो । मगर इनके चित्तमें किसी तरहका रंज न पहुँचाया करो । गुरुनानकजीकी ऐसी २ उदारताकी बातोंसे उसका पिता सदाही प्रायः दुःखी रहा करता था परन्तु श्रीगुरुजी अपने उदारभावका या सहजावस्थाका कदापि त्याग नहीं करते थे । अन्तमें कल्याणरायने यह विचार किया कि मेरे पास रहकर इसको सुधरना कठिन है । इसलिये अपनी पुत्री बीबी नानकीके साथ श्रीगुरुजीको संवत् १५४१ माघमासमें शहर सुलतानपुरमें भेज दिया । यह सुलतानपुर इलाका कपूरस्थलामें प्रसिद्ध है । यह शहर बीबी नानकीके ससुरारका है । बीबी नानकी का पति लाला जयराम वहांके दौलतखान नामक नवाबका दीवान था । उसने श्रीगुरुजीको अपने घरमें आये जानकर बहुतही खातिर की । और उनकी इच्छा तथा आज्ञाके अनुकूल हर तरहकी सामग्री जुटा दई । परन्तु श्रीगुरुजीको तो प्रायः वहांभी दोही कार्य्य सदा मुख्य रहते । या तो यदि कोई साधु सन्त कहीं हो तो उसके साथ ज्ञान चर्चा और या गोशानशीनी अर्थात् एकान्तसेवन । उनका ऐसा चालचलन देखकर दीवान साहिबको भी फिकर हुआ कि कहीं ऐसा नहीं कि किसी साधु फकीरके साथ जहां चाहे चल देवे । ऐसा होने से मेरेको बदनामीका कलंक भारी होगा इसलिये उसने बहुत सोच विचारकर श्रीगुरुजीकोभी किसी कार्यमें लगानेकी इच्छा करी । और संवत् १५४२ में नवाबसाहिबकी खिदमतमें अर्ज करके दीवान साहिबने श्रीगुरुजीको मोदीखानेका काम दिलवाया । श्रीगुरुजीने अपनी बाहिन तथा बहनोईके कहनेसे मोदीखानेका काम करना स्वीकार किया । परन्तु प्रतिदिन ऐसा होने लगा कि जितनी रसद (सीधा सामान) नवाब साहिबके खर्चेके लिये उठती उससे चारगुनी साधु, सन्त, गरीबों और फकीरोंको बांट दिया करते । वह मोदीखानेका

स्थान अबतक भी इंटी साहिबके नामसे प्रख्यात है । श्रीगुरुजी जब रसद तौलकर लोगोंको दिया करते तब तोलनेके वक्त हरवक्त तेरा है २ यही कहा करते।परन्तु लेनेवालोंको कहते कि जब तुमारे मतलबका होजाय हमको बस कह देना । इस रीतिसे बीस तकका भी गणना या हिसाब उनके पास कुछभी न था।परन्तु जो कोई आनसे आनकर मांगे तौलकर देनेसे इनकार कदापि नहीं करते थे । थोडेही दिनोंमें उनके ऐसे बेहिसावके व्यथ खर्चकी अनेक शिकायतें नवाब साहिब के पास पहुँची । पहले पहले तो नवाब साहिबने भी ख्याल न किया परन्तु जब वहुत लोगोंने कहा तो नवाबने हिसाबकी शोध करनेके लिये हुक्म दिया । नवाबके कारकून लोगोंने तथा दीवान जयराम साहिबने मिलकर मोदीखानेके आमद खर्चके हिसाबको साफ किया तो कुछ रुपया श्रीगुरुजीकाही बाकी निकला। ऐसेही अनेकवार लोगोंने चुगली खाया दीवान साहिबके हुकुमसे कई वार हिसाबकी शोध भी हुई परन्तु परमेश्वरकी कृपासे सदाही कुछ न कुछ श्रीगुरु-जीकाही बाकी निकलता रहा ।

उसी कालमें दीवान जयरामने श्रीगुरुजीकी शादी करनेका विचार भी किया । बहुत शोधसे ग्राम पखो जिला गुरुदासपुरके निवासी 'मूलचन्द्र' चोना जातिके क्षत्रियकी 'सुलक्षणी' नामक लडकीसे विवाह करनेका विचार स्थिर किया । एवं २४ मास ज्येष्ठ संवत् १५४५ तथा सन् १४८७ में जयरामने यथायोग्य सम्बन्धिवर्गको बुलाकर विवाहभी करदिया । जिससे पाँच श्रावण संवत् १५५१ में श्रीगुरुजी के वर एक पुत्ररत्न ऐसा उत्पन्न हुआ कि जिसका प्रताप सारे भूमण्डलपर विराजमान है । श्रीगुरुजीने उस पुत्रका नाम 'श्रीचन्द्र' रक्खा था । बस यही बाबा श्रीचन्द्र उदासीन साधुसम्प्रदायका मूल पुरुष है । इस महापुरुषका इस संसारमें आना भी कोई साधारण पुरुषोंकी तरह न था। किन्तु माताके गर्भहीसे जटा विभूति कर्ण मुद्रादिके वेषके सहित आगमन हुआ था। इसी महापुरुषके प्रतापके उजालेने उदा-

सीनसाधू वेश द्वारा देश देशको व्याप्तकर रखा है। उसके पश्चात् १९ फाल्गुन संवत् १५५३ में दूसरा पुत्र लक्ष्मीचन्द्र नामक उत्पन्न हुआ जिनकी वंशपरम्परामें महाप्रतापी वेदी साहिबजादे अबतक विद्यमान हैं। उसके पश्चात् संवत् १५५४ में एकदिन श्रीगुरुजी वेंई नामक नदीपर स्नान करने गये। तो वहां एक साधूसे जो कि वस्तुतः परमात्माकी ओरसे दूत था मुलाकात हुई। साधूने कहा हे बाबा नानक तुम किस कामके लिये इस संसारमें आये हो। तुम्हारे लिये सच्च दर्बारसे क्या आज्ञा है। और तुम क्या कर रहे हो। श्रीगुरुजी उसी साधुके साथ तीन दिन तक लुप्तसे हो गये। बहुत लोगोंको यही निश्चय हुआ कि नदीमें डूब गये होंगे। जब तीन दिनके पश्चात् सत्यखण्डसे पीछे आये तो ग्रामका परित्याग करके कबरस्तानमें आसन कर लिया। दीवान जयराम सुनकर लेनेको आये। तो आपने उत्तर दिया कि अब मेरेसे मोदीखानेका काम या और कोई भी दुनियाँका धन्दा न हो सकेगा। जयरामने घरमें लानेका भी बहुतही हट किया परन्तु उस कालमें वह भी गुरुजीको अंगीकार न हुआ। किन्तु वहां उनके पास जो आता उसको सन्मार्गका उपदेश सदाही किया करते। लोगोंने फिर हल्ला उडाया कि मोदीखानेमें घाटा डालके अब भागा चाहते हैं दीवान जयरामने सरकारी कारकुनोंको बुलाकर मोदीखानेके हिसाबका फिर शोध किया तो ४०४ रुपया श्रीगुरुजीका नवाब साहिबके तर्फ निकला। श्रीगुरुजीको उस कालके उपदेशका हिंदू और मुसलमानो दोनोंके चित्तों पर ऐसा असर पहुँचा कि अनेक लोग उनके उसी क्षणमें सच्चे भावसे अनुगामी बन गये। और अपने २ धर्म या महजबकी पाबन्दी मिथ्या निश्चय करके उसकी परवाह न रखी। तब काजी लोगोंको श्रीगुरुजीका प्रताप सहन न हुआ उन लोगोंने मिलकर नवाब साहिबसे कहा कि बाबा नानक हिन्दू मुसलमानोंको एकसा मानता है यह वार्ता ठीक नहीं किन्तु हमारी रायमें हिन्दुओंको सुधारता है तथा मुसलमानोंको अपने दीन-

से बिगाडता है । यदि सत्य ही दोनोंको एकसा मानता है तो आप हुक्म दीजिये एक दिन हम लोगोंमें आकर नमाज भी पढे । नवाब साहिबने काजी लोगोंका कहना मंजूर किया । तथा श्रीगुरु-जीको काजी लोगोंके साथ नमाज पढनेके लिये कहला भेजा । श्रीगु-रुजी नवाबके कहनेसे गये । उचित समयपर अनेक मुसलमान लोग तथा नवाब साहिब खुद भी मसजिदमें आये । श्रीगुरुजीको साथ लेकर सबसे आगे नवाब साहिब तथा काजी साहिब स्थित हुए । उसके पश्चात् और भी अनेक मुसलमान लोग यथाक्रम स्थित होकर नमाज पढने लगे । जब नमाजका प्रारम्भ होचुका तो श्रीगुरुजी किनारे होकर बैठ गये सबने नमाज समाप्त किया । पीछे नवाब साहि बने श्रीगुरुजीसे पूछा कि, आपने नमाज क्यों न पढा । काजी साहिबने भी कहा कि आपका जो यह कहना था कि हम हिन्दू मुसलमानको एकसा उपदेश करते हैं मिथ्या हुआ । यदि आप सच्चे हमारे दीनके भी प्यारे होते तो अवश्य अब नमाज हमारे साथ पढते-परन्तु पोल कहांतक चलता है । नवाब साहिब तथा काजीकी पूर्वोक्त वाणी सुनकर श्रीगुरुजी कहने लगे कि जो पुरुष एकाचित्त होकर खु-दाके सामने सयदा करे हम उसीके साथ होते हैं । वह चाहे हिन्दू हो चाहे मुसलमान हो । चाहे सन्ध्यावन्दन करता हो चाहे नमाज पढता हो । परन्तु जिसका चित्त ठिकानेपर नहीं रहता हमारा साथ उसके साथ नहीं बनता । यहांपर नवाब साहिबका चित्त भी नमाजमें न था किन्तु नमाजहीके वक्त काबुलमें घोडे खरीद रहा था । और काजी साहिबका चित्त भी नमाजमें न था । किन्तु नमाजके कालमें अपनी घोडीके बच्चेकी रक्षामें था अर्थात् इनके घरमें नई घोडी प्रसूत हुई है । उसने बछेडा दिया है । काजी साहिबको फिकर रहा कि नादान बछेडा कहीं अचानक कूदकर पास कूयेंमें न पडजाय । बस इत्यादि आपलोगोंके चित्तोंके संकल्प जानकर हमने आपके साथ नमाज पढ-ना छोड दिया ॥ अन्यथा मसजिदमें आये तो क्या नमाज पढते

हमको कोई पाप था ? । नवाब साहिबने तथा काजी साहिबने श्रीगुरुजीके स्वात्मसम्वेद्य वचनोंको सुनकर सयदा किया और कहा कि आप वा क्याही वली अल्लाह हैं । हम लोग आपके मुरीद हैं । इनसान हैं ॥ इस लिये भूल जाते हैं । गुस्ताखी भी कर बैठते हैं । परन्तु हरवक्त रहीम होना आप जैसे वली लोगोंका स्वाभाविक धर्म है । ऐसी नम्र गिराको सुनकर श्रीगुरुजीने अनेक प्रकारके प्रिय वचनोंसे नवाब साहिब तथा काजी साहिबका आश्वासन किया । और कहा कि आपलोग खुदाके प्यारे हैं इस लिये सभी गुनाह आपके खुदाहीकी तर्फसे बखशे जांयगे तब नवाब साहिबने सवाल किया कि हमारे लिये दीन दुनियाँ दोनोंकी भलाईका कौन रस्ता है ? श्रीगुरुजीने उत्तर दिया कि यदि आपलोगोंको दीन और दुनियाँ दोनोंमें लाभकी इच्छा हो तो जो हम पाँच नमाजे बतलाते हैं सदा पढा करो । काजीने कहा आपकी पाँच नमाजे कौन हैं ? तब श्रीगुरुजीने शब्द बोले ।

पंज नमाजां वक्त पंज पंजा पंजे नाऊं ॥
पहला सच्च हलाल दुई तीजी खैर खुदा ॥
चौथी नीयत रासमन पंजवीं सिफत शना ॥
करनी कलमा आखके तां मुसलमान सदा ॥
नानक जेती कूडिया कूडी कूडे पा ॥ १ ॥

अर्थात् प्रथम सत्य बोलना । दूसरे धर्मकी कृत्यसे पेट पालना । तीसरे परमेश्वरके नामपर अतिथि अनाथोंको दान करना । चौथे अपनी नीयत साफ रखना । पाँचवें सदा परमेश्वरके गुणानुवाद गायन करना ॥ इन पाँचों कार्य्योंको यथावत् करना मानो पांच नमाजका पढना है । और अपने चाल चलनको सुधारके रखना यही 'कलमा, है । बस ऐसे करनेवाला पुरुष मुसलमान कहा सकता है । और बाकी सब आडम्बर मिथ्या है । लोगोंका दिखलाना मात्र है । नवाब साहिब श्रीगुरुजीका सच्चा उपदेश सुनकर मुरीद बनगया । उसके घर कोई सन्तान न थी । परन्तु चित्तसे बहुतही चाहा करता था । परमे-

श्वरने उसकी वृद्धावस्थामें वह भी इच्छा पूर्ण करी । ईश्वरकी कृपासे पुत्र हुआ । बडा होकर वह भी श्रीगुरुजीका तन मन धनसे मुरीद (शिष्य) हुआ । उसी समयमें एक लाहौर जिलेके कसूर शहरके समीप 'मलस्या' नामक ग्राममें निवास करनेवाला भागीरथ नामक क्षत्रिय भी देवीका बडा प्रसिद्ध भक्त था । उसके शिष्य प्रशिष्य भी अनेक थे । श्रीगुरुजीकी प्रख्याति सुनकर उस भक्तके चित्तमें भी दर्शनकी लालसा हुई । कई एक अपने शिष्योंको साथ लेकर दर्शनको आया श्रीगुरुजीके उपदेशको सुना । अनेक प्रकारके प्रश्न भी किये । उनके उत्तरोंको सुनकर सन्तुष्ट हुआ तथा अपने शिष्य मण्डलके समेत श्रीगुरुजीका शिष्य हुआ । और परिच्छिन्न उपासनाको त्यागकर सर्वान्तर्यामी परमात्माका उपासक बन गया ऐसेही श्रीगुरुजीकी प्रख्याति प्रतिदिन प्रतिदिन वृद्धिको प्राप्त होने लगी । हिन्दू तथा मुसलमान दोनों जातियाँ आपको समान रूपसे मानने लगीं। हजारों रुपये भेट पूजामें भी आने लगे परन्तु श्रीगुरुजी सिवाय गरीब अनाथोंके खिलाय पिलाय देनेके एक छदाम भी अपने पास जमा न रखते थे । उनके पास जो आता वह कदापि खाली नहीं जाता था । किन्तु कुछ न कुछ सभीको यथायोग्य दियाही करते। ऐसे होते होते उनके पास मनुष्योंका प्रतिक्षण बहुत समुदाय रहने लगा । सभी लोग उनके पवित्र उपदेशोंको सुन सुनकर स्वयं पीछे लगने लगे । जब श्रीगुरुजीने विचारा कि जनसमुदायका कोलाहल बहुत रहता है । इस लिये हमको परमेश्वरके गुणानुवाद गायनका काल नहीं मिलता तब अपने मिरासी (भाट) मरदानेको जो कि उनको रबाबके साथ अछे २ शब्द (भजन) गाकर सुनाया करता था बुलाया । और और भी कई एक साधु सन्त फकीरोंको साथ लेकर संवत् १५५६ विक्रमीमें शहर सुलतानपुरसे चलकर मार्गमें अनेक अछे २ भजनानन्दी साधु लोगोंसे भेट करते हुए शहर लाहौरमें आय प्राप्त हुये । वहां जवाहरमल्ल भक्तके मकानपर उतारा किया । जहांपर अब भी उनके

नामका एक मकान बना हुआ है । हिन्दू तथा मुसलमान दोनों जातिके महापुरुष जो उस कालमें सिद्धि करामातोंसे प्रख्यात थे श्रीगुरुजीके साथ उन सबका विचार हुआ । वली सैयद अहमद जो कि सिकन्दर लोदी बादशाहका गुरु था उसके साथ तथा और फकीरोंके साथ अनेक प्रकारके परमेश्वरसम्बन्धी विचार होते रहे । अन्तमें श्रीगुरुजीके पवित्र भावके सारगर्भित वचनोंको सुनकर मजहबकी पाबन्दीयाँको छोडकर सभी ज्ञानमार्गको आश्रयण करने लगे । ऐसेही लाहौरमें श्रीगुरुजीका सात दिन ठहरना हुआ । अनेकों अछे २ पुरुषोंको सन्मार्गका उपदेश किया। फिर वहांसे चलकर शहर 'एमनाबाद'में जाय ठहरे । वहांपर सबसे प्रथम एक लालु नामका तक्षक (खाती) श्रीगुरुजीकी सेवामें आन हाजिर हुआ । वह भक्त प्रसिद्ध साधुसेवी था । इस लियें उसको देखकर और लोग भी दर्शनको आने जाने लगे । परन्तु प्रथमही दिनसे श्रीगुरुजीका भोजन लालु भक्तहीके घरसे होने लगा । इसी कारणसे प्रायः क्षत्रिय लोग श्रीगुरुजीके ऊपर आक्षेप भी करने लगे कि यह क्षत्रिय होकर शूद्रके घरकी रोटी खाते हैं यह वार्ता अच्छी नहीं करते ।

इति त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

अथ चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

वहांहीके रहनेवाले नवाब सहनखान तथा दीवान भागुके अत्याचारसे लोग बहुतही दुःखी थे । उन्होंने श्रीगुरुजीके आनेको सुनकर भी रंज माना और कई तरहके सक्त वचन कहला भेजे । परन्तु शान्तस्वरूप श्रीगुरुजी उनके पुरुषके मुखसे वचन सुनकर चुपही रहे कुछ

---

(१) इस फकीरकी कबर ग्राम उच्च जिला मुलतानमें है ।

(२) यह शहर फीरोजशाह बादशाहकी धात्री एमनाने अपने नामसे बसाया था ।

उत्तर न दिया । दयात् अगले दिन एक ब्रह्मभोज था । उसपर उन्होंने श्रीगुरुजीको बुला भेजा परन्तु श्रीगुरुजी वहां न गये । इस बातसे नवाब तथा दीवान दोनोंने बहुत गुस्सेमें आकर श्रीगुरुजीको अपने दर्बारमें बुलाकर कहा कि तुम बहुतही अभिमानी फकीर हो लालु जैसे छोटे पुरुषोंके घरमें रोटी खाते फिरते हो और हमने बुलाया तो आयेही नहीं तो क्या हम लालुसे भी तुम्हारी दृष्टिमें गिरे हुए हैं । इसपर श्रीगुरुजीने कहा कि मिहनत तथा हक्की कृत्यकी रोटी दुग्धसे पूरित और जोरजुलुमसे पैदा की हुई रोटी रक्तसे लिप्त होती है । इस बार्ताको दीवानने मिथ्या बतलाया । श्रीगुरुजीने कहा तो अपने घरसे रोटी मंगवा देखियो हुकुम देनेसे दोनों घरोंसे एक एक रोटीका हिस्सा आया श्रीगुरुजीने दोनोंको हाथमें लेकर दबाया तो वस्तुतः दीवानके घरकी रोटीमेंसे रक्तकी धारा टपकने लगी और लालु भक्तके घरकी रोटीमेंसे दुग्धकी धार टपकी।सारी सभाके लोग देख कर आश्चर्य हुये । परन्तु नीच बदनसीब नवाबको सन्तोष न हुआ सबके सामने अपनी हानि जानकर उल्टा श्रीगुरुजीको शेहरी तथा जादूगर बतलाने लगा। श्रीगुरुजी तो उनके अत्याचारोंको प्रथमही जानते थे ।

एक मुसलमान रईसके घरमें लडकेकी शादीपर भाई मरदानावास्ते खाना खानेको गया । तो उन्होंने उसको खाना तो खिलाया परन्तु पीछेसे यह कहकर कि तू मुसलमान होकर काफरके साथ रहता है खूब मारा । उस कालमें भाई मरदानाको दुःखी होकर आर्तस्वरके साथ रोनेकी टेर श्रीगुरुजीतक पहुंची श्रीगुरुजीको उन लोगोंके अत्याचारका बहुतही खयाल हुआ । तो उस कालमें भाई लालुको अपने पास बिठलाकर ऐसे बोले ' जैसी मैं आवे खसमकी बानी तैसई करी ज्ञान वे लालो । पापकी यंत्र ले काबलों धाया जोरी मङ्गे दान वे लालो, इत्यादि बहुतही शब्द श्रीगुरुजीने उस कालमें बोले जिनका खुलासा तात्पर्य यह है कि हे भाई लालो ! जिस तरहकी मेरेको आज्ञा हुई है।

वही मैं सुनाता हूं। बहुत थोडेही दिनोंमें इन लोगोंकी बुरी दशा होगी। और यह सभीलोग अपने २ आचरणोंका फल बहुतही शीघ्र पावेंगे। इन सबकी स्त्रियाँ तथा बच्ची बच्चे सभी कतल किये जायँगे। इन्होंने माल मता जिस कदर संग्रह किया है सभी लूट लिया जावेगा। जैसे किसी एक महा पापीके बैठनेसे जहाज डूबता है तो उसके साथ अनेक भले भी दुःख उठाते हैं वैसेही इन अत्याचारी पापी पुरुषोंके लिये आपका सारा शहर क्लेश उठावेगा श्रीगुरुजीकी ऐसी वाणी सुनकर भाई लालुने कहा कि महाराज वह कौन होगा और कब आवेगा तथा कब जावेगा! तब श्रीगुरुजीने कहा कि 'आवन अठत्तरे जान सातानवे और भी उठसी मरदका चेला'। इत्यादि श्रीगुरुवचनोंके अनुसार थोडेही कालपीछे वैसेही हुआ। कि। संवत् १५७८ विक्रमीमें बावर बादशाहने शहर एमनाबादको बरवाद करके दिल्लीके तखतपर पाउं जाय जमाया। फिर संवत् १७९७ विक्रमीमें नादरशाने चगँता मुगलोंकी बादशाही उठा दई। तो श्रीगुरुगोविन्दसिंह साहिब (मरदका चेला) ने पन्थ खालसासे सारे देश पंजाबपर अधिकार जमाया। यह श्रीगुरुनानकजीकी भविष्यत् वाणी पूर्णरूपसे सभी लोगोंके अनुभवमें आयी। परन्तु इस वार्ताको सिद्धि या करामातरूपसे विचारमें नहीं लाना चाहिये। किन्तु जो लोग परमेश्वरके ध्यान स्मरणमें रहते हैं उनको प्रायः भावि होनेवाले बहुतसे। कार्य प्रथमही प्रतीत होने लगजाते हैं। ऐसे साधु महात्मा वर्तमानमें भी कई एक देखनेमें आते हैं कि जिनके कई स्वाभाविक वचन भाविमें यथावत् सार्थक देखनेमें आजाते हैं।

वहांसे चलकर संवत् १५६० विक्रमीमें श्रीगुरुजी शहर स्यालकोटमें पहुँचे शहरके बाहर एक बदरीके वृक्षके नीचे जाय आसन जमाया। बहुत लोग दर्शनको आये। लोगोंने एक फकीरका हाल भी सुनाया कि एक 'हमजागौस' नामक फकीर इस शहरके गारत करनेके लिये एकान्तमें अनुष्ठान कर रहा है। श्रीगुरुजीने सत्कारपूर्वक उस फकी-

रको अपने पास बुलाया पूछा कि हजरत आप इस शहरको क्यों गारत किया चाहते हैं उसने कहा कि यहांके लोग बहुतही झूठे (मिथ्यावादी) हैं एक पुरुषने मेरेको अपना लडका देनेको कहा था परन्तु फिर उसने न दिया । परन्तु मैंने उसका काम खुदाको याद कर दिलोजानसे किया था । इस लिये मेरे मनमें आया कि ऐसा पापी शहर खुदाकी खलकतमें नहीं रहे तो अच्छा अन्यथा मेरी तरह और फकीरोंको भी यहांसे दुःखही मिलेगा श्रीगुरुजीने फकीरके अभिप्रायको जान लिया और फिर कहा कि क्या हजरत सारा शहरही झूठा है ? फकीरने कहा हां सभी झूठाही है । तब श्रीगुरुजीने उसी कालमें मर-दानेको दो पैसे देकर शहरमें भेजा कि जा एक पैसेका झूठ तथा दूस-रेका सत्य लेआओ । मरदाना पैसे लेकर शहरकी दुकान २ पर फिरा परन्तु दोनों वस्तुके देनेका किसीने स्वीकार न किया । शेषमें एक मूलचन्द्र नामक क्षत्रिय भक्त दुकानदार था । उसने दो पैसे लेलिये । और एक कागजके पुरजेपर लिख दिया कि, मरना सत्य और जीना झूठ' मरदाना उस पुरजेको लेकर गुरुजीके पास आया श्रीगुरुजीने वही पुरजा उस फकीरको दिखलाया । और कहा कि हजरत सारी दुनियाँ एकसी नहीं है । किसी एकके अपराधसे बहुतसे लोगोंको पीडा देनेवाला खुदाका देनदार होता है । फकीरने कहा बाबाजी आप तो अभी इस शहरमें आये हैं परन्तु मैं इन लोगोंका बहुत दिनोंसे वाकिफ हूं । यह लोग बातोंकी सफाई तो हदसे ज्यादा दिखलाते हैं । परन्तु अमलमें कुछ भी नहीं लाते । तब श्रीगुरुजीने उसी मूले भक्तको बुला कर कहा कि यदि तैंने जाना है कि मरना सत्य तथा जीना झूठ है । तो दुनीयाँमें क्या करता है ? मूलचन्द्रने उसी कालमें घरबारका त्याग किया और संसारसे उपराम होकर श्रीगुरुजीके साथ सेवामें रहने लगा ऐसे पुरुषको देखकर उस फकीरका मन भी शान्त हुआ । उस फकी-रने भी श्रीगुरुजीको मुरशाद (गुरु) माना और शिक्षा लाभ करके अपने स्थानपर गया शहर 'स्यालकोटमें जहां श्रीगुरुजी जाकर विराजे

थे उस गुरुस्थानका नाम अब 'बेर साहिब' करके प्रख्यात है। जिसके साथ सरकार गवर्नमिन्टकी तर्फसे प्रदानकरी हुई तीन चार हजार रुपयेकी जागीर अब भी विद्यमान है।

स्यालकोटसे श्रीगुरुनानकजीने पूर्व देशके विचरनेका विचार किया परन्तु रायबुलार हाकिमका बहुत प्रेम जानकर फिर पीछे शहर तलवंडीमें गये। वहांके अनेक प्रेमी भक्तोंका आश्वासन करते हुये भाई बाला जो कि उनके साथ सौदा खरीदने गया था साथ लेकर छांगा मांगा प्रान्तके रमणीक जंगलमें आन प्राप्त हुये वहांपर आपके निवास करनेके स्मरणार्थ एक उत्तम गुरुस्थान "छोटा नानकाना साहिब' इस नामसे अब भी विद्यमान है। उस प्रान्तके अनेक साधु सन्त फकीरों तथा वली लोगोंको अपने पवित्र भावके सदुपदेशोंसे सन्तुष्ट करते हुये शहर चुहनीयाँमें शेख दाउद करामाती और सैयद हामदगंजवखशसे आनकर मिले। यह दोनों महापुरुष उस कालके नामी फकीरोंमें थे उनको अपने पवित्र भावोंसे प्रसन्न करके वहांसे चलकर शतद्रुनदीसे पार होकर मरुभूमिके निरीक्षणार्थ विचरने लगे। वहांसे चलकर हारिद्वार कनखलमें आन प्राप्त हुये। यहांके अनेक पंडा तथा यात्री लोग अपने पवित्र उपदेशसे आपने कृतकृत्य किये कनखलमें जाकर जहां आप विराजे थे उसके स्मरणार्थ एक उत्तम गुरुस्थान 'नानकवाडा' नामसे अब तक भी विद्यमान है वहांसे चलकर संवत् १५६१विक्रमीमें श्रीगुरुजी शहर दिल्लीमें आन प्राप्त हुये और मजनूके टिल्लेपर जहां एक गुरुस्थान अबतक भी उनके निवासका सूचक विद्यमान है जाय बैठे उस कालमें दिल्लीके तख्तपर बादशाह सिकन्दर लोदी था। उसने कुसंगतिसे यह निश्चय कर रखा था कि जो करामात नहीं रखता वह फकीर नहीं किन्तु दाम्भिक है। उसके मुलकमें फिरनेसे प्रजाको भारी हानि पहुँचती है। इसी लिये वह जिस फकीरको सुनता था। उसको पकडवाकर कैदमें डालदेताथा और कैदमें उनसे चक्की पिसवाया करता था। श्रीगुरुजी गये तो इनका उपदेश भी अनेक हिन्दू मुसलमानोंने सुना

और सुनकर मुरीद(शिष्य) होने लगे परंतु बादशाहके जुलुमसे सभी मनमें डरते थे। अन्त यही हुआ कि श्रीगुरुजीकी प्रख्याति भी बादशाहके कानतक पहुँची । बादशाहने सुना कि एक फकीर आया है उसके राहरास्तीके उपदेशको सुनकर हिन्दू मुसलमान सभी उसके मुरीद होते जाते हैं । बादशाहने उसी कालमें पकडके कैद करनेका हुकुम दिया । कर्मचारी लोगोंने उसी कालमें श्रीगुरुजीको साथके दोनों पुरुषोंके सहित कैदमें डाल दिया । और तीन चक्की भी तीनोंको पीसनेको दी तीन मन अनाज भी तीन जगह बाँटकर तीनोंको पीसनेके लिये दिया । वहांही और भी अनेक अच्छे २ साधु फकीर कैदमें पडे चक्कीयाँ पीसते रो रहे थे । उसी कालमें मरदाना भाट भी श्रीगुरुजीको कहने लगा कि वाह पीरजी अच्छे हम आपके साथ आये । हमने तो सोचा था कि आपके साथ कुछ कमाने खानेका अच्छा होगा । परन्तु यहां तो आकर जानके बचनेमें भी सन्देह प्रतीत होता है । श्रीगुरुजीने कहा भाई मरदाना ! तेरेको परमेश्वरकी शक्ति तथा महिमाका परिचय नहीं । इसी लिये घबराता है । सर्वशक्तिमान् भक्तवत्सल क्या नहीं कर सकता । जा तू सभी फकीरोंको कह आओ कि चक्की मतपीसो मरदानेने श्रीगुरुजीकी आज्ञानुसार सब फकीरोंको चक्की फेरनेसे बन्द किया । तौ भी चक्कीयाँ स्वयं फिरने लगी । उनके बीचमें अनाज भी अंदाजका स्वयं पडने लगा । सभी साधु फकीर लोग अतिप्रसन्न हुये । तथा श्रीगुरुजीको धन्य धन्य कहने लगे । इस चमत्कारको जेलरने भी देखा । बहुत आश्चर्य हुआ । बादशाहके पास खबर पहुँचाई कि सभी फकीर पाउं पसारकर सोये हैं । चकीयाँ आपसे आप फिर रही हैं । बादशाह भी सुनकर आश्चर्य्य हुआ । महलमें आराम करता था।उसी कालमें देखनेको दौडा । विचित्र चमत्कार देखकर श्रीगुरुजीके चरणोंमें गिर पडा और कहा कि मेरेसे बहुत भूल हुई आप मुआफ कीजिये । श्रीगुरुजीने कहा जो भूलके करे और तोबा पुकारे वह पुरुष अजाब नहीं पाता । बादशाहने कहा कि मैं आपका मुरीद हूं । आप मेरेको

कोई ऐसी शिक्षा देवें जो कि मैं हरवक्त याद रखूं । तब श्रीगुरुजीने तैलंगरागमें एक शब्द गाया । 'यक अरज गुफतमें पेश तो दरगोश कुन करतार । हक्का कबीर करीम तु वे अयब परवरदिगार' ॥ इत्यादि अर्थात् हे परमेश्वर ! मैं आपके पास दीन होकर एक विनय करता हूं। आप उसको कान देकर सुनो । आप सदा दीनबन्धु कृपालु तथा निर्दोष पालना करनेवाले हैं । और मैं सदा पतित कृतघ्न तथा बुरे कर्मोंका अनुरागी हौं मेरा उद्धार करना आपकी दयादृष्टिके अधीन है । इत्यादि अर्थ भावसे पूरित श्रीगुरुजीके पवित्र शब्दको सुनकर बादशाह बहुत नम्र हुआ । कहा कि पीरजी कुछ खिदमत मेरे लिये फरमाइये । श्रीगुरुजीने कहा कि-इन फकीरोंको छोड दो । बादशाहने उसी वक्त सभी फकीरोंको छुडवा दिया । और फिर कहा कि कुछ और खिदमत फरमाइये श्रीगुरुजीने कहा कि तुम फकीरोंको कभी मत सताया करो ऐसा न हो कि किसी फकीरकी 'आह' तुम्हारा सभी राज्य नष्ट कर जावे क्योंकि खुदाने तुमको प्रजाकी रक्षाकरनेके लिये बादशाह बनाया है न कि सतानेके लिये । तुम नहीं जानते कि-जीव जीवमें परमेश्वर है । तथा परमेश्वरहीका स्वरूप यह जीव है । इत्यादि गूढ अभिप्रायका उपदेश सुनकर बादशाह श्रीगुरुजीके चरणोंपर गिर-पडा । और बहुत कुछ भेंट पूजा देना चाहा । परन्तु श्रीगुरुजीने कुछ भी लेना स्वीकार न किया । प्रत्युत बादशाहको यही कहा कि दुनियाँकी दौलतोंसे हमारा काम कुछ नहीं सौरता । वहांसे श्रीगुरुजी अपने आसनपर चले गये । साधु फकीरोंके बन्दीखानेसे छुडानेसे श्रीगुरुजीकी शहरमें और भी अधिक प्रख्याति हुई । मियाँ मारूफ जैसे उस कालके ईश्वरके प्यारे लोग सभी आपके दिलसे प्रेमी बन गये । वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी अलीगढ होते हुये मथुरा वृन्दावनमें आये । वहांके रहनेवाले अनेक साधु फकीरोंको अपने सदुपदेशोंसे लाभ पहुँचाते हुये शहर आगरामें चले गये । वहाँके अनेक लोग आपके सदुपदेशोंको श्रवणकर अनुगामी हुये । आगरामें जिस

स्थानमें जाकर आपने निवास किया था उस स्थानमें अब भी एक गुरुस्थान, गुरुकी धर्मशालाके नामसे प्रख्यात विराजमान है । वहाँसे चलकर कानपुर लखनौ अयोध्याकी यात्रा करते हुए संवत् १५६३ विक्रमीमें श्रीकाशी (बनारस) में आन प्राप्त हुये । शहरके पश्चिम-की तर्फ एक बाग था जो कि वर्तमानमें ' गुरुका बाग ' नामसे प्रख्यात है उसमें जाकर निवास किया । श्रीगुरुजीका नाम सुनकर अनेक भक्त लोग दर्शन करनेको गये । श्रीगुरुजी सबको यथायोग्य धर्म नीति यथा ज्ञानका अनेक दृष्टान्त प्रमाणोंसे सदुपदेश किया करते । प्रतिदिन सहस्रों मनुष्य आने जाने लगे । शहरमात्रमें गुरु-जीकी चर्चा फैली । परन्तु श्रीगुरुजी ऐसे मध्यराशीके शब्दोंसे उपदेश किया करते थे कि विचारशील पुरुष भी नहीं जान सकता था कि-यह किस सिद्धान्त या फिरके या मजहबके जानने या माननेवाले पुरुष हैं । तात्पर्य यह कि चारों वर्णके हिन्दू तथा मुसलमान सभी बनारस निवासी लोग प्रतिदिन उपदेश सुना करते थे । परन्तु भिन्न २ सभीके चित्तमें ऐसाही होता था कि बाबानानक हमारेही सिद्धा-न्तकी पुष्टिमें उपदेश कररहा है । इसी तरह श्रोता लोगोंका आप-समें विवाद होगया । हिन्दू कहने लगे कि बाबानानक हमारे सिद्धा-न्तको कहता है ऐसेही मुसलमान लोग बोले कि नहीं बाबानानक हमारे दीनके मुताबिक वाहज (उपदेश) करा करता है । वैष्णव लोगोंने कहा कि यह साधु तो प्रतीतही वैष्णव धर्मका होता है । फिर इसका उपदेश कैसे दूसरे धर्मकी पुष्टीमें हो सकता है । ऐसेही शैव लोग भी कहनै लगे कि यदि यह महापुरुष शिव धर्मका अनुगामी न होता तो शिवपुरीमें इसका प्रेमपूर्वक आनाही दुर्घट था । तात्पर्य यह कि इसी तरहसे अनेक तरहके वादविवाद करते हुये सभी धर्मोंके लोग तथा अच्छे २ पण्डित लोग श्रीगुरुजीके पास सन्देहनिवारणार्थ निर्णय करनेके लिये मिलकर आये । बहुतही शांतिपूर्वक सभामें सभी लोग विरा-

जमान हुये । तो उस कालके प्रसिद्ध वासुदेव शास्त्रीने अग्रणीय होकर श्रीगुरुजीसे जिज्ञासा करी । और सभी लोग एकचित्त होकर श्रवण करने लगे । (शास्त्री) हे साधो ! आप कौन वर्ण या आश्रमों के महापुरुष हैं (गुरुजी) इस वार्ताका हमको अच्छी तरह निश्चय तो नहीं परन्तु परमेश्वरके साथ हमारा सबसे अधिक सम्बन्ध है। इस लिये जो वर्णाश्रम उसका है वही हमारा भी होना आवश्यक है (शास्त्री) चिदात्मा परमेश्वरके साथ चेतनका अधिक संबन्ध रहो उसमें तो हमारा प्रश्नही नहीं हम तो केवल वेदादि सत्य शास्त्र प्रतिपादित तथा स्थूल देहके साथ सम्बन्ध रखनेवाले वर्णाश्रम धर्मोंकी जिज्ञासा करते हैं । (गुरुजी) यदि ऐसा है तो धर्मीके साक्षात्कार हुये पश्चात् धर्मकी जिज्ञासाही अविचारपूर्वक है (शास्त्री) आपके इस कथनका भाव क्या है ? (गुरुजी) भाव यह है कि वर्णाश्रम धर्मोंका सम्बन्ध आपने स्थूल शरीरके साथ कहा है। और मेरा स्थूल शरीर रूप धर्मी तो आपकी दृष्टिगतही है । परन्तु उसमें रहनेवाले धर्मोंकी आप जिज्ञासा करते हैं यही आश्चर्य्य है। श्रीगुरुजीका उचित उत्तर सुनके शास्त्री थोडा काल चुप रहकर फिर बोला कि आपका सिद्धान्त क्या है ? श्रीगुरुजीने कहा कौन विषयमें ? शास्त्रीने कहा उपासनाके विषयमें । श्रीगुरुजीने कहा कि उपासना तो हम एक सर्वान्तर्यामी परमेश्वरकी किया करते हैं. (शास्त्री) क्या आप किसी देवी देवताको नहीं मानते ? (गुरुजी) देवी देवता जो होगा सो शरीरधारीही होगा उसको जन्म मरणका चक्र भी अवश्य होगा । इसलिये—

दूजा काहे सुमिरीये, जन्मे तो मरजाय ॥
एको सुमिरो नानका, जो जलथल रहा समाय ॥ १ ॥

इत्यादि श्रीगुरुजीके सत्यपूरित सदुपदेशोंको श्रवणकर अनेक लोग शिष्य हुये । उस कालमें काशीमें निवास करने वाले ' नामदेव ' ' रविदास ' आदि अनेक परमेश्वरके भक्तोंके साथ श्रीगुरुजीका मेल

तथा चर्चा वार्ताका प्रसङ्ग भी हुआ । उस कालमें जो कुछ शब्द या वाणीका उच्चार श्रीगुरुजीने किया है वह सब श्रीगुरुग्रन्थसाहिबमें यथावत् अंकित है । जिस कालमें श्रीगुरुजी काशीमें गये थे उस कालमें वहाँपर कबीरजी नहीं थे । किन्तु रघु नाथपुर ग्राममें गये हुये थे । श्रीगुरुजीका काशीमें आना सुनकर शीघ्रही वहांसे चले आये । उधर श्रीगुरुजी भी उसीकी तर्फ चले थे । मार्गहीमें दोनों महापुरुषोंका मिलाप हुआ । वहाँही कई दिनतक चर्चा वार्ता होती रही । बहुतसे लोगोंका ऐसा ख्याल है कि कबीरजीका समय श्रीगुरुजीसे बहुत पूर्व है । परन्तु कबीरजीकाही धर्मदास नामक चेला अपने ग्रन्थमें संवत् १४५५ विक्रमीमें कबीरजीका जन्म तथा संवत् १४६२ विक्रमीमें रामानन्दगुरुसे उपदेशका होना तथा संवत् १४७१ में उनके विवाहका होना तथा संवत् १४९२ में उन्होंने एक यज्ञका करना तथा संवत् १५४५ में सिकन्दर बादशाहने उनको गंगामें डालना तथा मार्गशीर्ष सुदी एकादशी संवत् १५७१ में मगह प्रान्तमें उनका अन्तकाल होना इत्यादि सभी वृत्तान्त स्पष्ट रूपसे लिखता है। इस लिये दोनों महापुरुषोंका एकही काल प्रतीत होता है ।

इतिचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अथ पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

एवं श्रीकाशीजीसे चलकर श्रीगुरुजी गंगाजीके तीर तीर शहर बक्सर छपरा इत्यादि स्थलोंकी यात्रा करते हुये शहर पटनामें जो कि पाटलादेवीके नामपर राजा यशपालनें संवत् विक्रमीसे एक सहस्र वर्ष पूर्व बसाया था जाय प्राप्त हुये । श्रीगुरुजीका आगमन श्रवणकर अनेक साधु सन्त धनी निर्धन भक्त लोग दर्शन करनेको आये । तथा श्रीगुरुजीके सदुपदेशोंको श्रवणकर कृतकृत्य हुये । वहाँपर श्रीगुरुजी जिस कालमें लोगोंको उपदेश किया करते थे उस कालमें मरदाना भी कबीर चित्त लगाकर सुना करता था ।

एक दिन श्रीगुरुजीने मनुष्यदेहकी उत्तमतामें उपदेश किया। उसमें अनेक प्रकारकी युक्ति उक्त तथा प्रमाणोंके अतिरिक्त इंजील तथा तौरीतके मतसे भी इस मनुष्य शरीरकी उत्तमताका प्रतिपादन किया भाई मरदानाने भी कान देकर उस उपदेशको सुना। पीछेसे भाई मरदानाने कहा कि गुरुजी आपने कहा कि इंजील तौरीतमें लिखा है कि आदमीको खुदावन्द करीमने अपनी शकलपर बनाया है। अर्थात् सिवाय मनुष्यके और सारी दुनियाँ खाकी है। यह मनुष्य नूरी है। अर्थात् परमेश्वरने इसको अपने नूरसे उत्पन्न किया है। यह मनुष्य जन्म अमोलक रत्न है। संसारीलोग इसकी कदर नहीं जानते इत्यादि। इसमें मैं यह पूछता हूं कि लोग कदर क्यों नहीं जानते? श्रीगुरुजीने मरदानेके इस प्रश्नका उस कालमें उत्तर कुछ न दिया। थोडी देरके पीछे मरदानाने कहा कि गुरुजी कुछ भूख लगी है। तब श्रीगुरुजीने अपने पाससे एक अमोल रत्न निकालकर दिया। और कहा कि इसको बाजारमें बेच डालना जो मन हो खाय आना शेष पैसा लेते आना। मरदाना उस रत्नको लेकर अनेक दुकानदारोंके पास फिरा सबने अपनी २ बुद्धिके अनुसार उसका आपसमें कुछ २ न्यून या अधिक मूल्य देनेको कहा। ऐसेही मरदाना जवाहरी लोगोंकी दुकानोंपर पहुँचा तो वे लोग आपसमें एक दूसरेको दिखलाने लगे परन्तु मूल्य कुछ न बोले। शेषमें एक वृद्ध सालसराय नामक नामी जवाहरीने देखा तो कहा कि यह रत्न अमूल्य है। यह किसी चक्रवर्ती राजा या योगीहीके पास रह सकता है। यह वस्तु दुकानोंमें मारी २ फिरनेवाली नहीं है। इस लिये ऐसी वस्तुका या ऐसी वस्तुके स्वामीका दर्शन होना भी भारी पुण्यका हेतु है। ऐसा कर सालसराय जवाहरीने एकसौ रुपया निकालकर उस रत्नकी भेंटमें भाई मरदानाको दिया और रत्नभी लौटा दिया। मरदाना लेकर श्रीगुरुजीके पास आया। बाजारका सभी वृत्तान्त भी सुनाया। तब श्रीगुरुजीने कहा कि हे मरदाना! तुम्हारे प्रश्नका उत्तर भी मिला या नहीं जैसे

यह रत्न अनेक पुरुषोंके हाथ गया भी परन्तु हरएक पुरुष इसकी कद्रको न जानसका किन्तु जिसने यत्नसे इसकी परीक्षा करनी सीखी हुई थी उसीने इसको पहचाना। वैसेही मनुष्यदेहरूपी रत्नकी पहचान भी हरएकको नहीं होती। किन्तु जिसने बहुत कालतक सत्पुरुषोंका संग तथा सत्य शास्त्रोंका विचार किया है उसीहीको होती है। पश्चात् श्रीगुरुजीने कहा कि भाई मरदाना यह रुपया उस जवाहरीको पीछे दे आओ। क्योंकि बिना रत्न दिये रुपया उससे लेना उचित नहीं। जब मरदाना रुपया उस जवाहरीके पास लेकर गया तो जवाहरीने कहा कि रुपया इस रत्नकी मूल्य नहीं है । जो मैं पीछे लेलूं किन्तु यह रत्नकी भेटमें मैंने रत्नके स्वामीको अर्पण किया है उसका फिर पीछे लेना मेरेको सर्वथा उचित नहीं है। ऐसेही बहुतही वादविवादके पीछे सालसराय जवाहरी स्वयं श्रीगुरुजीकी सेवामें आया और रुपया स्वीकार करनेकी प्रार्थना करी तब श्रीगुरुजीने उसको सच्चा प्रेमीभक्त जानकर उसका रुपया साधु सन्तों अभ्यागतोंके कार्य्यमें लगा दिया और उसको सन्मार्गका उपदेश किया कि जिससे वह जन्म मरणके चक्रसे अनायास ही किनारे होसके सालसराय जवाहरी भी श्रीगुरुजीका प्रेमीशिष्य हुआ। उसीकालमें एक 'अवरका' नामक भक्त श्रीगुरुजीके सदुपदेशोंको श्रवणकर संसारका कार व्यवहारही छोड बैठा था उसको देखकर बहुतसे लोगोंने प्रार्थना करी कि कोई स्थान यहांपर सत्संगके लिये आपके नामसे नियत होना चाहिये। तब श्रीगुरुजीने वहाँपर अपने नामसे धर्मशाला बनवाई। और उसका पुजारी उसी अवरका भक्तहीको नियत किया। उसी भक्तकी वंशपरपरामें प्राप्त भाई गुलाबसिंह आदि पुजारी अब भी विद्यमान हैं। वहाँसे चलकर श्रीरुगुजी गयामें पहुँचे और संवत् १५६३ विक्रमीमें राजगिरि तथा विहार प्रान्तकी यात्रा करते हुये। गयाजीमें जहांपर अनेक हिन्दूलोग पिण्डदान तथा दीपदानादि क्रिया करते हैं वहां प्राप्त हुये। पण्डालोगोंने श्रीगुरुजीको भी उक्त क्रिया करनेके लिये व्यग्र किया उस कालमें

श्रीगुरुजीने उन लोगोंकी वास्तव खातरी करनेके लिये । 'दीवा मोरा एक नाम दुःख विच पाया तेल ।' इत्यादि कई एक शब्दोंका उच्चारण किया । जिनका अनुपूर्वी पाठ श्रीगुरुग्रन्थ साहिबमें अङ्कित है । वास्तव तात्पर्य्य जिनका यह है कि जो पुरुष अपने पूज्य पूर्वजोंके लाभ पहुँचानेके लिये पिण्डदानादि क्रिया करते हैं । वह धन दौलत तो पण्डा ब्राह्मण खायलेते हैं और जो दीपक है वह यहाँही बूझ जाता है । उनके तक तो कुछ भी नहीं पहुँचता । यह सब बनावटकी बातें हैं हमने तो परमेश्वरके नाम स्मरणका दीपक प्रकाश कर रखा है । यह सदाही अज्ञान अन्धकारमें गिरकर दुःख पानेवाले पुरुषको अच्छा मार्ग दिखाता है । और सदा प्रज्वलित भी रहता है । इस तरहके सच्चाईसे भरे हुये श्रीगुरुजीके उपदेशोंको सुनकर बहुतसे वहांके लोग आपके अनुगामी हुये । कई एक विचारशील पण्डा लोगोंने भी श्रीगुरुजीका सदुपदेश सुनकर दुर्वृत्तिका परित्याग किया तथा परमेश्वरके स्मरण कीर्तनमें कालक्षेपण करने लगे । वहाँसे चलकर श्रीगुरुजीने बुद्धगयामें जहाँ बुद्धका अवतार हुआ है जाय प्राप्त हुये । यहाँका उस कालमें गोस्वामी देवगिरि नामक महन्त जो कि बडा जागीरदार प्रतापशील महाराज सरकार कहलाता था श्रीगुरुजीके सारपूरित वेदान्तके युक्ति उक्त उपदेशोंको सुनकर ऐसा मोहित हुआ प्रसन्न होकर प्रतिक्षण 'सत्यनाम श्रीवाह गुरु' का उच्चारण करने लगा । जिसने ऐसा असर किया कि शेषमें उसका गद्दीनिविष्ट शिष्ट प्रतिष्ठित 'भक्तगिरि' नामक चेला अपनी सारी सम्पत्तिको छोडकर बहुतसे अपने शिष्यवर्गके सहित देश पंजाबमें आकर श्रीगुरुहरिराय साहिबके समयमें गुरुके घरका सेवक बनकर 'भगवान्' के नामसे प्रख्यात हुआ उसी महापुरुषके सैकडों जागीरदार चेलोंकी परंपरा जिला पटनामें अबतक भी विद्यमान हैं वे उदासीन भक्त भगवान्‌के कहलाते हैं । बुद्धगयामें बुद्ध की मूर्तिके पिछले भागका दर्शन करके मरदानाने पूछा कि गुरुजी इस मूर्तिके पिछले भागहीका दर्शन क्यों होता है ? गुरुजीने कहा कि

मरदाना ! इस महापुरुषने अबसे दो सहस्र वर्ष प्रथम केवल राजनीति प्रधान उपदेश किया था । स्वार्थी ठगलोग परलोक तथा ईश्वरके नामपर अज्ञानी विश्वसित लोगोंसे लाखों रुपया ठगके दुराचारोंमें लगाया करते थे । उस कालमें इस महापुरुषने ईश्वर तथा परलोक दोनोंका अभाव लोगोंके मनमें बैठाया था इस कालमें इसके परिश्रमसे स्वार्थी धूर्तोंका कुछ बल न्यून हो गया था । परन्तु इस महापुरुषने सोचा कि जिस मुखसे मैंने ऐसा विपरीत उपदेश किया उसका अब किसीको दिखलाना भी उचित नहीं । क्यों कि जो देखेगा वह भी पतित होजायगा । इसलिये उसने अपने कमरहीके दर्शन करनेकी आज्ञा दई । हे भाई मरदाना ! यह पुरुष बडा प्रतापी हुआ है । इसका निकला हुआ बौद्ध सिद्धान्त थोडेही कालमें सारी दुनियाँमें विकासित हुआ था ।

वहाँसे चलकर श्रीगुरुनानकजी वैद्यनाथ महादेवकी यात्रा करते हुये मुङ्गेर, भागलपुर, साहिबगंज, राजमहल, इत्यादि शहरोंमें उपदेश करते २ आषाढमासकी ७ संवत् १५६४ विक्रमीमें मालदेवमें पहुँचे। वहांपर कुछ दिन निवास किया अधिकारी पुरुषोंको उपदेश भी किया । इस प्रान्तके आम्रफल बहुतही प्रख्यात हैं। जहाँपर श्रीगुरुजी विराजे थे वह बाग अब गुरुका बागके नामसे प्रख्यात है । उसके आम्रफल और भी विलक्षण हैं ।

वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी मरशदाबाद, बरदवान, हुगली, कृष्णनगर, शहजादपुर, शेराजगंज, इत्यादि शहरोंके लोगोंको अपने सदुपदेशोंसे कृतार्थ करते हुये मार्गशीर्ष पांच संवत् १५६४ में शहर ढाका में जाय प्राप्त हुये ।

वहांके निवास करनेवाले प्रसिद्ध २ साधु सन्तों फकीरोंसे प्रेमपूर्वक मुलाकात किया। रविदासजी, नारायणदास, वैरागी शमालनाथ, चन्द्रनाथ योगी शेख अहमद गुलामली इत्यादि वहांके प्रसिद्ध महापुरुष

श्रीगुरुजीको सेवामें हाजिर हुए और वचनामृतको श्रवणकर तृप्ति लाभ करी उस प्रान्तके लोग जादूविद्यामें बहुतही उस कालमें कुशल प्रख्यात थे । श्रीगुरुजीके पास सबने अपनी २ विद्याकी विशदता दिखलानी चाही परन्तु उनके सामने किसीकी भी कुछ न चली। शेषमें आश्चार्य्य होकर सभी श्रीगुरुजीके अनुगामी होकर पूछने लगे कि आपके पास ऐसी कौन विद्या है कि जिसके प्रतापसे आपके सामने जादू टोना कोई भी काम नहीं करता । श्रीगुरुजीने कहा यह सभी जादू टोने मंत्र यन्त्र देवताअधीन है । जैसा जिसका देवता हो वैसेही वह चलते हैं । परन्तु हमारे पास जो मन्त्र है सो महामंत्र है । और उसका देवता भी साधारण नहीं । इस लिये उस एकही मंत्रसे संसार मात्रके मोहन मारण उच्चाटनादि कार्य्य हो सकते हैं सब लोगोंने फिर प्रेमसे पूछा कि गुरुजी ऐसा एकही मंत्र कौन है । तथा उसका देवता कैसा है ? । श्रीगुरुजीने कहा कि 'ॐ सत्यनाम' यह महामंत्र है । तथा सर्वान्तर्यामी परमात्मा इसका देवता है । इस लिये इस मंत्रके सामने दूसरे मंत्र कुछ नहीं कर सकते । इत्यादि और भी अनेक तरहके सदुपदेशोंको श्रवणकर 'ढाकाके' अनेक लोग श्रीगुरुजीके सेवक हुये । तथा जादू टोना आदि कुत्सित क्रियाको परित्याग कर केवल परमेश्वरपरायण होकर मुक्तिके भागी बने ।

ढाकासे चलकर श्रीगुरुजी तीन कोशपर समीप पहुँचे । जहाँपर अबतक भी आपके नामस्मरणार्थ एक गुरुस्थान 'वरछासाहिब' नाम करके प्रख्यात है यहाँकी स्त्रियाँ जादू टोना करनेमें बहुतही चतुर थीं । और एक 'नूरशाह जवान' नामिका स्त्री सबकी गुरु थी । अकस्मात् भाई मरदानाको देखकर मोहित हुई । उसने मरदानाको अपने जादूके बलसे वशवर्ती करलिया । श्रीगुरुजी उस वृत्तान्तको जानकर उस स्त्रीके घरमें चले गये । और वहाँसे आपने पवित्र परमेश्वरके नामके बलसे बिचारे मरदानेकी बन्दखलास कराई । तथा उन स्त्रियोंको स्वान्तसे सन्मार्गका उपदेश करके उनको ऐसे २ अनाचरण करनेसे

वारण किया। और उसी कालमें उनके उपदेशमें यह शब्द भी उ-उच्चारण किया।

गल्हीं असीं चंगेरीयाँ, आचारीं बुरीयाँ।
रीसां करें तिनाडीयाँ, जो सेवें दरखडियाँ ॥ १ ॥

अर्थात् बोल चालमें अच्छी होना तथा आचरणमें बुरी होना और बराबरी उनकी करनी जो कि अपने स्वामीके दरपर प्रतिक्षण खडी होकर सेवन करे। क्या यह वार्ता किसी भी स्त्रीको उचित तथा लाभदायक है कदापि नहीं। इत्यादि श्रीगुरुजीके उपदेशने उन स्त्रियेंाके हृदयपर ऐसा असर किया कि वे सबकी सब अपने दुराचारोंको छोडकर श्रीगुरुजीके किये उपदेशानुसार आचरण करके अपना जन्म सफल करने लगीं। और पिछली अवज्ञाकी श्रीगुरुजीके आगे प्रार्थना करने लगीं इस प्रान्तका पानी प्रत्येक स्थलका खारी था। इस लिये अनेक अच्छे २ लोगोंकी प्रार्थनासे श्रीगुरुजीने अपने हाथसे भूमिपर बरछा मारकर कहा कि यहाँसे खोदो लोगोंने वहाँसे खोदा तो जल बहुतही मधुर निकला। वह पानीका चशमा तथा वही बरछा जो कि श्रीगुरुजीने उस कालमें भूमिपर मारा था। उस गुरु-स्थानमें सेवक लोगोंके दर्शन करनेके लिये अबतक भी विराजमान है वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी कामरूप देशमें कामेक्षा देवीके मन्दिरके पास जाय बैठे जो लोग उस देवीको परमेश्वर जानकर पूजते तथा मानते थे। उनको अपने भावगर्भित सदुपदेशसे सत्य एक अकाल पुरुषकी भक्तिमें लगाकर मोक्षके भागी बनाया। वहाँसे चलकर

---

(१) इस मंदिरमें कोई मूर्ति नहीं है। किन्तु एक स्त्रियोंके गुह्यस्थल जैसा स्थान बना हुआ है। सभी लोग उसकी पूजा किया करते हैं। और मास-के मास रक्त रंग जलमें घोलके उस स्थानपर डालकर उसको स्त्रीका रज मानकर अपने माथेपर तिलक करते हैं। इस देशके लोग प्रायः वाममार्गी हैं। स्त्रियाँ अति रूपवती हैं। पुरुष निर्बल तथा साधारण हैं।

११ फाल्गुन संवत् १५६४ विक्रमीमें श्रीगुरुजी शहर गौरीपुर धोबियाबन्दरजो कि, समुद्रके किनारे पर है वहाँ पहुँचे । वहाँपर श्रीगुरुनानकजीके स्मरणार्थ गुरुस्थान 'दमदमासाहिब' के नामसे अबतक भी विद्यमान है । उसीको नवम गुरुत्याग बहादुरजीने संवत् १७१२ विक्रमीमें बादशाही लशकरसे मट्टी डलवाकर ऐसा ऊँचा करवा दिया कि, बहुत दूरसे दिखाई देता है । इस गुरुस्थानके पुजारीलोग उदासीन साधु हैं वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी संवत् १५६५ विक्रमीमें दरिया ब्रह्मपुत्रसे पार होकर देश आसामके अजेमरीगज, करीमगंज, सिलहट, इत्यादि शहरोंको अवलोकन करते हुए दरिया सरतासे पार होकर कछार देशमें जाय पहुँचे वहाँके शहर मनीपूर तथा रोसमफल इत्यादिको देखते हुए देश लोशाईमें जाय पहुँचे । वहाँका देवलोत नामक राजा दूसरे देशके मनुष्यको देखकर मरवा दिया करता था उसने श्रीगुरुजीको भी वैसेही करना चाहा । परन्तु आपके अप्रातिहत प्रतापके सामने उसका तेज मन्द होगयी । शेषमें आकर शरणागत हुआ । तो श्रीगुरुजीने उसको धर्मनीतिका उपदेश किया ।

चक्षुषा मनसा वाचा कर्म्मणा च चतुर्विधम् ॥
प्रसादयाति यो लोकं तं लोकोऽनुप्रसीदति ॥ १ ॥
यस्मात्त्रस्यन्ति भूतानि मृगव्याधान्मृगा इव ॥
सागरान्तामपि महीं लब्ध्वा स परिहीयते ॥ २ ॥

अर्थात् जो अधिकारी पुरुष नेत्रोंसे मनसे वाणीसे तथा क्रिया करके लोगोंको प्रसन्न रखता है । उसके प्रसन्न रखनेका लोग भी प्रयत्न करते हैं ॥ १ ॥ और जिससे मृग व्याधकी तरह सभी प्राणी भयभीत रहते हैं । वह पुरुष चाहे चक्रवर्ती राज्यको भी लाभ करले तथापि वह उसको अवश्य खोवेगा ॥ २ ॥ इत्यादि श्रीगुरुजीके वचन श्रवणकर वह राजा बहुतही नम्र हुआ और गुरुजीका शिष्य होकर नीतिपूर्वक प्रजाका पालन तथा आते जाते आतिथि अभ्यागतका सत्कार करने लगा । फिर वहांसे चलकर श्रीगुरुजी मथुराफाडी शहर अगर-

तला लक्षीपुर चान्दपुर दरिया पद्मासे पार होकर शहर फरीदपुर केश वपुर इत्यादि चौबीस नगरोंको निरीक्षण करके लक्षों परमेश्वरके अनु-रागी पुरुषोंको अपने सदुपदेशोंसे कृतकृत्य करते हुये शहर 'कल-कत्तामें' आन विराजे। उस कालमें यह शहर बहुत छोटासा तथा 'कलीकिट' इस नामसे प्रख्यात था । कुछ दिन वहाँ निवास कर शह-रके लोगोंको सन्मार्गका उपदेश दिया । फिर वहाँसे चलकर दरिया हुगलीके पार होकर बालेश्वर मेदिनीपुर इत्यादि शहरोंकी यात्रा दरिया कामठी तथा वैतरनी तथा ब्राह्मणी तथा महादेवी इत्यादि नदियाँसे पार होकर शहर कटकमें जाय विराजे वहाँके लोगोंको भी अपने सदुप-देशोंसे कृतार्थ किया । इन पूर्वोक्त सभी शहरोंमें जहाँ जहाँ आप विराजे थे वहाँ २ ही आपके स्मरणार्थ गुरुस्थान या धर्मशाला इस नामसे अबतक भी सर्वत्र विद्यमान है ।

इति पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

अथ षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

वहाँसे चलकर बाबा साक्षीगोपाल होते हुये २७ चैत्र संवत् १५६६ विक्रमीमें जगन्नाथपुरीमें जाय प्राप्त हुये । यहाँपर वर्तमान कालमें श्रीगुरुजीके मकानका नाम मंगुमठ है । आप प्रथम वहाँही जाकर विराजे। और उसी देशकी भाषामें भजन गाने लगे । अनेक लोग उन पवित्र भजनोंको श्रवणकर श्रीगुरुजीकी सेवा करने लगे । तथा प्रेमीभक्त बन गये श्रीगुरुजीने सायंकालमें आर्तीके समय मन्दिरमें जाकर जगन्नाथकी मूर्तिके दर्शन किये । और एक शब्द भी पण्डोंसे किनारे होकर गाने लगे । पण्डोंने कहा कि, बाबा जैसे हम जगन्ना-थकी आर्ती गाते हैं वैसेही साथ २ तुम भी गाओ श्रीगुरुजीने कहा कि, आप लोगोंकी आर्तीमें तथा हमारी आर्तीमें बहुत भेद है । इस लिये साथ गाना नहीं बनता । आर्ती पूर्णकर पण्डोंने मिलकर पूछ-

कि कहो बाबा आपकी तथा हमारी आर्तीमें क्या अन्तर है श्रीगुरु-जीने कहा आपकी आर्ती तथा जगन्नाथ दोनों कृत्रिम हैं । और हमारी आर्ती तथा जगन्नाथ दोनों स्वतः सिद्ध हैं। पण्डोंने कहा बाबा हमारे जगन्नाथसे भिन्न वह कौन तुम्हारा जगन्नाथ है जिसको तुम स्वतः सिद्ध मानते हो । जगन्नाथ तो संसारमात्रमें यह एकही है । श्रीगुरुजीने कहा जगन्नाथ नाम सर्व जगत्के स्वामीका है । वह कदापि किसी एक देशमें नहीं रह सकता। किन्तु सर्वत्र रहना चाहिये। अथवा जो एक देशी होगा वह कृत्रिम विनाशी होनेसे सर्वजगत्का स्वामीही नहीं होसकता। पण्डोंने कहा बाबा जो आपने कहा सभी यथार्थ है। तो भी सेवा पूजाके लिये परिच्छिन्नकी कल्पना करनीही पडती है । श्रीगुरुजीने कहा धर्मीमें विरुद्ध धर्मकी कल्पना धर्मीके मूलका विघा-तक होती है । इसलिये कल्पना भी उचितही करनी चाहिये। पण्डोंने कहा कि बाबा भलाँ तुमही अपनी कल्पना कहो । श्रीगुरुजीने कहा हमने तो आपलोगोंको प्रथमहीं कहा था कि हमारी कल्पना नहीं है किन्तु सभी ठाट स्वतः सिद्ध है। पण्डोंने कहा कौन सभी ठाट आपने स्वतः सिद्ध मान रखा है ? श्रीगुरुजीने कहा जगन्नाथ या उसकी आर्ती इत्यादि। पण्डोंने कहा स्वतः सिद्ध जगन्नाथकी कौन स्वतः सिद्ध आर्ती है ? तब श्रीगुरुनानकजीने 'गगनमय थाल रवि चन्द दीपक बने' इत्यादि शब्दका उच्चारण करके उन पण्डालोगोंको सुनाया। पण्डालोगोंने कहा बाबा इसका तात्पर्य भी कहो ? श्रीगुरुजीने कहा सर्वान्तर्यामी परमेश्वर हमारा जगन्नाथ है उसकी आर्ती भी सदा आपसे आप हुआ करती है। उस स्वयं होने वाली आर्तीका यह सारा आकाशमण्डल थालरूप है । सूर्य्य तथा चाँद यह दो उसमें प्रज्वलित दीपक हैं । तारागण मण्डल उस महा-थालमें विचित्र मोती हैं मलयगिरिचन्दनसे आदि लेकर अनेक सुग-न्धित पदार्थ धूप रूप हैं । चमर वायु है । संसारमात्रकी वनस्पति

प्रफुल्लित पुष्प हैं । स्वयं होनेवाला पाँचप्रकारका अनहद शब्द घण्टे घडियाल भेरी मृदङ्गादि रूप है । इत्यादि स्वतः सिद्ध पदार्थोंसे स्वतः सिद्ध जगन्नाथकी आर्ती स्वतः सिद्ध सर्वदा होरही है। उस महाप्रभुकी आर्ती करनेकी हमोरेमें सामर्थ्य नहीं । किन्तु हम स्वयं उसकी आर्ती होतीको देख विचार कर आश्चर्य्य हो सकते हैं । तथा उसको महिमासहित स्मरणकर कृतार्थ हो सकते हैं । इत्यादि श्रीगुरुजीके प्रेममय वचन श्रवणकर विचारशील पण्डालोग मोहित हो गये । और श्रीगुरुजीकी अनेक प्रकारकी सेवा भक्ति करने लगे ॥ श्रीगुरुजी उन लोगोंका प्रेम देखकर कुछ दिन वहाँ ठहरे फिर वहांसे चलकर दरिया शोरके तीर पर जाय आसन किया । जहांपर अबतक 'बावली साहिबके नामसे एक मकान आपके स्मरणार्थ बनाहुआ बस रहा है । और इस बसतीमें सिवाय उस गुरुकी बावलीके कि जिसकी भीतके पास खारीसागर बसती मात्रका पानी खारा है । उसी कालमें एक कलियुग नामक जगदीश क्षेत्रका पण्डा जो कि सन्तानसे रहित तथा सम्पत्तिसे सहित था श्रीगुरुजीके पास आया । प्रार्थना कर कहने लगा कि आप यहाँपर कुछ काल निवास करके हम लोगोंको अपने सदुपदेशोंसे कृतार्थ करें तो बहुतही उपकार होगा । और आपके निवासके लिये स्थान आप जहाँ पर जैसा कहें यह सेवक अभी तैयार करवा देता है । उसके कहनेपर श्रीगुरुजीने एक शब्दका उच्चारण किया । जिसका तात्पर्य्य यह है कि यदि सुन्दर मन्दिर हीरा मोतीसे खचित भी बने और उसके बीच अतर फुलेल गुलाबादि अनेक

दो० तततन्तवितृ चर्मका, घन कांसीको जान ॥ नाद शब्द घटका कहे, सुस्वर श्वास पहचान ॥ १ ॥ यह पांच प्रकारके वाद्यविशेषजन्य कृत्रिम शब्द हैं । परन्तु परमेश्वरकी सृष्टिमें यह पांचोंही प्रकारके शब्द स्वयंही हो रहे हैं । जिसको श्रवण करने हों वह कृत्रिम शब्दोंसे श्रवणसे निरुद्धकर चित्त एकाग्रद्वारा सहजही सुन सकता है ।

प्रकारकी सुगन्धित पदार्थोंका छिडकाव भी किया जाय। और मखमली सिरहाने गद्दे तकिये तथा फरश भी उसमें किये जायँ। अनेक तरहके पलँग मेज कुरसियाँ तथा टेबल भी उसमें सजाये जायँ और सेवा करनेके लिये इन्द्रकी अप्सरा उसमें आनकर हाजिर भी रहें। सारा देश अपने वशवर्ति भी होजावे। तो भी सिवाय परमेश्वरके स्मरणके हमारे वह किसी भी कामका नहीं है। और जिन पदार्थोंके संगसे परमेश्वर भूलजावे नहीं हम उन पदार्थोंको देख सुनकर प्रसन्न होते हैं। इत्यादि श्रीगुरुजीके वचन सुनकर कलियुग नामक पण्डा चरणोंमें गिरपडा और गदगद कंठ होगया। श्रीगुरुजीने उसका अपना प्रेमी भक्त जानकर उसके मनका मनोरथ पूरा होनेका आशीर्वाद दिया। उसके घर पुत्र हुआ। उसीकी वंशपरम्परा कलियुगके नामसे अबतक प्रख्यात है। और उसी कालसे पंजाब देशमात्रका पण्डा वही माना जाता है।

वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी झीलचिलकाके किनारे पर्यटन करते हुये शहर खुरदहा, दरानापुर इत्यादि नगरोंको अपनी चरण रजसे पवित्र करते हुये सुनारत गढके समीप महानदीसे उतरकर सुहागपुरमें आन विराजे। वहाँके अनेक लोग शनैश्चर देवताकी मूर्तिको परमेश्वर जान कर पूजा करते थे। उनको अपने सदुपदेशोंसे सच्चे परमेश्वरका मार्ग बतलाया। फिर वहाँसे चलकर कोहकण्टक नामक पर्वत जो कि विन्ध्याचलकी एक शाखा है उसपर आन विराजे वहाँपर अनेक साधु फकीर पानीकी सेवा पूजा भक्ति करनेवाले देखे। उनके साथ अनेक प्रकारकी चर्चा वार्ता करके उनको भी सच्चे परमेश्वरका मार्ग बतलाया। वहाँसे चलकर विन्ध्याचलकी बहुत दिन तक यात्रा करके भिल्ल किरात जातिके 'कौडा' नामक राजाको जो कि मनुष्य भक्षण करनेसे भी संकोच नहीं कराकरता था धर्ममार्गका उपदेश दिया। और उसीके पंजेमें आये हुये भाई मरदानाको भी छुडाया ऐसेही श्रीगुरुजी चलते २ ऐसे गहर वनमें पहुँचे कि जिसको देखकर मर-

दाना घबराकर कहने लगा कि, गुरुजी अब मुझे कहां लिये जाते हो जो जहां सिवाय जंगल वा पहाड वा लम्बी २ खाडियोंके सिंह शेर तथा हस्ती आदि जीवोंके कुछ और दिखाईही नहीं देता । और क्षुधा पिपासा तथा भयके मारे जान निकलती जाती है कहावत यथार्थ है कि, फकीरोंको जंगलमें भी मंगल भासता है परन्तु संसारी पुरुषको वहां दंगल होता है । गुरुजी मैं कोई फकीर नहीं जो आपके साथ इसी तरह भटकता फिरूं । यदि मेरेको प्रथम आपके ऐसे सफर तथा सैरकी खबर होती तो मैं तो आपके साथ घरसे बाहर एक कदम भी न निकलता । मैंने तो सोचा था कि, गुरुबाबाके साथ कुछ खाने कमानेका अच्छा रहेगा परन्तु आप तो मेरेको अब ऐसे रास्तेपर लेचले यहांपर कुछ मिलना तो दूर रहा :जान बचाना भी कठिन दीख पडती है । श्रीगुरुजीने कहा कि, भाई मरदाना थोडा काल धैर्य्य कर तुम्हारेको बहुत कुछ खानेके लिये मिलेगा । ऐसेही थोडी दूर चलकर एक ऐसा सुन्दर वन आया कि, जिसमें अनेक साधु सन्त फकीर योगिलोग रहते हैं । जिसमें अनेक प्रकारके फल फूल स्वयं परिपक्व होते तथा जीवोंके काममें आते हैं । जिसमें भिन्न२ जातिके विचित्र २ पक्षी रंग रंगके शब्दोंको बोल रहे हैं । जिसमें पवित्र जलाशय मानो सज्जन पुरुषोंके चित्तकी निर्मलताके उदाहरण बन रहे हैं । जिसमें कदली स्तंभोंके लम्बायमान पत्र अपनी क्रिया द्वारा मानो अपनी ओर दुर्जनोंके आगमनका निषेध कर रहे हैं । जिसके रंग रंगकी लताओंके तरह तरहके प्रतान मानो अपने पुष्प दन्तोंको निकाल कर राज्यवैभवको हँस रहे हैं । जिसमें अनेक प्रकारका पशु पक्षिगण जीवके वास्तव स्वरूपकी स्वतंत्रताका बोधन कर रहे हैं । जिसमें अनेक प्रकारके वृक्षोंका पत्र पत्र शाखासे गिरता हुआ क्षण क्षणमें संसारकी अनित्यताका उपदेश कर रहा है । ऐसे महारमणीक वनमें प्राप्त होकर श्रीगुरुजीने कहा भाई मरदाना जैसी तेरी रुचि होय फल फूल खाय ले गुरुजीकी आज्ञापाय कर

भाई मरदाना तथा भाई बालाने कदलीफल सीताफल इत्यादि अनेक तहरके फल भक्षण किये । भाई मरदाना सुन्दर बनको देखकर तथा अपना पेट रंग रंगके फलोंसे भरकर बहुत आनन्द हुआ । और रबाब निकालकर श्रीगुरुजीके पास बैठकर भजन गाने लगा । उस कालमें भाई मरदानाने ऐसे प्रसन्न होकर भजन गाये कि उस जंगल-निवासी साधु सन्तोंसे अतिरिक्त अनेक प्रकारके पशुपक्षी भी चारों तरफ आन जमा हुये । और प्रेमपूर्वक गायन सुनते रहे । अच्छे स्वरका गायन ऐसाही होता है जो कि पशु पक्षियोंको भी अच्छा लगता है श्रीगुरुजीने उन साधुलोगोंके साथ चर्चा वार्ता किया और उनको अपने पवित्र भावके उपदेशसे कृतार्थ किया वे लोग श्रीगुरु-जीको असंसारी महापुरुष निश्चय करके तथा अनेक प्रकारके चमत्कार देखके श्रीगुरुजीके शिष्य बन गये । पंदरह बीस दिनतक उन-लोगोंने श्रीगुरुजीको अपने पास ठहराया और अनेक प्रकारकी सेवा भक्ति करके सदुपदेशोंसे लाभ उठाया । फिर वहाँसे चलकर श्रीगुरु-जी शहर जब्बलपुर नर्मदा नदीके किनारे फूल नामक जङ्गम फकीरसे जो कि उस कालमें लोगोंमें करामती सिद्ध माना जाता था मिले उसके साथ चर्चा वार्ता करके उसका अभिमान दूर किया और उसको सन्मार्गका चलन बतलाया । वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी ' चित्र-कूट ' तथा ' महीरकी ' जहाँ पर जंगम साधुकी रियास्त अबतक विद्यमान है पर्य्यटन करते हुये सैकडों तातरीकी यात्रा तथा वहाँके रहनेवाले साधु सन्तोंसे चर्चा वार्ता करते हुये फरीदवाडामें पहुँचे । इस जगह बाबा फरीदका वह कूप है कि जिसमें वह संकल डालकर उल्टा लटककर तप किया करता था । और उनके पाओंका मांस काक तथा गृध्र खाया करते थे । और बाबा फरीद उनको कहा करते थे कि हे मांसके अभिलाषी पक्षिगण ! यह मेरे शरीरका मांस सभी आपहीके लिये है आपलोग निर्भय होकर भक्षण करो परन्तु इसमें इन मेरी दोनों आंखोंको मत छेडना क्योंकि यह अपने मित्रके दर्शनके

लिये अभिलाषावाली हैं । स्यात् कदाचित् दर्शन हो । इत्यादि भाव का सूचक वचन श्री बाबा फरीदजीका यथा—

कागा सब तन खाइयो, चुन चुन खइयो मांस ॥
दो नयना मत खाइयो; पिय देखनकी आस॥ १ ॥

इसी फरीदवाडामें सालके साल ज्येष्ठमासमें मेला भी बडी धूम धामसे हुआ करता है । वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी तालभूपाल महलसरद कोहसागरा तथा शहर चन्देरी होते हुये दरियायसिन्धसे पार उतरकर कालराबाटनमें पहुँचे । यहांपर भी एक मकान अबतक भी श्रीगुरुजीके स्मरणार्थ विद्यमान है । वहाँके अनेक अधिकारी मनुष्योंको सन्मार्गका उपदेश करके शहर झाँसी ग्वालियरसे दरियाय चम्बलके पार उतरकर धवलपुर भरतपुर रिवाडी गुडगावां झजर दोजाना तथा करोली इत्यादि अनेक ग्राम नगरोंसे होते हुए शहर करनालमें आन विराजे । यहाँका निवासी शेखशरफल्दीनका मुरीद शेखशमल्दीन बहुतसे फकीरों अमीरोंको साथ लेकर श्रीगुरुजीकी भेट करनेको आया । श्रीगुरुजीने उनको अपने पवित्र भावके सदुपदेशसे ऐसा प्रसन्न किया कि, वे सबके सब मुरीद हुये । बडे बडे महापुरुषोंको मुरीद बनानेके लिये छूँछी बातचीतकी चतुराई काम नहीं देती किन्तु कोई असाधारण दैवीमानसिक बलकी अपेक्षा है वह मानसिक बल श्रीगुरु नानकदेवजीमें अप्रतिहत था । उसीके प्रतापसे जो दर्शन करता था वशवर्ती होता था । इस करनालशहरमें भी श्रीगुरुजीकी यात्राका स्मारक एक गुरुस्थान अबतक विराजमान है ।

वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी सूर्य्यग्रहणके मेलेपर कुरुक्षेत्र शहर थानेसुरमें सिद्धवाडेमें जाय विराजे । मेलेके मध्य ग्रहण कालमें एक राजाका पुत्र हरिणका शिकार करके लाया । और उसी कालमें खानेके लिये पकाने लगा । उस राजकुमारके अनुचित व्यवहारको देख; कर लोगोंने श्रीगुरुजीसे कहा कि यह आपके आसनके पासही कैसा घृणित कार्य्य कररहा है आप इसको उपदेश नहीं करते ?

उस पर श्रीगुरुजीने कहा कि सारे संसारका नियंता तो सर्वान्तर्यामी परमात्मा है। यह जीव किस २ को समझा सकता है । और क्षात्रधर्म-युक्त शूरवीर पुरुषको हम मांस खानेका निषेध भी नहीं कर सकते। क्योंकि वास्तवसे विचार कर देखा जाय तो ऐसा प्रतीत होता है कि, जीवमात्रकी मांसहीसे उत्पत्ति देखनेमें आती है । और इनका पालन भी मांसहीसे होता है। प्रत्येक जीवका स्वयं शरीर भी मांस-मय ही होता है । जब परस्पर विवाह होता है तो माँस ही मिल बैठ-ता है स्त्री, पुत्र , बन्धु सभी मांसहीके पुतले हैं। जब यह बहुत छो-टा सा होता है तो माताका स्तन मुखमें लेता है वह भी मांसहीकी ग्रन्थि है । इसलिये मांससे बचना तो इस जीवका कठिन है परन्तु देशकालका विचार अवश्य करना उचित है । उस राजकुमारने ऐसे समयपर ऐसा कार्य्य करना क्यों प्रारम्भ किया है यह वार्ता उससे पूछनी चाहिये। तब उसीकाल बहुतसे लोग मिलकर उस राजकुमा-रके पास गये । और जाकर वही चर्चा चलाई । जिसका उत्तर राज-कुमारने यह दिया कि, मैंने इस हरिणके शिकारको तीनदिन परिश्रम करके किया है । इसलिये प्रेमसे बनवा रहा हूं और बनेगा तो भोजन भी करूंगा । परन्तु आप लोगोकी मेरेको क्या आज्ञा है उसको भी कह दीजिये । तब उनमेंसे एक पुरुष पण्डेने कहा कि, ग्रहणकालमें कोई हिन्दू भोजन नहीं करसकता । राजकुमारने कहा क्यों नहीं कर-सकता देखिये मैं ही करसकता हूं । पण्डाजीने कहा आप तो करने-को तैयारही हैं परन्तु धर्मशास्त्रसे तो विरुद्ध है। राजकुमारने कहा पण्डाजी धर्मशास्त्र आपका बुद्धिपूर्वक है कि, बुद्धिसे विरुद्ध है। यदि बुद्धिपूर्वक है तो ठीक आपही मेरेको बतलादीजिये कि, ग्रहणकालमें भोजनका निषेध किस तात्पर्यसे है ? । और यदि कहो कि, धर्मशास्त्र बुद्धिपूर्वक तो नहीं है तथापि मानना अवश्य चाहिये । तो मैं कहता हूं ऐसे धर्मशास्त्र ही को क्यों मानना चाहिये उन्मत्तप्रलापको भी क्यों न मानना चाहिये । क्योंकि दोनोंमें कुछ विशेषता नहीं है । ग्रह-

ण गगनमण्डलमें सूर्य्यको लगरहा है वह बलात्किसीके भोजनका प्रतिबन्धक नहीं है । और ग्रहण, वस्तुही क्या है यदि इस वार्त्ताका विचार किया जाय तो और भी पोल खुल जाता है । इत्यादि राजकुमारके तर्कपूरित बचन सुनकर पण्डासमेत सभी लोग चुप रहगये । और जो माने उसके लिये धर्मका दण्ड है जो न माने उसको क्या कहना इत्यादि वाक्योंका उच्चारण करते हुये पीछे लौट आये । तथा सब वृत्तान्त आनकर श्रीगुरुजीको निवेदन किया । जिसका उत्तर श्रीगुरुजीने यह दिया कि इस विचित्र संसारमें मनुष्योंके मन्तव्योंका विचित्र होना कोई आश्चर्य नहीं है वहांसे चलकर श्रीगुरुजी शहर पहोआ तथा समानासे होते हुये शहर मंग वालमें जो कि, अब राजधाना संग्रूरके प्रान्तामें नानकसाहिबके नामसे प्रख्यात है जाय प्राप्त हुये । वहांके अनेक प्रेमी भक्तोंको अपने सदुपदेशोंसे पावन करके अपनी भगिनी बीबी नानकीके स्मरणसे आकर्षित होकर शहर मालेरकोटला तथा जगरावाँसे होतेहुये दरयाय। शतदुको हरिके पत्तनसे पार उतरकर ११ पौष संवत १५६६ विक्रमीमें फिर शहर सुलतानपुरमें जाय विराजे । तथा अपनी सारी यात्राका संक्षेपसे वृत्तान्त बन्धुवर्गमें प्रकाशित किया । इति प्रथम यात्रा ॥ १ ॥

इति षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

अथ सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

श्रीगुरुनानकजीकी दूसरी यात्रा ॥ २ ॥

अपने अलौकिक दर्शन तथा पवित्र सदुपदेशोंसे शहर सुलतान-पुरके लोगोंको कुछ दिनतक लाभ पहुँचाकर पश्चात फिर भाई बाला तथा मरदानाको साथ लेकर श्रीगुरुनानकजी दक्षिण देशकी यात्रा करनेके उद्देशसे संवत १५६७ विक्रमीके वैशाख मासमें शहर सुलतान-पुरसे चलकर मध्यदेशके पट्टीआदि ग्रामोंसे होतेहुये शहर कसूरमें आन

विराजे । वहाँके रहनेवाले शेख अबदुलकदोस शेख मुहमदसादक तथा शेखअबूशिया इत्यादि मुसलमान फकीरोंसे मुलाकात किया । उनके साथ प्रेमपूर्वक गोष्ठी करके उनके सरल पवित्र चित्त आकर्षित किये श्रीगुरुजीके मनोहर वचन सुनकर वे लोग स्वाभाविकही आपको पीर मानने लगे वहाँसे चलकर दरयाय शतद्रु (सतलुज) से पार होकर शहर धर्मकोट बठिण्डामें रत्नहाजी फकीरसे मुलाकात करतेहुये १४ आषाढ संवत् १५६७ विक्रमीमें शहर सरसामें जाय विराजे । यहाँपर ख्वाजा साहिबका एक मजार (प्रतिष्ठितस्थान) है । उस मजारके चारोंदिशामें चार कोठडियाँ हैं। उनमें उत्तर दिशाकी कोठडीमें श्रीगुरुजी विराजे थे । तथा पूर्वदिशावालीमें शेखफरीदजी विराजे थे । एवं पश्चिमकीमें शेख शमसुल्दीन तथा दक्षिणकीमें ख्वाजारोशनदीन इन चारों महापुरुषोंने अपनी इच्छानुसार यहाँपर तपस्या करी थी इसी लिये उनके नामसे वह कुटी प्रख्यात हैं । तथा इससे यह भी प्रतीत होता है कि, यह चारों सिद्ध महापुरुष एकही समयमें हुये हैं ।

वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी शहर बीकानेरमें जाय विराजे । वहाँके वणिक लोग प्रायः जैन धर्मके मानने वाले थे । श्रीगुरुजीने अपने सदुपदेशका प्रचार किया अनेक लोग श्रवण करनेको आये । परन्तु कुसंस्कारोंसे मलिनबुद्धि लोगोंमें अधिक लाभ न उठाया । श्रीगुरुजीका अपने प्रतिकूल उपदेश श्रवणकर जैन धर्मके ढूंढिये साधु जो कि, अपने मुखपर पट्टी बांधे रखते हैं बहुतसे मिलकर श्रीगुरुजीके साथ विवाद करनेको प्रस्तुत हुये । उन लोगोंकी स्वागतमें श्रीगुरुजीने जिन शब्दोंका उच्चारण किया है वे सभी गुरुग्रन्थसाहिबमें अंकित हैं । जिनका तात्पर्य यह है कि, नंगे पाँउँ फिरनेसे या बाल हाथोंसे खोसडालनेसे परमेश्वरकी भक्ति नहीं होती इत्यादि । जैनसाधुलोगोंने मिलकर श्रीगुरुजीसे पूछा कि आपका धर्म क्या है । श्रीगुरुजीने कहा आप सन्मार्गपर च-

लना तथा अधिकारी पुरुषोंको सन्मार्ग बतलाना यही हमारा धर्म है (जैनसाधु) वह अलौकिक सन्मार्ग कौन है (श्रीगुरुजी) परमेश्वर-का यथार्थ स्वरूप जानना तथा मानना (जैनसाधु) परमेश्वरका वा-स्तव स्वरूपकैसा है । तथा उसके जानने या माननेसे क्या लाभ होता है (श्रीगुरुजी) परमेश्वरका वास्तवस्वरूप सत्य है वही नाम रूपसंसारका कर्ता पुरुष भी है । निर्भय है निर्वैर है । अकालमूर्ति है अयोनि है । तथा प्रकाशस्वरूप है ऐसे परमेश्वरके जान या मानने-से इस जीवका कल्याण होता है (जैनसाधु) द्रव्यार्थिक नयके मतसे अनादि अनन्त सदा शाश्वत सत्य तो यह संसार ही है । इसीलिये इसका कर्ता माननेकी भी आवश्य कता नहीं वस्तुसे विना और सभी विशेषण व्यर्थ हैं । और कल्याण तो इस जीवकी अनेक प्रकारके शुभकर्म्मोंहीसे हो सक्ता है (श्रीगुरु-जी) कर्मोंका फलप्रदाताभी तो कोई मानना चाहिये (जैनसाधु) कर्म्म आपही अपना फल इस जीवको देसकते हैं । (श्रीगुरुजी) भाई कर्म्म तो क्रियाविशेषरूप है । इसलिये जड, तथा क्षणविनाशी हैं उनमें फल देनेकी सामर्थ्य कहांसे आवेगी (जैनसाधु) जड तथा विनाशी विषभी तो अपने सम्बन्धसे पुरुषको मरण रूप फलको देता है (श्रीगुरुजी) मरण नाम प्राणोंके वियोगका है सो सावयव जडरूप विष सावयव जड प्राणोंका विरोधी बन सक्ता है । परन्तु निरवयव जडरूप कर्म्म निरवयव चेतन जीवको अपना फल कदापि नहीं देसकता इसलिये फलप्रदाता ईश्वर अवश्य माननीय है । (जैनसाधु) ऐसे मानकरभी आपलोग पापसे तो संकोच नहीं करते (श्रीगुरुजी) हमको पापक्रियासे बहुत संकोच है (जैनसाधु) क्या आपके श्वासप्रश्वाससे सूक्ष्मजन्तु नहीं मरते इसलिये मुखपर वस्त्र रखना चाहिये (श्रीगुरुजी) हमारे विचारमें मुखपर कपडा बाँधना या स्नान न करना मलिन रहना मलिन जलपान करना पीछे बचा मांगकर खाना अपने पिशाबको अपने हाथपर लेकर

बिखारकर फेंकना अपने विष्ठाको फैलाना या जीवमृत्युके भयसे मृत्तिकासे मिलाना इत्यादि सभी क्रिया अविचारपूर्वक है जीवरक्षाका अधिकार सर्वान्तर्यामी परमात्माके पास है यह जीव तुच्छ इस अधिकारका पालन नहीं करसकता। इसलिये इसको तो यही उचित है कि यह यथायोग्य शुचि पवित्र होकर उसके गुणानुवाद गायनकरा करे। उस परमेश्वरसे विमुख होकर इधर उधर भटकते फिरनेवाले मनुष्यको कदापि शान्तिलाभ होना कठिन है। जैसे अज्ञान बालक अपने मातापिताहीके आश्रयमें सुखको पासक्ता है। अन्यथा नहीं। वैसेही यह अज्ञानी तुच्छ जीव सिवाय पिता परमेश्वरके आश्रय नहीं पासकता। श्रीगुरुजीका इत्यादि सदुपदेश सुनकर अनेक जैनलोग ईश्वरके भक्त बन गये तथा स्नान दानादि पवित्र आचरणोंको धारणकर अपने जन्मको सफल करने लगे।

वहांसे चलकर श्रीगुरुजी जयसलमेर जोधपुर होतेहुए शहर अजमेरमें पहुंचे। और वहांपर ख्वाजा कुतब्बदीन साहिबका मकान जिसको पीर साहिब अढाई दिनका झोपडा कहा करते थे देखा। ख्वाजा कुतब्बदीनचशती जो ख्वाजा हसनबसरीके खानदानसे थे बाबा फरीद ख्वाजा अलाउद्दीन व शमसदीन इत्यादि जो लोग उस कालमें ख्वानसाहिबके मुरीदोंमेंसे विद्यमान थे। सभी मिलकर श्रीगुरुजीसे कहने लगे कि, आप तो हिन्दू मुसलमानोंको एकसा ख्यालमें रखते हैं इस लिये मसजिदमें चलकर नमाज पढें तो हम लोगोंको भी खुशी हो। उनके इस उत्तरमें श्रीगुरुजीने शब्द उच्चारण किया यथा–

(१) इस मकानके विषयमें इतिहाससे ऐसा सुनाजाता है कि, दिल्लीके बादशाहोंके शाहजादोंमेंसे किसीको तखतपर बैठना होता तो उन सबके नामकीएक एक कमान इस मकानके भीतर डाली जाती थी। जिसके नामकी कमान पीरकी तरफसे चढे वह चाहे बडा हो वा छोटा हो लायक हो वा नालायक हो पिता उसीको तखत पर बैठाता था। बहुत कालतक ऐसेही होता चला आया परन्तु जब शाहजदांके शाहजादोंकी बारी आई

मिहर मसीयतासीदक मुसल्ला हक्क हलाल कुरान ॥
शरम सुनतशीलरोजा होहु मुसलमान ॥
करणीकाबा सचपीर कलमाकर्म नवाज ॥

इत्यादि अनेक शब्द उनको सुनाये जिसको सुनकर उनकी खातर जमा होगई । और वे सभी लोग अपने प्रेमभावसे श्रीगुरुजीके मुरीद बनगये । वहाँसे चलकर कार्तिक पूर्णमासी संवत् १५६७ विक्रमीमें पुष्कर तीर्थके मेलेपर जाय विराजे । वहाँपर सदुपदेशके प्रचारसे सहस्रों पुरुषोंको उपकृत किया । फिर वहाँसे नसीराबाद देवगढ लोदीपुर होतेहुये दरयाव साम्भरमतीसे पार होकर आबूके पहाड पर जाय विराजे । वहाँपर भी अनेक जैनसाधुलोगोंसे चर्चा वार्ता हुई । उनको परमेश्वरके गुणानुवाद सुनाकर उनके पाषाणाचित्तोंको मृदुल करडाला । अनेक लोग ईश्वरके परम भक्त बनगये ।

फिर वहांसे चलकर शहर पटॅन ईडर अहमदनगर डूंगरपुर बांसवाडा इत्यादि शहरोंसे होतेहुये दरयाय महीसे पार होकर शहर जावडामें दरयाय चम्बलसे पार होकर शहर उज्जैनमें आन विराजे । वहांपर भी वैरागी तथा गोसाईं लोगोंसे चर्चा वार्ता होती रही जो कि, आनु-

और पीर साहबने कमान दाराश कोहकी चढाई तो औरंगजेबने आश्चर्य होकर उसका मर्म निकालना चाहा । विचारसे खोजकरी तो एक ऐसी लम्बी सुरंग मिली जो कि, मजावरोंके घरोंसे लेकर इस मकान तक जमीनके नीचे थी । मजावर लोग जिस शाहजादेकी तरफसे अधिक रोशवत पाते थे उस सुरंगमेंसे जाकर उसीके नामकी कमान तान दिया करते थे । औरङ्गजेबने इस पोलको लोकमें प्रकाशित करादिया ।

(१) इस शहरके विषयमें इतिहाससे ऐसा सुना जाता है कि, महाराजा गन्धर्वसेनके पुत्र महाराज विक्रमाजीतने इस शहरको बसाया तथा उसने हरनन्दी नामिका देवीकी पूजा करके यह वर लाभ किया था कि शत वर्षतक राज्य करके यदि फिर अपना सिर अपने हाथसे काटकर देवीके अर्पण करेगा तो फिर नये शिरसे शत वर्ष राज्य करसकेगा इस रीतिसे राजा विक्रमाजीत तीन सौ वर्षतक जीता रहा उसने इस सारे

पूर्वी श्रीगुरुग्रन्थसाहिबमें लिखी है। जिन उत्तम उपदेशोंके प्रभावसे अनेकों साधुलोग बुत्त परस्तिश (मूर्त्तिपूजा) को छोडकर उत्तम ज्ञानमार्गमें प्रवृत्त हुये वहांसे चलकर श्रीगुरुजी महाकालेश्वर महादेव ज्योतिर्लिंग हर्षदा देवी इत्यादि प्रसिद्ध स्थानोंका अवलोकन करते हुये ॐ कार होशंगाबाद होते हुये नरसिंहपुर बालाघाट इत्यादि गाडदशके शहरोंको तथा अनेक जंगलो पहाडों तथा किलोंका निरीक्षण करते हुये कोह महादेवसे उतरकर मतासिल शहर सोनीके मुकाम रामटेकपर पहुचे। यहाँपर राजा अमरीखके यज्ञकरनेका तालाव तथा बहुत ऊंचा लम्बा मजबूत एक कुदरती पहाडीका किला बना हुआ है। इसी स्थलमें रामचन्द्रजी भी कुछ कालतकरहे थे। वहाँसे कामठी नागपुर हुँगलीसे होकर कसवा अवंडा जहाँपर नामदेव भक्त हुआ है वहाँ पहुँचे। यहाँपर नामदेव भक्तके साथ ज्ञानगोष्ठी चर्चा वार्ता करके श्रीगुरुजी बहुतही प्रसन्न हुये। वहाँसे आगे बलदाना तथा मलकापुर इत्यादि शहरोंको देखते हुये दरयाय गोदावरीसे पार होकर शहर फतहबाद इलाका हैदराबादमें जा पहुँचे। वहाँसे शहर रोगर कलस मेंडक गोलकोंडा हैदराबाद अमराबाद इत्यादि शहरों तथा जंगलोंको देखते हुये बिदर शरहमें आन बिराजे। यहाँपर कुछ दिन निवास कर सदुपदेशका प्रचार किया। अनेक लोग सेवक हुये इसलिये यहाँपर आपके स्मरणार्थ एक गुरुस्थान नानकझिहरा साहिबके नामसे प्रख्यात है। इसी स्थानमें सय्यद याकूब तथा जलालुदीनके साथ

भारत वर्षको अपने स्वाधीन किया था। और दिल्लीके तखतपर बैठकर अपना संवत्‌सिक्का चलाया। उससे एकसौ पैंतीस वर्षके पीछे राजा शालिवाहनने उसका सामनाकरके युद्धमें विक्रमका शिर काट डाला। और आप दिल्लीके तखत पर बैठ कर शाका व सिक्का अपना चलाने लगा। इसी राजा शालिवाहनने शहर स्यालकोटको बसाया है। तथा इसके पूर्णभक्त और राजा रसालु यह दो पुत्र भी प्रख्यात हुये हैं।

चर्चा वार्ता हुई। इन दोनोंकी कबरें वहाँपर विद्यमान हैं। वहाँसे निगपुर पांगलके प्रान्तमें एक जङ्गलमें पहाडीकी चोटीपर जाय बिराजे। वहाँपर बहुतसे कनफटे नाथलोग रहते थे उन्होंने सुना कि बाबा नानकके पास जो कुछ कोई ले जाय वह वहाँ उसी कालमें सभीको बांट देता है। इस वार्ताकी परीक्षार्थ एक नाथने श्रीगुरुजीके आगे एक तिल जाय रखा। और विचार किया कि, देखें क्या करते हैं। श्रीगुरुजीने उसी कालमें भाई बालाको बुलाकर कहा कि, इस तिल प्रसादको जलमें पीसकर सभीको बाँट दो। भाई बालेने वैसेही किया। नाथलोग देखके प्रसन्न हुये। सेवा भक्ति करने लगे। वहाँपर भी एक गुरुस्थान तिलगंज साहिबके नामसे अबतक प्रख्यात है। वहाँसे देश केरलको देखते हुये कृष्णा नदीसे पार उतर कर पंढरपुर में जहाँपर विठल भगवान्का अवतार हुआ है। और उस देशके सभी लोग उसीको विशेष कर मानते हैं आन बिराजे। वहाँसे शहर गोटी प्रान्तको देखते हुये दरयाय पारसमे पार होकर मद्रास प्रान्तका निरीक्षण करते हुये दरयाय कावेरीसे पार उतरकर कसबा तंजौरमें जाय बिराजे। वहाँसे त्रिचना पल्ली नागपटामें तथा देशकोटाका सयर करते हुये दरयाय वेकाहीसे पार उतर कर शहर पोलमकोटमें जहाँपर अबतक एक गुरुस्थान आपकी यात्राके स्मरणार्थ बना है पहुँचे। दो चार दिन वहाँपर निवास करके पीछे सेतुबन्ध रामेश्वरमें पहुँचे। वहाँपर पण्डोंको अनेक प्रकारके धर्मके तथा नीतिके उपदेश सुनाये। वे लोग उस कालमें तो श्रीगुरुजीके भक्त बन गये परन्तु पीछेसे उनके उपदेशको कुछ स्मरण न रक्खा यहां पर मरदानेने पूँछा कि, गुरुजी यह कैसा स्थान है श्रीगुरुजीने कहा कि भाई. मरदाना इसकी लोग ऐसी चर्चा कराकरते हैं कि जब श्रीरामचन्द्रजी दक्षिणको आये तो रावणके मारणेके लिये यहांपर पुल बाँधकर पार उतरे थे उसी कालमें यह महादेवका लिङ्ग स्थापन किया था वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी सिंगलद्वीप जिसको लोग सीलोन या लंका भी कहते

है पहुँच कर राजा शिवनाभके शहरमें जाय विराजे। श्रीगुरुजीकी प्रशंसाको सुन कर राजा आप श्रीगुरुजीके दर्शनको आया। श्रीगुरुजीके अनेक भाव पूरित सदुपदेशोंको सुन कर दास बनगया। और श्रीगुरुजीके चरणोंमें सन्तानके अभावकी सूचना करी। श्रीगुरुजीकी प्रख्याति सुनकर रानी भी दर्शनको आई। और उसने भी पुत्र होनेकी प्रार्थना करी। और यह भी कहा कि दीनबन्धो कोई ऐसा मन्त्र यन्त्र कृपा करके बनादो जिसमें मेरा पति राजा मेरे वशवर्ती रहे। श्रीगुरुजीने शब्द उच्चारण किया।

यथा—निंवण सु अक्षर क्षिवण गुण जिह्वा मणियां मन्त ॥
इतडे भैणे वेश कर तो, वश आवी कन्त ॥ १ ॥

अर्थात् नम्रताके अक्षर बोलने क्षमा गुणको धारण करना जो पति बोले सहन करना जिह्वाको मीठा बोलकर मणिवत् उज्वल करना बस यही पतिके वशवर्ति करनेका मंत्र है ॥ राणी श्रीगुरुजीके ऐसे उत्तम उपदेशको सुनकर बडी प्रसन्न हुई। और श्रीगुरुजीके आशीर्वादसे पुत्रवती भी हुई। फिर वहाँसे चलने लगे तो राजाने प्रार्थना करी कि कोई भी आपका विशेष सेवक इधर रहना चाहिये। राजाके कहनेपर श्रीगुरुजीने झण्डातक्षक जो कि वहाँपर बहुतही श्रीगुरुजीका प्रेमी था उसको वहाँपर अपना खलीफानियत कर दिया। यही खलीफा श्रीगुरुअंगद्जीक कालमें गुरुजीके दर्शनकोलिये सब परिवार पंजाबदेशमें आया था। उसके वंशके लोग अब भी 'स्याना' नामक ग्राममें पटियालाके इलाकामें विद्यमान हैं। वहाँसे श्रीगुरुनानकजी फिर देश आर्यावर्त्तहीमें चले आये। और मलेवारके रामराजाके गादीपर बैठनेवालेको जो कि जातिका कुम्भकार था अपने सदुपदेशोंसे उद्धुद करके अपना शिष्य बनाकर उससे तीन सौ साठ अन्नक्षेत्र नियत करवाये। जो कि अबतक यथावत् प्रचलित हैं। वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी शंकराचार्यके

'शृंगेरी' मठको देखनेको गये । वहाँके महन्तके साथ ज्ञानचर्चा करके उसको प्रसन्न किया । महन्तने भी श्रीगुरुजीको यथायोग्य आतिथ्य करके सन्तुष्ट किया । वहाँसे इलाका कराकरीको देखते हुये दरिया दापारसे पार होकर शहर टोटी करन पालेमकोटा रासकमौर मदर चतौर इलाका कोचयन शहर पलीकट कोइम बटूर कोह नीलागिरि इत्यादि प्रान्तोंकी यात्रा करते हुये कालीकिटमें जो कि अब इलाका फ्रांसमें विद्यमान है जाय विराजे । वहाँसे इलाका कोरकमें शहर मकराउ कोटली पट्टनमें होकर इलाका मैसूरमें शहर डरक बैंगलूर गोही तथा गोवर इलाका कनडामें शहर सरंगरी गोआ जो कि पुरतगालवालोंके स्वाधीन है तथा मुम्बई प्रान्तमें भी गिना जाता है राजापूर रत्नागिरी इत्यादि स्थानोंको देखते हुए शहर नासिक गोदावरीके तीरपर जो स्थान पञ्चवटीके नामसे प्रसिद्ध है । जहाँपर भी रामचंद्रजी अगस्तमुनिके पास कुछ दिन रहे थे आन विराजे वहाँसे त्र्यम्बक महादेवका मन्दिर देखते हुए दरिया टापटीके पार उतरकर राजमेलाशेर होकर नर्मदा नदीसे पार होकर विन्ध्याचल पर्वतका निरीक्षण करते हुये बढोच बरोदा अहमदाबादसे होकर शहर भावनगर पालीटाना इत्यादिको निरीक्षण किया वहासे चलकर शहर जूनागढमें नागर जातिके एकमात्र प्रख्यात नरसी भक्तको भेट करी । यह नरसी भक्त संवत् १५८२ विक्रमीमें माघमासकी ९ को शरीर छोडकर विदेह हुआ है । श्रीगुरुजी तथा नरसी भक्त परस्पर चर्चा वार्ता करके आपसमें बहुतही प्रसन्न हुए । वहाँही दातागज बखशसाहिब भी जो कि उसकालमें वली समझा जाता था श्रीगुरुनानकजीकी प्रशंसा सुनकर मुलाकात करनेको पास आया । और मिलकर बहुतही प्रसन्न हुआ ।

---

(१) शंकरस्वामीने चारदिशामें चार मठ बनाये थे । दक्षिणमें शृंगेरी पूर्वमें गोवर्द्धन जगन्नाथमें । उत्तरमें ज्योतिर्मठ बद्रिकाश्रममें । पश्चिममें शारदामठ द्वारिकामें ।

यहाँका नवाब फयजबखश उसकालमें बहुतही साधु फकीरोंका प्रेमी था। उसने सुनकर श्रीगुरुजीकी बहुत सेवा करी। चलते समय उनकी पादुका जो कि अबतक किलेके पास एक धर्मशालामें विराजमान है स्मरणार्थ नवाब साहिबने रखवाली थी। वहाँसे श्रीगुरुजी रैवत (गिरनार) पर्वतकी यात्राके लिये उसके ऊपर जो कि १९ मीलकी चढाई है गिरनारी जैसे महापुरुषोंको मिलते तथा अनेक प्रकारकी परस्पर ज्ञानचर्चाको करते हुए प्रसन्न हुये। वहांसे चलकर शहर वैरावल प्रभासक्षेत्र जहां यादव क्षय हुये हैं। मन्दिर सोमनाथमहादेव इत्यादि स्थलोंको देखते हुये पोरबन्दर (सुदामापुरी) आन बिराजे। वहासे गोमती द्वारिकामें चले गये। यह स्थान श्रीकृष्ण महाराजकी राजधानीका है और अब यहांपर उनके अनेक प्रकारके मन्दिर बने हैं। पासही शंकर स्वामीका शारदामठ भी नाम मात्रका विराजमान है। वहांसे चलकर श्रीगुरुजी बेटद्वारिका जिसके चारों तरफ समुद्र है शंखतालाईपर जो कि, मध्यभागमें है उसपर जाय विराजे यह वही स्थान कहते हैं जहांपर जरासन्धसे भागकर श्रीकृष्ण छिपे थे। वहांसे चलकर मैदान कच्छका निरीक्षण करते हुये शहर अंजार मन्द्रा मशका मण्डीमें आन पहुँचे। लोग वाममार्गी बाला सुन्दरी देवीकी उपासना किया करते थे। उनको अपने सदुपदेशोंसे सच्चे परमेश्वरका रास्ता बतलाया। फिर वहांसे चलकर शहर भुज और लखपत आदिको निरीक्षण करते हुये आशापूर्ण देवीके मकानको देखकर नारायणसरोवरपर पहुँचे। वहांपर भी अपने सदुपदेशोंसे लोगोंको कृतार्थ करते हुये धरणीधरकी झाडीमेसे होते हुये अमरकोट अलह्यारका टांडा इत्यादि शहरोंको देखते हुये शहर फीरोजपुर होते हुये अहमदपुर

(१) गिरनारी बाबा एक फकीर हुआ है जिसको वहाँके बहुतलोग मानते हैं और यह लोग गिरनारी बाबाको अमर अर्थात् सदा जीनेवालाभी मानते हैं।

खानपुर इलाका बहावलपुरमें जाय निकले । वहांसे चलकर दरिया सिन्धुसे पार होकर शजाबाद शेरशाह इत्यादि शहरोंको देखते हुये शहर उच्च जो कि, प्रसिद्ध पीरोंहीकी वस्ती कहलाती है वहाँ पहुंचे । वहांके फकीरोंसे ज्ञानचर्चा करते हुये शहर मुलतानमें जाय विराजे । वहांपर किलामें प्रह्लाद भक्तके स्थानको देखकर दरियाके तीरपर शाह शमसतपरेजके मकान पर जाय बैठे । मुलतानके फकीरोंको आपके आनेकी खबर हुई तो उन सबोंने मिल कर एक कटोरा दुग्धका पूरकर आपके पास एक मुरीदके हाथ भेज दिया । आशय उन सबका यह था कि, यह शहर तो आगेही पीरों फकीरोंसे साफ कटोरेकी तरह भरा है आपका यहांपर आना अधि-कसा बुझाता है । श्रीगुरुजीने उस दुग्धके कटोरेमें दो चार बतासे डाल दिये तथा ऊपर उसके एक चमेलीका पुष्प रख दिया । इससे श्रीगुरुजीने उनके भावको जानकर उत्तर दिया कि, जैस दुग्धका मीठा सहकारी है विरोधी या व्यर्थ नहीं अथवा जैसे चमेलीका पुष्प सारे दुग्धपर पड़ाभी है परन्तु उसकी विकृति नहीं करता प्रत्युत अपनी सुगन्धिसे उसको सुगन्धित करता है तथा वर्णके साद्द-श्यसे विशेष सम्बन्धका बोधक है । वैसेही आपलोग हमको भी समझें । कटोरेमें मिठास तथा पुष्प देखकर पीर फकीर लोग बहु-तही प्रसन्न हुये । और हजरत महावल हक्कशाह शरीफसानी तथा ख्वाजा मोमनदीन सदा सोहागन इत्यादि जो उस कालके नामदार वली फकीर थे सभी मिलकर श्रीगुरुजीके पास भेंट करनेको गये और उनके साथ वार्तालाप करके तथा चर्चा वार्ता ज्ञान गोष्ठी करके बहुतही प्रसन्न हुये । वहांसे चलकर श्रीगुरुजी तलमबा नामक ग्राममें जाय विराजे । वहां एक सज्जन नामक ठग रहा करता था । उसने सुना कि गुरुजी बहुत देश देशान्तर भ्रमण करके आये हैं । लोग इनको भेंट पूजा बहुत देते हैं इस लिये इस कालमें इनके पास कुछ भारी रकम होनी चाहिये । ऐसा विचारकर तथा उस पूजाके सारे

धनका खजानची भाई मरदानाको निश्चय कर बहुत श्रद्धाभक्तिके साथ भाई मरदानाको अपने घरमें बुलाया। एकान्तमें उसके हाथ पाउं रज्जुसे बांधकर मारपीटकर पूजाके धनका हाल पूछने लगा। मरदानाने बहुत भी कहा कि गुरुजीको जो कुछ जहां २ पूजामें आता रहा वहाँही फकीरोंको खिला दिया करते थे। परन्तु उसने इस वार्ताको सत्य न मानकर मरदानाको बहुत मारा। यह वृत्तान्त श्रीगुरुजीको ज्ञात हुआ तो आप भाई बालाको साथ लेकर उस ठगके घरमें गये। भाई मरदानाको छुडाया और उसको कहा कि यदि हमको आपकी प्रथम खबर होती तो हम आपके लिये अवश्य कुछ धन लिये आते परन्तु क्या करें हम तो इसी भयमें जहाँका तहाँ लगाते गये कि जब धन संग्रहके भ्रमवाले पुरुषकी ऐसी दशा होती है कि वख्तपर जान भी बचनी कठिन हो जाती है। तो जिनके पास सत्यही धन है उनका क्या हाल होता होगा। इस वार्ताको श्रवणकर संस्कारी ठग श्रीगुरुजीके चरणोंमें गिरपडा। और भूल बखशाकर सदुपदेशको ग्रहण कर सचा सज्जन बनकर धर्मके कृत्यसे जीवनवृत्ति करने लगा। श्रीगुरुजीकी अपनी भगिनीके साथ प्रतिज्ञा थी कि आपके दत्तचित्त होकर स्मरणसे मैं आपके पास अवश्य आया करूंगा। उसी प्रतिज्ञाके अनुसार बीबीनानकी भगिनीके स्मरण करनेसे शहर तलवंडी अपनी जन्मभूमिमें माता पिताको मिलते हुये संवत् १५६२ विक्रमीमें शहर सुलतानपुर अपनी भगिनीके पास पहुँच गये। और उसको अपने पवित्र सदुपदेश सुनाकर कृतकृत्य किया। उसके पश्चात् थोडे दिन तक बीबीनानकीके पास रहकर शहर लाहोरमें जाय विराजे। वहाँ पर अनेक भेड बकरी गौ इत्यादि जानवर मुसलमानोंके हाथसे नाश होते देखकर कहने लगे कि, लाहौर शहर जहर कहर सवा पहर, अर्थात् इस शहरमें आजकल प्रतिदिन सवापहर दिन चढे तक कहर गुजरा करता है। इसलिये आफगानोंके राज्यपर थोडेही दिनोंमें आघात आवेगा। ऐसे कहकर वहाँसे चलदिये और पचीसकोस दूरपर जाकर

काहनूर नामक ग्राम जिला गुरुदासपुरमें दरिया रावीके तीरपर एक सुन्दरसा भूमिका स्थल देखकर वहाँ विराजे । और वहाँके दोड्ढ नाम कगोत्र जाट लोगोंके कहनेसे संवत् १५६९ विक्रमीमें एक कर्तारपुर नामक ग्राम बसाया । उसकी स्वाधीनताका पत्र दीवान करोडीमल्ल क्षत्रियने अपने बडे लाहौरनिवासी बखशीभक्तराम द्वारा श्रीगुरुजीको बडी प्रसन्नतापूर्वक लिख दिया । यह लोग प्रथम श्रीगुरुजीसे विपरीत थे पीछे उनके प्रभाव प्रताप तथा आचरणोंको देखकर दास बन गये थे । यही लोग पीछे सदाही उस ग्रामकी वृद्धि करनेमें दत्तचित्त रहते थे । जब धर्मशाला तथा और सभी मकान बनगये तब श्रीगुरुजीने अपने बहुत शिष्य लोगोंके कहनेसे पखोनामक ग्रामसे अपने परिवारके लोगोंको भी यहाँपर बसनेके लिये बुलाया । और इसी ग्राममें वास नियत किया इति द्वितीययात्रा ।

इति सप्तदशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

अथाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

श्रीगुरुनानकजीकी तृतीय यात्रा ॥ ३ ॥

अपने सदुपदेशोंसे ग्राम कर्तारपुरके लोगोंको कृतार्थ करके फिर श्रीगुरुजी भाई मरदाना तथा बालाको साथ लेकर संवत् १५७० विक्रमीमें करतारपुरसे चलकर शहर नूरपुर सुजानपुर कोटकांगडा इत्यादिको देखते हुए ज्वालामुखी देवीमें जाय पहुँचे । यहांपर अग्निकी लाटें पहाडसे निकला करती हैं । उनको देखकर मरदानाने श्रीगुरुजीसे पूँछा कि, यह क्या है । श्रीगुरुजीने कहा कि, इस स्थानके लिये लोग ऐसा कहते हैं कि, जिस कालमें देव दैत्योंका परस्पर युद्ध हुआ है तो दैत्यलोग देवताओंपर बलिष्ठ हो गये थे । उस कालमें उन सब देवोंने मिलकर परमेश्वरकी आदिशक्तीका स्मरण किया था । सो वह वहाँसे प्रकट होकर देवोंकी रक्षिका हुई थी । तथा दैत्यलोगोंका

उसने संहार किया था। इसीलिये बहुतसे हिन्दूलोग इस जगहको मानते हैं। परन्तु वस्तुतः अग्निकी लाटें जो कि, मन्दिरमेंसे निकलती दीखती हैं। वह भूमिकी शक्तिसे निकलती है। परमेश्वरकी विचित्र रचनाका एक उदाहरण है। और यह ऐसी लाटें यहाँ ही नहीं किन्तु भूमिके अनेक स्थलोंमें है।

वहांसे चलकर श्रीगुरुजी दलहौजी धर्मशाला मनीकरन होते हुये रावल-सरमें पहुंचे। यहांपर भी एक विचित्र तमाशा देखा। कि तालाव रावल सरमें पाँच छः छोटे छोटे टिल्ले जिनके ऊपर झाड वृक्ष अनेक प्रकारके लगे हैं और वे इधरक उधर पानीमें तरते फिरते हैं। यहाँके मनीकर्णके हौदेके पानीकी शक्ति देखी कि, उसमें डालने मात्रसे चावल तथा रोटी भी पकजाती है। और ऐसा गरम है कि, उसमें हाथ भी नहीं डाला जाता इस स्थानके पण्डालोगोंको अपने सदुपदेशोंसे पवित्र करते हुए तथा उनको परमेश्वरकी भक्तिमें लगाते हुए शहर नादौन सुकेत मण्डी और कल्लू प्रान्तको निरीक्षण करते हुये चम्बा प्रान्तमें जाय विराजे। वहाँके सभी लोग शीतलादेवीका पूजा किया करते थे। उनको परमेश्वरकी भक्ति बतलाकर सन्मार्गमें लगाया। वहाँसे नादौन बिलासपुर कहलूर इत्यादि शहरोंका निरीक्षण करते हुये कीर्तिपुर जाय पहुँचे।

---

(१) झावां पाषाण जो कि, बहुत सख्त तथा हलका होता है। उसका पानी पर तरना कुछ विचित्र नहीं है। उसीपर झाडपेड भी बँधे बँधाये सभी तर रहे हैं परन्तु तुच्छबुद्धिवालोंको वह आश्चर्य्य करे हैं।यदि किसीने कृत्रिम किये हैं तो वस्तुतः उसने अपनी भावि मूर्ख वंशपरंपराके लिये जीविका निकाल दी।

(२) पदार्थविद्याके जाननेवाले लोग जान सकते हैं कि किस २ जगह कैसे २ पानी गरम या सरद होजाता है! परन्तु मूर्खोंको वही स्थल करामाती दीखने लगता है।

यहाँ पर बुढनशाह फकीरसे जो कि, प्रतिक्षण परमेश्वरहीके स्मरणमें अपना कालयापन किया करता था बकरीयोंका दुग्धही पिया करता था जाकर मिले बुढनशाह फकीर श्रीगुरुजीके मिलापसे बहुतही प्रसन्न हुआ । आपके भक्ति तथा ज्ञानके उपदेशोंको सुनकर निहाल होगया । उसी कालमें एक मटकी दुग्धकी श्रीगुरुजीकी भेंटमें अर्पण करी । परन्तु श्रीगुरुजीने उसकालमें उस खातरीको स्वीकार नहीं किया । और कहा कि इस दुग्धको हमारी इमानत जानकर अपने पास रखछोडो । कभी फिर मिलेंगे तो लेंगे । बुढन शाह फकिरने उसी कालमें उस दुग्धकी मटकीको इमानत जानकर एक उत्तम स्थलमें भूमिमें दबाकर रखछोडा ।

वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी महाशिव झील इत्यादि पर्वतीय प्रान्तोंको निरीक्षण करते हुए वैशाख शुक्ल द्वितीयाके दिन शहर पंजोरमें जो

---

(१) इस दुग्धकी मटकीका वापस लेना इतिहाससे ऐसा सुननेमें आता है कि गुरुनानकजीकी गादीपर छिवों गुरुहरिगोविन्दीजी अपने पुत्र गुरुदत्ताको साथ लेकर शिकार खेलने गये तो अकस्मात् उसी जंगलमें पहुंचे जहाँ बुढनशाह फकीर था उसकी मुलाकात भी करि और कहा कि-क्या साईं हमारी इमानत भी दोगे । बुढनशाहने पूछा आपकी इमानत क्या है । गुरुजीने कहा एक दुग्धकी मटकी फकीरने कहा वह तो गुरुनानककी इमानत है उसीको मिलेगी । गुरुजीने कहा मैं उनकी गादीपर हूं इस लिये उनका स्वरूपही समझिये फकीरने कहा मैं नहीं मानता तब गुरुजीने अपने पुत्रको इशारा किया वह झट समीपवर्ती नदीमें कूदा अपना काय पलटके गुरुनानकक कायस वाहर आया गुरु हरिगोविंद देखकर खडे होगये ओर कहा कि आइये वाबाजी उसी कालमें गुरुनानकजीके नामके साथ वावाशब्दका भी प्रचार होनेलगा गुरुजीका दर्शन करकरतेही फकीरने दुग्धकी मटकी लादी परन्तु कहते हैं कि दो सौ वर्ष पीछे उस मटकीका दुग्ध ताजाही दीख पडता था यह सभी योगीके सम्भव होसक्ता ह । अन्यथा बढनशाहका इतना काल जीना भी तो कठिन है ।

मेला भरता है उसमें पहुँचे । मेलामें अनेक लोगोंको अपने सदुपदेशोंसे कृतार्थ किया । वहाँसे शहर सपाटूके मार्ग होकर जोहडसाहिब पहुँचे । यहाँ पर एक बडा भारी मकान आपका आगमन स्मारक बन रहा है । तथा अनेक साधु सन्त वहाँ पर सदा निवास करते हैं । और हरसाल ज्येष्ठमासमें एक मेला भी वहाँ पर बडा भारी हुआ करता है । यहाँसे तीन कोस दूर पर पहाडकी दिशामें एक पर्वतकी चोटीपर जो कि समुद्रके पानीसे १९ सहस्र फूट ऊंची है वहाँ जाय बिराजे । और वहाँके रहनेवाले लोगोंसे पानीकी अत्यन्त त्रुटि सुनकर एक माही नामक भक्तके बहुत प्रार्थना करनेसे श्रीगुरुजीने अपने हाथसे पत्थर काटकर एक जगह उखाडा तो उसके नीचेसे एक सुन्दर तथा मधुर साफ निर्मल पानीका कूल जारी होगया । पानी देखकर सभी लोग आपको गुरु तथा सिद्ध पीर मानने लगे । यहाँसे तीन २ तो कोसतक दूरपर पहले पानी न तथा । इस चशमाके चारों तरफ सुन्दर पत्थरकी दीवार बनाकर तलावकी तरह पर नियत किया और उसकी खबरदारी चौरूसी उसी माही भक्तके सपुरद करी । यहाँतक कि उस तालावका नामभी माहीसर मशहूर होगया । उसी कालसे उस पहाडके लोग शिवाय गुरुनानक साहिबके और किसीको नहीं मानते । माहीभक्तकी वंशपरंपराके लोगोंके हाथसे कडाह प्रसाद (हलवा) करवाकर गुरुनानकके नामसे बाँटते हैं । उनहीमेंसे एक महापुरुष झँला नामक ऐसा सिद्ध विद्यमान है कि जिसने सहस्रों लोगोंको गुरुसिखोंका मार्ग बतलाकर सारे उस पहाडके निवासियोंको श्रीगुरुजीका अनन्य सेवक बना रक्खा है । वे लोग दाऊनवाले गुरु सुन्दरसिंह साहिब गंगोशाहीको अपना गुरु मानकर हजारों रुपयोंकी भेट उनके स्थानपर चढाया करते हैं ।

वहांसे चलकर श्रीगुरुनानकजी गढवाल जो कि अब देहरादूनके

नामसे बोला जाता है वहाँ पहुंचे । वहां मनसूरी चकरोता इत्यादि स्थलोंमें उपदेश करते हुए उत्तर काशीमें जहांपर अनेक साधु सन्त ऋषि मुनि लोग निवास करते थे पहुंचे । और इस प्रान्तके निवासी जो कि प्रायः अग्नि जलादिके पूजक तथा उपासक थे । उनको अपने सदुपदेशोंद्वारा एक परमेश्वरका मानना बतलाया । वहांसे यमुनोत्तरी तथा गंगोत्तरी श्रीनगर इत्यादि स्थलोंको देखते हुये बदरीनारायणमें जाय पहुंचे । और वहांके रहनेवाले ब्राह्मणों तथा सन्तों महन्तोंको अपने उपदेशसे सन्मार्गमें लगाकर भीमकोट नामक प्रसिद्ध पहाडपर जाय बैठे । उस सुन्दर पर्वतकी उन्नत सातों शिखरोंका निरीक्षण करके पश्चात् राणीखेत अलमोडा होतेहुये नयनीतालमें आन विराजे । और उस प्रान्तके एक जङ्गल वैरानामें जो गोरखमता नामसे स्थान प्रसिद्ध था जहांपर कनफटे योगीलोग रहा करते थे वहांपर चले गये। वे योगीलोग अपनेको सिद्ध माना करते थे उनके साथ श्रीगुरुजीका बहुत ही वाद विवाद हुआ । उन्होंने अपनी २ शक्तिका प्रदर्शन किया । परन्तु श्रीगुरुजीके आगे किसीकी शक्तिने काम न किया । अन्तमें सभी शान्त होकर बैठगये । उसी कालसे उस स्थानका नाम नानकमता प्रख्यात हुआ । और वहांपर अबतक नानकपन्थी साधु लोग निवास करते हैं । वहांसे तीस कोस आगे चलकर श्रीगुरुजी पीलीभीति प्रान्तमें एक रीठाके वृक्षके नीचे जाय बैठे । वहां भी कनफटे फकीरोंका स्थान था वे सुनकर आये । और अपनी २ सिद्धि दिखलाने लगे । परन्तु श्रीगुरुजीके सामने कुछ दिखला न सके । श्रीगुरुजीने कहा ऋद्धि सिद्धि तो परमेश्वरके नाममें है । उससे विमुख होकर तुम जहां खोजोगे सिद्धि कहीं न मिलेगी । कनफटोंने कहा परमेश्वरका नाम तो अनेक लोग जपा करते हैं सभी सिद्ध तो नहीं हो जाते । गुरुजीने कहा गुरुद्वारा जपना चाहिये । कनफटोंने कहा आपने तो गुरुद्वारा जपा है । गुरुजीने कहा हां हम तो गुरुद्वाराही जपते हैं । कनफटोंने कहा तो फिर आपही सिद्धि दिखलाइये ।

श्रीगुरुजीने कहा कि आपलोग क्या देखना चाहते हैं। कनफटोंने कहा कि इस रीठेके वृक्षको तो मीठा कर दीजिये। लोगोंके खानेमें काम आवेगा और आपकी यादगार भी रहेगी। श्रीगुरुजीने रीठेके वृक्षकी तरफ दृष्टि करी और कहा कि यह तो मीठाही है। कनफटोंने कहा है तो नहीं तुम करदो तो मानलें। श्रीगुरुजीने कहा देखो तो सही। भाई मरदानाको कहकर उसी रीठेके फल तुडवाकर साधु लोगोंमें बांटे सभीने खायकर देखे तो मधुर स्वाद मिला। साधुलोग आश्चर्य हुये और श्रीगुरुजीके सदुपदेशके अनुगामी हुये। वहांपर उस वृक्षका रीठा बहुधा अबतक भी मीठाही चला आता है। वहांसे चलकर श्रीगुरुजी शहर गोरखपुरमें पहुंचे। वहांपर अनेक लोग भूत प्रेत आदिकोंको माना पूजा करते थे उनको अपने सदुपदेशसे सच्चे परमेश्वरका मार्ग बतलाकर व्यर्थ कर्मोंसे मुक्त किया। वहांसे चलकर खांचीझील मानसरोवर कृष्णताल इत्यादि प्रान्तोंमें उपदेश करते हुये फाल्गुनमास संवत् १५७१ विक्रमीमें कोह धौलागढके मार्गसे मुल्क नैपालकी राजधानी पशुपतिमहादेवके स्थानपर जाय विराजे। उस देशके लोग अनेक अपने सदुपदेशोंसे कृतार्थ किये वहांपर अबतक भी एक गुरुस्थान आपके गमनका स्मारक विद्यमान है। उदासीन साधुलोग उसमें निवास करते हैं।

वहांसे चलकर श्रीगुरुजी लालतापटी तथा कोहपोरस्टसे होते हुये सिक्कम देशमें जाय विराजे। और उसी मुल्कके एक शहर तामलुङ्गके पास एक जंगलमें पर्वतके टीलेपर जाय विराजे।वहाँपर आसन जमाकर भाई मरदानाको शब्द गानेके लिये आज्ञा करी। और आप भी भजन गाने लगे दैवी शक्तिसे कुछ ऐसा प्रभाव पडा कि उस जंगलके दूर दूरके पशुपक्षि मृग जानवर उस शब्द ध्वनिको श्रवणकर श्रीगुरुनानकजीके आस पास आन जमाँ हुये। इस विचित्र लीलाको वहांके बहुतसे लोगोंने सुना तथा देखा तभीसे उस प्रान्तके लोग श्रीगुरुजीके

शिष्य बन गये । अबतक भी वे लोग श्रीगुरुनानकहीको मानते हैं । तथा उनहींकी कही हुई वाणीको अपनी बोलीमें बनाकर पाठ किया करते हैं ।

वहांसे चलकर श्रीगुरुजी कोह कंचन चंगा दार्जिलिङ्ग यारु इत्यादि शहरोंमें होते हुये देश भूटानमें टाशीशोडन राजधानीमें जाय विराजे । और यहां भी सिकमदेशकी तरह इनके तेज प्रताप तथा मानसिक बलको देखकर इनके सदुपदेशोंसे अनेक लोग ईश्वरके भक्त बन गये । प्रत्युत लामागुरुः जो कि सदासे इस देशवालोंका पीर तथा मुरशद माना जाता है वह भी श्रीगुरुजीके सदुपदेशोंको श्रवणकर बहुत सन्मान करने लगा । तथा श्रीगुरुजीकी वाणीको अपनी भूटानी बोलीमें उलथी करवाकर अपने पास रख लिया । उस देशके कई एक शहरोंमें अबतक भी श्रीगुरुजीकी यात्राके स्मारक गुरुस्थान मकान बने विद्यमान हैं । नानक पीरके मकानके नामसे मशहूर हैं ।

वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी जंगलके मार्गसे अनेक साधु सन्त ऋषि लोगोंको मिलते हुये शहर झोलपलटी लखीम ब्रह्मकुन्द डेरहगढ शिवपुर रानीगंज इत्यादि नगरोंको देखते हुए मिथिला प्रान्तमें शहर जनकपुर जाय विराजे । वहाँपर भी अनेक अधिकारी लोगोंको अपने

---

(१) इस लामागुरुके विषयमें वहाँके लोग ऐसा कहते हैं कि यह बहुत प्राचीन कालसे हम लोगोंका एकही गुरु है । जब पाँचसौ वर्षसे कुछ अधिक आयु हो जाती है तब वह पुरुष अपना शरीर चोला बदल डालता है । और चोला छोडनेसे पहले जिसके घर जाकर जन्म लेना हो उसका पता ठिकाना सभी बतला जाता है और निश्चय इसमें यह है । उसी कालमें अपने पिछले जन्मका सारा वृत्तान्त यथावत् सुना देता है । बचपनहीमें बडों जैसी बुद्धि तथा वार्तालापसे सबको सन्तुष्टकरता है । योगविद्याके प्रतापसे इन सभी बातोंका होना सम्भव है । अन्यथा मिथ्या है । परन्तु निर्णय करनेवाले संदिग्ध अधिकारी लोगोंको वह देश आज कल कुछ दूर नहीं है ।

सदुपदेशोंसे कृतार्थ किया। वहाँसे गण्डकी नदीको देखने चले गये। इसी नदीमेंसे गोल गोल सुन्दर पत्थर बहुतसे वैरागी लोग शालिग्राम बनाकर पूजनेके लिये लेआया करते हैं। उस नदीसे पार होकर सितामडी गोरखपुर बलिएमपुर काशीपुर बलमगढ सीतापुर इत्यादि-शहरोंमें अपने सदुपदेशोंसे लोगोंको अज्ञाननिद्रासे जगाते हुए। हरत-रहके साधु फकीरोंको मिलते हुए प्रपञ्च रचानाकी विचित्राताका विचार करते हुए शहर लोधिआ जालंधर इत्यादि नगरोंको अपने-पवित्र उपदेशोंसे पवित्र करते हुए अपनी भगिनीके स्मरणानुसार श-हर सुलतानपुरमें फिर पहुँचे। अपने सद्वचनोंसे तथा पवित्र दर्शनोंसे उस शहरके लोगोंको कुछ दिन लाभ पहुँचाकर मार्गशीर्ष मास सवंत् १५७३ विक्रमीमें शहर करतारपुरमें जो कि उन्होंने आप बसाया था चले गये। पंजाबदेशके सभी प्रान्तोंके लोग श्रीगुरुजीको अपने शहरमें आये श्रवणकर चारोंतरफसे प्रेमपूर्वक तरह तरहकी भेंट पूजा ले लेकर गुरुचरणोंमें आन प्राप्त हुये। अनेक लोग प्रतिदिन दर्शनको जाते आते हैं। श्रीगुरुजीके वचन सुन किसीके भी श्रवण नहीं तृप्त होता दर्शनकर आँखें नहीं अघाती जो पास बैठता है उठनेको मन नहीं चाहता। विचित्र प्रभाव है। विचित्र महिमा है। विचित्र शक्ति है। विचित्र ठाट है। श्रीगुरुजी अपने पाससे सिवाय सदुपदेशोंके किसीको कुछ देभी नहीं देते तो भी दिन दिन इतनी वृद्धि इतना जुटाव इतना मनुष्योंका मेला इतना भेंट पूजाका प्रसार इतनी साधु अभ्यागतोंकी जमातें इतना वैभव इतना ऐश्वर्य्य चारों तरफसे चला आता है कि, जिसका इत्थंभाव करना मनुष्यबुद्धिसे बाहर प्रतीत होता है। लोगोंकी बुद्धिहीमें कुछ उलटापन आया है जो कि, हिन्दू मुसलमान कोई भी नहीं सोचता और बिना बुलाये श्रीगुरुनानककी तरफ चारोंतरफसे दौडे चले आते हैं। अथवा श्रीगुरुनानकहीके पास कोई मोहनीमन्त्र है या जादू है या कोई देवी देवका इष्ट है जो जिसके आगे किसीकी बुद्धि काम नहीं करती। बडे बडे नास्तिकोंकी नास्ति

कता कुतर्की पुरुषोंकी कुतर्क चतुरोंकी चतुराई धूर्तोंकी धूर्तता तथा असभ्योंकी असभ्यता इस गुरुके दर्बारमें आकर एकदम शान्त होजाती है । मुसलमान या हिन्दू धनी या निर्धन भला या बुरा नारी या पुरुष मूर्ख या पण्डित ऐसा कोई भी नहीं आता जो कि, श्रीगुरुजीके अलौकिक दर्शन तथा पवित्र सदुपदेशको श्रवणकर शिष्य न बन जावे । क्या बायस है क्या कारण है कैसा खेल है कैसी घटना है कुछ विचारमें नहीं आता कारण भारी है घटना भारी है विचारशीलही इसको सोच सकता है । श्रीगुरुनानकजी अहोरात्र प्रतिक्षण सर्वान्तर्यामी परमात्माके भजन स्मरणमेंही तत्पर रहा करते थे । यदि अधिकारी लोग उपदेश श्रवणको एकत्र होवे तो सिवाय परमेश्वरके गुणानुवादके या इस जीवपर परमेश्वरके उपकारोंके प्रायः दूसरा उपदेश भी नहीं किया करते थे । स्वार्थसूचक या किसी लौकिक व्यवहारबोधक वचनोंका तो श्रीगुरुजीके दरबारसे सर्वथा अभाव रहता था।यही मुख्य कारण था कि, निःस्पृह प्रियप्राणिसमुदाय प्रतिक्षण श्रीगुरुजीके पीछेही लगा रहता था । श्रीगुरुजीके वचनामृतको पानकर लोगोंके कर्ण नहीं अघाते थे । तथा दिव्य मूर्तिके अलौकिक दर्शनसे नेत्रभी नहीं तृप्त होते थे । भेंट पूजामें जो कुछ आता था उसी वक्त बांट दिया जाता था अथवा लंगरमें डाल दिया जाता था मुसलमानोंके अत्याचारोंसे संतप्त हुये लोग श्रीगुरुजीके शान्तिमय सदुपदेशोंको श्रवणकर शान्तिको प्राप्त होते थे । तथा सदुपदेशोंके श्रवण करतेही कृत्रिम धर्मगुरुओंके बिछाये हुए अविद्याजालको तोडकर सच्चे धर्मगुरुके तन मन धनसे अनुगामी हो जाते थे । इत्यादि अनेक कारण श्रीगुरुजीके झटिति सिद्धान्तप्रचारमें प्रतीत होते हैं ।

इत्यष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

अथैकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

श्रीगुरुनानकजीकी चतुर्थीयात्रा ॥ ४ ॥

पूर्व कही रीतिसे श्रीगुरुजीने शहर कर्तारपुरमें कुछ दिन निवास किया पीछे भाई मरदानाकी प्रार्थनानुसार पश्चिम देशको यात्रा करनेके लिये चले भाई बाला तथा मरदानाको साथ लेते हुये शहर ऐमनाबाद होते हुये वजीराबादमें पहुँचे। तो वहाँ एक क्षत्रिय जातिका लडका बडे चार भाईयोंसे छोटा अतिसुन्दर सुशील तथा तारुपोपट नामसे प्रख्यात पूर्व संस्कारोंसे प्रेरित होकर अकस्मात् श्रीगुरुजीके चरणोंमें आन पडा। श्रीगुरुजीने आशीर्वाद दिया और पूछा कि लडके तू कौन है? तथा कैसे आया है? लडकेने कहा गुरुजी मैं क्षत्रिय हूं मेरा नाम तारुपोपट है और मैं मरणसे डरकर आपके पास आया हूं। श्रीगुरुजीने कहा कि, तूं अभी छोटा है तेरेको मरणेका भय कहाँसे हुआ। लडकेने कहा गुरुजी मैं घरमें बैठा था मेरी माता अग्नि जलाने लगी तो उसने पहले छोटी २ लकडी निकाल कर लगादी जब अग्नि बल उठी तब भी उसने सबसे प्रथम छोटी लकडीयोंहीको जलाया। इसलिये मेरेको भय हुआ कि; क्या जाने मौत भी पहले छोटो २ हीको जलावे। श्रीगुरुजी उस लडकेका उक्त कथन सुनकर हृदयमें बहुतही प्रसन्न हुये। उसको जन्मान्तरका अधिकारी जानकर अपने सदुपदेशसे कृतार्थ किया। श्रीगुरुजीसे उपदेश ग्रहण करताही वह लडका तृप्त होकर निरिच्छित संसारमें जीवन्मुक्त पुरुषोंकी तरह विचरने लगा।

वहांसे चलकर श्रीगुरुजी शहर गुजरातमें जहागीरशाह फकीरसे मुलाकात करते हुए कोहराहितास पर चले गये। वहांपर भाई मरदानाने कहा कि गुरुजी प्यास बहुत सताती है यहां पर पानी कहीं नहीं है। तब श्रीगुरुजीने वहाँसे एक सुन्दर पानीका चशमा निकाला। जिसको शेर

शाह बादशाहने संवत् १५९९ विक्रमीमें अपने किलेकी दीवारके भीतर कर लेनेके लिये बहुत यत्न किये परन्तु सभी निष्फल हुये । और वही पानीका पवित्र चशमा उस किलेकी दीवारके बाहर अबतक विद्यमान है। वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी टिल्ले बालगदाईके उपर पहुँचे।यह टिल्ला भूमिसे चारकोस ऊंचा बतलाते हैं। वहाँपरभी कनफटे योगीलोगोंके साथ चर्चा वार्ता हुई । इन लोगोंका उस कालमें खूब जोर था । यह लोग अपनेको सिद्ध मानते थे। परन्तु श्रीगुरुजीकी सचाईके आगे इनकी पोल खुलजाया करती थी। क्यों कि सची योगक्रियाके प्रचारका तो इनमें उच्छेदही हो चुका था। केवल उस विद्याके नामपर पेट पूर्ण करा करते थे। श्रीगुरुजीके सदुपदेशोंको श्रवण कर अनेक उनमेंसे श्रीगुरुजीके अनुगामी बनकर सत्यका प्रचार करने लग गये थे। श्रीगुरुजी उनको सन्मार्गमें लगाकर वहाँसे चलकर पिण्डदादनखां देहरा अस्माईलखां देहरा गाजीखां इत्यादि नगरोंमें अपने सदुपदेशोंके प्रचार द्वारा अधिकारी जनोंको कृतार्थ करते हुये । जमापुर राजनपुर कोटमिटनके मार्गसे हरतरहके साधु फकीरोंके साथ चर्चा वार्ता करते तथा अधिकारी पुरुषोंको सन्मार्ग बतलाते शहर सक्खरमें पहुँचे वहाँसे शकारपुर लारकाना हयदराबाद इत्यादि सिन्धु देशके नगरोंको अपने सदुपदेशोंसे निहाल करते हुये शहर कराची बन्दरमें जाय विराजे । उस कालेंमें इस सिन्धु देशके लोग प्रायः जड पूजक थे । अर्थात् पानी पत्थर या कोई माटीका देव अपने हाथसे बनाकर उसको पूजकर अपनी कल्याण चाहा करते थे। परन्तु अब वही देश श्रीगुरुजीके सदुपदेशोंसे ऐसा पवित्र भक्त तथा ज्ञानवान् बन गया है कि सिवाय एक पूर्ण परमात्माके दूसरे किसीको पहिचानता भी नहीं। सारे देशमें घर घरमें धर्मशाला बनी है । श्रीगुरुग्रन्थसाहिबके पाठ होते हैं। कथा कीर्तन भजन वाणीके पाठ होते हैं किसी एक दुर्भाग्यके सिवाय इस देशका नर या नारी बूढा या बालक ऐसा कोई भी न होगा जो प्रातः प्रथम श्रीगुरुग्रन्थसाहिबका वचन लिये विना अपने सांसारिक

व्यवहारमें प्रवृत्त हो। धन्य वह पवित्र देश है जहाँ सत्यहीका सन्मान है। तथा धन्य श्रीगुरुजीकी वाणी है जो जिसके आगे पाखण्डके टिकनेका स्थान नहीं। करांची बन्दरमें जहां पर श्रीगुरुजी जायकर विराजे थे वहांपर एक गुरुस्थान अबभी विराजमान है। और महन्त लालदास उसके प्रबन्धकारक महन्त हैं।

शहर करांचीसे चलकर श्रीगुरुजी बलोचस्तानके मार्ग होते हुये कलात आदि शहरको देखते हुये भीमपुरसे दरिया शोरसे पार होकर अम्बदेशमें जाय प्राप्त हुये धीरे धीरे उस देशके नगरोंमें अपने सदुपदेशोंका प्रचार करते हुये संवत् १५७५ विक्रमीमें खास मक्का शरीफ जा कि मुसलमानका प्रख्यात तीर्थ है उसमें जाय विराजे। रात्रिकालमें मन्दिरके मैदानमें आसन जमाकर श्रीगुरुजी भाई मरदाना तथा भाईबाला तीनों सोय रहे। उनमें श्रीगुरुजीके चरण सोनेकालमें अकस्मातही मक्का शरीफकी तरफ हो गये थे। पिछली रात्रि सोये थे रात्रि व्यतीत हुई मकान साफ करनेवाला प्रातही झाडू लेकर आया यात्रीके पाउ विपरीत देखकर बहुत खफा हुआ और कहने लगा कि खुदाके घरकी तरफ पैर करके सोये हो तुमको भारी पाप हुआ है। श्रीगुरुजीने उसको मीठा बोलकर संतुष्ट किया। और कहा कि हमतो अनजान थके मान्दे मुसाफिर हैं वास्ते जारितके आये हैं। जिस तरफ खुदाका घर नहीं है तुम उसी तरफ हमारी टांगें उठाकर रख दो। तबतक और लोग भी आन जमा हुए। एकने श्रीगुरुजीकी टांगें पकड़कर चारोंतरफ फेरी। जिधरको फिरावे उसी तरफ सामने मक्काका मकान दीख पडे वहांके सभी लोग देखकर चकित हुये। और मनमें सभी समझ गये कि यह कोई वली है। परस्पर बातचीत होते होते दिन निकले इस वार्ताकी बडी चर्चा उडी। काजीलोग भी सुनकर श्रीगुरुजीके पास मिलकर वार्तालाप करनेकी इच्छासे आये बहुत लोगोंका जुटाव हुआ। उसमें काजीरुकनदीन तथा मौलवी अबदुलरहीम इन दोनोंने श्रीगुरुजीके साथ वार्तालाप करना प्रारम्भ

किया। (काजी) फकीरसाईं आप कौन हो ? (श्रीगुरुजी) मैं मनुष्य हूं (काजी) साईं मनुष्य तो हम भी जानतेही हैं। हम तो यह पूँछते हैं हिन्दू हो या कि मुसलमान ? (श्रीगुरुजी) इस पांच तत्त्वके पुतलेमें हिन्दू मुसलमानपना बनावटी है। अर्थात् मनुष्योंका कल्पना किया हुआ है। कोई यज्ञोपवीत या चोटी राखकर अपनेको हिन्दू मान लेता है। और दूसरा शरह मुहम्मदीका पाबन्द होकर अपनेको मुसलमान जानलेता है। परन्तु परमेश्वरकी तरफसे कुछ भेद किया नहीं जाता। (काजी) यह किताब जो आपके पास है इसमें क्या मतलब है (श्रीगुरुजी) किताबोंसे अधिकारी भेदसे तीन मतलब निकल आते हैं (काजी) तीन कौन २ (श्रीगुरुजी) जो पुरुष काजी या मौलानोंके साथ बहस मुबाहसाके लिये अनेक तरहकी किताबें देखता है। वह किताबकी हड्डी चबाता है और जो लोग अपना कर्तव्य या वृद्धलोगोंकी शिक्षा उसमेंसे लाभ करते हैं वे लोग किताबका मांस खाते हैं। और जो लोग किताबोंद्वारा अपने स्वामी परमेश्वरको स्मरण करते हैं या उसको अपना आत्मारूप करके समझते हैं वे लोग असल किताबका मजा खाते हैं। इत्यादि श्रीगुरुनानकजीके जवाबोंको सुनकर काजी तथा मौलवी बहुत प्रसन्न हुये। श्रीगुरुजीकी बहुतही खातरी करी। कुछ दिन वहाँ रहकर वहांसे श्रीगुरुजी मदीनामें चले गये और वहांपर एक स्थानमें एकान्त बैठकर भजन गाने लगे। वहांके कई एक मूर्खलोगोंने शरह मुहम्मदीसे विपरीत भजनोंको सुनकर उनको गानेसे हुकमसे मनह किया। परन्तु श्रीगुरुजीने उनके हुकमकी कुछ परवाह न करी और शब्द गाते रहे। उन सब लोगोंने शहरके रईस इमाम जाफर जो कि हजरत अलीसे ग्यारहवीं वंशावलीमें हुआ है उसको जाकर सब हाल कहा। उसने भी आकर श्रीगुरुजीको कहा कि सरोद हमारी शरहमें हराम लिखा है। श्रीगुरुजीने उत्तर दिया कि जिस सरोदको शरहमें हराम लिखा है यह वह सरोद नहीं है ? इमामने कहा कि हजरत वह सरोद कौन है ?

श्रीगुरुजीने कहा जिस सरोदसे मन चंचल हो रंडी भडुए उसके गानेवाले हो वह सरोद शहरमें हराम है। परन्तु इस सरोदसे तो मन स्थिर होता है। इसके गानेवाले परमेश्वरके भक्त हैं। तथा परमेश्वरहीके गुणानुवादका गायन है। ऐसे सरोदका शरहमें निषेध नहीं है। ऐसे सरोदको तो हजरत आप भी गाते रहे तथा सुनते रहे। इस पुरुषशरीरमें चेतन शक्तिका प्रवेश भी तो सरोदही द्वारा किताबोंमें लिखा है। इस लिये प्रतीत होता है कि परमेश्वरके स्मरणमें भी यह सरोदभी चित्तको सहकारिता देता है। श्रीगुरुजीके ऐसे उपदेशयुक्त भजन सुननेसे सभी लोग मोमन बनगये। और इसतरहसे श्रीगुरुजीके साथ प्रेमसे पेश आने लगे। उसके पश्चात् श्रीगुरुजीकी वहाँके चारों 'इमामो इमामगौंस, इमामजाफर, इमामअशरफ, तथा इमामअजम' से खूब चर्चा वार्ता हुई। शेषमें वे सभी श्रीगुरुजीके पवित्र वचनोंको श्रवणकर शान्त होगये। तथा श्रीगुरुजीको अपना पूज्य मानने लगे। सभी इमाम मिलकर कहने लगे कि हे बाबानानक। जैसी तुम्हारी जबानसे निकली कलाममें वरकत तथा तासीर अलाही है अगर इसके साथ नबीका कलमा और चार यार पर इमान लाना भी होता तो तमाम दुनीयाँ तुम्हारी मुरीद होजाती। और आपको भी एक बडा रुतबा हासिल होता। तब-श्रीगुरुजीने उनको उत्तर दिया कि हमारा उस नबीके कलमा तथा चारों यारोंपर विश्वास है जो कि सदा स्थिर रहते हैं। और सारे संसारको समान रूपसे लाभ तथा आराम पहुँचा रहे हैं। यह जीव खुदाका नबी है। उसका नाम उच्चारण करना इसका कलमा है। सत्य सन्तोष दया तथा प्रेम यह चार इस नबीके यार हैं। श्रीगुरुजीकी ऐसी कल्पना सुनकर इमाम लोग बहुत प्रसन्न हुये। श्रीगुरुजीकी सेवा करने लगे।

वहांसे चलकर श्रीगुरुजी देशरूममें शयर तथा उपदेश करते हुये शहर बगदादमें जाय पहुंचे। और वहांपर एक ठिकानेपर निवासकर

भजन गानेलगे । उनको श्रवणकर पीर अबदुलकादर और मीर बहा-
वल आदि उस कालके वहांके प्रसिद्ध फकीर लोग श्रीगुरुनानकजीसे
मिलनेको आये । और परस्पर मुलाकातसे बहुत प्रसन्न हुये । धीरे
धीरे श्रीगुरुजीके गौरवका श्रोत खलीफाके जो कि, उस समय शहर
बगदादका हाकिम था, उसके कर्णमें भी पहुंचा । वहभी श्रीगुरुजीका
दर्शन करनेको आया । उस खलीफाने बडे अत्याचारोंसे दौलत जमा
करी थी । उसके सताये हुये लोग उसका सभी हाल श्रीगुरुजीको
पास प्रथमही सुना चुके थे । वह अपनी प्रजापर अति कठिनाई रक्खा
करता था । श्रीगुरुजीने उसको आता देखकर सौ पचास कंकर
बटोर रक्खा । उसने आतेही सलाम करके पूछा कि पीरजी यह
ककरें क्यों जमा करीं है । श्रीगुरुजीने कहा आपके पास इमानत रख-
नेके लिये । खलीफाने कहा कबतक पीछे लीजियेगा । श्रीगुरुजीने कहा
लेनेकी इच्छा जल्दी तो नहीं । खलीफाने कहा तोभी कबतक श्रीगुरुजी-
ने कहा क्यामतको हम वहांहि होंगे आपने वहांही लेते आना खलीफाने
कहा पीरजी क्या कयामतके दिन कुछ साथ जासकता है श्रीगुरुजीने-
कहा खलीफाजी हमने तो आगे कोई लेजाता देखा नहीं परन्तु आप अब
इतनी मेहनतसे बटोरा पैसा यहां कैसे छोडेंगे । इसलिये मनमें आता
है कि क्या जाने साथही चले श्रीगुरुजीके इस मार्मिक उपदेशको
खलीफा खूब समझ गया । और कहने लगा कि पीरजी जो आप क-
हते हैं सो सत्य है परन्तु क्या करूं मनको सन्तोष आना बहुतही क-
ठिन है । श्रीगुरुजीने कहा तुम नसीहतनामका विरद किया करो तुम्हा-
रे मनको सन्तोष होगा खलीफाने कहा बहुत अच्छा । तब श्रीरुजीने
यह नीचे लिखा नसीहतनामा खलीफाको सुनाया ।

नसीहतनामा श्रीगुरुनानकजीका ।

कीजे नेक नामी जो देवे खुदा । जो दीखे जिमीपर वह होसी फना ॥
दायम व दौलत किये बेशुम्मार । न रहेगें करोडी न रहेगें हजार ॥ १ ॥

दमडी उसीका जो खर्चे औ खाय। देवे दिलावे रजावे खुदाय ॥
होता न राखे अकेला न खाय। तहकीक दिलदानी वही वहिशत जाय॥२॥
तोबा करीजे न कीजै गुमान। हमेशा यह रहेगी तु ऐसी न जान ॥
हाथी व घोडे व लशकर हजार। कभी गर्क होतेमें लागे न बार॥३॥
दुनियाँ दिवाना कहे मुल्क मेरा। आई मौत शिरपर न तेरा न मेरा॥
केती गई देख बाजे बजा। रहेगा वही एक सच्चा खुदा ॥ ४ ॥
आया अकेला अकेला चला। चलती वक्त कुछ काम न आया भला॥
लेखा मंगीजे क्या दीजे जवाब। तोबा पुकारे न पावें अजाब ॥ ५ ॥
किया जुल्म दुनियाँ पै दमडी कमाय। न खाया खिलाया अजाई गँवाय॥
वह होंगे पशेमा करें हाय हाय। जावे जुदरगाह तो पावें सजाय॥६॥
लाँनत है उनको व उनकी कमाई। दगेबाजि करके खलक लूट खाई॥
पीये पिआले व खाये कवाब। देखो रे लोगो जो होते खराब ॥ ७॥
जिसका तु बन्दा वही न चितारा। दुनियाँके लालचमें साहिब विसारा॥
न कीती इबादित न राखियो इमान। करें नित्य जुलमी पुकारे जहाँन॥८॥
वस्ती उजाडे वें फिर न बसावे। को कि पुकारे कोई दादा न पावे ॥
हाकिम कहावे हकूमत न हो। खलका दिवाना फिरे मस्तलो ॥ ९ ॥
लुटे मुल्क आयस वं अशरत कमा। दोजखकी आतशमें आखर जला॥
कहरसे न दीखे खलके दिवाने। हमेशः न रहेगी तु ऐसी न जाने॥१०॥
शरमिन्दा न हों कुच्छ नेकी कमाय। लाँनतका जामा तु पहरे न जाय॥
गफलत करोगे तो खावोगे मार। बेटी औ बेटा कोई लेवे न सार ॥११॥
तोबा करो बहुत कीजै न जोर। दोजखकी आगी जला एगि गोर ॥
मशाइख पैगम्बर केते शाहखान। न दीखे जिमीपर उनके निशान॥१२॥
चलते कबूतर जनावर कि छांउं। केतीक होई कोई पूछे न नाँउं ॥
चाहिलगंज जोडे न राख्यो इमान। वह कारूं भी आखर हुआ पशेमान १३
न हरवक्त बन्दा इबादत विसारे। मस्ती व गफलतसे बाजी न हारे ॥
तोबाकरो हरवक्त करने गुनाह। नानक इस आलमसे तेरी पनाह॥१४

इस ऊपर लिखी नसीहतको श्रीगुरुजीके मुखसे श्रवणकर खली

फाका सखत चित्त एकदम मोम होगया। और अपनी प्रजापर जितने जुल्मसे टैक्सआदि प्रचलित कर रक्खे थे वे सभी उसी कालमें बन्द कर दिये और जो कुछ बहुतसा धन अपने अत्याचारोंसे संग्रहकर रखा था। वह सभी खजानेसे निकलवाकर शहर बगदादके दरवाजोंके बाहर गरीबोंको वांट दिया । इस वार्ताको देखकर लोग बहुतही आश्चर्य तथा प्रसन्न हुये । सभी प्रजाके लोग श्रीगुरुनानकजीको धन्यवाद देने लगे । और बहुतसे लोग उस देशमें आपके मुरीद (शिष्य) भी बन गये जब शहरका खलीफा जो कि बडा प्रसिद्ध अत्याचारी था वह श्रीगुरुजीका मुरीद होगया तो और लोगोंकी तो गणना ही क्या है । बहुतसे सत्य वादी हाजी फकीरोंके पूछनेसे ऐसा भी सुना है कि इसी

(१) वर्तमान कालमें बम्बईके चोर बाजारमें एक ८० वर्षका वृद्ध मुसलमान फकीर निवास करता है । उसके साथ मेरी एक दिन बातचीत हुई । मैने उससे पूछा—आपका देश कौन है। उसने कहा मैं बगदादमें पैदा हुआ था । बीस वर्षकी आयुमें फकीर होकर हिन्दोस्थानमें चला आया। बीस वर्ष तक पर्यटन करके इस देशके सभी प्रान्तोंका सैर करके अब चालीस वर्षसे इसी स्थलपर बैठा हूँ। मेरेसे उसने पूँछा आप कौन हैं । मैंने कहा मैं गुरुनानकजीके घरका साधु हूं । इस कथनको सुनकर उसने श्रीगुरुनानकजीकी बहुतही प्रशंसा करी। कहा कि हमारे देशके लोग भी बाबा नानकके माननेवाले बहुत हैं। बाबा नानक बडा वली हुआ है । बगदाद शहरसे सात कोस दूर पर बाबा नानकका एक भारी स्थान है। मुसलमान फकीर वहाँके मजौर(पूजारी)हैं । उसी स्थानपर एक बडा सुन्दर पानीका चशमा है। उस स्थानपर प्रतिवर्ष एक बडाभारी मेला भरता है । वह मेला नानकपीरके नामसे मशहूर है इसके सिवाय और भी बहुत स्थलोंपर उस देशमें बाबा नानकके स्थान हैं । फकीर लोग रहते हैं । सेवक लोगोंसे भेंट पूजा आती है। निर्वाह करके खुदाको याद किया करते हैं । इत्यादि उक्त वृद्ध फकीरके वचन सुनकर मेरेको निश्चय होगया कि श्रीगुरुजीके सिद्धान्तका प्रचार रूमदेशमें भी अवश्य होगा. लेखक—

शहर बगदादमें बडे भारी बागमें बाबानानकका एक मकान बना हुआ है मुसलमान फकीर उसमें रहते हैं। गुरुग्रन्थसाहिब गुरुजीकी बाणी भी वहां अरबी अक्षरोंमें मौजूद है। उस बागका नाम पीरानूपीर बाग है। वहांके मुसलमान लोग श्रीगुरुजीको नानक पीर करके बोलते हैं।

इति एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

अथ विंशोऽध्यायः २० ॥

वहांसे चलकर श्रीगुरुजी देशरूमसे होते हुये शहर जलबमें जो कि वहांकी खास राजधानी है वहां पहुंचे। वहांपर एक एकान्तस्थलमें बैठकर भजन गानेका आरम्भ करदिये। परन्तु यहांपर बादशाह पीरानूपीर मुहैय्पदीनके हुकमसे शरह मुहम्मदीके अनुसार गाने बजानेकी सर्वथा आज्ञा न थी लोगोंने श्रीगुरुजीको गानेके प्रारम्भ समेही वर्जन किया। परंतु श्रीगुरुजीका हरिकीर्तन करनेका नित्य नियम था। पीछे गायन होता सुनकर पीरसाहिब आप भी श्रीगुरुजीको गानेसे वर्जन करनेके लिये गये। परन्तु दैवयोगसे उस कालमें रागका कुछ ऐसा नियत समय बंध रहा था कि, जो सुनता वह मस्त होकर पड जाता। उस कालमें बादशाहके साथ भी वैसाही हुआ। थोडे कालके पीछे श्रीगुरुजीने जब भजन गाना बन्द किया तो पीछे धीरे २ सभी होशमें आ गये। और फिर श्रीगुरुजीसे कहने लगे कि इस जगहपर गाने बजानेकी बहुत सखत मनाही है। श्रीगुरुजीने कहा कि, हजरत मुहम्मद साहिब आपके पैगम्बर भी इस गायनको हराम नहीं समझते थे। यदि ऐसा होता तो वे अपनी बीबी हजरित 'आईशासदीका' को अपने कन्धेपर बिठलाकर ऊँट चरवानेवालोंका गायन सुनवानेके लिये न लेजाया करते। और आप भी प्रेमपूर्वक न सुना करते। इस लिये जाना जाता है कि, आपके पैगम्बर साहिबने भी परमेश्वरके गुणानुवादसम्बन्धि गाने बजानेकी मनाही कभी न करी होगी। किन्तु रण्डी

भडुओंके गाने बजाने या नाचनेकी मनाहीका होना सम्भव है जिसके सुनने देखनेके लिये लोग शरह तथा धर्मशास्त्रोंको बांधके ताकपर रख देते हैं। और निरन्तर सुनते हैं। परमेश्वरके गुणानुवाद मिश्रित गायन विद्या सर्वथा पवित्र है। इसके श्रवण करनेसे यह जीव भी पवित्र होजाता है। उसके पश्चात् श्रीगुरुजीने कुछ कालके पीछे 'लक्ष आकाशां आकाश लक्ष पातालां पाताल' इत्यादि शब्दका गायन किया। उसको सुनकर पीर मुहैय्यादीनने कहा कि, हमारे पैगम्बर साहिबने तो चौदह तबक कहे हैं। और आप लक्षों बतलाते हैं। दोनोंमें कौन ठीक है। श्रीगुरुजीने कहा जिसकी जहांतक विचार दृष्टि पहुँची उसने वैसाही कहा। परन्तु हमारेको तो परमात्माकी विचित्र रचनामें लक्षों आकाश तथा लक्षों पातल दृष्टि आते हैं। परमेश्वरकी अचिन्तनीय रचना इस जीवकी बुद्धिके विषय नहीं है। श्रीगुरुजीने पीरसाहिब तथा उनके पुत्र दोनोंको लक्षों आकाश तथा लक्षों पाताल समझा दिये। श्रीगुरुजीके इस उत्तम विचार पर मोहित होकर पीरसाहिब श्रीगुरुजीके अनुगामी बन गये। और कुछ दिन तक श्रीगुरुजीको प्रेमसे अपने पास रखा। अबतक भी पीरान्पीरके शाहजादा लोग जो कि गादीपर बैठते हैं। श्रीगुरुनानकके शब्दोंका बिरद करते हैं।

वहांसे चलकर श्रीगुरुनानकजी दयारबकरका निरीक्षण करते हुये दरिया फरातसे पार होकर शहर सवासमें पहुंचे। वहांके लोगोंमें अपने सदुपदेशोंका प्रचार करते हुये देश ईरानके शहर तुहरानमें जाय प्राप्त हुये। औ वहांके हाकिमको भी बगदादके खलीफाकी तरह अपने सदुपदेशोंसे भलाईके मार्गपर लगाकर और एक चशमा वहांपर पानीका निकाला जो कि, चरणगंगाके नामसे अबतक प्रख्यात है यहांके अनेक हिन्दू मुसलमान लोग गुरुनानकजीके मुरीद बनगये जिनकी वंशपरम्पराके लोग इस कालमें भी श्रीगुरुनानकके उपदेशपर ऐसे पक्के हैं कि वे लोग पंजाबके लोगोंको भी हंसी करते हैं। यहांतक उनका निश्चय है कि, गुरुका प्रसाद (कडाहप्रसाद)

तैयार करके श्रीगुरुजीके भोग लगानेके लिये रखते हैं यदि स्वयं उसपर श्रीगुरुजीके पंजेका आकार न खैंचा जाय तो तबतक उनको यही विश्वास होता है कि, भोग नहीं लगा कबूल नहीं हुआ अर्थात् पंजा लगनेहीसे गुरुजीको भोग लगना मानते हैं । अन्यथा नहीं। जबतक श्रीगुरुजीके पंजेका चिन्ह प्रसाद पर न लग जावे तबतक दूसरी तीसरी वार फिर फिर प्रसाद बना कर भोग लगाते हैं और प्रार्थना करते हैं जब पंजा लग जाता है तो प्रार्थना मंजुर हुई मानते हैं। अन्यथा अपनेको अपराधी मानते हैं । वहांसे चल कर श्रीगुरु-नानकजी शहर जलालाबाद पेशावर इत्यादि अनेक नगरोंमें अपने सदुपदेशोंका प्रचार करते हुये शहर हएन अवदालकी पहाडी पर विराजे उसी पहाडी पर एक वली कन्धारी नामक मुसलमान फ-कीर भी रहता था । उसके साथ कुछ चर्चा वार्ता हुई । श्रीगुरुजीने उसका अपने अमोघ वचनोंसे निरुत्तर कर दिया । जब वह श्रीगुरु-जीके वचनोंसे कायल हुआ तो उसके चित्तमें श्रीगुरुजीकी तरफ कुछ प्रेम भाव न रहा। उसके पास एक पानीका कुण्ड स्वतन्त्र था। श्रीगुरुजीने भाई बालाको पात्र देकर जल लेनेको भेजा तो उसने जल न भरने दिया। श्रीगुरुजीने अपने आसनहीके पास एक चशमा खोदा वहाँसे निर्मल सुन्दर जल निकला । और उस फकीरका वह चशमा जिसमेंसे उसने जल नहीं भरने दिया था उसी समय सूख गया। फकीरको इस वार्ताको देख कर बहुत क्रोध आया। उसने क्रोधसे एक भारी मोटा पत्थर ऊपरसे ठेल दिया। नीचे गुरुजीका आसन था। गुरुजीने उस पत्थरको आते देख कर अपने वाम हाथसे रोक दिया । वह पत्थर वहाँही ठहर गया । और श्रीगुरुजीके हाथका चिह्न उसके ऊपर अन्तःप्रवेशित हुआ । यहाँतके कि पीछे कई मुसलमानोंने खुदवाकर भी देखा तोभी उस पत्थरके भीतर पंजा जैसेका तैसा निकला । अब इस गुरुस्थानका नाम 'पंजासाहिब' है। यह स्थल पंजाबहीमें है । इस लिये अनेक लोगोंने इसका दर्शन भी

किया होगा शिष्य लोग तो बहुतसे यहाँ आते जाते रहते हैं । स्थल बहुतही दर्शनीय तथा पवित्र है.

वहाँसे श्रीगुरुनानकजी काश्मीर पुणच्छ आदि देशोंको अपने उपदेशोंसे कृतार्थ करते हुये अपने प्रेमी भक्त भाई लालुनामक तक्षकके स्मरण करनेसे फिर शहर एमनाबादकी तरफ तैयार हुए । और मार्गमें स्यालकोटमें प्रथम यात्राके परिचित मूला क्षात्रियसे भेंट करनेके लिये शहर स्यालकोटमें जाय ठहरे । मूला क्षात्रियके घर श्रीगुरुजीने पहले बालाको भेजा । कुछ खबर न मिली तो आप स्वयं गये आगे उनके घरके लोगोंने भाई मूलाको एक अँधेरी कोठरीमें छिपा रक्खा यह कहीं फकीरोंके साथही न चला जावे गुरुजीको उनके घरवालोंने कह दिया कि, वह घरमें नहीं है । परमेश्वरकी इच्छाही ऐसी थी उसी कालमें वहाँ भाई मूलाको एक बडेजहरीले सर्पने काट लिया । वह उसी कालमें वहांका वाहांही रहा । श्रीगुरुनानकजीने उस समय इस नीचे लिखे शब्दका उच्चारण किया

नाल कराडां दोसती कूडे कूडी पाई ।
मरण न जातोई मूलया आइयों कित्ते थाई ॥ १ ॥

अथार्त् करोडोंकी मित्रताका अन्तिम फल मिथ्याही होता है देखो मरण कालमें इस मूले भक्तको क्या सूझी है जो हमारेहीसे छिपकर बैठने लगा था । इसी मूला क्षत्रियकी लाशको उसके घरके लोग श्रीगुरुजीके पास उठा लाये और भूल बखशाने लगे । तब श्रीगुरुजीने कहाँ इसमें भूल किसीकी नहीं परमेश्वरकी आज्ञाही ऐसी थी इसको ले जावो और इसकी मरणक्रिया यथायोग्य करो । अब दूसरी वार श्रीगुरुजी स्यालकोटमें जहाँ विराजे थे उस गुरुस्थानका नाम बावलीसाहिबके नामसे प्रसिद्ध है बहुतही सुन्दर तथा विशाल गुरुस्थान है । उदासनि साधुलोग इसमें निवास करते हैं । कुछ जागीर भी इस गुरुस्थानके नाम पर सरकार गवर्नमेन्टकी तरफसे अर्पित है । वहाँसे चल कर श्रीगुरुनानकजी एमनाबाद आन विराजे । और

मुकाम रोडी साहिब पर जाकर ठहरे । भाई लालू तथा और भक्त लोग आपकी सेवामें हाजिर हुये । दर्शन करके सन्तुष्ट हुये श्रीगुरुजीने शहरके हाकिमोंका हाल पूछा । सभीने कहा दीनबन्धो वैसाही है जैसा आप प्रथम देखगये थे । तब श्रीगुरुजीने कहा अब हमारा वचन जो कि हम जातीबेर आगे यहाँ कहगये थे उसके पूरे होनेका समय समीप प्रतीत होता है । बादशाहबाबर समरकन्दी कश्मीरको फतहकरके इसी तरफ चला आ रहा है । और वह इनको खूब धूलिमें मिलावेगा । श्रीगुरुजी ऐसी २ बातें करते अभी शहर एमनाबादहीमें विराजे थे कि संवत् १५७८ विक्रमीमें बाबरबादशाह समेत अपनी सेनाके एमनाबादमें पहुँच गया । वहांके हाकिम पठानलोगोंने बादशाह बाबरका सामना किया परन्तु बादशाहीसेनाके आगे ठहर न सके । और श्रीगुरुनानकजीकी भविष्यत् वाणीके अनुसार सभी पकडकर कतल किये गये । बादशाही फौजने सारे शहरमें कतल करना आरम्भ किया । और जो कुछ जिसके हाथ लगा सभी लूट लिया । आगे माल पहुँचानेके लिये बहुतसे लोगोंको वेगारमें पकड लिया । उनमें भाई बाला तथा श्रीगुरुजीको भी बादशाही मनुष्योंने पकड लिया । जब सभी बेगारी लोग पकडे हुये दारोगाके पास आये तो दारोगाने श्रीगुरुजीको देखकर सलाम किया । दारोगाने श्रीगुरुजीको वहांपर प्रेमसे बिठलाया । और कहा कि हमारा बादशाह बडा फकीरदोस्त है । आपके दर्शनसे उसका दिल्खुश होगा । वह आप ऐसे फकीरोंसे बडे प्रेमसे मिलाकरता है । मेरेको भी उसीने हुकम दे रक्खा है कि कोई अच्छा फकीर नजर आवे तो दर्शन करवाना । ऐसे कहताही दारोगा बादशाहके मकानपर गया । सब हाल कह सुनाया तो बादशाहने हुकम दिया कि इसी वख्त लेते आवो । दारोगा श्रीगुरुजीको बाबरबादशाहके पास लेगया

१ इस शहरमें जहाँपर श्रीगुरुनानकजी ठहरे थे वहाँपर एक गुरुस्थान रोडी साहिबके नामसे आपके स्मरणार्थ अबतक बना हुआ है ।

बादशाहने देखतेही खडे होकर सलाम किया । औह अपने आसन पर बैठाकर अच्छीतरह दर्शन करके अपनी बोलीमें दारोगासे कहनेलगा कि दारोगासाहिब । यह बजुर्ग फकीरसाहिब करामात तो वही प्रतीत होते हैं जिन्होंने मुझको शहर गजनीके मुकामपर ख्वाब (स्वप्न) में देश हिंदोस्थानपर हमला करनेके लिये सूचना किया था और मुझको विजयलाभ करनेका विश्वास भी दिलवाया था। इन्हीके आशीर्वादसे मुझको उमेद है कि, हम दिल्लीपर अवश्य विजय लाभ करेंगे । फिर उसी कालमें बादशाहने हाथ जोडकर कहा कि मेरे लिये आप दुआ (आशीर्वाद) करें जो कि मैं अपने हमलोंमें विजय लाभ करूं । श्रीगुरुजीने श्रीमुखसे कहा बादशाह ! खुदावन्दकरीमका ऐसाही हुकम है कि, तेरा विजय होवे बादशाह खुशहोकर कदमोंमें गिरपडा । उसी कालमें एक बादशाही गुलाम बादशाह बाबरके लिये एक प्याला भाँगका बनाकर लाया बादशाहने श्रीगुरुजीको भेंट किया । परन्तु श्रीगुरुजीने पीनेसे इनकार किया । और कहा कि, हम तो उस सच्चे और पूर्ण नशेसे मस्त रहते हैं कि, जिसमें खुमारी आनेका डर या उतरनेकी भीतिभी नहीं रहती । और हरवक्त एकरस बना रहता है । वह नशा अपने परमप्यारे परमेश्वरके प्रेमका है । उसके पश्चात् बादशाहने श्रीगुरुजीकी भेटमें कुछ जवाहिरात निकालके रखी । परन्तु श्रीगुरुजीने जवाहिरातको भी कहा कि, यह पाषाण कंकर फकीरोंके किस कामका है । बादशाहका और भी प्रेम हुआ । और प्रसन्न होकर कहनेलगा कि यदि यह ईंट पत्थर आप पसन्द नहीं करते तो मैं खुद अपनेलिये देश समरकन्दसे थोडीसी भाँग लाया हूं इसको तो नजरमें स्वीकार कीजिये । तब श्रीगुरुजीने नीचे लिखे शब्दका उच्चारण किया ।

भंग धतूरा सुरापान उतरजाय परभात ।
नाम खुमारी नानका चढी रहे दिनरात ॥ १ ॥

श्रीगुरुजीने कहा आपकी भाँग मेरे किस कामकी है । बादशाहने

कहा हमको तो कुछभी भेंट देना वाजिब है। ऐसा कहकर अपने नौकरके कपडेमेंसे बादशाह आप अपने हाथसे भाईबालाके कपडेमें मुट्ठेभर २ डालने लगा। उस नौकरकी लाईहुई भांगकी बादशाहने सातमुट्ठी भरके डाली तो श्रीगुरुजीने प्रसन्न होकर कहा बादशाह ! बस अब और नहीं चाहिये। बादशाहने उसी वख्त अपना हाथ हटालिया और प्रेमपूर्वक श्रीगुरुजीके मुखकी तरफ देखने लगा। श्री० गुरुजीने उसको सातमुट्ठी भंगपर प्रसन्न होकर सातपीढीतक राज्य करनेका आशीर्वाद दिया।

वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी शेखसरवरके पास पहुँचे। उसको अपना प्रेमी भक्त जानकर फकीरीका मार्ग बतलाया। कुछ अपनी कृपादृष्टिसे उसको मानसिक शक्तिभी प्रदान करी। वहाँसे चलकर सांहोवालादि ग्रामोंमें उपदेश करते हुये संवत् १५७९ विक्रमीमें अपने शहर करतारपुरमें चले आये शहर इसफहान तथा नीरी आदिको देखते हुये देश अफगानस्तानके समीप शहर हिरातमें जाय विराजे। वहाँके लोग आपके परमेश्वर सम्बन्धि भजन कीर्त्तन सुनकर ऐसे मोहित हुये कि रातदिन अनेक लोग पासही बैठे रहा करें अच्छे २ घरके काम काजको छोडकर श्रीगुरुजीकी सेवामें हाजिर रहने लगे। धीरे २ उनकी खबर वहाँके बाको नामक हाकिम जो कि चंगेरखानकी वंशपरंपरामें था पहुँचा। वह भी सुनकर श्रीगुरुजीकी सेवामें आन हाजिर हुआ जिस कालमें यह श्रीगुरुजीके पास आया है तो उस कालमें श्रीगुरुजी नंगेशिर बैठे थे। उसने अपना ताज उतारके आपके आगे रख दिया कि पीरजी इसको पहरिये। श्रीगुरुजीने

---

(१) सखिसरवर एक मुलमान जाट था। श्रीगुरुनानकजीकी कृपासे यह भी करामाती होगया था मुकाम नगाहाधौंकलमें इस फकिर तथा-गुरुनानकजी दोनोंके स्मरणार्थ मकानात (मन्दिर) बनेहुये हैं। वहाँ पर सखी सुल्तानक नामसे मेलाभी अबतक भरता है।

कहा कि हम नंगे शिर नहीं हैं जो कुछ पहरें । किन्तु चार तरकोंकी टोपी सदा पहरे रहते हैं । हाकिमने पूछा पीरजी वे तरकें कौन हैं । श्रीगुरुजीने कहा तरक दुनियाँ, तरक दरोग, तरक दगाबाजी, और तरक तरक अर्थात् संसारके पदार्थोंसे हम बहुत सम्बन्ध नहीं रखते । मिथ्या वादभी नहीं करते प्रपञ्च भी नहीं करना चाहते । हमही बडे त्यागी हैं इत्यादि इन सबके त्यागका अभिमान भी हम नहीं करते । इन चारों तरकोंकी मिलीहुई टोपी हमारे शिरको सदा अच्छा दे रहती है । इत्यादि अनेक तरहके श्रीगुरुजीके सदुपदेशोंको श्रवण-कर हाकिमका चित्त बहुतही नर्म होगया । श्रीगुरुजीका मुरीद बनकर प्रजापर सभी सख्तियाँको दूरकर सन्तानकी तरह पालने लगा । वहांसे चलकर श्रीगुरुजी जंगलके मार्गसे अनेक अच्छे २ जंगलोंको देखते हुये बुखारा प्रान्तके शहर खुबारजममें आन विराजे । यहांपर भाई मरदानाने श्रीगुरुजीसे कहा कि गुरुजी मैं आपका बहुतही उप-कार मानता हूं जो आपकी कृपासे मैंने अपना जन्म सफल कर लिया । दीन या दुनियांका कोई काम ऐसा बाकी न रहा जो कि मेरा आपके प्रतापसे न हुआ हो । आपके प्रतापसे मैंने हजारों रुप-या अपने घरके कामोंमें खर्च किया । आपकी कृपासे मैंने सारा ज-मानका सैर करलिया । आपके प्रतापसे बडे राजे महाराजे तथा पीरों फकीरोंसे मेरी भी भेंट हुई । आपकी कृपासे मेरेको दुनियांकी सभी न्यामतें हासिल हुईं । अन्तमें आपकी परम कृपासे मेरा मक्के-शरीफका हज्जका मनोरथ भी पूरा हुआ । आपकी कृपा आपका प्रेम आपका उपकार तथा आपका दीनपालन मेरे मनसे कोटि जन्म धारके भी भूलनेवाला नहीं है । आप मैं दासपर अनुग्रह रखते रहियेगा यदि कोई इस दासानुदास खाकसारसे कोई अपराध भी आपकी सेवामें हुआ हो तो आप क्षमा कीजियेगा। श्रीगुरुजीने पूछा कि भाई मरदाना वार्ता क्या है । मरदानाने कहा गुरुजी मेरा चित्त अब इस असार संसारसे उखड चुका है और मृत्युका सन्देशा भी आ-

चुका है, इस लिये उमेद है कि कल दोपहरको मैं इस दुनियाँको छोड जाऊंगा। श्रीगुरुजीने प्रसन्न होकर कहा भाई मरदाना जो कर्तारकी इच्छा। और तेरेको परमेश्वर चित्तआवे। अगले दिन दोपहरको वैसेही हुआ। एक दोघटिका प्रथम भाई मरदाना चादर तानकर सो गया देखा तो शरीर शून्य पडा है। और भाई मरदाना परलोकमें प्रयाण करगया है। श्रीगुरुजीने भाई मरदानाकी वहांपर यथायोग्य शरीरक्रिया करवाई। और वहांसे चलकर काबुल कन्धारादि शहरोंमें उपदेश करते हुये शहर लोहगढमें आन विराजे। इस स्थानको उत्तम देखकर कुछ दिनतक वहांपर विश्राम किया। वहांपर निवास करके कुछ दिनतक अपने सदुपदेशोंसे आने जानेवाले अनेक भक्त लोगोंको निहाल किया, थोडे दिन पीछे कार्तिक मासके १३ संवत् १५९० विक्रमीमें श्रीगुरुजीकी माताका अन्तकाल होगया। और उसके बीस दिन पश्चात् श्रीगुरुजीके पिता कल्याणराय भी परलोक प्रयाण करगये उसके पश्चात् श्रीगुरुजी अपने स्थानसे चलकर शिवरात्रिका मेला देखनेके लिये शहर अचल बटाला जिला गुरुदास पुरमें आन विराजे वहांपर कनफटे साधु लोगोंसे योगाभ्यासके विषयमें एक गाढ असाधारण चर्चा हुई। जिसका पूर्ण वृत्तान्त ग्रन्थ सिद्ध गोष्टीमें सविस्तर लिखा है। मेलामें अनेक लोगोंको अपने सदुपदेशोंसे कृतार्थ करके वहांसे चलकर श्रीगुरुजी गंगाजीके तीरपर हरिद्वार आन विराजे। वहां पर अनेक पण्डालोग पूर्व दिशाकी तरफ मुख करवाकर अनेक लोगों से तर्पण करवा रहे थे श्रीगुरुजीने अपना मुख पश्चिमके तरफ करके उसी तरह हाथसे पानी उछालना प्रारम्भ किया। पण्डा लोग देखकर कहने लगे कि बाबा! यह क्या कररहे हो। श्रीगुरुजीने कहा कि जो कुछ तुम लोग करते हो। पण्डोंने कहा कि हम तो लोगोंसे पितरोंको पानी दिलवाते हैं। श्रीगुरुजीने कहा कि हम भी अपना खेत सिंचन करते हैं। पण्डोंने कहा खेत कहां है। श्रीगुरुजीने कहा करतारपुरमें है। पण्डोंने कहा कि यहांका जल वहां कैसे पहुंचेगा। श्री-

गुरुजीने कहा कि जैसे सब लोगोंका पितरोंको पहुंचेगा वैसे मेरा भी पहुंच जायगा । पण्डालोगोंने कहा कि बाबा यह तर्पणका दिया हुआ जल तो सूर्य्यकी किरणों द्वारा पितृलोकमें पहुंच जाता है। श्रीगुरुजीने कहा हमारे खेतमें भी सूर्य्यकी किरणकी रुकावट नहीं है पण्डालोग श्रीगुरुजीके उचित वचन श्रवणकर चुप होगये । और आपको सिद्ध बाबा मानकर पूजने लगे । श्रीगुरुजीने उनको सन्मार्ग का उपदेश किया । परमेश्वरके भजन कीर्तनमें लगाकर सबकी कृपण दीन हीन प्रकृतिको अपनी कृपा दृष्टिसे पलट दिया ।

वहांसे चलकर श्रीगुरुजी देशमालवाका निरीक्षण करते हुये तथा अपने सदुपदेशोंसे सुबुद्ध करते हुये फिर अपने नियत स्थान शहर करतारपुरमें आन विराजे । और शेष आयु इसी शहरकी एक विशाल धर्मशालामें क्षेपण करी यद्यपि श्रीगुरुनानकजी बहुतही स्वतंत्र प्रकृतिके महापुरुष थे इसलिये जहां तहां भी उनके नित्य कृत्यका व्यत्यास होना या किसी एक अंशका असम्भव होना सर्वथा दुर्घट है । तथापि यात्रामें किसी सिद्ध योगीके सिवाय और ऐसा कोईभी प्रतीत नहीं होता कि जिसकी साधारण कृत्यमें न्यूनता न आवे । इसलिये उभयमतमें उभय काल साधारणी श्रीगुरुनानकजीकी यहांपर अतिस्वल्प दिनचर्य्या भी दिखलानी उचित है । प्रातःकाल सदा रात्रिके चतुर्थ अंश शेषरहे श्रीगुरुजी शयनासनसे उत्थान हुआ करते । उसी कालमें शौच स्नानादि क्रियाको करके एकान्तस्थलमें ध्यानावस्थित होते । एक प्रहर दिन चढेके पश्चात् ध्यानसे उत्थान होकर दो घटिका सदुपदेशका प्रचार । पश्चात् जो कोई दर्शनके लिये आवे उसका यथायोग्य आश्वासन । पश्चात् भोजनार्थी कोई अधिकारी निराश न जावे इस कृत्यके लिये पाकशालामें विशेष दृष्टि । पश्चात् यावत् अन्नके अधिकारी जीवोंकी यथायोग्य पंक्ति बान्धकर सबको समान भोजन । पश्चात् एकान्तमें ईश्वरके गुणानुवादका गायन । उसके पश्चात् सभा लगाकर परमेश्वरके गुणानुवादोंका रागविद्या मिश्रित

उच्चारण। उसके पश्चात् भाई मरदानाके शाहजादा तथा रजादा नामक दोनों पुत्रोंका भजन कीर्तनका श्रवण उसके पीछे फिर सदुपदेशका प्रचार । सभाविसर्जन । शौच स्नानादि क्रियाके अनन्तर एकान्तमें ईश्वराधन । रात्रिकालकी यथायग्य समभावसे भोजनपंक्ति । रागविद्याद्वारा हरिकीर्तन यथायोग्य सब शिष्य मण्डलीका आश्वासन। एकान्तवास । यह अष्ट प्रहरकी चर्य्या है ऐसेही प्रतिदिनका प्रवाह था वही प्रवाह अबतक भी अनेक स्थलोंमें गुरुस्थानोंमें तथा गुरुजीके घरके प्रतिष्ठित महापुरुषोंमें जैसेका तैसा चला आता है ।

किसी २ दिन श्रीगुरुजी ग्रामसे बाहर जंगलस्थलमें परमेश्वरकी विचित्र रचनाका विशेष भाग देखनेको चले जाते । एकदिन अकस्मात् भाई बालाको साथ लेकर शहरसे बाहर जंगलमें गये तो एक बूढा नामक लडका रमदास शहरका जो कि दोकोश पर पासही था बकरी गौ चराता हुआ प्रेमसे श्रीगुरुजीके पास आन बैठा । और बात चीत करने लगा लडकेने कहा कि, बाबाजी थोडेदिनोंकी बात है कि, पठान लोग हमारा धन माल सभी कुछ छीनके लेगये परन्तु हम कुछ न करसके । उनके हाथको कोई न रोकसका । उसीदिनसे मेरे मनमें ऐसे आता है कि जब एक मनुष्य दूसरे अपनेसे अधिक बलवाले मनुष्यका हाथ नहीं रोक सकता तो सर्वसे अधिक बली जो काल उसके हाथको रोकनेकी किसीको सामर्थ्य है । मेरेको तो कोई प्रतीत नहीं होता यदि आपके विचारमें कोई होय तो कृपाकरके बता दीजिये । श्रीगुरुनानकजी उस लडकेकी ऐसी २ बातें सुनकर बहुत प्रसन्न हुये और कहने लगे कि भाई लडके तू तो बूढोंकीसी बातें करता है । यदि तुमको कालका भय होय तो कालके कालरूप सर्वान्तर्यामी परमात्माका स्मरण कियाकर । संसारके धंदोंको छोडकर तू परमेश्वरका परायण होगा तो परमेश्वर तेरी सहायता करेगा । श्रीगुरुजीके सदुपदेश तथा कृपा

दृष्टिसे उस लडकेके चित्तमें परमेश्वरका प्रेम उत्पन्न हो आया । और वह संसारके सभी कार्य्योंको परित्याग कर श्रीगुरुनानकजीकी सेवामें प्रतिक्षण नियत रहने लगा । और 'बाबाबूढा सिद्धपुरुष' इस नामसे प्रख्यात हुआ । यह महापुरुष सवासौ वर्षकी आयुः भोगकर संवत् १६८८ विक्रमीमें गुरुनानककी गादीपर छठवें गुरु श्रीगुरुहरिगोविंदसाहिबजीके समयमें परलोकमें प्राप्त हुआ है जवतक यह जीवितरहा है तबतक श्रीगुरुके घरके गादी तिलकादि विशेष कार्य्य इसीके हाथसे हुआ करते थे,। इसके पीछे इसकी वंशके लोगोंसे भी जवतक गुरुगादी चली वैसाही होता रहा । इसी तरहसे श्रीगुरुनानकजीकी सेवामें भाई मूलचन्द भाई लालु भाईपृथी मल्ल इत्यादि अनेक रहा करते थे । इनमें कोई लंगरकी सेवामें करा करता था । कोई आये गये राही मुसाफिरोंको खान पान पहुँचाया करता था । कोई अपने प्रेमसे स्थानपर झाडू दिया करता था । कोई बर्तन मला करता था कोई पत्तल उठाया करता था इत्यादि अनेक तरहके कार्य्योंपर अनेक तरहके प्रेमीभक्त बँटे हुये स्वयं सेवा किया करते थे इन सबपर श्रीगुरुजीकी ऐसी कृपा हुई थी कि ये सभी करामाती सिद्ध तथा आत्मज्ञानी सच्चे साधुपदको प्राप्त होगये थे । ये पद सभी सच्चेगुरुकी निष्काम सेवा भक्तिके हैं। किन्तु ठाकुरका भोग बेंचकर पेट भरनेवाले साधारण पुरुषोंको नहीं। ऐसे ही श्रीगुरुजीके सेवकोंमेंसे एक लहना नामक त्रेहन जातिका क्षत्रिय जो कि बहुतसे अपने साथी लोगोंके साथ वैष्णव देवीके दर्शनको जा रहा था मार्गमें श्रीगुरुजीकी प्रख्याति श्रवणकर आपके दर्शनका लाभ उठानेके लिये भी आया । देवीके अनेक यात्री श्रीगुरुजीका दर्शन करके फिर आगे देवीके दर्शनको भी गये परन्तु उस लहनाके मनमें श्रीगुरुनानकजीके सदुपदेशोंका ऐसा प्रभाव हुआ कि उसने आगे देवीकी यात्रा बन्द रक्खी । और श्रीगुरुजीकी सेवाहीमें रमगया संस्कारोंके प्रभावसे वह ऐसा सेवक निकला कि श्रीगुरुनानकजीका स्वान्त उसकी सेवा देखकर आकर्षित हुआ । और श्रीगुरुनानकजीने

अपने चित्तमें पूरीतरहसे विचार लिया कि हमारे पीछे हमारे उद्देशके अनुसार कार्य्य करनेवाला सिवाय इसके दूसरा कोई न होगा।

इति विंशोऽध्याय ॥ २० ॥

अथैकविंशो ऽध्यायः ॥ २१ ॥

श्रीगुरुनानकजीके श्रीचन्द्र लक्ष्मीचन्द्र नामक दोनों पुत्र भी उस कालमें सुयोग तथा प्रतिष्ठित थे। इसलिये उनकी मातानें चाहा था कि पिताकी गादी किसी एक पुत्रहीको मिलनी उचित है न कि किसी परायेको। परन्तु गादीके व्यवस्थापक श्रीगुरुनानकजी चित्तमें जानते थे कि यह गादी कोई गुरु बनके लोगोंके लूटलूट खानेकी नहीं है जो वंशपरपरामें रखी जाय किन्तु देशकी एकतरहकी सेवा बजानेके लिये यह गादी यत्नसे स्थिर करी गई है। इसलिये अवश्य किसी अधिकारी पुरुषहीको मिलनी उचित है। उसकालमें और भी बहुतसे अच्छे २ बिचारशील लोगोंने श्रीगुरुजीको किसी एक पुत्रहीके गादीपर बिठलानेकी संमति दई। परन्तु श्रीगुरुजीने उनके विचारोंको दूरदर्शी न जानकरके न स्वीकार किया। श्रीगुरुजीको बहुतसे शिष्य लोग पुत्रोंके गादी देनेकी बातचीत करते तो श्रीगुरुजी उनको यह उत्तर देते कि पुत्र हमारी आज्ञाका पालन नहीं करते। वस्तुतः दोनों पुत्र पिताके परम आज्ञाकारी थे तथापि उचितानुचित्त लाघव गौरव इत्यादिका विचार करके कार्य करनेवाले बुद्धिमान् थे। पिताकी आज्ञाके अनुसार जो कार्य अपने करनेके योग्य जानते आप करते। अन्यथा नौकरसे करवा देते। परन्तु श्रीगुरुजीको यह वार्ता उनकी अच्छी न प्रतीत होती। अनेकवार परीक्षण करके श्रीगुरुनानकजीने अपने स्थानपर नियत करनेके लिये लहना भक्तकोही सोचा। कैसे परीक्षण किया था उसका प्रकार आगे दिखलावेंगे। यहाँ पर केवल इतनाही कहना है कि श्रीगुरुनानकजीने उस लहने सेवककी सेवापर प्रसन्न

होकर गादी देनेसे प्रथमही उसको अपने शिष्य मण्डलमें प्रख्यात कर दिया था कि पीछेसे कुछ किसी तरहका विवाद न होने पावे। ऐसेही श्रीगुरुनानकजीने अपने सदुपदेशोंसे तथा अपने शुभाचरणोंसे उस कालमे इस अबुद्ध पंजाव देशपर ऐसी कृपा करी कि मानों डूबतोंको नौका मिली मरतों पर अमृतकी वर्षा हुई। इत्यादि श्रीगुरुजीके परोपकारोंको विचारते हुये पंजाबदेशके सभी लोग समान रूपसे श्रीगुरुनानकजीके घरको स्वाभाविक मानने लगे। इसी तरह श्रीगुरुनानकजी अपने सदुपदेशोंका देश मात्रमें प्रचार करके संसारी जीवोंको अपने सद्वचनोंसे लाभ पहुँचा कर तथा लहना अपर नामक गुरु अंगदको अपने स्थानपर स्थापनकर आप ६९ वर्ष १० मास १० दिनकी आयुः भोगकर आश्विन वदी १० संवत् १५९५ विक्रमीमें परमधाम पधारे। आपके पीछे हिन्दू मुसलमान दोनोंका विवाद हुआ। हिन्दू लोग कहें कि हम जलावेंगे। मुसलमान कहे कि हम दबावेंगे। शेषमें शरीर तो किसीको मिलाही नहीं अर्थात् स्वयंही भूतोंमें समाय गया किन्तु एक चादर जो कि दोपटहीकी थी जिसको ओढकर आप विराजे थे उसका एकपट हिन्दूलोगोंने जलाया। और दूसरा पट मुसलमान लोगोंने दबाया। जहाँपर हिन्दू लोगोंने जलाया था वहाँपर दूसरी वार संवत् १८२८ विक्रमीमें सरदार सदासिंह सरदार गुरुबखससिंह जाट जातिके शिष्य लोगोंने अपना धन लगाकर एक बडा दर्शनीय सुन्दर देहरा बनवाया है। जिसका दर्शन करने अनेक शिष्यलोग जाते हैं। और सालके साल मेला भी वहाँपर भरता है।

श्रीगुरुजीके परमधामप्रयाणके पश्चात् श्रीगुरुजीके छोटे पुत्र लक्ष्मी चन्द्रजी करतारपुरसे उदास होकर पक्षोके नामक ग्राममें कुछ भूमि खरीद कर वहाँ निवास करने लगे। वहां भी उन्होंने एक श्रीगुरुनानकजीका देहरा बनाया। ओर प्रयत्नसे उसको देहरा बाबानानकके नामसे प्रख्यात किया। इसीको फिर संवत् १८८९ विक्रमीमें चन्द्र-

लालके चाचा दीवान नानकचन्द्रने बहुतसा रुपया खर्च करके एक बडा भारी दर्शनीय देहरा बनवा दिया। जिसको महाराजा रणाजित-सिंहने अपनी समयमें फिर संगमरमर स्वर्ण चांदीसे औरभी सुभूषित किया। इन दो मकानोंके सिवाय और भी कई एक स्थलोंमें वेदी साहिबजादोंने भिन्न २ गुरुनानकके देहरे बनाये थे। परन्तु इन प्रसिद्ध दो स्थानोंके नाम तो अबतक भी सरकार गवर्नमिंटकी तरफसे कुछ माफी जागीर है। यहांपर वैशाख मासकी संक्रान्तिके दिन बहुत भारी मेला हुआ करता है। हजारों रुपयोंका धन धान्य पूजामें चला आता है। वर्तमान कालमें उदासीन साधु महन्त भगवानदास इस स्थानके पूजारी हैं। ऐसे तो संसारके सभी मतमतान्तरवालोंने अपने २ पूर्वज धर्मप्रवर्तकोंकी ऐसी प्रशंसा कर रखी है कि जिनके आगे कोई शब्द शेषही नहीं जो कहाजावे। और हरएक पुरुष अपने सिद्धान्तको निर्दोष ठहराकर दूसरेके मतको दूषित किया करता है। परन्तु यदि मत मतान्तरकी खैंचको दूर करके न्यायकी दृष्टिसे देखा जावे तो अवश्य यही कहा जा सकता है कि श्रीगुरुनानकजी जैसा सत्यवादी सर्व प्रियकारक सदुपदेशक न्यायशील ईश्वरानुरागी तथा परोपकारी महापुरुष दूसरा अभीतक इस दुनियाँके ऊपर नहीं आया होगा। दूसरे मतवाले या दूसरे देश-वाले दूसरे मतके प्रचारककी प्रशंसा कदापि नहीं करते तथा उसको पूज्य बुद्धिसे नहीं देखते परन्तु श्रीगुरुनानकजीके विषयमें अनेक विदेशी यूरोपियनोंकी तथा अनेक विदेशी या विपरीत सिद्धान्तवाले मुसलमानोंकी ऐसी पूज्य बुद्धि है कि जिसको बांचकर श्रीगुरुनान-कजीके गौरवके पूरा उदाहरण मिल सकता है।

इतिहासबकायाहिन्दके लिखनेवाला शहर अमृतसरका कामिश्नर श्रीमान् कस्टमसाहिब तथा मौलवी गुलाम मुहम्मदसाहिब इत्यादि अनेक इतिहासोंके लेखक तथा जाननेवाले लोगोंने पक्षपात छोडकर जितनी श्रीगुरुनानकजीकी प्रशंसा लिखी है। उतनी और किसी पीर

पैगम्बर या अवतारकी भी नहीं लिखी है। वस्तुतः और पीर पैगम्बर या अवतारोंके उपदेश अपने स्वार्थसे पूरित तथा इस देशके विघातक थे। यद्यपि श्रीगुरुनानकजीका हार्दिक भाव क्या था इसका पूरा पूरा प्रतिबिम्ब तो उनके पाणी श्रीगुरुग्रन्थसाहिबके आद्योपान्ता बाँचने-हीसे मिल सकता है । तथापि अधिकारी पुरुषोंके सूचन करनेके लिये स्थालीपुलाक न्यायसे प्रसंग प्राप्त कुछ शब्द उनके-यहाँ पर भी लिखने अनुचित न होंगे । हिन्दू लोगोंमें प्रायः यह सर्वत्र प्रचार है कि जिसके घरमें लडका लडकी पैदा हो या जिसके घरमें कोई मर-जावे उसके घर भरमें बारह तेरह दिन सूतक या पातक लग जाता है। अर्थात् जन्मके घर सूतक तथा मृत्युवाले घर पातक हो जाता है। तात्पर्य जिससे यह निकलता है कि जबतक सूतक या पातक घरमें रहे तबतक वह सारा घरही अपवित्र हो जाता है । अर्थात् किसी शुचि पुरुषके अन्न जल ग्रहण करने योग्य नहीं रहता। एक-बार ऐसाही प्रसंग हुआ एक श्रीगुरुनानकजीके प्रेमी भक्त धनी पुरुषने ब्राह्मणभोजन किया। दैवात् उन दिनोंमें श्रीगुरुजीभी उसके ग्रामही-में थे इसलिये इनको भी उस धनीने प्रार्थना पूर्वक बुलाया । पाँच-सौ ब्राह्मणका जुटाव था। सभी मिलकर आये। पंक्तिके क्रमसे सभी अपने २ स्थान पर विराजे धनीने चरण धोकर पत्तल परोसी जब पंक्तिके भोजन करनेका समय हुआ तो उसीकाल उसकी स्नुषा (पुत्रपत्नी) प्रसव होगई। धनीके घर पौत्र आया । घर यद्यपि एकही था तथापि प्रसूतिगृह अलग था। सभी ब्राह्मणोंने सूतकके अशौचसे सशंकित होकर धनीका भोजन छोड दिया। धनीने बहुत प्रार्थनाभी करी परन्तु ब्राह्मणलोगोंको वर्तमानकी तरह उस कालमें कुछ भोजनकी त्रुटि न थी । इसलिये एक दूसरके मुखकी तरफ देखकर सभी उठ खडे हुये। उस विचारे धनीकी किसीने भी न सुनी। ब्राह्मण लोग शिरोंपर पगडीयां धरके जैसेके तैसे अपने घरोंमें चलेगये तो पीछे धनीने श्रीगुरुजीको माई बालासहित भोजन कर-

वाकर पूछा कि गुरुजी अब कैसा करना उचित है । श्रीगुरुजीने कहा हे भाई अन्नका अधिकारी प्राणी मात्र है । जो आगे आये पवित्र अन्नका तिरस्कार करता है । वह अपने जीवनको तिरस्कार करता है । तू अभी ग्रामके गरीब अभ्यागतोंको बुलाकर बाँटदो तुम्हारा उससे भी दशगुणा फल होगा धनीने श्रीगुरुजीके कहने पर वैसेही किया तरहतरहका भोजन पायकर गरीब अभ्यागत लोग बहुत प्रसन्न हुये। और धनी भी उन लोगोंके आशीर्वाद सुनकर प्रसन्न हुआ। पीछे एकान्तमें बैठकर श्रीगुरुजीसे पूछने लगा कि श्रीगुरुजी यह सूतक क्या था जिसने सभी ब्राह्मणोंको एक दम उठा दिया । तब श्रीगुरुनानकजीने नीचे लिखा शब्द बोला ।

जेकर सूतक मनीऐं सबते सूतक होय ।
गोहे अते लकड़ी अन्दर कीडा होय ॥
जस दासो अन्नक जीयाँ बाँझ न कोय ॥
पहला पानी जीव है ।जित हरयासब कोय ॥
सूतक क्योंकर राखीये सूतक पवे रसोय ।
नानक सूतक इउं न उतरे ज्ञान उतारे धोय ॥
मनका सूतक लोभ है जिह्वा सूतक कूड ।
अखींसूतक देखना पर त्रिया पर धन रूप ॥
कनीं सूतक कँनपै लाय तवारी खाय ।
नानक हंसा आदमी बद्ध यमपुर जाय ॥
सबो सूतक भरम है दूजो लागे जाय ।
जमण मरणा हुकुम है भाणे आवे जाय ।
खाण पीणां पवित्र है दितो ने रिजक सबनाह,
नानक जिनीं गुरुमुख बुझया तिनीं सूतक नांह ॥

अर्थात् वास्तवमें सूतक पातक कोई वस्तु नहीं है । यदि माना-जाय तो सूतक या पातकस कोई पदार्थ खाली नहीं है । क्यों कि गोबर तथा लकडीमें भी तो जीव उत्पन्न विनाश होतेही रहते हैं ।

सभी अन्नके दानेभी जीवयुक्त हैं । सबसे प्रथम पानीही जीव है । सूतक या पातकको जीव वारण नहीं करसकता क्यों कि वह तो भोजनकी प्रत्येक सामग्रीमें अनुगत है । हाँ इतना अवश्य है कि यह सूतक पातक आदिकी कल्पना अज्ञानपूर्वक है । ज्ञानद्वारा इस सूतक पातकका विनाश होसकता है । और यदि वास्तव सूतकका विचार करें तो मन सदा लोभरूप सूतकसे अपवित्र रहता है । जिह्वा मिथ्या भाषणसे अपवित्र रहती है । नेत्र परस्त्री आदिके रूप देखनेसे अपवित्र बने रहते हैं । श्रोत्र परनिन्दा या परकी चुगली श्रवणसे अपवित्र रहते हैं । बस इन सूतकोंसे अपवित्र पुरुष हंस जैसा स्वरूपभी हो तो भी यमपुरीको जाता है । यह लोगोंने जो मान रखा है इनका सूतक पातक सब भ्रममूलक है । क्यों कि यह लोग द्वैतमें भूले हुये हैं । जीवोंका जन्म या मरण तो परमेश्वरकी आज्ञानुसार है । उनके जन्म या मरणसे खाने पानेकी वस्तु कदापि अपवित्र नहीं होती । परमात्माने सबको जीविका भिन्न २ दई है । जो जबतक जीता है या उत्पन्न हुआ है वह दूसरेकी जीविकाका बाधक नहीं है । श्रीगुरुनानकजी कहते हैं कि जिन पुरुषोंने गुरुमुखद्वारा निर्णय किया है उनको तो कदापि कोई सूतक या पातक लगताही नहीं ॥

ऐसेही जब धीरे २ योगविद्याका इसदेशसे विनाश हुआ तो उस विद्याके नामसे भी अनेक वञ्चक लोग संसारको लूटलूटकर खाने लगे । गलम कफनी हाथमें दण्डा मुखपर भस्म शिरमुण्डित एक बजानेके लिये हाथमें शृंग बातचीतमें कुशल आसन श्मशान भूमिहीमें लगाना जब लोग आवे तो आँखें मीचकर बैठजाना एक जगह बहुतदिन पोल नहीं चलती इसलिये सदा घूमते रहना भूमि मात्रके तीर्थोंका नाम लेना कि हम सब परस आये हैं । इत्यादि बनावटी वेषसे अज्ञात लोगोंको धोखा देनेवाले अनेक फिर रहे थे । ऐसाही एक श्रीगुरुजीके पासभी आन पहुँचा योगविद्याकी गप्पें मारने लगा अनेक श्रद्धालुलोग उस योगीका दर्शन करके तथा बातें सुनके

विस्मित हुये । तो श्रीगुरुजीने उस झूठे योगी तथा लोगोंके हितके लिये नीचे लिखा शब्द उच्चारण किया ॥

योग न कंथा योग न डण्डे योग न भस्म चढाईये ।
योग न मूण्डी मूण्ड मुण्डाईये योग न सिङ्गी वाईये ॥
अञ्जन माँह निरंजन रहिये योग युक्ति इम पाईये ।
गली योग न होई एक दृष्टिकर समसर जाने योगी कहिये सोई ॥
योग न बाहर मडी मसाणी योग न ताडी लाईये ।
योग न देश दिशान्तर भवीए योग न तीर्थ न्हाईये ॥
अंजन मांह निरंजन रहिये योग युक्ति इम पाईये ।
सद्गुरु भेटे तां सहंसा टूटे धावत वरज रहाईये ॥
निझर झरे सहज धुन लागे घरही परचा पाईये ।
अंजन मांह निरंजन रहिये योग युक्ति इम पाईये ॥
नानक जीवदया पर रहिये ऐसा योग कमाइये ।
बाजे बाझों सिङ्गी बाजे तो निर्भउ पद पाईये ॥
अंजन माँह निरंजन रहिये योग युक्ति इम पाईये ॥ १ ॥

श्रीगुरुजीके मुखारविन्दसे इस शब्दको सुनताही वह कृत्रिम योगी चलदिया वहांपर थोडाकाल ठहरनेकीभी उसकी इच्छा न हुई । पश्चात् योगविद्याका खुलासा वृत्तान्त श्रीगुरुजीने सभी अधिकारी पुरुषोंको सुनाया । सभी सुनकर प्रसन्न हुये तथा वंचक बनावटी योगी फकीरोंसे अभिज्ञ हुये । ऐसेही एक दिन श्रीगुरुजीके पास आनकर एक ब्राह्मणने कहा कि, गुरुजी मैं ब्राह्मणके सभीकर्म प्रेमसे करा करता हूं परन्तु मेरेको उनसे कुछ शान्ति नहीं प्राप्त होती तो उसके उद्देशसे श्रीगुरुजीने नीचे लिखे शब्दका उच्चारण किया ।

पड पुस्तक सन्ध्या बादम् । शिल पूजस बगुल समाधम् ॥
मुख झूठ विभूषण सारम् । त्रैपालतिहाल विचारम् ॥
गलमाला तिलक लिलाटम् । द्वय धोती वस्त्र कपाटम् ॥

जे जानस ब्राह्मं कर्म्मम् । सब फोकट निश्चयो धर्म्मम् ॥
कह नानक निश्चयो ध्यावे । बिन सतगुरु बाट न पावे ॥

विना परमेश्वरके प्रेमसे पुस्तकोंका पढना तथा सन्ध्याबन्दनादिका करना व्यर्थ है । और बगुलेकी तरह ध्यानलगाकर पाषाण शिलाका पूजन भी व्यर्थ है । क्योंकि जिन्होंने मुखसे मिथ्या भाषण करनाही अपना भूषण जान रखा है । उनके चित्तका हाल त्रिलोकीनाथही जानता है । गलेमें माला और माथेपर तिलक लगाना । जोडा धोती तथा अङ्गोछोंका नियमसे पास रखना । कोई ज्ञातज्ञेय ब्राह्मणका कर्म नहीं है । किन्तु जो पुरुष ब्राह्मणके कर्मोंको जानता है । उसके लिये यह उपरकी दिखावटी क्रिया सब निष्फल है । अथवा लोकवंचनार्थ है । श्रीगुरुनानकजी कहते हैं कि परमेश्वरको निश्चित बुद्धिसे चिंतन करनेका मार्ग सद्गुरुके विना कदापि नहीं मिलता ॥ १ ॥

ऐसेही एकदिन राज्य प्रबन्धके अधिकारी हिन्दू मुसलमान अनेक लोग मिलकर श्रीगुरुजीके दर्शनको आये पास बैठ नम्रतापूर्वक कहने लगे कि गुरुजी आपके पवित्र सदुपदेशने बहुत लोगोंका उपकार किया है । हिन्दू मुसलमान सभी अपने २ धर्म कर्मको प्रेमपूर्वक करने लगगये हैं । इत्यादि। परन्तु श्रीगुरुजीको राज्याधिकारी लोगोंके अत्याचारकी सारी खबर प्रजाके दीन पुरुषोंद्वारा मिलती रहती थी इस लिये उन राज्याधिकारी पुरुषोंके उद्देशसे श्रीगुरुजीने नीचे लिखे शब्दका उच्चारण किया ।

माणस खाणे करें नमाज । छुरी बगावें तिन गल ताग ॥
तिन घर ब्राह्मण पूरें नाद । ओनांभी आवे ओही साद ॥
कूडी रास कूडा वापार । कूड बोल करें आहार ॥
शरम धर्मका डेरा दूर । नानक कूड रहिया भरपूर ॥ १ ॥

अर्थात् मुसलमान लोग नमाज तो पढते हैं परन्तु पंजेमें आवे तो मनुष्यको समूलसे खाजाते हैं । ब्राह्मण क्षत्रिय राज्याधिकारी लोग यज्ञोपवीत तो पहरते हैं ; अपने घरोंमें ब्राह्मणोंसे पूजा पाठ तथा शंख

भी बजवाते हैं । परन्तु कलमकी छुरी फेरकर सब गरीबोंका लोहू प्रतिदिन पीते हैं । उन पूजा पाठ करने वालोंको भी उसीमेंसे भाग मिलता है । इसलिये ऐसे आचरणवाले पुरुषोंके पास राशीभी कूड-हीकी है और उनका व्यापार भी कूडा (मिथ्या) है । क्योंकि ऐसे पुरुषोंका पेट पालन केवल मिथ्या व्यवहार पर मिथ्या बोल चाल-परही निर्भर हैं । श्रीगुरुनानकजीने कहा है राज्याधिकारी पुरुषों ! धर्मपूर्वक सुख सम्पादन करनेका स्थान या मार्ग तो बहुत दूर है । किन्तु अब तो जहां देखो चारोंतरफ कूडा (मिथ्यापन) ही भरपूर होरहा है ॥ १ ॥

॥ यथा वा ॥

मन्थे टिकाँ तेड धोती काषाई । हत्थ छुरी जगत कसाई ॥
नील वस्त्र पहर होवो परवान । म्लेच्छधान ले पूजें पुराण ॥
अभाख्याका कुठाँ बकरा खाना । चौके ऊपर किसे न जाना ॥
देके चौका कढी कार । ऊपर आन बैठे कूडियार ॥
मतभिटें वे मत भिटें । यह अन्न असाडा फिटें ॥
तन फिटे फेड करेन । मन जठे चुली भरेन ॥
कह नानक सच्च ध्याइये । सच्च होवे तो सच्च पाइये ॥ १ ॥

अर्थात् माथेपर तिलक कटिमें काषायरंगकी धोती और हाथमें दुनियांका गला काटनेके लिये कलमकी छुरी ले रखी है । नीले वस्त्र पहरकर प्रतिष्ठित बनते हैं । और मुसलमानोंसे वह रुपया लेकर जो कि अत्याचारोंसे प्रजासे लिया गया है । पुराणोंकी पूजा करते हैं । मुस-लमानोंका माराहुआ बकरा खाते हैं । परन्तु दूसरे किसीको अपने चौके-परभी नहीं चढने देते । चौका लगाकर उसको रेखा खैंचकर नियत करते हैं । और स्वयं मिथ्यावादी झूठके पुतले उसपर बैठते हैं । और दूसरेको देखकर दूरहीसे कहते हैं कि, देखना हमारे चौकेको मत छूना । कहीं हमारा भोजन न खराब होजावे । वे शरीरसे स्वयं दूषित हैं वृथा

बकवाद करते हैं। मन भी उनका महामलिन है परन्तु ऊपरकी चुल्ली-से साफ होना चाहते हैं। श्रीगुरुनानकजी कहते हैं कि, यदि यह पुरुष सच्चे परमेश्वरका ध्यान करा करे। तथा व्यवहारमें भी सत्यही बर्ते तो सत्य परमात्माको पा सकता है। अन्यथा यह मिथ्या आचरण सब अज्ञानके वर्द्धक हैं। इन दोनों शब्दोंके भावार्थको श्रवणकर अधिकारीलोग बहुतही प्रसन्न हुये। और सबने श्रीगुरुजीके वचनोंको यथावत् धारण किया। ऐसेही एकबार मुसलमानोंने-मिलकर पूछा कि, गुरुजी कुरानका पढना नमाजका पढना रोजा रखना या मक्केशरीफका हज्जकरना इत्यादि अच्छे २ कामोंसे मुसलमान की नजात (मुक्ति) होती है कि नहीं। इसके उत्तरमें श्रीगुरुजीने नीचे लिखे शब्दका उच्चारण किया।

मिहिर मसीयत सिदक मुसल्ले हक्क हलाल कुरान।
शरम सुंनत शील रोजा होइ मुसलमान॥
करनी काबा सच्च पीर कलमा कर्म नमाज।
तसबी सातिस भावसी नानक रक्खे लाज॥ १॥

अर्थात् रहमकी मस्जिदमें सबरके मुसल्ले बिछाकर अपने हक्क हलालका कुरान पढो। और शरमकी सुन्नत समझकर हलीमीका रोजा रखो तब सच्चे मुसलमान बनसकते हो। और किसी तरहकी नमाज या उपवास करनेसे कुछ नहीं होता। अपने शुभाचरणोंको अपना काबा समझो और सरल भावको अपने मुरशद पीरका कलमा समझो। गरीबोंको देना यही नमाज समझो और परमेश्वरकी रजापर सदा प्रसन्न रहना यही तसबी फेराकरो तो श्रीगुरुनानकजी कहते हैं कि ऐसे मुसलमान पुरुषकी परमेश्वर लज्जा रखता है अर्थात् उस पुरुषका कल्याण अवश्य होता है। इत्यादि।

पाठकवृन्द ! इन ऊपर लिखे शब्दोंके उदाहरणोंसे आपके चित्तमें यत्किञ्चित् आभास अवश्यही होगया होगा कि, श्रीगुरुनानकजी किस प्रकृतिके महापुरुष थे। यद्यपि यह इस जीवमें एक प्राकृत स्व-

भाव है कि प्रथम जिस कीलेके साथ यह बँध जाता है फिर जन्म जन्मान्तरमें भी उस कीलेको छोडना नहीं चाहता वह कीला चाहे जल गलके मट्टीमें मिलजाय चाहे उसका धनी भी कोई हो न हो परन्तु पशु किसी जबरे स्वामी अन्तरके विना प्रथम कीलेही पर खडा रहता है। परन्तु मेरा लिखना उन कीले बद्ध पुरुषोंके लिये नहीं है किन्तु जो स्वतंत्र प्रकृतिके मनुष्य हैं। जिनको परमेश्वरने विद्याके अतिरिक्त कुछ विचारशक्ति भी प्रदान करी है। जिनका अपने देशके कल्याण की तरफ कुछ मन है। जिनको न्यायशील बुद्धिसे विपरीत कहनेवाला ब्रह्माभी मूर्ख भासता है। जिनको सत्यता प्रियता परोपकारता उदारता तथा महानुभावता इत्यादि अनेक सद्गुण सदा प्रिय लगते हैं उनहीके लिये मेरा लिखना है। कि वे लोग इन टुक वार्तोमें श्रीगुरु नानकजीका उद्देश उपदेश सिद्धान्त तथा भाव समझलेवें।

इत्येकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

अथ द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

ॐ

॥ श्रीगुरुअंगदसाहिबजीपादशाही ॥ २ ॥

श्रीगुरुअंगदसाहिबजीका जन्म सुलतान सिकन्दर लोदीकी अमलदारीमें वैशाखमासकी ११ संवत् १५६१ विक्रमीमें चारघटिका रात्रि शेषरहे फेरुमल्ल क्षत्रियके घरमें ग्राम मतीकी सरायमें इलाका मुक्तसर जिला फीरोजपुरमें माता शुभराईजीके पेटसे हुआ है। और संवत् १५७६ विक्रमीमें ग्राम खंडूरसाहिबमें बीबीक्षीवीजीके साथ आपका विवाह हुआ है। जिससे दो पुत्र तथा दो पुत्रीभी उत्पन्न हुई थीं। संवत् १५८८ विक्रमीमें श्रीगुरुअंगदजी गृहकार्य्यको त्यागकर श्रीगुरुनानकजीके शिष्य हुये और बहुत वर्षतक तनमनसे प्रेमपूर्वक एकरस सेवा करके श्रीगुरुनानकजीको प्रसन्न किया। श्रीगुरुनानकजीकी आज्ञाका पूर्ण,

रूपसे पालन किया । तथा श्रीगुरुनानकजीके ऊपर परमेश्वरसेभी अधिक भावनाका भाव वढाया । जिसको देखकर श्रीगुरुजीने अपने पुत्रोंको गुरुगादी न देकर इन्हींको दई । गुरुगादीको पाकर श्रीगुरुअंगदजी अपनी पिछली बस्ती शहर खंडूरमें चले आये । और वहाँ जंगलमें एक तालावके किनारे जोकि अब पुखत बनकर तप्ताना साहिबके नामसे प्रसिद्ध है कंकरोंके बिस्तरेपर ऐसी तपस्या करनेलगे कि, खाना पीना तकभी छोड दिया था । केवल दिनमें एकबार थोडासा दुग्धपान किया करते । इनकोभी श्रीगुरुनानकजीका प्रतिरूपकही समझना चाहिये । इनकाभी श्रीगुरुनानकजीकी तरह अति सरलभाव अतिउदारभाव अति सत्यप्रियभाव तथा अति सर्वप्रियभाव लोकमें प्रख्यात हुआ । थोडेही दिनोंमें यह अपने सद्गुणोंके गौरवसे ऐसे प्रख्यात हुये कि, ऐसी दशामेंभी सहस्रोंलोग इनके दर्शनको आने जाने लगे । जो नवीन आवे सिवाय शिष्य बने एकभी न जावे । गरीबों अभ्यागतोंके खिलानेके लिये इनका लंगर हरवक्त प्रचालित रहने लगा । चाहे कोई किसी जातिका भूखा किसीवक्त चलाआवे परन्तु भूखा नहीं जाने पाता था । परन्तु इसके साथ श्रीगुरुनानकजीके उपदेशानुसार सद्धर्मका प्रचार करनेमें भी यह कदापि आलास्य नहीं किया करते थे किन्तु प्रतिक्षण कर्तव्यकी तरह जानकर स्वाभाविकही दत्तचित्त रहते थे । गुरुमुखी अक्षर जिनका पंजाबदेशमेंही विशेष रूपसे प्रचार है इनहीके प्रचालित किये हुये हैं । श्रीगुरुनानकजीके जीवनवृत्तान्तका पुस्तकरूपसे भाईबाला जो कि सारी यात्रामें श्रीगुरुनानकजीके साथ रहा था उसके मुखसे सुनकर संग्रह करनाभी सबसे प्रथम इनहीका काम है । संवत १६०१ विक्रमीमें सारा वृत्तान्त यथावत् लिखकर उसका नाम जन्मसाखी गुरुनानकजीकी, रखा था । जो कि सविस्तर लिखी हुई गुरुमुखीअक्षरोंमें अबभी प्रचलित है । गुरुगादी देनेके प्रथम श्रीगुरुनानकजीने इनको अनेकबार परीक्षण किया था परन्तु यह सदाही अपने निश्चय तथा विश्वासके दृढही

निकलते रहे थे। एकवारका वृत्तान्त है कि, बिछाईपर अकस्मात् मूषक (मूस) मरा पडा देखकर श्रीगुरुजीने अपने पुत्रोंको उठादेनेके लिये कहा तो वे नौकरोंको आवाज देनेलगे। पासही गुरुअंगदभी थे उसी समय वही आज्ञा इनपर हुई तो इन्होंने अपने हाथसे उठाकर मूषकको बाहर फैंका ॥१॥ फिर एक दिनका वृत्तान्त है कि, श्रीगुरुनानकजीके हाथमें रहनेवाला सिलेमानी पाषाणका प्याला कीचडवाले ह्रद (खाडे) में गिरपडा। श्रीगुरुजीने पुत्रोंको निकालनेको कहा तो वे लोग नौकरों- को बुलाने लगे। गुरुअंगदजीको आज्ञा हुई तो इन्होंने कपडेभी न उतारे कूदकर प्याला निकाललिया ॥ २॥ फिर एकवारका वृत्तान्त है कि नदीके किनारेपर एक मृतप्राणी पडा था। श्रीगुरुनानकजीने अपने पुत्रों तथा औरभी अनेक शिष्य जो कि उसकालमें साथ थे कहा कि इस मृतप्राणीको कोई खा सकता है। तो कोई न बोला। फिर दुबारा श्रीगुरुजीने वही वार्ता कही तो एक शिष्यने कहा कि श्रीगुरुजी यह मनुष्यके खानेकी वस्तु नहीं है। तब श्रीगुरुजीने इनसे पूछा तो इन्होंने उत्तर दिया कि आपकी आज्ञाका विलम्ब है। श्रीगु- रुनानकजीकी आज्ञाके अनुसार जब गुरुअंगदजी खानेके लिये तैयार हुये तो सबने देखा कि वह वस्तुतः मृतप्राणीका शरीर नहीं है किन्तु एक दिव्य भोजन है। जिसका वास्तव स्वरूप देखकर सबका जी ललचआया। फिर श्रीगुरुजीने उसके वर्तावनेकी आज्ञा करी तो गुरुअंगदजीके हाथसे सबने लेकर खाया। और ऐसे अलौ- लिक रसका आस्वादान किया जोकि आमरण सभीको समय २ पर स्मरण रहा करे ॥ ३ ॥ फिर एक बारका वृत्तान्त है श्रीगुरुनानक- जीने ऐसी वृत्ति धारण करी कि लोग उनको विक्षिप्त समझने लगे जो चाहें किसीको कुछ उचितानुचित बोलदेवें या मारदेवें भयभीत हुआ कोई भी आपके पास न आवे वृद्ध बालक शिष्य सेवक किसी- का भी श्रीगुरुनानकजीके पास जानेका साहस न पडे। परन्तु उस कालमें भी एक गुरु अंगदजीनेही अपना अनन्य सेवकपना दिख-

लाया था । गलीमार बुरा भला जो समय पर हो वह सभी श्रीगुरु-नानकजीकी तरफसे सहाय था ॥ ४ ॥ ऐसेही एकवार श्रीगुरुजीने एकान्तमें अपने बडे पुत्र श्रीचन्द्रको बुलाकर पूछा कि तुमको क्या चाहिये । उसने कहा कि परमेश्वरसे अनुरागके सिवाय मेरेको कुछ नहीं चाहिये । श्रीगुरुजीने बडे पुत्रको आशीर्वाद दिया । और फिर थोडी देरके पीछे छोटे पुत्र लक्ष्मीचन्द्रको बुलाकर पूछा कि तुमको क्या चाहिये । उसने कहा कि दीनबन्धो ऋद्धिसिद्धिके बिना इस संसारमें रहनेका कुछ सुख नहीं है । श्रीगुरुजीने आशीर्वाद दिया कि ऋद्धि सिद्धि तेरी वंशमें दूरतक चलेगी फिर थोडी देर पीछे श्रीगुरु-जीने गुरु अंगदको बुलाकर पूछा कि तुमको क्या चाहिये । इन्होंने कहा कि इस जन्मके सिवाय भावि जन्मोंमें भी यदि आपके चरणोंकी सेवा तथा आपकी आज्ञाके पालनका सौभाग्य मिले तो पूर्ण अभि-लाषा है । श्रीगुरुजी अतिप्रसन्न हुये और इनको गुरुगादीका अधि-कारी जानकर हृदयमें लगाया ॥ ५ ॥ इत्यादि औरभी अनेकवार श्रीगुरुनानकजीने परीक्षा करी जिनमें सदाही श्रीगुरु अंगदजी उत्तीर्णही निकलते रहे । यही मूलकारण इनके गुरुगादी मिलनेका है । श्रीगुरु-नानकजीने स्वयं प्रसन्न होकर इनको अपने हाथसे गुरुगादीपर बिठ-लाया था । श्रीगुरुअंगदजीका जन्मस्थान इलाका मुक्तिसरमें ग्राम मतीकी सराय जिसको वर्तमानमें नागाकी सरायभी कहते हैं उसमें है । इनका बचपनसेही ऐसा सदा सरल स्वभाव था कि किसीको भी कभी बुरा नहीं बोलते थे । इतर बालकोंकी तरह चंचल प्रकृतिके न थे । विचारशील तथा मितभाषी थे । लडकपनमें भी लडकोंमें नहीं खेलाकरते थे । किन्तु वृद्धोंके साथ कथा कीर्तन भजन पाठ किया सुना करते थे । साधुओंके बहुतही प्रेमी थे । जो कुछ पैदा किया करते थे विशेषतः साधुओंको खिला दिया करते थे । इनकी उदा-रताकी प्रख्याति अबतक उन ग्रामोंमें स्मरणीय हो रही है । जो कोई इनसे कुछ आनकर माँगता जहाँतक इनके वशमें होता उसको

अवश्यही देते। अन्यथा पश्चात्ताप भी करते। संवत् १५१८ विक्रमीमें बाबरबादशाहकी चढाईपर इनका ग्राम वैरान होगया था। क्योंकि भट्टि तथा पचादा जातिके समीपवात मुसलमानोंने अपने पासके छोटे ग्राम अनेक उजाड डाले थे। उस समयके उजाडे हुये सैकडों ग्राम अब ऊंचे २ टीलोंकी तरह दिखलाई देते हैं। उस ग्रामका भी एक ऊंचा टीला वहाँ अबतक दृष्टि पडता है। उसपर इनके नामका एक गुरुस्थान जो कि संवत् १८६२ विक्रमीमें दीवान मुहकम चन्द्रने निर्माण करवाया था विद्यमान है। श्रीगुरुअंगदजीके पिता बहुतही धार्मिक साधुसेवी विचारशील विद्यानिपुण तथा फीरोजपुरके हाकिमके कारिन्दा थे। अपने ग्रामके वैरान होजानेके कारण संवत्१५७९ विक्रमीमें दरिया व्यासाके पार मध्यप्रान्तके देशमें खण्डूर नामक ग्राममें जो कि अपने पुत्रके ससुरारहीका था सकुटुम्ब जाय बसे थे। और कुछ व्यापार करके अपनी जीविका निर्वाह करते थे। इस प्रान्तके लोग उस कालमें विशेषतः देवीके पूजक थे इसलिये इनके घरमें भी देवी पूजनकी प्रधानता हुई। संवत्१५८३ विक्रमीमें अपने पिताकी मृत्युके पीछे गुरु अङ्गदजीने भी वही चाल चलन जैसा कि अपने पिताका था अंडीकार किया। प्रत्युत अपने पितासे भी अधिक देवीके भक्त बनगये। प्रतिवर्ष सहस्रों भक्तलोग मिलकर गुरु अंगदजीको प्रमुख बनाकर देवीजीके दर्शनको जाया करते। वस्त्र वेशभी सभी देवीजीके भक्तों सरीखा बनालिया करते। एकबार अनेक भक्तलोगोंको साथ लेकर वैष्णव देवीकी यात्रा पूजा करने जारहे थे। मार्गमें अनेक लोगोंसे श्रीगुरुनानकजीकी भी अनेक तरहकी ऋद्धि सिद्धि बातें सुनी मन हो आया कि इधरका दर्शन भी करते चलें। सब यात्रीलोगोंकी संमतिसे उस ग्रामका मार्ग धरतेही क्या देखा कि एक साधु श्रीगुरुनानकजीका प्रतिरूपक इनकी घोडीके साथ २ चलरहा है। उसके साथ वार्तालाप करने लगे। जिनका तात्पर्य यह था कि इस जीवकी कल्याणका मार्ग भक्ति है या कर्म है या उपासना है अथवा ज्ञान है

साधु भी अनेक प्रकारके दृष्टान्त प्रमाणोंसे अधिकारी भेदसे सबकी सफलता बतलाता हुआ जहां श्रीगुरुनानकजीका निवास स्थान था वहां जाय पहुँचा । यह सभी लोग उतारा करके दर्शन करनेके लिये आये तो गुरुअङ्गदजीको वही मूर्ति दृष्टिपडी जोकि घोडीके साथ२ चली आती थी । दर्शन करके बहुत विचारकर आश्चर्य्य हुये और मनमें निश्चय करलिया कि इनहींके चरणोंमें मेरी कल्याणका संभव है पश्चात् श्रीगुरुअंगदजीने अनेक प्रश्न किये जिनका उत्तर श्रीगुरुनानकजीकी तरफसे यथायोग्य मिला । शेषमें उस प्रश्नोत्तरका फल यह निकला कि श्रीगुरुअङ्गदजीके मनमें यह निश्चय हुआ जो सिवाय परमेश्वके और किसी देवी देवताकी सेवा पूजा करनी निष्फल है । श्रीगुरुनानकजीका सदुपदेश श्रीगुरुअंगदजीके हृदयमें ऐसा उतरा कि उन्होंने आगे देवीकी यात्राका करना उसी समय समाप्त रखा । और देवीके स्वाप्निक दर्शनके कथनानुसार तन मनसे श्रीगुरुनानकजीके सेवक बन गये । और इनको यह भी निश्चय हुआ कि सिवाय ज्ञानवान् पुरुषोंके ज्ञान तथा सिवाय ज्ञानके मोक्ष किसी देवी देवतामें देनेकी सामर्थ्य नहीं है । श्रीगुरुनानकजीके सेवक होनेके प्रथम घरमें कभी स्वप्नमें देवीका दर्शन होता तो गुरुअंगदजी उसके आगे मुक्त होनेकी प्रार्थना करते । भगवतीकी तरफसे उत्तर मिलता कि किसी सांसारिक पदार्थकी इच्छा हो तो बोलो । परन्तु यह मार्गभी सच्चे गुरुसे तुझे मिलेगा । इत्यादि अनेक कारणोंसे श्रीगुरुअंगदजीने देवीका पीछा छोडकर श्रीगुरुनानकजीके शिष्य हुये और अपने सगो पुरुषोंको भी अनेकोंको अपने साथही मिलाया । और उसी दिनसे संसारके सभी बखेडे छोडकर बहुत दीन हीन बनकर बारह वर्षतक श्रीगुरुनानकजीकी अनन्य सेवामें प्रतिक्षण नियत रहे । इनका सदाहीसे यह नियम था कि आधी रात्रिको उठकर स्नान करके एक एकान्तस्थलमें ईश्वराराधनके लिये बैठ जाते थे । और सूर्य्य निकलनेके पीछे भारी सभा दरबार लगाकर श्रीगुरुनानकजीकी वाणीका पाठ सुना करते । और उसके

पश्चात् अपने शिष्यमण्डलमें सदुपदेशका प्रचार करते तथा अपने पवित्र वचनोंसे सबको कृतार्थ किया करते । पीछे दशबजे दिनके नगारा बजाकर हिन्दू मुसलमान सबको खानेको बाँटते किसी बख्तमें कोई गरीब भी इनके लंगरसे खाली न जाता। बहुत लोगोंका कथन है कि, इनके लंगरमें विशेष कर हलुआ या खीर टाही गरीबोंको मिला करता था खण्डूर ग्रामके यावत् जिमीदार लोग सात दिन पीछे एक दिनका दुग्ध गुरुके लंगरमें दिया करते थे। ऐसेही बाहर ग्रामोंसे भी आता था । और सामग्री भी सहस्रों मन प्रतिदिन चली आती थी। इसलिये श्रीगुरुनानकका लंगर हरवख्त परिपूर्णही रहा करता था। संवत् १६०१ विक्रमीमें वर्षा न होनेके कारण वहाँके जिमीदारोंके खेत खाली पडेरहे । वहाँपर एक पशुनाथ नामक कनफटा योगी रहा करताथा । उसने अपनेको करामाती सिद्ध प्रसिद्ध कर रखा था। सभी जाटलोग मिलकर उसके पास वर्षाकी प्रार्थना करनेको गये । उसने जाटोंको कहा कि जब कुछ पूजा देनेका समय आवे तो गुरु-नानककी गादीपर चले जाया करो। और जब कुछ अरिष्ट विपत्ति आनपडे तो योगी लोगोंको खोजा करो । जाटोंने कहा कि नाथजी हम तो सभको बरोबर मानते हैं । आपके पास सिद्धिका बल होय तो वर्षा करवाय दीजिये आप जो कहेंगे हम मानेंगे । नाथने तीनबार कहवाया कि जो मैं कहूंगा सो मानोगे? जाटोंने कहा हाँ आप वर्षा कर-वादेनेकी प्रतिज्ञा करें तो जो कहोगे सो मानेंगे । नाथने कहा वर्षा तो हम करवाही देंगे । जाटोंने कहा तो आप कहिये जो करें। नाथने कहा गुरुनानककी गादी इस अपने ग्राममेंसे तुम लोग उठादो पीछे वर्षा मैं करवा दूंगा । सभी जाटोंकी मण्डली वहाँपर अच्छा कहकर चली आई । परन्तु मार्गमें आनकर भिन्नमत हुये। कई कहनेलगे गुरुअंग दजीको ग्रामसे निकालना उचित नहीं । दूसरोंने कहा कि उनकोभी प्रार्थनासे यही बात कहनी चाहिये। तीसरोंने कहा कि योगी पाखण्डी है यदि उसने वर्षा करवानी होय तो गुरुअंगदजी क्या वारण करते

हैं। चौथेने कहा कि गुरुजीके पासभी इस वार्ताको चलो तो देखें। तात्पर्य्य इसीतरह अनेकमति होकर सभी लोग घरमें आये । इस वार्ताका सारा हाल गुरुअंगदजीकोभी प्रियशिष्य लोगोंद्वारा मिलगया। इन्होंने विचारा कि इन मूर्खोंसे कहवाकर इनका ग्रामछोडना अच्छा न होगा। इसलिये स्वयं वहाँसे चलकर ग्राम खान रजादामें अपने सच्चे प्राचीन भक्त भाई प्रेमाके घरमें आन विराजे। पीछे जिमींदारोंसे वर्षाके अनुष्ठानके निमित्त कुछ रुपया भी नाथने ठगलिया । परन्तु वर्षा फिरभी न हुई । जाटलोग बहुत तङ्ग हुए। उस नाथपर भी सबकी विपरीत दृष्टि हुई। उनही दिनोंमें दैवात् श्रीगुरुअमरदासजी जो कि श्रीगुरुअङ्गदजीके' परमप्रेमी निश्चयवाले शिष्यथे ग्राम खण्डूरमें आननिकले। श्रीगुरुअङ्गदजीके इस ग्रामसे चले जानेका हाल सुनकर बहुतही असंतुष्ट हुए। और उस ग्रामके जाटलोगोंको कहा कि, यदि तुमको वर्षाकी इच्छा हो तो उस पाखण्डी योगीको तुम लोग जिस-खेतमें घसीटोगे अवश्य वर्षा होगी. जाटलोग उस योगीसे प्रथम दुखे हुए तो थे ही । श्रीगुरुअमरदासीके बचनानुसार उन लोनोंने वैसेही किया। उस योगीकी टांगमें जेवडा डालके प्रत्येक खेतमें घसीटा। योगीके प्राण तो गये परन्तु वर्षा उसकालमें इतनी हुई कि, खेतोंसे संभलनी भी कठिन पडगई । फिर वेही जाटलोग मिलकर श्रीगुरुअंग दजीके आगे प्रार्थना करके अपने ग्राममें लाये । और नम्र होकर सेवक बनके सेवा करने लगे। श्रीगुरुअंगदजीके पास नगद रुपया अथवा और कोई जिनस जो कुछ आता था वह सभी धर्मार्थके लंग-रहीमें खर्च किया जाता था। अपने निजके खर्चमें उसमेंसे कुछ भी नहीं लाते थे । और अपने दासूजी तथा दातूजी इन दोनों पुत्रोंको भी स्वतन्त्र व्यापार करके खानेकी आज्ञा दे रक्खी थी। साथही यह भी उपदेश था कि, पूजाका धान्य कुटम्बीलोगोंको विषयका असर करता है। और आप भी केवल एक रूक्ष फुलका जो कि माता खुम -राईने अपनी मिहनतसे अपने हाथसे बनाया है वही अष्ट प्रहरमें एक

बार पाते थे । परमेश्वरका स्मरण कीर्तनहीं अपना वास्तव आधार समझते थे । सहस्रों मनुष्य आपकी सेवामें हाजर रहते थे । तीसरे पहरको पुस्तक जन्मसाखी गुरुनानकजीकी सुना करते थे । इनके यहां भी श्रीगुरुनानकजीकी तरह दोनोंवख्त बादशाही दर्बारकी तरह ठाठ बना रहता था । इसीलिये इनको लोग दूसरी बादशाही ऐसा भी कहा करते थे । इन्होंने अपने हार्दिक प्रयत्न तथा वास्तव बुद्धिबलसे अनेक नूतन शिष्यलोग बनाकर सिखोंके मण्डलकी बहुतही उन्नति दईथी ! इनकी ऋद्धि सिद्धि करामातके विषयमें अनेक इतिहास ग्रन्थ सूर्य्य प्रकाशमें लिखे हैं । विस्तारके भयसे उनका यहांपर दिखलाना उचित नहीं जाना है । संवत्१५९७विक्रमीमें हिमायूं बादशाह शेरशाह अफगानसे पराजित होकर जब अपने देशको भागा जाता था । तो दरया व्यासाके किनारेपर श्रीगुरुअंगदजीकी ऋद्धि सिद्धिकी प्रख्याति सुनकर उनके पास दर्शनको गया । श्रीगुरुअंगदजी उसकालमें परमेश्वरके ध्यानमें दत्तचित्त थे । इस लिये बादशाहका पूर्णरूपसे यथायोग्य स्वागत न कर सके । इसपर बादशाहको बहुत गुस्सा आया । और उसने इनके कतल करनेके लिये तलवार उठानी चाही । इतनेहीमें श्रीगुरुअंगदजीने स्वयं प्रबुद्ध होकर कहा कि हे बादशाह ! तुमने यही तलवार शेर शाहपर क्यों न चलाई । वहांसे तो पीठ दिखलाकर चले आये । और अब पीरों फकीरोंपर अपनी तलवारकी बहादुरी दिखलाना चाहते हो ! बादशाहने श्रीगुरुजीको बली (सिद्ध) जानकर उनसे भूल क्षमा करवाई । और कहा कि मेरे हालमें कुछ दुआ कीजियेगा श्रीगुरुजीने प्रसन्न होकर कहा कि थोडे दिनोंके पीछे तुमको हिन्दोस्तानकी बादशाही मिलेगी । और यहभी कहा कि इसी दशामें तुम्हारे घरमें एक शाहजादा (पुत्र) उत्पन्न होगा जो कि बडा नेक नाम साहिब इकबाली होकर हिन्दोस्तान तथा अफगानस्तान दोपर हकूमत करा करेगा।। उसके थोडे ही दिन पीछे श्रीगुरुजीका वचन पूर्ण हुआ हिमायूंके घर अकबर उत्पन्न हुआ । श्रीगुरुअंगदजी बहुतही सरल प्रकृतिके महापुरुष थे । इनका हरएक जातिके हरएक वेषके मनुष्यके

साथ समान ही प्रेमभाव था । सबके साथ हार्दिक प्रेमसे वर्तोव किया करते थे । अभिमान या क्रोध या द्वेषभावकी तो गन्धभी इनकी प्रकृतिमें कभी नहीं देखनेमें आती थी । परोपकार करनेमें तथा दीनोंके पालनमें तो प्राणोंतक भी समर्पण करनेको तैयार रहते थे । गरीब अनाथ दुःखी भूखा नंगा जो कोई इनके पास जिस कामनाके लिये पहुँचा खाली नहीं फिरा करता था । सहस्रोंलोगोंके घरोंमें इनके आशीर्वादसे पुत्र उत्पन्न हुए । सहस्रोंलोग इनके दर्शन मात्रसे बिकट रोगोंसे मुक्त हुए । सहस्रों इनके सदुपदेशसे कृतकृत्य हुए । अनेक लोगोंके अनेक तरहके भिन्न २ मनोरथ पूर्ण हुए । इन्होंने भी अपने सत्त्व-कालहीमें अपने स्थानपर दो पुत्रोंके विद्यमान होते भी अपने परीक्षोत्तीर्ण निजसेवक अमरदासहीको गुरुगादीका उत्तराधिकारी बनाया था । और आप चैत्रशुक्ल चतुर्थी बुधवारके दिन एक प्रहर दिन शेष रहे संवत् १५०९ विक्रमीमें उस खण्डूर नामक ग्राममें परमधाम पधारे पैंतीस वर्ष दो मास नव दिनकी आयुमें इनको गुरु गादी मिली थी और बारह वर्ष नवमास पांच दिनतक अपने स्वाधीन चलाकर पीछे अपने हाथसे उत्तराधिकारी गुरु अमरदासको अर्पण करी । पश्चात् ४७ वर्ष ११ मास १५ दिनकी समग्र आयु भोगकर इस असार संसारको परित्यागकर परमधाम पधारे । इनका देहरा उसी ग्राम खण्डूरके बाहर बहुत सुन्दर पायदार मजबूत इमारतका बना हुआ विद्यमान है । । जिसको इन्होंने अपने सत्वकालहीमें तैयार करवा रक्खा था । इस स्थानपर वर्षभरमें दोबार मेला भरता है एक-बार श्रावण मासमें और दूसरीबार आश्विन मासमें चारों तरफके अनेक लोग दूर २ से जमा होते हैं । एक हजार चारसौ अट्ठावन १४५८ रुपयाकी जागीरभी इस मकानके साथ सालाना गवर्नमेण्ट सरकारसे माफी सदाव्रतके लिये प्रचलित है । श्रीगुरुअंगदसाहिबजीके पुत्रोंमेंसे दातूजीके तो वंश नहीं चला और दासूजीकी वंशके बावे-साहिब जादे कहलाते हैं । जो कि वर्तमानमें समाधोंके पूजारी हैं॥इति।

इति द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

अथ त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

श्रीगुरुअमरदाससाहिबजीकी बादशाही ॥ ३ ॥

श्रीगुरुअमरदासजीका जन्म सिकन्दरलोदीके राज्यानुशासन कालमें वैशाख मास मिती शुक्ल चतुर्दशी संवत् १५३६ विक्रमी शुक्रवार एक प्रहर रात्री शेष रहे जिला अमृतसरके वासरसे नामक ग्राममें तेजभान नामक भल्ले क्षत्रियके घर माता सुलक्षणीजीके गर्भसे हुआ है। माघमास मिती ११ संवत १५५६ विक्रमीमें श्रीमती रामकुवरीसे इनका विवाह हुआ। दो पुत्र तथा दो पुत्री इनके सन्तान हुई। इनका बचपनहींसे साधु महात्माओंके साथ प्रेम तथा परमेश्वरमें परम अनुरागथा। विशेष करके सदा तीर्थयात्रामें या ईश्वरके भजन पाठ प्रेममेंही कालक्षेपण किया करते। हरिद्वार गंगाजीका स्नान आपने एकतीसवार नग्नपाओंसे पैदल चलकर कियाथा। घरके खर्चसे पैसा टका जो कुछ बचता वर्ष छः महीने पीछे तीर्थपर आकर साधु अभ्यागतोंको खिला जाया करते एकबारका वृत्तान्त है कि, आप श्रीगंगाजीको जाते मार्गमें मौलानाके नामक ग्रामके एक उपवन (बगीचा) में शयन कररहेथे। अकस्मात् एक विज्ञ पण्डित ब्रह्मचारीने आपके चरण चिह्नकी पद्मरेखाको देखकर कहा कि, आपके चरणमें दीन दुनियांकी बादशाहीका चिह्न है इसलिये मेरेको पूर्ण विश्वास है कि, थोडेही काल पीछे एकदिन आप दीन दुनियांकी बादशाहीके सिंहासनपर विराजेंगे। श्रीगुरुअमरदासजीने गम्भीर भावसे कहा कि–ब्रह्मचारीजी यदि परमात्माकी ऐसीही इच्छा है तो आपका मंगलवचन अवश्य सफल होगा। श्रीगुरुअमरदासजीने उस ब्रह्मचारीको कुछ पारितोषिक देना चाहा। ब्रह्मचारीजीने पूछा कि आपका गुरु कौन है श्रीगुरुअमरदासजीने कहा कि ब्रह्मचारिन् मैने सत्संग तो अनेक अच्छे २ महापुरुषोंका किया है परन्तु मैंने अभीतक गुरु तो अपना कोई नियत नहीं किया। ब्रह्मचारीने कहा

मैं तो ऐसे पुरुषके दर्शनसेभी अपनेको प्रायश्चित्तका भागी समझताहूं । क्योंकि अदीक्षित पुरुषके दर्शन मात्रका भी धर्मशास्त्रोंमें निषेध लिखा है । आप वृद्ध हैं । तथा शिष्टभी हैं । इसलिये मैं आपको सम्मति देता हूं कि आप शीघ्रही किसी महापुरुषकी शरणको प्राप्त होवें । और जिनके शान्तिमय सदुपदेशोंसे आपके स्वान्तमें सन्तोषहो उन्हींको आपने महापुरुष जानना । मैं कालान्तरमें आपको मिलुंगा । फिर जो भेंट पूजा दीजियेगा लेवेंगे । इस कालमें आप अदीक्षित हैं । इसलिये मैं कुछ नहीं लेसकता । यह कहकर ब्रह्मचारी चलदिया । परन्तु श्रीगुरुअमरदासजीके चित्तपर ब्रह्मचारीके उचित वचन आघात करगये । और उसी दिनसे गुरुके अन्वेषणमें तत्पर हुये । हिन्दू मुसलमानोंमें अनेक मतमतान्तरोंके अनेक प्रकारके अच्छे २ प्रतिष्ठित महापुरुषोंको गुरुनियत करनेके लिये देखा परन्तु ब्रह्मचारीके कहे लक्षण कहीं न प्रतीत हुये । अच्छा गुरु न मिलनेके विचारमें व्यग्रसे होकर रात्रिदिन प्रतिक्षण अपने घरहीमें पडे रहने लगे । ऐसेही कुछ दिन व्यतीत होनेके पश्चात् श्रीगुरुअंगदजीकी अमरादेवी नामक पुत्रीके साथ श्रीगुरुअमरदासजीके भ्राताके पुत्रका विवाह हुआ । वह लडकी अपने पिताके घरमें कंठ करी हुई श्रीगुरुनानकजीकी पवित्र वाणीका प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर अपने सशुरारके घरमें भी प्रेमसे नियमपूर्वक पाठ करने लगी । सद्गुरुके अलाभसे शोकातुरसे श्रीगुरुअमरदासजी नित्य प्रातः विनिद्र होकर उस प्रेममयी अमृतरूपा वाणीका दत्तचित्त होकर रसास्वादन करने लगे । उस वाणीके श्रवण करनेसे श्रीगुरुदासजीके चित्तमें स्वभाविकही ऐसा असर उत्पन्न हुआ कि–इनके चित्तमें वाणीका मूल अन्वेषण करनेको अभिलाषा उत्पन्न हुई । आपने प्रेमपूर्वक उस लडकीसे पूछा कि बीबी यह वाणी "जिसका तू नित्य प्रातः पाठ करा करती है यह तुमने" कहाँसे सीखी है । लडकीने कहा कि मैंने अपनी मातासे सीखी है । परन्तु यह वाणी श्रीगुरुना-

नकजीकी है। उनके स्थानपर अब मेरे पिताजी विराजमान हैं। श्रीगुरुअमरदासजीने कहा कि बीबी तेरे पिताके दर्शन करनेकी मेरे मनमें अभिलाषा है। लडकीने कहा भले कीजिये वहाँ तो बहुतलोग आया करते हैं। अवसर पाकर श्रीगुरुअमरदासजी उस लडकीके साथ श्रीगुरुअंगदजीके दर्शनको गये दर्शन करतेही तृप्त होगये और उक्त ब्रह्मचारीके वचनको स्मरणकर सद्गुरु लक्षण लक्षित मनोहर मूर्तिको देखकर मनमें तत्क्षण सन्तोष उत्पन्न हुआ। कुछ दिन तक आपके चरणोंमें निवास करके प्रेमपूर्वक श्रीगुरुअङ्गदजीके शिष्य हुए। संवत् १५९७ विक्रमीसे शिष्य होकर श्रीगुरुअंगदजीकी १२ वर्षतक सेवा ऐसी उठाई कि, जिसको देख सुनकर प्रेमीपुरुषका रोमांचहुए बिना न रहे। वैसे तो आपके सेवा १२ वर्षतक एकरसही करी है। परन्तु शेषमें जिस सेवनसे प्रसन्न होकर श्रीगुरुअंगदजीने आपको गुरुगादी प्रदान करी है। उसका वृत्तान्त थोडासा यहांपर लिखा जाता है। इन्होंने अपनी अवस्थाके वृद्ध होने पर भी शिष्य होकर श्रीगुरुअंगदजीकी ऐसी सेवा उठा लीथी जो कि साधारण मनुष्यसे कदापि न बन पडे। नित्य आधी रात्रि शेष रहे उठकर एक भारी गगरा लेकर दरियाय व्यासासे जो कि गुरुस्थानसे तीन कोशसे कम न होगा जलका भरकर लाना और स्थानपर आनकर गरम करके श्रीगुरुजीको परमप्रेमसे स्नान करवाना। उसमें विशेषता यह थी कि, जातीबार उल्टे पाउँसे चला करते थे। मनमें यह भाव रहता था कि सीधे चलनेसे श्रीगुरुजीके तरफ पीठ होजायगी। ऐसेही नित्य प्रातः करते उसके पश्चात् दिनभर गुरुके लंगर आदिके सेवनमें व्यतीत करते। श्रीगुरुजीका अदब सस्कार भी ऐसा किय करते कि जो साधारण मनुष्यसे कभी न बन पडे। एक दिनका वृत्तान्त है कि आप श्रीगुरुजीके साथ साथ कहीं स्वाभाविक चले जानथे तो अकस्मात् दक्षिणबाहुके हुलारेसे अपना हाथ श्रीगुरुजीसे किञ्चित आगे बढासा प्रतीत हुआ। आपने उसीदिनसे उस हाथको

निरर्थक जानकर उसको शुभक्रियाके अग्रणीय होनेका अनाधिकारी जान लिया। श्रीगुरुसेवामें नियमके ऐसे पक्षपाती थे एक दिनका वृत्तान्त है कि शीतकालके दिनोंमें एक दिन अति वर्षा होरही थी। वायु भी अपने पूर्णवेगसे चलरहा था। रात्रिभी ऐसी अन्धेरी थी कि अपना हाथ पसारा आपहीको दिखना कठिन था। परन्तु यह अपना नित्य कृत्य करनेके लिये कटिबद्ध हुए। प्रतिदिनकी तरह गगरा लेकर दरयाय व्यासासे जललेने चलपडे। बहुतही कठिनतासे जब जलभर कर पीछे ग्राममें आये तो प्रत्येक स्थलके पानीसे भरजानेसे एक कुविन्द (जुलाहा) की खाडीमें। कीलकसे ठोकर खायकर गिरपडे परन्तु जलका गगरा न उलटने दिया प्रातःकालमें गिरनेकी आवाज सुनकर घरमेंसे कुविन्दने कहा कि ऐसे अन्धेरेमें प्रातःकालही कौन गिरपडा है। कुविन्दकी स्त्रीने समारोहके साथ कहा कि ऐसे प्रातःकालमें बेचैन निथावें अमरु बेचारेके सिवाय दूसरा कौन होगा। वही प्रतिदिन दरयासे इस वख्त पानी लेकर आया करता है। इस लिये अवश्य वही गिरा होगा। श्रीगुरुअंगदजी उसकालमें ध्यानावस्थित थे। आपकी एक तान निर्मल चित्तवृत्तिमें भी परम प्रिय शिष्यकी असीम सेवाका आभास पडगया। अर्थात् अपने प्रियशिष्यका जुलाहेकी खाडीमें गिरजाना परन्तु गगराको न गिरने देना जुलाहेकी स्त्रीके अपमानित शब्द श्रवणकरकेभी कुछ मनमें न लाना। इत्यादि सभी वृत्तान्त श्रीगुरुअंगदजीने दिव्यचक्षुसे साक्षात् किया परन्तु उस कालमें उसकी कुछभी चर्चा न चलाई किन्तु प्रतिदिनकी तरह जब कवोष्ण जल तैयार हुआ तो आपने शिष्यकी सूचनासे स्नान किया पश्चात् नित्य कृत्यके अनन्तर दर्बार लगा तो श्रीगुरुअंगदजीने उस तन्तुवायकी स्त्रीको जिसने प्रिय शिष्यको प्रातःकाल कुछ अपमानित वचन बोले थे बुलाया। और सैकडों शिष्यगणके भरे दर्बारमें उस जुलाहेकी स्त्रीसे श्रीगुरुअंगदजीने आप श्रीमुखसे पूछा कि बाई आज प्रातःकाल तुमने हमारे अमरदासको क्या बोलाथा?

स्त्री भयभीत हुई परन्तु फिर श्रीगुरुजीने धीरेसे कहा कि बाई डरो मत तुमको कुछ नहीं कहा जायगा । किन्तु जो शब्द तुमने प्रातःकाल बोलेथे उन्हींको अबभी बोलदो । शिष्यमण्डल सभी इस वार्तासे अपरिचित था । इसलिये सभीके चित्तमें विशेष वृत्तान्त जाननेकी इच्छा हुई । परम गुरुभक्त श्रीगुरुअमरदासजीभी उस कालमें वहांही नीचे नारकर विराजे थे । तो जुलाहेकी स्त्री बोली गुरुजी ! हमलोग गरीब हैं, इस लिये बोलना चालना भी अच्छी तरह नहीं आता । परन्तु आज प्रातःकाल तो जब अन्धेरेहीमें आपका सेवक हमारी खाडीमें गिरपडा है तो मैंने अपने पतिके पूछनेसे केवल इतना मात्र कहा है कि इस कालमें बेचारे अमरु निथावेंके सिवाय और कौन होगा । इसपर जो आपकी इच्छाहो कीजिये हम लोग तो आपके गुलामोंके गुलाम हैं । श्रीगुरुअंगदजी जुलाहीके यथावत् वचन सुनकर बहुतही प्रसन्न हुये । और सिंहासनसे उठकर गद्गद्कण्ठ नेत्रोंसे प्रेमनीर बहाते हुए भरे शिष्यमण्डलमें अपने परमप्रिय शिष्य अमरदासको उठाकर हृदयसे लगालिया । और श्रीमुखसे उच्चारण किया कि यह अमरु नहीं है यह गुरु अमरदास है । यह निथावां नहीं है किन्तु निथावोंका स्थानदाता है । यह निमाना नहीं है किन्तु निमानोंका मान प्रदाता है । यह निराश्रित नहीं है किन्तु निराश्रितोंका आश्रय दाता है । उसीदिन श्रीगुरुअंगदजीने विधिपूर्वक गुरुगादीका तिलक संवत् १६०९ विक्रमीमें श्रीगुरुअमरदासको देदिया । और आप उसी वर्षमें थोडेदिन पीछे परमधाम प्रयाण करगये । जब श्रीगुरुअमरदासजीको गुरुगादी मिली तो इन्होंने अपना निवासस्थान शहर गोमन्दवालमें जो कि व्यास नदीके तीरपर है नियत किया । यह शहर संवत् १६०३ विक्रमीमें श्रीगुरुअंगद साहिबजीके प्रयत्नसे दरया व्यासाके तीरपर बसाया गया था । प्रथम इस शहरको एक गोयन्दा नामक क्षत्रियने बादशाहोंसे भूमि खरीदकर बसाया था । परन्तु उस स्थानमें उसको भूतप्रेतोंका तथा लुटेरोंका बहुतही भय रहाकरता था

गोयन्दाने ग्रामका बसते रहना असम्भव जान लिया था । लाचार होकर श्रीगुरुअंगदजीके पास आया तो उन्होंने अपने हाथकी छडी देकर अपने शिष्य अमरदासको उस ग्रामकी रक्षाके लिये भेजा था । पीछेसे गुरुअमरदासको भी वहांही निवासके लिये आज्ञादी थी श्री-गुरुअमरदासजीके वहां निवास करनेसे सभी लोग आनन्दपूर्वक निर्भय होकर वहां निवास करने लगे । श्रीगुरुअमरदासजीने गुरुगादीपर बैठकर श्रीगुरुनानकजीके सिद्धान्तको बहुतही उन्नति दई । कईएक पहाडी राजोंको भी अपना सेवक बनाया । उनके वहांसे प्रतिवर्ष सहस्रों रुपयोंके तरहतरहके कीमती पदार्थ माल जिनस नकद पूजामें आनेलगे । लंगर सदाव्रत हरवख्त प्रचलित रहाकरता । अमीर गरीब सबको एक जैसा भेदसे विना भोजन बांटा जाया करता श्रीगुरुअम-रदासजी एक भित्तिके बीच गडे खूंटेको पकडकर खडे होकर रात्रि-दिन परमेश्वरका स्मरण किया करते । भाव उसका यह था कि स्वामी के द्वारपर खडे रहना सेवककी सावधानीका सूचक है आपकी आयु बहुत वृद्ध अर्थात् एक शत वर्षकी होनेपर भी आप कभी भी खाटपर पीठ लगाकर नहीं शयन करते थे । श्रीगुरुअमरदासजीकी परमेश्वर परायणताकी प्रख्याति दूर दूरतक पहुँची अनेक साधु सन्त अमीर फकीर दर्शनको आने लगे । लाहौरके रहनेवाला प्रख्यात शेख मुहम्मद ताहरी तथा सयदशाह बिलावल जो कि लाहौरमें प्रतिष्ठित था तथा शहर हजराके निवासी सयदमुहम्मदमुकीमशाह मुकीम तथा ख्वाजा भारी यह सभी समय २ पर गुरुअमरदासजीकी प्रशंसा सुनकर भेंटकरने मिलनेको आये यह सभी उसकालमें करामती तप-स्वी फकीर कहलाते थे परन्तु श्रीगुरुअमरदासजीके मिलनेसे उनको बहुत आनन्द हुआ और हृदयसे श्रीगुरुजीको अपना पूज्य समझने लगे । जब सब फकीरोंकी अनेक तरहकी ज्ञान चर्चाकी बातचीत हो चुकी तो सबने मिलकर श्रीगुरुजीसे पूछा कि आप ऐसे ब्रह्मनिष्ठ आत्मदर्शी होकर भी ऐसा तपश्चर्य्याका क्लेश क्यों उठाते हैं ।

श्रीगुरुजीने उसपर एक कृतज्ञ दीनपुरुषका उदाहरण उनको सुनाया। कहा कि एक दीनपुरुष प्रातिदिन बाजारमेंसे खाक बटोरकर छान बीन धोय उसमेंसे कुछ खानेको पैदा करलिया करता था। एकदिन एक रसायनवत्तो महापुरुषने उसको खाक छानते देखा तो उसके ऊपर दयार्द्र होकर एकरत्न उसकी खाकमें फैंक दिया। उसने उसको निकालकर बेंचा तो कई सहस्र रुपया उसको मिला। परन्तु उसने खाक छानना फिर भी न छोडा। थोडेदिन पीछे उसी महापुरुषने पूछा कि क्या अब भी तुम दरिद्री हो जो खाक छाना करते हो। उसने उत्तर दिया कि अब दरिद्री तो नहीं। परन्तु जिस कृत्यके प्रभावसे मेरा दरिद्र दूर हुआ है अब मैं यदि उसका तिरस्कार करूं तो कृतज्ञताकी हानि होती है। इस लिये मैं इस कृत्यको छोडना नहीं चाहता। श्रीगुरुजीने कहा कि यही हाल हमारा भी है। जिस तपश्चर्य्याके प्रभावसे हमको ऐसा उच्च पद लाभ हुआ है उसको हमारा भी छोडनेको मन नहीं चाहता। फकीर लोग श्रीगुरुजीके इस प्रत्युत्तरसे बहुत प्रसन्न हुए। फिर सभी फकीरोंने मिलकर श्रीगुरुजीसे मोक्षमार्गका प्रश्न किया। अर्थात् यह जीव मुक्त क्योंकर होसकता है। श्रीगुरुजीने उत्तरदिया कि सांसारिक वासनाओंका परित्याग करके केवल परमेश्वर परायण होना तथा उसकी रजामें सदा प्रसन्न रहनाही मोक्षका सरल मार्ग है। इत्यादि और भी अनेक तरहकी चर्चा वार्ता उनलोगोंके साथ हुई। पीछे श्रीगुरुजीने सबको सत्कार पूर्वक विदा किया। श्रीगुरुअमरदासजीकी जोजो वाणी वर्तमानमें श्रीगुरुग्रन्थ साहिबजीमें विद्यमान है। वह प्रायः किसी न किसीके उद्देशसे उपदेश हीके लिये समय २ पर उच्चारण करी गई है। दिनचर्य्या इनकी भी अपने पूज्य श्रीगुरुनानकजी या श्रीगुरुअंगदजीके समानही हुआ करती थी। अर्थात् नियत समय पर भजन पाठ स्नान ध्यान लङ्गरमें दृष्टि दरबार लगाकर दोनों वक्त उपदेश इत्यादि सभी व्यवहार व्यवस्थापूर्वक हुआ करते थे। सबके भोजन होजानेके

पश्चात् श्रीगुरुअमरदासजी आप थोडासा दुग्ध चावल या दलिया भोजन करा करते । उसके पश्चात् कुछ देरतक गोपाल नामक पण्डितसे उपनिषदोंकी या और वेदान्तोंके ग्रन्थोंकी कथा श्रवण किया करते एकवारका वृत्तान्त है कि जिस गोयन्दे नामक क्षत्रियने श्रीगुरुजीको यहाँ लाकर बसाया था उसके मरणेके पीछे उसके पुत्रने श्रीगुरुअमरदासजीके ऊपर हाकिमके पास फिरआदकरी कि मेरे पिताने इनको यहाँ पर एक घर देकर बसाया था । अब यह सारे ग्रामहीके मालिक बनगये हैं अनेक मकान हवेलिएँ बनवाली है । और अब एक हमारे बागमें बावली भी बनवा रहे हैं । आशा है कि मेरी प्रार्थना सरकारमें स्वीकार हो और मेरा हक्क मेरेको मिले । हाकिमने मुकद्दमा पेश किया श्रीगुरुजीने अपने एक शिष्यको मुखत्यारनामा देकर भेजा । वहाँपर हाकिमने दोनों तरफसे सबूती पूछी तो वादीने उत्तरदिया कि मेरे पिताके नामहीसे ग्रामका नाम है। प्रतिवादीने कहा कि इसके पिताने श्रीगुरुजीको अपनी इच्छासे बुलाकर ग्राम अर्पण किया था । इस वार्ताको उस प्रान्तके सभी लोग जानते हैं हाकिमने ग्राममें आनकर फैसला करनेकी तारीख डाली शिष्यने आनकर सारा मुकद्दमेका वृत्तान्त श्रीगुरुजीको सुनाया तो श्रीगुरुजीने । स्वाभाविकही कहा कि गरदन टूटा हाकिम हमारेसे क्या सबूत माँगता है हमारा सबूत तो यही भूमि है । पीछे समयपर हाकिमने आनकर फिर मुकद्दमा पेश किया तो अनेक अच्छे २ लोगोंने कहा कि इसके पिताने आप प्रसन्नता पूर्वक श्रीगुरुजीको यह ग्राम अर्पण किया था । अब यह अपनी मूर्खतासे भूखा मरता है अनेक तरहकी झूठी सच्ची बातें बनाता है । बहुत लोगोंकी रायदेखकर मिरजा जाफरबेग हाकिमने मुकद्दमा खारज करदिया । और गोयन्दवालसे लाहौरको पीछेजाते मार्गमें अपनी घोडिसे गिरकर उस की गरदनभी टूटगई । उसीसे थोडेदिनपीछे मरभी गया । श्रीगुरुजीका उच्चारण किया बचनभी पूर्णहुआ । इस वार्ताकी लोगोंमें बहुत

चर्चा उडी कि मिरजा जाफरबेगके बल गुरुअमरदासजीके वचनसे मरगया है। उसीसे उसका पुत्र मिरजा ताहरबेगखान भयभीत होकर श्रीगुरुजीके पास भेटलेकर अपराध क्षमा करवाने आया। आकर बहुत नम्रतापूर्वक कहा कि मैं आपका सेवक हूं। मेरेपर आपकी सदा मेहरबानीकी दृष्टि रहनी चाहिये। श्रीगुरुजीका मुरीद बनगया। और जब अपने पिताके अधिकारपर नियत हुआ तो उसने बावली खुदवानेमें श्रीगुरुअमरदासजीको बहुत सहायतादई। और थोडे दिन पीछे जब बादशाहके कहनेसे किले चित्तौडपर गया तो जानेकालमें श्रीगुरुअमरदासजीकी ऋद्धिसिद्धि करामातकी प्रशंसाकी चर्चा बादशाहके पास करता भया। और बादशाहको यहभी कहा कि यदि आप इनकी कुछ मनौत मानलें तो चितौडका किला अभी टूट जावे। उसकालमें बादशाहने कुछ मनौत मनमें श्रीगुरुजीकी मानली। दैवात उसी चढाईमें वह किलाभी टूट गया। श्रीगुरुअमरदासजीकी प्रकृत्तिमें बहुतही सरलभाव था। इनकी सेवा करनेवाले अनेक पुरुषोंकी ऋद्धिसिद्धिकी प्राप्ति हुई है। इनकी ऋद्धिसिद्धि करामातकी अनेक तरहकी विचित्रबातें सूर्यप्रकाशादि बडे २ ग्रन्थोंमें विद्यमान है। ग्रंथबढनेके भयसे यहाँपर उनका लिखना उचित नहीं समझा है। इन्होंने भी अकबरबादशाहके बाईस सुबोंकी तरह बाईस गादी नियत करी थी जिनका सविस्तर वृत्तान्त आगे लिखा जायगा। संवत् १६०० विक्रमीमें श्रीगुरुअमरदासजी हरिद्वारके स्नानके लिये शहर गोयन्दवालसे चलकर शहर नूरमहल होते हुये कुरुक्षेत्र जो कि, हिन्दूलोगोंका प्रख्यात तीर्थ स्थल है वहाँ जायाविराजे वहाँके पण्डित तथा अनेक तरहके साधुसन्त आपके दर्शनको आये। और चर्चा वार्ता करके अन्त सभी आपके गुणोंके गौरवकी श्लाघा करने लगे। और वस्तुतः अपनेको इनकी कृपाका पात्र समझने लगे वहाँसे चलकर दरिया यमुनासे पार होकर इमली नामक ग्राममें पहुँचे तो ठेकेदारने प्रतिव्यक्ति सवा रुपया महसू-

लका आपसे माँगा। क्यों कि,इनके साथ एक भारीशिष्य यात्रियोंका समुदाय था। श्रीगुरुजीने महसूल देनेसे इनकार किया कहा कि हम फकीरोंसे तो धर्मराजकी भी महसूल मांगनेकी शक्ति नहीं है। और तेरेको हम महसूल कैसे देवें। ऐसे कहकर वहीं मुकाम करदिया। इनको देखकर और यात्री लोग भी महसूलेस बँचनेके लिये वहाँही इनके आसपास उतरने लगे। इस वार्ताकी खबर श्रीगुरुजीके परम-सेवक दीवान टोडरमल्लद्वारा अकबरबादशाहके कानमें पहुँची तो उसने उसी वक्त ठेकेदारके नाम महसूल माफीका परवाना लिख भेजा। जब ठेकेदारके पास शिष्यगणके समेत श्रीगुरुजीके महसूल माफीका परवाना पहुँचा और सब लोगोंको खबर हुई कि बादशाहने श्रीगुरुअमरदासजीको शिष्योंसमेत महसूल माफीका हुकुम भेजा है तो आसपासके सभी यात्रीलोग श्रीगुरुजीका प्रताप देखकर शिष्य-बन गये। और आपके साथ बिना महसूल दिये मेलेमें चले गये ठेकेदारका इसमें बहुत नुकसान हुआ वह वहांसे अपनी हक्कदारीकी प्रार्थना करनेके लिये बादशाहके पास दिल्लीमें आया। पीछे विना रोक टोक सभी यात्रीलोग स्नान करके अपने अपने घरोंको चले आये श्रीगुरुअमरदासजीने २१ माघ संवत् १६१९ विक्रमीमें गंगाजीसे फिर अपने निवासस्थान गोयन्दवालमें आनकर बावली तैयार करवानेका प्रयत्न किया है। उनही दिनोंमें अकबरबादशाहने चित्तौडगढके किलेमें जयमल्ल तथा फत्ता इन दोनों भाई राजपूतोंसे लडाई प्रचलित कर रक्खी थी बहुत मुद्दततक लडाई चली परन्तु किला फतह न हुआ। अन्तमें बादशाह दुःखी होकर अपनी सारी फौजपर क्रुद्ध हुआ। और पीरोंफकीरोंकी भी अनेकोंकी मनौत मानने लगा। तो दीवान टोडरमल्लने जो कि परम श्रीगुरुजीका सेवक था कहा कि अय बादशाह आपके बडोंको गुरुनानकसाहिबजीके आशीर्वादसे हिन्दो-स्तानमें फतह मिलीथी। इस लिये अब यदि आपभी उनके स्थानापन्न श्रीगुरुअमरदासजीकी कुछ मनौत माने तो आशा है कि, अवश्य

उनके आशीर्वादसे आपका विजय होवे । बादशाहने उसीकालमें एक सरहन्दनिवासी प्रतिष्ठित क्षत्रिय अपने कारवारी भगवान्दासनामकको कुछ भेंट देकर श्रीगुरुअमरदासजीके पास अपनी तरफसे प्रार्थनाके लिये भेजा । कि आप कृपा करके मेरे हालमें आशीर्वाद करें कि मैं फतहयाब होवों । भगवान्दासने जाकर बादशाहकी मुखकी वैसेही प्रार्थना कही तो श्रीगुरुअमरदासजीने कहा कि जब हमारी बावलीका तलफूटेगा । तब किला चित्तौडका टूटेगा । इस वचनको बादशाहने सुनकर अपनी तरफसे कारीगर भेजकर श्रीगुरुजीकी बावलीका तल संवत् १६१६ विक्रमीमें तोडवा डाला । उसीदिन उधर चित्तौडका किलाभी फतह होगया । इत्यादि अनेक बातोंसे अकबरबादशाह श्रीगुरुअमरदासजीका तनमनसे सेवक बनगया । और अनेक तरहके अच्छे २ पदार्थ श्रीगुरूजीकी सेवामें समय २ पर भेंटकी तौरपर भेजने लगा । फिर जब अकबरबादशाहने संवत् १६२२ विक्रमीमें दिल्लीसे लाहौरकी तरफ जानेका इरादा किया तो मार्गमें शहर गोयन्दवालमें श्रीगुरुअमरदासजीके दर्शनको भी गया । और अनेक तरहकी सुन्दर२वस्तु तथा नगद पदार्थ श्रीगुरुजीकी भेंटमें अर्पण किये और परगना झूभालकी १२ग्रामकी आमदनी श्रीगुरुजीकी भेंटमें माफा जागीरकी तौरपर देनी चाही । परन्तु श्रीगुरुअमरदासजीने ग्रामोंका माफीलेना स्वीकार न किया और कहा कि गुरुघरको दुनियाँके पदार्थोंमें उलझना जागीरदार बनना किसीके पराधीन करना उचित नहीं है । जब तुम बादशाह लोग हमको मानतेहो तो हम खुदशाहनशाह हैं । फिर हम थोडीसी जागीर अपनी जुदा लेकर क्या करेंगे ऐसा कहकर जो कुछ नगद माल पांच सात दीनार (मुहरें) बादशाहने श्रीगुरुजीकी भेंटमें रखी थी वहभी उसीकालमें उठाकर गरीबोंको बाट दई । और अपने लंगरसे कडाह प्रसाद (हलुवा) मँगवाकर जितने बादशाहके साथ मनुष्य थे सबको पेटभर खिलादिया बादशाहने भी उसमेंसे थोडा लिया ।उसीवक्त खाकर विचारा कि गुरुसाहिब बहुत

बूढे हैं । इसीलिये ऐसा नरम खाना खाते होंगे श्रीगुरुजीकी भेंट पूजा करके बादशाह लाहौरको चलागया । पीछे एकदिन शिष्यलोगोंने मिलकर श्रीगुरुजीसे पूछा कि गुरुजी शिष्यको अपने गुरुके पास कैसे रहना चाहिये । श्रीगुरुजीने कहा कि शिष्यको सदा अपने गुरुकी आज्ञा प्रमाणे । चलना चाहिये । नित्यप्रति पिछली रात्रिमें उठकर श्रीगुरु उपदिष्ट गुरुमंत्रका जपकरना चाहिये और चित्तके स्थिर करनेके लिये विशेषकर श्रीगुरुकी मूर्तिका ध्यान करना चाहिये । और परमेश्वरको सर्वदा सर्वव्यापी जानकर उसका भजन स्मरण चलते फिरते बैठते उठते प्रतिक्षण करना चाहिये । उस सर्व अन्तर्यामी परमात्माकी भाविमें भी सदा प्रसन्न रहना चाहिये । और विशेषकर परधन परनारी जो कि इस मनुष्यको गहरे दुःखके खातमें डालनेवाले ह उनसे बचे रहना चाहिये बिना छल कपटके अपने सच्चे श्रमसे जो कुछ मिले उसीमें पेटभरके परमेश्वरका धन्यवाद उच्चारण करना चाहिये । प्रत्युत खानेसे अधिक मिले तो परमेश्वरकी अपनेपर पूर्ण कृपा जानकर दशमांश उसमेंसे परमेश्वर निमित्त अतिथि अभ्यागतोंको बाँटना चाहिये । और शिवाय एक सर्वान्तर्यामी परमात्मा तथा अपने गुरुके ।कसा दुनियाँकी तुच्छ पदार्थोंके लिये किसीके आगे शिर नहीं झुकाना चाहिये । परन्तु अतिथि अभ्यागत साधु सन्तोंकी सेवा पूजा यथायोग्य करनी चाहिये । और स्त्री धन पुत्रादिक सांसारिक पदार्थोंको परमेश्वरके जानकर इनपर ममत्व बुद्धि भूलकर भी नहीं करनी चाहिये क्यों कि ममताका फल शेषमें दुःखके शिवाय दूसरा नहीं होता । और जिस पदार्थके खाने या पीनेसे शरीरमें क्लेश हो तथा मन विकृत हो उनसे बचेरहना चाहिये। और जिस कार्य्यके करनेसे लोकमें अपना अपवाद (निन्दा) होनेलगे उस कार्य्यसे भी दूर रहना चाहिये । इत्यादि अनेक सद्गुणोंका समुदाय गुरुके पास निवास करनेवाले पुरुषमें होना चाहिये । शिष्य लोग श्रीगुरुजीके उक्त उपदेशको सुनकर बहुत प्रशन्न हुए । और अनेकों पुरुषोंने श्रीगुरुजीकी

शिक्षाके अनुसार सद्गुणोंको धारणकर अखण्ड मुक्तिमार्गका लाभ किया। श्रीगुरुअमरदासजी शहर गोयन्दवालमें जबतक गुरुगादीपर विराजमान रहे हैं। तबतक माता पिताके होते किसीका बच्चा बच्ची मृत्युको प्राप्त नहीं हुवा है। उसका कारण यह है कि जब आपने शहर गोयन्दवालमें जाकर प्रथम निवास किया है तो उसके कुछ दिन पीछे एक विधवा ब्राह्मणीका तेरह चौदह वर्षका अतिसुन्दर सुशील पुत्र मरगया था वह विचारी श्रीगुरुअमरदासजीके समीपवर्ती घरमें रहाकरती थी। और प्रतिदिन अपने पुत्रके सद्गुणोंको स्मरणकर कर रोती रहती थी। एक दिन ध्यानावस्थित श्रीगुरुजीके कर्ण तक उसकी आर्त स्वरका नाद पहुँचा। श्रीगुरुजीने दयार्द्र होकर पूछा कि यह कौन दीर्घ आर्तस्वरसे रो रहा है। एक सेवकने उस ब्राह्मणीका सब वृत्तान्त श्रीगुरुजीको सुनादिया। तब श्रीगुरुजीने उस ब्राह्मणीके दुःखसे दयार्द्र होकर उसीकालमें परमेश्वरके आगे प्रार्थना करी कि हे परमात्मन्! हे दीन बन्धो! हे दयानिधे! जबतक इस दासका शरीर इस लोकमें विद्यमान है तबतक यह दूसरे किसीको ऐसा दुःख पीडित कभी न देखे या सुने जैसे कि यह ब्राह्मणी दुःखी है श्रीगुरुजीकी शुद्धस्वान्तसे करी हुई प्रार्थना परमेश्वरके दर्बारमें उसी वक्त स्वीकार हुई। इसलिये जबतक आप शहर गोयन्दवालमें विद्यमान रहे मातापिता होते किसीकी भी सन्तान मरणको प्राप्त नहीं हुई श्रीगुरुजीके सत्वकालमें अनेक दूर २ के लोग जिनकी सन्तान नहीं बचा करती थी गोयन्दवाल शहरहीमें आकर वसगये थे। इसलिये शहर बहुतही आबाद होगया था।

श्रीगुरुअमरदासजीकी बीबी भानी नामक पुत्रीका विवाह संवत् १६१२विक्रमीमें श्रीगुरुरामदासजीसे करदिया गया था उसके पश्चात् वही श्रीगुरुअमरदासजीकी सेवा भक्तिमें तनमनसे तत्पर हो गये थे। श्रीगुरुरामदासजीने श्रीगुरुअमरदासजीके शिष्य बनकर अपने शिष्य भावके अनेक परिचय दिये थे। बीबी भानी तथा श्रीगुरुरामदासजी

दोनोंही श्रीगुरुअमरदासजीको परमेश्वरसे भी अधिकमाना करते थे इनकी सेवा भक्ति प्रेमको देखकर अनेक लोग आश्चर्य होते थे और साथही यह भी कहा करते थे कि हरएकसे ऐसा होना कठिन है। इसलिये अन्तिम अवस्थामें श्रीगुरुअमरदासजीने प्रसन्न होकर तथा करणीयकार्य्यका निर्वाहक जानकर प्रचलित गुरुगादीका उत्तराधिकारी श्रीगुरुरामदासको बनाया । और आप संवत् १६३१ विक्रमीमें मंगलके दिन भाद्रपद शुक्ल पूर्णमासीके रोज दोघटिका रात्रि शेष रहे परम धामको प्राप्त हुये।

श्रीगुरुअमरदासजी ६२ वर्षकी आयुमें श्रीरुअंगदजीके सेवक बने और बारह १२ वर्षतक उनके चरण सेवनसे गुरुगादीका अधिकार मिला। उसके पश्चात् २२ वर्षतक गुरुगादीपर विराजकर करणीय कार्यको यथायोग्य किया । इस रीतिसे समग्र आयुः आपकी ९८ वर्ष तीन मास तेरहदिनकी परिमित थी । शहर गोयन्दवालमें दो तीन स्थान श्रीगुरुअमरदासजीके अबतक प्रख्यात हैं । एक तो चौबारा साहिबके नामसे प्रसिद्ध है यहाँपर श्रीगुरुजी तपस्या किया करते थे। दूसरा बावली साहिब है। इसकी ऊपरसे लेकर पानीतक चौरासी सीढियाँ हैं यह चौराशी सीढी श्रीगुरुजीने स्वयं आज्ञा देकर बनवाई है। बनवाने कालमें अनेक शिष्यलोगोंने श्रीगुरुजीसे प्रश्नकिया कि दीनन्बधो ! आप इस बावलीकी चौरासीही सीढी क्यों बनवाते हैं न्यून या अधिक क्यों नहीं । श्रीगुरुजीने उत्तर दिया कि भाई चौरासी लक्ष जीवयोनि है । कर्म्म चक्र वेगसे इस जीवको सभी भोगनी पडती हैं। परन्तु यदि कोई अधिकारी पुरुष इस बापीसे स्नान कर प्रत्येक सीढीपर एक एक श्रीजपसाहिबके पाठ कर चौरासी स्नान तथा चौरासी जप[1] साहिबके पाठ एक दिनमें श्रमसे पूर्ण करे

(१) श्रीगुरुनानक निर्मित 'जापसाहिब' नामक एक वाणीरूप मंत्र विशेष है।

तो इस पवित्र अनुष्ठानसे उस अधिकारी पुरुषकी एकही दिनमें चौरासी कट जाती हैं। अर्थात् वह चौरासीलक्ष जीव योनिके चक्रमें फिर नहीं आता। किन्तु इसी शरीरमें या मनुष्यके शरीरान्तरमें अंतःकरण शुद्धिद्वारा ज्ञानका लाभ करके परमधामको प्राप्त होता है श्री गुरु अमरदासजीकी वावली गोयन्दवाल शहरसे दक्षिणके प्रान्तमें है। यहाँ पर एक सदा बरत लंगर हरवक्त प्रचलित रहता है। और प्रत्येक वर्षमें दो मेले भी भरते हैं। एक वैशाखकी संक्रांतिका और दूसरा भाद्रशुक्ल पूर्णमासीका भाद्रशुक्ल पूर्णमासीके दिन यहाँपर सैकडों मन अन्न परिपाक करके गराव अमीर जो ले सबको समान रूपसे दिया जाता है। इसी शहरमें श्रीगुरु अमरदासजीकी वंशके भल्ले क्षत्रिय बावेलोगभी बहुतसे निवास करते हैं।

इतित्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥२४॥

श्रीगुरु रामदास साहिबजी बादशाही ॥ ४ ॥

श्रीगुरुरामदासजीका जन्म २२ मास कार्तिक वदी द्वितीया संवत् १५९१ विक्रमीमें चारघटिका दिनचढे शहर लाहौर चूनीमण्डीमें शेर-शाह बादशाहकी अमलदारीमें हरिदासनामक सोढी क्षत्रियके घर माता दयाकुँवरिके गर्भसे हुआ है। आपकी छोटीही अवस्थामें आपके पिताका परलोक वास हुआ। व्यापारादि सम्बन्धि उपलाभके अभा-वसे व्यवहारमें संकोच होने लगा। तथापि आपके भाविप्रतापका प्रभाव प्रथम बालकपनहीमें चेहरेपर चमका करता था। बहुत छोटे-पनसेही आपका साधुमहात्माओंसे प्रेम तथा परमेश्वरकी भक्तिमें अनु-राग था। यथा सम्भव कार व्यवहार भी सीखा करते थे। जब आप चौदह पन्द्रह वर्षकी आयुके हुये तो लाहौरके शिष्यलोगोंके साथ मिलकर आपभी श्रीगुरु अमरदासजीके दर्शन करनेके लिये शहर गोय

न्दवालमें गये । श्रीगुरुअमरदासजीका विलक्षण प्रताप विलक्षण स्वभाव विलक्षण यश विलक्षण व्यवहार तथा विलक्षण अनुग्रह देखकर श्रीगुरुरामदासजी कुछदिनके लिये वहाँही निवास करने लगे । श्रीगुरुजीके मकानोंमें झाडूदेना पानी भरना लंगरकी सेवाकरनी आये गये साधु अभ्यागतकी सुश्रूषा करनी इत्यादि अनेक तरहकी सेवा वहाँ रहकर श्रीगुरुरामदासजीने करनी आरम्भ करी । जब कभी सेवासे समय शेष मिलता तो श्रीगुरुजीके समीप आनकर हाथ जोडकर खडे रहते या नमस्कार करके किनारे होकर बैठजाते और वचनविलास भजन कीर्तन श्रवण किया करते । ऐसेही एक दिनका वृत्तान्त है कि श्रीगुरुअमरदासजीके घरों माता रामकुँवरिजीने अपनी पुत्री बीबी भानीजीके विवाहका प्रस्ताव किया । श्रीगुरुअमरदासजीने पुरोहितको बुलाकर अन्तःपुरमें भेजा कि योग्यताके अनुसार पूछभालकर जैसा कहें कहीं लडका निश्चय कर आवो । पुरोहितने अन्तःपुरमें जाकर माताजीसे पूछा तो उन्होंने कहा कि जितना बडा लडका वह राम दास नामक श्रीगुरुचरणोंमें सेवन किया करता है । बस उतनी उमरका वैसाही होना चाहिये । पुरोहितने माताजीका कथन श्रीगुरुजीको आनकर सुनाया । तो श्रीगुरुजी प्रसन्न होकर कहने लगे कि औरभी अच्छा हुआ । अब दूर जानेका क्या काम है । उसी वक्त श्रीगुरुअमरदासजीने अपने सेवक रामदासको बुलाकर पूछा कि तुमको कुछ अपने जातिगोत्रकाभी स्मरण है । श्रीगुरुरामदासजीने कहा कि गुरुजी मेरा पिता तो मेरी छोटीही उमरमें मरगया था इसलिये मैं कुछ अच्छीतरह सीखा नहीं परन्तु इतना मेरेको सुना सुनाया याद है कि, हम सोढिवंशके क्षत्रिय हैं । श्रीगुरुजीने अन्तःपुरसे स्वीकार कराकर उसीदिन लडकेकी माताको सगाईके शकुनका सुसमोचार लाहौरमें भेज दिया । और थोडे दिन पीछे संवत् १६१२ विक्रमीमें बीबीभानीका श्रीगुरुरामदासजीसे विवाहभी करदिया । और विवाहके पश्चात भी इनकी इच्छाके अनुसार श्रीगुरुअमरदासजीने

आपको शहर गोयन्दवालहीमें रक्खा। श्रीगुरुरामदासजीके यौवना पन्न होनेपरभी विशेष खाने पीने या पहरनेका कुछभी शोक न था। किन्तु पाठपूजन जप तप या सन्तगुरुसेवन इनही कामोंमें रात्रि होती और दिन चढा करता था आस्तिककी श्रुति आज्ञासे तथा नास्तिककी राजाज्ञासेभी अधिक यह अपने गुरुकी आज्ञाका पालन किया करते थे। श्रीगुरुआज्ञाके आप ऐसे पालन हारे थे कि गुरुके मुखसे योग्य अयोग्य उचित अनुचित सम्भव या असम्भव कुछभी निकले आगेसे सिवाय सत्यवचनके दूसरा शब्द नहीं उच्चारण होता था। श्रीगुरुजीके समीप जाकर धीरेसे शब्द उच्चारण तथा श्वास लिया करते थे। आपकी सौम्य प्रकृति तथा सरल स्वभावसे आकर्षित हुये नरनारीगण अनायासही आपको श्रद्धेय जानने लगपडे थे। जब कहीं गुरुगादीके मिलनेका नाम निशानभी न था उसकालमें भी अनेकलोग श्रीगुरुअमरदासजीके दर्शनके अनन्तर इनका शैन भी अति उत्कंठित होकर किया करते थे। श्रीगुरुरामदासजीके गुरुगादी मिलनेका कारण विषेशरूपसे इनका गुरुआज्ञाका पालनही कहा जासकता है। एकदिनका वृत्तान्त है कि श्रीगुरुअमरदासजी अपने कईएक शिष्योंके साथ स्वभाविकही अपनी बावलीपर आनविराजे। उसकालमें श्रीगुरुजीके मोहरी तथा मोहन नामक दोनों पुत्र भी साथही थे। आपने स्वाभाविकही श्रीमुखसे कहा कि यदि यहाँपर कोई ऊंचासा चबूतरा बनजाता तो बैठनेका अच्छा आराम होता। श्रीगुरुजीकी ऐसी मध्यमराशीकी आज्ञा सुनकर दोनों पुत्रोंने गुरुरामदासजीने तथा औरभी कईएक शिष्योंने अपने अपने जुदा २ ऊंचे ऊंचे कईएक स्थण्डल तैयार किये। श्रीगुरुजीने सभीको देखकर नापसन्द किया। और फिर बनानेकी आज्ञा करी। फिर तैयार हुये तो फिर नापसन्द हुये। फिर गिराकर फिर बनानेकी आज्ञा हुई। तात्पर्य्य इसीतरह किसीने दोबार किसीने चारबार किसीने छःबार किसीने आठबार तथा किसीने दशबारभी स्थण्डल

गिराकर बनाया । परन्तु श्रीगुरुजीने फिरभी किसीकाभी पसन्द न किया । अन्तमें दुःखी होकर सभी हट बैठे । और आपसमें कहनेलगे कि, गुरुजी अब बहुत बूढे होगये हैं इसलिये इनकी अब बुद्धि ठिकाने नहीं रही है । जो मनमें आवे आज्ञा दिया करते हैं । परन्तु एक श्रीगुरुरामदासजी जिनको गुरुआज्ञापालनही दृढ व्रत था उदा न हुये । जितनीबार आज्ञा होतीरही स्थण्डल बनातेही रहे तथा श्रीगुरुजीके पसन्द न आनेपर गिरातेभी रहे । चित्तमें यही बडा भारी निश्चय था कि, हमको चबूतरेसे क्या काम है श्रीगुरुजीकी आज्ञाका पालन हमारा धर्म है । इत्यादि अनेक तरहके कार्य्योंमें श्रीगुरुअमर-दासजीने अपने प्रियशिष्य श्रीगुरुरामदासजीको अपनेपर दृढभक्तिमान् विश्वासवान् तथा श्रद्धावान् देखकर अपनी गुरुगादीका उत्तराधिकारी बनाया ।

श्रीगुरुअमरदासजीने श्रीगुरुरामदासजीको गुरुगादी देकर आज्ञा करी कि, एक कार्य्य करनेकी आज्ञा हमारे गुरुपरम्परासे चली आती है अर्थात् श्रीगुरुनानकजीने श्रीगुरुअंगदजीको तथा उन्होंने मेरेको यह कहा था कि, इस देशके मध्यप्रान्तमें एक प्राचीन पवित्र तीर्थ है जो कि, दीर्घकालसे लोगोंके चित्तोंके मलिन होनेसे लुप्त होचुका है अब उसका प्रकट करना आवश्यक है । ऐसा कहकर श्रीगुरुअमरदासजी श्रीगुरुरामदासजीको साथ लेकर एक मध्यप्रान्त देशके जंगलमें जहाँपरसे एकबार श्रीगुरुअंगदजीकी बीमारीके निवारणार्थ संजीवनी औषधिकाभी लाभ हुआ था जाय विराजे । मध्यप्रदेशके तुंगनाम ग्रामके सुलतानपिण्ड नामक ग्रामके तथा गुमटाला नामक ग्रामके मध्यभागमें यह कईकोशका जंगल था । उसमें एक बडाभारी तालाब था परन्तु उसमें पानी नहीं रहा करता था । श्रीगुरुजीने उसके किनारेपर डेरा लगाकर आसपासके ग्रामके जिमीदारोंको बुलाया । और वास्ते तीर्थ प्रकट करनेके उनलोगोंसे भूमि माँगी वह भूमि किसी एककी न थी किन्तु बहुतसे जिमीदारोंकी मिश्रित थी । इसलिये प्रसन्नता पूर्वक सबने श्रीगुरुजीका वचन स्वीकार

किया । भूमि लेकर श्रीगुरुअमरदासजीने श्रीगुरुरामदासजीके हाथसे आषाढ मास मिति ५ संवत् १६२९ विक्रमीमें तथा संवत् १०३ नान कशाहीमें शहर अमृतसरकी बुनियाद रखवाई । और नामभी इस-स्थानका 'रामदासपुर, उनहीके नामसे रक्खा । परन्तु मध्यवर्ती सरो-वरके अपूर्व प्रभावसे इस नगरका नामभी अमृतसरही प्रख्यात हुआ। कईलोग श्रीगुरुअमरदासजीके बुनियाद डलवानेसे इस नगरका नाम 'अमरसर' भी कहते हैं । सबसे प्रथम श्रीगुरुजीने अपनेही कुछ मन्दिर वहाँपर निवासके लिये बनवाये । जो कि, अबतक गुरुके महलोंके नामसे प्रख्यात है । उसके पश्चात् श्रीगुरुजीने उन अपने मकानोंके आसपास बावनजातिके लोग बसाये । और उसके पीछे अमृतसर नामक एक भारी तालाव खुदवाया । श्रीगुरुरामदासजीभी अपनी गुरुगादीकी मर्यादाका पूर्णरूपसे पालन किया करते थे भजन पाठ ध्यान स्नान कथा कीर्तन लंगरकी तरफ दृष्टि इत्यादि सभीकार्य्य उचित समयपर सावधान होकर किया करते थे । उपदेशका प्रभाव इनका ऐसा बिलक्षण था कि, हिन्दू मुसलमान जो सुनता शिष्य होजाताथा । इनके समयमें कतिपय यवनोंको छोडकर सारा पंजाबदेशका देशही गुरुनानकके घरका शिष्य बनचुका था । ज्ञान वैराग्य तथा प्रेम भक्तिसे भीनीहुई श्रीगुरुरामदासजीकी पवित्र वाणीका अधिकारी लोग श्रोतेसभी अधिक मान किया करते थे । विशेषकर व्यवहारके अन-न्तर श्रीगुरुरामदासजी प्रायः एकान्तमें भजन स्मरण किया करते। बस इनके सत्वकालतक श्रीगुरुनानकजी गुरुगादीमें किसी तरहकी कुछ अदला बदली लेशभी नहीं हुई है किन्तु वही पुरानी चालीका चाल चलन साधु जैसा सादापन श्रीगुरुनानकजीकी जैसा खुलासापन सभीमें समानरूपसे चला आया । और नहीं किसीके साथ कुछ दंगा बखेडा हुआ । तात्पर्य्य जो चाली श्रीगुरुनानकजीने प्रचलित करी थी उसीकी प्रतिदिन उन्नति होती चली गई परन्तु कुछ फेरफार उसमें किसीने नहीं किया था । सहस्रों लक्षों रुपयोंकी आमदनी

होनेपरभी यही हाल था कि किसी शिष्यने कभी कुछ दिया तो इन कार नहीं न दिया तो किसीने माँगनेकी इच्छा नहीं । परन्तु नकद या जिनस जो कुछ आता था । वह सभी लंगरमें डालकर शिष्य सेवक साधु अभ्यागतों गरीबोंको समान भावसे खिला पिला दिया जाता था इसलिये लंगरमें प्रतिदिन प्रायः अच्छे २ पदार्थही बना करते थे । सैकडों अनाथ अभ्यागत दीन दुःखी लूले लंगडे अन्धे पङ्गु श्रीगुरुजीके लंगरके आश्रय पर श्रीगुरुजीकी शरणमें आन पडे थे । परन्तु सभीको सबके साथ समानरूपसे खान पान भोजन श्री गुरुजीके लंगरसे मिला करता था । कहीं किसीका तिरस्कार या अपशब्द या पंक्तिभेद या न्यूनाधिक या आगे पीछे इत्यादि नीच व्यवहार जो कि सहोदरोंमें भी फूटके मूल है श्रीगुरुजीके लंगरमें उनकी गन्ध भी न थी । श्रीगुरुजीकी गादीपर उदारता ऐसी थी कि एक सौदागरके सेवकने अपनी मनौतके अनुसार श्रीगुरुजीके पहरनेके लिये कै सहस्रों रुपयोंका एक रत्न जडित कंठा श्रीगुरुजीकी भेंटमें लाकर बडे प्रेमसे रखा । उसीकालमें एक मलंग फकीर मांगता हुआ श्रीगुरुजीके पास भी स्वाभाविक दर्शनको चला आया । श्रीगुरुरामदासजीने उस कण्ठेको उठाकर उस फकीरके गलेमें डारदिया । इसपर सौदागर सेवक बहुतही आश्चर्य्य हुआ । श्रीगुरुजीने उसको धैर्य्य दिया और कहा कि, तुमने हमारी भेंट दिया हमको पहुँचा अब हमने इसको दिया तो बुरा क्या है । प्रत्युत तुमको द्विगुण फल होगा । तुमारे एक कण्ठेकी भेंटसे हमभी प्रसन्न हुये । और यह फकीर भी प्रसन्न हुआ । और यदि हम इसको अपने पासही रखलेते तो यह हमारी इच्छासे बिनाही किसी दूसरेके पास अवश्य चलाजाता । ऐसे होनेपर तुम्हारी भेंटका तुम्हारेको द्विगुण फल भी न मिलता और वह तुम्हारी भेंट हमको भी व्यर्थ क्लेशका हेतु होती जो प्राणी सांसारिक पदार्थोंके वास्तव स्वरूपको जानता है वही इनसे कुछ लाभ उठा सकता है । बाकी और सभी मूर्खोंको यह संसारके पदार्थ केवल

क्लेशके हेतु हैं। जो अबुद्ध पुरुष पारद या कपूरके स्वभावको नहीं जानता कि बात सम्पर्कसे विशीर्ण होने वाले हैं। यह स्वयं स्वल्प-कालमें खाली हाथ मला करता है। वैसेही मायिक पदार्थोंकी भी दशा है यह सदा कभी किसीके पास नहीं रहते। किन्तु चलते फिरते हैं। जो पुरुष इनक साथ इनके स्वभावके अनुकूल बर्ताव करता है। उसको यह अनेक तरहसे खिलाते पिलाते भुगाते हैं। और जो इनके साथ इनके स्वभावसे प्रतिकूल वर्ताव करता है। अर्थात् जफाँ मारके इनको स्थिर किया चाहता है। उसको यह स्वयं जाते हुये सताते रुवाते रुलाते हैं। इसलिये हे भाई! पदार्थोंका यथावत् स्वरूप समझकर उनमें लाभ उठाना उचित है। मधुमक्षिकाकी तरह इनमें फंसके मरना या पतंगकी तरह इनमें जलकर मरना या समणिसर्पकी तरह इनके वियोगसे मरना या चन्द्र चकोरकी तरह इनके अलाभसे क्लेश उठाना या स्वाति विन्दु चात्रिककी तरह इनका हरवक्त चिन्तन करना कोई मनुष्यपना नहीं है इत्यादि श्रीगुरुजीके सारगर्भित अनेक भावपूरित सदुपदेशमय वचनोंको श्रवणकर उस सौदागर सेवकके चित्तमें उसीकालमें सन्तोष हुआ। और चरणोंपर शिर धरके कहने लगा कि दीनबन्धो आप दीन दुनियाँके मालिक हैं। जैसा चाहिये वैसा कीजिये। यह दास सदा भूलने वाले हैं। तथा आपके सदुपदेशोंके सदा पात्र हैं। हम लोगों संसारियोंकी दृष्टि सदा तुच्छ रहती है। भलाबुरा शत्रु मित्र रागद्वेष मान अपमान इत्यादि अनेक द्वन्द्व सदा चित्तमें भरे रहते हैं। सिवाय आपके चरणोंके क्षणभर भी संसारके धन्धोंसे आराम मिलना कठिन है। केवल आपहीके चरणोंका भरोसा है।

संवत् १६३३ विक्रमीमें जब अकबरबादशाह दिल्लीसे लाहौरको जाता था तो वह श्रीगुरुनानकजीकी गादीपर श्रीगुरुअमरदासजीके स्थानपर श्रीगुरुरामदासजीकी अनेक तरहकी ऋद्धि सिद्धि करामातकी प्रख्याति सुनकर फिर इनके दर्शनको भी आया। दर्शनके पश्चात्

भेंट पूजा करके श्रीगुरुजीके साथ वार्तालाप करके बादशाह बहुतही प्रसन्न हुआ । और जो जागीर श्रीगुरुअमरदासजीको देना चाहता था वह इनको देनेके लिये फिर प्रार्थना करी । परन्तु श्रीगुरुरामदास-जीने भी उस जागीरका लेना अंगीकार न किया । यही उत्तर दिया कि जमीन फसादका मूल है । इसलिये फकीरोंको इसका सम्बन्ध अच्छा नहीं है । बादशाह बहुतही प्रसन्न हुआ । और मनमें जानने लगा कि सच्चे फकीर हैं फिर बादशाहने खुश होकर कुछ नकद मुहरें और जिनस वास्ते लंगर खरचके भेट किया । और जहां गुरुजीने अमृतसरकी बुनियाद डाली थी उस स्थानको लोग गुरुका चक्क बोलने लग गये थे । बादशाहने आसपासके ग्रामोंकी भूमि अर्थात् सुलतान पिण्ड तुंगे इत्यादि समीपवर्ती ग्रामोंकी भूमि बहुतसी गुरुके चक्कके साथ मिलाकर श्रीगुरुजीको उसका माफीपत्र लिखदिया । और श्रीगुरुजीके ग्रामकी भूमिकी अवधि पृथक् करके निशान लगा दिये । यह बादशाह बहुतही उदार तथा फकी-रोंके सन्मान करनेवाला हुआ है । इसने हिन्दोस्तानकी सहस्रों बिघा भूमि दानमें साधु ब्राह्मणोंको दई है । काशी (बनारस) में अबतक भी अनेक ब्राह्मण इसकी दानकरी हुई भूमिको माफीमें खाय रहे हैं गवर्नमिंट सर्कार भी उनसे अभीतक एक पाई कभी नहीं लेती । बादशाह श्रीगुरुजीको सलाम करके चलागया । पीछे गुरुजीके प्रता-पका अनेक राजसी लोगोंको भी ख्याल हुआ । श्रद्धा भक्ति पूर्वक सेवक तथा मुरीद बनने लगे । तात्पर्य श्रीगुरुनानकजीकी स्थापन करी हुई गादीकी प्रतिदिन चढती कला होती गई । पूर्व पश्चिमके दूर दूर देशके लोग श्रीगुरुजीका यश सुनकर दर्शनको आने लगे जैसे श्रीगुरुरामदासजी तन मनकी सचाईसे श्रीगुरुअमरदासजीके भक्त थे। वैसेही उनके घरों बीबीभानी भी अपने गुरु पिताकी सेवा भक्तिमें किसी तरहसे न्यून न थी । प्रत्युत उसकी पितृभक्ति तथा गुरु सेवा ऐसे शुद्धभावसे है कि अधिकारी पुरुष उससे शिक्षा लाभ करसकें

एक दिनका वृत्तान्त है कि प्रातःकाल बीबी भानी गरम जल करके अपने वृद्ध पिताको स्नान करवा रही थी। जिस चौकीपर श्रीगुरुजी बैठकर स्नान कर रहे थे उसका एक पाया पुराना होनेसे अकस्मात् टूट पडा। बीबी भानीने वृद्धपिताके गिरजानेके भयसे उस चौकीके नीचे अपने पाओंका सहारा देदिया। चौकीका लोहकील बीबीभानीके पाओंमें वेधन करगया। लोहू शमशम प्रचालित होने लगा परन्तु जबतक वृद्ध पिताने स्नान न करलिया तबतक लडकीने 'सी' तक नहीं किया। पीछे पाँवको निकाला तो श्रीगुरुजीने भी देखा। दयार्द्र होकर श्रीगुरुजी बोले हे बीबी ऐसे क्यों किया। बीबी भानीने कहा दीनबन्धो यह शरीर तो सिवाय आपकी किंचित् सेवाको और दूस, रा कुछ नहीं कर सकता है। मेख लग गई है दो चार दिनमें राजी होजायगा। परन्तु आपका शरीर जिससे लक्षों प्राणिओंके कल्याणका सम्भव है। तथा सहस्रों प्राणिओंको आश्रय दाता है। उसका यथायोग्य रहना अधिक लाभ तथा मङ्गलका हेतु है श्रीगुरुअमरदासजी पुत्रीकी ऐसी भावभरी वाणी श्रवणकर बहुत संतुष्ट हुये। और प्रसन्न होकर श्रीमुखसे कहा कि हे पुत्री! तेरेको जो इच्छा होय सो माँगले बीबी भानीजीने कहा दीनबन्धो! आपकी कृपासे मेरेको किसी वार्ताकी त्रुटि नहीं है। फिर श्रीगुरुजीने कहा कि यदि आपका पूर्ण अनुग्रह है तो मैं चाहतीहूं कि यह गुरुगादीका पद जो कि आपने मेरे पतिको प्रदान किया है। मेरीही वंशपरंपरामें रहे श्रीगुरुजीने कहा बीबी यह तूने बहुत कठिन वस्तु माँगी है। क्योंकि गुरुपरंपरा प्राप्त श्रीगुरुनानकजीकी ऐसी हमको आज्ञा नहीं है लडकी चुपरही श्रीगुरुजीने फिर कहा कि पुत्री! यदि तुम्हारी ऐसीही इच्छा है तो ऐसेही होगा क्योंकि हम तुम्हारेको देना कह चुके हैं उससे अब इनकार करना उचित नहीं परन्तु फिर बडोंके वाक्य उल्लंघन करनेका जो फल हुआ करता है वह भी अवश्यही भोगना पडेगा। अर्थात् श्रीगुरुनानकजीका यह नियम-

बाँधा हुआ है कि यह गुरुगादी किसी वंशपरंपरामें न रहे किन्तु अधिकारी देखकर किसीको भी दिया जावे । अब इससे विपरीत होगा तो इस गुरुगादीपर बैठनेवालोंको आराम नहीं मिलेगा । और जो कार्य्य सहजमें सिद्ध होनेवाला था उसकी सिद्धि अब क्लेशसे होगी । लडकी फिरभी चुप रही । श्रीगुरुजीने कहा हे पुत्री ! तूने जैसे इच्छा करी है वैसेही होवो । लडकी प्रसन्न होकर घरमें चली आई । बस इसी कारणसे यह गुरुगादी अब सोढी क्षत्रियोंहीके घरमें रहकर अनेक तरहके उलटपलट करडालेगी । माघमास संवत् १६३४ विक्रमीमें श्रीगुरुअमरदासजीने अपने अनेक शिष्यगणको बुलाकर श्रीअमृतसरजीका तालाव खोदना प्रारम्भ किया । और आपभी अपने करकमलोंसे उसकी कभी कभी मट्टी निकाला करते थे । प्रत्युत अनेक देवता लोगभी आनकर तालाव खोदनेमें श्रीगुरुजीके सहायक हुये । इस वार्ताको पञ्चम गुरु श्रीगुरुअर्जुनजीने श्रीगुरु ग्रन्थ साहिबमेंभी लिखा है । इस तीर्थके प्रकट होनेमें एक विचित्र तथा आश्चर्य्य कारक इतिहास श्रवण होता है । कहते हैं कि, एक दुनीचन्द्र नामक क्षत्रिय मध्यदेशके पट्टी शहरके प्रान्तमें रहाकरता था । पाँच बेटियाँ थीं । अपने २ स्थानपर कोईभी एक दूसरीसे न्यून न थी । परन्तु पाँचवीं सबसे छोटी कुछ औरोंकी अपेक्षा अधिक विचारशील थी । पिताने पुत्रियोंहीकी सन्तानको अपने सुखका हेतु जान रक्खा था । कभी कभी प्रसन्न होकर अपनी बेटियोंसे पूछा करता कि, कहो बेटी तुमको सुख आनन्द प्रसन्न रखनेवाला कौन है ? बडी चार एक स्वरसे कहा करतीं कि, हे पितः ! तुम्हारे जैसा हमहीं सुखी प्रसन्न आनन्द रखनेवाला दूसरा कोई नहीं अच्छे २ भूषण वस्त्रोंका पहरना और रङ्गरंगके खानोंका खाना यह सब तुम्हारीही कृपासे है । हम तुम्हारे तनकी प्यारी बेटी हैं । तु हमारा प्यारा पिता है । इत्यादि अनेक बार पिताने प्रेमकरक पूछा और लडकियोंने उत्तर दिया । परन्तु सबसे छोटीको कदापि उनके साथ न बोलती देखकर पिताने उसको पृथक्

करके पूछा तो छोटी लडकीने उत्तर दिया कि पितः कौन किसका पालक पोषक है । अपने अपने भाग्योंके अनुसार सबको भला या बुरा सुख या दुःख रूप फल भोग होता है । कदापि किसीको किसी के भाग्योंके भागका लेशभी दूसरेको नहीं मिलसक्ता । यह मेरी बहिनें मिथ्याही तेरी प्रशंशा करा करती हैं इनकी इच्छा परन्तु मेरा तो विचार यही है । जो मैंने आपको कह सुनाया है । पुत्रीकी सत्यवार्ताने प्रशंसा अप्रिय पिताको वज्रसम आघात किया । उनही दिनोंमें उसने और पुत्रियोंका विवाह तो अच्छे २ घरवर देखकर किया । परन्तु छोटी पुत्रीको एक अपनी जातिके निराश्रित निर्धन पंगुके साथ विवाह दिया । और साथमें भी एक पाई न दई । प्रत्युत रुष्ट होकर घरसे पंगुके साथ अपनी पुत्रीको बाहर निकालकर कहा कि जाह तो देखूँ तेरा भाग्य कहाँसे आकाशपरसे आनके पडता है । अपने भाग्यपर दृढ विश्वासवती लडकी अपने पंगुपतिको साथ लेकर अनायासही अपने पिताके घरसे चलपडी । कहाँ जाना होगा क्या करना होगा इत्यादि वार्ताका कुछभी चिन्तन न करके केवल अपने भाग्यहीको प्रधान जानकर हर्षशोकसे रहित होकर विचरने लगी । पंगुपतिको एक खोरमें डारकर अपने शिरपर धारण करके ग्राम २ भीख माँगकर निर्वाह करने लगी । प्रतिदिन पतिको एक स्थान बिठलाकर आप ग्रामसे माँगलाया करती । लाकर प्रथम अपने पतिको खिलाती । पीछे आप भोजन करती । और सहजही अपने दैव को स्मरण करती हुई आनन्दमें रहती । सदा ऐसीही चेष्टा कराकरती जिससे अपने पंगुपतिको किसी तरहका क्लेश न होने पावे । ऐसेही माँगती माँगती श्रीगुरुरामदासजीकी प्रख्याति श्रवणकरके दर्शनको चली आई । और उसी अमृतसर तालाबके तीरपर एक बदरीका पेड था जो कि, गुरुजीके लंगरसे भोजन लेनेको गई । पीछे उस पङ्गुने क्या देखा कि उस बदरीके समीपवर्ती पानीमें दो चार काकपक्षियोंने स्नान किया तो उनका वर्ण विपरीत होगया । अर्थात् श्यामवर्णके

काक श्वेत होकर उडगये । पंगु मनमें आश्चर्य्य हुआ । और स्वयंभी उसमें स्नान करनेकी चेष्टा करने लगा । प्रयत्नसे खिसलता खिसलता पानीतक पहुँचा तो उस दिव्य जलका स्पर्श करतेही उसपङ्गुकी काया पलटगई बहुत प्रसन्न होकर वहाँ उसने स्नान किया । वहाँका जल पान किया तो उसका दिव्य शरीर स्वर्णकेसे वर्णका प्रतीत होनेलगा अब यह वह पंगु नहीं किन्तु सर्वांग सुन्दर दिव्य मूर्ति कोई राजकुमार विशेष है । वस्त्र भूषणादि विशेष सामग्राक न होनेसे भी वह अपने शरीर मात्रसेही अपनी योग्यताका सूचक बनगया । जब यह पंगु था तो अनेक विषयासक्त मनुष्योंने इससे इसकी सुन्दरी स्त्री छीन लेनेका प्रयत्न भी किया था । परन्तु इसके दीनभावकी तथा इसकी स्त्रीके पतिव्रत भावकी प्रज्वलित ज्वालामें उन विषयी पुरुषोंका प्रयत्न तूल अकस्मात् भस्म होजाता था । सृष्टिनियमोंको देखकर विद्वानोंके बाँधे हुए "योग्यं योग्येन संबध्यते" इस नियमका तोड डालना परमेश्वरको भी स्वीकार न हुआ । वह सुन्दरी जब श्रीगुजीके लंगरसे भोजन लेकर आई । तो आगे अपने पंगुपतिको न देखकर बहुत दुःखित हुई उस दिव्य पुरुषसे पूछा तो उसने प्रसन्न होकर कहा कि हे सुशीले ! मैंही तेरा पति हूं स्त्री बहुत लज्जित हुई । उसने अपना सभी वृत्तान्त भी कह सुनाया परन्तु उस स्त्रीके चित्तमें विश्वास न हुआ । स्त्रीने यही सोचा कि इसने मेरे लोभसे मेरे आशक्त पतिका घात करडाला होगा बहुत कोलाहलके अनन्तर इस वार्ताकी चर्चा श्रीगुरुरामदासजीके पास पहुँची पति पत्नी दोनोंने अपना २ वृत्तान्त श्रीगुरुजीको निवेदन किया तो श्रीगुरुजीने आप श्रीचरणोंसे चलकर उस पवित्र स्थलका निरीक्षण किया और उस स्त्रीको आश्वासन देकर कहा कि हे भाग्यवती ? यही तेरा पति है तेरे पतिव्रतके प्रभावसे इसका यथायोग्य सुन्दर होजाना कोई असम्भव नहीं है और यह स्थानभी दिव्यभूमि है । बहुत प्राचीन कालसे अज्ञात तीर्थ है यहाँपर रामाश्वमेध कालमें लवकुश दोनों भ्राता अपने पिता रामचन्द्र

आदिके साथ लडे थे। सहित सेनाको सबको मूर्च्छित करके घोडा बाँध अपनी माता सीताके पास लेगये थे तो माताके कहनेसे इन्द्रपुरीसे अमृत लाकर दोनों भाइयोंने फिर सारी सेनाको सजीवित किया था। वही यह अमृतसे सिञ्चित हुई भूमि अब अमृतसरके नामसे प्रख्यात होगी। जिस स्थानपर पङ्गु स्नानकरके दिव्यदेह हुआ था। उसस्थानका नाम श्रीगुरुरामदासजीने दुःख भञ्जनी नियत किया। वे स्त्री पुरुषभी दोनों श्रीगुरुजीके शिष्य होकर श्रीगुजीके नगरमें निवास कर अन्तमें परम पदके भागी हुए। वर्तमानमें श्रीअमृतसर नामक तीर्थका स्वरूप कैसा है इसको हम कहीं आगे प्रसंगसे दिखलावेंगे। परन्तु यहाँपर केवल इतना अवश्य वक्तव्य है कि, यह तीर्थ क्या आर तीर्थोंकी तरह प्राचीन सर्व मान्य है। अथवा आधुधिक कतिपय जनमान्य है। इसका उत्तर यह है कि, किसीभी तीर्थमें तीर्थपना कोई परमेश्वरकी तरफसे या उसके ज्येष्ठपुत्र ब्रह्माकी तरफसे तो स्थापन हुआही नहीं। किन्तु सत्पुरुषोंने जिस २ भूमिको स्वच्छ पवित्र समझा है उसी २ को तीर्थ नामसे पुकारा है। इसी वार्ताको युधिष्ठिरके पूछनेसे महाभारतके बनपर्वके तीर्थयात्रा प्रकरणमें व्यासदेवनेभी कहा है।

प्रभावादद्भुताद्भूमेः सलिलस्य च तेजसः ॥
ऋषीणां संग्रहाच्चैव तीर्थानां तीर्थता स्मृता ॥ १ ॥

अर्थात् अद्भुत प्रभाववाली पवित्र भूमिके बीच स्वच्छ पवित्र जलके किनारेपर जहाँ साधु पुरुषोंका निवास हो उस स्थानका नाम तीर्थ है। यही सभी तीर्थोंमें तीर्थपना है। वह यह व्यासदेवका बांधा हुआ तीर्थका लक्षण श्रीअमृतसरजीमें अनायासही समन्वित हो सकता है। श्रीअमृतसर तीर्थकी भूमिका ऐसा अद्भुत प्रभाव है कि अभिज्ञानभिज्ञ जो स्त्रीपुरुष वहाँ जाता है वहाँसे उसका वैकुण्ठकी तरह कर्मवेगसे विना निकलनेको मन नहीं चाहता और जल वहाँका ऐसा स्वच्छ तथा पवित्र प्रभावशील है कि बलात् पान स्नानकी इच्छा हो

आती है । तीसरा साधु महात्माओंका समुदाय वहाँ इतना रहता है कि जितना और तीर्थोंपर लुटेरों पण्डोंका दल है । बस इस व्यास-वचनसे श्रीअमृतसरमें तीर्थपन तो सिद्धहुआ । आगे तीर्थका दर्शन स्पर्शन या स्नान तो विशेष प्रयत्न या विशेष पुण्योंका काम है हरएकको मिलना कठिन है ।

श्रीगुरुरामदासजीके तीन पुत्र हुये थे । प्रथम सबसे बडा 'पृथ्वी-चन्द्र' इसका जन्म आश्विनमास मिति १ संवत् १६१५ विक्रमीमें हुआ है । दूसरेका नाम 'महादेव' इसका जन्म आषाढ मिति ४ संवत् १६१८ विक्रमीमें हुआ है । तीसरे सबसे छोटेका नाम 'अर्जुनजी' इसका जन्म वैशाख मिति १८ संवत् १६२० विक्रमीमें हुआ है । इनमें पृथ्वीचन्द्र सबसे बडा था परन्तु बुद्धिमें वही सबसे छोटा था । वह सदा अपने पितासे प्रतिकूलही रहा करता था । और अपने छोटे भाइयोंसे रणद्वेष लडाई टंटा रक्खा करता था । इसी कारणसे उसको सबसे बडा हो-नेसे भी गुरुगादी नहीं मिली । इससे छोटा 'महादेव' तो जीवन्मुक्त निरिच्छित पुरुष था । सदा परमेश्वरके भजन कीर्तनके अनुरागमें मग्न रहता था । संसारके कार व्यवहारोंकी उसको कुछभी खबर न थी सबसे छोटे अर्जुनजी अपने गुरु पिताके परमभक्त परम आज्ञा-कारी तनमनसे सेवक थे । अपने गुरु पिताजीके मुखसे जो आज्ञा होती उसीवक्त उसको पूर्ण करते कभी आलस्य या प्रमादका नाम न था । किन्तु सिपाहीकी तरह प्रतिक्षण अपने गुरु पिताके चरणोंमें हाजिर रहते अनेकतरहकी परीक्षासे उत्तीर्ण देखकर श्रीगुरुरामदासजीने गुरु-गादीका अधिकारी अपने सबसे छोटे पुत्रको बनाया । इनके गुरुगादी मिलनेका अधिकतर कारण यहभी कहा जाता है कि, एक बार संवत् १६३६ विक्रमीमें श्रीगुरुरामदासजीके वंशज भ्राता सहारी मल्लके पुत्रका शहर लाहौरमें विवाह था । उसने आपको प्रेमसे अपने पुत्र-के विवाहपर आमन्त्रण भेजा । श्रीगुरुजीने आप तो जाना उचित न समझा । परन्तु बडे पुत्रको भेजनेकी इच्छा करी । श्रीगुरुजीने

बडे पुत्रको बुलाकर लाहौर जानेके लिये सभीहाल समझाया । तो लाहौर जाना स्वीकार न किया । उसने मनमें ऐसा विचारा कि मेरेको बाहर भेजकर पीछे किसीको गुरुगादी देना चाहते हैं । मैं न जाऊं तो अच्छा उस बडे पुत्रके जबाब देनेसे श्रीगुरुजीने उसी कालमें स्वीकार करली । परन्तु साथही उसके श्रीगुरुजीने अर्जुनको यह भी आज्ञाकरी कि, जबतक हम बुलावेंगे नहीं । तुमने आपसे आप मत चलाआना । अर्जुनने सत्यवचन कहकर पिताको प्रणाम करके घोडेपर सवार हो उसी समय लाहौरको चलागया । और वहाँ जाकर बन्धुवर्गमें विवाह कार्य्यका यथायोग्य निर्वाह करके बहुत कालतक श्रीगुरुजीके बुलानेकी आज्ञाकी प्रतीक्षा करने लगा गुरु पिता चरणकमला मोदा स्वादक पुत्र मधुप प्रतिक्षण वियोगसे क्लेशान्त अपने ऊंचे मन्दिरोंपर खडे होकर प्रातिक्षण अमृतसरकी तरफ देखने लगा देखाकरनेलगा । पिता प्रेम वियोगकुल होकर खान पान पहरानादिकी सभी व्यवस्था विपरीत होगई । कभी कभी एकान्तमें बैठकर पिताजीका विशेष चिन्तन किया करते । बहुत दिन हुये श्रीगुरुजीने अभी तक चरणोंमें बुलाया नहीं क्या होगा कैसे होगा बस इसी विचारमें रात्रि दिन रहने लगे । लाचार होकर दोपत्र भी लिखकर श्रीगुरुजीकी सेवामें भेजे । परन्तु उनका भी बहुत दिनतक कुछ प्रत्युत्तर न आया। कारण इसका यह हुआ कि, वह पत्र दोनों मार्गहीमें पृथ्वीचन्द्रने लेकर अपने पास रखलिये । श्रीगुरुजीतक पहुँचनेही न दिये फिर कुछदिन प्रतीक्षा करके तीसरा पत्र "मेरा मन लोचे गुरुदर्शन ताईं । विलप करे चातककी न्याईं । तृषा न उतरे शान्ति न आवे बिनदेखे गुरु दरबारेंजीउ" ॥ इत्यादि अभिप्रायसे पूरित लिखा और दृढकरके धावकके हाथ दिया कि श्रीगुरुचरणोंके सिवाय और किसीको मत देना जिस पत्रका स्पष्ट तात्पर्य्य यही था कि हे गुरो ! मेरेको आपके दर्शनमें जराभी विलम्ब होनेसे मेरा चित्त घबडाकर पीडित होजाता है परन्तु हे दीनबन्धो ! अब मैं नहीं जानता कि कब दर्शन होगा

मेरेको तो आपके चरण दर्शनके बिना खाना पीना सोना सभी शूलसा प्रतीत होरहा है और आपके दर्शनके बिना मेरेको रात्रि दिन इतना लम्बा प्रतीत होता है कि पूरा नहीं होनेमें आता मैं चाहता हूं कि, मैं आपके चरणोंका दर्शन करूं परन्तु आपकी आज्ञाके अनुसार चलना इस दासका धर्म है इसलिये प्रतीक्षण आज्ञाका प्रतीक्षक हूं। इत्यादि अभिप्रायका तीसरा पत्र धावकने श्रीगुरुजीके हाथमें जाकर दिया। श्रीगुरुजीने पत्र वांचके तृतीय पत्र संख्याका अंक देखकर प्रथम दोनों पत्रोंकी भी अन्वेषणा करी। कुछ कहींसे पता न मिला तो श्रीगुरुजीने ध्यानावस्थित होकर दृष्टि करी तो देखा कि दोनों पत्र बडे पुत्र पृथ्वीचन्द्रके अंगरखेके जेबमें पडे हैं श्रीगुरुजीने उसको बुलाकर पूछा तो उसने इनकार किया। श्रीगुरुजीने फिर अच्छी तरह पूछा तो वह क्रुद्ध होकर कहने लगा कि क्यों पिताजी पत्र थे कि हुंडियाँ थीं जो मैंने छिपाकर कहीं बेंच डाली तब श्रीगुरुजीने उसी कालमें घरमें एक मनुष्यको पता देकर भेजा वह पृथ्वीचन्द्रके अङ्गेकी जेबमेंसे पत्र दोनों निकाल लाया। श्रीगुरुजीने उसी कालमें भरी सभामें पृथ्वीचन्द्रको दोनों पत्र दिखलाकर लज्जित किया। और उन-पत्रोंके भावकोभी बाँचकर श्रीगुरुजी छोटे पुत्रकी भक्तिपर बहुत प्रसन्न हुये। और बाबा बूढाजीको जो कि श्रीगुरुनानकजीके समयके प्राचीन पुरुष हैं लाहोर भेजकर अपने प्रिय शिष्य पुत्रको अपने पास मँगवा लिया। और उनको हरतरहसे सुयोग्य जानकर गुरुगादीका अधिकार उनके अर्पण किया। एक दिनका वृत्तान्त है कि, यही श्रीगुरुअर्जु-नजी जिनको अपने पितासे गुरुगादीका अधिकार मिला है अपनी तीन सवातीन वर्षकी आयुमें खेलते२ अकस्मात् अपने नाना गुरुअम-रदासजीके पास उनकी गादीपर पद्मासन मारकर निर्भय विराजे। श्रीगुरुअमरदासजीने उठाकर अंकमें लेलिया। और कहा कि धैर्य्य करो बेटा। तेरेको यह स्थान तेरे पितासे प्राप्त होगा। और तू भारी प्रख्यात गुरु होगा। महा पुरुषोंके अमोघ वचनके प्रतापसे वस्तुतः

वैसाही हुआ। श्रीगुरुअर्जुनजीका बडा भ्राता पृथ्वीचन्द्र बहुतही राग द्वेषका पुतला था श्रीगुरुअर्जुनजीके गादी मिलनेसे इसने अनेक तरहका टंटा फसाद करके दुःख देना प्रारम्भ किया। श्रीगुरुरामदासजीने उसको बहुत समझाया परन्तु उसने एक नहीं मानी। श्रीगुरुरामदासजी श्रीगुरुअर्जुनजीको गुरुगादीका अधिकार देकर आप शहर गोयन्दावालमें जाय विराजे। और वहाँ सम्पूर्ण ४९ वर्ष १० मास १४ दिनकी आयुको भोगकर श्रावण वदि तीज संवत् १६३८ विक्रमीमें शुक्रके दिन चार घटिका रात्रि शेष रहे इस दृष्टविनश्वर संसारका परित्याग कर परमधामको पधारे। इनका देहराभी श्रीगुरुअमरदासजीके थोडीही दूरपर पास बनाया गया था। परन्तु वह दरिया व्यासाने बहालिया कारण उसका ऐसा कहा जाता है कि इनकी आज्ञा थी कि हमारा देहरा या समाधि इत्यादि चिह्न कोई न बनावे। परन्तु फिरभी लोगोंने प्रेमसे बडी भारी इमारत बनवाई थी। मालिककी इच्छाके विपरीत होनेसे उसका कुछ कालके लिये भी खडे रहना न बना। पंजाब देशमें सोढी साहिब जादे जो कहाते हैं वे श्रीगुरुरामदासजीकी ही वंशके हैं। श्रीगुरुरामदासजीने केवल ६ वर्ष ११ मास १८ दिनतक गुरु गादीपर विराजकर काम किया है।

इति चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

अथपञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

श्रीगुरुअर्जुनसाहिबजी बादशाही ॥ ५ ॥

श्रीगुरुअर्जुनजीका जन्म मंगलके दिन अर्धरात्रिके समय वैशाख मिति १८ शुक्ल सप्तमी संवत् १६३० विक्रमीमें अकबरबादशाहकी अमलदारीमें शहरगोयन्दवालेमें श्रीगुरुरामदासजीके घरों बीबी भानीजीके गर्भसे हुआ है। श्रीगुरुअर्जुनजीके विवाह दो हुये हैं। प्रथम संवत् १६३२ विक्रमीमें चन्दनदाससोढी क्षत्रियकी रामदेवीनामक

पुत्रीके साथ मौडाके नामक ग्राममें हुआ है। उसके मरनेके पश्चात् दूसरा आषाढ मिति २२ संवत् १६४६ विक्रमीमें कृष्णचन्द्र क्षात्रियकी गंगादेवी नामक पुत्रीसे महु नामक ग्राममें फिलौर शहरके प्रान्तमें हुआ है। जिसके गर्भसे परम तेजस्वी धीर बीर श्रीगुरुहरिगोविन्दजी उत्पन्न हुये हैं। श्रीगुरुहरिगोविन्दजीका प्रादुर्भाव बाबा बूढाजीके वरप्रदानसे कहा जाता है। एकदिनका वृत्तान्त है कि माता गंगादेवी श्रीगुरुअर्जुनजीकी आज्ञा लेकर श्रीमान् बाबा बूढाजी जो कि कहीं जङ्गलमें कुटी बनाकर दीर्घकालसे तपश्चर्य्या कर रहे थे। उनके दर्शन करणार्थ कुछ भेंट पूजा प्रसाद् लेकर गई। बाबा बूढाजी अभिप्रायको जानकर प्रसन्न होकर पूछने लगे कि कहो बेटी किसीकामनाको लेकर बाबेका दर्शनं है कि निष्काम है। गंगादेवी बोली बाबाजी इस जीवको निष्काम होना या इसकी कामनाका पूर्णहोना केवल आपहीकी कृपा दृष्टिका फल है। बाबा बूढाजीने औरभी प्रसन्न होकर कहा बेटी तेरी कामना पूर्ण होगी। तेरेघर परमेश्वरकी कृपासे एकपुत्र परम शूरबीर तथा सनातनधर्मका संरक्षक होगा। माता गंगादेवी श्रीबाबाजीका आशीर्वाद लेकर प्रसन्न होकर अपने घरमें आयी। और समय पाकर श्रीगुरुहरिगोविन्दजी पुत्र उत्पन्न हुये। श्रीगुरुअर्जुनजीके समयमें यद्यपि गुरुगादीपर कुछ राजसी विभूतिने अपना प्रवेश अधिक करलिया था। तथापि पूर्वज वृद्धोंकी परिपाटीका श्रीगुरुअर्जुनजीने किञ्चिदपि उत्पाटन नहीं किया था। किन्तु वैसेही सदा चाल चलन साधुओं जैसा वेश प्रतिक्षण भजन स्मरण कीर्तनमें कालक्षेप लंगरमें समभाव प्रतिदिन नूतन प्रेममयी वाणीका निर्माण सदुपदेशका देशमें प्रचार इत्यादि सत्कार्योंका निर्वाह यथायोग्य हुआ करता था। संवत् १६३८ विक्रमीमें इनको गुरुगादीका अधिकार मिला है। उसके पश्चात इन्होंने अपने श्रीगुरुनानकके सिद्धान्तका बहुत प्रचार किया असाधारण उन्नतिभी करी। पंजाब देशभरमें जगह जगहपर पवित्र

तीर्थरूप तालाव तथा बावली आपभी अनेक बनवाई अनेक स्थलोंमें धर्मशाला बनवाकर उनमें सदावरत प्रचलित किये । शहर तथा वर्तमानमें प्रख्यात तीर्थ तरन तारनकी बुनियाद इन्होंने डाली। शहर करतारपुरको भी इन्होंने बसाया । श्रीगुरु घरके अच्छे २ नियम बनाकर उन्होंने गुरुखालसाको इतर साधारण लोगोंसे पृथक् कर दिखलाया । कतिपय मूर्ख मण्डलको छोडकर शेष सभी इनके नियमोंसे नियमित होकर श्रीगुरुनानकके घरको मानने लग पडे थे। इन्होंने अपने सार गर्भित उपदेशसे पंजाब देशके लोगोंका ऐसा अपनेपर विश्वास दृढ किया था कि सभी सेवकलोग श्रीगुरुनानकजी-को परमेश्वरका अवतार मानने लग गये थे । और उनके जैसा और किसीको भी न मानते थे । और श्रीगुरुअर्जुनजीकी अपनीभी भक्ति श्रीगुरुनानकजीके विषयमें ऐसी थी कि जिसका उदाहरण दूसरा मिलना कठिन हैं । अर्थात् प्रतिक्षण परमेश्वरसे गुरुनानक घरका दासपना गुरुनानक घरका गोलापना गुरुनानक घरका भिक्षु-कपना जन्म जन्मान्तरके लिये माँगा करते थे । इनकी श्रीगुरुनानक घरपर असाधारण भक्तिकी बोधक इनकी वाणी श्रीगुरु ग्रन्थमें विद्य-मान है । उनके गुरुगादी मिलनेके पश्चात् गुरुगादीपर अनेक तरहके टंटे बखेडे होते रहे परन्तु इनके अप्रतिहत प्रतापके सामने किसीकी-भी कुछ न चली प्रत्युत खालसा धर्मने ऐसी उन्नति लाभ करी कि प्रतिदिन द्विगुण त्रिगुण विवृद्ध तेजयुक्त होकर प्रतीत होने लगा । इनके प्रथम किसी गुरुके समयमें इतनी दौलत कभी न आयी थी जोकि लंगरादि सत्कार्य्योंसे शेषभी रहे परन्तु इनके समयमें इतना धन पदार्थ चारों तरफसे आने लगी कि भारीभारी धर्म कार्य्य करनेसे भी धनकी त्रुटि न होवे अर्थात् चारों ओर स्वर्ण चाँदी हीरा मोती माणि रत्नही चमकते दीखने लगे गुरुका घर या गुरुगादीका स्थान माना बादशाही तखतको भी अपनी शोभासे नीचा दिखलाने लगा इतिहास पुस्तकोंमें लिखा है कि श्रीगुरुनानकजीके चरणोंसे १२

कोश दूरपर लक्ष्मी देवीका निवास था । जब श्रीगुरु अंगदजी गादीपर विराजे तो वही लक्ष्मीदेवी ६ कोश दूरपर चली आई । श्रीगुरुअमरदासजीके समयमें वहीदेवी द्वारपर आनकर रहने लगी श्रीगुरुरामदासके समयमें चरण सेवन करने लगी । और श्रीगुरुअर्जुनजीके तो स्वयं घरमें निवासकर बैठी एकादिन श्रीगुरुअर्जुनजीने लक्ष्मीदेवीसे एकान्तमें कहा कि, हे देवि ? तेरा स्वभाव तथा स्वरूप विलक्षण है इसी लिये हमारे पूर्वजोने तेरेको अपने मुख नहीं लगाया । परन्तु । हमारे घरमें तू स्वयं चली आई है । यदि कुछकाल निवासकी प्रतिज्ञा करो तो भले टिकीरहो अन्यथा तेरे संगसे किसीको विशेष सुखकी सम्भावना तो सर्वथा दुर्घट है । देवीने कहा हे देव ? जो मेरे वास्तव स्वभाव तथा स्वरूपको नहीं जानता वही मेरे संगसे दुःख उठाता है । परंतु मैं किसीको दुःख दिया नहीं चाहती । और न अपने स्वरूप स्वभावहीको पलट सकती हूँ । श्रीगुरुजीने कहा देवि ! हम तेरे स्वरूप स्वभावको विपरीत किया नहीं चाहते । किन्तु तेरेसे कुछ प्रतिज्ञा करवाई चाहते हैं । लक्ष्मीने कहा देव ? क्या प्रतिज्ञा करवानी चाहते हो । श्रीगुरुजीने कहा देवि ! तेरा सदैव एकस्थानपर अनवास्थित रहना स्वभाव है सो रहो परन्तु तुमको आना जाना हमारे नियत किये मार्गोंसेही होगा । यदि ऐसे तुमको अङ्गीकार हो तो हम तुमको स्थान देवें । लक्ष्मीने कहा वह कौन कैसे आपके मार्ग हैं ? । श्रीगुरुजीने कहा कौन कैसे कोई नहीं । चारों मार्गोंमें आती रहना और जब जाना चाहो तो एकही मार्गसे चली जाया करना । लक्ष्मीने कहा उत्तम है मैं तो जब जाना चाहती हूँ किसीभी मार्ग विशेषकी अपेक्षा नहीं रहती परन्तु आपने तो कृपा करके मेरे स्वभावके अनुसार एकमार्ग जानेका खुलासा दे दिया । मैं प्रसन्नता पूर्वक यहाँ कुछकाल निवास करूंगी । परन्तु उन मार्गोंका स्वरूप कैसा है ? । श्रीगुरुजीने कहा धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष यह चार द्वार तेरे आनेके लिये नियत किये जायँगे । अर्थात् धर्मार्थी, अर्थार्थी, कामार्थी तथा मोक्षार्थी

चारों तरहके अधिकारी पुरुष तेरेको लाकर हमारे चरणोंमें अर्पण करेंगे। तो हम तेरेको केवल एकही मार्गसे अर्थात् तेरे वास्तव पति परमेश्वरके मार्गमें तेरेको जानेकाभी प्रतिक्षण मुक्त मार्ग रक्खेंगे। देवीने कहा यदि ऐसे होय तो मैं अवश्य दीर्घकालतक यहाँ निवास करूंगी। इसी प्रतिज्ञापर श्रीगुरुअर्जुनजीने श्रीअमृतसरजीके हरिमन्दिरके चार खुलासे द्वार बनवाकर लक्ष्मी देवीके आनेका स्थान नियत किया। और एकत्र होकर सिवाय परमेश्वरीय व्यवहारोंके किसीको एक कौडीभी सांसारिक व्यवहारोंके लिये नहीं मिलती।

श्रीगुरुअर्जुनजीसे पहले किसी गुरुके समयमें अपने शिष्य मण्डलसे नियत कारभेंट (याजा) लेनेका प्रचार नहीं हुआ था। कोई शिष्यभी नियमसे वर्षपीछे या छःमास पीछे कारभेंट नहीं दिया करता था किन्तु जब किसीके जो दिलमें आवे भेंट पूजा गुरुगादी पर शिष्य लोग दे आया करते थे। इस नूतन मार्गको इन्होंने प्रचलित किया कि, चारों तरफके दूरदूरके सेवकोंसे मुसदी (कारिन्दा) लोग कार भेंट लाया करें। प्रतिवर्ष हरएक शिष्य श्रद्धा भक्तिसे अपनी कमाईका दशमांश दिया करता था। इसीतरह श्रीगुरुअर्जुनजीके समयमें लक्षोंरुपये प्रतिसाल कारभेंटके आते थे समीप देशके शिष्यलोग स्वयं लेकर आया करते थे। और दूर दूरके दूसरे चौथे आठवें दशवें वर्ष दर्शनको आते। परन्तु कारभेंट पूजा सबकी प्रतिवर्ष मुसदी द्वारा श्रीगुरुजीके चरणोंमें आती रहती यही प्रणाली श्रीगुरुगोविन्दसिंह दशम गुरुतक प्रचलित रही थी जो शिष्य कारभेंट पूजा देता था। उसको श्रीगुरुजीकी तरफसे भी एक शिरका साफा शिरोपाग नामसे मिला करता था इसी तरह काबुल कन्धार सिवा कोयटा बुखारातकके शिष्यलोगोंकी प्रतिवर्ष कारभेंट आया करती थी। और श्रीगुरुअर्जुनजी अमृतसरहीमें निवास किया करते थे एक दिनका वृत्तान्त है। कि श्रीगुरुअर्जुनजी अमृतसरके तालावसे थोडे दूर पर उत्तरकी तरफ एक शिंशपा वृक्षके नीचे जहाँ सदा

विराजा करते थे विराजे थे । उसी समय वहांपर एक भाई सन्तोषा नामक अरोडा क्षत्रिय शहर पेशावरका रहने वाला दर्शन करनेको चला आया । उसने सहस्रों रुपया श्रीगुरुजीके आगे भेंट रखके प्रार्थना करी कि दीनबन्धो ! मेरे सन्तति नहीं है । और मेरा कुछ कालतक इस संसारमें नाम बनारहे ऐसी मेरे मनमें अभिलाषा है । इस मेरी भेंटको किसी ऐसे स्थानमें लगा दीजिये जहाँ मेरा नाम आपके चरणोंमें कुछ कालतक इस संसारमें स्मरण हुआ करे । श्रीगुरुजीने वहांही उस रुपयेसे एक भारी तालाव खुदवाया जिसका नाम अपने श्रीमुखसे सन्तोषसर उस भक्तहीके नामसे रखदिया । इस सरोवरकी खुदवाई संवत् १६४१ विक्रमीमें हुई थी । जब यह तीन गज नीचे खोदा गया । तो नीचेसे एक दृढ मजबूत सुन्दर छोटासा मन्दिर निकला था मट्टीको हटाकर जब मन्दिरका दरवाजा खोला तो उसमेंसे एक समाधि चढे हुये योगी निकला । खोदनेवाले लोगोंने श्रीगुरुजी को जाकर वृत्तान्त सुनाया श्रीगुरुजीने बहुतकालतक उस योगीके अंग प्रत्यंग मर्दन करके उसकी समाधि उतारी । योगी सावधान होकर होकर वार्तालाप करने लगा । उस कालमें उस योगीके साथ श्रीगुरुअर्जुनजीने जो कुछ वार्तालाप ज्ञान चर्चा रूपसे किया । वह सब श्रीगुरु ग्रन्थजीमें शब्द रूपसे अंकित है । श्रीगुरुजीने उससे उसका वृत्तान्त पूछा तो उसने अपना हाल ऐसे कहा कि जिस कालमें श्री रामचन्द्रजी अपने पुत्र लवकुशसे पराजित होगये थे । और इन्द्रदेवतासे अमृतकी वर्षा करवाकर फिर सारी सेना जीवित करवाई थी और अमृतसर नामक तीर्थ जो यहाँसे दक्षिणकी तरफ समीपही पर है स्थापन किया था । उसी समयसे मैं अनेक तपस्वी मुनीश्वर लोगों के साथ जो यहांपर निवास किया करते थे मिलकर तपश्चर्य्या करता रहा । मेरे गुरु महाराजा राजा जनक थे । एकवार मैं उनके दर्शनको गया तो उन्होंने मेरेको विशेष कारणसे अर्थात् ज्ञानमार्गमें अतिप्रश्न करनेसे असंतुष्ट होकर यह कहा कि तेरेको अपने योगका बडा अभि-

मान है इसीलिये ज्ञानमार्ग मनमें नहीं आता यह लोग तेरेको कलि-युगका दर्शन करावेगा उसी समय तेरेको सत्संगमें आत्मज्ञान भी होगा श्रीगुरुजीका ऐसा वचन श्रवणकर मैं फिर उसी तपस्वी मण्डलमें आनकर तपश्चर्य्या करनेलगा और ऐसेही गुरुके वचनको स्मरण कर एकदिन ऐसी समाधि चढाई कि आजतक यहाँ बैठा हूं । समय के फेरफारसे मेरे स्थानपर इतनी २ मट्टी चढआई है कि सबका सब भूमिहीमें दबगया है । मैंने अपने गुरुसे उस कालमें यहभी पूछा था कि उस कालमें मेरेको आत्मज्ञानका उपदेशक कौन मिलेगा । तो उन्होंने उसकालमें यह कहा था कलियुगमें केवल सत्यज्ञान मार्गके सदुपदेश द्वारा अधिकारी पुरुषोंके मोक्षमार्ग बतलानेके लिये एक गुरुनानक नामक परमेश्वरका अवतार होगा । उसीके सदुपदे-शसे तेरेको आत्मज्ञान होकर तेरा कल्याण होगा क्या अब वह समय आन पहुँचा है । श्रीगुरुजीने कहा मेरा नाम अर्जुन है । मैं श्रीगुरुनानकजीकी सेवा बजानेके लिये उनके पञ्चम स्थानपर नियत किया गया हूं । योगी सुनकर प्रसन्न हुआ और अपने गुरुकी आज्ञाके अनुसार श्रीगुरुअर्जुनजीको गुरुनानकस्थानापन्न जानकर अपने सन्देह पूछने लगा । जिनके प्रत्युत्तर श्रीगुरुजीकी तरफसे श्रव-णकर योगी निःसन्देह होकर परम धामको प्राप्त हुआ । वे प्रश्न उत्त-रोंके शब्द प्रायः श्रीगुरु ग्रन्थजीमें लिखे हैं । यहाँपर ग्रन्थविस्तार भयसे नहीं दिखलाये इतिहासमें शास्त्रीय चर्चाके मिलानेसे इतिहास-का स्वरूप भी बदल जाता है इसलिये योगीके प्रश्न तथा श्रीगुरुजी के उत्तरोंका स्पष्टीकरण नहीं किया । तात्पर्य यह कि योगमार्ग तथा ज्ञानमार्ग स्वरूपसे या फलसे दो हैं कि एकही हैं केवल नाममात्रका भेद है यदि दो हैं तो वस्तुतः कल्याणमार्ग योग है कि ज्ञान है कि दोनों मिलके हैं यदि ज्ञानही है तो उसका स्वरूप क्या है आकार क्या है उत्पन्न कैसे होता है तथा किसको होता है इत्यादि अनेक तरहके योगीके प्रश्नोंका समूह समझलेना चाहिये इनहीके अनुरूप

शास्त्र युक्ति मिश्रित श्रीगुरुजीके प्रत्युत्तर थे। जिनको श्रवणकर सर्व साधन सम्पन्न परमाधिकृत योगी परमधामको प्राप्त हुआ । उसके पश्चात् श्रीगुरुअर्जुनजी उस तालावके खुदवानेमें बहुत दत्तचित्त हुये। बहुतसे अपने शिष्यलोगोंको उस तलावपर सेवा करनेके लिये बुलावे के पत्र भेजदिये । भाईभक्तु, भाईभल्लु, भाईसालो, भाईपैडा, भाईज्येष्ठा भाईगुरुदास, बाबाबूढा तथा भाईदासु इत्यादि बहुतसे प्रसिद्ध २ शिष्यलोगोंको बुलाकर तालावका कार्य्य बडे जोर शोरसे प्रचलित किया । और अमृतसर तालावके समीप श्रीदुःख भञ्जनी बेरीके साथ एक ऊंचा चबूतरा बनवाकर वहाँ विराजकर सब कार्यकी तरफ दत्तदृष्टि होकर देखने लगे । और वहांही उस तालावकी प्रशंसाके शब्द जो कि श्रीगुरु ग्रन्थजीमें विद्यमान है बना बनाकर गाया करते और श्रीगुरुअर्जुनजीने एक दिन अपने भरे दरबारमें कहा कि शिष्यलोगो यह जो तुम इसकालमें छोटासा गँवँई देखते हो यह किसी कालमें भारी नामी नगर होगा । इसके समान कार रोजगार व्यापार संसार भरमें और स्थलमें न होगा और यह जो तालाव बन रहा है । यह सब तीर्थोंका शिरोमणि तीर्थ होगा । इसके आगे और सब तीर्थोंकी महिमा फीकीसी होय जायगी । कलियुगकी आयुके साथ साथ और तीर्थोंपर प्रतिदिन आसुरी संपत्तिका निवास तथा यहाँपर दैवी सम्पत्तिका निवास होता चला जायगा उसके पश्चात् कार्तिक शुक्ल ५ संवत १६४५ विक्रमीमें इस तालावके मध्य भागमें एक हरिमन्दिर बनवानेकी इच्छासे श्रीगुरुअर्जुनजीने शुभदिन नियत करके उस मन्दिरकी बुनियाद रखनेके समयमें अच्छे २ साधुसन्त फकीर महापुरुषोंको बुलाया । समयपर सभी एकत्र हुवे तो श्रीगुरुजीने उस बुनियादकी प्रथम ईंट बल्लोमियाँ मीरसे रखवाई । उन्होंने श्रीगुरुजीके वचन प्रमाण हाथसे उठाकर बुनियादमें टिकादई । उसीकालमें उसकार्य्यके करनेवाले वहाँ कारीगरलोग भी विद्यमान थे उनको कार्य्यारम्भ करनेकी आज्ञा हुई तो उन्होंने सबसे प्रथम उसी

ईंटको जो कि प्रथम मियाँ मीरके हाथसे रखी जाचुकी थी उठाकर सीधी करके रखादिया उसको देखकर उसी कालमें श्रीगुरुजीने कहा कि यह मन्दिर एकवारहीका तैयार हुआ स्थिर कभी न रहेगा किन्तु पूर्ण हुये पीछे गिरकर दुबारा बननेकी सम्भावना है। प्रबल भाविके प्रतापसे कालन्तरमें वैसाही हुआ १८१८ विक्रमीमें अहमदशाह बादशाहने इसको गिरवादिया था और फिर बनवाया गया इसका सविस्तर वृत्तान्त आगे लिखा जायगा।

श्रीगुरुअर्जुनजीने अपने यावत् शिष्य सेवकोंको आज्ञाकरी कि सभी लोग एक २ दोदो घर यहाँपर आनकर शहर अमृतसरमें निवास करें और इसकार्य्य करनेका मुख्याधिकारी भाई सालोजीको बनाया। उसने २२ जातिक लोग चारों तरफसे लाकर बसादिये। उनकी वंशपरम्परा उसी शहरके एक प्रान्तमें अबतक विद्यमान चली आती है। प्रतिदिन शहर अमृतसरकी वृद्धि होनेलगी। उसी कालमें श्रीगुरुजीका बडा भ्राता पृथ्वीचन्द्र ईर्षासे दग्ध होकर अनेक तरहके झगडे टंटे उठाया करता था। श्रीगुरुअर्जुनजी उसकालमें अमृतसरके आसपासके मध्य प्रदेशके शिष्यलोगोंके अनुराधेसे संवत् १६४६ विक्रमीमें कुछदिन किसी बाहर ग्राममें चलेगये। शहर गोयन्दवाल तथा खण्डूरमें जाकर अपने पूज्य पूर्वजोंके निवास स्थानकी यात्रा करके चोला नामक ग्राममें तथा सरहाली नामक ग्राममें दोदो चार चार दिन निवास करते हुये जब शहर खारीके प्रान्तमें पहुँचे तो वहाँके जलवायुको स्वच्छ जानकर स्थान किया और वहाँपर हाकिमोंसे कुछ भूमि लेकर शहर तरन तारन बसानेकी बुनियाद डाली। उसके पश्चात् संवत् १६४९ विक्रमीमें वहाँपर एक भारी तालाव खुदवाया और उसको दृढकरनेके लिये ईंट पकानेके आवें चढादिये। जब बहुतसी ईंटें परिपक्व होकर तैयार हुईं तो वह सबकी सब इनके बडे भ्राता पृथ्वीचन्द्रके अनुरोधसे अमीरदीन नामक हाकिमने सरकारी कामके लिये अर्थात् नूरुल्दीनकी सरायके लिये खोसलीं। श्री-

गुरुअर्जुनजी चुपरहे । शिष्य लोगोंने कहा कि गुरुजी इस हाकिम-ने बहुत अन्याय किया है जो आपकी ईंटें खोसकर सरकारी काम करना चाहता है । श्रीगुरुजीने कहा कि भाई यह हमारी ईंटें हमारे कार्य्यके लिये बहुतही थोडी थीं । हमारा कार्य्य भारी है इन-से होना कठिन था । और यदि होताभी तो इसी तरह अनेक बार ईंटें तैयार करनी पडती उसमें कालकी अपेक्षा है । अब जहाँपर यह हमारी थोडी ईंटें जाती हैं । वहाँपर और भी लक्षों ईंटें तैयार हैं । जबतक हम स्वयं श्रमसे इस महान् कार्य्यको पूरा करते तबतक यह भारी ईंटें उन सबको साथ लेकर फिर यहाँपर आन लगेंगी । श्रीगु-जीका ऐसा वचन सुनकर शिष्यलोग चुपरहे । कालचक्रका प्रभाव परमेश्वरकी इच्छा तथा महापुरुषोंके वचनोंसे संवत् १८२३ विक्रमीमें वैसाही हुआ । सरदार भांलसिंहजीने तथा सरदार यशःसिंह रामग-ढियाने अपने अधिकारके समय मिलकर उस नूरदीनकी सरायकी व्यर्थ लम्बी चौडी इमारितको खुदवाकर उसका सारा मसाला श्री तरन तारन तीर्थके तालाबपर लगवा दिया । उसके पश्चात् महाराजा रणजीतसिंहजीने तथा कुँवर नव निहालसिंहजीने इस तालावको ऐसा सुन्दर बनवा दिया कि जिसके दर्शनकी अकस्मात् लालसा बनी ही रहे और उस तालावके तीरपर पूर्वकी तरफ एक ऐसा उत्तम गुरु-स्थान बनवाया कि जिसमें स्वर्ण चाँदी चुनी पन्नाश्वेत पाषाणादिके तरह २ के कार्य बने हुये विद्यमान शोभा पा रहे हैं । वहाँके पुजारी सेवक लोगोंके जीवन निर्वाहके लिये प्रथम तो सरकार लाहौर से बहुत कुछ प्रबन्ध था । परन्तु वर्तमानमें उस महाभारी प्रख्यात गुरुस्थानके साथ गवर्नमिण्ट सरकारकी तरफसे केवल एक सहस्र चार-सौ सात १४०७ रुपयाकी जागीर सालाना माफी है । इसके सिवाय तीन सहस्र रुपयाकी वार्षिककी जागीर और भी प्रचालित है । उस-का प्रबन्ध गवर्नमिण्ट सरकारने भाई वस्तीराम तथा रामसिंहादि सत्यपुरुषोंके अनुरोधसे किया था । जागीर वहाँपर निवास करने

वाले कुष्ठी लोगोंके अन्न वस्त्रके लिये है। इस तीर्थपर सहस्रों कुष्ठी लोग पंजाब देशमात्रके दूर २ प्रान्तके भी आनकर निवास करते हैं। और अन्न वस्त्रकी सहायता भी वहाँहीसे प्रायः पाते हैं जो समर्थ हो अपने पल्लेसे भी खाते हैं। परन्तु उस तरनतारन तीर्थमें स्नान प्रतिदिन करना चाहिये। प्रतिवर्ष उसमेंसे आठ कभी दस अच्छे शुद्ध शरीरको लेकर अपने अपने घरोंको चले जाते हैं। जिनका शरीर अति गलभी चुकाहो उसका भी वहाँ स्नान करनेसे सुखकर वहाँका वहाँही ठहर जाता है। यद्यपि प्रत्येक मासकी अमावसके दिन इस तीर्थ पर सहस्रों स्त्रीपुरुष स्नानकरनेके लिये जाते हैं। तथापि चैत्र तथा कार्तिक मासकी अमावसका मेला इस तीर्थपर प्रतिवर्ष ऐसा धूम धामका होता है कि आयुभरमें एक बारका देखा हुआ भी समय २ पर अवश्य स्मरण हुआ करता है। इन दोनों मेलोंपर सहस्रों रुपया गुरुस्थानमें पूजामें भी आता है। उससे वहाँके पुजारी सेवकोंका निर्वाह होता है। एक दिनका वृत्तान्त है कि इस तरनतारन नामक तीर्थकी बुनियाद रखने कालमें एक शिष्यने कहा कि गुरुजी पासही तो पाँच छःकोशपर श्रीअमृतसर नामक महान् तीर्थ आप तैयार कर चुके हैं फिर उसको छोडकर यहाँपर कान आया करेगा ?। श्रीगुरुअर्जुनजीने कहा कि भाई जहाँपर सर्वथा समान धर्मवाले पदार्थोंका बहुल होता है। वहाँपर वे पदार्थ एक दूसरेकी अपेक्षा कर इस जीवकी अरुचिके विषय होजाते हैं। परन्तु संसारके विचित्र होनेसे तथा जीवोंकी वासनाओंके अनन्त होनेसे भिन्न २ गुण कर्म स्वभाववाले तथा परस्पर विचित्र शक्ति प्रभाववाले पदार्थ कदापि आपसमें परिभाव्य परिभावक भावको प्राप्त नहीं होते। श्रीअमृतसर तीर्थके सलिलके पान स्नानते जैसे विशेष कर सञ्चित पाप पुञ्जका विनाश होगा वैसेही इस तीर्थसे भी विशेष कर फलोन्मुख अशुभ कर्मोंके कार्य्यका विनाश अर्थात् कुष्ठादि असाध्य रोगोंका तिरस्कार हुवा करेगा। इसीलिये उसी समयसे कुष्ठी लोग यहाँपर दूर २ से चले आते

हैं और कुछ काल इस तीर्थके स्नान सेवनसे अपने शरीरको अच्छा करके चले जाते हैं । महापुरुषोंका सिद्ध संकल्प परमेश्वरकी कृपासे अबतक सिद्ध होता चला जाता है । उसके पश्चात् संवत १६५१ विक्रमीमें श्रीगुरुअर्जुनजीने कुछ भूमि जिला जालन्धरमें हाकिमोंसे खरीद कर शहर करतारपुर जो कि वर्तमानमें प्रख्यात नगर है उसकी बुनियाद डाली । उस नगरमें वर्तमानमें भी प्रतिष्ठा पूर्वक सोढी साहि ब जादे निवास कर रहे हैं । उसके पश्चात् श्रीगुरुजी अपने शिष्य लोगों भाई भोरिया चौधरी चूहडमल्ल आदिकोंकी प्रार्थनाके अनुसार चूहणिआँ नामक ग्राममें दोचार दिन निवास करते हुये शहर लाहौर रकी तरफ पधारे । मार्गमें भाई समन्दु तथा लालुब्राह्मण भाई तुलसा तथा शिकन्दर क्षत्रिय और केदार भक्त इत्यादि भक्त लोगोंको अप- ने सदुपदेशोंसे कृतार्थ किया और उन लोगोंने भी श्रीगुरुजीके चर- णोमें यथाशक्ति नकद जिनस भेंटमें अर्पण किया । वहाँसे चलकर मार्गमें अपने सदुपदेशोंसे अनेक लोगोंको कृतार्थ करते हुये शहर लाहौरमें आन विराजे । और वहाँपरभी लाहोरके डवी बाजारमें एक बावली तैयार करवाने लगे उसी कालमें भी लोवाल नामक ग्राममें रहनेवाला एक प्रसिद्ध फकीर शाला सुलेमान, तथा शेष भेलीशाह जिसको दाराशको हरलीस मजा करता था शाह इनायत कादरी तथा शाह हुसैयन इत्यादि मुसलमान फकीर तथा छजु भक्त जो कि लाहौरमें प्रख्यात हुआ है सभी आपको मिलनेके लिये आये । और बहुत कालतक परस्पर चर्चा ब्रह्मज्ञान आत्मविचारहीकी होती रही । श्रीगुरुजी निर्मित करी हुई वाणीको श्रवणकर यह लोग बहुत प्रसन्न हुये । उसके पीछे धीरे धीरे इनके लाहौरमें आनेकी प्रख्याति वहाँके हाकिम हसन खानको भी पहुँची । वहभी अपने साथ कई एक अच्छे २ पुरुष लेकर श्रीगुरुजीकी मुलाकातको आया । अनेक प्रकारके संशय भेदि प्रश्नोंके उत्तर सुनकर बहुत प्रसन्न हुवा । और मुरीदबनके पूछने लगा कि गुरुजी वस्तुतः सच्चा मुक्तिका मार्ग कौन है ? । तब श्रीगुरुजीने नीचे लिखे शब्दका उच्चारण किया ।

मीरांदाना दिलसोच
मुहब्बता मनतन बसे सच्च शाह बन्दीमोच्च ।
दीदने दीदार साहिब कुछ नहीं इसका मोल ।
पाक परवरदिगार तू खुद खसम वडा अतोल ॥
दस्तगीरी दह दिलावर तूहीं तूहीं एक ।
करतार कुदरत करन खालिक नानक तेरी टेक ॥ १ ॥

अर्थात् हे अमीरदाना ! (सुबोध) तू अपने मनमें विचार जब सच्चे परमेश्वरका प्रेम तुम्हारे चित्तमें अच्छी तरहसे स्थान पाया जायगा तो संसारके बन्धनोंसे तुम्हारेको स्वयं मुक्ति मिलेगी और इन नेत्रोंसे केवल परमेश्वर रूपही सबको दृष्टि कर और कुछ भी भेद भाव मत देख । और ऐसी प्रतिक्षण प्रार्थनाकर कि हे सर्वके पालन करनेहारे ! पवित्र परमेश्वर तू बडा दीनवत्सल कृपालु है तेरी महिमा का अन्त नहीं है । हे शरण पालक ! मेरेको हाथ पकडकर इस संसार सागरसे पार करनेवाला एक तूहीं है दूसरा कोई नहीं इसलिये हे परमेश्वर ! इस खिलकतको अपनी कुदरतसे करनेहारे नानकको भी तेराही आश्रय है इत्यादि और शब्दभी उस कालमें श्रीगुरु अर्जुनजीने उच्चारण किये जिनको सुनकर हाकिमका मन नर्म होगया । और अत्याचार करनेसे उपराम होकर प्रतिक्षण परमेश्वरके भजन स्मरण कीर्तनमें दत्त चित्त होगया । और श्रीगुरुजीका तनमन सेवक बनकर बावली बनवानेमें भी सहकारी हुवा । वही बावली लाहौरके डबी बाजारमें सुशोभित अबतक विद्यमान है । यह पीछे समयके फेरफारसे भूमिमें दबगई थी । कहीं इसकी किसीको खबर भी न थी । इतिहासको देखकर महाराजा रणजीतसिंहने फिर उस बावलीको प्रख्यात किया । एक बार महाराजा रणजीतसिंहका शरीर ज्वराक्रान्त हुवा तो उसका स्वप्न आया कि उस बावलीमें स्नान करनेसे ज्वर जाता रहेगा । महाराजाने प्रातः उठकर अपने दृढ निश्चयके अनुसार उस

बावलीमें स्नान करलिया । दैवात् ज्वरभी उसीदिन उत्तर गया ; तभीसे अनेक लोगोंका निश्चय उस बावलीपर जमगया । किसीको फोडा किसीको खुजली इत्यादि किसी तरहका भी रोग हो लोग उस बावलीहीमें निश्चय करके स्नान किया करते हैं । अपनी भावनाके अनुसार फलभी पाते हैं । इस बावलीमें एक यहभी विलक्षण करामात है । कि जहाँपर यह लगी हुई है उस प्रान्तके आसपासके सभी कूप खारी जलवाले हैं परन्तु केवल एक इसीका वहाँपर मीठापानी है ।

इति पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

अथ षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

लाहौरसे चलकर श्रीगुरुअर्जुनजी शहर देहरा बाबा नानकजीका दर्शन करते हुये बारठा नामक ग्राममें जहाँपर श्रीगुरुनानकजीके बडे पुत्र श्रीचन्द्रजी तपस्या किया करते वहाँपर आन विराजे । उनका दर्शन करके आनन्द मंगलके समाचार पूछनेके पश्चात् कुछ ज्ञानचर्चा चलाई कुछ कालतक प्रेमपूर्वक वार्तालाप होता रहा । उसके पश्चात् बाबा श्रीचन्द्रजीने स्वभाविकही श्रीगुरुअर्जुनजीसे कहा कि तुमने यह अपनी डाढी (श्मश्रू) इतनी लम्बी काहेको बढाई है । श्रीगुरुअर्जुनजीने नम्र होकर कहा कि आप जैसे अपने बडे महापुरुषोंके चरण झाडकर साफकरनेके लिये । बाबाश्रीचन्द्रजी इस नम्र वचन को श्रवणकर बहुत प्रसन्न हुये। और कहने लगे कि इनहीं आचरणोंसे तो तुम लोग गादीको प्राप्त हुये श्रीगुरुअर्जुनजीने कहा कि यह गुरुगादीभी तो आपहीकी कृपाका फल है । अर्थात् आपहीने सेवकजानकर प्रदान करी है । उसके पश्चात् श्रीगुरुजी वहाँसे चलकर गुरुबागसे सहशिरा नामक ग्रामसे होते हुये शहर अमृतसरमें पीछे आये । उसी समयमें श्री गुरुजीका भ्राता पृथ्वीचन्द्र अपने मित्र खिलजी खान हाकिमसे एक लाहौरप्रान्तमें हेहर नामक नूतन ग्राम बसवाकर वहाँ जाय

बसा और वहाँही एक अमृतसर तीर्थकीतरह छोटासा तालाव बनवाकर उसमें हरिमन्दिर भी बनवाकर अपने शिष्यवर्गसे कहने लगा कि सच्चा-तीर्थ अमृतसर यही है । इसीमें स्नान ध्यान करनेसे अधिकारियोंका कल्याण होगा । इस वार्ताको श्रीगुरुअर्जुनजीने भी सुना तो आपने कहा कि उसने श्रीगुरुरामदास साहिबकी बराबरी करी है । इसलिये इसका बनाया उसमें पानीका ठहरना कठिन है । ईश्वरकी इच्छासे वैसाही हुआ । वह तालाव अभीतक सदा सूखा पडा रहता है । और कुछ उसपर वस्ती नहीं है । उस ग्राममें पृथ्वीचन्द्रके वंशके लोग अभीतक निवास कर रहे हैं । शहर अमृतसरमें पृथ्वीचन्द्र प्रायः सदाही श्रीगुरुजीके साथ लडाई टंटा फसाद रक्खा करता था इसलिये श्रीगुरुअर्जुनजी अमृतसरजीसे चारकोश किनारेपर वडाली नामक ग्राममें जाय बसे थे । वहाँही पर आपके घरमें महा प्रतापी श्रीगुरुह-रिगोविन्दजी भी उत्पन्न हुये । पुत्र उत्पन्न होनेकी खबर सुनतेही पृथ्वीचन्द्रकी छातीपर सर्प लोटने लगे । और उसीदिनसे उस लड, केके मरवानेमें भी कटिबद्ध हुआ । एकदिन खेलते लडकेके आगे एक अतिविषवाला सर्प छुडवा दिया परन्तु परमेश्वरकी कृपासे उस लडकेको उस सर्पने दंश नहीं किया । सर्प विमुख होकर बिलमें चलागया उसके पश्चात् उसने एक शोभी नामक धात्रीसे दुर्मंत्र करके लडकेको विष-देना चाहा । उस धात्रीने लोभ वश स्वीकार करके माता गङ्गाको अपने पर विश्वसित किया और एक दिन अपने स्तनोंमें घोर विष-पोचकर लडकेको उठाकर पूतनाकी तरह कृष्णके मुखमें देने लगी माता गङ्गाको उसी कालमें उसपर कुछ सन्देहसा होगया । उसने उसी वक्त अपना पुत्र उससे लेलिया । वह धात्री लज्जित होकर पीछे देरतक वहाँही बैठी रही । और अपनी प्रमाणिकताकी सूचक अनेक तरहकी बात चीत माता गंगासे करती रही परन्तु तबतक वह भया-नक विषस्तनों द्वारा उसीके भीतर आवेश कर गया जिससे वह दो चार दिन बीमार होकर स्वयं मरगई । और शेषमें अपने

सारे कपटका हालभी माता गंगासे साफ २ सुनादिया । श्रीगुरुहरिगोबिन्दजीके विष दिलवानेकी वार्ताको सुनकर बहुत शिष्यलोगोंने पृथ्वीचन्द्रको धिक्कार किया। पुत्र उत्पन्न होनेके पश्चात् बहुत लोगोंके श्रीगुरुअर्जुनजीके आगे प्रार्थना श्रीअमृतसरमेंही निवास करनेकी करी। बहुत शिष्यलोगोंके अनुरोधसे श्रीगुरुजी फिर अमृतसरमें आन वसे। श्री गुरुजीके फिर अमृतसरमें निवास करनेसे सब शिष्यलोगोंने मिलकर श्रीगुरुजीके पुत्रोत्सवके निमित्तमें एक ऐसा भारी जलसा किया कि जिसको देखकर पृथ्वीचन्द्रकी छाती फटगई। और फिर उसने नन्दलाल नामक ब्राह्मणको पाचकको पाँचसौ रुपेयका लोभ देकर श्रीगुरुहरिगोविन्दजीको भोजनमें विष दिलवाना चाहा। नन्दलाल पाचकने श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके खिलानेके लिये विषको दधिमें मिलाकर रक्खा था। उसने भोजनके साथ दधिकी कटोरी भी रक्खी परन्तु दैवात् गुरुहरिगोविन्दजीने कहा कि आज दधि खानेको मेरा मन नहीं चाहता पाचक ब्राह्मणने अज्ञात बालक जानकर झिडिककर बलात् खिलाना चाहा। तो लडकेने उच्चस्वरसे जोर जोरसे रोदन करना प्रारम्भ किया। जिसकी। सुनावी श्रीगुरुअर्जुनजीके कर्णतक पहुँची। श्रीगुरुअर्जुनजीने स्वयं उठकर लंगरमें आनकर देखा तो दधिको देखकर उनके चित्तमें भी सन्देह हुआ। श्रीगुरुजीने उस दधिको उसीकालमें एक किनारेपर फेंकवाकर एक कुत्तेको खिलाया। तो कुत्ता थोडीही देरके पीछे तडफडाकर मरगया। तब तो श्रीगुरुजीने पाचकसे यथार्थ पूछा तो उसने भयभीत होकर सभी वृत्तान्त सत्य २ सुनादिया। उसीकालमें पाचक देवता तो अपनी करणीका फल भोगनेके लिये कारागारमें भेजेगये। और उसके पश्चात् पृथ्वीचन्द्रको लोगोंने ऐसा धिक्कारा कि उसको किसी भलेके सामने मुख दिखलाना भी कठिन पडगया। और शहर अमृतसरसे निकलकर प्रथम तो हेहरनामक ग्राम बसायाथा। फिर उसकोभी छोडकर फिरोज पुरके जिलेमें एक गुरुका कोठानामसे और ग्राम बसाकर उसमें जा बसा।

पृथ्वीचन्द्रने श्रीगुरुअर्जुनजीकी हानि करनेके लिये अपनी तरफसे कोईभी उपाय शेष नहीं रक्खा था और पृथ्वीचन्द्र पुरुषभी कोई साधारण नहीं था किन्तु उसी गुरुरामदासजीका ज्येष्ठपुत्र होनेके काण इसकोभी सहस्रोंलोग मानते थे। परन्तु श्रीगुरुअर्जुनजीके प्रताप प्रभावके आगे इसकी कुछभी न चली। प्रत्युत उसके विपरीत होनेसे इनका प्रताप प्रतिदिन वृद्धही होता चलागया। आपसे आप सारे देशके लोगोंके चित्तोंमें इनकी सचाई इनका सरलपन इनका उदार भाव अनायासही बसगया। चारों तरफसे सहस्रों कोशोंसे दूर २ के लोग दर्शनको प्रतिदिन आने जाने लगे। और गुरुनानक साहिबके घरके सेवक होनेके लिये इनके शिष्य होनेलगे।और इन्होंनेभी बहुतसे नियम श्रीगुरु घरके लिये अच्छे २ नये प्रचलित किये। इनसे प्रथम गुरुनानक घरके खालसा धर्मकी कोई पुस्तक न थी। प्रथम हुये गुरु वचनोंका संग्रह करके तथा स्वयं शेषपूर्ति करके श्रीगुरु ग्रन्थ जो कि धर्म खालसाका मूलमान्य पुस्तक है इन्होंहीने तैयार किया। श्रीगुरु अर्जुनजी एक अति गम्भीर भावके दूरदर्शी महापुरुष थे। आपने विचारा कि मत मतान्तर या धर्म प्रचारका मूल बुनियाद पुस्तक होता है। सनातन धर्मका प्रचार करनेवाले महापुरुषोंने वेदपुस्तकको बनाकर उसको ज्ञानरूपसे अपौरुषेय तथा ग्रन्थरूपसे पौरुषेय कहकर प्रचार किया। इसीतहर मूसाने तौरीत पुस्तकका ईसाने अंजील पुस्तकका मुहम्मदने कुरान पुस्तकका प्रचार किया। और सबने अपनी२पुस्तकको खास परमेश्वरके घरसे आई बतलाया और माननेवाले श्रद्धालुलोगोंने माना। इसलिये अब हमको भी इस गुरुनानक प्रकाशित धर्म खालसाके लिये एक पुस्तक अवश्य होना चाहिये। ऐसा विचारकर श्रीगुरुअर्जुनजीने गुरु ग्रन्थका संग्रह करना प्रारम्भ किया। श्रीगुरुनानकजीसे लेकर चारों गुरुओंकी वाणीको प्रथम आप यथाक्रम लिखा। उसके पश्चात् श्रीअमृतसर तीर्थके पूर्वकी तरफ थोडी दूरपर रामसरोवरपर आपने एक कनात लगवाकर वहाँपर सुखमनी नामक वाणीका स्वयं उच्चारण किया उसके पश्चात् भाई गुरुदास-

जीको अपने पास लेखक नियत करके आप उनसे यथाक्रम श्रीगुरु ग्रंथजी लिखवाने लगे । श्रीआदि अनेक राग रागनिओंका क्रम बाँधकर प्रत्येक रागके प्रथम श्रीगुरुनानकजीकी वाणीको लिखवाया उसके पश्चात् यथाक्रम द्वितीय तृतीय चतुर्थ गुरुजीकी वाणीको लिखवाया उसके पीछे पाँचवें स्थानपर अपनी वाणी लिखी । और जैसे और सब गुरुओंकी वाणीके अन्तमें एक नानकहीके नामसे शब्दकी समाप्ती थी वैसेही इन्होंने अपनी वाणीमें भी किया केवल पहचानमात्रके लिये प्रथम गुरुकी वाणीके आदिमें महला १ एवं दूसरे तीसरे चौथे पाँचवें गुरुकी वाणीके आदिमें यथाक्रम महला२ महला ३ महला ४ महला ५ इत्याकारक नियम रक्खा । परस्पर एक रूपता एक अभिप्राय तथा एक उद्देश बोधन करनेके लिये प्रत्येक वाणीको अन्तमें सबने गुरुनानकहीका नाम रक्खा । उसके पश्चात् प्रत्येक रागमें कबीर नामदेव धन्ना रविदास पीपा सायन सधना त्रिलोचन वेणी सूरदास रामानन्द तथा फरीदजी मीराबाई इत्यादि भक्त लोगोंकी वाणी भी लिखवाई उनका उनकी वाणीमें भिन्न २ नाम डाला यह श्रीगुरु ग्रन्थकी वाणी अनेक रागरागिनिओंसे पूरित तथा विविध उपदेशोंसे भूषित है अधिक क्या कहना है संसार सागरके पार करनेके लिये इस अज्ञजीवके निमित्त एक असाधारण निर्भय पीत है इस सारे गुरुग्रन्थ साहिबका स्वरूप श्रीगुरुअर्जुनजीने बडे प्रयत्नसे पूर्ण किया है । रामसरोवरके तीरपर एकान्तमें खेमा लगाकर सभी गुरुओंकी तथा भक्तोंकी वाणीको आप कनातके भीतरसे बोलते तथा भाई गुरुदास लिखारीसे लिखवाते । इसी तरह पर समग्र गुरुग्रन्थ तैयार हुवा है इस गुरुग्रन्थमें होनेवाली भक्तोंकी वाणी विषयक अनेक लोगोंकी भिन्न २ सम्मति है । कोई कहते हैं कि उसी कालमें वे भक्त लोग गुह्य रूपसे अपनी वाणी लिखवाने चले आते थे । कई लोग ऐसा कहते हैं कि अनेक भक्तोंकी वाणीओंका श्रीगुरुजीने जहाँ तहाँसे संग्रह किया है । कोई कहते हैं कि केवल उनके अभिप्राय लेकर

श्रीगुरुजीने स्वयं उनके नामकी वाणी वनाई है। इत्यादि अनेक तरहकी कल्पना करते हैं कुछ भी हो वाणी सभी उत्तम हैं। इसके सिवाय कई एक भट्ट लोगोंकी वाणी भी गुरुनानक आदिकी प्रशंसामें विद्यमान है और एक वाणी और भी है। उसका वृत्तान्त ऐसा है कि हरिकीर्तन करनेवाले रागी लोग श्रीगुरुजीके दरबारमें प्रथम गुरुनानकहीके समयसे चले आते हैं। ये लोग जातिके मुसलमान मिरासी गायक होते थे। पञ्चम गुरुके समयमें अधिक विभूति राजसी ठाट देखकर उनके मनमें यह अभिमान हो आया कि यदि हमलोग गाय बजायके न दरबारकी शोभा बढावें तो खाली गुरुजीको यहाँ कोई भी न पूछे। इन्होंने ऐसे अभिमानके वचन अनेक वार अनेक शिष्य लोगोंके पास किये। शेषमें यही चर्चा श्रीगुरुजीके कर्णतक पहुँची श्रीगुरुअर्जुनजी इस वार्ताको सुनकर बहुत नाराज हुये। और उसी दिन उनका दीवानमें आनाबन्द किया वे लोगभी खूब धन मदसे मस्त थे बेपरवाह होकर घरहीमें बैठने लगे। इधर श्रीगुरुजीने अपने शिष्यलोगोंको वाद्य गीत हरिकीर्तन सीखनेकी आज्ञाकरी थोडेही दिनोंमें अनेक लोग तैयार होगये। तबतक उनके पासभी आपकी तंगी तथा खरचके अधिक होनेसे धनकी त्रुटि होने लगी इधर गुरुजीके दीवानकी कीर्तनकी त्रुटि पूर्ण हुई देखकर वे मुसलमान गायक लोग दीन होगये। और उनमेंसे सत्ता तथा बलवण्ड इन दोनोंने मिलकर एक रामकली रागिनीमें वार बनाई। जिसको श्रवणकर श्रीगुरुअर्जुनजीने प्रसन्न होकर उनका अपराध फिर क्षमा किया। और उनकी वार रामकलीमें श्रीगुरु ग्रन्थमें चढाई। संवत् १६६१ विक्रमीमें तथा संवत् १३५ नानकशाहीमें गुरुग्रन्थजीको मुन्दावणी नामकशब्दपर इति श्री किया। मुंदावणी शब्दका अर्थ (मून्दना) बन्दकरना मुहर छापकरनी अर्थात् आगे लिखनेको नहीं है इत्यादि है। यद्यपि मुन्दावणीपर गुरुग्रन्थकी समाप्ति है तथापि उसके पश्चात् आलमकविकृत रागमाला जो कि श्रीगुरुजीसे ९१ वर्ष प्रथमही पुस्तक विशेष

में लिखी हुई थी किसी भले पुरुषके लानेसे गुरुजीने उचित जानकर वहभी अन्तमें लिखदई । उसके पश्चात् श्रीगुरुजीने अपने शिष्य भाई बन्नुको शहर लाहौरमें गुरु ग्रन्थकी जिल्द बँधवानेके लिये भेजा तो उसने श्रीगुरुजीकी आज्ञाके विनाही बहुत शीघ्र एक और जिल्द लिखवाकर तैयार करवा लई । जिसमें कई एक शब्द उसने अपने मनमानीभी डाली । श्रीगुरुअर्जुनजीने भेद पाकर भाई गुरुदासकी लिखी पुस्तकका नाम मीठीबीड रक्खा । और कुछ शब्द अधिक वाली भाई बन्नुकी लिखी पुस्तकका नाम खारीबीड रखा । यह भाई बन्नुवाला ग्रन्थसाहिब वर्तमानमें शहर माँगट इलाका शरकपुरमें उसी भाई बन्नुकी वंशके लोगोंके पास है और भाई गुरुदासजीकी लिखित पुस्तक शहर करतारपुरमें सोढीसाहिबजादोंके पास है । यावत् गुरुनानक घरके शिष्यलोग अपने लौकिक पारमार्थिक लाभके लिये इन दोनों गुरु ग्रन्थोंका भजन पाठ करते हैं दो चार शब्दोंके लाभके फेरफारके सिवाय दोनों एकही हैं । वर्तमानमें खालसा धर्ममात्रके स्त्री पुरुष सभी गुरुग्रन्थजीको बहुतही सत्कार पूर्वक पठन पाठन द्वारा मानते हैं । यहाँतक कि जब किसी खालसा धर्मके पालक स्त्री या पुरुषकी मृत्यु होजावे तो उसके पीछे उसके जीवात्माकी कल्याणके लिये और फोकट क्रियाओंको छोडकर केवल परमेश्वरका स्तवन मंगल रूप गुरुग्रन्थहीका पाठ करते हैं । प्रतिष्ठा तथा सत्कार बुद्धि खालसाजाति की अपनी धर्म पुस्तकपर ऐसी अपूर्व है कि दूसरे किसीभी धर्मवाले की अपनी धर्म पुस्तकपर कभी न होगी । संवत् १८८८ विक्रमीमें महाराजा रणजीतसिंहजीने बडे आदर भाव प्रेमसे दर्शन करनेके लिये शहर करतारपुरवाला गुरु ग्रन्थसाहिब बडे जलसाके साथ लाहौर शहरमें मँगवाया । तो उसी दिनसे १०१ रुपया भेटका धरकर ११ रुपयेका कडाह प्रसाद (हलुआ) वास्ते भोगके प्रतिदिन नियत किया । और कुछ दिन पीछे जब लाहौरसे करतारपुरमें विदा किया तो उस कालमें पचास सहस्र रुपयोंकी जागीर अरदास (अर्पण) कराई

और उसके पीछे फिर जब इसी तरह संवत् १९१६ विक्रमीमें महा राजा नरेन्द्रसिंहसाहेब राज्याधिपति पटियालाने इसी गुरुग्रन्थ साहिब-को वास्ते दर्शनके अपनी राजधानी पटियालामें मँगवाया तो उसी कालमें ५१ रुपया भेंट रखकर प्रतिदिन पाँच रुपयेका कडाह प्रसाद भोगके लिये नियत किया और गुरुग्रन्थजीको एक वर्षतक अपनी राजधानीमें श्रद्धाभक्ति पूर्वक रखकर प्रतिदिन अपने दर्शनादि नियमके निर्वाह पूर्वक शेषमें सातसौ रुपयेकी वार्षिक जागीर देकर शहर करतारपुरमें विदा किया । वह जागीर अबतक भी सोढी साहिबजादे भोग खाते हैं । वैशाखकी संक्रांतिके मेलापर इस गुरुग्रन्थसाहिबका सबको साधारण दर्शन होता है । परन्तु यदि कोई विशेष रूपसे आगे पीछे भी दर्शन करना चाहे तो सवा-रुपयेके कडाह प्रसाद करवानेसे होसकता है । यहाँपर पूर्वोत्तर अनु-संधानकर्ता पाठकके चित्तमें यह अवश्य स्फुरण आन होगा कि इस इतिहासकी पूर्वोत्तर पीठिकामें कुछ परस्पर विरोध है क्यों कि प्रथम यवनजातिके आर्य्य जातिपर अनेक तरहके विषम अत्याचार दिख-लाकर उन अत्याचारोंकी शान्तिकेलिये तथा आर्यजाति मूलसे निर्मू-लहोतीको बचानेके लिये इस इतिहासके प्रारम्भकी प्रतिज्ञा थी । परन्तु उस कार्य्यका अभीतक कुछ नाम निशान भी नहीं है केवल थोडासा बाबानानकजीने शान्तिका उपदेश किया था उसके पीछे तो ज्यों २ बहुतलोग पंजेमें आते गये त्यों २ अपना ठाट बढाते बढाते राजों जैसी विभूति एकत्र करके आनन्द करने लगे । गुरुगादी अधि-कारीको देनेकी प्रथम गुरुकी आज्ञा थी वहभी अब अधिक सम्पत्ति देखके चौथे गुरुसे घरहीमें रखने लगे अर्थात् दूसरे घरमें न जाने दई । शेषमें लोगोंको पूर्ण रूपसे पंजेमें लेनेकेलिये एक पुस्तक भी पञ्चम गुरुने तैयार किया । अब इसमें विशेषता क्या रही जैसे और ९९९ मत मतान्तर तथा सम्प्रदायोंने इस देशकी अधोगति करी है । तथा अपने अपने जुदा २ धर्म पुस्तक बना बनाकर देशमात्रके मनुष्यों

की बुद्धिको छिन्न भिन्न करडाला है और आचार व्यवहार वेषादिके किञ्चित् २ भेदसे परस्पर भ्रातृ भावका मूल उखाडडाला है उनहींमेंसे एक या उनहीं जैसी यह गुरुनानककी सम्प्रदाय भी जानलेनी चाहिये इसका उत्तर संक्षेपसे यह है जबतक फलका निदर्शन न होजाय तबतक साधु पुरुषकी तथा वञ्चक पुरुषकी क्रियामें भेद नहीं प्रतीत होता। अथवा स्वर्णकार तथा स्वर्ण शोधक रसायनी पुरुषोंको अग्नि आदि साधारण सामग्रीके अपेक्षित होनेपरभी एक स्वर्णमें प्रत्येक तापमें मलिनता कारक है और दूसरा प्रत्येक तापमें शोधक है गुरुनानकजीकी गादीका धन या गुरुनानककी गादीका चौथे गुरुसे वंशपरम्परामें रहना कोई दूसरे सम्प्रदायवालोंकी तरह सांसारिक भोग प्रतिष्ठा या खुशीके वास्ते नहीं किन्तु तन मन धन कुटुम्ब सभी इस अनाथ हिन्दूजातिके स्वतन्त्र करनेके लिये वह क्योंकर होगी कैसे होगी कब होगी इत्यादि विचारही मूलमन्त्र थे तथा सर्वान्तर्यामी परमात्माकी अनन्य भक्तिसे उपासना थी अनेक वञ्चकोंसे वञ्चित हुई हुई तथा अनेक स्वर्णकारोंसे दूषित हुई हुई अनाथ आर्य्यजातिका श्रीगुरुनानकादि अनेक साधुपुरुषोंने तथा स्वयमेव अनेक रसायन वेत्ताओंने इस दीनजातिका भारी प्रयत्न पूर्वक एक रूपसे संरक्षण तथा स्वर्णकी तरह प्रयत्नसे परिशोधन किया है। गुरुनानकका घर कोई किसी तरहका बाडा नहीं है। जैसे कि और सम्प्रादय हैं किन्तु सभी तरहसे अत्यन्त खुलासा नामहीसे धर्मखालसा प्रतीत होता है गुरुनानकके घरमें पुरुष पशु पहचानके लिये कोई नंबर चिन्हभी नहीं दियाजाता किन्तु परमेश्वरीय वेश जैसा कि इस जीवका स्वतः सिद्ध है वही बना रहता है। गुरुनानक सिद्धान्तकी पुस्तक कोई अपने मतलब या स्वार्थकी भरीहुई नहीं है किन्तु सरल देश भाषामें अनेक तरहकी शिक्षा भक्ति ज्ञान वैराग्य तथा परमेश्वरके गुणानुवादसे पूरित है। अधिक क्या कहूं मेरे जैसे अनेक तरहकी मत मतान्तरोंके सिद्धान्तोंके निरीक्षक तथा परीक्षण कर कदाचित् परमेश्वर पर-

भी अनास्था बुद्धिकारक तार्किक मनुष्योंको यदि फिर परमेश्वरपर विश्वास दिलाने वाली है तो यही एक गुरुनानककी वाणी हैं । इसी गुरुनानकजीकी वाणीकी प्रशंसामें किसी एक मेरे जैसे कविनेभी कहा है ।

कवित ।

वेदसे विचारे साथ अङ्गन उपाङ्गनके,
शास्त्र औ पुराणनकी बात बात आती है ।
काव्यकोश धर्मनीति शास्त्रनकी कौन कथा,
बाइबल् तौरीत औ कुरानभी सुहाती है ॥
विनादेखे दूर कैसे ढोलसे सुहावे सब,
पढे सुने स्वान्तबीच शान्ति नहीं आती है ।
हितैक शासक गुरुनानककी गिरा आगे ।
और सब वाणी बाललीलासी बुझाती है ॥ १ ॥

इत्यादि कथनसे यह स्पष्ट सिद्ध हुआ कि श्रीगुरुनानकजीका घर और मतमतान्तरों जैसा नहीं है किन्तु केवल परोपकारके लिये है । प्रकरणान्तरको लेकर अधिक विचार करनेसे ग्रन्थकी वृद्धि तथा इतिहास रसकी हानि होती है । इसलिये श्रीगुरु घरकी वस्तुवस्तुके असीमगुणयुक्त होने परभी कहनेका अवसर न देखकर शान्त होना पडता है । अथवा इसी ग्रन्थके शेषमें हम गुरुनानक सिद्धान्त । तथा गुरुनानक गृह गौरव, इस नामके दो प्रकरणोंमें संक्षेपसे गुरुघरके पदार्थोंका स्वरूप तथा उनके गुणोंको कहेंगे । श्रीगुरुअर्जुनजीके समयमें धर्म खालसाने इतनी उन्नति करी कि देशसिद्ध देहराजात पेशावर, काश्मीर, काबुल, कन्धार, मालवा, हिन्दोस्तान इत्यादि चारों तरफके देशोंसे सहस्रों रुपयेकी भेंट पूजा सामग्री जिनस श्रीगुरुजीके दरबारमें आनेलगी । राजगानको हस्तान हरिपुर, चम्बा, सुकेतमण्डी इत्यादि पर्वतके प्रान्तोंसे भी उचित पूजा भेंट नियम पूर्वक आ-

नेलगी और इधर श्रीगुरुजीके लंगरमें भी एकतार सदावरत प्रचलित हो रहा था। प्रतिक्षण लंगर गरमही रहता था। अन्न बनता बटताही रहता था। जो आता था बिना भोजन किये नहीं जाता था। फिर भी जो रुपया लंगरसे बचता था उससे मकानात अनेक तरहके बनवाये जाते थे। अमृतसर शहरका गुरुका बजार तथा अनेक तालाव उसी समयके बने हुये हैं। श्रीगुरुअर्जुनजीने अपने समयमें अपनी विलक्षण बुद्धिसे तथा विचित्र प्रतापसे बहुतही कार्य्य किये तथा बहुतही प्रतिष्ठाभी बढाई। श्रीगुरुरामदासजीके परम धाम पधारनेके पीछे इनके बडेभ्राताने घरभरके सारे धन माल वस्त्र कपडेपर स्वाधिकार कर लिया था। यहाँतक कि गुरुके लंगरके वर्तनभी उसने सबके सब उठालिये थे। क्योंकि यह सभी व्यवहार श्रीगुरुरामदासजीने चलानेके लिये अपने सत्वकालमें उसीके हाथमें कर रक्खे थे। कारिन्दे लोगोंको लालच देकर पूजाभी आपही लेने लग गया था। और गुरुअर्जुनजीके लङ्गरमें उस कालमें यह हाल होगया था कि किसी वक्त सूखे चनोंका मिलनाभी दुर्लभ था। अकस्मात् एकदिन श्रीगुरुअर्जुनजीके पास भाई गुरुदासजी आये। तो उनको उसदिन सूखीचनेकी रोटी गुरुके लंगरमें खानेको मिली।। उनको इस दशाको देखकर बहुत शोक हुआ। और उन्होंने उसी समय बाबाबूढा तथा भाई सालो इत्यादि प्रसिद्ध २ गुरुके शिष्योंको साथ लिया। और मेले दीपावलीके अवसरपर जहाँसे अनेक शिष्यलोग आया जाया करते थे वहाँ पिपली साहिबके मकानपर जाय बैठे। और वहां पर अनेक शिष्यलोगोंको वास्तव वृत्तान्त सुनकर श्रीगुरुअर्जुनजीकी तरफ प्रेरणा किया और उसी कालमें उन लोगोंसे गुरुके लंगरके लिये एक सहस्र रुपया भी लिया उसके पश्चात् जगह जगहपर श्री गुरुअर्जुनजीकी तरफसे हुकुमनामामें भी लिखकर भेजे। इत्यादि अनेक तरहके प्रयत्न करनेसे शिष्यलोगोंको विदित हुआ तो फिर सूधे श्रीगुरुअर्जुनजीके दर्बारमें पृथ्वीचन्द्रको छोडकर आनेलगे। फिर

पृथ्वीचन्द्रने सुलहीखान नामक उसदेशके हाकिमको कुछ रिश्वत देकर अपना सहकारी बनाया। और अपने पिताकी गुरुगादीका दावा दायर करदिया। जिसका बादशाह अकबरने यह फैसला किया कि जो अधिकार जिसको पितासे मिला हो उसका तोडना न्याय है। इसी तरहपर अन्तमें जब कोई चारा न चला तो सुलहीखान हाकिमके साथ मिलकर व्यर्थ झूठे २ लडाई झगडे टंटे फसाद रखने लगा उसी कालमें लाहौरके रहनेवाला वजीरखान नामक नायक वजीर जिसकी मसजिद् अबतक दिल्लीदरवाजाके भीतर वर्तमान है जलोदर रोगकी पीडासे ऐसा पीडित हुआ। कि बैठना उठनाभी कठिन पडगया जब किसी तरहसे रोग शान्त न हुआ तो फकीर मीयाँ मीरकी प्रेरणा से वजीर श्रीगुरुअर्जुनजीके पास पहुँचा। उस समयमें श्रीगुरुअर्जुनजी अमृतसर दुःख भंजनीपर पूर्वोक्त वदरी वृक्षके नीचे बैठकर तालाव खुदवा रहे थे। वजीरखानको उसके साथके मनुष्योंने पालकीसे निकालकर श्रीगुरुअर्जुनजीके चरणोंमें लेटादिया। उसीकालमें श्रीगुरुअर्जुनजीने अपने बाबाबूढा नामी शिष्यसे जो।कि साधारण भृत्यकी तरह मट्टी निकाल रहा था कहा कि बाबा इसपर मेहरवानी करो। परन्तु वह बाबा चुप चाप मट्टी डालकर चला जाता रहा। ऐसेही जब तीसरी वार श्रीगुरुजीने कहा तो उस बाबाने कीचकी भरी हुई टोकरी वजीरखानके पेटपर ऐसी मारी कि उसके पेटसे रोगसहित सारी मवाद् निकलके बाहर आन पडी। और उसको आराम होगया। श्रीगुरुजीने उसको कडाह प्रसाद् भोजन करनेके लिये दिया। उससे वह पूर्णरूपसे आरोग्य होगया। और तनमनसे श्रीगुरुजीका सेवक बन गया। और रात्रिके समय जो एक शिष्य सुखमनीजीका पाठ किया करता था उसको सुनकर वजीरखान बहुत प्रसन्न हुआ श्रीगुरुजीसे प्राथना करके उसको सदा सुखमनी सुननेके लिये अपने साथ लेगया। और जबतक जी॰ तारहा तबतक सदा एकबार दिनमें उसी गुरुके शिष्यके मुखसे सुख-

मनीका पाठ सुनताही रहा और प्रतिदिन कडाह प्रसादभी बनवाकर खाता रहा ।

अन्तमें सुलहीखान हाकिमने पृथ्वीचन्द्र तथा गुरुअर्जुनजीका ऐसे फैसला किया कि यावत् शिष्य सेवकोंकी मालकी तो गुरुअर्जुनजीकी रही है । और बाकी गुरुके चक्कके साथ जो कुछ जमीदारी है । उसमेंसे कुछ हिस्सा पृथ्वीचन्द्रको भी दिलवाया । यह सभी भूमि बादशाह अकबरने दई थी ।

इतिषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

अथसप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

और जबतक श्रीगुरुअर्जुनजीके अपने सन्तान नहीं हुई थी तो उन्होंने बडेभ्राता पृथ्वीचन्द्रका एक मिहरबान नामक पुत्र अपनी गोदीमें लेलिया था अर्थात् दत्तकपुत्र बना लिया था । परन्तु पीछे जब उनके घरमें गुरुगोविन्द उत्पन्न हुये तो उसको गुरुगादी मिलने की आशा शान्त होगई । इसीलिये पृथ्वीचन्द्रने गुरुहरिगोविन्दके मार डालनेके भी अनेक उपाय किये परन्तु परमेश्वरकी इच्छाके विपरीत होनेसे कुछ बन न पडा । किन्तु अच्छे २ उपाय खालीही गई शेषमें लाचार होकर उसने अपने मित्र सुलही हाकिमसे भी यह वार्ता कही कि मेरा पुत्र दत्तक हो चुका था अब उसको कुछभी नहीं मिलता किन्तु सर्वथा अनधिकारी गिना जाता है । इस वार्ताका निपटाव श्रीगुरुअर्जुनजीने इस तरह पर किया कि कारभेंट पूजा लाने वाले सभी २ मुसदी (कारिन्दा) हैं उनमेंसे साडेतीन दत्तक पुत्रके नाम करदिये । प्रथम दरिया अटकके परले पारका हिस्सा दूसरा सूजा मूलक वन्नी घेपका । तीसरा स्यालजातिके जमीदारोंकी वारका । और आधा देशमालवामें भिण्डरजातिके जाटलोगोंका इन साडेतीन कारिन्दोंकी आमदनी श्रीगुरुजीने अपने दत्तक पुत्रको लिख

दई । यह आमदनी कुछ कम न थी किन्तु प्रतिवर्ष सहस्रों रुपयोंकी
थी । परन्तु पृथ्वीचन्द्रके चित्तमें गुरुगादीके न मिलनेका शूल इन
छोटी छोटी बातोंसे कैसे दूर होसके । प्रथम तो पितासे अपनेहीको
न मिलनेमें जला करता था । परन्तु अबतो पुत्रके गुरुगादी मिलनेकी
आशा भी बन्ध्याके समान हुई । इसपर इन थोडी २ आमदनीके
प्रबन्धोंसे पृथ्वीचन्द्रको कुछ शान्ति नहीं किन्तु क्षतोंपर लवण है। जो
भावि परमेश्वरकी परन्तु पृथ्वीचन्द्रके मनमें द्वेषाग्निसे ऐसा प्रवेश किया
है कि उसको आराम मिलना कठिन है । इसी द्वेषाग्निसे जला हुआ
पृथ्वीचन्द्र दैवात् लाहौरमें चन्दुलाल नामक क्षत्रिय दीवानको जाय
मिला यह दीवान चन्दुलाल क्षात्रियराज दरबारमें एक संभावित मनुष्य
था । इसके घर एक पुत्री स्वभावगुण स्वरूपसे अप्रतिम हुई थी ।
इसका पिता इसके छोटे पनेहीमें इसके समान गुणस्वरूपवाले वरकी
अन्वेषणामें था परन्तु दूर समीप कहीं भी अपनी जातिमें ऐसी योग्य
ताका लडका सुनता देखता न था । परन्तु एक समय श्रीगुरुअर्जु-
नजीके लाहौर शहरमें आनेकालमें साथही श्रीगुरुहरिगोविन्दजी भी
छोटीही उमरमें थे दीवान चन्दुलालकी दृष्टि पडि तो दीवानकी दृष्टि
एकतार उनके स्वरूप देखनेमें स्थिर होगई यद्यपि चन्दुलाल श्रीगुरु
नानकके घरका सेवक न था । किन्तु वैरागीओंका चेला था ।
तथापि लडकीके अभिप्रायसे उसने श्रीगुरुअर्जुनजीसे शिष्टाचार
करके मेल मुलाकात किया । स्पष्ट न करी परन्तु अपने मनमें निश्चय
कर लिया कि श्रीगुरुअर्जुनजीका पुत्र मेरी पुत्रीके लिये उचित वर
है जब श्रीगुरुअर्जुनजी अमृतसरमें अपने स्थानपर गये तो थोडे
दिन पीछे चन्दुलाल दीवानका पुरोहित श्रीगुरुजीके पास पहुचा
कहा कि आपके चिरंजीवी श्रीहरिगोविन्दजीके साथ दीवान अपनी
पुत्रीका विवाह किया चाहता है । श्रीगुरुजीने कहा विवाहादि व्यवहार
हमारे सभी प्रायः शिष्यलोगोंकी सम्मतिके अनुसार हुआ करते हैं ।
हम अकेले कुछ नहीं कर सकते इसलिये इसी वार्ताकी चर्चा आज

दीवानमें चलाकर आपको हां या नाहीं निश्चय करदिया जायगा पुरोहितने स्वीकार किया। दरबारमें विचार हुवा तो अच्छे २ शिष्य लोगोंने दीवानका श्रीगुरुजीके घरके साथ सम्बन्ध उचित तथा। योग्य समझकर स्वीकार किया। पुरोहितने शकुन देखकर लडकेके मस्तकमें तिलक करदिया। यह व्यवहार भरेदरबार सहस्रों मनुष्योंके समक्ष हुआ। लाहौरशहर अमृतसरजीसे केवल २४ मील दूरपर है। सम्बन्ध नियत करके दूसरेदिन पुरोहितजी लाहौरमें पहुँचे अनेक मित्र मण्डल तथा राज दरबारी लोगोंमें बैठे हुये दीवान साहिबको पुरोहितने सम्बन्धका सुमाचार स्पष्ट वाणीमें सूचन किया। जिसको सुनकर उस बदनसीबने कुछ अपनी प्रतिष्ठा श्रीगुरुजीसे अधिक मन में ख्याल करके पुरोहितको यह कहा कि अच्छा बीतचुकी वार्ताका अब क्या कहना है। परन्तु तुमने चौछत्ते चौबारेकी एक चतखईट साधारण चारपाईके चबूतरेमें लगा डाली है। इस दीवानकी मूर्खताकी वार्ताको भरे दरबार सब लोगोंने सुना उनमें अनेक लोग श्रीगुरुजीके सेवकभी थे। सबके मनमें दीवानकी अनुचित वार्ता शूलसमलगी वही खबर अगलेही दिन अमृतसरमें पहुँची। शिष्यमण्डमें हल्ला मचगया केवल इसी वार्ताके विचारार्थ पृथक दीवान लगाया। श्रीगुरुजीके बहुत वारण करने परभी अच्छे २ सभी शिष्यलोगोंने यही निश्चय किया कि चन्दुलाल दीवानकी पुत्रीका सम्बन्ध गुरुके घरमें होना उचित नहीं। अधिक सम्मातिको एक तरफ देखकर श्रीगुरुजी चुपरहे सोचा कि अब यदि हम इनलोगोंको इस सम्मातिसे वारण करेंगे तो यह लोग हमको यह अवश्य कहेंगे कि गुरुजी बडे घरका सम्बन्ध छोडना नहीं चाहते इसलिये जो इनकी इच्छाहो करें सबने मिलकर दीवानको सम्बध अस्वीकारताका पत्र श्रीगुरुजीके हस्ताक्षर कराकर भेजादिया दीवान चन्दुलालका पत्र देखतेही तनमन अग्निकी तरह तप्त होगया। इसी घटनाके कुछदिन पीछे पृथ्वीचन्द्र उसको जाय मिला। और उसदीवान चन्दुलालद्वारा बादशाह अकबरके पास यह कहवाया कि

गुरुअर्जुनजी अपने पास अच्छे २ जबर डाकू तथा लुटेरोंको रखते हैं। और सदाही लूटमार करके निर्वाह किया करते हैं। इस वार्ताको निश्चय करनेके लिये बादशाहकी तरफसे संवत् १६५७ विक्रमीमें सुलमीखान नामक हाकिम नियत कियागया परन्तु परमेश्वरीय भावि ऐसी हुई कि सुलमीखानको कसबा गोयन्दवालमें जाकर उसके पिताके नौकरने जिसको वह तनखाह नहीं देता क्रोधमें आकर मारडाला। उसके विषयमें दीवान चन्दुलाल तथा पृथ्वीचन्द्र दोनोंने मिलकर बादशाहको यह निश्चय कराया कि सुलमीखान गुरुअर्जुनजीके अत्याचारसे कतल करदिया गया तब बादशाहने सुनकर बहुत क्रोधमें आकर सुलहीखान पठान जो कि पृथ्वीचन्दका भारी मित्र तथा लाहौरका प्रसिद्ध हाकिम था उसको श्रीगुरुअर्जुनजीके दृष्टिगोचर रखनेके लिये नियत किया। जब वह लाहौरसे चला तो पृथ्वीचन्द्रभी उसके साथही चला। और उसका सत्कार करनेके लिये अपने हेहर नामक ग्राममें उसको प्रथम लेगया। दोचार दिन वहाँ टिकाकर खूब खातरी करी बागोंके सैर करवाये शिकार खेलनेको लेजाता रहा और श्रीगुरुअर्जुनजीको विपत्तिमें डालनेके अनेक तरहके मिथ्या वाद कल्पना किये। परन्तु श्रीगुरुअर्जुनजीको इनकी इन बातोंका स्वप्न भी नहीं किन्तु वे अपने नियत कार्य्य परमेश्वरके भजन स्मरण कीर्तनमें लगे रहते हैं। जो परमात्मा सर्व शक्तिमान् सर्वान्तर्यामी है घटघटकी जाननेहारा है। एक क्षणमात्रमें कर्तुमकर्तु मन्यथा कर्तुं समर्थ है। बडे छोटे धनी गरिब बूढे बालक पीर मीर जिसके दरबारमें सभी सामान दरजेको लाभ करते हैं। ऐसा न्यायशील कृपालु परमात्मा स्वाश्रितोंका जहाँ तहाँ रक्षकभी अवश्य होता है। महापुरुषोंका वचन है कि। सोरठा— नरचाहत कछुऔर औरेकी औरे भई। चितवत रह्यो ठगौर। नानकफाँसी गलपरी ॥ १ ॥ एकदिन पृथ्वीचन्द्र तथा सुलहीखान दोनों परस्पर अनेक तरहको श्रीगुरुअर्जुनजीकी बुराई चिन्तन करतेहुये। घोडोंपर सवार होकर

शिकार खेलने चले । तो दैवात् उस मार्ग होलिये जिस मार्गमें पृथ्वी चन्द्रने अपने मकानात बनवानेके लिये ईंट पकानेके आँवे चढार रखे थे । उनके समीप जाकर पृथ्वीचन्द्रने सुलहीसे प्रेमसे कहा कि इधरभी दृष्टि करते चलिये मैं अपने मकानात बनवानेके लिये ईंटें बहुतसी तैयार करवा रहा हूँ । दोनों घोडोंपर सवार तप्त आँवोंके आसपास फिरके देखने लगे । अकस्मात् एक जानवरके बोलनेसे सुलहीखानका घोडा डरकर ऐसा कूदा कि उछलकर आँवेमें गिरपडा । अग्निसे रक्त हुये आँवेमें एक दममें सुलही समेत घोडा जलमरा । पृथ्वीचन्द्र इस भयानक घटनाको देखकर बहुत दुःखित हुआ और बहुत दिन तक अपने मित्रके शोकसे अपने घरसे बाहर गया । उसके पश्चात् संवत् १६६१ विक्रमीमें जब अकबरबादशाह दिल्लीसे लाहौरको जाता शहर बटालामें आया तो चन्दुलाल दीवानने बादशाहसे यह कहा कि गुरुअर्जुनजीने जो किताब बनाई है । उसमें मजहबइसलामकी बहुत बुराई लिखी है । और पैगंबर मुहम्मद साहिबको भी बुरा भला लिखा है है उस कालमें बादशाहने गुरुअर्जुनजीको गुरुग्रन्थ समेत मँगवा भेजा । श्रीगुरुजी कार्य्यान्तरमें तत्पर थे इसालिये स्वयं न जासके परन्तु गुरु ग्रन्थ साहिबके साथ भाई गुरुदास तथा बाबा बूढा इन दोनों अपने शिष्योंको भेज दिया । बादशाहने ग्रन्थ बाँचनेका हुकम किया तो सबसे प्रथम यह नीचे लिखा शब्द निकला ।

खाक नूर करदन आलम दुनियाँ ।
आसमान जिमीं दरखत आब पैदायश खुदा ॥
बन्दा चिश्म दीद न फना ।
दुनियाँ मुरदार खुरदनी गाफल हुवा ॥
गयबान हयवान हराम कशतनी मुरदार बखुरा ।
दिल कबज कवजाकादरव दोजख सजा ॥
दिले न्यामत बरादरा दरबार मुलक खानसाये ।
जब अजराईल बस्तनी तब चिकार बदाये ॥

अहवल मालूम करदमपाक अल्ला ।
बुगो नामक अरदास पेश दरवेश बन्दा ॥ १ ॥

जिसपर चन्दुलालने कहा कि यह स्थल इन सिक्ख लोगोंने केवल आपके सुनानेके लिये प्रथमही निकाल छोडा था । इसलिये आप दूसरी जगहसे सुनिये । फिर बादशाहने अपने हाथसे बहुतसे पत्र उलटकर बाँचनेका हुकम दिया तो नीचेलिखा शब्द निकला । राग-मारु महला ॥ ५ ॥

अल्ला अगम खुदाई वन्दे । छोड ख्याल दुनियाँके धन्दे ॥
होय पै खाक फकीर मुसाफिर यह दरवेश कबूल दरा ।
सच्च नमाज यकीन मुसल्ले ॥

इस पर भी उस चुगलखोर दुर्जनका मुख मलिन न हुआ और कहने लगा कि बादशाह सलामत इस पुस्तकमें बुतपरस्ती (मूर्तिपूजा बहुत जगहपर लिखी है । तो फिर बादशाहने अपने हाथसे पत्र उलटकर पाठकरनेको कहा । तो वहाँपर यह नीचेलिखा शब्द निकला ।

घरमें ठाकुर नजर न आवे । गलमें पाहन ले लटकावे ॥
भरमें भूला सांकित फिरता । नीर विरोले खपखप मरता ॥
जिस पाहनको ठाकुर कहता । सो पाहनले उसको डुबता ॥
गुनहगार वा लून हरामी । पाहन नाव न पारगरामी ॥
गुरुमिलनानक ठाकुर जाता । जल थल पूरन पुरुष विधाता ॥

अर्थात् यह जीव अपने घरमें सदैव रहनेवाले ठाकुरकी तरफ दृष्टि नहीं करता । परन्तु बाहरसे पाषाणादि लेकर अपने गलेमें बाँधलेता है । भ्रमात्मक ज्ञानमें भूला हुआ यह मूर्खपुरुष व्यर्थ नीरमथन कर करके खप २ के मरता फिरता है । जिस पाषाणको यह अपने मुखसे अपना ठाकुर मानता है । वही पाषाण इसको अज्ञानरूप समुद्रमें डुबानेका साधन है । यह जीव सदा भूलनेवाला अपराधि लवण हरामी है इस लिये पाषाण नावसे पार गरामी हुवा चाहता है । परंतु जिन पुरुषोंने

अपने सच्चे गुरुको मिलकर ठाकुरका वास्तव स्वरूप जाना है । उनहींको वह ठाकुर जलमें भूमिमें सर्वत्र पूर्णपुरुष विधाता प्रतीत हुआ है। बादशाहने शब्दके अर्थ सुनके चन्दुलालको मिथ्या शिकायत करने वाला निश्चय किया और गुरु ग्रन्थजीको सत्योपदेशकी पुस्तक निश्चय किया । इसलिये ५१ अशरफी गुरु ग्रन्थकी भेंट देकर और एक बहुमूल्य पश्मीनेका वस्त्र श्रीगुरुअर्जुनजीकी भेंटके लिये देकर बाबा बूढा तथा भाई गुरुदासको पीछे लौटा दिया । और कहा कि लाहौरसे पीछे दिल्ली जाने कालमें श्रीगुरुअर्जुनजीकी सेवामें मैं भी हाजिर होऊंगा । इन बातोंके सुनतेही शत्रुगणके चेहरे पीले होगये। मारे लज्जाके कई दिनतक आंख न उठाई । चारों ओरसे उनको धिक्कृति और फिटफिट होनेलगी । जब बादशाह लाहौरसे दक्षिण देशको पीछे चला तो अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार संवत्१६६२विक्रमीमें शहर अमृतसरमें मुकाम करके श्रीगुरुअर्जुनजीके दर्शनको खुद प्रेमसे गया । और उनके सरलस्वभाव सादेवेश तथा पवित्र उपदेशको देख सुनकर बहुतही प्रसन्न हुआ । उसकालके कलवँत गायक जो कि श्रीगुरुजीके दरबारमें कीर्तन करा करते थे। उनका गाना बजाना सुनके तथा तालाव अमृतसरकी शोभाको देखकर और भी निहायत खुश हुआ। और श्रीगुरुअर्जुनजीसे कहा कि यदि कुछ आप सेवाकी आज्ञा करें तो अभी स्वीकार करी जाय। श्रीगुरुजीने कहा फकीरोंकी सेवा हमेशां आप जैसे सद्गृहस्थही करा करते हैं । सो आपसे आप हो रही है और नईसेवा आपको क्या बतावें बादशाह प्रसन्न हुआ । और धर्मनीति विषयक कुछ प्रश्न करके श्रीगुरुजीसे उनका खुलासा उत्तर सुनकर बहुत खुश हुआ और मानसिक श्रद्धाभक्तिसे कुछ नकद और जिन्स भेंट पूजामें अर्पण किया । और फिर दुबारा बादशाहने कहा कि मेरेको भी कुछ सेवा फरमावें। श्रीगुरुजीने कहा अबके साल वर्षा कम होनेके कारण कुछ दुष्काल है इसलिये इस देशकी भूमिपर अबके वर्षकी माफ कर दो । बादशाहने खुश होकर स्वीकार

किया प्रत्युत उसीकालमें एकलाख रुपयेका गल्ला खरीदकर गरीबोंको बाँटनेका साथ ही हुकम दिया । श्रीगुरुजीने बादशाहकी उदारवृत्ति देखकर प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया । इस बातपर पंजाब देशके जिमीदारलोग बहुत प्रसन्न हुये और श्रीगुरुजीकी बडाईकी प्रख्याति चारोंओर दूर २ तक फैलगई ।

संवत् १६६३ विक्रमीमें जब अकबरबादशाहने अपने पुत्र जहाँगीरको अपने स्थानापन्न बादशाही तख्तपर नियत किया तो जहाँगीरका पुत्र शाहजादा खसरो स्वयं बादशाहीकी गादी लेनेके लिये अनेक उपाय करने लगा । तमाशबीन लोग भी उसको अच्छे २ सहायता देनेलगे । उसने सेना छोडकर उसी समयमें अपने पितासे लडाई भी करी । शेषमें हारकर पंजाबदेशको भागगया । और तरनतारनमें श्रीगुरुअर्जुनजीसे मिलकर उनसे सहायता माँगने लगा । परन्तु श्रीगुरुजीने उसकी इस वार्ताको अङ्गीकार न किया फिर उसने श्रीगुरुजीसे कुछ रुपयेकी सहकारता माँगी श्रीगुरुजीने कहा कि रुपया हम फकीरोंके पास जमाँ नहीं रहता । उसने बहुत प्रार्थनासे एकलाख रुपया चाहा । परन्तु श्रीगुरुजीने उसके अनेक अनेक बार नाक रगरनेसे पाँचसहस्र रुपया देकर अपने गलेसे उतारा । उन पाँचका पचास हजार बनाकर सूचक (चुगल) ने जहाँगीरबादशाहके पास सूचना करी । जब शाहजादा खसरो अफगानिस्तानसे गिरफ्तार होकर बादशाही हुकमसे दिल्लीमें कतल किया गया । तो चन्दुलालदीवान नाजम लाहौरने समय पाकर फिर द्वेषको मनमें राख श्रीगुरुअर्जुनजीके विषयमें जहाँगीर बादशाहके पास (शिकायत करी) कहा कि यह भी एक शाहजादा खसरोके मुख्य मददगारोंमें है । और हरवक्त यही चाहते थे कि वह बादशाह बने । इस बातको सुनकर जहाँगीरबादशाहको बहुत क्रोध हुआ । और गुरुअर्जुनजीको बुलानेका हुकम दिया । श्रीगुरुअर्जुनजीके पास जब बादशाही हुकम पहुँचा तो उन्होंने जान लिया कि अब समय इस

असार संसारसे किनारे होनेका बहुत समीप आन पहुँचा है । इस लिये गुरुगादी अपने पुत्र श्रीहारिगोविन्दजीको देकर और भाई विधिचन्द्र भाई सालोभाई पेडा भाई पराणा तथा भाई ज्येष्ठा इन पाँचमात्र शिष्योंको अपने साथ लेकर शहर लाहौरमें चले गये । और चन्द्रने भी उसीदिन श्रीगुरुजीको बादशाहके पास पहुँचाया । बादशाहने श्रीगुरुजीका चालढाल देखकर कहा कि यह मनुष्य ऐसा प्रतीत नहीं होता कि अकारण किसीको भलाई या बुराईमें प्रवृत्त हो । परन्तु चन्दुके फिर उत्तेजित करनेसे बादशाहने श्रीगुरुजीसे कहा कि सुना है तुमने हमारे शत्रुकी पचास हजार रुपयोंसे मदद करी । इसी कसूरमें अब दोलाख रुपया बादशाहीखजानेमें भी दाखल करो । श्रीगुरुजीने कहा हम फकीरोंके पास सिवाय परमेश्वरके नामके रुपया नकद नहीं है । और न हमने आपके किसी शत्रुहाकी पचासहजार रुपयासे मदद करी है । किसी मिथ्यावादीने आपके मिथ्यापनसे कान भरे हैं । बादशाहने दोलख जुरमाना वसूल करनेके लिये श्रीगुरुजीको कोतवालके सुपर्द किया । और पीछे दूसरे दिन देश सिन्धको चला गया । चन्दुलालकी कोतवालसे बहुत मित्रता थी । वह उससे माँगकर श्रीगुरुजीको किलेमें अपने घरके भीतर लेगया । और एकान्तमें लेजाकर समझाने लगा । कि तुमने मेरा इस संसारमें नाक काटडाला है । अब भी या तो मेरी पुत्रीका विवाह अपने पुत्रसे स्वीकार करो अन्यथा मैं अब आपको यहांसे जीता नहीं जाने देंगे । श्रीगुरुजीने कहा जीना मरना तो जीवोंका जीवोंके अधीन नहीं है किन्तु परमेश्वरके अधीन है जबततक जिसकी आयु है तबतक उसको किसीकी मारनेकी ताकतही नहीं और जब आयुःही नहीं तो जीव तो शरीरसे स्थायी है ही नहीं शेष केवल कालिमाका तिलक मात्र है । उसको जो चाहे लेशकता है । (चन्दु०) क्या आपको मरनेसेभी भय नहीं है (गुरुजी) अभावि या काचित्क भाविसे भय होता है अवश्यं भाविसे भय करना विचारशीलोंका काम

नहीं है (चन्दु०) अवश्यं भावि क्या है (गुरुजी) भावकार्य्यमात्र अवश्य विनाशी है उसहीका एकदेश शरीर भी है (चन्दु०) जानबूझके तो कोई मरना नहीं चाहता (गुरुजी०) जानबूझके कोई आजतक मरनेसे बचाभी तो नहीं (चन्दु०) क्या आपको मेरी वार्ता सर्वथा स्वीकार न होगी (गुरुजी०) कौन तुम्हारी वार्ता (चन्दु०) पुत्रीका सम्बन्ध (गुरुजी०) इत्यादि सभी व्यवहार हमारे शिष्यमण्डलके अधीन है (चन्दु०) यही मिथ्यावाद आपको शरीरसे उदास किया चाहता है (गुरुजी) मिथ्यावादीको सभी मिथ्यावादीही भासते हैं और शरीरसे तो हमने जबसे होश सम्हाली है तभीसे उदास है (चन्दु०) मेरी वार्ताका न मानना आपको शुभकारक न होगा (गुरुजी०) हमारे शुभाशुभका होना आपकी वार्ताके अधीन नहीं है किन्तु अन्तर्यामी परमत्माके अधीन है जैसा उसको मंजूर है वैसा होरहा है । इत्यादि अनेक तरहके वादविवादके अनन्तर शेषमें जब चन्दुको यह निश्चय हुआ कि सूधेपनसे मेरी वार्ता स्वीकार होनी दुर्घट है । तब प्रतिदिन अनेकतरहका नया २ दुःखदेना प्रारम्भ किया । और प्रत्येक दारुणी क्रियाके अन्तमें अपनी वार्ताके स्वीकार करानेको भी चाहा परन्तु रागद्वेषरहित दृढप्रतिज्ञ सत्यवादी महाक्षमावान् महाराज श्रीगुरुअर्जुनजीने अपना अन्ततक वही उत्तर रक्खा जोकि प्रथमही देचुके थे । उस अधमपतित गुरुपाधम चन्दुने श्रीगुरुजीको क्या क्या क्लेशदिया या कैसे २ दिया इस असीम दारुण क्रूर क्लेशमयी दुर्घटनाको मेरी अतिकोमल कातरहृदयवाली लेखनी सर्वथा लिखना नहीं चाहती । केवल इतनाही लिखना पर्य्याप्त होगा कि यह मनुष्य अपनी नीचताके बलसे जितनी कुछ परदुःखदायनी सामग्री बटोर सकता है उससेंसे चन्दुने भी कोई शेष न रक्खी थी । लोहागरमकरकर ऊपर बिठलाना या जलतेलादि द्रवद्रव्योंको तप्तकर शरीरपर डालना इत्यादि अनेकतरहके दुःखोंका स्वरूप जहाँ तहाँ इतिहासोंमें लिखा है परन्तु ब्रह्मज्ञानीका धैर्य्य एक ज्योंबसुधा कोई

खोदे कोई चन्दनलेप ॥ इस अपने लिखे वचनको अपनेहीपर सार्थक करके दिखलानेवाले श्रीगुरुअर्जुनजीमहाराजने उस तुच्छबुद्धिपुरुषके दिये तुच्छदुःखोंको वस्तुतः तुच्छ जाना और कदाचित् सीतकर्मी नहीं किया प्रत्युत सहजभावसे श्रीगुरुनानकजीकी वाणीका पाठ चन्दुके चंचलचितमें यावत् क्रिया भस्ममें हवनका सूचक हुआ एक दोदिन विश्रामलेकर फिर उपाय सोचनेलगा कौनरीति करीजाय जो मेरी पुत्रीका सम्बन्ध स्वीकार हो । शेषमें नीचको यह सूझी कि धर्मच्युत करनेके भयसे अवश्य मानेंगे । उसीकालमें नूतनमरी गौका कच्चा चर्म मँगवाकर चमारोंको साथ लेकर श्रीगुरुजीको कहनेलगा कि अबभी यदि मेरी वार्ता स्वीकृत न होगी तो इस गौके चर्ममें बन्दकर चारोंतरफसे सींकर आपको दरिया रावीमें बहादूंगा । श्रीगुरुजीने कहा प्रथम हमको रावीमें स्नान ऐसेही करवादो फिर जो-तेरी इच्छा हो वैसा करना चन्दुने साथसिपाही दिये और रावीका जो एक नाला किलाके नीचे समनबुरजके पास होकर बहता था उसमें स्नान करालानेका हुकम दिया । श्रीगुरुजी नालेमें स्नान कर-तेही परमधाम पधारे । केवल ४३ वर्षकी आयुःमें ज्येष्ठ शुक्ल ४ संवत् १६६३ विक्रमीमें तथा संवत् १३७ नानकशाहीमें एकपहर दिन शेष रहे किला लाहौरमें श्रीगुरुअर्जुनजी परमधाम विराजे हैं । शरीर तो किसीको मिलाही न था परन्तु जहाँपर वह स्नान करने गये थे वहाँपर किला लाहौरमें उनकी समाधि देहरा विद्यमान है । इसी वार्ता-को एक दो मौलवी इतिहासलेखक यों लिखते हैं कि जब शाहजादा खसरो भागकर अमृतसर पहुँचा तो इन्होंने उसको कुछ धनसे सहा-यता भी दई और अपने आशीर्वादसे बादशाही तखत मिलनेका उमेदवारभी उसको किया था परन्तु जब शाहजादा अफगानास्तानसे पकडा जाकर लाहौरमें मारागया तो चन्दुलाल दीवान हाकिम लाहौ-रने जो इनसे द्वेष रखता था बादशाहके पास शिकायत करके इनको लाहौरमें मँगवालिया । जब बादशाहने इनपर दो लाख जुरमाना

किया था उसकालमें इनके शिष्यलोगोंने उसी समय अदा करके इनको छुडालेना चाहा था। परन्तु इन्होंने ऐसा कामकरनेकी आज्ञा नहीं दई थी किन्तु जुरमाना अदा करनेसे रोका था। प्रत्युत यह कहा था कि जो कोई हमारे छुडानेके लिये रुपया खरच करेगा वह गुरुके शिष्यभावसे बाहर समझा जायगा और भारी गुरुका अपराधी ख्याल किया जायगा। ऐसे होनेपर चन्दु उसको अपने घर लेगया। और वहाँ उनको अपनी लडकीका नाता कबूल करानेके लिये बहुत तंग किया। जब उन्होंने किसतिरहसे भी मंजूर न किया तो उस जालिम बेरहमने इनको दरिया रावीमें बहा दिया। और इनकी लाशभी हाथ न लगी। इनके यावत् जीवनसे अच्छी तरह सिद्ध होता है कि यह गुरु बडे बुद्धिमान् तथा गम्भीर स्वभावके महापुरुष थे। सिक्खजाति अर्थात् धर्मखालसाकी पूर्णरूपसे जड बुनियाद बाँधनेवाले यही गुरुअर्जुनही हुये हैं। और अपनी थोडीही आयुःमें धर्मखालसाकी इन्होंने उन्नतिभी खूबकरी इत्यादि श्रीगुरुअर्जुनजीकी समाधि देहरा किला लाहौरके बाहर महाराजा रण- जीतसिंहजीकी समाधि देहरेके पास है। इमारत अति उत्तम है कुछ स्वर्णका कामभी हुआ है। जिला स्यालकोटके इलाकेमें एक नन्दीपुर नामक ग्राम तथा ८९० रुपया सालानाकी जागीरभी गवर्नमिण्टस- र्कारकी तरफसे उसी समाधि देहराके नाम मुआफी है। और प्रतिवर्ष डेढसौ१९० रुपया वास्ते मरम्मत मकानातके महाराज नाभा सरकार- से मिलता है सन्तसिंह, कृष्णसिंह दोनोंभाई इस स्थानके वर्तमानमें प्रबन्धकर्ता पुजारी हैं।

इति सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

ॐ

अथाष्टविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

श्रीगुरु हरिगोविंद साहिबजी पादशाही ॥ ६ ॥

श्रीगुरुहरिगोविन्दजीका जन्म संवत् १६५२ विक्रमीमें आदित्यवार आषाढ मिति २१ अर्द्धरात्रिके समयमें श्रीगुरुअर्जुनजीके घर माता गंगाजीके गर्भसे हुआ है। इनकी बाल्यावस्थाका समय बहुतही भयानक व्यतीत हुआ है। इनको अपने ताउ पृथ्वीचन्द्रके सम्बन्धसे पूर्वोक्तप्रकारकी अनेक तरहकी विपत्तिएँ उठानी पडी हैं परन्तु सर्वान्तर्यामी परमात्माकी इनकी कुछकाल आयुः अवधि सर्वथा स्वीकार थी इसलिये उसके सभी प्रयत्न निष्फल हुए। इनके विवाह तीन हुए हैं प्रथम तो पिताके सत्वकालहीमें कपूरथलाप्रान्तके डला ग्रामनिवासी नारायणदास क्षत्रियकी दामोदरी नामक पुत्रीसे भाद्रपद मिति ११ संवत् १६६१ विक्रमीमें हुई। और शेष दो गादीपर बैठनेके पीछे करे। उनमें पहला वैसाख मिति ८ संवत् १६७० विक्रमीमें शहर करतारपुरनिवासी हरिचन्द्र क्षत्रियकी नानकी नामक पुत्रीसे हुआ। दूसरा ११ श्रावण संवत् १६७२ विक्रमीमें मण्डयाला ग्रामनिवासी दुर्गामल्ल क्षत्रियकी महादेवीनामक लडकीसे हुआ॥ श्रीगुरुहरिगोविन्दजी आषाढ वदि सप्तमी संवत् १६६३ विक्रमीमें अपनी ११ वर्षकी आयुःमें गुरुगादीपर विराजे हैं। इन्होंने गुरुगादीपर बैठतेही सारा ठाठ राजसीतौरपर पलट डाला। क्षत्र चमर सिंहासनादि अनेक प्रकारकी दर्शनीय सामग्री जुटाकर अपने कमरमें दो तलवार बाँधने लगे। लोग पूछे तो आप उसको उत्तर देवें कि, एक तलवार मीरीकी है दूसरी पीरीकी है हम अपने समयमें दोनोंही करेंगे। बचपनहीसे आपको सिपाहीपनेका बहुतही शौक था। असाधारण ऊंचा लम्बा सुन्दर तथा बलिष्ठ शरीर था अपने शरीरके बलके आगे देवराक्षसोंके बलकोभी तिरस्कार किया करते। अखाडेमें अनेक मनुष्योंको साथ

लेकर अकेले लडाकरते। मुद्गर जोडी फेरनेमें बलके किसीभी कामकरनेमें कोई मनुष्य बराबरी न करसकता। इस के सिवाय घोडेपर चढना पट्टा खेलना तीर या बन्दूक चलाना आप को असाधारण आता था। हरवक्त हृदयमें क्षात्रभर क्षत्रियलो- गोंकी कथा शूरवीरोंके इतिहास सुननेमें मनलगाये रहते थे। इतनेपर भी अपने बडोंकी तरह भजन पाठ स्मरण कीर्तन तथा गरीबोंके अन्न बाँटनेका नियम यथावत् निर्वाहते थे। यद्यपि इनको गुरुगादीका भारी कार्य्य बहुत छोटीही उमरमें मिलगया था। इसलिये अनेक लोगोंके चित्तमें कुछ किसीतरहके व्यवहारके विषकलित होनेका बहुतही भयसा बना रहता था। तथापि इन्होंने अपने असाधारण बुद्धिबलसे असाधारण साहससे असाधारण धैर्य्यसे तथा अनुपम बलवीर्य्यसे उस कार्य्यको ऐसा एकतार साफ चलाया कि, कई वर्षतक किसीके कानतक सिवाय भलाईके किसीतरहकी हानिका शब्दतक नहीं पहुँचा। चारों- तरफ श्रीगुरुहरिगोविन्दजीको छोटेहीपनमें वाह वाह होनेलगा। गुरु- गादीकी प्रभुता प्रतिदिन चौगुन होनेलगी। श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके आचार व्यवहार तथा सत्कार स्वभाव स्वरूपसे मोहित हुये शिष्यलोग सहस्रों लक्षों रुपयेकी सेवा करनेलगे। ग्यारह वर्षकी आयुमें दो तलवारोंका कटिमें बांधना घोडेपर सवार होकर उसको अनेक तरहसे चलाना शिकारखेलना शेर बन्दूकादिसे लक्ष्यभेदन करना और गुरु- गादीपर बैठकर अपने धर्मखालसाका उपदेश भी करना व्यवहार तथा परमार्थ दोनोंकी तरफ पूर्णदृष्टिका रखना वास्तवसे एक आश्च- र्य्यकारक था। पहलवान सर्वांगसुन्दर हृष्टपुष्ट जवान शरादिसे लक्ष्य भेदक पट्टेबाज अच्छा सवार शिकारी ब्रह्मचारी वेदपाठी कवि या गायक इत्यादि गुणीलोग इनके पास सदा बने रहते थे। और यह भी उन लोगोंका बहुतही पालन किया करते थे। अपनी शूर- वीरताके इतने पक्षपाती तथा उत्साही थे कि कहा करते यदि हम भीमार्जुनादिके समयमें होते तो किसी तरहसे उनसे न्यून न कहाते। जिस समय इनको अपने पिताजीके देहपातका समाचार मिला उसी

कालमें इनके चित्तमें एक ऐसा साहसका उमंग हुआ कि, पिताजीका बदला अवश्य लेना चाहिये । इनकी शिक्षा तो प्रायः सिवाय शूर-वीरता बहादुरीके दूसरी नहीं हुआ करती थी । इन्होंने अपने सहस्रों शिष्यलोगोंको अपनी तरह सिपाहीपनकी शिक्षामें प्रवृत्त किया । जो सवक इनको अच्छा घोडा या कोई शस्त्र लाकर भेंट करता आप उसपर बहुतही प्रसन्न होते इसके सिवाय इन्होंने अपने कारिन्दोंद्वारा अपनी सारी शिष्य सेवकीमें कहला भेजा था कि, जो कोई सेवक हमारे पास भेंटके लिये अच्छा घोडा या कोई अच्छा शस्त्र लावेगा वह शीघ्रही अपने मनोरथको पूर्णरूपसे लाभ करेगा तात्पर्य इसीतरह से इन्होंने अपने सामग्री ठाटको राजा महाराजाओंकी तरह वृद्धि कर लिया । परन्तु उसके साथ साथ गुरुगादीका जो फकीराना तरीका चला आता है । उसको भी किसी तरहसे न्यून न होने दिया । प्रत्युत और गुरुओंकी अपेक्षा अधिक उन्नतिमें दीखनेलगा । जो जिस तरहका पुरुष आता वह श्रीगुरुहरिगोविन्दजीको मिलके दर्शन करके हरएक तरहसे प्रसन्न होजाता सभी यथायोग्य शुश्रूषा तथा स्वागत किया करते आषाढ मिति ५ संवत् १६६५ विक्रमीमें इन्होंने एक बहुत ऊंचा चबूतरा श्रीअमृतसर दरबारके सामने बनवाकर उसका नाम तखत श्रीअकालबुंगा रक्खा । और दोनों समय अर्थात् सायं प्रातः उसीपर बैठकर दरबार लगाना प्रारम्भ किया । और एक 'लोहगढ' नामक किला जो कि, अब शहरपनाहके भीतर आगया है तैयार करवाकर उसमें अनेक तरहकी युद्धकी सामग्री एकत्र करनी प्रारम्भ करी । और अपने शिष्यलोगोंके सिवाय कुछ और सिपाही भी नौकर रखलिये । उसके पश्चात् संवत् १६६९ विक्रमीमें श्रीगुरुहरिगोविन्दजी अपने शिष्यलोगोंकी प्रार्थनासे शहर लाहौरमें चले गये और वहाँ भाटी दरवाजाके पास दो चार दिन निवास करके अपने वृद्धोंके स्थानों मकानोंको देखकर किलाके पास अपने पिता श्रीगुरुअर्जुनजीके समाधि

देहरा बनवानेके लिये उसकी बुनियाद डाली। उसके पीछे हजरत मियाँमीरजी जो कि; बहुत पुराने तथा श्रीगुरुअर्जुनजीके सच्चे शुभ चिन्तक मित्र थे उनको मिलने गये। और वहाँही और फकीरोंके समाजमें शेख जानमुहम्मद लाहौरी तथा मुहम्मद अस्माईल तथा शेख कर्म शाह करेशी इत्यादि मुसलमान फकीरोंसे परस्पर अनेक तरहके विचारकी चर्चा चली। आपसमें अनेक तरहके प्रश्न उत्तरोंके पश्चात् श्रीगुरुहरिगोविन्दजीकी लक्षणकल्पना तथा असाधारण बोधकी सभी प्रशंसा करने लगे। वहाँही शेख कर्मशाह करेशीने यह प्रतिज्ञा करी कि, हम तो मक्केशरीफ जाकर मरेंगे उसपर श्रीगुरुजीने कहा कि, मियाँसाहब खुदाके हुकुममें किसीके दममारनेकी काम नहीं है। तुम तो अपना मरना मक्कामें चाहते हो परन्तु खुदाकी इच्छासे दिल्लीके समीप मरनेका हुक्म हो तो क्या कोई रोक सकता है। दैवात् थोडे-ही दिनोंके पश्चात् ऐसेही हुआ कि, वह फकीर दिल्लीके पास एक स्त्रीके मिथ्या अपराधमें कत्ल किया गया। श्रीगुरुहरिगोविन्दजी फकीर मियामीरजीसे रुखसद होकर श्रीअमृतसरमें चले आये। और तख्त श्रीअकालबुङ्गापर विराजकर दोनों वक्त दरबार लगाकर अपने शिष्यलोगोंको नियमपूर्वक धर्मनीति, राजनीति, तथा ज्ञानवि-ज्ञानादिके सदुपदेशोंसे प्रबन्ध करने लगे। समय २ पर कथा कीर्त-न सुनते और बडे २ शूरवीरोंकी बातें।जिन लोगोंने अपने धर्मपर जाने अर्पण की है उनके इतिहास बडे प्रेमसे सुनाकरते। और वे गाकर सुनानेवाले लोगभी ऐसे उत्तम स्वरसे सुनाया करते थे जिनको सुनकर कातुरही जडेकाभी धर्मपर शिर कटानेका मनकर आता था। श्रीगुरुहरिगोविन्दजीको उन वारांगानेवालोंका तरीका ऐसा पसन्द आया कि श्रीगुरुग्रन्थ जीकी भी कई एक वारोंको उसी ढालपर पढ-नेको कहा। तथा उसी ढालपर गानेकी आज्ञा भी दई। श्रीगुरुहरि-गोविन्दजी अपना सभी वस्त्रादि पहराव बादशाहों जैसा रक्खा करते थे। छत्र, चमर, झगा, कलँगी शस्त्र बाँध घोडेपर सवार

होकर प्रतिदिन बहुतसे सिपाही घोडेसवार भी लश्कर साथ लेकर शिकार खेलने जाया करते । और तख्त श्रीअकालबुङ्गेपर बैठकर प्रतिदिन अपने दरबारमें शिष्य सेवक लोगोंके झगडे मुकदमें विवादोंका भी फैसला करदिया करते । अपने पवित्र मानसिक बलसे लडाई झगडोंका ऐसा उचित फैसला करते कि, वादी प्रतिवादी दोनोंके चित्तमें सन्तोष होजाता । इसलिये उनको अनेक लोग सच्चा बादशाह कहने लगे । इनकी इसतरहकी शोभा, प्रभुता, बडाई देखकर इनके मेहरवान नामक भ्राताको जो कि, पृथ्वीचन्द्रजीका पुत्रथा उसको बहुतही ईर्षा हुई और अपने हृदयकी द्वेषाग्निके शान्त करनेके लिये तेलरूप अपने सहकारीदी चन्दुलालके पास दिल्लीमें चलागया और वहाँ जाकर उसी चन्दुलालद्वारा जहाँगीर बादशाहके चित्तके श्रीगुरुहरिगोविन्दजीकी ओरसे अनेक तरहकी बुराइएँ सुनाकर खट्टा करडाला। कहा कि वेहभी अपने पितासेभी कई गुणाअधिक अपने पास डाकू तथा लुटेरोंका समूह रखते हैं । और चारोंतरफसे दूर २ से देश लूटकर खूब खाते उडाते हैं और अपने शिष्यलोगोंको सिपाहीपनमें पक्के कर रहे हैं और अनेक शिष्यलोगोंके तथा और भी प्रजालोगोंके मुकद्दमोंके भी फैसले करदेते हैं यहाँतक कि, मेलजोलकरके आपकी बादशाहीमें एकभारी फसाद खडा करनेका इरादा कररहे हैं बादशाहने चन्दुलालकी इस वार्ताको सुनकर वजीरखाननामक नायब दीवान वजीरको गयखावगे खान दशहजारीको साथ देकर इस वार्ताको निश्चय करनेके लिये तथा श्रीगुरुहरिगोविंदजीको बादशाहके पास हाजिर करनेके लिये नियत किया वजीरखान नामक वजीर एक बहुतही भला साधुसेवी पुरुष था श्रीगुरुजीकी वंशपरम्परा तथा श्रीगुरुहरिगोविन्दजीसे अच्छीतरह परिचित था। उसने अमृतसरमें जातेही श्रीगुरुहरिगोविन्दजीको सारावृत्तान्त सुनादिया और कहा कि आपको बादशाहने स्मरण किया है श्रीगुरुहरिगोविन्दजी तो प्रथमही सोच रहे

थे कि, बादशाहके साथ बातचीत करनेका कभी अवसर मिलना चाहिये जिससे अपने शत्रुलोगोंसेभी बदलालेनेका कोई मार्ग निकले उसीसमय तैयार होगये संवत् १६७२ ज्येष्ठ वदि एकमके दिन दरबार अमृतसरजीका यावत्कार्य्य प्रबन्ध बाबाबूढा तथा भाई गुरुदासके स्वाधीन करके एकसौ शिष्य सवार तथा पैदल साथ लेकर शहर दिल्लीको चलदिये मार्गमें तरनतारन खण्डूर गोयंदवाल बेदीपुर गोंजरवाल इत्यादिस्थानोंमें निवास करते हुए और उस प्रान्तके शिष्यलोगोंको राजनीतिके तथा धर्मनीति अनेकतरहके भावभरे उपदेश करते हुए शहर दिल्लीमें पहुँचे और वहाँपर टीला मजनूपर जहाँ श्रीगुरुनानकजीने विश्राम किया था उतारा करके दूसरेदिन बादशाही दरबारमें पहुँचे बादशाहने गुरुजीके चाल चलन स्वरूप तथा परस्पर वार्तालाप करके थोडीहीमें असली तात्पर्यको समझ लिया नीतिका वचन है कि

" अयं साधुरसाधुर्वा पण्डितोऽपण्डितोऽपिवा ।
शब्दोच्चारणमात्रेण जानन्ति विमलाशयाः ॥ १ ॥ "

अर्थात् यह पुरुष भला है या बुरा है । पण्डित है या मूर्ख है इत्यादि सम्पूर्ण हाल बुद्धिमान्लोग पुरुषके शब्द उच्चारण मात्रसे जान जाते हैं । ऐसेही बादशाहने श्रीगुरुजीके साथ दोचार बातचीत करके सभी मर्म्म जान लिया । और क्रोधित होनेके बदलेमें बहुत नम्रता सभ्यता तथा प्रेमसे व्यवहार करने लगा । और सम्पूर्ण वार्तालापके अन्तमें श्रीगुरुजीके डेरामें चलते समय इनके खर्चेकोलिये बादशाही खजानेमेंसे पाँचसौ रुपया प्रतिदिन देनेका हुक्म दिया बादशाह इनके शारीरिक सौन्दर्य्य तथा तीर तोप बन्दूकादिसे क्षत भेदना घोडेपर सवार होकर उसको अनेकतरहसे चलाना हरएक शस्त्रका चलाना इत्यादि सिपाहीपनके कार्य्योंको देखकर ऐसा मोहित हुआ था कि प्रतिदिन शिकार खेलने इनको साथ लेकर जाता । और प्रतिदिन बादशाहीदरबारमें बुलाकर

भी इनके साथ बहुत मैत्रीका वर्ताव सबके समक्ष किया करता। और प्रतिक्षण बडे आदरभाव सत्कारसे पेस आया करता। एकादिनका वृत्तान्त है कि बादशाह श्रीगुरुहरिगोविन्दजीको साथलेकर शिकार खेलने गया अकस्मात् उसी शेर (सिंह) से भेंट हुई कि जो बादशाह के कईएक अच्छे २ शूर वीरोंको मारचुका था उसी शेरको पहिचानकर बादशाहने भयभीत होकर श्रीगुरुजीसे कहा कि इस शेरने हमारा बहुतही नुकसान किया है परन्तु यह आप अभीतक मरनेके पेचमें नहीं आता। बहुतसे यत्न भी कियेगये हैं। परन्तु वे सभी आजतक निष्फलही होते रहे हैं। श्रीगुरुजीने उसी शेरके सामने घोडा छोडा । शेरभी देखकर बुक्कारा मारकर गुरुजीके सन्मुख कूदकर आया। श्रीगुरुजीने प्रथम एक निशाना बन्दूकका मारा । जिसको खाकरभी वह शेर गिरा नहीं। किन्तु श्रीगुरुजीके घोडेपरा आन कूदा श्रीगुरुजीने उसके अग्रिम दोनों हाथ उठातेही ऐसी तलवार फेरी कि, वह दो टुकडे होकर भूमिपर गिरा। बादशाहने दूसरेही अपने घोडेपर इस सभी चरित्रको देखा। श्रीगुरुजीकी शूरवीरता तथा बहादुरीकी बडी प्रशंसा करनेलगा। मानो श्रीगुरुजीके बलवीर्य्यपर मोहितसा होगया। दरबारमें बैठकर अनेक अच्छे २ लोगोंके सामने इनकी शूरवीरता बहादुरीकी तथा इनके विचित्र अनुभव सरल स्वभावकी बात २ में प्रशंसा किया करता। दीवान चन्दुलालनेभी बादशाहका चित्त श्रीगुरुहरिगोविन्दजीकी तरफ अधिक प्रवृत्त सुना तो लाहौरसे अनेक बादशाही कार्य्योंके मिससे दिल्लीमें पहुँचा। और साथही इसवार्ताका स्मरणभी बादशाहको कराया कि, गुरु अर्जुनजीको जो रुपया शाहीदरबारसे दोलाख जुरमाना हुआ था। वहभी अभीतक वसूल नहीं हुआ है। बादशाहने पूछा क्यों नहीं हुआ है। चन्दुने कहा कि, आपके सिन्धदेशगमनके थोडेही दिन पीछे उनका शरीरही न रहा तो फिर किससे वसूल किया जाय बादशाहने कहा कि क्या उनके पीछे कोई उनका वारिस न था। चन्दुने कहा कि, वारिस

तो था परन्तु बादशाही हुकमकाशिवाय किसीसे कुछ कहा नही गया । बादशाहनेकहा कि बादशाही हुकुम क्या बार २ हुआ करता है । रुपया अवश्य तलब करना चाहिये अन्यथा बादशाही हुकुमको कौन माना करेगा । चन्दुने उसी समय रुपया वसूली कापरवाना गुरुहरिगोविन्द-जीके नाम निकाला । श्रीगुरुहरिगोविंदजीने उसमें यह जवाबदेही करी कि, हमलोग फकीर हैं जो कुछ आता जाता है परमेश्वरके नामपर गरीबोंको खिला पिला देते हैं । हमारे पास इस कदर रुपया नहीं है । चन्दुने बादशाहसे कहा कि,यदि यह रुपया वसूल न हुआ तो आगेके लिये भी कोई शाही हुकमपर पूरा अमल न किया करेगा । बादशाह-ने चन्दुसे रुपया वसूल करनेकी तजबीज पूछी तो चन्दुने कहा कि, इनको थोडेदिनके लिये ग्वालियरके किलेमें भेज दीजिये तो इनके शिष्यलोग स्वयं दोलाख रुपया दरबारशाहीमें दाखिल करके इनके छुडानेके लिये अर्जगुजार होंगे । बादशाहके भी मनमें यह वार्ता उतर गई तब तो फिर देरहीक्या थी "राजा मित्रं केन दृष्टं श्रुतं वा" उसी वक्त हुकम दिया कि श्रीगुरुहरिगोविन्दजी किलाग्वालियरमें कुछ दिनके लिये निवास करें । इस किलेमें राजा विद्रोही बडे बडे राजे महाराजे राजपूतलोग नज़रबन्द रहा करते थे बडे लोगोंका एक तरहका इसको कारागारही समझना चाहिये श्रीगुरुजीबादशाहका हुकुम सुनते ही प्रसन्न होकर किलाग्वालियरको रवाना हुये वहाँपर एक शिवाय वहाँ निवासमात्रके कोई तकलीफ तो थीही नहीं । किन्तु राजों महारा जोंके लिये हर तरहकी सामग्री तैयारही रहती थी । श्रीगुरुजी भी अपने शिष्य समाजके ठाट सहित वहाँ जाय विराजे उस किलेका दारोगा उस कालमें हरिदास मल्लनामक क्षत्रिय श्रीगुरुजीका भक्तही था उसने बडे सन्मान पूर्वक श्रीगुरुजीको वहाँपर रक्खा । और प्रति दिन भजन पाठ कथा कीर्तनके सुननेसे उस किलेके भीतर निवासकरनेवाले ठाकुर लोग भी श्रीगुरुजीको श्रद्धा भक्ति पूर्वक मानने लगे श्रीगुरुजीमें

उन लोगोंको धर्मनीति राजनीतिके अनेक तरहके उपदेश करके सचे त करने लगे वहाँका हाल सुनकर चन्दुने हरदासमल्ल दारोगाको भी पत्र लिखा कि, गुरुहरिगोविन्दको और ठाकुर लोगोंकी तरह मत रखना किन्तु जहाँतक बनपडे इसको तकलीफ देना मैं आपका कृतज्ञ होऊंगा इत्यादि पत्रको देखकर दारोगाने चन्दुके लिखने पर कुछ ध्यान न दिया। और श्रीगुरुहरिगोविन्दजीको यथायोग्य सत्कार पूर्वक ग्वालियरके किलेमें रक्खा। धीरे धीरे श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके ग्वालियरके किलेमें नजरबन्द होजानेकी खबर अमृतसरमें इनकी माताको पहुंची। और माताको जैसा प्रेम अपने पुत्रसे होताहै वह हरएक विज्ञको विदितही है। उसमेंभी श्रीगुरुहरिगोविन्दजी जैसे असाधारण एकाकी पुत्रका शोक माताको बहुतही दुःखी करने लगा। ऐसी खबरके सुनतेही माताकी दशा ऐसी होगई कि, जिसको वह सहन न करसकीं अनेक शिष्यलोगोंमें भी बहुत शोर हुल्ला हुआ। उसी कालमें कई लोगोंने मिलकर दो लाख रुपया इकठा करके शाहीदरबारमें देकर श्रीगुरुजीको ग्वालियरके किलेसे निकालना चाहा। श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके पाससे भी इस वार्ताकी सम्मति लई। तो उन्होंने उत्तर दिया कि, जो कोई हमारे छुडानेके लिये शाहीदरबारमें दो लाख रुपया भरेगा। हम उसको गुरुका शिष्य नहीं मानेंगे। क्योंकि यहाँपर हम किसीकी बन्दिशमें नहीं हैं। किन्तु आनन्दमें हैं थोडे दिनोंमें चले आवेंगे परन्तु शिष्यलोगोंको उस समय अपने गुरुपर ऐसा दृढ निश्चय जमा हुआ था कि किले ग्वालियरके दरवाजेतक भी दर्शन करनेको हजारों शिष्यलोग जाया करते थे। जिनको कदाचित् दर्शन न होता वे किलेकी दीवारहीको नमस्कार करके तथा कडाहप्रसाद बाँटके चले आते। जब कोई पूछता कि तुमलोग यहाँपर ऐसे क्यों करा करते हो तो उत्तर देते कि, इसमें हमारा गुरु रहता है ऐसे कुछ दिन होता रहा जब बादशाहने बहुतकालतक श्रीगुरुजीको किलेसे पीछे न बुलया। तो उनके साथ रहनेवाले शिष्य

लोग बहुत घबराये । परन्तु श्रीगुरुजीने इस वार्ताका कुछ विचार न किया किन्तु प्रतिक्षण भजन स्मरण कीर्तनमें अपना आनन्दसे समय बिताया करते और बादशाहकी तरफसे जो खरच आता लोगोंको बाँटछोडते उधर दिल्लीमें एकदिन बादशाहको रातमें बडाभारी भयानक स्वप्न हुआ । देखाकि, एकभारी जङ्गली शेर (सिंह) खानेको आता है । चौंककर उठ खडाहुआ । अनेक अच्छे २ लोगोंसे उसका कारण पूछा तो लोगोंने कहा कि, स्वप्नमें ऐसा प्रायः हुआही करता है ऐसा कहकर टाल दिया । परन्तु जब बादशाहको चार पाँच रात्रि रोज ऐसाही देखपडा कि, स्वप्नमें शेर खानेको आता है । और चौंककर जागपडना पडता है । तो हजरत निजामलदीन औलियाके स्थान पर हजरत जलालद्दीनशाह जाद्दाके पास गया । और अपने स्वप्नका वृत्तान्त कह सुनाया । जिसके उत्तरमें उन्होंने बादशाहको यह सुनाया कि, प्रतीत होता है कि, तुमने किसी वली फकीरसाहिब करामातकी कुछ बेअदबी करी है । उसी समयमें दैवात् एकदिन फकीर मियाँमीरजी जिनकी उमर उसकालमें दोसौ वर्षके करीब थी उनकाभी दिल्लीमें आगमन हुआ । तो जहाँगीर बादशाहने उनकी बहुतही खातरी करी । और इनसे पूछने लगा कि, पीरजी कामिलफकीरोंकी क्या शनाखत है । मियाँमीरजीने कहा कि, बादशाह फकीरोंका कोई मजहब नहीं होता । हिन्दुओंमें क्या मुसलमानोंमें क्या सभीकामोंमें साहिबकरामात कामिलफकीर होते चलेआते हैं । वर्तमान समयमें हिन्दूलोगोंमें एक गुरुअर्जुनका दम सब लोगोंके लिये गनीमत था । उनका बडपन उनकी सचाई उनकी सरलताका वर्णन करना अशक्य है । उस ऐसे महापुरुष खुदापरस्तपर तुम्हारे दीवान चन्दुने तथा पृथ्वीचन्द्रने मिलकर ऐसे २ जुलम किये कि, जिनको सुनकर पुरुषका हृदय काँप जाय । शेषमें जानतक भी लेली । परन्तु उन्होंने उस उनके अत्याचार होनेपरभी कभी आह तक नहीं किया । किन्तु जो होता रहा खुदाकी यादगीरीमें सभी खुशहोकर सहन करतेरहे ।

साहिबकरामात तथा समर्थ होनेपरभी किसीका बुरा नहीं चाहते थे । किन्तु शत्रु मित्र सभीको एकही जैसा जाना करते थे । लोभका या किसीके अपकारका बदलालेनेका तो उनके चित्तमें कभी संकल्पभी नहीं उठता था । अब उनका पुत्र गुरुहरिगोविन्दजीभी यद्यपि अमीरी ठाटमें रहता है तथापि बहुत कामिल पहुँचा हुआ फकीर है । अब तुमने उसको अपने अहलकारोंके सिखलानेसे किला ग्वालियरमें नजरबन्द कर रक्खा है । इसका भाविफल तुम्हारे लिये अच्छा होनेवाला प्रतीत नहीं होता । तुमको ऐसे खुदापरस्त लोगोंकी खिदमत करनी चाहिये । जो कुछ तुमको स्वप्नमें भी रात्रिको भय दीखा करता है यह सब उनहींकी खफगीका फल है । इत्यादि पीरमियाँमीरके वचन सुनकर बादशाहके कान खडे होगये । और उसने उसीसमय दीवान वजीरखानको बुलाकर श्रीगुरुहरिगोविंदजीको ग्वालियरके किलेमेंसे दिल्लीमें लानेका हुकम दिया । और अपने अपराधकी क्षमाभी साथही माँगभेजी । वजीरखान दीवान श्रीगुरुजीको लानेके लिये ग्वालियरके किलेमें गया । श्रीगुरुजीको चलनेके लिये कहा । तो श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने कहा कि, यह ठाकुरलोगभी जबतक रिहाई न कियेजायँ । हमभी जाना नहीं चाहते । वजीरने फिर पीछे दिल्लीमें लिखा । जिसका जवाब यह आया कि, जो पुरुष गुरुहरिगोविन्दका दामन पकडकर किलेके बाहर आवे उसको रिहाई करदेना । इस वार्ताको श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने भी अङ्गीकार किया । उस समय जिस २ ने श्रीगुरुजीका दामन पकडा किला ग्वालियरसे रिहाई पाई । यह तो एक लौकिक उदाहरण है । ऐसेही जो पुरुष सर्वदा संसारचक्रसे रिहाई पानेके लिये गुरुओंका दृढ करके दामन पकडते हैं उसको भी इनके अनुरोधसे अन्तमें अवश्य रिहाई (मुक्ति) मिलती है । किला ग्वालियरसे चलकर श्रीगुरुजी शहर आगरा तथा मथुरासे होतेहुये अपने सारे समाजके साथ शहर दिल्लीमें बादशाहके पास पहुँचे । बादशाहने मिलतेही आपका बहुत आदर सत्कार किया । और शेषमें अपने

अपराधकी क्षमा माँगी । और अनेक तरहके अच्छे २ पदार्थ भेंट पूजामें नजर किये । जुरमाना तलब करनेके अपराधके बदलेमें बहुतसा रुपया नकद तथा जवाहिरात बादशाहने श्रीगुरुजीको देना चाहा । परन्तु उसका लेना श्रीगुरुजीने न स्वीकार किया । कहा कि, दुनियाँकी दौलत हमारे किसी काममें नहीं है । थोडेही दिन दिल्लीमें निवास करनेसे बादशाहका श्रीगुरुजीके साथ ऐसा प्रेम हुआ, कि जिसको देखकर सभी लोग श्रीगुरुजीको बहुतही प्रतिष्ठित दृष्टिसे देखने लगे और भी श्रीगुरुजीने हरएकके साथ ऐसा शिष्टाचारका बर्ताव रक्खा कि आपसेआप सभी इनको मानने लगे । बादशाहका चित्त इनपर ऐसा मोहित हुआ कि,हरवक्त इनको अपने साथही रखने लगा । दोनों मिलकर जब शिकार खेलने जाते तो गुरुजी खाली हाथ कभी न आते । अनेक बार भारी २ शेरोंके शिकार किये । श्रीगुरु जीकी शूरवीरता तथा बहादुरीपर बादशाह ऐसा मोहित हुआ कि, इनके जैसा दूसरे किसीको भी न मानता । बादशाहने श्रीगुरुजीका कभी कोई लक्षभेदक निशाना खाली जाता नहीं देखा । श्रीगुरुहरिगो बिन्दजीकी लक्षभेदी शस्त्रविद्याके आगे उससमय कोई क्षत्रियराजपूत ठाकुर या पठान शिर नहीं उठाता था । किन्तु चारोंतरफसे सभी इन हींको वाह वाह कहा करते थे । शस्त्रविद्याके विचित्र कर्तव्य देखकर बादशाहके दिलमें भी इनकी तरफ बहुतही प्रेम होगया था । बादशा-हका इनके साथ ऐसा प्रेम हुआ कि बादशाही दरबारके अनेक मुक-दमोंके फैसले इनके पाससे करवाने लगा अनेक तरहके इनको राज्य-कार्य्योंमें अधिकारभी प्रसन्न होकर देदिये । और अपने साथभी हर-वक्त इनको रखने लगा । उसीकालमें बादशाहने श्रीगुरुजीको ४९ तोप १००० सिपाही प्यादा ३०० सवार रखनेका भी हुकम देदिया । और पंजाबदेशके सभी बादशाही हाकिमोंके नाम हुकम लिखदिया कि, सभी लोगोंको श्रीगुरुहरिगोविन्द साहिबजीसे सत्कारपूर्वक बर्ताव रखना चाहिये । और जिस तरहकी इनको मददकी आवश्यकता हो

इन बादशाही दरबारमें इतलाह किये इनको देवें । और इनको सभी पंजाबके बादशाही मुलाजिम अपना अफसर या निगाहवान उच्चाधिकारी समझें । कुछदिन ऐसेही व्यतीत हुये । श्रीगुरुहरिगोविन्दजी जहाँगीर बादशाहके प्रेमसे या अपने किसी खास कार्य्योंसे कुछकाल दिल्लीहीमें निवास करते रहे ।

इति अष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

अथैकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥

ऐसेही एक दिनका वृत्तान्त है कि, बादशाहकी दृष्टि श्रीगुरुजीके हाथमें रहनेवाले अपूर्व मुक्तामणिओंके स्मरणोंपर जायपडी । बादशाहने उसको हाथमें लेकर देखा । और बहुत प्रसन्न होकर कहने लगा कि गुरुजी इसका एकमोती हमें दे दो तो हम अपनी तसबी (माला) के ऊपर इमाम (मेरु) डाललें । श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने कहा कि, आप सभी रखलीजिये । आपहीका माल है । परन्तु इसी स्मरणके साथकी इनहीं मोतिओंकी एकमाला मेरे पिताजीके गलेमें भी रहा करती थी । वह अब आपके दीवान चन्दुके घरमें लाहौरमें है । बेकारपडी होगी । उसको आप मंगवालेवें तो आपका सारी तसबी इनहीं मोतिओंकी होजायगी बादशाहने पूछा कि, गुरुजी आपके पिताके गलेकी माला चन्दुके घरमें कैसी गई । तब श्रीगुरुजीने बादशाहको सभी भूत वृत्तान्त सुना दिया । बादशाह इस वार्ताको सुनकर आश्चर्य हुआ बहुत लोगोंसे निर्णयके लिये बादशाहने पूछपाछ भी करी परन्तु उस कालमें सभी रियास्तके लोग श्रीगुरुजीने अपनी मोहनी शक्तिसे अपने हाथमें कररक्खे थे । अनेक लोगोंने श्रीगुरुजीकाही पक्ष पूर्ण किया । जब बादशाहने उसी कालमें दीवान चन्दुको लाहौरसे बुलाकर सभी हाल दरयाफ्त किया । और साथही श्रीगुरुअर्जुनजीके गलेकी मालाको माँगालिया । मालाके विषयमें तो चन्दुलालने

साफ यही जवाब दिया कि, मेरे घरमें हैही नहीं । किन्तु गुरुअर्जुनकी मालाको जिसने मेरे घरमें आपको बतलाया है वही मिथ्यावादी है । बादशाहको तो प्रथम अनेक लोगोंसे निश्चय होही चुका था। इसलिये चन्दुके कहनेपर विश्वास न किया । परन्तु उसी समय चन्दुलालके घरकी तालाशी लेनेका हुकम लाहौरमें लिख भेजा । जब उसके घरका सरकारी मुलाजिमोंने आन्दोलन किया तो वही मोतिओंकी माला जिसका पता गुरुहरिगोविन्दजीने बादशाहको दिया था उसक एक सन्दूकमें धरी डिबियामें निकल आई वही माला दिल्लीमें शाही दरबारमें भेजी गई । बादशाहने चन्दुको बुलाकर दिखलाई कि यह आपके घरकी माला है । जिसको देखताही चन्दुलाल चकित होगया । मुखका तेज उडगया । लज्जितसा होकर बैठगया । परन्तु बादशाहको कुछ जवाब न देसका । बादशाहको उसके कर्तव्यपर पूर्ण विश्वास होगया कि, गुरुअर्जुनसाहिबको इसने अवश्य कतल किया है । और यह भी जानगया कि, गुरुअर्जुनपर अनेक तरहके झूठे बखेडे तथा उनके पुत्र गुरुहरिगोविन्दपर मिथ्या आरोपोंका मूल भी यही है । बादशाही घरके साथ गुरुके घरके विरोधका एक मूल यही है । उसी वक्त बादशाहने क्रोधित होकर चन्दुका सारी सम्पत्ति जप्त (स्वाधीन) करनेका हुकम दिया और चन्दुको गुरुहरिगोविन्दजीके हवाले करदिया । और कहा कि, यह आपका भारी अपराधी है आप इससे जैसे चाहें अपने पिताका बदला लेलें । श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने उसी समय चन्दुके हाथोंमें हथकडी डलवादी और उसको अपने डेरेपर ले आये । और उससे दूसरे दिन दिल्लीसे लाहौरको रवाना हुये । मार्गमें जो शिष्य उनके दर्शन करनेके आता वह श्रीगुरुजीके हुकमसे चन्दुके शिरपर पाँच जूते अवश्य फिटकार जाता । श्रीगुरुजीके शिकारी कुत्तोंके साथ उसको खाना मिला करता जब शहर लाहौरमें पहुँचे तो श्रीगुरुजीने चन्दुकी उसी दशामें शहरमात्रका गली २ बाजार २

फिरानेका हुकुम दिया। मार्गमें जो गुरुका शिष्य मिलता वह स्वामि-विकही चन्दुके चोटलेशिरपर चार पाँच जूते मारकर चलाजाता ऐसेही शहर फिरता २ जब चन्दु उस भुजुआके भारके पास आया जो जिसके पाससे इसने रेता गरमकरवारक गुरु अर्जुनजीके ऊपर डलवाया था। तो उसने उसी दुःखको स्मरणकर क्रोधित होकर इसके ऊपर भी वैसाही रेता गरम डाला। और अनेक तरहके दुर्वचन बोलकर वही बालू गरम निकालनेका लम्बा चौडा कलुछ उस चन्दुके शिरपर ऐसा क्रोधसे मारा कि, वह, विगतप्राणसा होकर वहाँही गिरपडा। उसी भरयारके कलुछकी चोटसे चन्दुके प्राणान्त होगये। संवत १६७९ विक्रमीमें अपने अपयश कलंकको इस श्रीगुरुजीके पवित्र इतिहासके साथ भूमिपर छोडकर चन्दु स्वयं यमयातना सहनार्थ उसके लोकमें प्रयाण करगया। इस पूर्वोक्त रीतिसे श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने अपने पिताके अपराधीको दण्ड दिया। और थोडे दिन पीछे अपने पिताजीके समाधि देहराका ज्येष्ठशुक्ल चौथको ब्रह्म-भोज करके लाहौरसे अमृतसरजीमें चले आये और वहाँपर'लोहगढ' नामक किला तैयार करवानेके लिये बहुतही दत्तचित्त हुये। देश देशान्तरके अनेक शिष्यलोग श्रीगुरुजीको मंगलपूर्वक अमृतसरमें आया सुनकर तरह २की भेंट लेकर दर्शनको आये। बहुतसे सुन्दर२ घोडे तथा हाथियार (शस्त्र) इस समयकी भेंटमें आन एकत्र हुये। श्रीगुरुजी अपने शिष्य घोडा तथा शस्त्रलानेवाले पर बहुतही प्रसन्न होते उनहीं दिनोंमें बादशाह जहाँगीर काश्मीर देशके शैर करनेके संकल्पसे शहर अमृतसरमें पहुँचा। वहाँपर श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके दरबारकी शोभा तथा निर्मल पवित्र जलको देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। कई सहस्र रुपया नगद तथा अनेक तरहका उमदावस्तु श्रीदरबारसाहिब हरिमन्दिरमें बादशाहने भेंट किया। और श्रीगुरुहरिगोविन्दजीको अपने साथ शहर लाहौरमें लेगया। वहाँपर कुछदिन आनन्दपूर्वक शिकारादि शूरवीरताके कार्य्योंको करते हुए कुछ दिन निवास किया।

मौलवी गुलाम अली आदि कईएक इतिहासवेत्ता लोगोंने इस वार्ताको बहुत साफकरके लिखा है कि जहाँगीरबादशाहने श्रीगुरुहरिगोविन्द-जीको सारी पंजाबकी खबरदारी रखनेके लिये पूर्ण अधिकार दिया था। और जब लाहौरसे काश्मीरके शैरको रवाना हुआ तो उस वक्त भी इनको अपने साथ काश्मीर लेगया था। और मार्गमें पहाडी राजाओंसे इनको अनेक तरहकी नकद जिनस तथा तोफा वस्तुओंकी भेंट पूजा भी दिलवाता गया था। जब काश्मीरके श्रीनगर नामक शहरमें पहुँचे तो वहाँपर श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने जो स्थान अब ब्राह्मण संगतके नामसे प्रसिद्ध है वहाँ उतारा किया था जबतक वहाँ रहे प्रतिदिन बादशाहके साथ शिकार खेलने शैर करनेको जाया करते थे। थोडेदिन पीछे श्रीगुरुजीने बादशाहकी प्रसन्नतापूर्वक कहकर श्रीअमृत सरजीमें पीछे आनेका संकल्प किया। और मार्गमें शहर मुजफराबाद-ऐपटाबाद इत्यादि स्थानोंमें निवास करके अपने प्रेमी शिष्यगणको अनेक तरहके धर्मनीति व्यवहार परमार्थके उपदेशोंसे कृतार्थ करते हुये शहर गुजरातमें आन विराजे। वहाँपर एक शाहदौला नामक वली फकीर रहता था उसके साथ मेल मुलाकात ज्ञानगोष्ठी करके बहुत प्रसन्न हुये। शाहदौलाभी आपके मेलसे बहुतही खुश हुआ। श्रीगुरुहरिगो-विन्दजी जब इस गुजरात शहरके बाजारमें निकले तो बहुतसे लड-कोंने इनके विचित्र ठाटको देखकर कुछ हाँसी करी। लडकोंने कहा कि, वाह घोडा वाह बाज, वाह कलँगी; वाह छत्र, वाह चमर इत्यादि परन्तु विनाजाने सत्कार पूर्वक किसीने नमस्कार मात्रभी न किया। श्रीगुरुजीनेभी उन लडकोंकी तरफ देखके प्रसन्न होकर कहा कि गुजरात मसखरी, अर्थात् इस शहरके लोग प्रायः दिल्लगी करनेवाले हैं। उस शहरके लोग प्रायः अबतक भी दिल्लगी करनेमें प्रधान होते हैं। जब थोडासा आगे श्रीगुरुजी गये तो शाहदौलाका मकान आया उसनेभी दूरहीसे पूछा कि यह इतनी धूम धामसे किसकी सवारी आती है। लोगोंने कहा कि, साईंजी यह हिन्दूलोगोंका पीर आता,

है । तब शाहदौला फकीरने कहा हिन्दू क्या और पीर क्या । औरत क्या और फकीर क्या । दौलत क्या दरवेश क्या । पुत्र क्या योगेश क्या इसके उत्तरमें श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने शाहदौलासे कहा कि औरत ईमान है । दौलत गुजरात है । पुत्र निशान है । फकीर न हिन्दू न मुसलमान है । श्रीगुरुजीके इस उत्तरको सुनकर शाहदौला बहुत प्रसन्न हुआ तब श्रीगुरुजीने कहा कि; गुजरात मसखरी शाहदौला साईं-लोक यहांपर एक जहाँगीर नामक फकीरभी उससमय प्रख्यात था श्रीगु-रुजी उससे मुलाकात करते हुये शहर वजीराबाद हाफजाबादका शैर करते हुये भाईके मठमें जाय विराजे । वहांपर इनसे मडहाली नामक ग्रामनिवासी द्वारा मलमखाहा क्षत्रियने अपनी पुत्रीका विवाह कर दिया । और जिन ब्राह्मणोंने यह विवाह करवाया था । उनको श्री गुरुहरिगोविन्दजीने भाईकी उपाधि देकर अपना हुकमनामा (स्मार-कपत्र) दिया था । उसी हुकमनामेके प्रतापसे अबतक उन लोगों की वंशपरम्पराके लोग जागीरदार चले आते हैं । वहाँसे चलकर श्रीगुरुहरिगोविन्दजी शहर तलवंडी जहाँपर श्रीगुरुनानकजीका जन्म स्थान है वहाँपर जाय मुकाम किया । और वहाँपर अपने पूजा पूर्वजोंके पवित्र स्थानका दर्शन करके वहाँपर ज्येष्ठमासकी प्रसिद्ध निर्जला एकादशीके दिन एक भारीमेला होना नियत किया । वही मेला उनका नियत किया हुआ अबतकभी प्रतिवर्ष ज्येष्ठमासकी निर्जला एकादशीवाले दिन बहुतही धूम धामसे हुआ करता है। वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी शहर लाहौर पहुँचकर मजंगनामक ग्राममें निवास किया । उनही दिनोंमें जहाँगीरबादशाह देशकाश्मीरसे पीछे आता हुआ शहर लाहौरके पास तीन मीलपर शाहदरेमें आनकर काल वश्य होगया और उसी समय संवत् १६८४ विक्रमीमें उसका पुत्र शाहजहाँ शाही तखतपर विराजमान हुआ । उसी समयमें श्रीगुरुहरिगोविन्दजीको काश्मीरकी यात्रासे पीछे आये सुनकर अनेक दूर दूरके शिष्यलोग तरह २ के सुन्दर पदार्थ भेंटमें लायकर दर्शन करनेको आया करते

थे। जिस देशमें जो वस्तु उत्तम होती थी उस देशके प्रायः उसीही को लाया करते थे। उसीकालमें एक नूतनशिष्य तुरकस्तानके अनेक लोगोंके साथ मिलकर श्रीगुरुजीके भेंटके लिये एक काबुली घोडा तोफा लाया। दैवात् वह घोडा शहर पेशावरके हाकिमकी दृष्टि पडगया। उसने खरीदना चाहा परन्तु गुरुको शिष्यने बेचनेसे इन-कार किया हाकिमके बहुत कहनेसे भी शिष्यने बेचना स्वीकार न किया। अन्तमें हाकिमने उस शिष्यसे घोडा बलात् छीन लिया। तब वह शिष्य बहुतही दुःखी होकर श्रीगुरुजीकी सेवामें हाजिर हुआ और अपना सभी वृत्तान्त भी सुनादिया श्रीगुरुजीने उस प्रेमीशिष्य का धैर्य्य दिया। और कहा कि, तुम्हारी तरफसे हमको भेंट पहुँच गई। वह घोडा थोडे दिनोंमें आपही हमारे पास चला आवेगा। उस घोडेको पेशावरके हाकिमने तोफा जानकर लाहौरमें बादशाहके पास भेजदिया। और सब हालभी लिख भेजा। बादशाह घोडेको देखकर बहुत खुश हुआ। और उसकी उचित कीमत (मूल्य) उस सौदागरके पास भेजदई। जिसको उसने श्रीगुरुजीकी भेंटमें अर्पण करदिया। वह घोडा भी थोडेही दिनोंमें बादशाही तबेलासे ऐसा उदास हुआ कि, उसने दाना घास खानाभी छोडदिया। बहुत दुबला तथा बीमारसा होगया तो बादशाहने अपने उस्ताद काजीरुस्तमखानको बखश दिया। वह काजी शहर लाहौरमें श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके घरके पासही रहा करता था। जब वह काजी अपने घरमें घोडेको लाया। तो अकस्मात् श्रीगुरुहरिगोविन्दजीकी दृष्टिमें पडगया। श्रीगुरुजीने उसको काजीसे खरीद लिया। थोडेही दिनोंमें वह घोडा फिर पूर्ववत् अच्छा होगया। और उसको देखनेवाले अनेक राज दरबारके लोग चकित होगये। इसी रुस्तमनामक काजीके घरमें एक कौला नामक पुत्री फकीर मियाँमीरकीमुरीद (शिष्य) थी। वह अति सुन्दरी होनेपर भी बहुतही सुशीला तथा लज्जावती थी छोटेपनहीसे उसने परमेश्वरके भजन स्मरण फकीरोंकी सोहबतमें अपने मनको प्रवृत्त

कर रखा था युवती होकर भी उसने अपना विवाह करनेसे पिता माताको इनकार किया था । और घरमें भी एक एकान्त स्थलमें प्रतिक्षण निवास करा करती थी । जब कभी बाहर जाती तो अपने गुरु मियाँमीर फकीरके दर्शनहीको जाती अन्यथा घरसे बाहर पाउँ भी न निकालती थी उसने बहुत बार मियाँमीरजीकी मजलिसमें मियाँमीरजीके मुखसे तथा और अच्छे २ फकीरोंके मुखसे श्रीगुरुहरिगोविन्दजीकी अनेक तरहकी प्रशंसा सुनती वैसेही कभी २ अपनी मजलिसमें भी करती । इसका पिता काजी तो प्रथमही इसके विवाह न करवानेसे तथा इसके फकीरोंकी संगतिमें रहनेसे इसपर पूर्ण रूपसे अप्रसन्न था जब इसके मुखसे काजीने गुरुहरिगोविन्दजीकी श्लाघा सुनी तो क्रुद्ध होकर कहने लगा कि, ऐकाफरे तू काफरकी तारीफ करती है और शरह मुहम्मदीको नहीं मानती है । कि, जिसमें हिन्दू काफरकी तारीफ (श्लाघा) करनेवालेको हुकम कतल है । कौलाँने जवाब दिया कि, बापजी शरह मुहम्मदी फकीरोंके लिये या मेरे लिये नहीं है । किन्तु मूर्खोंके लिये है जो कि,सिवाय शरहके दूसरा कुछ जानते मानतेही नहीं । और फकीर तो खुदाके बन्दे हैं इनकी खुदा मानता है जैसा चाहें करें । इनको शरह मुहम्दीसे क्या काम है इत्यादि पुत्रीके जवाब सुनकर काजीसाहिबके हृदयमें अग्नि जल उठी और उसीदिन दूसरे काजीओंसे मिलकर अपनी पुत्री कौलाँको शहरके बाहर वर्ताव करनेके अपराधमें हुकम कतल निकाला । कौलाँकी माताने इस वार्ताको सुनकर कौलाँको तथा पीर मियाँमीरको भी इस वार्तासे परिचित किया । जिसपर मियाँमीरने कौलाँको कहा कि, यहाँपर कोई उपाय तेरे बचनेका प्रतीत नहीं होता । व्यर्थ मनसूरकी तरह इन जालिम लोगोंके हाथसे कतल करी जायगी । इससे अच्छा होवे जो तू अभी शरण पालक गुरुहरिगोविन्दजीके पास अमृतसरमें चली जावे । इसकालमें सिवाय उनके तेरी जानके बचानेवाला और दूसरा नहीं है । कौलाँने अपने गुरुका कहा उचित समझा उसी वक्त बाँधवनाकर

एक अपने गुरुभाईको साथ लेकर शहर अमृतसरको रवाना हुई। वहाँपर मियाँमीरजीकी पहचानसे श्रीगुरुहरिगोविंदजीकी शरणमें निवास करने लगी। काजीसाहिबने भी पीछेसे सुनालिया। वह लेनेकेवास्ते अमृतसर गया परन्तु कतल भयभीत कौलाँने सर्वथा जाना नहीं चाहा। श्रीगुरुजीने उसके निवासके लिये एक पृथक्‌ मन्दिर बनवादिया। और कहा कि, जैसे तुम्हारी इच्छा हो अपनी जीवन पूरा करो उसकी प्रतिक्षण परमेश्वर परायणता देखकर श्रीगुरुजी उसपर विशेष प्रसन्न रहते। और हरतरहकी उसकी खातरी रखते। कुछ समय ऐसेही व्यतीत हुआ तो एक दिन कौलाँने अपने सभी आभूषण तथा कुछ नकद जो कि उसकी माताने उसको दिये थे एकत्र करके श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके आगे रखदिया। और हाथ जोडके कहा कि, दीनबन्धो! इस मेरे पैसेको किसी ऐसे धर्म कार्य्यमें लगा दीजिये जिसमें कुछ काल मेरा नाम इस संसारपर रहजाय श्रीगुरुजीने उस धनसे उसीके नामका एक तालाव खुदवाया। जो कि, अबतक महाप्रख्यात परम पवित्र अमृतसर शहरमें कौलसरके नामसे प्रसिद्ध है।

एक समयका वृत्तान्त है कि, जहाँगीर बादशाहने अपने पुत्र शाहजहाँका हाथ पकडकर श्रीगुरुहरिगोविंदजीके हाथमें दिया था। और कहा था कि, यह मेरा लडका है आपने इसपर मिहरवानीकी निगाह रखनी। जिसका उत्तर श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने यह दिया था कि फकीरोंका दिल मिसल दर्पणका होता है। जैसा यह हमारेसे वर्ताव करेगा हम भी इसके साथ वैसाही करेंगे। उनही दिनोंमें पृथ्वीचन्द्रके पुत्र मिहरवानने चन्दुके पुत्रके साथ मिलकर गुरुगादीका दावा दायर करदिया। और चन्दुके पुत्रने अपने पिताके खूनकी नालिश करी। जिसपर साहजहाँने संवत् १६८९ विक्रमीमें गुरुहरिगोविन्दजीको लाहौरमें बुलाकर जबाब देही देनेके लिये कहा। परन्तु वजीरखान वजीरने सारा वृत्तान्त चन्दुके अत्याचारका बादशाहको सुना दिया। और पृथ्वीचन्दका अकारणद्वेष तथा निजका हाथ पकड-

कर पिताने गुरुजीके हाथमें देना इत्यादि सभी बादशाहको स्मरण करवाया तब बादशाहने जवाब सुने विनाही उसी कालमें उन दोनोंके अर्जीदावे खारज करादिये। और श्रीगुरुहरिगोविन्दजीको बडे सन्मानपूर्वक अपने डेरेपर रवाना किया। उसी वर्षमें श्रीगुरुजीने एक मेरवड ग्राम निवासी पैंदेखान नामक पठान् पहलवान् नौकर रक्खा था। उसके साथ उसके जमालखान रुस्तमखान तथा आलरखान इत्यादि भाईभी श्रीगुरुजीके नौकर होगये थे। श्रीगुरुहरिगोविन्दजी एक विचित्र अपूर्व सुन्दर तथा अङ्गोंप्रत्यङ्गोंसे सर्वाङ्ग सुशोभितं महापुरुष थे। सुदीप्ति नख सुडौल चरण अजानुबाहु मनोहर गौरवर्ण विशाल विशदकाय डील दीनहीनशरण। खंजनवत् विशालनेत्र दृष्टिसे दासार्तहरण शील दीनबन्धु थे और शौर्य्य धैर्य्य औदार्य्य साहस सौजन्य निर्भयता स्वतन्त्रता अदीनता गुरुता या शरणवत्सलता इत्यादि सद्गुणोंका तो मानो आप स्थान थे। शारीरिक बल आपका ऐसा उत्तेजित था कि, यदि देव, यक्ष, राक्षस या फरेशता भी आगे आता तो इनके बलके आगे शिर न उठता। सिपाहीपनके हरएक कार्य्यमें ऐसे कुशल थे कि, मानो इनहीसे इस विद्याका जन्म है। उदारतामें कर्णको और न्यायमें धर्मराजकोभी नीचा दिखलानेवाले थे। तात्पर्य कौन ऐसा सद्गुण कहाजाय जिसकी आपमें त्रुटि थी। किन्तु यावत् हैं उन सब सद्गुणोंके आगार थे परमेश्वरके भजन स्मरण कीर्तन गुणानुवाद गायनमेंभी सर्वाग्रगण्य थे वस्त्रवेश पोशाक आपका सर्वदा बादशाहों जैसा हुआ करता था। और शूरबीर सिपाहीकी तरह यावत् शस्त्र अपने शरीरके साथ प्रतिदिन बाँधाकरते थे कमरमें दोतलवारें काँधेपर कमान जिसको साधारण पुरुष उठाभी नहीं सकताथा। पीठमें बाणोंका भाथा सिप्र पिसतौल तथा पेश कब्ज इत्यादि सभी शस्त्रोंको अपने शरीरमें सजाकर तख्त श्रीअकालबुंगापर जायकर दरबार लगाया करते थे। आपके कमरमें बाँधने वाले शस्त्रोंमेंसे एकतलवार अबतकभी तख्त अकालबुंगापर विद्यमान है। जिसको

वर्तमान समयका जवान मनुष्य कठिनतासे उठामात्र सकता है। प्रातःकालमें कथा कीर्तन भजन स्मरण उपदेश इत्यादि शुभकार्य्योंमें प्रवृत्त रहते। दोपहरको लंगरमें भोजनप्रबन्धकी तरफ दृष्टि देते कि, ऐसी न हो कोई गरीब भूखा फिरजावे। उसके पश्चात् थोडा काल एकान्तमें आराम करते। तीसरे पहरमें अनेक तरहके दीवानी फौज-दारीके मुकद्दमो (विवादों) का फैसला करते अदल (न्याय) ऐसा सच्चा तथा प्यारा करते थे कि, मुद्दई (वादी) मुद्दालह (प्रतिवादी) दोनों प्रसन्न होकर इनको सच्चा पादशाह कहते। और सायंकालमें पहल-वानोंके जोडोंकी कुश्ती (मल्लयुद्ध) देखते। और उसके पीछे शूरबीर बहादुर लोगोंका जीवनचरित्रगायनमें सुनते। उसके पीछे रहरासादि (सायं सन्ध्या) का पाठ श्रवणकरके अपने दरबारको विसर्जन करते। केचित् इतिहासवेत्तालोगोंको श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके विषयमें किंचित् विपरीत भावना प्रतीत होती है लिखते हैं कि, एक समयमें राजा ताराचन्द तालागाढिया बादशाही दरबारसे विपरीत हो-कर अपने घरमें स्वतंत्र हो बैठा था तो उसकालमें उस राजाको स्वा-धीन करनेके लिये जहाँगीरबादशाहने श्रीगुरुहरिगोविन्दसाहिबकी सह-कारता चाही थी और उनको अपनी फौजका अफसर नियत करके उस राजाके सामने रवाना किया था। उस कालमें श्रीगुरुहरिगोविन्द-जीने जातेही विजयलाभ किया था। और राजा ताराचन्दको बाद-शाहकी स्वाधीनता स्वीकार करवाके उसको बादशाहसे ले जाय मिला-या था। और चलती समय बादशाहसे सूचन करके उस राजा तारा-चन्दको शिरोपाग खिल्लत तथा कुछ खिताबभी बादशाहकी तरफसे दिलवाया था। उसी उपकारमें बादशाहने इनको सारे पंजाबके हाकिमोंके उपरि निगहवानी रखनेके लिये अधिकार दिया था। उसीही समय सातसौ सवार एकहजार प्यादा सातजख तोप इनके साथ रहनेके लिये बादशाहने स्वीकार किया था। और जब सारे देशके लोगोंमें यह प्रसिद्ध होगया कि, श्रीगुरुहरिगोवि-

दजी बादशाहके साथ बहुतही प्रेम है तो और लोगंभी जो कि, बाद शाहीकार्य्योंसे अनेक तरह बाधित होते इनके पास आनकर शरणलेते परन्तु पंजाबके हाकिम लोगोंको श्रीगुरुहरिगोविन्दजीकी अपने ऊपर अधिकार बहुतही बुरा प्रतीत हुआ करत था। गुरुजीके अधीनमें रहना मानों उनको मरणसा दीखता था। उनकी छातीपर मानो रात्रि दिन सर्प लोटा करता था जबतक जहाँगीर बादशाह रहा तबतक तो उनकी कुछ पेश नहीं गई परन्तु उसके स्थानपर शाहजहाँ जो कि अभी सर्वथा अनुभवरहित नौजवान उमरका शाहजादा था। वह तख्त पर बैठा तो लोगोंको अपनी २ मनकी सुनानेका सुन्दर अवसर मिलगया। हर एक छोटे बडे हाकिमने अपने मनकी सुनाई। तात्पर्य यह कि, जहाँतक बनपडती थी अपनी तरफसे शिकायत करनेका कोई मार्ग बाकी नहीं छोडी। उधर काजीरुस्तमखानकी फरिहाद इनके चचेरे भाई मिहरबानकी फरिहाद चन्दुके घरसे पुकार सबने मिलकर सरलस्वभाव अनुभव रहित स्थूल विचार बादशाहको इनकी तरफसे उपराम करदिया। बादशाहने इनसे यावत् अखत्यारात् देश पंजाब सम्बन्धि उसी वक्त छीन लिये परन्तु इनके प्रताप प्रभाव या स्वभावमें जैसा कि, बादशाहको विश्वास था कुछभी फरक न आया। क्योंकि इनका प्रताप प्रभाव विशेषकर गुरुगादीहीका था। सो उस स्वाभाविक परमेश्वरीय प्रतापके आगे कृत्रिम प्रताप दिनके दीपककी तरह अन्यथा सिद्धसा था। श्रीगुरुजीने उन बादशाही अखत्यारोंको तुच्छ जानकर उसी वक्त छोडदिये। परन्तु यदि दीर्घ दृष्टिसे देखाजाय तो जहाँगीर बादशाहने जिससमय इनको यह अधिकार दिये थे कोई मोलेबनकर या किसीकी विशेष फरमायशसे नहीं दिये थे। किन्तु एक गुह्यराज-नीति विचारसे सोच समझकर दिये थे। क्योंकि उससमय पंजाबदे-शके यावत् हिन्दू इनके वशवर्ती थे। और इनके बलवीर्य तथा शौर्य तेजको स्मरण करताहुआ बादशाह कभी आरामसे शयनभी न कर सकता था। बादशाह जहांगीर अपने मनमें अच्छी तरह समझ बैठा था कि यदि

इनसे किसीतरहकी कुछ बिगडगई तो बादशाहीमें आराम रहना कठिन होगा। उधर श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने भी समयानुसार उचित समझकर अर्थात् अपनी तरफसे प्रथम नहीं बिगडनी चाहिये यही मनमें राखकर बादशाहके दिये अखत्यारोंको स्वीकार कर लिया था परन्तु चित्तसे तो इनको शिवाय एक सर्वान्तर्यामी परमेश्वरके दूसरे प्राकृतजनोंकी किसीभी तरहकी पावन्दी इष्ट न थी। इनके अधिकार छीने जानेसे थोडेही दिन पीछे एक ऐसा वृत्तान्त हुआ है कि, जिस से स्पष्ट प्रतीत होता है कि, इनको समयके बादशाहीकी कुछ भी परवाह न थी। वह यहीके एकबार श्रीगुरुहरिगोविन्दजी शहर गुमट्या लाके पास बाहर जंगलमें शिकार खेलनेके लिये चले गये थे। दैवात् शाहजहाँ बादशाह भी लाहौरसे शिकार खेलताहुआ उसी जंगलमें चला आया। स्वभावसेही बादशाहका सुपेद बाज जो कि इरान देशसे तोफा नजरमें आया था एक शिकार परिन्दाके पीछे उडताहुआ श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके बाजोंके पास आन बैठा श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने उसको पकडवा लिया। पीछे बादशाहको भी खबर मिली कि, हमारा बाज सुपेद उनके पास है। अनेक बार बादशाहने सन्देसा भेज अपना मनुष्य भेजा कि आप हमारा बाज हमको दे दीजिये। परन्तु इन्होंने बादशाहकी कुछ भी परवाह न करी। यही उत्तर दिया कि यह बाज अब नहीं मिलसकता। परन्तु श्रीगुरुजीके द्वेषी गुणको उस समय बादशाहको उभारनेके लिये उचित अवसर मिलगया। अनेक तरहकी बातें बना बनाकर बादशाहके पास श्रीगुरुहरिगोविन्दजीकी बुराई बकने लगे। किसीने कहा कि यह हिन्दुओंका गुरुही नहीं मुसलमानोंका दिली शत्रु है। और बडा आत्मप्रशंसी अभिमानी है। कोई बादशाहके पास ऐसा कहने लगा कि देखो फकीर होकरभी इसका कितना ऊँचा दिमाग होगया है कि बादशाही अदब लिहाजकोभी कुछ खातरमें नहीं लाता। देखिये हुजूरने अपना बाज मँगवा भेजा परन्तु उसने नहीं भेजा है। उस ऐसे पुरुषका इलाज यदि अबभी न

होगा तो फिर पीछेसे हाना बहुतही कठिन होगा । इत्यादि अनेकतरहके चुगलोंके चुगलखोरोंके वचन सुनकर अबुद्ध बादशाहने चैत्र मास मिति १३ संवत् १६८९ विक्रमीको क्रुद्धहोकर हुकुम दिया कि, मुखलसखान नायब नाजम लाहोर सहित गुलामरसूल तथा मौलाबक्स पीरोंके तथा रुस्तमखानकाजीके सात हजार फौज पैदल तथा सवारोंको साथ लेकर गुरुहरिगोविन्दके साथ अमृतसरमें मुकाबिला करे । नायबनाजम उसी वक्त शाही हुकुमको सुनतेही अप्रमित फौजको लेकर अमृतसरकी तरफ रवाना हुआ उधर श्रीगुरुहरिगोविन्दजीनेभी सुना तो तीनहजार अपने शिष्यमण्डल शस्त्रधारियोंको साथ लेकर शहर अमृतसरजीसे रवाना होकर बाहर तीनकोशपर कसबा बडालीकेपास मैदानमें बादशाही फौजके साथ मुकाबिला करनेके लिये प्रथमही जाय ठहरे । बादशाही फौज आई तो परस्पर खूब युद्ध होना प्रचलित हुआ । परन्तु श्रीगुरुजीने उसकालमें शाहीफौजके साथ ऐसा साहस तथा पराक्रमसे सामना किया कि, थोडेही कालमें उस फौजके उच्चाधिकारीलोग मारेगये । मुखलसखान नायब नाजब तथा गुलामरसूल इत्यादि सभी सरदारलोगोंके शिर धडसे जुदा होगये अफसरलोगोंके मरतेही सारी शाहीफौज विनाही हाथ उठाये तितर बितर होनेलगी । नाजमके मरनेको देखकर थोडीही देर पीछे शाहीफौजने पीठ दिखलाके भाँजखाई । फिर क्या था श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके दृढप्रातिज्ञ शिष्यलोगोंने एक २ ने दश २ का काम तमाम करडाला । फौजशाही हारखाकर भाग निकली श्रीगुरुहरिगोविन्द साहिबके मुकाबिलेमें साहीफौज तुच्छ होगई । साहीफौजके भागजानेसे पीछे श्रीगुरुजी अपना विजयका डंका मैदानसे बजाते हुये श्रीअमृतसरजीमें पीछे चले आये । और हरिमन्दिरमें आनकर श्रीगुरुपरमात्माका कडाहप्रसाद (हलुआ) करवाकर अपने शूरवीर बहादुर शिष्यलोगोंको प्रसन्न होकर वर्ताया उसके पश्चात् अपने बहादुरोंको सबको यथायोग्य पारितोषिक(इनाम) बाँटा । बादशाहको ऐसी खबर सुनकर बहुत शोक हुआ । और

उसीसमय चैत्रमिति २५ संवत् १६८५ विक्रमीको बहादुरखान कसूरी तथा कलन्दरखान तौरानी दोनों फौजी अफसरोंके साथ औरभी बहादुर सिपाहीलोगोंको देखकर कालीखान तथा ताहरबेग इत्यादि शूरवी, रोंको १५००० पंद्रह हजार फौजदेकर श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके साथ-मुकाबिला करनेके लिये रवाना किया। उधर श्रीगुरुहरिगोविन्द जीनेभी शाहीफौज अधिक आती सुनकर अपने बहादुर सिपाही पैन्देखान, जमालखान, मीरमोमनखान, भाईविधिचन्द्र, मोहन , गोपालभाईनिहाल, इत्यादगोराबेराड, भाईपैराना, भाईज्येष्ठा । तथा मोहरीरन्धाना इत्यादि शूरवीरोंको पृथक् पृथक् कर फौजका अधिकार देकर किला लोहगड जो कि, प्रथमही तैयार कर रक्खा था उसपर मोरचा बाँधकर बादशाही फौजके साथ सामना करनेके लिये खडा करदिया। और आप किलेके मध्यमें ऊंचे बुरुजपर बैठकर तीरकमान हाथमें लेकर तीर चलाने लगे। प्रातःकालसे सायंतक दोनोंतरफसे तीर तोप बन्दूकोंकी खूबही वर्षा होती रही। परन्तु किसीतरफमें भी कुछ कम जोरी न आई। अन्तमें जब सूर्य्या अस्त होगया अन्धकारने दशोंदिशाको आक्रान्त करलिया सांसारिक कार्य्योंसे दिनभरके थके हुये लोग स्वयं उदास होनेलगे वीर प्रसु भूमिनेभी जब अपने वीर पुत्रोंके मरणेके प्रथमही शोकमय तिमर वस्त्रको ओढकर दिखलाया तो। लडाईभी शान्त होगई।। और बादशाही फौज अपने तम्बूकनातें खेमोंमें घुसगई। उधर गुरुजीकी फौजनेभी खान पानादिसे निवृत्त होकर थोडा काल आराम लिया। और फिर तीनबजे रात्रिके उठकर श्रीगुरुजीकी आज्ञाके अनुसार बादशाही सोतीहुई फौजपर मिलकर एक ऐसा बलात् छापा मारा कि, उस सारीफौजको अपने बेगानेकी होशतक न रही। अन्धेरी रात्रिमें उठकर आपसमेंही कटने मरने मारने लगे। और जब सबको होश हुआ निद्रा खुली तो भाग निकले। उस भागनेसे लश्कर शाहीको बहुतही नुकसान पहुँचा। और अलीमुहम्मद् मिरजाबेगका समखान इत्यादि मशहूर दिलावर सरदारोंकाभी इसी

और शिकारमें काम तमाम हुआ । शेष जब सूर्य निकला चारोंतरफ प्रकाश हुआ । तो फिर बादशाही फौज अपने ठिकानेपर आन जमा हुई। और ऐसे जोरसे लडाई करी कि, गुरुकी फौज थोडी होनेके कारण उसके आगे ठहर न सकी । और भागकर किलेका आश्रय लिया। उसके पीछे किलेके भीतरहीसे तोपों बन्दूकोंसे लडाईहोनी शुरूहुई सात जरब अर्थात् ४९ तोप तो श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके पास प्रथमही थी परन्तु इनके शिष्यलोग लडाईकी खबर सुनकर अनेक तरहका लडाईका सामान चारोंतरफसे दूर २ से लाकर तथा बहुतसी खुराक जमाकरके इनके साथ अनेकशिष्य लडाईमें औरभी आन शामिल हुये उसदिनभी दोनों तरफसे खुब काटाकटी मारामारी होतीरही सायंतक कोईभी पक्ष निर्बल न पडा यद्यपि इस दिनमें श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके तरफके भी बहुतसे लोग मारे गये थे परन्तु जितने पीछे बँचे उन्होंने उस युद्धके मैदानको ऐसा गरम रक्खा कि, बादशाही फौजको कुछ मालूम न हुआ कि, अन्दर किलेका हाल इस समय कैसा है। सायंकाल होनेसे फिर लडाई शान्त् हुई । परन्तु श्रीगुरुहरिगोविन्द-जीने विचारा कि, इस समय अपना पक्ष बहुत निर्बल है तथा बाद-शाही दल बहुत प्रबल है तो उसी समय अपने घरके लोगोंको अपने माल तथा असबाबके समेत अपनी जागीरके कुभाल नामक ग्राममें भेज दिया । और आप शाहीफौजके साथ मुकाविला करनेके लिये दृढ चित्त होकर जमेरहे । उसी रात्रिको कलन्दरखान नामक शाही फौजके अफसरके चित्तमें ऐसा विचार आया। कि, फकीरोंपर फतह पाना कौन बहादुरीका काम है । और यदि हमने फतह पाभी ली तो बादशाहको इससे कौनसा कोई मुलक या दौलत मिलेगी जिसमें हम नामवर होंगे । नीचलोगोंके बहकानेसे नाहक खलकत खुदाकी पर म्परा नुकसान हो रहा है । दोनों ओर खूनोखून वह निकला है । गुरु हरिगोविन्द एक फकीर आदमी है इसने वस्तुतः बादशाहका कुछ दबाया हुआ नहीं है । और नाहक फकीरोंको सताना किसी मजहबमें

लिखा (उचित) नहीं है । इत्यादि विचार करके उसने श्रीगुरुहरि-गोविन्दजीके पास सन्देसा भेजकर अपने चित्तके शुभ विचारसे सूचित किया । और कहला भेजा कि, यदि आप इस स्थान किले लोहगढको छोड जावें तो हमभी बादशाहसे अपने कार्यके लिये कृतकार्य कहवासकें और परस्पर खलकत खुदाकाभी नुकसान न होवे फिर पीछे आपको अखत्यार है जब चाहे यहांपर चले आना कलन्दरखानके विचारको गुरुजीने भी समयके अनुसार अपने अनुकूल तथा उचित समझा और लडाईको छोडकर शिष्यमण्डलको साथ लेकर अपने जागीरके कुमालनामक ग्राममें जाय विराजे । पीछे बादशाही फौज युद्धके मैदानको खाली देखकर अमृतसरपर बादशाही अधिकारको पूर्णरूपसे जमाकर शहर लाहौरको पीछेगई । उधर श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने अपनी बीबी बीरोनामक पुत्रीका विवाह साधुनामक क्षत्रियके साथ खूब धूमधामसे किया कहते हैं कि विवाहके समय श्रीगुरुजीने जो शकुनका चौक आटेका पूराजाता है वह जवाहरातका पुरवाया था । इसीलिये वह स्थान अबतकभी माणकचौकके नामसे प्रख्यात है । और वहाँ उसी विवाहउत्सवके स्मरणार्थ एक मेला ज्येष्ठमासमें अबतकभी लगाकरता है । पुत्रीके विवाह होनेके कुछदिन पीछे श्रीगुरुजी शहर गोयन्दवालमें चलेगये । कुछ दिन वहाँ निवास किया तो बकालानामक ग्रामसे एक मिहरचन्दनामक दौलतमन्द भक्तने आपको ब्रह्मभोजके उत्सवपर बुलाया । तो उसकी प्रार्थनासे बकालामें चलेगये । वहाँहीपर आपकी जननी माता गङ्गाजीकाभी परलोकवास हुआ । आषाढ मास मिति १९ संवत् १६८९ विक्रमीमें माता गंगाजीका परलोकवास हुआ है । उनकी आज्ञाके अनुसार उनका शव (मृतशरीर) जलप्रवाह किया गया था । फिर अपने हिताचिन्तक भल्लेसाहिबजादोंके कहनेसे अपने घरके लोगोंको शहर गोयन्दवालहीमें निवास कराया । और आप दरिया ब्यासासे पार होकर शहर करतारपुरमें जाय विराजे । उसी स्थानमें शाही लश्करसे भयभीत

होकर कौलाँभी आन रही थी। श्रीगुरुजीके वहां पहुँचेतही वह कौलाँ बेचारिभी परलोकमें प्रयाण करगई। वहाँसे चलकर शहर हरिगोवि-न्दपुरमें जो कि, शहर बटालाप्रान्तमें विद्यमान है जाय विराजे यह शहर प्रथम चन्दुलाल दीवानके अधिकारमें था। जब बादशाहने उसकी सारी जायदाद (सम्पत्ति) जप्त करनेका हुकुम दिया था उसीसमय यह शहरभी वैरानकर दियागया था। उसके पीछे फिर श्रीगुरुहरि-गोविन्दजीने बादशाही सनद लेकर इसको कार्तिकमास संवत् १६७५ विक्रमीमें अपने नामसे नूतन वसाया था। वहाँ पहुंचकर श्रीगुरुजीने उस शहरकी आवादीकी उन्नति करनी चाही। परन्तु खेरडगोत्रका भगवान् नामक क्षत्रिय जो कि, दीवान चन्दुका नातेदार तथा उस प्रान्तका मालगुजार था बादशाहको इनका विरोधि देखकर उसने इनको उस ग्रामसे वेदावे करनेका इरादा किया अर्थात् उसने वह ग्राम इनसे छीनलेना चाहा इसीलिये इनके इबादीकी उन्नति करनेमें विरोध करने लगा अपने बहुतसे नौकर चाकर बटोरकर श्रीगुरुहरिगोवि-न्दजीके सामने लडनेकोभी तैयार हुआ। श्रीगुरुजीने बहुत वारण भी किया परन्तु उसने उन्मत्तचित्त होकर एकभी न सुनी अन्तमें खूब लडाई हुई और वही भगवाना अपने सभी सहकारिओंके साथ मारागया। श्रीगुजीने उसके मकानोंको गिरवादिया और उसी भूमिमें अपने बहादुर पैंदेखानके कहनेसे एक मसजिदभी बनवादई उसीके पास एक सराय धर्मशाला तैयार करवादई। और वहाँ पर एक सदा-बरत लंगरभी गरीबलोगोंके वास्ते जारी करवाय उसके पश्चात बाबा बूढाजीके स्मरण करनेसे नामदेवके देहरेके देखतेहुये शहरा रामदासपुरामे पहुँचे और बाबा बूढाजीको अपने दर्शनसे प्रफुल्लित किया थोडेही दी मेंं बाबा बूढाजी । श्रीगुरुजीके वहाँ निवासही कालमें मार्गशीर्ष मिति १४ संवत् १६८५ विक्रमीमें इस संसारचक्रसे किनारे होकर परमधाम विराजे। फिर वहाँसे श्रीगुरुहरि-गोविंदजी बारठनामक ग्राममें जहाँ श्रीगुरुनानकजीके पुत्र बाब

श्रीचन्द्रजी तपस्या किया करते थे वहाँ पहुँचे उनके दर्शन भेंट करके श्रीगुरुजी बहुतही प्रसन्न हुए । बाबा श्रीचन्द्रजी आपके सभी कार्य्योंको सुनकर बहुत प्रसन्न होकर हँसने लगे । और श्रीगुरुहरिगोविन्दजीका एक गुरुदत्तनामक पुत्र उस समय साथही था उसको बाबा श्रीचन्द्रजीने गोदीमें उठालिया और प्यार करने लगे और गुरुहरिगोविन्दजीसे कहने लगे कि, आपके पास चारपाँच साहबजादे (पुत्र) हैं । इनमेंसे कोई हमारा भी है । तब श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने हाथ जोडकर कहा सभी लडके आपहीके हैं जिसको आप का जी चाहे आप अपनी सेवामें रक्खें । बाबा श्रीचन्द्रजीने उसी समय अपनी सेली टोपा गुरुदत्तजीका पहनाकर कहा कि, (बाबा गुरुदत्त दीन दुनीकाटीका) ऐसी उपाधि देकर बाबाजीने गुरुजीको कहा कि, गुरुगादी तो तुम्हारे घरमें प्रथमही थी । केवल फकीरी शेष थी अब वह भी तुम्हारेही घरकी होचुकी । उसी दिनसे उनको सब लोग बाबा गुरुदत्त कहने लगे ।

इत्येकोनात्रिंशोऽध्यायः ॥ २९ ॥

अथ त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी फिर पीछे हरिगोविन्दपुरामें चले आये । और श्रवण किया कि, भगवाना घेरड़का पुत्र रत्नचन्द तथा दीवान चन्दुका पुत्र कर्मचन्द इत्यादि लोगोंके शिकायतसे अबदुल्लाखान सूबा जालन्धरकी तरफसे अलीबक्श तथा अमीरबक्श इत्यादि सरदार लोग पाँच सहस्र फौजको साथमें लेकर हमपर चलेआते हैं । उसी समय गुरुजीने भी लडाई करनेकी फिर तैयारी करनी प्रारम्भ करी । दूर २ अपने शिष्यलोगोंको पत्र अपने हुक्मनामेके लिख भेजे कि, सामग्री युद्धकी लेलेकर शीघ्र चले आओ । थोडेही दिनोंमें शिष्यलोग बहुतसे आन इकट्ठे हुये । जब बादशाही फौज समीप

आन पहुँची । तब दोनोंने भाईमोलक, भाईमदन, भाईज्येष्ठा, भाई-त्रिधिचन्द, पैंदेखान, मुहम्मदखान, इत्यादि बहादुरलोगोंको साथमें दोहजार शिष्यमण्डलको देकर युद्धके मैदानमें खडा करदिया । तीन पहर तक युद्धभूमि खूब गरम रही । उसके पीछे बादशाही फौजके भदामखान बलवण्डखान अलीबक्श तथा करीमबक्श इत्यादि अफसर लोगोंके मारे जानेसे शाहीफौज भागनिकली शहर जालन्धरका नाजम अपने पुत्रकी बुरी गमनायक खबर सुनताही रक्तनेत्र अग्निकी तरह तप्तहोने लगा । और स्वयं आप हमीरल्दीन मुहम्मदखान मदा-मखान इत्यादि बहादुरोंको साथ लेकर करीमबक्श तथा नवीबक्श दोनों पुत्रोंको भी साथ लेकर कसबा रुहेलाके पास श्रीगुरुहारिगोवि-न्दजीपर हमला करनेको गया । शेषमें जिसका फल यह हुआ कि-वह खुद अपने दोनों पुत्रों तथा प्रसिद्ध बहादुरोंके सहित श्रीगुरुहरि गोविन्दजीके हाथसे कतल किया गया । और उसकी फौज उसके गिरतेही युद्धभूमि खाली छोडके भागगई । यह युद्ध बहुतही रक्तप्र-वाहरूप हुआ है । इसीयुद्धमें श्रीगुरुहरिगोविन्दजीकी तरफकेभी अच्छे २ शूरवीर शहीद हुये थे । भाई पैडा, भाई परशा, भाई कल्याण भाई चंगा, भाई मथुरा, तथा मुहम्मदखान इत्यादि बहुतसे प्रसिद्ध २ शूर वीर श्रीगुरुजीकी तरफकेभी काममें आचुके थे । परन्तु शेषमें विजय इनहीके हाथ रही । नामक इतिहासके लिखनेवाला खुद इस युद्धमें था उसने इस युद्धके लिये बहुतही विचित्रता लिखी है । इस युद्धसे निवृत्त होकर श्रीगुरुहरिगोविन्दजी शहर करतारपुरमें चलेगये । और वहाँ कुछकालतक निवास किया । उनही दिनोंमें भगवाना तथा दीवान चन्दुके पुत्रने दिल्लीमें जाकर बादशाहके पास फरियाद पेश करी । और उधरसे नायब जालन्धरके मारेजानेकी शिकायतभी पहुँची तो बादशाहने फिर दूसरी वार गुरुहरिगोविन्दपर फतह करनेके लिये अपने बहादुरोंको हुकुम दिया । परन्तु उसी समय वजीरखान वजीर जो कि, गुरुजीका मनसे भक्त था उसने बादशाहको समझाया ।

कि, यह जितनी शिकायतें आपके पास आती हैं। वे सर्वथा आप-
समें रागद्वेषसे आति हैं इनमें कुछ सार नहीं है। गुरुहरिगोविन्दजी
गुरुनानकजीकी गुरुगादीपर विराजमान हैं। और बहुतही अच्छे नेक
चलन तथा खुदादोस्त हैं आपके पिता पितामहादि वृद्धोंने इस घरकी
बडाई देखकर कुछ भूमिभी इन लोगोंको बक्शीशमें दी थी। और
बहुतसा नकद जिनसभी समय २ पर इनायत फरमाया था। उसी
भूमिमें इन्होंने एक ग्राम आबाद किया है। और उसी ग्राममें एक
मसजिदभी तैयार करवाई है गरीबगुरुबा साधु फकीरोंके लिये वहाँ
पर अन्नछेत्र सदावर्त्तभी इन्होंने प्रचलित किया है। ऐसे अच्छे २
काम करनेवाले फकीरोंसे किसी साधारण पुरुषके कहनेपर लडना
यह अच्छी वार्ता नहीं है। इत्यादि वजीरखानकी सम्मतिको सुनकर
बादशाह शान्त होगया और यही निश्चय किया कि, सभी लोग झूठही
शिकायतें किया करते हैं करतारपुरसे श्रीगुरुजी मालवा देशमें चले
गये परन्तु उनही दिनोंमें पैंदेखान पहलवान जोकि श्रीगुरुजीके पास
नौकर था उसको अभिमान होगया था कि, गुरुहरिगोविन्दजीका
जहां विजय होता है सब मेरेही बाहुबलका प्रताप है। इसलिये श्री
गुरुजी उसको करतारपुरहीमें छोडगये थे और आप जब दरालीना
मक ग्राममें पहुँचे तो वहांपर इनके पास एकभाई गोरियानामक
काश्मीरदेशका मसन्द (कारिन्दा) अनेक प्रकारके अच्छे २ पदार्थ
लेकर पहुँचा। और वहांहीपर आगरा शहर निवासी पण्डित नित्या-
नन्दजी जो कि प्रतिदिन श्रीगुरुजीके साथ रहकर कथा सुनाया करते
थे उनकी कथाका भोग अर्थात् पर्य्यवसानभी कराया। और गुरुजी
ने अपने खजानेसे एक सहस्र रुपयारोक तथा एक जोडी कंचनके
कंकनोंकी कुछ उत्तम वस्त्रोंके समेत कथाकी समाप्तिमें पण्डितजीको
अर्पण किया। उसी प्रान्तमें एक आकल नामक तक्षकको साधुना
मक पुत्रका विवाह था। वे लोग विवाहकरके वरातसमेत डोली लिये
अपने ग्रामको पीछे जाते थे। मार्गमें सबने देखा कि, कोई बडाभारी

राजदरबारी डेरा उतरा हुआ है । लोगोंसे पूछनेसे निश्चय हुआ कि गुरुहरिगोविन्दजी उतरे हुये हैं उस नूतन विवाही लडकीने भी इस वार्ताको सुना तो आपसे आप पालकी (शिबका) मेंसे उतरकर श्री गुरुजीका दर्शन करने चलीगई क्योंकि इस लडकीके माता पिता बहुत दिनसे गुरुनानकके घरके सेवक थे परन्तु यह वार्ता बराती लोगोंको तथा लडकीके पति ससुरको बहुतही बुरीलगी जिसपर क्रुद्ध होकर उन्होंने उस लडकीको वहांही कतलकर देना चाहा परन्तु दैवात् उनका हाथ न उठसका प्रत्युत स्तब्धसे होगये उनकी ऐसी दशा देख कर शेष बराती लोगोंकोभी शोक हुआ फिर उसी लडकीने कहा कि, इनके रोगकी औषधी हमारे गुरुजीके पास अवश्य होगी इनको वहां लेजाओ बराती लोगोंने लाचार होकर वैसाही किया जब वह दोनों पिता पुत्र श्रीगुरुजीकी शरणमें पहुंचे तो श्रीगुरुजीने उनपर सत्यनाम लेकर जल सिंचन किया । उनसे उनकी होश ठिकाने हुई वे उठकर मनके मनहीमें लज्जा करने लगे और अपनेको अपराधी जानकर श्री गुरुजीके शिष्य हुये यही लोग प्रथम सखी सुलतानके चेले थे परन्तु अबुद्ध लडकीने इस वृत्तान्तको कुछ भी नहीं जाना वहांसे चलकर श्रीगुरुजी देश मालवेके दयालपर जण्डावाल मल्ल भक्तइत्यादि ग्रामोंकी सैर करते हुये तथा अपने सदुपदेशोंसे वहांके निवासी लोगोंको निहाल करते हुये शहर कांगडामें जाय विराजे । यहांके, रहनेवाला एक प्रसिद्ध मनुष्य रायजोध अथवा मिहरमिठा नामसे प्रख्यात श्रीगुरु-जीका शिष्य बनगया । यह मनुष्य धाडीवाल गोत्रमेंसे एक राजदर-बारका प्रतिष्ठित था । इस बडे मनुष्यको शिष्य होतेही मालवादेशके जिमींदार तथा काश्तकार सभी लोग श्रीगुरुजीके सेवक बनगये । ऐसेही बराड जातिके जाटलोग जो कि शूरवीरताके कार्य्यमें अग्रणीय गिने जाते थे वे लोगभी शिष्य होगये । और सेवक होनेसमय लोगों ने सहस्रों रुपये नकद् तथा जिनस भेंटमें दिये । तात्पर्य यह कि सारा मालवा देशका देश आपका सेवक बनगया था । कोईभी गाउं

या घर बाकी न बचा था। इसीस्थानमें श्रीगुरुहरिगोविन्दजीको एक सौदागर जो कि तुरकस्थानसे घोडे लाकर दिल्लीको लिये जाता था मिला। क्योंकि इनकोभी अच्छे २ घोडोंका भारी प्रेम था। सौदागरके घोडोंमेंसे दोचार घोडे श्रीगुरुजीनेभी खरीद किये। परन्तु शेषमें सौदागरसे कहा कि, यह घोडे बहुत अच्छे नहीं हैं। तब सौदागरने बडे शौकसे कहा कि, गुरुजी मेरे सारे मालमेंसे केवल दोही घोडे शिरोमणि थे जो कि मैं आपकी खिदमतमें ला न सका। किन्तु मेरेसे मार्गहीमें हाकिम लाहौरने जबरन् छीन लिये यदि वे दोनों घोडे मैं आपकी खिदमतमें लाता तो मुखमांगा धन आपसे प्रसन्न होकर ले जाता। परन्तु मेरी किसमतमें वहांपर कुछ बोलभी न सका। यदि बोलता तो माल तथा दोनों जान जावी थी। इसलिये सबर करके चला आया उसीसमय श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने अपने शिष्यमण्डलके दरबारमें अपने शिष्यलोगोंका साहस देखनेके लिये कहा कि, ऐसाभी कोई वीर हो सकता है जो कि, उन घोडोंको लाहौरसे गुरुके दरबारमें ले आवे। तो उसीसमय एक विधिचन्द्रनामक चीना जातिका जाट सुरसिंह नामक ग्रामके रहनेवालाने खडे होकर हाथ जोडके कहा कि, यदि मैं दासको आज्ञा हो तो स्यात् आपकी कृपासे ला सकों। उसीकालमें वह श्रीगुरुजीसे आज्ञा लेताही शहर लाहौरको रवाना हुआ यह मनुष्यभी एक विचित्र तरहकी घटनाके घडनेवाला अपूर्वही था। लाहौरमें श्रीगुरुजीके एक गरीबसे जीवन नामक तक्षकके घरमें जाकर विधिचन्दने उतारा किया। और प्रातिदिन कोमल २ घास लाकर बादशाही अश्वशालाके पास बेंचना आरम्भ किया। धीरे २ इसको वहांके दारोगाके साथ ऐसी मेलमुलाकात हुई कि, उसने इसको भला मनुष्य जानकर बादशाही घोडोंकी खिदमतमें नौकर रखलिया। जब यह नौकर हुआ तो इसने थोडेही दिनोंमें दारोगाके, चित्तमें अपनी तरफसे ऐसा इतबार जमाया कि, वह अच्छे २ कार्य्यभी इसीसे करवाने लगा। तथा अश्वशालाके मकानोंको

असवाबकी खबरदारी रखनेके लिये मकानोंकी कूँजियाँ (तालियाँ) भी इसीके सपुर्दकरके जानेलगा । बादशाही अश्वशाला लाहौरके किलेमें दरिया रावीके किनारे पर थी । इसलिये वह विधिचन्द्र प्रतिदिन अर्द्धरात्रिको उठकर एक मोटासा पाषाणभी दरियामें फैंक छोडा करता था । उस फैंकनेका उसका भाव यह था कि, एकदिन घोडाभी इसी दरियामें कूदेगा तो खडका तो अवश्य होगा परंतु प्रतिदिनके होनेसे उस खटकेको भी लोग नित्यकी तरहसा धारण जानकर चौंकेंगे नहीं । ऐसेही कुछ कालतक करता रहा फिर कभी २ उसी घोडेपर सवार होकर अर्द्धरात्रिके समय उसको धीरे २ अश्वशालाहीमें फेराभी करे । एकदिन अर्द्धरात्रिके समय ऐसाही मनमें आया कि, उस घोडेका सारा सामान उसपर कसके श्रीगुरुजीके चरणोंका ध्यान कर उसपर सवार हुआ । और जरासा छोडा तो घोडा दीवारसे पार होकर दरियाय रावीमें कूदपडा तैरता २ किनारे होकर ऐसा चला कि दिन उदय होतेके साथही श्रीगुरुजीके हजूरमें जाय पहुँचा श्रीगुरुजी घोडेकोभी देखकर बहुतही प्रसन्न हुये परन्तु परमप्रिय शिष्य विधिचन्द्रकी बहादुरी तथा साहसको देखकर श्रीगुरुजीका कोमल हृदय गद्गद होगया । श्रीगुरुजीने अपने प्यारे शिष्य विधिचन्द्रकी बहादुरी तथा दिलेरीको फिर दो बार परीक्षा करनेका इरादा किया । और कुछ दिनके पीछे विधिचन्द्रको कहा कि, यह घोडा जो तुम लाये हो यह अपने जोडेके वियोगसे कुछ उदाससा प्रतीत होता है । जिसपर विधिचन्द्रने कहा कि यदि आपकी कृपादृष्टि हो तो उसका ले आना कुछ बडी वार्ता नहीं है श्रीगुरुजीके पास ऐसे कहताही प्रणाम करके फिर शहर लाहौरमें पहुंचा । और वहां जाकर अपनेको एक असाधारण नजूमी (ज्योतिर्विद) के नामसे प्रख्यात किया । रंगढंग पोशाक बोलचाल सभी ऐसे बदलडाले कि, किसीकोभी बुद्धिमें न आया कि, यह कौन देशका मनुष्य है । जब अनेक तरहकी अपनी प्रसिद्धि करी । तो वही प्रसिद्धिकी बातचीत सूबा लाहौरके कानमेंभी

पहुँची सूबा लाहौरने इसको नजूमीजानकर अपने घोडेका पता पूछ-नेके लिये इसको अपने घरमें बुलाया। और यहभी अपने बडे दिमा-गसे सवारीपर बैठंकर सूबासाहिबके घरम गया सूबाने कुछ भेंट रखके घोडे चोरी गयेका प्रश्न किया तो इसने थोडासा विचारके कहा यदि पूरापूरा पूछना चाहते हैं तो जहाँसे घोडा गया है वह स्थल मेरेको दिखलाइये तो मैं जहां वह घोडा है नामग्राम सभी बतला सकूंगा तब दारोगा उसको अश्वशालामें लेगया वहां जाकर उस नजूमीने अपनी प्रश्नफलपत्रिका निकालकर कुछ प्रश्न घोडेके विषयमें बत-लाये जिनको सुनकर दारोगाको निश्चय होगया कि, यह रमली व रमलविद्यामें बहुतही कुशल है उसके पीछे रमली कुछ अपने लोभकी बातें करने लगा कि, मेरेको नाजूमसाहिबसे कुछ विशेष इनाम पारि-तोषिक मिले तो मैं अभी सब कुछ कह दूं जिसपर दारोगाने कहा कि, मियाँ इनामकी चिंता तू जराभी मतकर यदि तुम्हारे पते सभी ठीक निकले और उन पतोंके मुताबिक तलाश करनेसे घोडा मिलग या तो नाजूमसाहिब आपको अवश्य खुश करेंगे। नजूमीने ढीलेसे मुखसे कहा कि, काम हुये पीछे बडे घरोंमें गरीबोंकी टेर कौन सुनता है फिर दारोगाने कहा कि, मियाँ जब तुमको हमारे कहनेपर यकीनही नहीं तो हम तुम्हारे कहनेपर कैसे विश्वास करलें कि, तुमने जो कुछ बत लायाहै सभी सचही है और अवश्य वैसेही होगा तब तो नजूमीने कहा कि, अच्छा दारोगासाहिब हमलोगों रोजगारीओंका बिना आप जैसे भले पुरुषोंपर विश्वास किये रोजगार चलना भी मुशकिल होजाता है। इसलिये हमहीं विश्वास करलेते हैं। परन्तु जिस रंगकी आपकी वस्तु गई है ऐन उसी रंगकी कोई वस्तु लादीजिये जो जिसपर मैं बैठके दोचारबार एक मंत्रका पाठकरसकूं, बस उस पाठके पीछे आपको यथा-वत् जहां आपकी वस्तु इस कालमें है नामग्राम पता ठिकाना सभी लिखा दूंगा। यदि मिथ्या निकला तो एक पैसाभी मत देना और पूरा २ निकला तो सिफारिश करके कुछ इनाम दिलवाना। दारोगाने

घोडेके वर्ण वस्त्रादि कई एक पदार्थ नजूमीसाहिबको दिखलाये। जिन को उसने अपवित्र या पलीत कहकर पसन्द न किया। शेषमें हैरान होकर दारोगाने कहा कि, मियां और तो फिर अब घोडेके वर्णकी कोई वस्तु मिलनी कठिन है। हां यह एक उसी घोडेकी जोडका घोडाभी उसी वर्णहीका है। यदि यह तुम्हारी पसन्दमें हो तो इसी पर बैठकर अपना मंत्र पाठ करलो। रमलीने कहा कि, मैं तो कभी ऐसे घोडोंपर बैठाही नहीं क्या जाने घोडा गिरादे। दारोगाने कहा कि, मियां तुमको कौनसा बहुत काल बैठना है। अपना धीरेसे पाठ करके उतर पडना। और कहें तो इसपर इसका सामान भी कसदेते हैं आरामसे बैठजाना और मंत्र पाठकरके धीरेसे उतर पडना। नजूमीने कहा तो जल्दी कीजिये दोपहर होगया मेरेको खाना खानेमें देरी होती है दारोगाने उसीकालमें उस जोडके दूसरे घोडेको उसका सामान निकालकर कसवादिया। और नजूमीजीको ऊपर बैठनेको कहा। नजूमी घोडेपर बैठनेपर ऐसा प्रतीत हो कि इसने आगे घोडोंकी सवारी कभी बाप दादेसेभी न करी होगी ऊपर बैठकर धीरे २ कुछ मनमाना मंत्र जप करने लगा और घोडाभी अश्वशालामें धीरे २ इधर उधर फिरने लगा जब कोई नौकर घोडेके चलनेसे रोकना चाहे तो नजूमी हूंकारसे वारण करदेवे यही तमाशा पंदरह बीस मिण्टतक होतारहा। पीछे खुश होकर स्वच्छ होकर सचेत होकर नजूमी गत घोडेके सभी पते निशान और जहाँ यह गया है कहने लगा और नीचेके घोडेकोभी तेजीसे फेरने लगा गतघोडेके वृत्तान्त सुननेमें दत्तचित्तलोगोंने प्रकृतिका कुछभी ख्याल न किया। शेषमें फेरते २ घोडेको ऐसा छेडा कि वह अश्वशालाकी दीवारपरसे कूदकर दरियामें जायपडा और जातीवार नजूमीजीने पक्का पता यह दिया कि, अगला घोडा मालवा देश श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके घोडोंमें बँधा हुआ है। और इसकोभी मैं अपने इनाममें मिला जानकर वहाँही ले जाता हूं। ऐसे कहकर घोडेको छेडकर दीवारसे पार करदिया दिनके

दोपहर कालमें दारोगा आदि अनेक लोग देखतेही रहगये। परन्तु नजू जी घोडा लेकर रफूचक्र हुये। पीछे नाजम लाहौरने उसके पकडनेके लिये कईएक सवार दौडाये परन्तु उस जवाँमरदको कोईभी न पहुँचा सका। कुछ रात्रि व्यतीत हुये घोडा लेजाकर श्रीगुरुजीके सामने खडा करदिया। जिसको देखकर श्रीगुरुहरिगोविन्दजी बहुतही प्रसन्न हुये और किस किसतरहसे निकाला उसके सारे हालको सुनकर बिधि-चन्दकी दिलावरी तथा बहादुरीकी बहुतही प्रशंसा करी। और विछडी हुई जोडीको फिर मिलाकर उनका भी चित्त प्रसन्न किया। उधर नाजम लाहौरने अपना सारा वृत्तान्त दिल्लीमें बादशाके पास लिख भेजा। वहाँसे पौषमास संवत् १६८८में दशदशहजारी' अबदुल्लाखान सिलेमानखान बहलोलखान इत्यादि प्रसिद्ध प्रतिष्ठित सरदार लोगोंको १२हजार साथमें फौज देकर श्रीगुरुहरिगोविन्द साहिबजीके गिरफ्तार करनेके लिये भेजा। और लाहौरके नाजमने तथा जालन्धरके नाजम ने भी बादशाही हुकम पाकर अपनी२ फौज रवाना करी। यह तीनों जगहकी मिलकर फौज बाईस हजारके करीब श्रीगुरुजीके ऊपर चढ-कर चली आई। उधर श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने भी जोकि अपने समय में रुस्तमादिकोभी नीचा दिखलानेकी अभिमति रखते थे। और ऐसे २ समयको चाहतेही रहते थे। प्रत्युतस्वयं ऐसे २ समय प्राप्त होने की घटना घटते रहते थे अपने मालवा देशके सहस्रों कौमोंके लोग अच्छे २ युवा युद्धमें शूरवीर एकत्रकर लिये वराड सिंधव। महाराज फूल। रन्धावा। बल्हट। मान। धाली बाल इत्यादि जाट जातियों के लोग तथा और शिष्यलोगोंको और बहादुरोंको श्रीगुरुजीने बहुत सा बटोरा और अपने साथ लेकर। लाहरानामक ग्रामके पास जंगल मैदानमें बादशाही लश्करके साथ सामना करनेलिये आन खडे हुये परस्पर मुकाबिला होतेही दोनों तरफसे बन्दुकोंकी ठांठां होने लगपडी प्रत्येक शूरवीर अपना अपना दावपेच लगाने लगे। सूर्य्यके तेज तथा तलवारोंके चमत्कारोंने सभी शूरवीरोंके चित्तोंको उत्तेजित कर

दिया। दोनों तरफ खूब युद्ध प्रचलित हुई । तीरोंकी वर्षाने अपने अपने लक्षोंमें लोहेकी नदी बहा दई उधर सामन बादशाही फौज कवायदके सभी नियम सीखी हुई है। और इधर श्रीगुरुजीके साथ ग्रामीण लोग हैं। परन्तु उनमें साहस शक्ति बल उत्साह इतना भरा हुआ था कि, वही अपने समयपर कवायद् जानने वालोंकेभी कान काट लेते थे । श्रीगुरुगोविन्दजीकी तरफका एक २ बीर बादशाही फौजके दश २ बारह बारहका काम तमाम करता था । कोईभी मनुष्य पीछे पाउं हठाना तो जानताही न था । श्रीगुरुहरिगोविन्दजी जो कि शस्त्र विद्यामें अपने समयमें भीमार्जुनका स्मरण कराया करते थे उनके बाणोंसे भी एक एकसे अनेक लक्ष्यपरम्पराका विनाश हुआ करता था । तीन चार रोजहीमें बादशाही फौजके नाकमें दम होने लगे। अबदुल्लाखान आदि जो नामदार सरदार थे । सभी मारे गये । श्रीगुरुजीकी तरफके लोग तो बहुत करके उसी देशके निवासी ग्रामीण थे । दिनभर लडते रहते और रात्रिको अपने घरोंमें चले जाते थे । परन्तु बादशाही फौज रात्रिदिन मैदानमें पडी रहती मालवादेशका जंगल और उसमेंभी मैदान जहाँ कोशोंतक पानीका नाम निशानभी नहीं है। और खानेको भी जहाँपर सिवाय सूखी बाजराकी रोटीके और कुछभी नहीं मिलता।और उसकाभी सूखीका पानीसे बिना खाना मानो मौतको हाथसे बुलाना है। दिनकी जंगकी थकाविट और रात्रिको पौषमासके शीतने बादशाही फौजका आपसे आप सत्व खैंच लिया जो कुछ बँचे उनको चारों तरफसे श्रीगुरुजीके शिष्य लोगोंने मिलकर मारडार छोडा शेषमें लडते २ बादशाही फौजके लोग बहुतही थोडे रहगये । तब मैदान छोडकर पीछे दिल्लीको भाग निकले । उसी समय बादशाहको दक्षिण देशके महाराष्ट्रलोगोंका भी कुछ खटपट लग रहा था। दूसरे श्रीगुरुहरिगोविन्दजीपर विजय करके कुछ राजाको विशेष लाभ तो थाही नहीं । क्योंकि इन्होंने किसी प्रान्तपर अपना अधिकार नहीं जमाया था । किन्तु पंजाबदेशके लोगोंको उपदेश

मात्र किया करते थे । इसालिये फिर बादशाहने इन्होंपर लशकर भेजनेका विचार शान्त रखा । उधर श्रीगुरुहरिगोविंदजी शहर काँगडालेपो अकोली । सोटी इत्यादि ग्रामोंके निवासी लोगोंको अपने सदुपदेशसे शिष्य बनाते हुये शहर कीर्तपुरमें आन विराजे । इस कीर्तपुर शहरको श्रीगुरुजीने अपने मित्र ताराचन्द कहलूरीयेसे भूमि आदिकी सहकारता लेकर अपने ज्येष्ठपुत्र बाबा गुरुदत्तके द्वारा आश्विन मास संवत् १६७८ विक्रमीमें आबाद कराया था श्रीगुरुजीको कीर्तपुरमें आये श्रवणकर ताराचन्द आदि पर्वतके समी रजवाडे जो कि देशपंजाबकी निगरानीके समयसे श्रीगुरुजीके अनेक तरहके उपकृत थे श्रीगुरुजीके चरणोंमें आन हाजिर हुये । और दर्शन करके बहुतही प्रसन्न तथा कृतकृत्य हुये । और सब लोगोंने हाथ जोडकर कहा कि, आपका इस देसमें शुभागमन केवल हमारेही संचित शुभाचरणोंका सूचक नहीं किन्तु औरभी अनेक प्राणिओंकी कल्याणका कारक है । हम लोग आपके तनमनसे सेवक हैं जैसी आज्ञा होय वैसाही पालन करनेको तैयार है । श्रीगुरुजीने उनकी नम्रता शिष्टता भक्तिके वचन सुनकर उनका आश्वासन किया । सदुपदेशसे उद्बोधित भी किया । कुछदिन वहाँ आनन्द पूर्वक निवास किया । वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी संवत् १६९० विक्रमीमें दीपावालीके मेलापर श्रीअमृतसरजीमें चलेगये । दीपावलीके मेलेके समयमें चारोंतरफके मसन्दलोग अपने २ देशके शिष्योंके मण्डलोंको साथ लेलेकर सहस्रों रुपया नकद जिनस तथा अनेक तरहके सुन्दर २ पदार्थ भेंट पूजामें लेकर आन हाजिर हुये । क्योंकि श्रीगुरुजी बहुत दिनोंके पीछे अमृतसरजीमें आये थे । इसी कारणसे दूरदूरके शिष्यलोग इनका प्रेमसे दर्शन करने आते थे । और दीपावलीके मेलेकी रौनकभी गतमेलोंकी अपेक्षा बहुत चढबढकर हुई । पूजा और चढितमेंभी बहुतही पदार्थ आये । मेला समाप्त होनेके पीछे देशदेशान्तरके कारिन्दा लोगोंको तथा शिष्यलोगोंको यथायोग्य शिरोपाग

आदि देकर जहाँ तहाँ रवाना किया । और श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने अमृतसर निवासी लोगोंको हरिमन्दिरकी सेवा करनेके लिये पूर्ण शिक्षासे सचेत किया। उसके थोडेही दिन पीछे श्रीगुरुजी आप करतारपुरमें चलेगये। उनहीं दिनोंमें एक कन्धारका काबुली मल्लुनामक सौदागर श्रीगुरुजीकी सेवामें दो सुन्दर घोडे तथा कुछ और भेंट साथमें लेकर आया। श्रीगुरुजीने वह सभी कुछ उसी समय अपने पुत्र बाबा गुरुदत्तको बकस करादिया। परन्तु पैन्देखानपहलवानको इतमानखान नामक जामाताने अपनी चोरीकी आदतसे श्रीगुरुजीके घरसे उस असबाबमेंसे कुछ चुरालिया। और श्रीगुरुजीके सुफेदबाजकोभी चुराकर वहीं अपने घरमें लेगया था। श्रीगुरुजीने उसको बुलाकर बहुत समझाया कि, तुमको ऐसी नादानीकी बातें करनी उचित नहीं है। क्योंकि तुमलोग हमारे निमक (लवण) से पले हुएहो तुमलोगोंका व्यवहार हमारे साथ साफ होना चाहिये। ऐसी २ अनेकबातें श्रीगुरुजीने उसको कही। परन्तु उस मन्दभाग्यको उनका कुछ असर न हुआ। प्रत्युत आगेसे उलटा बकने लगा। और माल चुरानेसेभी इनकार किया। उसके टेढे बोल सुनकर श्रीगुरुजीने उसको गिरिफतार करवालिया। और उसीवक्त उसके घरकी तलाशी करनेका हुकम किया। तलाशी होनेपर उसके घरसे उस सुफेद बाझके सिवाय औरभी अनेक वस्तु श्रीगुरुजीके घरकी चुराई हुई इतनी निकली कि, जिनका किसीको स्मरणभी न था। इसी कारणसे श्रीगुरुजीने इनको अपने तरफसे नौकरीसे खारजकर दिया। और कहा कि, मुसलमानपर विश्वास करना अच्छा नहीं है। यहाँसे जुवाब हुआ तो उन निमकहरामोंने जाकर जालन्धरके सूबाके पास फरिहाद पेशकरी। परन्तु विचारशील सूबाने इनकी शिकायतपर कुछभी दृष्टि न करी। प्रत्युत इन लोगोंको फटकारकर कहा कि, तुमलोगोंको ऐसा कदापि करना नहीं चाहिये क्योंकि तुमलोग उसी घरके टुकडोंसे पले हुये हो। फिर उनलोगोंने विचारा कि, यहाँ तो कार्य्यहोना

कठिन है । वहाँसे चलकर दीवान चन्दूके पुत्र रत्नचन्द तथा भगवा नाके पुत्र कर्मचन्द इत्यादिलोग जोकि गुरुहरिगोविन्दजीसे द्वेषभाव रखा करते थे उनके साथ मिलकर सूबा लाहौरशाही दरबारमें सबने जाकर अपनी पुकार करी । उस पुकारकी सुनाईसे सूबा जालन्धर तथा सूबा लाहौर दोनोंको श्रीगुरुहरिगोविन्दजीपर फौज कशीकरनेका फिर हुकम हुआ वैशाख मास संवत् १६९१ विक्रमीमें श्रीगुरुहरिगोविन्दजीका अपने निमक हराम पुरुषोंके कारणसे करतारपुरमें फिर शाहीफौजसे मुकाबिला आनपडा उधर बादशाहकी तरफसे कालेखान पेशावरी जंगदिले रमलक अनवारखान कुतबल्दीन तथा अमीरखान सहित निमकहराम पैंदेखान आदिके नामी नामी प्रख्यात २ फौजीसरदार लोग थे । इधर श्रीगुरुजीकी तरफमें मलकजाति भाई विधिचन्द नानूराम नानकचन्द बाबा गुरुदत्तभी सोरावैराड तथा जीवनरन्धावा इत्यादि शूरवीर लोग एकसे एक चढ बढकर मैदान जंगमें अपना २ पराक्रम दिखलानेका साहस करने लगे । तीन दिनतक बराबर एकतार लडाई होती रही । किसीनेभी अपने २ मनका गुमान शेष न छोडा लोहूकी चारोंतरफ नदी वह निकली । आकाशभी कम्प उठा । अन्तमें तीसरेदिन हफकर बादशाही फौजके पाउं खिसलगये । और कालखान पेशावरी जंगदिलेर तथा कुतवल्दीन आदि सरदार लोग युद्धमें तमाम होगये पैन्देखान निमकहरामभी जिसको अपने बलका भारी अभिमान था स्वयं श्रीगु हरिगोविन्दजीकी तलवारसे दो टुकटे हुआ । यह सदा अपने मनमें यही समझा करता था कि, गुरुजीकी जीत केवल मेरे बाहु बलसे जहाँ तहाँ होती है । इसलिये श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने इसको अपने हाथसे कतल किया । मरनेके सिवाय जो बाकी बचे वे सभी इधर उधर भाग निकले । लडाईके शेष होतेही श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने भी वहाँका ठहरना उचित न समझा उसी समय अपना सामान असवाव बाँधके शहर कीर्त्तपुरको प्रस्थान किया । जब श्रीगुरुजी कीर्त्तपुरको चले तो उसी समय एक अशमानखान नामक सरदार जो

कि, कतल होनेसे किसी कारणसे बचगया था । उसकोभी मृत्युने आन घेरा । वह पीछे भागती हुई शाहीफौजको मिलकर शहर करतारपुरमें लूटमार मचाने लगा । जहाँ तक बनपडा करतारपुरको लूट खसोट । उसके पश्चात् इधर उधरकी कुछ फौज बटोरकर अचानक श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके पीछे चलपडा । और ज्येष्ठमास संवत् १६९१ विक्रमीमें कसबा फगवाडाके पास श्रीगुरुजीके उतारेके खेमोंपर जापडा परस्पर बहुतही समीपता होनेके कारण बन्दूकोंके चलने चलानेका तो कोई अवसरही न था । किन्तु दोनों तरफसे खटाखट तलवारें चलने लगीं । किरच कुठार सेहथी बरछा नेजा इत्यादि जो जिसके हाथमें आया उसने लेकर अपना आप बचानेके लिये तथा शत्रुके हिसाब चुकानेके लिये चटपट चलाया । चारोंतरफ भूमिपर खूनोंखून हो गया । मारमारकी पुकार मचगई । किसीने भी अपनी तरफसे कुछ कसर न रक्खी । इतनेहीमें अशमानखान रत्नचन्द तथा कर्मचन्द इत्यादि बहुतसे लोग श्रीगुरुहरिगोविन्दजीकी तेजोमयी तेज तलवारकी धारमें विराजकर इस संसार दुःखसे दूर होगये । बाकी जो कुछ बचगए वे श्रीगुरुहरिगोविन्दजीसे तेजसे तिरस्कृत होकर लाहौर शहर कन्दरामें जाय बसे । यद्यपि इस लडाईमेंभी श्रीगुरुजीके बहुतसे सेवक मारेगये और माल असबाबकाभी भारी नुकसान हुआ । तथापि विजयक ध्वजा श्रीगुरुहीजीके नामकी फहराने लगी । इसलिये मृतजीवितसे तथा नुकसान लाभसा होगया । श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके प्रायः प्रत्येक स्थलमें विजयका कारण इनका स्वशिष्य मण्डलमें विचित्र उपदेश था । यह अपने शिष्यवर्गको अपना उपदेश सुना २ कर ऐसा दृढकरलेते थे कि वह अपनी जान कुरबानकर देनेसे कदापि भय नहीं करता था युद्धके मैदानमें सामने होकर शिर कटवा लेता था परन्तु पीछे पाउंका हटाना गुरुके शिष्यके लिये लज्जाका स्थान था । इसी साहसके कारण गुरुका एक २ शिष्य दूसरे दश २ मनुष्योंके लिये बहुत थे । इस अन्तिम युद्धकी समाप्ति करके श्रीगुरुजी

शहर कीर्तपुरमें चलेगये। और वहाँही कुछ कालतक निवास किया। बादशाहको भी फिर इनकेपर लश्कर भेजनेका अवसर न मिला। कीर्तपुरके समीपही राजाताराचन्द जो कि एक भारी जिमीदार मनुष्य था श्रीगुरुजीके आगमनके वृत्तान्तको सुनकर बहुतही प्रसन्न हुआ। और उसी समय श्रीगुरुजीकी सेवामें आन हाजिर हुआ। और कुछ दिन कीर्त्तपुरमें निवास करके श्रीगुरुजीके दर्शन उपदेशके लाभ उठानेका भागी हुआ। और अनेक तरहसे श्रीगुरुजीकी सेवामें सहकारता करी। उसके पश्चात् कार्तिक मास संवत् १६९१ विक्रमीमें श्रीगुरुहरिगोविन्दजी बाबा अलमस्तसाहिबजीकी प्रेरणासे कुछ पूर्वदेशकी यात्रा करनेको लेगये। प्रथम श्रीगंगाजीपर-हरिद्वारमें जाकर स्नान किया। उसके पीछे अच्छे२ विद्वान् ब्राह्मणलोग बुलाकर उनको बहुतसा नकद तथा सामग्री प्रदान किया। उसके पश्चात् बाबा अलमस्त साहिबकी प्रेरणासे श्रीगुरुजी स्थान नानकमतामें जाय विराजे। वहाँपर कनफटे फकीरोंने इस बाबा अलमस्तको निकालकर जबरन् अपना मुकाम आन जमाया था। श्रीगुरुहरिगोविन्दजीनें उनको जातेही समझाकर किनारे किया। और बाबा अलमस्तसाहिब उदासीनको उसका स्थान दिलवाया। वहाँसे श्रीगुरुजी इलाका पीलीभीत जिला बरेलीकी तरफ रवाना हुये। और नजीबआबाद नगीना मुरादाबाद चन्दोसी बरेली तथा पीलीभीत इत्यादि नगरोंमें मुकाम करते हुये अनूपशहरमें आन विराजे। वहाँसे अलीगढ बुलन्दशहर दिल्ली कर्नाल तथा पानीपत आदिके सैर करते हुये अपने शहर कीर्त्तपुरमें चले आये। यहाँपर श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके बडे पुत्र बाबा गुरुदत्ताजीका संवत् १६९५ विक्रमीमें परलोक प्रयाण हुआ। उसी समयपर श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने धीरमल्लसे पाठ करनेके लिये श्रीगुरुग्रन्थ साहिब मँगवाया। परन्तु उसने देनेसे साफ इनकार किया। श्रीगुरुजी तो प्रथमही इनके साथ संबन्ध रखनेसे उदासीन रहा करते थे परन्तु उस समय पर गुरुग्रन्थके न

देनेसे बहुतही इनसे उदास होगये । और आगेके लिये अपने शिष्योंमें आज्ञा करी कि, जो कोई हमारा शिष्य धीरमल्लका दर्शनभी करेगा गुरुका अपराधी ठहरेगा। इसी कारणसे सिक्खलोग अबतक भी धीरमल्लियोंसे सकोच करते हैं संवत् १६९६ विक्रमीमें श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके पौत्र गुरुहरिरायजीके विषयमें ऐसा सुनाजाता है । कि, एक अनूपशहरके रहनेवाला दयाराम नामक सलीगोत्रका क्षत्रिय था । उसके घरमें चार लडकियाँ थीं । वह अपने देशके यात्री लोगोंके साथ मिलके श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके दर्शनको गया । वहांपर श्रीगुरुजीके पौत्र गुरुहरिरायको देखकर अपनी सबसे बडी चन्दकुँवारि नामक पुत्रीका उसके साथ विवाह करनेके लिये श्रीगुरुजीसे स्वीकार करनेकी प्रार्थना करी । इधर दयारामकी स्त्री जो कि, अपने पतिके विचारसे सर्वथा अनभिज्ञ थी उसने घरमें गुरुहरिरायकी माताके साथ अपनी दूसरी कृष्णकुँवारि नामक पुत्रीका विवाह गुरुहारिरायके साथ करवाना मंजूरकरवाया । और दयारामके पुत्र रामचन्द्रनेभी अपने मातापिताके विचारसे सर्वथा अनभिज्ञ होकर अपनी तीसरी भगनी प्रेमकुँवारिका विवाह श्रीगुरुहरिरायजीके साथ करनेके लिये ठानके श्रीगुरुहरिगोविंदजीको निवेदन किया । बाकी घरमें बैठा दयारामका पिता इन सबके विचारोंसे अपरिचित था उसने पीछेसे लिख भेजा कि,सबसे छोटी रामकुँवारि पुत्रीकी सगाई गुरुहरिगोविन्दजीके पौत्रसे करे आना। दैवात् यह चारों संकल्प एकही दिन प्रसिद्ध हुये । परस्पर मिलान होनेसे सभीका एकही लक्ष्य निकला । परन्तु कोईभी अपने विचारको अपूर्ण यान्यून जानकर पीछे उससे पाउंन धरा चाहे इस लिये चारोंही पुत्रीका विवाह एकही वरके साथ कियागया । दूसरा यहभी कारण है कि, पुराने समयके लोग अपने दृढ संकल्प होते थे । जो संकल्प जहाँ होजाय उसका रद्द करना मानो जमीन आसमानका उलटना समझते थे । इसलियेभी चारोंही शिष्टोंने अपने सिद्ध संकल्प रक्खे । पुराने लोग पुत्रीको एकसे नामांकित करके फिर दूसरेसे

विवाह करना एक व्यभिचार जैसा दोष समझा करते हैं । इसलिये अपने २ संकल्पको किसीनेभी अनुचित नहीं जाना और विवाह करदिया । आषाढ मिति १० संवत् १६९७ विक्रमीमें सबका एकही दिन विवाह करदिया । और क्षत्रिय राजपूतोंके रीति रवाजके अनुसार इन चारोंके साथ चार दासीभी चली आई उसके थोडेही दिन पीछे श्रीगुरुहरिगोविन्दजीका परमप्रिय सेवक विधिचन्दभी भाद्रमिति ३ संवत् १६९७ विक्रमीमें अपने पुत्र लालचन्दको श्रीगुरुजीके चरणोंमें छोडकर आप परलोकमें प्रयाण करगया । उनही दिनोंमें श्रीगुरुजीने अपने बावक नामक करवावीके गुजरजानेसे उसके पुत्र अमीराको उसके स्थानपर बैठाकर गाने बजानेका हुकम दिया था । और उससे समय २ पर शूरवीरोंके युद्ध जंगकी बारें लडाईयेंही सुना करते थे । संवत् १६९९ विक्रमीमें राजा ताराचन्द जो कि, इनका मानसिक प्रेमी था उसने इनको कसबा आनन्दपुर साखोवाल इत्यादि इलाका माफी-नामेमें लिखके देदिया था । इसी इलाकेको पीछेसे श्रीगुरु तेगबहादुर नवम गुरुने बहुत प्रफुल्लित किया था । राजा ताराचन्द श्रीगुरु-हरिगोविन्दजीकी सेवामें तन मन धनसे हरवक्त हाजिरही रहा करता था श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने जब अपनी आयुके बहुत थोडेही दिन शेष समझे तो हरतरहसे योग्य विचारकर अपने स्थानापन्न गुरुगादीका अधिकारी अपने पौत्र गुरुहरिरायजीको नियत करदिया । और आश्विन मिति १३ संवत् १७०१ विक्रमीमें तथा संवत् १७०४ नानक-शाहीमें बाबा बूढाजीके पुत्र भाई भानाजीको बुलाकर उनके हाथसे गुरुगादीकी रीति रस्मभी पूर्ण रूपसे सम्पूर्ण कर छोडी । और आप स्वयं यावत् सांसारिक व्यवहारोंसे पृथक् होगये । उसके पश्चात् थोडेही दिन पीछे अर्थात् चैत्र मिति १५ संवत् १७०१ विक्र-मीमें श्रीगुरुहरिगोविन्दसाहिबजी ४८ वर्ष ९ मास ४ दिनकी यावत् आयुको भोगकर तथा ३७ वर्ष १० मास १ दिन गुरुगादीपर वि-राजकर अनेक जीवोंका अनेक तरहसे उद्धार करके इस आगमयार्या

संसारका परित्याग करके स्वात्मस्वरूप परमधाममें जाय विराजे । इनका शरीर छूटतेही एकदम संसारपर अन्धकारसा छागया । मैदान जंग शून्य सा होगया यावत् शूरवीर बहादुरोंके एकबारही चित्त टूटगये । माता भारत भूमिनेअपने अपूर्व वीरपुत्रके शोकसे एकदम अपना स्वरूप पलट डाला । सारे देशमें घर २ हाहाकार मचगया बालक या वृद्ध मूर्ख या पंडित स्त्री या पुरुष कोईभी ऐसा न होगा जो कि, श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके इस संसारमें न रहनेसे न रोया हो । अनेक सूरवीर पुरुषोंने श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके प्रेममें स्वयं आत्मघात करलिया । जो सुनता उसी समयही स्तब्ध होजाता जब श्रीगुरुहरिगोविन्दजीकी चिताको अग्नि दई गई । उस कालमें राजा रामप्रताप जो कि,बादशाही मुजरम होकर जयसिलमेरके किलेसे सपरिवार भागकर गुरुजीके पास कुछ दिनसे रक्षापानेके लिये आन टिका था श्रीगुरुहरिगोविन्दजीकी प्रज्वलित चितामें कुदके साथही श्रीगुरुजीकी चितामें विश्रान्त हुआ । इसी तरह औरभी बहुतसे लोगोंने श्रीगुरुजीके वियोगसे प्राण त्याग किये । परन्तु उस समय श्रीगुरुहीररायजीने बहुतही लोगोंको आश्वासन धैर्य्य तथा अनेक तरहका सहारा दिया। श्रीगुरुहरिगोविन्दजीका समाधि देहरा, शहर कीर्तपुरमें सरदार भूपसिंह रोपडवालेका बनवाया हुआ बहुत उत्तम विद्यमान है । वह देहरा वहाँपर पाताल पुरीके नामसे प्रख्यात है । कोई जागीर इस मकानके नामपर सरकारकी तरफसे नहीं है । परन्तु पूजा बहुत चढती है जिससे उस स्थानमें निवास करनेवाले पुजारीलोगोंका निर्वाह उत्तम रीतिसे चलाजाता है ।

इतित्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

ॐ

अथैकात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

श्रीगुरुहरिराय साहिबजीकी पादशाही ॥ ७ ॥

श्रीगुरुहरिरायजीका जन्म माघ शुक्ल २ संवत् १६८६ विक्रमीमें आदित्यवार सवाप्रहर रात्रि व्यतीत होनेके समय शहर करतारपुरमें शाहजहाँ बादशाहके अधिकारमें बाबा गुरुदत्तजीके घरों माता निहालकुँवरिके गर्भसे हुआ है । इनका प्राकृत स्वभाव बालपनहीमें ऐस स्वच्छ पवित्र तथा शान्त स्वरूप था कि, जिसको देखके अनेक लोग प्रथमही कहने लगगये थे । कि, गुरुगादीका अधिकारी अवश्य यही होगा । बहुत छोटेपनहीसे यह अपने दादा श्रीगुरुहरिगोविन्दजीकी हाजिरीमें रहाकरता है । और प्राकृत लडकोंकी तरह खेलना कूदना या चंचल होना इनके स्वाभाविकहीन था । किन्तु बाल्यावस्थाहीमें भारी २ भरी सभामें अपने दादाजीके पास किनारे शान्त होकर पद्मासन मारकर बैठे रहते । बिना बुलाये किसीके साथ कदापि न बोलते जब कोई बुलाता तो बहुत प्रमित शब्दोंमें उत्तर कहके फिर चुपरहते । खान पान विषयकी तृप्ति तो मानो इनकी अनेक जन्मकी सम्पादन करी हुई थी कोईभी ऐसा खाद्य पदार्थ न था जो कि इनको बचपनमें भी चित्तको लुब्ध करसके । यदि कदाचित् कुछ अच्छा पदार्थ दादाजीकी तरफसे या घरसे माताजीकी तरफसे दियाभी जाता तो उसको स्वयं कभी नहीं खाते किन्तु बाहिर लाकर अपनी आयुके लडकोंमें बांट देते । इत्यादि अनेक तरहके विलक्षण सद्गुणोंको देखकर श्रीगुरुहरिगोविन्दजीभी इनके साथ बहुतही प्रेम रखते । आषाढ मास संवत् १६९७ विक्रमीमें अनूप शहर निवासी दयाराम क्षत्रियकी चारों पुत्रियोंसे इनका पूर्वोक्त कारणसे विवाहभी होगया । और वैशाख मिति

७ संवत् १७०१ विक्रमीमें १४ वर्ष १० मास २४ दिनकी आयुमें आपको दादाजीकी परमभक्तिसे गुरुगादीका अधिकार मिला श्रीगुरु, हरिरायजीका स्वभाव बहुतही कृपालु तथा शरणवत्सल था । परमेश्वरके प्रेममें, भजनमें, कीर्तनमें ऐसे अनुरक्त होते थे कि नेत्रोंसे जल नहीं ठहरा करता था । इसीलिये युद्ध जंगादि राजसी कार्य्योंको विशेष पसन्द नहीं करते थे । किन्तु प्रतिक्षण महाशक्तिमय परमात्माहीके ध्यानमें दिन रात्रिको पूर्ण करदिया करते थे । बडा छोटा निर्धन धनी मूर्ख पण्डित सभीके साथ समानही रूपसे वर्ताव किया करते कदापि किसीके चित्तको दुःखित नहीं किया चाहते । हानि तो शत्रुकी भी नहीं किया चाहते थे । एक दिनका वृत्तान्त है कि श्रीगुरुहरिरायजी अकस्मात् एक वाटिकाका सैर करनेको गये। तो वहाँ एक जातिका पुष्प जो कि,उस समयमें अष्टोत्तरशत कलियाके नामसे प्रसिद्ध था । आपके जामेंके साथ अडके स्वयं टूटपडा । तो वहीं आपने खडे होकर उस पुष्पका शाखासे वियोगका बहुतही शोक किया और अपनेको इसका अनिष्टकारक जानकर आगेके लिये सदा जामा उठाकर चलनेका अभ्यास डाला । श्रीगुरुहरिरायजी शुभाचार प्रशंसी सद्गुण पक्षपाति तथा उचित वक्ता भी ऐसे थे कि जिसका उदाहरण मिलना कठिन है । एकबारका वृत्तान्त है कि।शाहरूम हिन्दोस्थानके सैरको आया तो दिल्लीसे पीछे लौटता हुआ श्रीगुरुहरिरायजीकी प्रख्याति सुनकर इनके दर्शन करनेको भी चलागया । कुछ भेंट पूजा चढाकर वार्तालाप करने लगा तो बादशाहने पूछा कि आप मेरेको यह बतला दीजिये कि हजरत ईसा हजरत मूसा । या हजरत मुहम्मद इत्यादि पैगम्बर लोगोंमेंसे परमेश्वरके दरबारमें किसका अधिक प्रवेश है । और उस दरबारसे इस जीवको कौन विमुक्त करा सकता है इत्यादि श्रीगुरुहरिरायजीने कहा कि, इस जीवकी कल्याणका होना इसके शुभाचरणोंपर निर्भर है । सिवाय अपने शुभाचरणोंके इस जीवका कोईभी कल्याण करनेको समर्थ नहीं है । यावत् पीर पैगम्बर

वली औलिये ऋषि मुनि सिद्ध ये अवतार सभी अपने २ कर्तव्योंके जुवाब देनेवाले हैं। जितने ऐसे २ महापुरुष लोग हुये हैं या आगे होंगे सभी अपने २ कर्तव्योंका नतीजा उठाते रहे हैं। और उठाते रहेंगे। जब वे लोग (खुद) आपही हिसाबसे खाली नहीं हैं तो दूसरोंको हिसाबसे विना छुडानेकी उनकी क्या ताकत है। हजरत मुहम्मद साहिबकी माता जब मरनेके समय लाचार पडी तो उसने अपने पुत्रसे कहा कि, बेटा मेरेको खुदाके हिसाबसे वरी कराकर बहिश्त दिलाना। उसके जुवाबमें हजरत मुहम्मद साहिबने भी खास अपनी माताको कहा था कि, हे मातः! 'दोजख या बहिश्त तुझको तेरे ऐमाल दिलावेंगे'। मैं कुछ नहीं करसक्ता प्रत्युत मेरी सहायतासे दोजख या बहिश्तका ख्याल करनाही ईमानके विपरीत है। इसलिये जो लोग अपने गुरु पीर पैगम्बरोंके भरोसेपर अपने शुभाचरणोंको छोडदेते हैं तथा परमेश्वरपरायण नहीं होते वे लोग कदापि कल्याणके भागी न होंगे। शाहरूमने इस जुवाबको सुनकर श्रीगुरुहरिरायजीकी बहुतही प्रशंसा करी। और श्रीगुरुजीके इसी उचित उत्तरको प्रशंसापूर्वक अपने सफरनामेमें लिखकर प्रकाशित किया। उनही दिनोंमें शाहजहाँ बादशाहके चारों शाहजादोंमें बादशाही गादीके लिये आपसमें ऐसी चल रही थी कि, एक दूसरेका रक्तका प्यासा बन रहा था शाहजादा औरंगजेब बहुतही चालाकथा यह अपने बडे भाई दाराशकोहके मार देनेमें बहुत प्रयत्न शील था। इसने सुना कि, सिंहकी मूछके बाल खानेसे मनुष्य बीमार होकर मरजाता है। इसने अपने पाचक बावरचीके साथ मिलकर बडे भाई दाराशकोहको शेरकी मूछके बाल खानेमें मिलाकर खिलवा दिये। जिससे वह थोडेही दिनोंमें बहुतही बीमार होगया। बादशाहने बहुतसे वैद्य हकीम लोगोंको दिखलाया। कई एक दाना लोगोंने बीमारीका निदान जानलिया। परन्तु औषधीके लिये सभी विचार मुग्ध थे। वैद्य लोगोंने कहा कि, यदि कहींसे दश तोलाकी पीतवर्णकी एक हरीतकी. तथा चार तोलाका एक लवंग मिले तो

शाहजादा अरुग्ण होसक्ता है । बादशाहने बहुतही अन्वेषण कराई परन्तु वैसी हरीतकी या वैसा लवंग जैसा कि, वैद्य लोग चाहते थे मिलना कठिन हुआ । परन्तु किसी पुरुषने बादशाहको कहा कि, इन दोनों वस्तुओंका श्रीगुरुहरिरायजीके औषधालयमें होनेका सम्भव है । बादशाहने उसी समय वजीरखानवजीरको बुलाकर श्रीगुरुहरिरायजीके पास औषधीके लिये जानेकी आज्ञाकरी । वजीरखान बादशाहकी आज्ञासे कीर्त्तिपुरमें श्रीगुरुहरिरायजीके पास दवाई लेनेको आया । उसी समयमें औरंगजेबनेभी श्रीगुरुहरिरायजीके पास अपना मनुष्य भेजा कि, आपके पास औषधी हो भी तो देना मत । अन्यथा आप मेरे नुकसान करनेवाले ठहरेंगे । श्रीगुरुहरिरायजीने दोनों तरफकी बातचीत सुन लई । वजीरखानने शाहजादोंके परस्पर रागद्वेषका सभी हाल श्रीगुरुजीको सुनादिया । श्रीगुरुजीने कहा कि, हमको किसीके रागद्वेषसे वास्ता नहीं है । जहाँतक बनपडे सबका भला करनेकी अभिलाषा है । ऐसा कह कर अपने औषधालयसे एक हरीतकी दश तोला वजनकी तथा एक लवंग चारतोला वजनका निकलवाकर दोनों चैत्रमिति ८ संवत् १७०५ विक्रमीमें वजीरखान वजीरके हवाले किये ऐसी २ चार हरीतकी तथा चार पाँच लवंग साधु किसी देशके पर्वतसे श्रीगुरुहरिरायजीकी सेवामें तोफा भेटकी तरह थोडे दिन पूर्व लाया था । जिनको लेकर वजीरखान दिल्लीमें गया तो वैद्य लोग देखके प्रसन्न हुये और शाहजादे दारोशकोहकी बीमारीभी उससे दूर होगई उसके पीछे कार्तिक मास संवत् १७०७ विक्रमीमें शाहजादा दारोशकोह खुद लाहौरको जाता हुआ श्रीगुरुहरिरायजीके दर्शन करनेके लिये तथा औषधीके उपकारके कृतज्ञ होनेके लिये मार्गमें शहर कीर्त्तिपुरमें गया और अनेक तरहकी भेट पुजा तरह २ के तोफा पदार्थ श्रीगुरुहरिरायजीकी नियाज नजरमें रक्खे । और उसके पश्चात् श्रीगुरुजीके लंगरके लिये शाहजादाने श्रीगुरुहरिरायजीको कुछ जागीर माफी देना चाहा । जिसके विषयमें

श्रीगुरुहीररायजीने सर्वथा इनकार किया । प्रत्युत ऐसे कहा कि, गुरुजीके खुलासे तथा अपरिमित लंगरको किसी जागीर माफी आदिक पाबन्द करके परिमित करडालना अच्छा नहीं है । दारोशकोहने जागीर माफी देनेके लिये बहुतभी कहा परन्तु श्रीगुरुहरिरायजीने नहीं माना । दारोशकोह श्रीगुरुजीके दर्शन भेंटसे बहुतही प्रसन्न हुआ । और उसी समयमें श्रीगुरुहरिरायजीकी प्रशंसासे कुछ कविताभी दारोशकोहने करी थी । जब वह श्रीगुरुजीसे चलकर लाहौर पहुंचा तो उसके पीछे संवत् १७०८ विक्रमीके प्रारम्भहीमें रियाश्त हिन्दूर तथा कहलूरके राजे श्रीगुरुहरिरायजीके दर्शनके लिये आये । परन्तु उन दोनोंहीने मार्गमें यह सम्मति करी थी कि, यदि आज हमारी इच्छाके अनुसार हमको श्रीगुरुजी खानेको देवेंगे तो हम उनके शिष्य होजायंगे अकस्मात् दोनोंका चित्त कडाह प्रसाद (हलुआ) परही स्थिर हुआ । उधर श्रीगुरुजीके लंगरमें भी उस दिन दैवात् केवल कडाह प्रसादहीकी विशेषता थी । दोनों राजाओंके मनोरथ पूर्ण हुये । दोनों श्रीगुरुहरिरायजीके शिष्य हुये । श्रीगुरुजीने उनको सदुपदेश देकर तृप्त किया । पश्चात् कीर्त्तपुरसे चलकर शहर जालन्धर प्रान्तमें लहली नामक ग्रामसे होते हुये तथा और भी मार्ग प्राप्त ग्रामोंके शिष्योंको अपने सदुपदेशसे कल्याण मार्गको बताते हुये शहर कर्तारपुरके बाहिर जहां पर वर्तमानमें एक गुरुस्थान टालीसाहिबके नामसे प्रख्यात है जाय विराजे । और वहांपर अपने ज्येष्ठ भ्राता धीरमलसे मिलकर कुछ दिन वहां निवास किया । उसके पश्चात् वहांसे चलकर मार्ग प्राप्त अनेक ग्रामोंमें निवास कर अपने सदुपदेशोंसे शिष्यलोगोंको कृतार्थ करते हुये दरिया शतद्रुसे पार होकर कसबा इरोलीमें जाय विराजे । इस स्थानके लोगोंने श्रीगुरुजीकी बहुतही तनमन धनसे सेवा बजाई । बहुत दृढ निश्चयसे सेवा करते रहे । और बहुत प्रार्थनाकर कर श्रीगुरुहरिरायजीको आठ मासतक अपने ग्रामहीमें इस स्थानके लोगोंने रक्खा । जबतक श्रीगुरुजी वहां विराजे उतने दिन वह ग्राम मानो बैकुंठ प्रतिम

होगया । भजन स्मरण कथा कीर्तन सत्सङ्ग विचार प्रतिदिन प्रतिक्षण होता रहा । अन्नक्षेत्र लङ्गरभी हरवक्त प्रचलित रहा । देश देशान्त- रोंके अनेक शिष्यलोग वहाँही दर्शनको आये सदुपदेशोंको श्रवणकर कृतार्थ हुये । फिर वहाँपर श्रीगुरुहरिरायजी संवत् १७१० विक्रमीमें अपनी दादी माता दामोदरीजीके समाधि देहरा तथा एक उत्तम कूप को निर्माण कराकर पीछे मालवादेशके शिष्यलोगोंकी प्रार्थनासे गहल- मोगा इत्यादि ग्रामोंमें जाय विराजे वहाँके शिष्यलोगोंमें सदुपदेशका प्रचार करके पीछे संवत् १७११ विक्रमीमें वेद बदाली नामक ग्राममें जाय मुकाम किया । वहाँपर फूल राजवंशके मोहन काला कर्मचन्द सन्तु इत्यादिवृद्ध पूर्वजलोग श्रीगुरुहरिरायजीके पास आनकर दीन तोसे प्रार्थना करने लगे । कि, हे दीनबन्धो ! कोडा भूलर तथा धाडी वाल इत्यादि कौमोंके आपके शिष्यलोग हम लोगोंको बहुत सताया करते हैं जिससे हम लोग एक तरहकी विपत्तिसे प्रतिक्षण पीडित रहते हैं । हमारी प्राथर्ना तो आपहीके चरणोंतक बस है । क्योंकि हमलोग केवल आपहीके चरणोंके दास हैं शिवाय आपकी पूर्ण सहायताके हमलोगों- का इस देशमें रहना सर्वदा असम्भव है । श्रीगुरुजीने इनकी दीनभा- वकी प्रार्थना श्रवणकर विरोधी जातिके जयता पराना इत्यादि प्रमुख २ मनुष्योंको बुलाकर इन लोगोंके साथ परस्पर विरोध न रखनेके लिये बहुत कुछ कहा परन्तु विरोधी पक्षवालोंने श्रीगुरुजीकी कही भी एक न मानी । किन्तु यह जुवाब दिया, कि. महाराज ! जब इन लोगों- को कहींपर कूपादि बनवानेकी आज्ञा दीजाती है । तो थोडेदिन पीछे यह लोग उस स्थानके मालिकही बन जाते हैं श्रीगुरुजीने फिर भी परस्पर मेलके लिये उन लोगोंको बहुत उपदेश किया परन्तु उनके हृदयमें न उतरा । जिसपर असन्तुष्टसे होकर श्रीगुरुहरिरायजीने कहा कि,परमेश्वर निर्बलोंका सहायक होता है यदि तुम लोग इनके साथ सम्मति नहीं रक्खोगे किन्तु इनको सताया करोगे तो कदाचित् तुमहीं लोगोंको इनके अधीन होना पडेगा । श्रीगुरुजीके मुखसे ऐसे

वचनको सुनकरभी उन लोगोंने कुछ विचार परस्पर मिलापका न किया। जिसपर श्रीगुरुजीने निर्बल पक्षके मोहन काला इत्यादि लोगोंको कहा कि, तुम लोग इनकी समीपता छोड दो। यहाँसे चले जावो। आज चलते २ जंगलमें जहाँ तुम लोगोंलो सायंकाल होजावे वहाँही अपना झण्डा गाडकर ग्राम बसा लेना। और कूपवापी आदि सभी बनवाने प्रारम्भ कर देना। यदि वहांपरभी यह लोग तुम लोगोंको सतावेंगे तो हम तुम लोगोंकी मदद् करेंगे। वे निर्बल पक्षके लोग श्रीगुरुजीकी आज्ञापातेही उसीसमय अपना सभी सामान बाँध लाद्कर चलदिये। और वर्तमानमें जहाँपर महाराज नामक कसबा बस रहा है जब वहाँ पहुँचे तो सूर्य्यास्त होगया। इसलिये उन्होंने श्रीगुरुहरिरायजीकी आज्ञा अनुसार वहाँपर अपना डेरा जमाकर उस स्थानको आबाद् कर लिया।इसी समाचारको विरोधी पक्षके लोगोंने सुनकर इनपर फिर आक्रमण किया। परन्तु ऐसे समयपर श्रीगुरुहरिरायजीने अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार निर्बल पक्षकी सहायता करी। जिससे प्रबल पक्षवाले उनपर प्रबल न होसके। प्रत्युत जयता पराना इत्यादि प्रमुख लोगोंका उस आक्रमणमें काल भी होगया। उसी समय महाराज नामक ग्राम भी वहाँपर निष्प्रत्यूह बसगया और एक कूप भी बडाभारी तैयार होगया उस कूपको वहाँके निवासी लोग अबतक भी श्रीगुरुहरिरायजीका कूप करके बोलते हैं।इस ऊपर कही जयता पराना की लडाईमें एक कर्मचन्द नामक चौधरी भी निर्बल पक्षवालोंका शहीद् होगया था। और उसके फूल तथा सन्दली नामक दो पुत्र बहुत छोटे २ निराश्रित रह गये थे। इसलिये उसके भाई कालाने अपने दोनों भतीजोंको कन्धेपर उठाकर श्रीगुरुहरिरायजीके चरणामे ला रक्खा। और श्रीगुरुजीके दरबारसे कुछ कृपाकटाक्षका अभिलाषी हुआ। जब कालाने दोनों बच्चोंको श्रीगुरुजीके चरणोंमें समारोपण किया तो उस समय बालक फूलने उठकर अपने चचाके शिक्षणानुसार श्रीगुरुजीके सामने खडा होकर अपने पेटको ढोलकी तरह-

पर बजाया । जिससे श्रीगुरुजीको बालकने यह सूचन किया कि, मैं भूखा हूं । श्रीगुरुजीने उसके चचा कालासे पूछा कि, यह लडका पेट क्यों बजाता है। कालाने कहा सच्चे पादशाह यह लडका भूखा है।इसलिये आपके दरबारसे कुछ खानेको माँगता है श्रीगुरुजीने उसीवक्त बच्चेको कुछ खानेके लिये मिठाई दई । और प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया कि यह बच्चा बडा होकर बडा प्रतापशील होगा दरिया शतद्रुसे लेकर यमुनाके मध्य प्रान्तकी भूमिपर इसका वंस परंपराद्वारा बहुत दिनतक अधिकार होगा । इत्यादि श्रीगुरुहरिरायजीके आशीर्वाद वचनोंको सुनकर काला बहुत प्रसन्न होकर घरमें गया । और अपनी स्त्रीके पास श्रीगुरुजीके बच्चोंपर प्रसन्न होकर वरप्रदान करनेकी वार्ता सुनाने लगा उसकी स्त्रीने कहा कि, मैंने अपने पुत्रोंको श्रीगुरुजीसे क्या दिलवाया । क्या जब यह लोग प्रतापशील होंगे तो तुम्हारे पुत्र इनकी गुलामी करा करेंगे। अपनी स्त्रीके कहनेसे फिर दूसरी वार काला भक्त अपने पुत्रोंको भी लेकर गया । और श्रीगुरुजीसे अपनी स्त्रीका कहा भी सुनाया । श्रीगुरुहरिरायजीने फिर कालाके पुत्रोंको भी आशीर्वाद दिया कि, यह लोगभी उन लोगोंके स्वाधीन नहीं होंगे किन्तु स्वतंत्र जागीरदार होंगे । श्रीगुरुहरिरायजीके अमोघ वचनोंका फल अबतकभी प्रत्यक्ष देखनेमें आता है । उसी कालाकी औलाद (वंश) के लोहड गढिये गमटीवाले सरदार लोग अबतक अपनी उत्तम दशामें जागीरें माफी खाते चले आते हैं । और कालाके भतीजे जिसने श्रीगुरुजीके आगे प्रथम पेट बजाया था । उस कुलकी वंशके महाराजा पटियाला महाराजा नाभा तथा महाराजाजीन्द यह तीन राज्य चले आते हैं । इन तीनों रियास्तोंकी दरिया शतद्रु तथा यमुनाके बीच २ की भूमि है । और इन तीनों रियास्तोंको राजगान फूलके नामसे पुकारा जाता है । उन्ही दिनोंमें एक भाई भक्तुके पुत्र भारी गोरा नामकने श्रीगुरुहरिरायजीसे चमत्कारक जीता नामक सेवकको कुछ अनुचित गाली प्रदान किया । और आगेभी कई

वार किया करता था। वह उसके अनुचित आचरणको देख सुनकर श्रीगुरुजी उस भाई गोरापर बहुतही असंतुष्ट हुये। और उसके विषयमें श्रीगुरुजीने कुछ क्लिष्ट वचनभी उच्चारण किये। कहा कि भाई गोरा तू फाँसीकी सजाके लायक है। श्रीगुरुजीके क्रोधपूरित वचन सुनकर भाई गोरा श्रीगुरुजीसे क्षमा माँगनेका अभिलाषी हुआ। परन्तु श्रीगुरुजीने कहा कि, हमारेको मुख मत दिखाना। इसलिये वह श्रीगुरुजीके प्रतिदिन पीछे २ जाता। और उनके उतारेके खेमेसे तीन कोशपर पीछे अपना डेरा लगा देता श्रीगुरुजी देश मालवासे करतारपुरको जाते हुये मार्गमें जब कसबा माछीवाडाके पास पँहुंचे। तो श्रीगुरुजी तो सबसे आगे २ चले जाते थे। और उनका खजाना माल जनानी डोलियें असबाब नौकर चाकर सेवक सब पीछे धीरे २ चले जाते थे। जिनपर मुहम्मद यार बेग सरदारने जो कि, कुछ शाही फौजको लाहौरसे दिल्लीको लिये जाता था लुटानेका हमला करदिया। परन्तु उसी समय पीछेसे अपने सवारोंके समेत भाई गोराने मिलकर उस लुटेरी शाही फौजके साथ ऐसा मुकाबिला किया। कि, उनके दाँत खट्टे कर दिये। और वे लुटेरे श्रीगुरुजीका कुछ भी न लूट सके। इसी वार्ताको श्रीगुरुजीने आगे मुकामपर जाकर माता-जीके मुखसे सुना कि, आज गुरुजीके माल खजानाके लिये भाई गोराने बहुतही बहादुरी दिखलाई है। श्रीगुरुजीने प्रसन्न होकर भाई गोराको अपने पास बुलाया। पिछले अपराध क्षमा किये। और आगेके लिये उसको मालवादेशकी शिष्यी पारितोषिकमें दई। उन्हीं दिनोंमें संवत् १७१३ विक्रमीमें जब औरङ्गजेब बादशाहने अपने पिता शाहजहाँको शहर आगराके किलेमें कयद कर दिया है। तब अपने बडेभाई दाराशकोहके प्राण लेनेके लिये भी अनेक उपाय करने लगा। तो वह उसके सामने अपनेको निर्बल जान कर अफगा-नस्थानको भाग निकला। और दरिया व्यासासे पार होकर श्रीगुरु-हरिरायजीकी शरणमें आन प्राप्त हुआ। ग्यारहसौ अशरफी तथा

और अच्छे २ वस्त्र भूषणादि तोफा पदार्थ भेंटमें धरकर श्रीगुरुजीके आशीर्वादका अभिलाषी हुआ। परन्तु श्रीगुरुजीने अभीतक उसको कुछभी जवाब न दिया था कि, बादशाही फौज उसके पकडनेके लिये। उसके शिरपर आन खडी हुई। जिसको देखकर शाहजादा दाराशकोहके प्राण शोख होगये। और श्रीगुरुजीके चरणोंमें अरज करने लगा कि, यदि आप मिहरबानी करके मेरेलिये इस फौजको किसी तरह एक दिनभर यहाँ पर रोक रक्खे। तो मैं आज लाहौर पहुँच जाउं। श्रीगुरुजीने उसकालमें उसकी प्रार्थनाको स्वीकार किया। श्रीगुरुजीने अपनी सेनाको तथा कुछ शिष्य समाजको उस समय बादशाही फौजके मुकाबिलेमें जानेका हुक्म दिया। श्रीगुरुजीकी सेनाने दरियाय व्यासासे पार उतरती हुई बादशाही सेनाको ऐसा रोका कि, वह दूसरे पार न उतरने पाई। किन्तु पीछे दिल्लीहीको लौटगई। उधर उसी समय दाराशकोह लाहौर पहुँचकर अफगानस्थानको भाग गया। और श्रीगुरुहरिरायजी गोयन्दवालसे चलकर खण्डूर साहिब तरन तारन इत्यादि पवित्र स्थलोंमें होते हुये दीपावलीके उत्सवपर श्रीअमृतसरमें चले गये। और वहाँपर कुछ दिन निवास करके दीपावलीके मेलेके ...मास होन पीछे फिर गोयन्दवालमें चले आये। कुछ दिन वहाँ निवासकरके वहाँसे नूरमहल हकीमपुर पलाही इत्यादि ग्रामोंमें निवासकर सदुपदेशका प्रचार करते हुये अपने मुख्य निवासस्थान शहर कीर्त्तपुरमें आन विराजे। उधर औरंगजेबने तख्तपर बैठतेही ऐसा अत्याचार करना प्रारम्भ किया कि, हिन्दुओंको तलवारके जोरसे बलात् दीन इसलामको स्वीकार कराने लगा। उसने तख्तपर बैठतेही ग्रामोंके ग्राम तथा नगरोंके नगर मुसलमान बना डाले। जो आगेसे चूंभी करे उसको उसीवक्त कतल करनेका हुक्म था। श्रीगुरुहरिराय साहिबजीभी उस समयमें पंजाबदेशके प्रथम श्रेणीके पूज्य प्रतिष्ठित थे। इनके मुसलमान होजानेसे सारे पंजाब वहींके हो जानेकी सम्भा-

बना थी । इसी आशयसे औरंगजेबने इनको दिल्लीमें बुला भेजा । परन्तु बुलानेका कारण यह प्रसिद्ध किया कि, आपने शाहजादा दाराशकोहकी मदद करी है । इस लिये आप शाही कसूरवार हैं । जिसकी जुवाब देही करनेके लिये श्रीगुरुहारिरायजी आप तो न गये । परन्तु अपने बडे पुत्र रामराय संज्ञकको अपना प्रतिनिधि बनाकर दिल्लीमें औरंगजेबके पास भेज दिया । और श्रीगुरुजीने चलने लगे तब अपने पुत्रको भी यह शिक्षा दई कि, यदि तुम अपने पूर्वजोंके धर्ममार्गपर दृढ रहोगे तो हम तुम्हारी सभी तरहसे सहायता करेंगे । पिताका वचन सुनकर रामरायने कहा कि, बादशाह तो करामात माँगेगा । या मुसलमान बनावेगा । श्रीगुरुहरिरायजीने कहा कि, यदि तुम अपने धर्मपर दृढ रहोगे तो जो चाहोगे सो होगा । परन्तु धर्मकी तीक्ष्णधारसे किञ्चित् भी किनारे होकर तुम कुछ भी न करसकोगे । रामरायजीने दिल्लीमें जाकर बादशाह औरंगजेबको अनेक तरहकी सैकडों विचित्र करामातें दिखलाई हैं । जिनका पूर्ण रूपसे खुलासा वृत्तान्त गुरुबिलासादि बृहत् इतिहास ग्रन्थोंमें वर्णित हैं । जिनको देखकर औरङ्गजेबने रामरायजीकोही सच्चा फकीर तथा वली करके माना है और बडी प्रतिष्ठा पूर्वक बहुत दिनतक अपने पास दिल्लीमें रक्खा है । शेषमें ऐसेही एक दिन औरङ्गजेबने स्वाभाविक रामरायजीसे पूछा कि, गुरुनानककी बाणीमें लिखा है–कि "मिट्टी मुसलमानकी पेडे पई घुमिआर । घड भांडे ईंटा किया जलती करे पुकार" अर्थात् मुसलमान लोगोंकी कबरस्तानकी स्निग्ध चिकनी मृत्तिका कुम्भकार कुलालादि लोगोंके हाथमें आकर ईंट वर्तनादि रूपको प्राप्त हुई जलाई तो अवश्य जाती हैं । और यदि कयामततक मुरदे कबरोंहीमें पडे रहते हैं तो उनकी मिट्टी ईंट वर्तन रूपको प्राप्त हुई आँवेंमें पाक जलन कालमें भी अवश्य पुकार करती होंगी । भाव यह कि, जलाया तो इसका शरीर अवश्य किसीन किसी तरह जाताही है । फिर पीछे तुरकने सडके दुर्गन्धित होनेसे प्रथम मृत्युकालहीमें जलाना लाभदायक तथा उप-

कारक है। इसपर रामरायजीने कहा कि, श्रीगुरुनानकजीकी बाणीका ऐसा पाठ नहीं है। जैसा कि, आपने उच्चारण किया है । बादशाहने कहा कि, मैंने तो बहुत लोगोंके मुखसे ऐसाही सुना है । तथा पुस्तकोंमें भी ऐसाही सर्वत्र लिखा है । रामरायजीने उत्तर दिया कि, पुस्तकोंमें लेखक प्रमादसे भूल चली आती है। उसीको जैसे कहा तैसा शिष्यलोग याद करलेते हैं । बादशाहने कहा तौ असली पाठ कैसा है। रामरायजीने कहा कि, 'मट्टी बेईमानकी' शेष पूर्ववत् औरंगजेबन रामरायजीकी इस कल्पनाको सुनकर बहुतही प्रसन्न हुआ । परन्तु गुरुनानकजीकी बाणीके पाठ पलटके राजाके प्रसन्न करणात्मक रामरायजीकी धूर्ततोका वृत्तान्त श्रीगुरुहरिरायजीके पास भी पहुँच गया। जिसको सुनकर श्रीगुरुहरिरायजी बहुतही असन्तुष्ट हुये। और अपने ज्येष्ठपुत्र रामरायजीको कह भेजा कि, अब हमको यहाँ आकर मुख मत दिखलाना। और अपने शिष्यलोगोंमें भी कहदिया कि, जो कोई रामरायको मानेगा वह हमारा शिष्य न होगा।क्यों कि उसने सत्यको छिपाकर केवल बादशाहके प्रसन्न करनेके लिये मिथ्या आचरण किया है। रामरायभी अपने पिताका असन्तुष्ट होना सुनताही दिल्लीसे कीर्त्तपुरमें आया। और पिताजीसे भूलक्षमा प्रार्थनाके लिये बहुतही प्रयत्न किया। परन्तु श्रीगुरुहरिरायजीने उसको अपने सन्मुखतक होनेकी भी आज्ञा न दई शेषमें हारकर रामरायजी लाहौरमें चले गये। और वहाँहीं बादशाहकी मेल मुलाकातसे और भी राजदरबारके लोगोंमें परिचित होनेलगे। कुछ काल पीछे औरङ्गजेबसे फिर मुलाकात हुई। तो रामरायजीने बादशाहको अपने पिताके असन्तुष्ट होनेके विषयसे अपना निराश्रितपना सूचन किया। जिसपर बादशाहने कहा कि, आपको पिताकी कौन बहुत दरकार है । आप जिस प्रान्तमें रहना पसन्द करें उसी प्रान्तमें मैं आपको कुछ भूमि माफी जागीर दे देता हूं । खुदाको यादकर आप अपना जीवन बसर करें उसी समय रामरायजीने देहरादूनके नीचेकी भूमि जहाँपर अब

रामरायजीका देहरा है बादशाहसे माफीमें लाभकरी और अपना निवासस्थान भी वहाँही बनाया इधर श्रीगुरुहरिरायजीने अपनी आयुका शेषभाग अति अल्प जानकर अपने स्थानपर गुरुगादीका उत्तराधिकारी अपने छोटे पुत्र श्रीहरिकृष्णजीको जिनकी आयु अभी केवल पाँचही वर्षकी थी। नियत किया। और आप ३१ वर्षकी आयुमें १७ वर्ष ५ मास ८ दिनतक गुरुगादीपर विराजकर संवत् १७१९ विक्रमीमें कार्तिक शुक्ल ९ आदित्यवार षट्घटिका दिन शेषरहे स्वात्मस्वरूप परम धाममें विराजे। समाधि देहरा आपका शहर कीर्त्तिपुर पातालपुरीमें सुन्दर मजबूत मन्दिर अबतक विद्यमान है।

इत्येकात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

अथ द्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥

ॐ

श्रीगुरुहरिकृष्ण साहिबजी पादशाही ॥ ८ ॥

श्रीगुरुहरिकृष्ण साहिबजीका जन्म संवत् १७१३ विक्रमीमें श्रावण मिति ९ वदि १० को चारघटिका दिन उदय हुये शहर कीर्त्तिपुरमें श्रीगुरुहरिराय साहिबजीके घरों माता कृष्णकुँवरिजीके गर्भसे हुआ है और कार्तिक मिति १० संवत् १७१८ विक्रमीमें पांचवर्ष तीन मास एक दिनकी आयुमें आप अपने पिताके स्थानपर गुरुगादीके अधिकारी बने हैं। श्रीगुरुहरिकृष्णजी यद्यपि अभी छोटी अवस्थाहीके थे तथापि ऐसे होनेपर भी इनका तेज प्रभाव स्वरूप अपने पूर्वजोंसे किसी तरहसे कुछ कम न था। इनकी उस समयकी बातें सुन सुनकर पुरुषके चित्तमें एक आश्चर्यसा प्रतीत होता था इनके गुरुगादीपर विराजनेके पीछे अनेक मत मतान्तरोंके लोगोंने भिन्न २ अपने शिर निकाले थे। परन्तु इनके प्रतापके आगे किसीकी चलती न थी। अनेक फिर्कोंके लोग आश्चर्य होकर देखनेको आते थे कि,

पांच वर्षका बालक महाप्रख्यात गुरुगादीपर बैठकर कैसे कार व्यवहारको चलाता है । प्रतिक्षण इनके पास सहस्रों मनुष्योंका संघट्ट बना रहता था । जो जब जिस तरहका पुरुष आता था । उसका उसीतरहका स्वागत किया करते थे । इनके पास जाकर भी कोई खाली हाथ नहीं आता था । कुछ न कुछ यथायोग्य सभीको बांटा करते थे । भिक्षार्थी पुरुषको तो ऐसा निहाल करदेते थे कि, फिर उसको आयुभरमें माँगनेकी अपेक्षा न रहती थी । तात्पर्य्य जो जिस मनोरथसे पहुँचा श्रीगुरुहरिकृष्णजीके दरबारसे कभी खाली न आया । सिवाय इसके जो कुछ अपने पवित्र मुखकमलसे उच्चारण करते वह वचन मानों शिष्यगणके उभय लोक निर्वाहक होते । आशीर्वाद वाक्य सिद्धि तो मानो इनकी अप्रतिहत दासी हुई थी । तात्पर्य अनेक लोकोत्तर सद्गुण समुदायसे इन्होंने अपने पितृचरणोंके पीछे गुरुगादीके कार व्यवहारमें किसी तरहसेभी कुछ न्यूनताका कारण उद्बुद्ध होने नहीं दिया । इसी वार्ताको इनके बडेभ्राता रामरायजीने भी श्रवण किया । तब तो बहुतही उदास बेचयन होगया । उसको पूर्ण आशा थी कि, गुरुगादीके प्रबन्धकी त्रुटिपर मैं अवश्य सत्कारपूर्वक बुलाया जाऊँगा । परन्तु यह आशा उसकी मोघासा हुई । और गुरुगादीकी लालसाने उसके अगुरुभूत मनमें गौरवपूर्वक निवास किया । उसी समय औरङ्गजेब बादशाहके पास शहर दिल्लीमें पहुँचा । और जाकर आप गुरुगादीलेनेके लिये बादशाहको यह समझाया कि, मेरे पिताजीके पीछे गुरुगादीपर मेरा हरिकृष्णनामक छोटा भाई बिठलाया गया था । परन्तु वह केवल पाँचवर्षकी आयुका होनेके कारण कार व्यवहार दीन दुनियाँमें अभी बहुतही अनभिज्ञ है । इसीलिये आजकल उसको स्वार्थी खुशामदीलोग सच्चा पादशाह कह २ कर खूब लूट रहे हैं । और हमारी सातपुस्त (वंश परम्परा) की एकत्र करी हुई दौलत तथा अच्छे २ तोफा पदार्थोंको स्वार्थीलोग बरबाद करके अपना स्वार्थ

साध रहे हैं। दूसरा यह भी कि, वह बहुत छोटी आयुका होनेके कारण गुरुगादीके लायक भी नहीं है। हजूर उसको यहाँ बुलाकर उसका इम्तिहान (परीक्षण) करें हम दोनों भाइयोंमेंसे जो योग्य हो वह गुरुगादीका मालिक किया जावे। बादशाह औरंगजेबने रामरायजीकी ऊपर कही वार्ताको सुनकर उसी समय जयपुराधीश राजाजयसिंहजीको बुलाकर कीर्त्तपुरसे श्रीगुरुहरिकृष्णजीके लानेके वास्ते हुक्म दिया। राजा जयसिंहने अपने प्रतिष्ठित दो मुसाहिबोंको अपनी तरफसे श्रीगुरुहरिकृष्णजीकी सेवामें कीर्त्तपुर भेजा। मुसाहिबोंने भेंट पूजा चढा कर प्रार्थना करी कि, आपको हमारा महाराजा साहिब दर्शनके लिये दिल्लीमें स्मरण करता है श्रीगुरुहरिकृष्णजीने सभीकार व्यवहार कारिन्दा मुसद्दी लोगोंके सपुर्द करके दिल्लीकी तरफ तैयारी कर दई। जब श्रीगुरुहरिकृष्णजी कीर्त्तपुरसे रवाना हुये। तो हजार शिष्यलोग आपके साथ दिल्लीजानेको तैयार हुये। परन्तु दूसेर दिनकी मैंजलपर जाकर श्रीगुरुजीने एक लम्बायमान रेखा खैंच दई। और सभी शिष्यलोगोंको कहा कि, सिवाय हमारी आज्ञाके इस रेखाका कोई उल्लंघन मत करे। किन्तु पीछे चलेजावे। इसलिये सभीलोग वहाँही ठहर गये। और श्रीगुरुहरिकृष्णजी अपने परिमित नौकर चाकर सेवकोंको साथ लेकर अपनी माताके सहित कुरुक्षेत्रमें आन पहुँचे। अनेक ब्राह्मण पण्डित तथा और अच्छे २ लोग आपके दर्शनको आये। श्रीगुरुजीनेभी यथायोग्य सबको दान सन्मान देकर सन्तुष्ट किया। यहाँपरही एक लालचन्द्रनामक पाण्डितने श्रीगुरुजीसे कहा कि, आप अपनेको 'हरिकृष्ण' कहाते हो तथा सब लोगोंके गुरु बने हुये हो कुछ लिखना पढना भी जानते हो? श्रीगुरुजीने कहा कि, पण्डितजी लिखना पढना तो संसारकाकार है। पण्डितने कहा आप भी तो हरिकृष्ण कहाते हो कृष्णकी बनाई हुई गीताके किसी श्लोकका अर्थ तो सुनादो। श्रीगुरुजीने कहा कि, गीताके श्लोकोंके अर्थ तो हमारे सभी शिष्यलोग जाना करते हैं आप जिसको

कहें वही सुनावे । तब पण्डितने भगवद्गीताका एक श्लोक बोला और श्रीगुरुजीके एक कहारकी तरफ दृष्टि करके कहने लगा कि, इसको कहिये कि, इसका अर्थ सुनावें । श्रीगुरुजीने उसी कहारकी तरफ पूर्ण दृष्टिसे देखकर कहा कि, इस श्लोकका व्याख्यान करो । कहार-ने ऐसा उत्तम व्याख्यान करके सुनाया कि, जिसको सुनके पण्डित लालचन्द्र बहुतही प्रसन्न हुआ । और कहने लगा कि, आप सच्चे गुरु हैं । फिर कुरुक्षेत्रसे चलकर श्रीगुरुजी पानीपत कर्नाल होते हुये शहर दिल्लीके समीप पहुंचे । तो राजा जयसिंह सवाई आपका आगमन सुनकर स्वयं आगेसे स्वागत करनेको आया । और बहुत आदर सन्मानसे लेजाकर श्रीगुरुजीको अपने मकानहीमें ठहराया । और दूसरे दिन श्रीगुरुजीका दर्शन करनेके लिये रानीलोगोंने श्रीगुरुजीको अन्तःपुरमें बुलाया । श्रीगुरुजी अन्तःपुरमें गये । उधर पटरानीने मनमें यह विचार रक्खा था कि, यदि यह गुरु सच्चा होगा तो मेरेको स्वयं खोजके मेरीगादी (अङ्क) में आन बैठेगा । अनेक रानियाँ तथा दासियोंके बीच पटरानी अपना साधारणसा वेश बनाकर नीचे भूमिहीपर बैठ गई । और अन्य सभीको यथायोग्य उत्तम वस्त्र भूषण पहराकर सुन्दर आसनों पर बिठलाया । और श्रीगुरुजीके कोई पृथक् बैठनेका स्थान भी नियत न किया । यथायोग्य स्थानोंपर स्थिर होकर श्रीगुरुजीको बुलालिया । मोहनीमूर्ति श्रीगुरुहरिकृष्णजी अन्तःपुरमें निःशंक चले गये । और सब रानियोंके शिरपर छडी लगाकर यह नहीं यह नहीं कहते हुये जब पटरानी आयी तो उसकी गोदीमें बैठकर कहने लगे कि, यही पटरानी है । इस आश्चर्य्य चरित्रको देखकर अन्तःपुरकी सब स्त्रियाँ आश्चर्य्य होगईं । तथा श्रीगुरुजीके आगे अनेक तरहके भेंट पूजा धरके अपनी २ कामना प्रगट करने लगीं । श्रीगुरुजीके आशीर्वचनसे पटरानीके घर पुत्र हुआ जब श्रीगुरुजी अन्तःपुरमें विराजते थे उसी समय पीछेसे मुअजमशाह शाहजादा और भी दो चार

उमराउ लोगोंको साथलेकर दर्शनके लिये आया था परन्तु श्रीगुरुजीके स्थानपर न मिलनेके कारण पीछे फिरगया। जब श्रीगुरुहरिकृष्णजी दिल्लीमें गये हैं उन्हीं दिनोंमें वहाँपर विसूचिका (हैजा) की बीमारीका बहुतही जोर था । श्रीगुरुजी जिस बागमें उतरे हुये थे। उस बागके कूपका पानी बहुत स्वच्छ था । श्रीगुरुजीने आज्ञाकरी कि, जो कोई इस हमारे कूपका पानी पीवेगा उसको प्रचलित रोग नहीं सतावेगा । दैवात् ऐसाही हुआ। सहस्रोंलोग उस कूपका पानी पीकर शरीराविष्ट भी प्रचलित रोगमें विमुक्त होकर हृष्ट पुष्ट होगये। इसीसे श्रीगुरुजीकी प्रख्याति दिल्ली शहरके घर २ में फैल गई। और हरवक्त लोग दर्शनके लिये आने जाने लगे। बादशाहने भी दो चार उमरावोंको साथ देकर अपने शाहजादेको फिर श्रीगुरुजीके दर्शनको भेजा। और अपने दर्शन करनेके लिये भी अर्जकर भेजी । जिसको श्रीगुरुजीने शाहीदरबारमें न जाना मुनासिब समझकर अस्वीकार किया। कुछ मासतक वहाँही निवास किया। जब सातवर्षकी आयु हुई तो संवत् १७२१ विक्रमीमें चैत्र शुक्ल १४ के दिन सैकडों रुपयोंका कडाह प्रसाद कराकर बाँटनेके पश्चात् भाई गुरुदत्तजीको एक नालियर तथा पाँच पैसे देकर कहा कि, बाबा बकालामें हैं। अर्थात् नवम गुरुबकालानामक ग्राममें मिलेगा। इतना मात्र कहकर आप चेचककी बीमारीके मिससे इस आगमादायी संसारसे किनारे होकर परमधाम विराजे। इनका समाधि देहरा शहर दिल्लीसे चारकोश दक्षिणमें यमुना नदीके तीरपर दृढ इमारत रूपसे विद्यमान है। अनेक शिष्यलोग वहाँपर दर्शनके लिये भी जाते आते हैं।

इति द्वात्रिंशोऽध्याय ॥ २ ॥

अथ त्रयास्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥

ॐ

श्रीगुरुतेगबहादुर साहिबजी पादशाही ॥ ९ ॥

तेगबहादुरजीका जन्म मार्गशीर्ष संवत् १६७८ विक्रमीमें आदित्यवार अर्द्धरात्रिके समय शहर श्रीअमृतसरमें माता नानकीजीके गर्भसे हुआ है। यह नवम गुरुः छठें गुरुहरिगोविन्दजीके सबसे छोटे परम गम्भीर तथा विचारशील बुद्धिमान पुत्र हैं। दैवी सम्पत्तिका ऐसा एक भी सद्गुण न होगा जो कि, इनके शरीरके साथही न प्रादुर्भूत हुआ हो। आश्विन मिति १५ संवत् १६८६ विक्रमीमें नववर्षकी आयुमें शहर करतारपुरमें लालचन्द्र क्षत्रियकी पुत्री गूजरी बाईजीसे इनका विवाह हुआ। इनका अपने पिता श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके साथ बहुतही प्रेम था। युद्धजंग जैसे कठिन अवसरोंपर भी अपने पिताकी सेवामें साथही रहा करते थे। जिस समय श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने गुरुगादीका तिलक इनके बडे भ्राता गुरुदत्तजीके पुत्र गुरुहरिरायजीको दिया तो इनकी माताने श्रीगुरुहरिगोविन्दजीसे प्रार्थना करी कि, महाराज! मेरे पुत्रके लिये भी आपके मुखकमलसे किसी मंगलका आशीर्वचन रूप आमोदका प्रकाश होना चाहिये। जिसपर श्रीगुरुहरिगोविन्दजीने प्रसन्न होकर एक अपने हस्तका रूमाल तथा एक अपने गलेकी मोतियोंकी माला यह दो वस्तु इनकी माताको प्रदान करी और दो चार अपने शस्त्र भी दिये। उसके पश्चात् यह उपदेश किया कि, हरएक वस्तु अपने २ समयके अनुसार वृद्धिह्रासको प्राप्त होती है। जब जिस वस्तुके वर्द्धनकी समय आती है तब उसके वर्द्धनकी सामग्री आपसे आप चारोंतरफसे आन एकत्र होती है। ऐसेही जब तुम्हारे पुत्रके अभ्युदयका समय आवेगा आपसे आप सब साधन समुदित होंगे। और यह भी एक भारी नामदार परमेश्वरका

प्यारा तथा धर्मप्रचारक प्रख्यात गुरु होगा इसलिये वर्तमानमें तुम धैर्य्य रक्खो। और जब समय आवे तो इन हमारी वस्तुओंको अपने पुत्रको दे देना इत्यादि मंगलकर सदुपदेशको श्रवणकर माता नानकीजीको परम सन्तोष हुआ। और श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके परमधाम प्रयाणके पश्चात् अपने पुत्रको साथ लेकर एक बकाले नामक ग्राममें जाय बसी। कुछ कालके पीछे जब श्रीगुरुहरिकृष्णजीने परम धाम प्रयाण समयमें अपनी गुरुगादीका अधिकारी बकाले नामक ग्राममें बताया। तो इस वार्ताके सुनतेही धीरमल्ल जैसे अनेक सोढी क्षत्रिय लोग गुरुगादीके अधिकारी बननेके लिये बकाला ग्राममें जाय बसे। और अपनी २ शक्तिके अनुसार सबने अपने घरमें वैभव प्रसारको दिखाया। इसी तरहपर घर घरमें गुरुगादीके अधिकारी बाईस २२ मनुष्य पृथक् २ बन बैठे। परन्तु जिनके लिये श्रीगुरुहरिकृष्णजीका वचन था वह श्रीगुरुतेगबहादुरजी अपने प्राचीन सादे चालचलनसे सदा एकान्त सेवन किया करते थे। किसीसेभी अधिक बोलचाल व्यवहार नहीं रखते थे। किन्तु प्रतिक्षण परमात्माके भजन स्मरण कीर्तनमें संलग्न रहते थे। कदाचित् कोई सहस्रोंमें एक मनुष्य गुरुका शिष्य इनको भी जानता था कि, यह भी गुरुकी वंशके हैं। अन्यथा चारोंतरफ देश देशान्तरकी भेंट पूजा दूसरे जो कि, कृत्रिम २२ गुरु बन बैठे थे वही उडालिया करते थे। गुरुनानकजीकी गादीके नामसे कोई किसीको मानता था तथा कोई किसीको। परन्तु किसी एक व्यक्तिपर गुरुपनेकी आस्था सारे देशके लोगोंमें किसीकेभी मनमें नहीं रही थी। कुछ समयतक इसी तरहपर यावत् शिष्यलण्डलको गुरुगादीके पूरे अधिकारीका निश्चय न हुआ। तो उन्हीं दिनोंमें एक जिहलम जिलेके टाण्डेनामक ग्राममें रहनेवाला लुवाणाजातिका मक्खनशाह नामक सौदागर अपनी सौदागरीके उपलाभका दशमांश लेकर बकाला नामक ग्राममें श्रीगुरुजीके दर्शनको आया। परन्तु वह सौदागर बकालामें आनकर घर २ से भिन्न २ गुरु बने बैठे देखकर बहुतही हैरान

हुआ। और विचारा कि, कौनके आगे यह भेंट पूजा रक्खी जाय तथा कौनके आगे न रक्खी जाय। शेषमें उसके मनमें यह सूझी कि, जो सच्चा गुरु होगा वह कृपाकर स्वयं मेरेसे मांग लेगा। अन्यथा सन्देह अवस्थामें मैं किसी एकको या सभीको बांटकर अपनी भेंट पूजा देनी उचित नहीं समझता। ऐसे विचारकर सबके आगे एक २ दो २ अशरफियाँ भेंट रखकर नमस्कार करता चला गया। सभी गुरुगादीके कृत्रिम अधिकारीलोगोंने सौदागर मक्खन-शाहके साथ वहुतही शिष्टाचारसे वर्ताव किया परन्तु सौदागरसे उचित पूजा किसीने भी न मांगी। इसलिये सौदागर बहुतही आश्चर्य हुआ। और मनमें कहने लगा कि, इस समय सच्चा गुरु कोई नहीं है। सौदागरने फिर लोगोंसे पूछा कि, क्या कोई और भी गुरुकी वंशका पुरुष इस ग्राममें निवास करता है ? तब किसीने उसको कहा कि, हाँ एक और भी यहाँपर मस्त दिवानासा पुरुष तेगानामक गुरुके वंशका रहता है। परन्तु वह विक्षिप्तोंकी तरह एक अन्धेरे कोठेमें पडा रहता है इसलिये उसकी यहांपर कुछ मानता पूजा नहीं होती। मक्खनशाह सौदागर वहां भी पहुँचा। और एक अशरफी भेंट रखकर नमस्कार किया जिसपर श्रीगुरुतेगबहादुरजीने कहा कि, भाई गुरुकी मनौतकी तुम्हारे पास पाँचसौ ५०० अशरफी हैं तुम एक क्यों देते हो ?। श्रीगुरुजीके ऐसे वचननको सुनता ही वह सौदागर चरणोंमें गिर पडा। और उसी समय पाँचसौ अशरफियाँ श्रीगुरुतेगबहादुरजीके चरणोंमें अर्पण करी। उसके पश्चात् प्रार्थना करी कि, दीनबन्धो ! आपने अपने आपको छिपाकर क्यों रक्खा है। अनेक शिष्यलोग आपकी अन्वेषण (खोज) में हैरान् परेशान हो रहे हैं। आप कृपा करके अपनेको प्रकट करें तो अनेक शिष्यवर्गका कल्याण होवे। तथा अनाश्रित शिष्यमण्डल पाखण्डी दम्भी लोगभी कृत्रिम गुरुओंसे त्राण देश पावें। और उसकी लूट खसोटके अत्याचारसे बचे। तब श्रीगुरुजीने

सौदागरसे कहा कि, भाई यह हमको एक बडा भारी बोझा प्रतीत होता है। उसीसे डरते छिपकर पडे रहते हैं। श्रीगुरुजीके इस वचनको श्रवणकर सच्चे प्रेमी शिष्य सौदागर मक्खनशाहसे रहा न गया। उसी समय श्रीगुरुजीके मकानके ऊपर चढकर पुकार २ कर कहने लगा। कि, गुरुर्लब्धः गुरुर्लब्धा है इत्यादि अर्थात् गुरु मिलगया है। उसके उच्चस्वरके प्रेमपूरित शब्दको सुनतेही अनेक लोग आन एकत्र हुये। सौदागरने अपना सारा वृत्तान्त सब लोगोंको उच्चस्वरसे सुनाया। जिसको सुनतेही बडे २ प्रतिष्ठित शिष्यलोगोंने मिलकर वैशाख मिति ८ संवत् १७२१ विक्रमीमें यथायोग्य रीत्यनुसार श्रीगुरु तेगबहादुरजीको गुरुगादीका तिलक देकर अधिकारी बनाया। तबसे इन्हींको सबलोग अपना सच्चा गुरु मानने लगे। उसी समय इनकी माताने भी श्रीगुरुहरिगोविन्दजीका दिया रूमाल माला तथा कुछ शस्त्र इनको दे दिये। इनको गुरुगादीका अधिकारी हुआ सुनकर देश देशान्तरके सभी शिष्यलोग जो कि, इधर उधर भेंट पूजा देजाया करते थे प्रेमपूर्वक इनके चरणोंमें आने लगे। अनेक तरहकी भेंट पूजा चारोंओरसे आने लगी। कृत्रिम गुरु जो कि. धीरमल्ल जैसे अनेक सोढी अपने २ घर बने बैठे थे सच्चे गुरुके प्रगट होनेसे सबकी दुकानदारी ढीली पडगई। इसलिये उन लोगोंने बहुतही ईर्षा तथा अत्याचार करना प्रारम्भ किया। एक समय कईएकने मिलकर गुरु तेगबहादुरके घरपर आक्रमण करके सबमाल असबाब घरका लूट लिया। तथापि गुरुतेगबाहुरजी कुछ न बोले। एक समय एक सोढीने द्वेषसे इनको बन्दूकभी मारी परन्तु दैवात् गोली पाससे निकल गई इनको लगी नहीं। ऐसे २ अनेक तरहके अत्याचार इनपर कृत्रिम बाईस गुरुओंने करे परन्तु इन्होंने किसीकी तरफ दृष्टि उठाकर भी न देखा। किन्तु जो कुछ भेंट पूजा नगद जिन्स आवे हरवक्त लंगर चला करे। जो आवे खावे पीवे आराम करे। किसीसे बुरा भला कहनेकी कुछ आवश्यकता न थी। ऐसा होनेपर भी धीरमल्ल प्रभृति सोढीलोग

अपने चालोंसे बाज न आये । जिसको देखकर श्रीगुरुजीको प्रेमी शिष्यलोग भी लाचार होने लगे । यद्यपि श्रीगुरुजी किसीसे भी अपकारका बदला लिया नहीं चाहते । तथापि समर्थ शिष्य वर्गने धीरमल्ल जैसे सोढियों द्वारा अनेकवार अपने गुरुचरणोंका अपमान देखा । इस लिये उनसे रहा न गया। धीरमल्लको तथा और भी दो चार जो मुख्य २ द्वेषका मूल थे । सबको पकडकर खूब शिक्षा दई । शिष्यलोगोंने उनके घरवार लूट लिये । और उनको ऐसा मारा कि, वे सभी ग्राम छोडकर भाग गये । धीरमल्लभी भागकर करतारपुर जाय बसा । ऐसा होनेसे गुरुगादीका कुछ शान्तिपूर्वक निर्वाह होने लगा ऐसे श्रीगुरुतेगबहादुरजीने अत्याचारोंको सहन करते हुये भी कुछकाल बकालनामक ग्राममें निवास किया । फिर माघमास संवत् १७२१ विक्रमीमें श्रीगुरुजी बकालासे चलकर अपने प्रेमी शिष्यमण्डलके साथ श्रीअमृतसरजीमें आन विराजे । आगे अमृतसरके हरिमन्दिरके पुजारी लोगोंने सुना कि, गुरुनानकजीकी गुरुगादीका अधिकारी श्रीगुरुतेगबहादुर यहाँपर आया है । तो उन्होंने प्रथमही हरिमन्दिरके बाहरकी दर्शनी डेउढीका दरवाजा इस भयसे बन्दकर लिया कि यह कहीं हरिमन्दिरपर अपना अधिकार न जमाय बैठें । परन्तु श्रीगुरुतेगबहादुरजीको कदाचित् यह वार्ता स्मरण भी न थी । किन्तु वे, केवल श्रद्धा भक्ति तथा प्रेमपूर्वक हरिमन्दिर गुरुजीका दर्शनमात्र किया चाहते थे कुटिल पुजारी लोगोंने मिथ्या भ्रमसे दरवाजे बन्दकर लिये श्रीगुरुजीने बाहरके दरवाजेहीसे हरिमन्दिरको प्रणाम किया । और अमृतसर नामक सरोवरमें स्नान करके श्रीअकालबुंगासाहिबके पास एक बदरीके वृक्षके नीचे जो स्थल वर्तमानमें थलासाहिबके नामसे प्रख्यात है वहीं पर आन विराजे । और वहाँपर थोडी देरतक निवासकर अमृतसर निवासी पुजारी लोगोंको श्रीमुखसे कहा कि, यह लोग अमृतसरिये नहीं हैं किन्तु अन्दर सडिये हैं । अर्थात् इन लोगोंके अन्तः करण सदा राग द्वेषकी

अग्निसे जलते रहेंगे। इसलिये इनका कल्याण होना कठिन है। इस रीतिसे नवम गुरुके शापसे शापित हुये अमृतसरजीके पुजारीलोग अब तक भी वैसेही देखनेमें आते हैं आपसमें राग द्वेषकी अग्निमें सदाही जला करते हैं। वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी दो कोसपर अमृतसरके समीपही बल्ला नामक ग्राममें आन विराजे। परन्तु शहर अमृतसरमें घर घरमें ऐसी खबर पहुँच गई कि, श्रीगुरुजी यहाँसे नाराज (अप्रसन्न) होकर पीछे चले गये हैं। तो अमृतसर शहरका स्त्रीवेग यथाशक्ति तरह २ की भेंट पूजा लेकर श्रीगुरुजीकी सेवामें बल्ला नामक ग्राममें जाय हाजिर हुआ। और सबने बहुतही प्रार्थना करके अपनी भूल क्षमा करवाई। तथा सबने अपने २ कल्याण होनेकी इच्छा प्रगट करी। जिसपर श्रीगुरुजीने प्रसन्न होकर कहा कि, इस शहर अमृतसरकी माईलोगोंकी भक्ती प्रेम तथा उदारतासे कल्याण हुआ करेगा श्रीगुरुजीके बचनसे वर्तमानमें भी अमृतसरकी माइयोंमें परमेश्वरकी भक्ति साधु पुरुषोंकी सेवा भूखे नग्नको अन्न वस्त्रादि देनेका प्रचार इतना है कि; जिसको देखकर नूतन देशान्तरीय पुरुष तो आश्चर्य्यही होता है विशेष रूपसे यह चरित्र दीपावलीके मेलेके एक मास पूर्वसे प्रतिवर्ष देखनेमें आता है बल्ला नामक ग्राममें जहाँ श्रीगुरुजी बिराजे थे उसीस्थलमें माघ शुक्ल पूणमासीमें प्रतिवर्ष श्रीगुरुजीकी स्थितिका स्मारक एक बडा भारी मेला लगता है जिसमें शहर अमृतसरजीके यावत् स्त्री पुरुष बाल वृद्ध दर्शनको जाते हैं। वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी फिर बकालामें पहुँचे और वहाँसे अपने सम्बन्धिवर्गको साथ लेकर माता कृष्णा कुँवरिजीके बुलानेसे शहर कीर्त्तपुरके उपदेशसे मार्गके अनेक ग्रामोंमें अपने प्रेमी शिष्यलोगोंको सदुपदेशसे कृतार्थ करते हुये ज्येष्ठमास संवत् १७२२ विक्रमीमें कीर्त्तपुरमें आन विराजे यहाँपर मालवादेशके अनेक प्रेमी शिष्यलोग श्रीगुरुजीका आगमन श्रवणकर विविध भेंट पूजा लेकर दर्शनको आने लगे। प्रतिदिन सहस्रों मनुष्य आते तथा जाते एक दूसरेको देख सुनकर

कौन ऐसा मन्दभागी होगा जिसने जैसे कैसे भी श्रीगुरुजीका दर्शन न किया हो थोडेही दिनोंमें नकद तथा जिन्स इतनी आन एकत्र हुई कि जिसका किसीतरह वर्त्तनमें आना दुष्कर प्रतीत होने लगा गुरुके लंगर तथा खजानेमें ऐसी उन्नति पकडी कि कोई भी किसी तरहका अर्थी श्रीगुरुतेगबहादुरजीके पाससे खाली न जाता साधु ब्राह्मण भूखा नंगा जो कोई जैसी भावनासे आता। उसको उसी समय वह वस्तु मिलनेका हुक्म होता । वहाँके निवासी सूर्य्यमल्ल नामक सोढीकी सन्तानके राग द्वेषके कारण आषाढमास संवत् १७२२ विक्रमीमें दरिया शतद्रुके किनारेपर माक्षीवाल नामक ग्रामके समीप कुछ भूमि खरीदकर वहाँ निवास करनेकी इच्छा करी ।। सुन्दर नगर बाँधकर उसका नाम आनन्दपुर रक्खा और वहाँ रहकर उस नगरकी प्रतिदिन उन्नति करनेका प्रयत्न करने लगे । उधर धरिमल्ल सोढीने इनके प्रतापकी प्रतिदिन वृद्धि देखकर रामरायजीको उत्तेजितकर गुरुगादीका दावा बादशाही दरबारमें पेश कर दिया परन्तु बहुत कालतक कुछ सुनाई न हुई । जब इस समाचारको भाई गुरुबख्शसिंहके द्वारा श्रीगुरुतेगबहादुरजीने सुना तो कलहकी निवृत्तिके तात्पर्यसे मार्गशीर्ष मिति १९ संवत् १७२२ विक्रमीको तीर्थयात्राके मिशसे देश देशान्तरके निरीक्षणार्थ सकुटुम्ब प्रस्थान किया । और मालवा देशको शिष्यलोगोंकी प्रार्थनासे उस देशके ग्रामीणलोगोंको अपने पवित्र सदुपदेशसे कृतार्थ करते हुये तथा परमेश्वरकी भक्तिमें लगाते हुये पौष मिति १२ संवत्१७२२विक्रमीमें सेखा नामक ग्राममें पहुँचे । यहाँके निवासी जोन्दा गोत्रके चौधरी मलूकाने जो कि अपनी जाति मात्रके बाईस तेईस ग्राम शाहीदरबारसे इनाम माफीमें खाता था श्रीगुरुजीका किञ्चित् भी स्वागत आतिथ्य सत्कार न किया । प्रत्युत विपरीतभावसे वर्ताव करने लगा । शिष्यलोगोंने उसका सारा वृत्तान्त श्रीगुरुजीको निवेदन किया । जिस पर श्रीगुरुजीने श्रीमुखसे कहा कि जोन्दे अकलके अन्धे हैं इनका बाईय्या तेईय्या सब तेईय्या

तेहीय्या होनेवाला है अर्थात् इस जातिको व्यवहारकी बुद्धिभी नहीं है इस लिये इनकी जागीर माफी।रियास्त सब दूर होनेवाली प्रतीत होती है । दैवात् थोडेही काल पीछे वैसाही हुआ। वर्तमानमें उन बाईस तेईस ग्रामोंका कहीं नाम निशान भी नहीं है। फिर वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी छोटे२ अनेक ग्रामोंमें अपने सदुपदेशसे लोगाका सुबोध करते हुये भेकी नामक कसबेमें आन विराजे । यहाँके चाहल जातिके देशु नामक जाटने आपकी बहुतही तन मन धनसे सेवा करी । और पीछेसे प्रार्थना करने लगा कि, गुरुजी मेरेको यह पचादे मुसलमान लोगें तथ और भी कई एक।राजपूतलोग बहुत दुःख देते रहते हैं। श्रीगुरुजीने उसको अपना शिष्य बनाया। और अपने पाँच तीर दिये कहा कि, इन पाँचोंको सत्कारपूर्वक तुम अपने घरमें रक्खो। जबतक यह रहेगें तेरे शत्रु तेरेपर प्रबल न हो सकेंगे श्रीगुरुजीके वचनानुसार उस देशु भक्तने वैसेही किया। परन्तु उसकी स्त्री सुलतानकी सेवक थी उसने उसी दिन तीरोंको तोडके दो दो टुकडे करके श्रीगुरुजीके पास पीछे भेजदिये। और श्रीगुरुजीको उपालम्भ भी दिया कि, आपने मेरे पतिको विगाड दिया है। देशु भक्त स्त्रीजित था इस लिये श्रीगुरुजीके पास अपराध क्षमा करवाने भी नहीं आया। जिस पर श्रीगुरुजीने रुष्ट होकर श्रीमुखसे कहा कि, जैसे आप लोगोंने हमारेसे विमुख होकर हमारे तीर तोड डाले हैं। वैसेही तुम लोगोंकी हुकूमत तथा वंश-परम्पराका प्रवाह भी टूट जावेगा दैवात् थोडेही कालके पीछे वैसाही हुआ वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी तलवंडी गागा इत्यादि ग्रामोंमें होते हुये धमधाण नामक ग्राममें पहुँचे। यहाँपर एक मीहाँ नामक सेवक जो कि, बहुतकालसे आपके चरणोंमें निवास कर जलसेचनादि सेवा किया करता था। उसके जल छिडकनेसे प्रसन्न होकर एक उसको लम्बायमान योगियाना चोला दिया और एक लोह आहनी दई और उसके साथही माईकी उपाधिसे भूषित करके उस प्रान्तकी

मुसद्दी अर्थात् कारिन्दापना भी उसीको दिया । वर्तमानमें जो उदासीन साधुभी हाँ साहिब करके बोले जाते हैं । वे लोग इसी महापुरुषके अनुगामी हैं । फिर वहांसे चलकर श्रीगुरुजी कथल थानेशर इत्यादि शहरोंसे होते हुये करनाटकपुर नामक ग्राममें पहुंचे । यहां पर एक त्रिलोकदास नामक वैरागी वैष्णवसाधु जिसकी आयु उस समय डेढसो वर्षकी कही जाती थी आपके दर्शनका कई दिनसे बहुतही अभिलाषी था, जब उसने श्रीगुरुजीका अपने ग्राममें आगमन सुना बहुतही प्रेमसे श्रीगुरुजीके दर्शनको गया श्रीगुरुजीने भी उसको वृद्ध जानकर बहुतही सत्कार किया । श्रीगुरुजीका अमृतमय सदुपदेश उस वृद्धके हृदयमें ऐसा आविष्ट हुआ कि, वह अपने प्रान्तके सहस्रों शिष्योंके साथ श्रीगुरुजीका शिष्य बनगया और श्रीगुरुजीकी पादुका तथा एक पुस्तक उसने अपने पास पूजाके लिये रख लिया । वे दोनों वस्तु वहाँपर अबतक भी विद्यमान हैं । फिर वहाँसे चलकर श्रीगुरुतेगबहादुरजी शहर मथुरा आगरा इटावा इत्यादि नगरोंसे होते हुये प्रयागराजजीमें जाय विराजे । प्रयागजीमें कुछ दिन निवास किया । वहाँसे चलकर गंगाजीके तीर २ विन्ध्याचल मिरजापुरसे होते हुये श्रीकाशीजीमें जाय विराजे । वहाँ पर लक्षी चौतराके समीप जहाँ वर्तमानमें एक भारी गुरुस्थान गुरुकी संगतके नामसे विद्यमान है तहाँ निवास किया कुछ दिनतक वहाँ निवास करके वहाँसे श्रीगुरुजी सुसराम नामक ग्राममें चले गये । कुछदिन वहाँ निवास किया । वहाँके वणिक्लोग जो कि, वर्तमानमें गुरुके घरके परम सेवक हैं उनको अपने उपदेशसे कृतार्थ किया । और गुरुनानकजीके घरका सेवक बनाया वहाँसे गयाजी चले गये । गयाजीमें राजा जयसिंह जयपुराधीश जो कि, बादशाह औरंगजेबके हुकमसे आसामदेशपर चढाई करके आया था श्रीगुरुतेगबहादुरजीका गयाजीमें आगमन सुनकर बहुतही प्रसन्न हुआ । और कुछ नकद जिन्स भेंट पूजा लेकर दर्शन करनेको गया । राजा जयपुराधीश गुरुके घरके

प्रभावसे तो परिचितही था। और दूसरे ऐसे विकट स्थलमें चढाई करके जा रहा था कि,जहाँपर अनेक वार बादशाही सेनादलके बलका पोल खुल चुका था इसलिये जयपुराधीशने श्रीगुरुतेगबहादुरजीके आगे प्रार्थना करी कि, मेरा विजय आपके कृपाकटाक्षके अधीन है आप कृपा करें तो मेरे साथ चलें तो आपके दर्शनसे मेरेको बहुत संतोष होगा राजा जयसिंहने बहुतही आग्रह किया तो श्रीगुरुजीने उसके प्रेमके वशवर्ती होकर उसके साथ आसामदेशकी चढाईपर साथ चलना स्वीकार किया। श्रीगुरुजीने अपने स्याल कृपालको तथा और सम्बंधिवर्गको शहर पटनामें ठहराया और कुछ शिष्यवर्गको साथ लेकर राजा जयपुराधीशके साथ होलिये मुंगेर भागलपुर मालदह मुरशदाबाद इत्यादि शहरोंसे होते हुये ढाका शहरमें जाय विराजे। इस देशके श्रीगुरुजीके मुसद्दी कारभारीलोग श्रीगुरुजीका आगमन सुनकर भाई बुलाकी भाई नथूशाह इत्यादि अनेक प्रकारकी नकद जिन्स भेंट पूजा लेकर श्रीगुरुजीके चरणोंमें आन हाजिर हुये और अनेक शिष्यलोगोंको प्रेरणासाकरके बहुतसा रुपया श्रीगुरुजीकी भेंटमें कारभारी लोगोंने अर्पण करवाया। जिस स्थानेंम शहर ढाकामें श्रीगुरुतेगबहादुरजी विराजे थे। वहांपर उसी समयका एक पलँग (मंच) अबतक विराजमान है अनेक प्रेमी शिष्यलोग उसकी पूजा भी करते हैं। जब श्रीगुरुजीको साथ लेकर जयपुराधीश आसामदेशकी सरहदपर पहुँचा तो आसामदेशके राजा रामरायने जो कि, देवीका परमभक्त था अपने इष्ट दवतोंके आगे अपने विजयके लिये प्रार्थना करी। जिसपर उसको स्वप्नमें प्रत्युत्तर मिला कि, हे राजन् ! अबकी बार तेरा विजय होना कठिन है। क्योंकि अबकी बार तेरे प्रतिपक्षीके पक्षमें एक परमप्रसिद्ध पूज्य सिद्ध महापुरुष विराजमान है। इसलिये उसीके विजय होनेकी सम्भावना है। तथापि आसामके राजाने थोडी देरतक लडाई करके पश्चात् हार स्वीकार करी और स्वयं प्रथम श्रीगुरुतेगबहादुरजीकी सेवासे

हाजिर होकर अनेकप्रकारकी भेंट पूजासे इनकी पूजा करके पश्चात् इन्हींके द्वारा जयपुराधीश द्वितीय नाम राजा विष्णुसिंहजीके साथ मुलाकात करके बादशाही अधिकारको भी स्वीकार किया इस आसा मदेशपर आगे अनेक बार शाही लशकर चढ चढ आचुका था परन्तु आगे कदापि विजयलाभ न हुआ था । इसीलिये जयपुराधीशकोभी स्वकीय विजयकी आशा न थी । परन्तु बहुतही शीघ्र हुआ । इसलिये जयपुराधीशने अपने विजयका कारण केवल श्रीगुरुतेगबहादुर जीके चरण प्रतापहीको समझा । राजाने जितनी दौलत वहाँसे लूटमें लूटी उसमेंसे सातलाख रुपयाकी अशरफी स्वर्ण तथा बहुतसी कीमती जवाहिरातकी पेटी श्रीगुरुजीकी भेंट पूजामें दिया फिर थोडे दिन पीछे जब शहर पटनासे श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके उत्पन्न होनेकी खबर वहाँ पहुँची तो जयपुराधीशने उस सुसमाचारपर बहुतही धूमधामसे जलसा किया था उसी समय श्रीगुरुजीनेभी सहस्रों रुपय गरीबों अभ्यागतोंको बाँटे । उसी समयमें लशकर शाहीने भी मिलकर कुछ चन्दा एकट्ठा करके श्रीगुरुजीकी सेवामें भेंट करना चाहा। परन्तु श्रीगुरुजीने ऐसे समयपर लेनेसे इनकार किया और लशकरके सरदार लोगोंको सुनाकर कहा कि, जिसस्थलमें हम वर्तमानमें विराजे हैं । इसीस्थानपर किसी समयमें श्रीगुरुनानकजीभी पधारे थे । इस लिये यह भूमि बहुत पवित्र है । हमारी इच्छा है कि; आपलोग सभी मिलकर इसस्थानपर पाँच २ ढाल मट्टीकी डालो । जो यह स्थान यादगारके लिये जरा ऊंचा होजाय । श्रीगुरुजीकी आज्ञा पातेही सबने मट्टी भर भर लाना प्रारम्भ किया । एक दो घटिकाके अरसेमें शाहीलशकरने उसस्थानको ऐसा ऊंचा कर दिया कि, जैसे कोई पर्वतकी ढेरी होती है बहुत दूर २ से दृष्टि पडने लगा । श्रीगुरुजीने उसके ऊपर एक मकान तैयार करवाकर उसका नाम दमदम साहिब नियत किया । यह मकान भी ऐसा ऊंचा है कि, धोबियाबन्दरके पास दरिया ब्रह्मपुत्रके किनारेपरसे बहुतही दूर है तथापि देखनेमें आता है ।

कुछदिन ठहरकर जयपुराधीश राजा विष्णुसिंह तो आसामसे दिल्लीको चला आया । और श्रीगुरुजीको आसामदेशके राजाने प्रेमकरके कुछदिन अपने पास ठहरा लिया । आसामदेशाधिपतिके प्रेमसे श्रीगुरुजी कुछ दिन वहां ठहरे । राजाके घरमें सन्तान न थी । इसी तात्पर्य्यसे उसने श्रीगुरुजीको ठहराया भी था । परन्तु अभीतक प्रार्थना नहीं करी थी । केवल भक्तिभावसे सेवन पूजन किया करता था । एकदिन राजा श्रीगुरुजीके साथ शतरंजकी बाजी खेलता२हारकर हंसता २ लोट पडा । श्रीगुरुजीने प्रेमसे राजाके पेटपर अपना हस्त फेरा और आशीर्वाद दिया कि, तुम्हारे घरमें एक सुपुत्र होगा उसके पेटपर हमारे हाथका चिह्न होगा । दैवात् समय पाकर आसामदेशके राजाके घर पुत्र हुआ जिसके पेटपर गुरुजीके हस्तका चिह्न था । कुछदिन वहां निवास करके श्रीगुरुजी वहाँसे चलकर शहर कलकत्तासे होते हुये जगदीश उडीसा तथा बंगालेका सैर करते हुये ज्येष्ठमास संवत् १७२४ विक्रमीमें पीछे शहर पटनामें आन विराजे । यहाँपर अपने परमप्रतापी पुत्र श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीको देखकर बहुतही प्रसन्न हुये । बहुतसे अपने आश्रित पुरुषोंको पारितोषिक बाँटा । तथा गरीब गुरबा साधु अभ्यागतोंको यथारुचि अन्न वस्त्र प्रदान किया । तात्पर्य्य आसामदेशके महाराजाने श्रीगुरुजीके चलने समय जो कुछ भेंट पूजा दई थी । किसी विशेष वस्तुके सिवाय सभी श्रीगुरुजीने यथायोग्य बाँट दई । थोडेही दिनोंके पीछे श्रीगुरुजीके आशीर्वचनसे आसामदेशके महाराजा रामरायजीके घरमें भी एक सर्वांग सुन्दर तथा सर्व गुणसम्पन्न पुत्र पैदा हुआ । जिसकी खुशीमें उसने श्रीगुरुजीकी भेंट पूजामें फिर सहस्रों रुपया तथा अनेक तरहकी सुन्दर २ सैकडों विचित्र वस्तु रवाना करी । श्रीगुरुजीने एक मासपर्य्यन्त शहर पटनामें निवास किया । फिर वहाँसे चलकर काशी, अयोध्या, हरिद्वार, इत्यादि पवित्र स्थानोंमें निवास करते हुये चैत्र मिति १२ संवत् १७२५ विक्रमीमें शहर कीर्त्तपुर जो कि, अपना खास निवासस्थान था वहांपर

आन विराजे। श्रीगुरुजीके शुभागमनकी खबर सारे पंजाबदेशमें घर२ पहुँच गई । प्रतिदिन सहस्रों शिष्यलोग तरह २ की भेंट पूजा ले लेकर चारोंतरफसे आनेलगे । उसी वर्षमें श्रीगुरुजीने शहर आनन्दपुर जो कि, स्वयं बुनियाद डालके बसाया था उसमें भी कई एक मन्दिर मकान निवास करनेके लिये तैयार करवाये । और थोडेही दिनोंके पीछे अपने परमप्रिय पुत्र श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीको भी शहर पटनासे अपने पास बुला लिया । तथा इनके विद्वान् होनेके लिये भिन्न २ पाठक नियत करादिये । गुरुमुखी, फारसी तथा संस्कृतमें याथयोग्य अभ्यास करवाकर पश्चात् छोटेही पनमें शस्त्रविद्याका अभ्यास कराया। अनेक प्रकारसे अश्वारोहण करना बन्दूक बाणादिसे लक्षभेदन करना प्रत्येक शस्त्र अस्त्रका चलाना तो श्रीगुरुहरिगोविन्दसिंहजीने अपनी अति छोटी आयुहीमें ऐसा सीखलिया कि, मानो सिखलानेके प्रथमही सुशिक्षित थे अपनी अतिलघु अवस्थाहीमें शस्त्र अस्त्र विद्याके विचित्र प्रभावसे परम प्रतापी श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराज निरीक्षक नर नारियोंके समाजको समुग्धकर दिया करते थे । श्रीगुरुतेगबहादुरजीने अपने सुपुत्रको जब छोटीही आयुमें अनेकविद्या सम्पन्न देखा तो उनही दिनोंमें अपने हाथसे श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके विवाहका भार भी अपने शिरसे उतार दिया । अनेक प्रकारकी विद्यामें अभ्यास करना तथा विवाहित होना यह सब श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीका दशवर्षकी आयुके भीतरही हुआ है ।

इति त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥

अथ चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥

कारण इस शीघ्रताका यह था कि, उनहीं दिनोंमें औरंगजेब बादशाहने हिन्दूजातिको बलात्कारसे मुसलमान करना प्रचलित कर रक्खा था । ग्रामोंके ग्राम तथा नगरोंके नगर उसने तीक्ष्ण तलवारको दिखलाकर मुसलमान कर डाले थे । हिन्दूजातिकी चोटी तथा यज्ञोपवीत दोनों उतार कर प्रतिदिन सवामन जोखनेका

हुक्म उसने दिया था। उसमें भी काश्मीरदेश कुछ हिन्दूजातिका सभी प्रान्तोंसे अधिक भव्य तथा प्रतिष्ठित स्थान था जिस पर उसने सबसे प्रथम ऐसा अत्याचार मचाया था कि, वहाँके हिन्दूजातिके लोगोंको उस समय मरना जीना दोनों कठिन हो रहे थे। ऐसे विकट अवसरको देखकर श्रीगुरुतेगबहादुरजीने विचारा कि, यह सार्वजनक अत्याचारीके अत्याचारका चक्र कदापि हमारे शिरपर भी विना आये रहनेवाला नहीं है। इसलिये अवश्यकरणीय कार्य्यमें त्वरा ही करनी उचित है। श्रीगुरुतेगबहादुरजी अपने सुशिक्षित पुत्रके विवाहादिकार्य्यसे निवृत्त होकर मानो तैयारही बैठे थे। कि, काश्मीरदेशके भागे हुये सहस्रों ब्राह्मणोंका व्यूह श्रीगुरुतेगबहादुरजीके पास चला आया। सबने आनकर भिन्न २ रोय २ कर अपनी २ दशा सुनाई। किसीने कहा दीनबन्धो! मेरे भाईको जब बादशाही लोगोंने मुसलमान बनानेके लिये पकडा तो मैं देश छोडकर भागा। दूसरेने कहा हे प्रभो! मेरे पुत्रको पकडकर मुसलमान बनालिया था तो मैं भागा। तीसरेने कहा मेरे पिताके साथ ऐसेही हुआ। चौथेने कहा कि, मैंने तो अपने पडोसमें कोलाहल सुना तो केवल धोती लोटा लेकर भाग निकला। पाँचवेंने कहा मैं पकडा तो गयाथा परन्तु कुछ लालच देकर छूटकर भाग निकला। इत्यादि सबने भिन्न २ कारणोंको श्रीगुरुजीके आगे निवेदन किया। जिनको श्रवणकर श्रीगुरुतेगबहादुरजी स्वल्पकाल चुप रहे। फिर श्रीमुखसे उच्चारण किया कि, जो जैसा जहाँ हुआ भगवत्की इच्छा। परन्तु मेरेको ब्राह्मण देवताओंका वर्ग क्या चाहता है? तब उक्त ब्राह्मणोंमेसे एक शास्त्रीने हाथ जोडकर कहा कि, हे दीनबन्धो? आप जैसे महापुरुषोंसे सनातन पवित्र धर्मकी रक्षाके सिवाय और सांसारिक तुच्छ पदार्थोंको क्या चाहना है। इतिहास पुराणोंसे यह वार्ता निर्णीत है कि, जिस २ समयमें धर्मके विरोधिनिमित्तोंकी प्रबलता होती है उसी २ कालमें धर्मप्रचारक महापुरुषों द्वारा उनका निराकरण सुननेमें आता है। आपभी वर्तमानमें

धर्मके प्रचारक तथा हमारे लम्बायमान पवित्र देशके सुप्रतिष्ठित गुरु हैं । इसलिये हम लोगोंको परम आशा है कि, आप दत्तचित्त होकर परम प्राचीन हिन्दू धर्मका संरक्षण करेंगे । यद्यपि श्रीगुरुजी अपने चित्तमें भलीप्रकार जानते थे कि, यह स्वार्थपूरित ब्राह्मणजाति श्रीगुरु-नानकदेवजीके घरसे सदा स्वाभाविकही कुछ टेढी चला करती है । इस लिये ऐसे समयपरभी इनके सहायक होना उचित नहीं है । तथापि "महात्मानोऽनुगृह्णन्ति भजमानान् रिपूनपि" अर्थात् महात्मालोग शर-णागत प्राप्त शत्रुपरभी परम अनुग्रह करते हैं । इस नीति वचनके अनुसार इनको सहायक होना उचित जानकर तथा सनातन धर्मकी रक्षा केवल इनकाही कार्य्य नहीं किन्तु आर्य्य जातिमात्रका कार्य्य जानकर श्रीगुरुजीने सभी ब्राह्मणवर्गको सन्तोष दिया । और प्रतिज्ञा करी कि, मैं आपलोगोंके तन मन धनसे सहायक होऊँगा । मेरा शरीर रहे अथवा जाय परन्तु जहाँतक मेरेसे बन पडेगा मैं सनातन हिन्दू धर्मकी रक्षाके लिये प्रयत्न करूंगा और आपलोगोंको भी धैर्य्य तथा विश्वास रखना चाहिये कि, सिवाय सर्वान्तर्यामी परमात्माकी प्रबल इच्छाके हमारे सनातन धर्मके निर्मूल नाश करनेकी किसीकीभी सामर्थ्य नहीं है । इत्यादि श्रीगुरुजीके दृढप्रतिज्ञाके भावभरे वचनोंको श्रवणकर सभी ब्राह्मण लोग प्रसन्न हुये और जैयगुरुजीकी २ इत्यादि ध्वनिका उच्चारण करने लगे । श्रीगुरुजीने सीधा सामान दिलवाकर सभी ब्राह्मण वर्गकी खान पानादिसे शुश्रूषा करी । एक रात्रि निवासकर ब्राह्मणवर्गने श्रीगुरुजीसे प्रार्थना करी कि, हमलोगोंको क्या आज्ञा है श्रीगुरुजीने कहा कि, आपलोग ऐसेही दिल्लीमें चले जावें । वहाँ जाकर शाहीदरबारमें ऐसी पुकार करो कि, हम लोगोंको प्रत्येकको पकड २ कर मुसलमान बनानेके लिये सताया जाता है सो उचित नहीं । किन्तु हमारे देशमात्रके हिन्दूलोगोंके धर्म गुरु श्रीगुरुनानकजी-की गादीपर वर्तमानमें गुरुतेगबहादुर विराजमान हैं । हमारे देश भरके यावत् हिन्दूलोग उनके अनुयायी हैं । बादशाह सलामत प्रथम उन-

को दीन इसलाम कबूल करावें तो हमलोगोंको उनके पीछे आपसे आपही कबूल है। क्योंकि धर्मकी अदला बदली बहुत करके धर्म गुरुओंहीके अधीन रहती है। ब्राह्मणलोगोंने श्रीगुरुतेगबहादुरजीकी उचित सम्मतिको स्वीकार किया। और शीघ्र दिल्लीमें जाकर शाही-दरबारमें पूर्वोक्तरीतिसे पुकार करी। जिसकी सुनाई होतेही यह हुक्म हुआ कि, जो लोग दीन इसलामके प्रचारके लिये बाहर देशान्तरमें भेजे गये हैं। उन सबको फिर हाल पीछे बुला लिया जावे। और बादशाही हुक्मके अनुसार हिन्दू धर्मके गुरुलोगोंको पकड कर दीन इसलाम कबूल कराया जावे। सबसे प्रथम बादशाह औरंगजेबने श्री-गुरुतेगबहादुरजीको दिल्लीमें बुलवा भेजा। शाहीपरवानेको देखतेही श्रीगुरुजान विचारा कि, अब इस समय दिल्लीमें जाकर उस जालिम बादशाहके जुलमसे इस शरीरका बने रहना दुर्घट है। इसलिये सभी कार व्यवहार अपने पुत्र गुरुगोविन्दसिंहजीको यथायोग्य समझा बुझा-कर आषाढ मिति १३ संवत् १७३१ विक्रमीमें कुछ अपने शिष्य सवारलोग अपने साथ लेकर शहर आनन्दपुरसे दिल्लीको रवाना हुये मार्गमें नगर नगरमें ग्राम ग्राममें निवास करते हुये तथा अपने पवित्र सदुपेदशोंसे शिष्यलोगोंको कृतार्थ करते हुये किसी एक प्रेमी शिष्यके आकर्षणसे मथुरा होकर शहर आगरामें जाय विराजे। कुछदिन वहीं ठहर कर आगरा निवासी शिष्यलोगोंको अपने पवित्र उपदेशोंसे सचेत करके वहाँसे चलकर शहर दिल्लीमें आन विराजे। जब श्रीगु-रुजी दिल्लीमें पहुँचे तो आपने अपने साथ केवल पांच शिष्यमात्र रख लिये। और दूसरोंको इधर उधर समाचार लाने पहुँचानेके लिये रूपोश रूपसे दिल्लीमें रक्खा। जब बादशाह औरंगजेबने श्रीगुरुतेग-बहादुरजीका दिल्लीमें आगमन सुना तो उसी समय सहकारी पुरुषोंके समेत किसी स्थानमें नजरबन्दीका हुक्म दिया। जिसपर बादशाही मुलाजिमोंने श्रीगुरुजीको तथा इनके साथके दीवान मतीराम भाई गुरुदत्ता भाई अबदा। भाई चयना तथा भाई दयाला इन पाँच शि-

क्योंको कोतवालीके समीप एक मकानमें जहाँपर वर्तमानमें गुरुस्थान बना हुआ है नजरबन्द रक्खा । दूसरेदिन औरंगजेबने श्रीगुरुतेगबहादुरजीको शाहीदरबारमें बुलाकर कहा कि, यातो आप कुछ करामात दिखलावें अथवा दीन इसलाम कबूल करें अर्थात् मुसलमान बनजावें यदि आप कुछ करामात दिखावेंगे तो हम आपको साहिब करामात सच्चे फकीर जानकर छोड देंगे । और यदि आप करामात न दिखलावें किन्तु दीन इसलाम कबूल करें तो भी जो मरतबा बुलन्दीका आप चाहें मैं आपको देसक्ता हूँ । और यदि करामात भी दिखलावें तथा दीन इसलाम भी स्वीकार करें । तो कहनाही क्या है मैं भी आपका मुरीद बन जाऊं । और आपको दीन सलामकी सारी उमर तकका एक सच्चा पीर मशहूर करदूं। श्रीगुरुजीने बादशाहके सभी प्रश्नोंपर स्वल्पकाल विचार किया कि, इस जालिम जाहिल बेरहम बादशाहको यदि कदाचित् कुछ चमत्कार दिखला भी दिया जाय तो यह अपनी मन्द बुद्धिसे फकीरको चमत्कार दिखलाना परमेश्वरकी आज्ञाके प्रतिकूल है ऐसा कदापि नहीं समझेगा । किन्तु अपने जाहिलपनसे फकीरोंको करामाती जानकर घरके कुत्ते बिल्ली मरे भी फकीरोंसे जीवित करानेकी इच्छा करा करेगा । इस लिये ऐसे जाहिल जालिमको किसी एक चमत्कारका दिखलाना तो मानो जन्म भरका पाप गले बांधना है । ऐसे विचार कर श्रीगुरुजीने बादशाहको उत्तर दिया कि बादशाह सलामत करामातका दिखलाना तो परमेश्वरके साथ शरीकत करना है । इस लिये हम लोगोंमें परमेश्वरके साथ शरीकत करनेकी समर्थ नहीं है । किन्तु हमलोग उसके दास हैं । वह सर्वशक्तिमान् हमारा प्रभु है । सिवाय इसके शेष रहा दीन इसलामका स्वीकार करना उसका होना भी हमारेसे दुर्घट है । क्योंकि, दीन धर्म धारणका स्थान चित्त है । सो हमारे चित्तपर परम प्राचीन सनातन परमेश्वरीय धर्मने स्थान कर रक्खा है । इस लिये कृत्रिम आधुनिक धर्मोंको वहाँ जगह मिलनी कठिन है । और शेष रहा आपने जो किसी एक

उच्चपद प्रदानके लिये उदारता प्रकट करी सो यद्यपि आपकी योग्यताके आगे कुछ बडी बात नहीं आपको परमेश्वरने ऐसेही बनाया है कि, आप जिसको चाहें एकक्षणमें बुलन्द. इकबाल या बुलन्द इकबालसे कंगाल कर सक्ते हैं।। तथापि मेरे जैसा फकीर जो कि, इस संसारको मरु भूमिके जलकी तरह या स्वप्न सृष्टिके पदार्थोंकी तरहपर प्रतिदिन देखता हुआ अपने शरीरपर भी अनास्था कर बैठा हो उसको उन उच्चपदोंसे कौन सम्बन्ध है। और उन उच्चपदोंको धर्म विमुख होकर यदि पुरुष सम्पादन भी करलेवे तो वे कितने दिन रहने वाले हैं। और धर्मनाम तो हृदयके मन्तव्य-का है। उसका लोभादि कारणोंसे पलटना कठिन है किन्तु उसके बदल डारनेके लिये प्रबल प्रमाणोंकी आवश्यकता है। यदि प्रबल युक्तिया प्रमाण न मिले तो किसी भी विज्ञपुरुषके हृदयका भाव बदलना कठिन है। और लोभ वशसे हृदयका भाव तो नहीं बदलता परन्तु स्वार्थीका स्वार्थसिद्ध अवश्य होजाता है। उसमें भी मेरे जैसा फकीर जो कि, इस जिन्दगीको न हुई जैसी जान बैठा हो वह इस दुनि-याँमें क्या स्वार्थ निकाल सक्ता है इत्यादि श्रीगुरुतेगबहादुरजीके वचन सुनकर बादशाहने कहा कि, आप क्या दीन इसलामको बुरा समझते हैं। श्रीगुरुजीने कहा हम तो किसी भी दीन या धर्मको बुरा नहीं समझते (बादशाह०) तो फिर कबूल क्यों नहीं करते ? (श्रीगुरुजी०) हमारा कबूल करनेका स्थान खाली नहीं है (बादशाह०) वह कौन स्थान है जो खाली नहीं है ? (श्रीगुरुजी०) दीन धर्मके धारण करनेका स्थान हृदय है सो हमारा खाली नहीं है (बादशाह०) आपका हृद-य किसने रोक रक्खा है ? (श्रीगुरुजी०) परमेश्वरीय सनातन धर्म-ने (बादशाह०) तो आप अपने हृदयको खाली कर डालिये (श्रीगुरुजी०) जैसे भुक्त अन्न रक्त वीर्यादि सप्तधातुको परिणत हुआ कालान्तरमें वान्त नहीं हो सक्ता वैसे ही हमारे रोम रोममें रमा-हुआ सनातन धर्म कदापि हमारे हृदयसे निकल नहीं सक्ता

(बादशाह०) आप तो सब धर्मोंके मर्मको जाननेवाले हैं सबसे अच्छा धर्म कौन है ? (श्रीगुरुजी०) धर्म जलयान (बोट) की तरह संसार समुद्रसे पार करनेके लिये सभी समान है । जिसपर जिसको पार होनेका भरोसा होता है उसपर वह बैठता है मध्यमें डूबना तो कोई भी नहीं चाहता । (बादशाह०) जलयानोंमें भी तो बहुत भेद रहता है ? (श्रीगुरुजी०) उनमें क्या भेद है ? (बादशाह०) सरकारी जलयान बडे प्रबन्ध पूर्वक चलते हैं उनमें कदापि जानको खतरा नहीं होता । और ठेकेदार लोगोंके प्रबन्ध राहित होनेसे खतरा कभी होते हैं (श्रीगुरुजी०) धर्मोंकी भी ऐसीही दशा है (बादशाह०) वह क्यों कर जानी जाय ? (श्रीगुरुजी०) सर्वान्तर्यामी परमात्मा सच्ची सरकार है विश्वव्यापी एक धर्म उसका है । और पीर पैगम्बर औलिये अवतार इत्यादि सब लोग धर्मके ठेकेदार हैं । अपने २ चिह्नके भिन्न २ अनेक धर्म इनके हैं । (बादशाह०) क्या दीन इसलाम खुदाके हुक्मसे खुदाकी तरफसे नहीं है ? (श्रीगुरुजी०) खुदाकी तरफसे होता तो पैगम्बर साहिबको इतनी तकलीफ क्यों उठानी पडती (बादशाह०) खुदाके फरमानको काफरलोग नहीं मानते इसलिये पैगम्बरको तकलीफ उठानी पडी (श्रीगुरुजी०) खुदा क्या पैगम्बर साहिबके वक्तहीसे खुदाई करने लगा था जो उसका फरमाना काफर नहीं मानते थे तो पैगम्बर साहबने मनवाया (बादशाह) मैं बहुत बहस मुबाहसेकी बातें नहीं जानता आप दोमें एक कह दीजिये करामात दिखलावेंगे या कि, दीन इसलाम कबूल करेंगे ? (श्रीगुरुजी०) दोनोंमें एक भी नहीं करेंगे (बादशाह) ऐसे अमरमें हमारी शरअमें हुक्म कतलाम है (श्रीगुरुजी०) ऐसे अवसरपर हमारे धर्म शास्त्रोंमें भी आज्ञा कतल होनेकी है । (बादशाह०) क्या आपको जिन्दगीसे मुहब्बत नहीं है (श्रीगुरुजी०) मुहब्बत करनेहीसे कौनसी यह हमेशा रहनेवाली है (बादशाह०) तथापि जीतेजी सिवाय आपके मरना

कौन चाहता है ? (श्रीगुरुजी) जीते जी प्रयत्न करनेसेभी मरनेसे कोई छूट तो नहीं सकता और धिकृत या विकृत होकर जी-ना भी तो मरनेसे विशेष नहीं है (बादशाह०) आप व्यर्थ अपने शरीरको गँवाया चाहते हैं (श्रीगुरुजी०) इस शरीरने जब जाना है व्यर्थही गँवाया जाना है (बादशाह०) आपकी इच्छा ऐसे कह-कर श्रीगुरुतेगबहादुरजीको पूर्वोक्त कोतवालीके पासके मकानमें फिर नजरबन्दीमें भेज दिया और वहाँपर अनेक प्रकारकी तकलीफ देने-का हुकुम जारी किया । खान पानकी वस्तु पहुँचनी बन्द करी । जहरीले जन्तु इनके मकानमें छुडवाये । श्रीगुरुजीके साथ जो पाँच-शिष्य थे उनमेंसे एक दीवान मतीरामको बादशाहने आरेसे चिरवा डाला । और दूसरे भाई दयालाको लोहेकी डेगमें चढाकर मारडाला । दोनोंने श्रीगुरुतेगबहादुरजीकी आज्ञासे बडी प्रसन्नतापूर्वक जान दे-दई । और मुखसे सी या आहतक नहीं उच्चारण करी । आगमाया-यि प्राणोंको तुच्छ जान कर सदाके साथी धर्मसे विमुख होना अप-ने श्रेयसका हेतु न समझा । किन्तु श्रीगुरुजीके 'चित्त चरण कमलका आस चित्त चरण कमल संग जोडिये, इत्यादि शब्दका उच्चारणकर-ते हुये । दोनोंने प्रसन्न होकर प्राण दे दिये । यद्यपि श्रीगुरुतेगबहादु-रजी नजरबन्द कैदमें थे । तथापि अपने भजन पाठ स्मरण कीर्त-न नित्य नियमका उचित रीतिपर पालन किये जाते थे । ख्वाजा सय्यद अबदुलहसन हवालातका दारोगा आपको बहुतही प्रेमसे रखता था कारण उसका यही था कि, वह अपनी वंशपरंपरासे फकी-रोंका सेवक था । इसीसे वह दारोगा बादशाही अनेक सख्त हुकुमों-को श्रीगुरुतेगबहादुरजीके विषयमें बहुतही फेर फार तथा रहमसे बजा लाता था । यद्यपि बन्दीखानेमें श्रीगुरुजीके लिये बादशाही हुक्म यह था कि, इनको खान पानका पदार्थ कोई भी न दिया जावे तथापिसिवाय बादशाहके या उसके समीपी दोचा नीच

प्रकृतिके काजियोंके और तो कोई शाही दरबार भरम श्रीगुरु-
जीकी विरोधी थाही नहीं । इसलिये जो भी कोई शिष्य सेवक
खान पानके पदार्थको श्रीगुरुजीकी सेवामें अर्पण किया चाहता
था उन सबको ख्वाजा सैय्यद अबदुलहसन दारोगा प्रेमसे
जाने आने देता था । श्रीगुरुजीके शान्तिमयस्वरूपसे तथा
दारोगा साहिबके प्रबल दबदबेसे यह वार्ता बादशाहके कान-
तक एक दिन भी पहुँचने नहीं पाई । श्रीगुरुजीके कारागारमें
दिये जानेसे तथा उनके साथके पूर्वकेह दो मुख्य शिष्योंके मरवा
डालनेसे काजीलोग तो प्रसन्न होही चुके थे । फिर भी कारागारमें
श्रीगुरुजीके दोमासतक यथावत् स्थित रहनेसे काजीलोगोंको ऐसा
सन्देह हुआ कि, जो पुरुष कारागारमें भी क्लेश नहीं मानता उसका
सिवाय मरवाडालनेके दूसरा उपाय नहीं है अन्यथा यदि यह पुरुष
कदाचित् कालान्तरमें ऐसेही कारागारसे जीवितही छूट गया तो दीन
इसलामके प्रचारमें बहुतही उल्टा असर होगा इस प्रकारकी सम्मति
करके दिल्लीके कई एक प्रतिष्ठित काजीलोगोंने अनेक राज्य कार्य्योंमें
बैठे हुये तथा विविध विचारोंमें विक्षिप्त बादशाह औरङ्गजेबके चित्तको
फिर श्रीगुरुतेगबहादुरकी तरफ सावधान किया । काजीलोगोने मिल
कर बादशाहसे कहा कि, जहाँपनाह गुरुतेगबहादुरके कैद करनेसे
दीन इसलाम पर कुछ उपकार नहीं हुआ है प्रत्युत जिस दिनसे
उसको बंदीखानेमें डाला है उस दिनसे दीन इसलामका प्रचार बन्द
होरहा है। अन्यथा आजतक लक्षों हिन्दुओंको दीन इसलाममें ले
लिया जाता बादशाहने काजीलोगोंसे कहा कि, अब क्या करना-
चाहिये । काजीलोगोंने कहा बादशाह सलामत उसको बन्दीखानेमें कुछ
भी तकलीफ नहीं है। चाहे उमरभर डाले रखिये इससे दीन इसलाम-
को क्या लाभ पहुँचेगा । उचित यह है कि, उसको कतलकरवा
दिया जावे । जो जिसको देखतेही सारा पंजाब देशका देश दीन इस-
लामको कबूल करेगा । और शहर मुहम्मदीमें भी दीन इसलामके

प्रचारमें बाधा डालनेवालेको हुक्म कतलही लिखा है। बादशाहने काजीलोगोंकी पूर्वकही मूलविनाशनी सम्मतिको बहुतही प्रसन्नतापूर्वक अङ्गीकार किया और उसवक्त श्रीगुरुतेगबहादुरके लिये हुक्म कतलका निकाला हवालातका दारोगा अबदुलहसन जो कि, श्री-गुरुजीका बहुतही प्रेमी था शाही हुक्मको सुनताही हैरान परेशान होगया शमशमनेत्रोंसे जल बहाने लगा। बहुतही उदास मन होकर भी गुरुजीके पास गया। और शाही हुक्मको सुनाकर कहने लगा कि, दीनबन्धो! मेरेसे जहाँतक बनी मैं आपकी खिदमत बजा लाया। परन्तु अब इस शाही हुक्मको जिसको कि, मैं सिवाय बजालानेके किसी तरह भी अन्यथा नहीं कर सक्ता क्षमाशील होकर स्वीकार करना तथा मेरे बारेमें खुदाकी दरगाहमें दुआ माँगनी आपका महत्व है। श्रीगुरुजीने उसी समय कहा कि, दारोगासाहिब आप कुछ चिन्ता मत कीजिये। आप बादशाही हुक्मको बजा लाइये। हम आपसे बहुतही प्रसन्न हैं। यह शरीर क्या सदा रहनेवाला है यदि ऐसा नहीं तो इसके सम्बंधसे व्यर्थ कोई कलंकका भागी बने इसमें हमारी क्या हानि है इत्यादि उत्तम उपदेशसे दारोगाके चित्तमें धैर्य्य देकर श्रीगुरुजीने उसी कालमें भाई गुरुदत्ताके हाथ पाँच पैसे तथा एक नारियल देकर आनन्दपुरमें अपने प्रियपुत्र श्रीगुरुगोवि-न्दसिंहजीके पास भेज दिया। उधर वह गुरुगादी पर विराजे और इधर श्रीगुरुजीने दारोगाको समझा दिया कि, जिस समय हम अपना शिर नीचे झुकावें जल्लादको काटदेनेका हुक्म देना। मार्ग-शीर्ष मिति ११ शुक्लपञ्चमी संवत् १७३२ विक्रमीमें प्रातः स्नान ध्यानादि यावत् क्रियाके पश्चात् बटवृक्षके नीचे बिराजकर जपजी साहिबका पाठकर अकालपुरुषके ध्यानमें शिर झुकाया। उसी कालमें शाही आज्ञाके बजा लानेवाले जल्लादने तलवार मारकर श्रीगुरुते-गबहादुरजीका शिर धडसे जुदाकर दिया प्रियपाठक! ख्याल रहे कि उस जल्लादने श्रीगुरुतेगबहादुरसाहिबजीका शिर नहीं काटा है किन्तु

मुसलमानोंकी बादशाहीका मूल उच्छेदन किया है। जबसे श्रीगुरु-तेगबहादुरजी पंजाबदेशको छोडकर दिल्लीमें आये थे। उसी दिनसे शहर दिल्लीका प्रतिदिन पल पलका समाचार पंजाबके नगर नगर ग्राम ग्राम घर घरमें आबाल वृद्धके कानतक पहुँच जाता था। यद्यपि उस कालमें शीघ्र समाचारके उपकरण कोई रेल तारादि सामान कुछ भी न थे तथापि उसकालमें अतिविस्तृत पंजाबदेशका देश एक श्री-गुरु घरका अनन्य पक्षपाती हो रहा था। शहर दिल्लीमें भी उसकालमें लक्षों हिन्दू श्रीगुरु घरके सेवक थे। इसी लिये श्रीगुरुजीका यावत् वृत्तान्त बहुत शीघ्र सर्वत्र फैल जाता था। श्रीगुरुतेगबहादुरजीके दिल्लीमें शीश देनेका समाचार भी उसीदिन देशभरमें फैल गया चारों तरफ हाय हाय मचगई। अनेक शूर बीरलोग दाँत चबाने लगे। बाल वृद्ध तथा नारीगण प्रेमसे अश्रु बहाने लगे। हिन्दूमात्रके हृद-यसे धैर्य्य लेशका अभाव होगया। सबकी आँखोंके सामने अँधे-रासा छागया। पंजाब देशमात्रमें हल चल मच गई। अकस्मात् अन्तरिक्ष मण्डलसे पुष्प वृष्टि हुई। चारों तरफसे जय जयकी ध्वनि सुनाई पडने लगी। इसी वार्ताको श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने भी लिखा है। यथा-

दोहा-गुरुतेगबहादुरके चलत, भयो जगतमें शोक ॥
हाय हाय सब जगकरै, जय जय जय परलोक ॥ १ ॥

इसी वार्ताको बहुतसे इतिहासवेत्ता मुसलमान मौलवीलोगोंने भी लिखा है कि,जिसकालमें गुरुतेगबहादुरजीने हिन्दूधर्मपर अपना शिर दिया है शहर दिल्लीमें एकबारही अन्धेर मच गया था। भूमि काँपने लगी आमखलकतमें रंज पैदा हुआ चारोंतरफ सन्नाटा छा गया। अ-नेक रहमदिल मुशलमान लोग भी दिलगीर होगये। जिस दिन श्रीगु-रुतेगबहादुरजीका शिर हिन्दूधर्मपर कुरबान हुआ उससे अगले दिन प्रातःकाल जीवन नामक मकान बुहारकर साफ करनेवाले पुरुषने

श्रीगुरुतेगबहादुरजीका शिर उठालिया और उसी दिन दिल्लीसे आनन्दपुरका मार्ग लेकर श्रीगुरुगोविन्दसिंह महाराजके पास पहुँचा। श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी अपने पिताके शीशको देखकर तथा अपने सेवककी बहादुरीको देखकर बहुतही प्रसन्न हुये। और उसी कालमें श्रीगुरुमुखसे कहा कि, "रँगरेटे गुरुके बेटे"। स्मरण रहे कि, यह रँगरेटा कौम वस्तुतः अंत्यज जाति है। अर्थात् चाण्डालोंके अन्तर भूत है। परन्तु इस जातिके सभीलोग बहुतकालसे चाण्डाल वृत्तिको छोडकर कृषी पशुपालनादि वृतिमें तत्पर हैं। यह जाति पंजाबदेशमें अच्छे अच्छे सहस्रों मनुष्योंसे सुसोभित है। साधारण रूपसे यह लोग गुरुनानकजीके घरको यद्यपि प्रथमही मानते चले आते थे। तथापि श्रीगुरुतेगबहादुरजीके दिल्लीसे शीशलानेसे श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीकी इस जातिपर बहुतही कृपा हुई। श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने उस जीवनको बडे प्रेमसे अपना शिष्य बनाया। और उसका नाम जीवनसिंह रक्खा। पीछे श्रीगुरुतेगबहादुरजीके धडकी दशा यह हुई कि, न तो बादशाहने उसके दफन करानेका हुक्म दिया। और नहीं जलानेका हुक्म दिया प्रत्युत दिल्लीके चान्दनी चोकमें मार्गके मध्य भागमें रखवा दिया उनही दिनोंमें एक लक्षी नामक लुवाणा जातिका गुरुघरका सेवक राजदरबारमें कुछ ईंट चूना पहुँचानेका ठेकेदार था वह उन दिनोंमें बैल गाडीद्वारा। किलेमें ईंट चूना पहुंचा रहाथा सायंकालमें घरको आने समय उस लक्षी भक्तने श्रीगुरुजीका धड उठाकर अपनी गाडीपर रखलिया। और अपने घरमें लाकर चिता बनाकर बादशाही भयसे अपने घरके सहित चिताको अग्नि लगाई। उस भक्तका घर तथा श्रीगुरुतेगबहादुरजीका धड साथही जल गये। उसी लक्षी नामक लुवाणा भक्तके घरके स्थानपर वर्तमानकालमें एक बहुत उत्तम स्थान मन्दिर देहरा बना हुआ है। और रिकाबगंजके नामसे प्रख्यात है। और जहाँपर शिर काटागया था वहां पर भी एक मन्दिर बना हुआ है। वह शीशगंजके नामसे पुकारा

जाता है । श्रीगुरुतेगबहादुरसाहिबजीने दो मासके बन्दीखानेमें भक्ति ज्ञान वैराग्यादिसे पठित जो जो शब्द बन्दीखानेकी दीवारों तथा वटवृक्षादिके पत्रोंपर लिखे थे वे सभी दारोगासे मिलकर शिष्यलोगोंने कागजपर उतारकर उनके परमप्रतापी पुत्र श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजके पास भेज दिये। उन शब्दोंको श्रीगुरुगोविंदसिंहजी महाराजने श्रीगुरुअर्जुनजीके भविष्यत् वचनानुसार श्रीगुरुग्रन्थसाहिबमें दर्ज किया । अर्थात् श्रीगुरुअर्जुनसाहिबजीने जब गुरुग्रन्थसाहिबकी बीड बाँधी थी उस कालमें शिष्यलोगोंके पूछनेसे कहा था कि, एक महापुरुष धर्मपर शीश देता हुआ कुछ उच्चारण करेगा । उसके लिखनेके लिये यह हरएक रागके अन्तमें जगह छोड दी जाती है । वही श्रीपूज्यपिताकी पवित्रवाणी श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने श्रीगुरुग्रन्थसाहिबके हरएक रागके शेषमें लिखवाई । उस बन्दीखानेमें उच्चारण करी हुई वाणीमें श्रीगुरुतेगबहादुरजीने क्या क्या कहा होगा यदि ऐसी किसी प्रेमीपुरुषके चित्तमें जिज्ञासा होय तो इसी पुस्तकके अन्तके भागको देखें। यहाँपर यह सन्देह अवश्य उत्पन्न होता है कि, श्रीगुरु तेगबहादुरजी क्या सिद्ध पुरुष थे । अथवा सिद्धि रहित साधारण सत्पुरुष थे। यदि ऋद्धि सिद्धि सम्पन्न होते तो क्या प्राणान्ततक औरंगजेबको कुछ भी चमत्कार न दिखलाते । इस लिये जानाजाता है कि, श्रीगुरुतेगबहादुरजीमें कुछ विशेष चमत्कार न था । इसका उत्तर यह है कि, श्रीगुरुतेगबहादुरजी सर्व ऋद्धि सिद्धि सम्पन्न थे इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है । परन्तु अपने बलको प्रकट करके न दिखलाना यह उनकी इच्छाके अधीन है । श्रीगुरुजी ऋद्धि सिद्धिको लोगोंके दिखलानेके लिये नाटक तमाशेकी तरह समझते थे । इसी लिये उनका कथन है कि,

नाटक चेटक करत अकाजा ॥
प्रभु लोगनको आवत लाजा ॥

अर्थात् ऋद्धि सिद्धि करामातका दुनियाँको दिखलाना एक मदारीके तमाशे जैसा है कोई महापुरुषोंका काम नहीं है । दूसरे यह है कि, इनके

पिता श्रीगुरुहरिगोविन्दजीकी इनको दृढ आज्ञा थी कि, यह समय अपना आप प्रकट करनेका नहीं है जहाँतक बने अपने आपको छिपा कर रक्खो। इसी कारणसे गुरुतेगबहादुरजी बहुत वर्षतक एकही मकानमें पडे रहे थे। इन्हींके बडे भ्राता अटलरायजीने एक दिन मोहन नामक क्षत्रियके पुत्र मरेको जीला दिया था, तो श्रीगुरुहरिगोविन्दजी अपने पुत्र अटलरायपर ऐसे क्रुद्ध हुये थे कि, उसको उसी वक्त आपने प्राण त्यागने पडे थे। वह प्रसंग यों है कि, अटलरायजी लडकोंके साथ खेलाकरते थे। एक दिन मोहन नामक क्षत्रियके पुत्रके शिरबाजी रही खेल समाप्त करके लडके आपो अपने घरोंमें चले गये। अगले दिन मोहनके पुत्रको सर्पने काटा वह मरगया। सपरिवार उसके माता पिता रोने लगे। तबतक खेलनेके लिये बाबा अटलरायजी भी दो चार लडकोंको साथ लेकर मोहनके घर आन पहुँचे। आगे देखा तो सभी घरके लोग रो रहे हैं बाबा अटलरायजीने रोनेका कारण पूछा तो उन्होंने अपने पुत्रका मरना बतलाया और बाबाजीके आगे बहुत प्रार्थना करी कि, यदि आप कृपा करके हमारे पुत्रको जीवित करदें तो हमलोग आपके जन्मभर सेवक बने रहें आशु तोष बाबाजीने उनकी प्रार्थनासे उस लडकेको बाहुसे पकडकर उठा दिया। और कहा कि, भाई हमारी खेलकी बाजी अपने शिरपर राखके सोना अच्छा नहीं है। लडका उसी वक्त सावधान होगया। माता पिता तथा परिवारके चित्तमें बहुत हर्ष हुआ। परन्तु इस वार्ताका कोलाहल अमृतसर नगरमात्रमें होगया कि, अमुकक्षत्रियके पुत्रको बाबा अटलरायजीने जीवित करादिया है। यही वार्ता श्रीगुरुहरिगोविन्दजीके भी कर्णगत हुई उन्होंने अटलरायजीको अपने पास बुलाकर बहुत समझाया। कहा कि, बेटा! तुमको अपना आप छिपाकर रखना चाहिये वर्तमानमें मुसलमानोंका राज्य है। यदि तुम ऐसेही करने लगोगे तो उनके कुत्ते बिल्ली भी तुमको पराधीन होकर जीवित करने पडेंगे। अन्यथा अनेक प्रकारके क्लेश उठाने पडेंगे। मरेको

जीवित करना परमेश्वरीय आज्ञासे भी विपरीत है। वर्तमान राज्यमें भी क्लेशका मूल है इस लिये मेरी समझमें आपने अत्यन्त अनुचित कार्य किया है। इसका प्रतीकार यही है कि, आप अभी इस संसारको छोड देवें। अन्यथा हमको बहुत क्लेश उठाना पडेगा। पिताकी इस वाणीके सुनते ही बाबा अटलरायजीने कुछ उत्तर न दिया। और उसी कालमें एक पवित्र स्थानमें जाकर आश्विन वदि १० संवत् १६८५ विक्रमीमें प्राण त्याग दिये। श्रीगुरुहरिगोविन्दजी इस समाचारको सुन कर बहुतही प्रसन्न हुये और आज्ञा पालनेके बदलेमें आशीर्वाद दिया कि, हे पुत्र! सबसे बढकर तेरी पूजा तेरे पीछे तेरे स्थानकी होगी। वस्तुतः वर्तमान श्रीअमृतसरजीमें बाबा अटलजीका देहरा सिवाय श्रीहरिमन्दिरजीके एकही प्रतिष्ठित स्थान है। इत्यादि इतिहाससे प्रतीत होता है कि, श्रीगुरुतेगबहादुरजीको भी किसी तरहके चमत्कार दिखलानेको पिताकी आज्ञा न थी।

इति चतुस्त्रिंशोऽध्यायः॥ ३४॥

अथ पञ्चत्रिंशोऽध्यायः॥ ३५॥

ॐ

श्रीगुरुगोविन्दसिंह साहिबजी पादशाही॥ १०॥

ज्येष्ठसुदि सप्तमी शनैश्चरके दिन अर्द्धरात्रिकालमें आलमगीरबादशाहके अहदमें श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजका जन्म संवत् १७२३ विक्रमीमें श्रीगुरुतेगबहादुरजीके घरमें माता गूजरीजीके गर्भसे हुआ है। बाल्यावस्था आपकी शहर पटनाहीमें व्यतीत हुई कुमारावस्थामें आपके पूज्य पिता श्रीगुरुतेगबहादुरजीने शहर आनन्दपुरमें बुलाकर शस्त्र अस्त्रादि अनेक प्रकारकी विद्याकी शिक्षा दिलवाई स्वयं प्रबुद्ध श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने केवल अपनी दशवर्षकी आयुहीके भीतर २ गुरुमुखी फारसी संस्कृत तथा शस्त्र अस्त्रादि अनेकविध

विद्यामें सर्वोच्च अप्रतिहत गुरुपदको लाभ किया। उसके पश्चात् पूज्य पाद पिताजीसे साङ्गोपांग धर्म तथा आत्मज्ञानके गाढ उपदेशको श्रवणकर यथावत् धारण किया। शेषमें पूज्यपाद पिता श्रीगुरुतेगबहादुरजीने स्वयं उदाहरणरूप होकर अपने प्रिय पुत्र श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजको यह शिक्षा भी दई कि, परोपकारके समान तथा सनातन आर्य्यधर्मके आगे स्त्री, धन, पुत्र, राज्य, वैभव, मान, प्रतिष्ठा तथा अपने शरीरको भी तुच्छ समझना चाहिये अर्थात् यह सब जावे तो भले जावे परन्तु धर्म विमुख होकर मरना मनुष्यको उचित नहीं है। इस गुरुपरंपरा परि प्राप्त शिक्षाको पालन करके दिखलानेवाले तथा अपने कई लाख शिष्यमण्डलको सनातन आर्य्यधर्मपर जीवन अर्पण करनेका अपूर्व विद्या सिखलानेवाले तथा अथाह यवन अत्याचारसागरमें डूबती हुई आर्य्यसन्तानकी नौकाको श्रमसे पार लगानेवाले तथा धर्म धन धामादि शून्य मृतप्राय सोती हुई आर्य्यसन्तानको गफलतकी निद्रासे जगानेवाले तथा हिन्दुओंकी सर्वथा हारि हुई बाजीको फिर जीतकर दिखानेवाले तथा विनष्टप्राय हिन्दुप्रजाका नाम इस आर्य्यभूमिमें रखानेवाले तथा गतसत्व आर्य्यसन्तानमें वीर्यशक्ति साहसके दिलानेवाले तथा मुसलमानोंके राज्य वैभवको छिन्नभिन्न करके धूलीमें मिलानेवाले यदि कोई महापुरुष हुये हैं तो परम प्रतापी महाधीर वीर दिव्य शक्तिमय परमेश्वरकी ओरसे सनातन धर्मके सर्वथा संरक्षक एक येही श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजही हुये हैं। इन्होंने अपने अपूर्व प्रभावसे आर्य्यसंतानहीमेंसे पुलीसकी तरह प्रबन्ध कारक पन्थखालसाको निर्माणकर उसी पन्थखालसासे इस आर्य्यसन्तानकी ऐसी उचित रीतिपर रक्षा करके दिखलाई है जा कि, इतिहास जीवन प्रियकृतज्ञ हिन्दु सन्तानके चित्तसे स्वसत्वकालमें कदापि विस्मरण न होगी, यद्यपि इसमें कुछ सन्देह नहीं है कि, पन्थखालसाकी प्रथम बुनियाद डालनेवाले मूल पुरुष श्रीगुरुनानकदेवजीही हुये हैं। तथापि उनके भावाशयके अनुकूल पन्थखा-

लसाको सर्वांग पूर्ण सजाकर दिखलानवाले यह श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजही हुये हैं । सत्य तो यों प्रतीत होता है कि, जिस कार्य्यका आरम्भ श्रीगुरुनानकजीने किया था उसको सर्वांगपूर्ण करके श्रीगुरु-गोविन्दसिंहजी महाराजने दिखलाया । इनके पिछले जन्मके विचारमें पन्थखालसाकी कई एक पुस्तकोंमें यों लिखा है कि, यह गुरुमाहाराज पिछले जन्ममें राजा धृष्टद्युम्नके नामसे शहर अमरकोटके राजा मशहूर थे प्रजापालनमें बहुतही दत्त चित्त रहमादिल तथा परम उदार भावसे सब राज्यप्रबन्धको किया करते थे । न्याय शीलता इनकी नौशेरवोंको भी नीचा दिखलाने वाली थी। जब कभी किसी मनुष्यको या इतरको कदाचित् कहीं विपत्ति आनपडती तो वह जीव इनको स्मरण करता तो यह उसकी हर तरहकी मुसीबत दूर करनेके लिये प्रतिक्षण तैयाररहते यहाँतक कि, स्वयं दशबीस सवा-रोंको साथ लेकर और हाथमें बरछा पकडे वहीं जा पहुँचते । इसी कारणसे उस कालमें इनको लोग भक्तवत्सलके नामसे सत्कार पूर्वक पुकारते थे । देश कच्छ सिन्ध तथा काठियावाडके प्रत्येक ग्राम नगर शहरोंमें पाषाणोंके ऊपर इनकी प्रतिमा खुदी हुई विद्यमान है । जिन-को उस देशके हरएक मतके लोग दूध हलुआ आदिसे पूजन करते हैं इन्होंने बहुत कालतक धर्म पूर्वक राज्य किया पश्चात् अपने प्रियपुत्र विजयराज नामकको राज्यगादी देकर आप प्राचीन रघुवंशी राजाओं-की तरह अनित्य संसारसे उपराम होकर मुण्डन नामक महर्षिसे सदुपदेशको ग्रहण कर हेमकूट नामक पर्वत पर जाकर अकाल पुरु-

---

(१) हेमकूट नामक पर्वत उत्तराखण्डमें बद्रीनाथके पर्वतसे सातसौ कोश आगे है यहाँ पर महाकालका एक मंदिर बना हुआ है उसीके समीप राजा पण्डुके तपकरनेके स्थान भी हैं । उस महाकालके मंदिरमें सिवाय कडाहप्रसादके और किसी पदार्थका भोग नहीं लगता । यह वही-स्थान है जिसके विषयमें द्रोणपर्व महाभारतमें ऐसा लिखा है कि. जब राजा जयद्रथने अर्जुनके पुत्र अभिन्युको मारडाला जो पाण्डवोंको बडा

षका भजन स्मरण करने लगे। जिस पवित्र स्थलमें राजापाण्डुने तप किया था बहुत दीर्घकाल तक वहाँ परमेश्वरकी उपासनामें तत्पर रहे। और सर्वान्तर्य्यामी परमात्माकी उपासनामें ऐसे लवलीन हुये कि, जिससे स्वयं सदुपदेशके प्रचारका परमेश्वरकी तरफसे अधिकार लाभ किया। उसीही समयमें मुसलमान बादशाहोंने परमेश्वरकी सृष्टिको सता सता कर ऐसा दुःखित किया था कि, जिसको लिखते हुई कलम भी काले आँसु बहाने लगती है। जिस कालमें दीनप्रजाकी पुकार परमेश्वरकी दरगाहमें पहुँची तो श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजको उस पूर्ण परमात्माकी ओरसे यह आकाशवाणी हुई। कि, मैं तुझको अपना पुत्र बनाकर संसारमें भेजता हूँ। क्योंकि, इससे प्रथम जिस २ को मैंने भेजा उसी २ ने वहाँ जाकर मेरेको भूल कर मनमाना अपना अपना मार्ग चलाया। प्रायः बुतपरास्तिश करना लोगोंको सिखलाया। तथा प्रतिनिधि होकर स्वयं परमेश्वर कहाने लगे। ऐसा एक भी न निकला कि, जिसने सिवाय अपने मान प्रतिष्ठा स्वार्थके मेरीतरफ लोगोंको प्रवृत्त किया हो। इसलिये तुझको

दुःख हुआ अर्जुनने प्रतिज्ञा करी कि, मैं विना जयद्रथके मारे अन्न ग्रहण नहीं करूंगा। तब श्रीकृष्णदेवने कहा कि, महाकालके अस्त्रसे विना जयद्रथका माराजाना कठिन है। तब श्रीकृष्णदेव अर्जुनको इस महाकालके स्थानपर लेगये वहाँपर, अर्जुनने महाकालकी उपासना करके अस्त्रलाभ किया। फिर उससे जयद्रथको मार डाला। हिमालयपर्वत पर निवास करनेवाले लोग अपनेको देवता मानते हैं। और हम लोगोंको लोकके मनुष्य कहते हैं। इससे प्रतीत होता है कि, हिन्दुओंके पुराणोंमें जो देवलोक स्वर्गलोक ब्रह्मलोक इत्यादि स्थलोंका वर्णन आता है वह हिमालयहाकि प्रान्ताका होना चाहिये। क्योंकि, देवलोकके जो जो चिह्न लिखे हैं वह प्रायः उत्तराखण्ड हिमालयमें सभी मिलते हैं। गंगानदीका प्रवाह ब्रह्मलोकसे निकसा पुराणोंमें लिखा है। और अन्वेषण करनेसे प्रतीत हुआ कि, गंगा हिमालयपर्वतसे निकसी है। पुराणोंमें जो सुमेरुपर्वतकी बहुतसी प्रशंसा लिखी है वह भी हिमालयहीके तात्पर्य्यसे लिखी है।

चाहिये कि, संसारमें जाकर मेरी उपासना पूजाको प्रचार करो और सत्यधर्मकी रक्षा करो इत्यादि । बस इसी परमेश्वरीय आज्ञाके अनुसार परमप्राचीन तथा वर्तमानमें लुप्तप्राय सनातन आर्य्यधर्मके प्रचारके लिये श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजका इस भारत भूमिमें प्रादुर्भाव है । उक्त पूर्वजन्मकी तपश्चर्य्याका वृत्तान्त तथा परमेश्वरकी आज्ञासे इस भारतीय सन्तान उद्धारके लिये भूमिपर अपना आना श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीने इत्यादि वचनोंसे स्वकीय निर्मित विचित्र नाटकग्रथमें स्वयं लिखा है । और यदि हमसे कोई इनके पूर्वजन्मका वृत्तान्त पूछे तो हमतो " यावदधिकारमवस्थितिराधिकारिणाम् " अ० ३ पा० ३ सू० ३२ इस व्यासदेवकृत ब्रह्मसूत्रसे यही कहेंगे कि, ऐसे २ लोग परमेश्वरकी सृष्टिमें अधिकारी कहलाते हैं । अर्थात् ऐसे २ लोग स्वयंज्ञानी नित्यमुक्त तथा परमेश्वरकी तरफसे अधिकार लाभ करके परमेश्वरकी सृष्टिके शासक सदा बने रहते हैं । यह लोग समय २ पर अपने करणी कार्य्यको करके सदा एकान्तस्थलमें स्वात्मसुखमें या परमेश्वरके चिन्तनमें मग्न रहते हैं जिस २ कालमें जिस २ कार्यके लिये जिस २ परमात्माकी आज्ञा होती है वही उस कालमें उस कार्य्यमें प्रवृत्त होता है । उन्हींमेंसे यह एक श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराज भी हैं । शहर पटनामें आपने जन्म लेकर अनेक प्रकारके पवित्र तथा रसालपदार्थोंसे शरीरको पालन किया इनके समयमें ऐसा कोईभी दुर्लभ पदार्थ न था जो कि, बादशाहोंको प्राप्त हो और इनकी सेवामें अनायासही प्राप्त न हो । अपने समवयसके लडकोंके साथ जब खेला करते उसमें प्रायः बादशाहोंकी नकल किया करते । अर्थात् कुछ लडकोंकी फौज (सेना) बनाते और आप घोडेपर सवार होकर बादशाह बनते । और कभी छोटे २ तीर कमान बनाकर खेलने लगते । कभी बन्दूक चलानेकी नकल करते । कभी ऊंचे नकली सिंहासनपर बैठकर हुकूमत करने लगते । तात्पर्य इसी तरहके विचित्र २ खेलोंको खेला करते और अपनी समवयसके लडकोंके साथ बहुतही प्रेम तथा उदारभाव-

से वर्ताव करते । बहुधा पवित्र श्रीमुखसे जो कुछ उच्चारण करते वही होजाता । पटनाके राजा फतहचन्द्रकी रानीकी प्रतिक्षण यही इच्छा रहती थी कि, यह मनोहरमूर्ति बालभावको प्राप्त हुये श्रीगुरुजी मेरेको हरवक्त दर्शन दिया करें इसलिये उसकी कामना पूर्ण करनेके लिये श्री गुरुजी रानीके घर प्रतिदिन चले जाया करते । उसी रानीने आपके स्मरणार्थ एक बहुत भारी तथा मजबूत मन्दिर गुरुकी संगतके नामसे तैयार करवाया जो कि, शहर पटनामें गुरुकी संगतके नामसे अबतक प्रख्यात है । कुछदिन पीछे फिर जब आपको पिता श्रीगुरुतेगबहादुरजीने अपने पास शहर आनन्दपुरमें बुला भेजा तो यह मार्गमें बनारस, मिरजापुर, प्रयाग, अयोध्या इत्यादि पवित्र स्थानोंपर होते हुये जिले अम्बालेमें लखनौर नामक ग्राममें पहुँचे तो वहांपर झण्डू नामक मुसद्दी (कारिन्दा) ने आपको अपने मकान पर ठहरा लिया और कुछ कालतक यह वहीं रहकर सयर तथा शिकार करते रहे । उसके पश्चात् अपने पिताजीके पास शहर आनन्दपुरमें चले आये । श्रीगुरुतेगबहादुरजीके दर्शनके लिये उन दिनोंमें देश देशान्तरोंसे अनेक शिष्यलोग आया करते थे । जब श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी आनन्दपुरमें पहुंचे उन्हीं दिनोंमें शहर लाहौरके अनेकलोग श्रीगुरुतेगबहादुरजीके दर्शनको आये हुये थे । उनके साथ एक हरियश नामक सुभिक्ष जातिका क्षत्रिय भी आया हुआ था । उसने हाथ जोडकर श्रीगुरुतेगबहादुरजीसे प्रार्थना करी कि, दीनबन्धो ! मेरी इच्छा है कि, मेरी जीतो नामक पुत्रीकी शादी आपके शाहजादे श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजके साथ होवे । आप कृपा करके इस प्रार्थनाको स्वीकार करें तो मैं अपनेको सुभागा तथा कृतकार्य्य समझूं । परन्तु उसके साथही प्रार्थना यह भी है कि बरात शहर लाहौरमें आवे तो मैं और भी अपनेको सुभागा समझूं । जिसके उत्तरमें श्रीगुरुजीने यह कहा कि, इस कालमें हमारा लाहौरकी तरफ जाना बहुतही दुर्घट है । तुम अपनी पुत्रीके विवाहका सभी सामान यहाँही ले आवो तो अच्छा होगा

और यदि आपका लाहौर पर ही अधिक प्रेम हो तो यहाँ समीपही आपके लिये एक नूतन लाहौर वसा दिया जायगा जो कि, आपकी बरातके कालमें प्राचीन लाहौरको भी नीचा दिखलानेवाला होगा ।

चौपाई ।

अब मैं अपनी कथा बखानों । तप साधित जिहि विधि मोहि आनो ॥
हेमकूट पर्वत है जहाँ । सप्तशृंग शोभित है तहां ॥ १ ॥
सप्तशृंग तिहिनाम कहावा । पण्डुराज तिहिं योग कमावा ॥
तहिं हम अधिक तपस्या साधी । महाकाल कालिका अराधी ॥ २ ॥
इहिविधि करत तपस्या भयो । द्वयते एक रूप है गयो ॥
तात मात मुर अलख अराधा । बहुविधि योग साधना साधा ॥ ३ ॥
तिन जो करी अलखकी सेवा । ताते भये प्रसन्न गुरु देवा ॥
तिन प्रभु जब आयसु मोहिदीन्हा । तब हम जन्म कलिहिमें लीन्हा ॥४॥

हरियशने श्रीगुरुजीके कथनको स्वीकार किया और लाहौरमें जाकर अपनी पुत्रीके विवाहकी सकुटुम्ब यावत् सामग्री लेकर चला आया । इधर श्रीगुरुतेगबहादुर साहबजीने भी अपने सम्बन्धीकी लाहौरपर अधिक रुचि देखकर शहर आनन्दपुरके उत्तरकी तरफ सात आठ कोश दूरपर एक सुन्दर कसबा लाहौरके नामसे आबाद कर दिया । हरियशरायने सहित परिवारके उस नूतन लाहौरमें निवास करके ज्येष्ठ मिति १९ संवत् १७३० विक्रमीमें अपनी पुत्रीके विवाहकी तारीख नियत करके श्रीगुरुतेगबहादुर साहिबके पास अपनी ओरसे शकुन देकर ब्राह्मण भेजदिया । चारों ओर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजके विवाहकी धूम धाम होने लगी । विवाहकी खबरें सुनकर शिष्यलोग रंग रंगके तोफें चीज गुरुकी भेंटके लिये लाने लगे । शादीकी धूम धाममें शहर आनन्दपुरके तथा नूतन लाहौरके बाग बगीचे पुष्पवाटिका गली कूच बाजार तरह २ की झालर तोरणादिसे सजाये जाने लगे । तरह २ के वस्त्राभूषण पहरकर

सहस्रों नर नारी उचित समयपर एकत्रित होने लगे। गुलाब चम्पा रवेल केवडा आदिके अनेक प्रकारके अतर फुलेलकी सुगन्धि चारों तरफ उडने लगी पानीके फुहारे स्थान २ पर छूटने लगे। मंगलमय समयको जानकर कोकिलादि पक्षीभी मधुर स्वरसे बोलने लगे। नट भाट सूत मागध बन्दीजन गायकगण रंग रंगके स्वरोंसे गाने बजाने तथा प्रशंसा बोधक कवित्त बोलने लगे। नृत्य गीत वाद्यकी ध्वनिसे आकाश भी प्रतिध्वनिरूपसे गुञ्जार करने लगा। दर्शक गणकी भीड तथा शिष्यगणका स्वागत शहर आनन्दपुर तथा नूतन लाहौरके निवासस्थानोंकी संकुचित बनावटके बोधक होगये थे। चौकस सजे हुये नौजवान परस्पर मिलनेसे फूलोंकी तरह खिल जाते थे। जगह २ स्थान २ पर गादी तकिये मसलंद गलीचोंकी बिछाई करी गई चारों तरफ एक दूसरेको आइय! विराजिये! जलपान कीजिये! इत्यादि शिष्टाचारकी धूम मचरही थी। वन उपवनोंकी कृत्रिम सजावट उचित समयपर नन्दनवनको भी उपहास करनेवाली थी उनमें विचरनेवाले नौजवान भी अपने स्वरूपसे देवोंके साथ स्पर्द्धा करनेवाले थे। श्री गुरुगोविन्दसिंहजीके विवाह कालकी आनन्दपुरकी शोभा देवपुरके आनन्दको भी विस्मरण करानेवाली थी पुत्रके विवाहकालमें माता पिताको जो प्रसन्नता होती है उसका अनुभव तो उन्हींके हृदयके साथ जाना जाता है। अर्थात् अवर्णनीय है। माता पिताने अनेक अशर्फियाँ अपने पुत्रके शिरपर वरण करके गरीबोंको बाँटि दिया। इत्यादि अनेक उत्साहकपूर्वक नियत मितीपर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महराजको सुगन्धित द्रव्योंसे मर्दन स्नान कराकर नूतन मंगलमय पातवस्त्र पहराकर शिरपर मोतियोंका सेहरा बांध दिया। और बडी धूम धामसे बरातकी तैयारी हुई। सबसे आग २ बाजे और ताशेकी आवाज उसके पीछ गाने बजानेवाले मिरासी कलांवतलोग उसके पीछे आतशबाजीवाले उनके पीछे तरह २ के सामानसे सजाये हुये घोडोंकी श्रेणी उसके पीछे रथोंकी पंक्ति उसके पीछे हाथियोंकी

धुन्धुकार चारोंओरसे चलो २ आगे बढो २ की पुकार सुनाई देती थी । तात्पर्य्य इत्यादि पूर्वोक्त रीतसे सजबजकर बरात लडकीवाले-के दरवाजेपर पहुंची । बरातकी सजावटको देखकर हरियशराय तथा उसकी बिरादरीके लोग ऐसे प्रसन्न हुये कि, फूलेअंग न समाते थे । नूतनाबाद हुये लाहौरमें बरातके जानेसे ऐसी भीड हुई कि, एक दूसरे पर गिरे जाने लगे । जगह जगह पर नाच तमाशे गाने बजाने आपसे आप होने लगे । कोठोंपर नारीगणकी जुदा धूम थी । कोई सुहाग गाती थी कोई सिठनीयां देती थी । कोई लडकी की माताको बधाई देती थी कोई नई दुलाहिनको गलेकेसाथ लगाती थी । कोई प्यार शिर चूमती थी । आशीर्वाद देती थी । कोई प्रेमसे, हँसती । कोई बरातकी प्रशंसा करती । कोई दूलहके सुन्दर स्वरूपको एकटक बद्धदृष्टि देखती काइ दूलहके स्वरूपकी श्लाघा करती । कोई आतशबाजीपर मोहित होती । तात्पर्य्य यह कि, बरातकी शोभासे सुशोभित हुआ नूतन लाहौर ऐसा प्रिय प्रतीत होनेलगा कि, जिसके आगे प्राचीन लाहौर कदाचित् स्मरणमें भी न आता था । प्रथम परस्पर मिलनेकी रीति उचित विधिसे करी । पीछे दूलहको अन्दर घरमें बुलाया । और बरातको बाहर उत्तम स्थानमें उतार दिया। और सबके वस्त्र रंग डालकर रंगीन करादिये पश्चात् भोजन पंक्तिके लिये बरातको बिठलाया तरह २ के पाकन्नोंसे तथा वस्त्राच्छादनादिसे हरियशरायनेभी बरातकी ऐसी खातिरी करी कि, सभीके चित्तको अपनी खातरीसे तथा नम्रभावसे वशवर्ती करलिया । बहुत दिनतक बरातको अपने घरमें रक्खा । हरियशराय हररोज बरातपर रंग डालता । और बरात फिर प्रातः श्वेत वस्त्र पहनकर आती । जबतक बरात रही प्रतिदिन ऐसेही होता रहा । पश्चात् अनेक प्रकारके वस्त्राभूषण अलंकार स्वर्ण रजतादिके बर्तनादि अनेक प्रकारकी सामग्री साथ प्रदान करके हरियशरायने अपनी पुत्रीको तथा बरातको प्रसन्नतापूर्वक अपने घरसे रवाना किया । तात्पर्य्य श्रीगुरुगोवि-

न्दसिंह महाराजका विवाह बडी धूम धामसे पूर्ण हुआ । और यह डोला लेकर अपने घर शहर आनन्दपुर चले आये । इनकी माताने अपनी रीतिरस्मके अनुसार पुत्र तथा बहू दोनोंके शिरपर पानी वारण करके पान किया । और कुछ अशरफियाँ नौछावर करके इनाममें बाँटी । चारों तरफसे बधाईके शब्द सुनाई देने लगे । जय २ की ध्वनिके साथ श्रीगुरुजीका विवाह समय आनन्दपूर्वक व्यतीत हुआ । उसके पीछे दो वर्षतक और भी आनन्द मङ्गल रहा परन्तु उसके थोडेही दिन पीछे समयने अपना रंग बदल डाला । गगनमण्डलमें चारोंओर कालिमा छाय गई । अर्थात् इनके पूज्य पिता श्रीगुरुतेगबहादुर साहिबजीने इनको धर्म सम्बन्धि उचित शिक्षा देकर तथा गुरुगादीका यावत् कार्य्य इनके शिरपर डालकर स्वयं दिल्लीकी तरफ धर्म पर शिर देनेके लिये गमन किया । वहाँ पर औरङ्गजेबको अत्याचारकी कालिमासे निरवधिक कलुषित करके उचित समयपर सनातन आर्य्य धर्मपर अपना शिर समर्पण किया । जब यह समाचार श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीको मिला और जीवन रंगरेटेने श्रीगुरुतेगबहादुरजीका शिर भी लाकर हाजिर किया तो उन्होंने औरङ्गजेबके इस अत्याचार पर हाथ मल मल बहुतही अफसोस किया और अपने गम्भीर भावसे दृढचित्त होकर पूज्य पिताके स्मरणमें ।

" साधु न हेत अवि जिन करी ।
शीश दिया पर सी न उचरी ॥
धर्म हेत शाका जिन किया ।
शीश दिया पर शिरह न दिया ॥ १ ॥ "

इत्यादि अनेक छन्दोंको प्रेमसे श्रीमुखसे वारंवार उच्चारण किया । फिर चिता बनाकर पिताके शिरका दाह करके वहाँपर एक अतिमनोहर देहरा बनवा दिया । और परमेश्वरकी भावि पर दृढ विश्वासबद्ध होकर अपने पूज्यपिताके खूनका बदला लेनेके लिये तथा इसी मिससे धर्म विरोधी गणके वैभवको धूलिमें मिलानेके लिये चित्तसे दृढप्र-

तिज्ञ हुये । और अपने दादा श्रीगुरुहरिगोविन्दजीकी तरह देश देश-में अपने शिष्यलोगोंको यही लिख भेजा कि, आज कल जो कोई से-वक हमारी भेंटमें उमदा घोडा या कोई उत्तम शस्त्र लावेगा उस पर हम निहायत प्रसन्न होंगे तथा गुरुमाहराजके प्रसादसे उस शिष्यके सभी मनोरथ पूर्ण होंगे श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजके लिखेको देख कर चारोंओरसे शिष्यलोग सुन्दर २ घोडे तथा तरह २ के अस्त्र शस्त्र श्रीगुरुजीके प्रसन्न करनेके लिये भेंटमें लाने लगे । गरीबसे गरीब शिष्य भी श्रीगुरुजीके दर्शनको आता तो तलवार, बरछी, नेजे, किर-च, कुठार, करद, चक्रादिसे खाली न आता । श्रीगुरुजी भी प्रेमसे प्रत्येक शस्त्रको अपने हाथमें उठाकर देखते और श्लाघा पूर्वक पीछे कुठार मेघजीनमें जमा करवाते । घोडा घोडी या खच्चर जो कोई आता उसपर भी आप उसीदिन सवार होकर देखते और लानेवाले शिष्य पर बहुतही प्रसन्न होते तथा आशीर्वाद देते । इसी तरह प्रतिदिन दो चार घोडे तथा दसबीस तरह २ के शस्त्र अस्त्र आने लगे । थोडेही दिनोंमें श्रीगुरुजाके तबेलोंमें तरह २ के सहस्रों घोडे दीखने लगे । तथा रंग रंगके लक्षों शस्त्र टण टणाने लगे । उन्हीं दिनोंमें श्रीगुरु-गोविन्दसिंहजी महाराजने ऐसे भी किया कि, अष्टादश वर्षसे ऊपर तथा पचाससे नीचेकी आयुका जो शिष्य दर्शनको आता उसको जहांतक बने अपने पासही रखलेते । अपने शिष्यलोगोंसे उसमें भी युवा शिष्योंसे ऐसा प्रेम करते कि, उनको अपने माता पिता भूलजाते किन्तु गुरुजीके साथ रहनाही उनको पसन्द पडता । यदि कोई शि-ष्य कुछकाल सेवामें रहकर घरमें जाना चाहता तो उसको प्रसन्नता पूर्वक घर जानेकी आज्ञा भी देते । और फिर शीघ्र आनेका अनुरो-ध भी करते । जितने युवा शिष्यलोगोंका मण्डल आपके पास रहता उन सबको शस्त्र अस्त्र चलानेकी शिक्षा दिलवाते । तथा घोडोंपर सवार होना सिखलाते । दो दो चार चार छः छः मास सेवामें रह कर जाने आने वाले शिष्यलोगोंके शिवाय सहस्रों नौजवान श्रीगुरुजीके प्रतिक्षण

पास भी रहने लगे। सहस्रों नर नारी प्रतिदिन दर्शनको आते जाते श्रीगुरुजी सायं प्रातः दोनों वक्त शिष्यगणको उपदेश भी करते। परन्तु प्रतिदिन भिन्न भिन्न विषयके हरएक उपदेशके शेषमें उच्चस्वरसे तीनवार यही उच्चारण करते कि, सर्व सुख सिद्धिका मूल परस्पर भ्रातृगणका साम्य है। इस लिये सबको साम्य रखना चाहिये। प्रति दिन घोडोंपर सवार होकर अनेक शिष्यलोगोंको साथ लेकर जंगलमें शिकार खेलने जाते। इनको भी अपने दादाकी तरह घोडेकी सवारी शिष्यगणकी मददगारी नेजबाजा तीरनदाजी अपने बलके परीक्षण करने तथा शिकारादि खेलनेका बहुतही शौक था। और अपने दादा हीकी तरह ऊंचे लम्बे दृढकाय तथा सुन्दरस्वरूप जवान मर्द थे। आपकी छोटीही आयुके बल वीर्यके कार्योंको देखकर भीम अर्जुनादिकका स्मरण होता था। साहस शक्ति, शौर्य औदार्य्य सत्य प्रेम तथा उद्योग इत्यादि सद्गुण मानो श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजके मिससे शरीर धारण किये लोकमें विचर रहे थे। भजन स्मरण कीर्तन सदुपदेशका प्रचार तथा लंगरकी सेवा इनके समयमें भी किसी तरहसे पूर्व गुरुओंके समयसे कम न था। इनके विचित्र तथा अलौकिक प्रबन्धोंको देख २ कर वृद्ध २ शिष्यलोग आश्चर्य हुआ करते थे। आपके मुखमण्डलकी आभा दर्शक चकोरोंके लिये कार्तिक पूर्णचन्द्रसे भा अधिक आकर्षण रखती थी। समग्र शरीरके अंग प्रत्यंगोंकी शोभा कामकी कान्तिको भी तिरस्कार करती थी। सदाचार सहित प्रेमपूर्वक आपका वर्ताव प्राणीमात्रके चित्तको आकर्षण करलेता था। हरतरहके सामानके जमा होजानेसे आपने बादशाही ठाटसे रहना प्रारंभ किया। और हिन्दूप्रजाके अग्रणी होकर उनके संरक्षण करनेकी प्रतिज्ञा करी। उन्हीं दिनोंमें मार्गशीर्ष मिति ८ संवत् १७३३ विक्रमीमें राजा रत्नराय आसामदेशकामालिक जो कि, श्रीगुरुतेगबहादुर साहिबजीके आशीर्वादसे उत्पन्न हुआ था और श्रीगुरुतेगबहादुर जीके भविष्यत् वचनानुसार जिसके पेटके बामभागपर श्रीगुरुजीकी

कूपका चिह्न था तरह २ के तोफे तथा नकद लेकर श्रीगुरुजीके दर्श-नोंके लिये शहर आनन्दपुरमें आया। राजा साहिबके लाये हुये तोफा पदार्थोंमें एक पश्चकला शस्त्र था जिसमें बरछी बन्दूक, गुरज पेश-कबज तथा कुठार यह पाँच शस्त्र भिन्न २ निकल आते थे। और फिर एक ही हो जाता था। वह पाँचों गुप्तसे हुये दीख पडते। और एक सन्दलकी चौकी जिसके चारोंकोनोंमें यह सिफत थी कि, जब उस पर विराजमान होकर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराज स्नान करते तो चारों कोनोंकी चारों पुतलियाँ निहायत खूबसूरत बनी हुई खुद बखुद निकलकर खिदमतमें हाजिर होती। और वही राजा पाँच घोडे भी श्रीगुरुजीके लिये ऐसे उत्तम अधिक कीमती मय जीनादि सामानके लाया कि, गुरुजी उनको देखकर बहुतही प्रसन्न हुये। और एक मस्त हस्ती लाया कि जिसके अग्रभागमें सुपेद फूलोंकेसे निशान और पुच्छतक सारी पीठपर एक श्वेत तख्तका निशान था इतनी चीजें उक्त राजाने श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजके हजूर बतौर नजर भेंटके पेश करी। जिनको आपने बडी प्रसन्नतासे स्वीकार किया। और राजाको एक मुद्दततक पास रखकर सयर शिकारकी बहार दिखलाकर अनेक प्रकारके भक्ति ज्ञान बैराग्य तथा राजनीतिके उप-देशोंको सुनाकर प्रबुद्ध किया और अनेक तरहकी शिक्षा देकर सन्तुष्ट किया। मूर्तिपूजासे वारणकर ज्ञानमार्गमें प्रवृत किया। राजा भी श्रीगुरुजीके समागमसे बहुत कृत कृत्य हुआ और अपनेको पुण्य शील समझने लगा। शेषमें बहुत कालतक श्रीगुरुजीके सदुपदेशोंका लाभ उठाकर अपने देशको रवाना हुआ। श्रीगुरुजीने भी प्रसन्नता-पूर्वक देश जानेकी आज्ञा दई।

इति पश्चत्रिंशोऽध्यायः॥ ३५॥

अथषड्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

उसके पीछे संवत् १७३८ विक्रमीके वैशाखीके मेलापर एक शहर काबुलमें रहनेवाले दुनीचन्द्र नामक क्षत्रिय सेवकने एक उमदा पशमीनेका सुनहली चोबोंका खेमा(तम्बू)और एक स्वर्णमय कलाबत्तूसे गुम्फित पशमीनेकी कनात अनेक तरहके और भी सुन्दर २ पदार्थोंके साथ मिलाकर और कुछ नकद जिनस श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजकी भेंट मिलाकर अर्पण करी। जिनको देखकर आप बहुतही प्रसन्न हुये। और उसको अपने सत्यपूरित तथा प्रेमभरे उपदेशोंसे सुबोध किया फिर उसी सालमें एक शिकारपुर निवासी सेठ गगनमल्ल नामक श्रीगुरुजीके दर्शनके लिये आया। और अपने व्यापारके लाभका दशमांश लेकर अर्थात् १०००० दश हजार रुपयेकी अशरफियां लेकर सपरिवार चरणोंमें हाजिर हुआ। और भी बहुत लोग उसके साथ दर्शनके लिये आये थे। उन लोगोंने भी श्रीगुरुजीके प्रभावको देखकर सहस्रों रुपया भेंटमें अर्पण किया इसी तरह चारोंतरफके दूर २ के शिष्यलोग अनेक तरहका युद्धका सामान तथा तरह २ की नकद् जिनस भेंट पूजा ले लेकर प्रतिदिन आने जाने लगे। थोडेही कालमें आपके पास लक्षों रुपये साथ रंग रंगका युद्धका सामान चारोंतरफ भरा हुआ दीखने लगा। बहुत अल्पकालके भीतरही आपकी विभूति बादशाही विभूतिको भी नीचा दिखलाने लगी। चारोंतरफ दूर २ तक आपके गुण ग्रामकी अनायास ही प्रख्याति हो गई। प्रतिदिन आपके तेज प्रताप धन धान्य आदिकी वृद्धि देखकर राजा भीमचन्द्र कहलूरिया जो कि वर्तमानमें रियास्त विलासपुरके नामसे पुकारा जाता है आपकी मुलाकात करनेके लिये आया और श्रीगुरुजीके प्रशादी नामक हस्तीको देखकर विमोहित होगया। अनेक तरहसे राजा भीमचन्द्र बिलासपुरियाने चाहा कि,यह प्रशादी नामक हस्ती श्रीगुरुजीसे मेरेको मिल जावै। परन्तु श्रीगुरुजीने उसके

मांगने परभी सर्वथा देनेका इनकार किया। राजाको इस वार्तासे बहुत-ही क्लेश हुआ। और श्रीगुरुजीके विषयमें असम्भावितसी बुद्धि करके अपनी रियास्तको चला आया। और अपनी राजधानीमें आनकर प्रसंग २ से प्रतिदिन श्रीगुरुजीकी बात चीत निकालता और कुछ निन्दाकी तौरपर वर्णन किया करता। कहता कि बहुत लोग गुरुगो० बिन्दासिंहजीको उदार कहा करते थे। हम भी देख आये एक हाथी हमने माँगा परन्तु उसने मोल लेकर भी देनातक न स्वीकार किया। हाँ दाल रोटी बाँटनेका उदार अवश्य है। और दाल रोटीके भूखेही उसकी उदारताको गाया करते हैं। परन्तु राजा महाराजोंके साथ वर्तन व्यवहार करनेका उसको कुछ भी शहूर नहीं है। इत्यादि भीम चन्द्रके प्रतिदिनके वचन शिष्यलोगोंद्वारा श्रीगुरुजीके दरबारमें भी पहुँच जाते। उसकी उपराम वृत्ति देखकर स्वयं उपरत श्रीगुरुजी भी उससे उपराम होगये। कुछ दिनके पीछे राजा भीमचन्द्रके पुत्रका विवाह जो कि, राजा फतहशाह श्रीनगरवालेकी पुत्रीसे नियत किया गया था उसका समय समीप आया। तो फिर भीमचन्द्रने बरातमें लेजानेके लिये श्रीगुरुजीसे हस्ती माँग भेजा। इसी वार्ताके लिये अपने मुसाहिबको श्रीगुरुजीके पास भेजा। परन्तु चित्तमें कपट यह था कि, एकवार हाथी आनेसे फिर नहीं देवेंगे। श्रीगुरुजीने उसका-लमें भी देनेके लिये इनकार किया। कहा कि, यह हस्ती किसी दुनियाँकी कामोंमें लाने योग्य नहीं है। क्योंकि इस पर श्रीगुरुजीकी सवारी निकला करती है। उसके पीछे उसी बहानेको लेकर राजा भीमचन्द्र स्वय श्रीगुरुजीके पास पहुँचा। और हाथी बरातके लिये माँगना चाहा। श्रीगुरुजीने राजाकी सभी तरहसे उचित खातरी करी साथमें शिकार खेलने ले गये। बडे प्रेमसे वर्ताव किया। परन्तु जब हाथीका प्रसंग निकला तो आपने साफ जुवाब दिया कि, यह हस्ती दुनियाँकी कार्योंमें नियुक्त नहीं किया जाता। क्योंकि भेंट देनेवाले शिष्यने केवल गुरुहीकी सवारिका अनुरोध किया है। जिससे हम

इसके देनेके लिये लाचार हैं श्रीगुरुजीका ऐसा रूखा जुवाब सुनकर राजा भीमचन्द्र बहुतही उदास हुआ। और क्रुद्ध होकर उठकर बोला कि, स्मरण रखना यही हाथी तुमसे जोर और जुलुमसे लिया जायगा। और तुमको हमारे इलाकेमें रहनातक भी कठिन हो जायगा । उसके उत्तरमें श्रीगुरुजीने कहा कि, जो हुक्म अकालपुरुषका होगा वह होगा तेरा किया कुछ भी नहीं होसक्ता । जिस पर राजा भीमचन्द्र बहुतही दुःखित चित्त होकर घरको चला आया और माघमास संवत् १७३९ विक्रमीमें श्रीगुरुजीके ऊपर सेना लेकर चढाई करके आया। आगेसे श्रीगुरुजीने भी बहुतही घर बीरतासे उसका उचित समयपर सामना किया । थोडीही देरके युद्धमें उसको फिर पीछे घरका मार्ग देखना पडा । अनेक प्रकारका युद्धका सामान लुटाकर भीमचन्द्र पीछे भाग गया । उसके चित्तमें खूब सन्नद्ध बद्ध होकर दूसरी बार फिर हमला करनेका विचार भी था । परन्तु पुत्रके विवाहके दिन बहुतही समीप जानकर शान्त रहा । उसके पीछे ज्येष्ठ मिति ८ संवत् १७४१ विक्रमीमें नाहन वाले राजा मेदिनीप्रकाशने जो कि, राजा भीमचन्द्र कहलूरियेसे चित्तसे रंज रखता था परन्तु श्रीगुरुजीका मनसे परम-प्रेमी था श्रीगुरुजीको अपने पास शिकारादि खेलनेके लिये प्रेमपूर्वक बुला लिया श्रीगुरुजी भी उस प्रेमीपुरुषके पास जाकर बहुतही प्रस-न्नतापूर्वक निवास करते तथा सदुपदेशोंका प्रचार करते । और कुछ दिनोंके पीछे उचित समय जानकर श्रीनगरवाले राजा फतहचन्द्रको जो कि, श्रीगुरुजीका चित्तसे प्रेमी था परन्तु नाहनवाले राजा मेदिनी प्रकाशसे उसकी कुछ परस्पर बिगडी हुई थी श्रीगुरुजीने नाहनमें बुला भेजा और दोनों राजाओंको उपदेश करके आपसमें मिलाप करा दिया । और जब शिकारको जाते दोनों राजाओंको अपने साथ लेकर जाते । तलवारों तथा तीरोंसे प्रतिदिन सिंहादि भयानक जीवोंको मारकर अपनी बहादुरीका परिचय दोनों राजाओंको दिख लाते उन्हीं दिनोंमें नाहनवाले राजाके कहनेसे कार्तिकमास संवत् १७४१

विक्रमीमें श्रीगुरुजीने उसी प्रान्तमें सुन्दर स्थल देखकर एक पावटा नामक ग्राम आबाद किया । और अपने शिष्य सेवक मण्डलके समेत सभी परिवारको श्रीगुरुजीने आनन्दपुरसे उसी ग्राममें बुला लिया वहाँपर एक किला तैयार करवाकर जिसके चिह्न वर्तमानमें भी विद्यमान है उसमें निवास करने लगे । उन्हीं दिनोंमें एक प्रसिद्ध सय्यद बुद्धुशाह नामक फकीर कसबा साढौरासे आपकी मुलाकात करनेको आया । और मिलकर परमेश्वर विषयक तथा उसकी विचित्र रचना विषयक अनेक प्रकारके प्रश्न उत्तरोंको कर सुनकर बहुतही प्रसन्न हुआ । उन्ही दिनोंमें श्रीगुरुहरिराय साहिबके पुत्र श्रीरामरायजी भी दरियाय यमुनाकी किश्तीपर बैठकर आपके मिलनेको आये । और परस्पर मिलापसे उभयत्र बहुतही आनन्द हुआ । उन्हीं दिनोंमें श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने सय्यद बुद्धुशाह फकीरकी सिपारशसे सरदार कालेखान नजामतखान हय्यतखान तथा भीक्षणखान इत्यादि जो कि, कसबा दामलाके निवासी थे । अपने पास नौकर रख लिया । यह लोग बादशाही स्वाधीनतासे विरुद्ध होकर अपने साथ पाँचसौ सवार लिये देशमें जहाँ तहाँ फिरा करते थे । कोई भी राजा महाराजा बादशाहीदण्डसे भयभीत होकर इन लोगोंको आश्रय नहीं देता था । बुद्धुशाह फकीरके अनुरोधसे श्रीगुरुजीने पाँचसौ सवारोंके सहित सभी सरदारलोगोंको आदरसे अपने पास नौकर रख लिया । उसके पीछे कार्तिकमासमें कपालमोचन तीर्थके मेलेपर जाकर श्रीगुरुजीने अपना अन्नक्षेत्र लंगर जारी किया । आस पासके मुसद्दीलोग सुनकर अनेक शिष्यलोगोंको साथ लेकर आपके दर्शनको आये । और सभीने अपनी २ श्रद्धा भक्तिसे सामर्थ्यानुसार नगद जिनस श्रीगुरुजीकी भेंटमें अर्पण किया । श्रीगुरुजीने भी उन सबको नीति, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति भरे सदुपदेशोंसे निहाल किया तथा यथायोग्य सबको सत्कारपूर्वक शिरोपाग देकर रवाना किया जब श्रीगुरुजी मेलेसे पीछे अपने शहर पावटामें आये तो

बाबा रामरायके घरों पंजाब कुँवरि बाईने देहरादूनसे श्रीगुरुजीको ऐसा लिख भेजा कि, दीनबन्धो मेरापति किसी कार्य्य विशेषके लिये समाधिस्थ हुआ था। परन्तु मुसद्दीलोगोंने उसको उस कालमें मुरदा मशहूर करके जला डाला है। और धन माल सभी लूट लिया है। मेरा कहा किसीने कुछ नहीं सुना। आप कृपाकर आवें तो मेरी सहायता हो। श्रीगुरुजी पंजाबकुँवरि बाईका ऐसा पत्र बाँचतेही पाँचसौ सवारोंको साथ लेकर देहरादूनमें पहुँचे। वहां जाकर उन अत्याचार करनेवाले मुसद्दीलोगोंको उचित दण्ड दिया और बाबारामरायजीकी सभी जायदातका अधिकार उक्त बाईको देकर तथा उसके आगे एक भलेपुरुषको प्रबन्धकर्ता नियतकरके आप अपने शहरमें चले आये। श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजकी जैसे अपने शिष्यवर्गको शूर वीर तथा युद्धप्रिय बनानेकी इच्छा रहती थी वैसेही हरएक विद्याके विद्वान् बनानेकी भी बहुतही अभिलाष रहती थी। श्रीगुरुजी विद्यामें बहुतही प्रियबुद्धि रखते थे। तथा हरएक विद्याके विद्वान्की बहुतही प्रतिष्ठा किया करते थे। और यह भी चाहते थे कि, हमारे शिष्य, वर्गमें हरएक विद्याका उत्तम रीतिसे प्रचार होना चाहिये। क्योंकि विद्याही इस पुरुषको दिव्य चक्षु देती है; जिसके प्रभावसे यह पुरुष तरह २ के गुह्य पदार्थोंके मर्मको जानने लग जाता है। विद्याहीके प्रभावसे यह पुरुष पशुओंसे विशेषता लाभ कर सक्ता है। इस लिये विद्याका प्रचार तथा सत्कार हमारे शिष्यवर्गमें अवश्य होना चाहिये। इसी वार्ताको शोचकर एक दिन श्रीगुरुजीने अपने पाँच सात शिष्योंको संस्कृत पठन करनेके लिये नियुक्त किया। और रघुनाथ नामक पण्डित जोकि आपको प्रायः प्रतिदिन उपनिषदोंकी कथा सुनाया करता था उसके पास अपने शिष्योंको यथायोग्य भेंट पूजा देकर भेजा। उस दिन पण्डितने उनको किसी एक मिससे टाल कर पीछे भेज दिया। और संस्कृत विद्याका आरम्भतक भी न करवाया। यद्यपि पठन पाठनके विषयकी वार्ता श्रीगुरुजीने अने-

कबार रघुनाथ पण्डितके आगे चलाकर अपने शिष्योंको भेजा था ।
तथापि " मनस्यन्यत् वचस्यन्यत् " का वर्ताव करनेवाले पण्डित-
जीने श्रीगुरुजीके आगे अनेकवार शिष्यों (सिक्खों) का पढना
स्वीकार करके भी अन्तमें समय पर टाला वाला करके निर्वाह किया ।
दूसरे दिन श्रीगुरुजीने कथाकालमें फिर इसी प्रसङ्गको चलाया तो
पण्डितजी स्पष्ट यही बोल उठे कि, महाराज आपके शिष्य (सिक्ख)
लोग प्रायः जाट खत्री अरोड बढई कहारादि छोटी कौमोंके होते हैं ।
उनकी गणना धर्मशास्त्रमे शूद्रजातिमें करी है । इसलिये इनको वेद-
शास्त्र पठन पाठनका अधिकार नहीं है । पण्डितके इस स्वार्थ पूरित
उत्तरको सुनकर श्रीगुरुजी बहुतही प्रसन्न हुये । और श्रीमुखसे
उच्चारण किया कि, पण्डितजी महाराज जिस पवित्र विद्याको आपकी
जातिने अपना रोजगार तथा जीविका जान रक्खा है । तथा जिस
पवित्र विद्याको आपकी जातिने दूसरोंके लिये हराम कह रक्खा है ।
तथा जिन हमारे शिष्यलोगोंको आप अधम समझते हैं वही अब
परमेश्वरकी कृपासे सर्वशास्त्र संपन्न बडे २ पण्डित हुआ करेंगे ।
और आपलोगोंको जाति जिसको आप अपने चित्तसे पवित्र मानते
हैं । तथा विद्या शून्य होंगे । और यदि कोई विद्वान् होंगे तो हमा
रेही शिष्यवर्गके सम्बन्धसे विद्या लाभ करके होंगे और यह अध्या-
त्मिक विद्या भाविमें किसीके भी रोजगारके लिये न होगी । तथा
किसी भी जाति कौम या फिरकेमें नियत नहीं रहेगी किन्तु प्रयत्न-
शील बुद्धिमान् पुरुष जो कोई अभ्यास करेगा उसको लाभ होगी ।
इत्यादि वचनोंके पश्चात् श्रीगुरुजीने अपने पाँच शिष्य जो कि, विम-
लबुद्धि तथा नौजवान थे काशीजीमें संस्कृतविद्या अभ्यासके लिये
उसीदिन रवाना किये । अमृतपानके पीछे एक रामसिंह दूसरा
कर्मसिंह तीसरा गण्डासिंह चौथा वीरसिंह तथा पाँचवाँ शोभासिंहके
नामसे सबसे प्रथम निर्मल पण्डित यही पाँच प्रख्यात हुये । इनको
श्रीगुरुजीने अपनी कृपाके पात्र समझकर श्रीकाशीजीमें ब्रह्मचारीके

वेशसे भेजा था। अर्थात् शस्त्र शास्त्रोंके सम्बन्धसे पृथक् करके शुद्ध विद्यार्थी बनाकर रवाना किया था यह पांचों उस कालमें काशीजीमें स्थान चेतनबटपर जाकर टिके थें जहाँ पर वर्तमानमें एक निर्मलेसाधु लोगोंका एकभारी अखाडा (निवासस्थान) है । उसी स्थानमें यह पाँचों शहरक किनारे शून्यस्थल जानकर निवास करने लगे। कुछ कालतक विद्याअभ्यास करके पीछे शहर आनन्दपुरम श्रीगुरुजीके पास आये तो आपने उनको अपने पास रक्खा और फिर पाँच और भेजदिये। बस इसी तरहकी निवास परंपरासे चेतनबटका स्थान निर्मलसाधुलोगोंके अधिकारमें हुआ। वस्तुतः यदि वर्तमानके निर्मल ग्रन्थके साधुलोगोंकी ओर दृष्टि करी जावे तो श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजकी कृपाका तथा उनके भविष्यत् वचनका स्पष्टही परिचय मिल सक्ता है। ॐ नमः सिद्धम्, से लेकर वेद वेदाङ्ग शास्त्रोंतक कोई ऐसा ग्रन्थ नहीं जो कि, औरोंको आता हो और निर्मलोंको न आता हो । उन्ही दिनोंमें श्रीगुरुजीने अपने शिष्योंसे तथा और पण्डित लोगोंसे भागवत महाभारत विष्णुपुराण उपनिषद इत्यादि अनेक ग्रन्थोंका अनुवाद भी करवाना प्रारम्भ किया था । छोटे २ प्रकरण भाषा कराकर अपने अल्पश्रुत शिष्यलोगोंमें प्रचार करते थे। क्योंकि हरवक्त आपके चित्तमें यहीभाव रहता था कि, हमारे शिष्यलोग शस्त्र तथा शास्त्र दोनोंके मर्मको भलीप्रकार पावें तो किसी तरहसे भाविमें क्लेश नहीं उठावें उन्हीं दिनोंमें वैशाख मिति ९ संवत १७४२ विक्रमीमें जब राजा भीमचन्द्रकहलूरियेने अपने पुत्रका विवाह प्रारम्भ किया और बडी धूमधामके साथ अपने पुत्रकी बरात लेकर राजा फतहशाह श्रीनगरवालेक घर विवाहनेको पहुँचा । तो उसी कालमें श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने भी समयपर उचित शिष्टाचार करनेके लिये अपने दीवान नन्दचन्द्रके हाथ बहुतसे मणिमय स्वर्णके आभूषण वस्त्र तथा कुछ नकद देकर दोसौ सवारसे संरक्षित करके सन्मान पूर्वक राजा फतहशाहकी पुत्रीके लिये ताम्बूल भेजा।

जिसको देखताही राजा भीमचन्द्रकहलूरिया जल बल गया । और उसी समयपर राजा फतहशाह अपने सम्बन्धियोंको कहने लगा कि, गुरुगोविन्दसिंह हमारा पूरा शत्रु है । यदि तुम उसके साथ मेल मुलाकात रक्खोगे या उसका ताम्बूल ग्रहण करोगे तो हम आपकी पुत्रीका डोला यहाँही छोड जावेंगे । उसकालमें राजा फतहशाहने लाचार होकर श्रीगुरुजीके ताम्बूल लेनेसे इनकार किया । एवं खाट बिछाई कालमें राजाओंकी भरी सभामें जब श्रीगुरुजीके शिष्टाचार पूर्वक प्रेषित ताम्बूलका निरादर हुआ तो उसका सहन दीवाननन्द-लाल न कर सका उसने क्रुद्ध होकर साथके सवारोंको उसी काल आज्ञा दी कि, यह खाट बिछाई वर्तन पात्र।भूषण वस्त्र सभी लूट लिये जावें । दोसौ सवारोंने उस शान्तमय मंगल कार्य्यमेंसे उस कालमें थोडी देरतक ऐसी हलचल मचाई कि, सभी राजाओंके हवास उड-गये पीछे दीवान नन्दलाल सहायक सवारोंको साथ लेकर श्रीगुरुजीके पास चला आया। और वहाँका सारा हाल श्रीगुरुजीकी सेवामें निवेदन किया । जिसको श्रवणकर श्रीगुरुजी बहुतही अप्रसन्न हुये । उधर विवाह कार्य्यको समाप्त करके भीम चन्द्रने सभी राजाओंको मिलाकर एक सभा करी और उसमें यह सिद्ध किया कि, गुरुगोविन्दसिंह जो कि, हमलोगोंहीकी भूमिमें बस रहा है दिन व दिन ऐसा जोर पकडता जाता है कि, थोडे दिनोंमें इसका साधारण रूपसे सामना करना या और कोई प्रतिकार करना कठिन पडेगा इसलिये उचित है कि, सभी राजपूत लोग इसकी गत वर्तमान तथा भावि दशापर विशेष दृष्टि देवें । अन्यथा समयके निकलजानेसे क्लेश उठाना होगा। भीमचन्द्रकी इस वार्ताको सुनकर सभीने कहा । और शेषमें यह ठह-राव हुआ कि, वर्तमानमें सभी राजाओंकी फौज मिलकर उसपर चढाई करी जावे, और एकवार उसका बल तोड दिया जावे कि, फिर जल्दी वह कभी कहीं साहससे बलात्कार करना न पावे । सबकी सम्मतिसे दशहजार सेना एकत्र हुई । और राजा भीमचन्द्र कहलूरिया

राजा कृपालुचन्द्र कठौजिया, राजा केशरीचन्द्र जस्सोवालिया, राजा सुखदयाल जसरूठिया, राजा हरिचन्द्र हिण्डुरिया, राजा पृथ्वीचन्द्र डडालिया तथा राजा फतहशाह श्रीनगरिया। इत्यादि सभी राजा लोग आपसमें मिलकर उक्त सेनाको साथ लेकर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजपर चढाई करके चले आये। उधर श्रीगुरुजीको भी इन सबकी चढाईके समाचार मिल गये। इस लिये आपने भी उसी कालमें सेनाको चढाई करनेका हुक्म दिया। श्रीगुरुजी दो सहस्र सेनाको साथ लेकर चार कोश आगे भिंगाली नामक ग्रामके मैदानमें उनका सामना करनेके लिये आन खडे हुये। वैशाख मिति १७ संवत् १७४२ विक्रमीमें दरियाय यमुना तथा गरी नामक नदीके मध्यमें दोनों ओरसे सेना आन जमा हुई। दोनों तरफके शूरवीरोंकी परस्पर लडाई शुरू हुई। उभय दलके योद्धा मार मार करके मैदानमें बढने लगे। दना दन्न बन्दूकें चलने लगीं। सना सन्न तीर छूटने लगे। खटा खट्ट तलवारें बजने लगीं भाले, बरछी, किरचोंके चमत्कार विद्युत्की तरह विस्फुरण होने लगे। कातरोंके इस घटनाको देखतेही दमशोख होने लगे। तथा शूरवीरलोग ऐसे अवसरको पाकर उत्साहसे उछल २ नाचने लगे। शवभक्षी पक्षीगणने भी गगनमण्डलको आन आच्छादन किया। योगनियाएँ नाचने लगीं। रुधिरकी नदी वह निकली। मारमारका कोलाहल चारोंतरफसे सुनाई देने लगा। दिनभर यही दशा रही शेषमें अंशुमाली भगवान्ने भी अस्ता चलकी ओटमें मुख जाय छिपाया। शूरवीर भी परस्पर लडते हुये श्रमाक्रान्त होकर लडनेसे उदास होगये। रात्रि भगवती भी हरएकको आश्वासन करती हुई चारोंओरसे आन प्रविष्ट हुई डरपोक कातरोंके लिये तो अन्धकारका किला मानो आराम लेनेका एक अपूर्व साधन बनगया। किसीने किधरको दुम दबाई और कोई कहीं जा छिपा। शेषमें अर्द्धरात्रिकालके समय पांचसौ उदासीन नागे जो कि, श्रीगुरुजीके साथ बहुत दिनोंसे हलुआ पूरी खायकर आनन्द किया करते थे। दिनकी

भयानक घटनाको स्मरणकर सबही दम दबाकर भाग गये । केवल एक कृपालुदास नामक महंत अपने पाँच शिष्योंके साथ बना रहा । दूसरे दिन फिर घोर युद्ध आरम्भ हुआ । श्रीगुरुजीके पक्षको बहुत निर्बल जानके कालेखान आदि मुसलमान सरदार लोग जो कि, गुरुजीके बुद्धुशाह फकीरकी फरमायशसे नौकर रक्खे गये थे । गुरुजीके पक्षको छोडकर दूसरे दिन प्रातःकाल राजालोगोंके साथ जाय मिले । उन्होंने मनमें यह विचारा कि, इतनी सेनाके सामने गुरुकी जीत कदापि होनेकी नहीं किन्तु वे राजालोगही जीतेंगे । जब जीतेंगे तो गुरुका माल खजाना उस कालमें अवश्य लूटा जायगा । तो उसका भेद जैसे हमलोगोंको मालूम है दूसरेको नहीं इसलिये उस लूटमें हम अपनी उमर भरका खानेको अवश्य लाभ करलेंगे । बस इत्यादि मिथ्या मनोरथ उन मुसलमान निमकहरामोंके श्रीगुरुजीसे विपरीत होनेके थे । पाँचसौ उदासीन नागे भागे तथा दूसरे दिन पाँचसौ सवार सिपाहियोंके साथ लेकर इन मुसलमानोंने निमकहरामी करी । पीछे श्रीगुरुजीके पास शुद्ध शूरवीरोंकी केवल एक सहस्र फौज रहगई परन्तु उन मुसलमान सरदार लोगोंकी निमकहरामीका हाल उसी कालमें बुद्धुशाह फकीरको भी जिसकी सिफारिशसे यह लोग रक्खे गये थे फौरन् पहुँचा । वह उसी समय दोहजार सवार तथा प्यादाको साथ लेकर श्रीगुरुजीकी मददमें आन खडा हुआ । उसके आतेही जंगका मैदान खूब गरम हुआ । लालचन्द्र हलवाई नन्दलालशाही महन्त कृपालुदास साहिब चन्द्र इनका मामू कृपालुचन्द्र, दीवाननन्द चन्द्र माहरीचन्द्र, भाई सेगु, भाई जीतमल्ल, गुलाबराय, गंगाराम, दयाराम, भाई जीवन इत्यादि शूरवीर लोग श्रीगुरुजीकी तरफसे विशेष रूपसे तन मनसे युद्धमें तत्पर रहे । गोली और तीरोंकी चारोंओर वर्षा वर्षने लगे । खूनके पतनाले चलने लगे । अच्छे २ बहादुरों तथा दिलावरोंके मुख फिरा दिये । तात्पर्य्य यह कि, तीन दिनतक युद्ध भूमिका लगा, तार यही हाल रहा । किसीने भी किसी तरफसे पीछा न दिखाया ।

शेषमें कालेखान और हय्यातखान सरदार लोग जो कि, निमकहरामी करके शत्रुकी सेनामें जाय मिले थे । महन्त कृपालु दासजीके हाथसे दोनों मारे गये । और नजावतखान भाई लालचन्द्रजीके हाथसे कतल हुआ । परन्तु राजा हरिचन्द्र जो कि, एक मशहूर तीरन्दाज था खास श्रीगुरुजीके सामने आया । और प्रथम तीरसे श्रीगुरुजीके घोडेको गिराकर दूसरे तीरका लक्ष श्रीगुरुजीको बनाया । परन्तु पार्श्वभागसे निकलनेवाला तीर श्रीगुरुजीके कायेस किंचित् स्पर्शमात्र करता हुआ भी क्षत किये विना खाली नहीं गया । पश्चात् अपना वार सम्भालकर श्रीगुरुजीने उस राजा हरिचन्द्रको ऐसे तीरका लक्ष बनाया कि, उसके लिये दूसरे तीर ताननेकी आवश्यकताही न हुई । अर्थात् एकही तीरसे उसका सभी काम तमाम हुआ । प्राण हवा हुये और उसने भूमिकी शरण ग्रहण करी । और दूसरे तीरसे श्रीगुरुजीने राजा केशरीचन्द्र तथा सुखदेवचन्द्रको शख्त जखमी कर दिया । इन तीनोंके गिरतेही पहाडी राजाओंकी सेनाके सिपाहीलोग बेहाल होने लगे । और सामना करनेके साहससे रहित होकर तितर वितर होने लगे । शेषमें एक दूसरेके मुखको देख २ पीछेको भाग निकले । श्रीगुरुजीकी सेनाके सिपाहीलोगोंने उनका कई कोशतक पीछा किया और बहुतसे लोगोंको प्राणरहित तथा जखमी भी किया जो कुछ उनका माल असबाब मिला वहभी लूट लिया यद्यपि श्रीगुरुजीकी तरफके भी भाई संघा भाई जयतमल्ल इत्यादि शूरवीर लोग तथा शय्यद बुद्धुशाहका पुत्र यह सब युद्धमें काम आये अर्थात् मारे गये तथापि शेषम विजयकी पताका श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजहीकी फहराई इस लिये उन लोगोंका कुछ विशेष शोक नहीं किया गया इस पूर्वोक्त प्रकारसे श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी माहराज पहाडी राजाओंको जीतकर विजयका डंका बजाते हुये अपने किले शहर पावटामें वापस चले आये और किलेमें आनकर बडी प्रसन्नताके साथ अपने सभी बहादुर लोगोंको यथायोग्य पारितोषिक बांटके सन्तुष्ट किया । और

सय्यद बुद्धुशाहको एक बेशकीमती पशमीना आधी पगडी और एक हुकमनामा (अपने हस्ताक्षर युक्त पत्र) श्रीगुरुजीने प्रदान किया । वह श्रीगुरुजाकी दिया हुकमनामा बुद्धुशाहकी वंशके लोगोंके पास अबतक श्रीगुरुजीके स्मरणार्थ विद्यमान है और आधीपगडी श्रीगुरुजीने महन्त कृपालुदासको प्रदान करी । महन्त कृपालुदासकी गादीक स्थान हेहर नामक कसबामें अबतक विद्यमान है ।

इति षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

अथ सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥

उसके पश्चात् श्रीगुरुजी अपनी माताकी आज्ञाके अनुसार ज्येष्ठ मिति १३ संवत् १७४३ विक्रमीमें सपरिवार अपने प्राचीनस्थान शहर आनन्दपुरमें चले गये । यहांपर शिष्यलोगोंके समुदाय तरह२ की भेंट पूजा ले लेकर चारोंतरफसे आने लगे । प्रतिदिन नूतन दर्शनाभिलाषियोंकी भीड होनेलगी । ज्ञान, वैराग्य, भक्ति तथा धर्मनीति राजनीति इत्यादि विषयोंपर प्रतिदिन उपदेश होनेलगे । श्रोतागण सुन २ कर भिन्न २ शाखाकी अज्ञान निद्रासे जागने लगे । श्रीगुरुजीकी पूर्वोक्त आज्ञाके अनुसार युद्धकी सामग्रीभी रंगरंगकी चारों तरफसे आने लगी । इधर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने उचित स्थानोंपर लोहगढ, आनन्दगढ, होलगढ, फतहगढ, इत्यादि नामोंसे जगह जगह किले बनवाने प्रारम्भ किये । और थोडेही दिनोंमें श्रीगुरुजीने अपना यावत् ठाट बादशाही तैयार कर लिया । चारोंतरफ पंजाब देशमात्रमें आपका ऐसा प्रभाव फैला कि, कोई हिन्दू सिवाय श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजके मुसलमानोंकी बादशाहीको कुछ भी न समझता । चोर, डाकू, लुटेरे, वंचक, गांठकटुए, जो कि, सदा इस प्रान्तके दुर्बल तथा सरल लोगोंको सताया करते थे श्रीगुरुजीने उनको पकड २ कर दण्ड देकर ऐसे सूधे किया कि, जिनको इस प्रान्तमें रहना स्वीकार हुआ उन्होंने सरलभाव ग्रहण किया । अन्यथा

जिनसे दुराचार छूटना कठिन था। उन्होंने देश छोड छोडकर भिन्न २ देशोंका मार्ग लिया इसलिये थोडेही कालके भीतर तमाम प्रान्तमें शान्ति स्थापन हुई। उन्हीं दिनोंमें माघ शुक्ल ४ संवत् १७४३ विक्रमीमें श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजके घरों माता सुन्दरीजीके गर्भसे एक महान् शूर वीर धर्मपर प्राण अर्पण करनेवाला सुपुत्र उत्पन्न हुआ। जिसका नाम युद्धमें विजयी होनेके कारण श्रीगुरुने "अजीत" सिंह नियत किया। उधर राजा भीमचन्द्र आदि पहाडी राजा लोगोंने भी देखा कि, इनकी शक्ति प्रतिदिन दुगुनी चौगुनी होती जाती है तो सबने परस्पर सम्मति करके इनके साथ मेल कर लिया। श्रीगुरुजी तो इस वार्ताको चाहतेही थे कि, इन पहाडी राजा लोगोंका हमारे साथ विपरीत भाव अच्छा नहीं है। क्योंकि स्वदेशी तथा विशेषकर एक जातिके भाई बन्धुओंका परस्पर विरोध कदापि सुखका हेतु नहीं होता पहाडी राजालोगोंके नम्र होतेही श्रीगुरुजीने उनके साथ बहुतही प्रेम पूर्वक वर्ताव करना प्रारम्भ किया। बादशाह औरङ्गजेबने दीन इसलामके प्रचारका काम जिन दिनोंमें देश पंजाबमें जोर शोरसे प्रारम्भ किया था। उन्हीं दिनोंमें साधारणरूपसे दक्षिण देशके महाराष्ट्रादि प्रान्तोंमें भी कर रक्खा था। श्रीगुरुतेगबहादुरजीके धर्मपर शीश देने पश्चात् पंजाबमें हलचल मची देखकर वहांसे उपराम होकर दक्षिण प्रान्तोंमें उसी अत्याचारका विशेष रूपसे प्रचार करने लगा मरहठा (महाराष्ट्र) लोगोंने अनेक स्थानोंमें सामना किया सहस्रों मनुष्य परस्पर लडकर मरगये तोभी औरंगजब अपने कर्तव्योंसे बाज नहीं आया। कई दिनोंतक दक्षिणप्रान्तमें दीन इसलामके प्रचारकी खटपट चली। फिर थोडेही दिनाक पाछ बादशाह औरगजेबको दक्षिण प्रान्तके किले गोलकुण्डा आदिसे जब अवकाश मिला तो उसने मियांखान, अलफखान तथा जवालफकारखान इत्यादि अपनी फौजके सरदारलोगोंको सेना साथ देकर पहाडी राजाओंपर

चढाई करवाकर भेज दिया । कारण उसमें यही था कि, श्रीगुरुतेग-बहादुरजीके धर्म पर शीश देनेके पीछे पंजाबदेशमें हलचल होनेके कारण तथा दक्षिणप्रान्तकी गडबडसे बादशाही प्रबन्धको शिथिल जानकर पहाडी राजालोगोंने कितने वर्षतक बादशाही दरबारमें अपने २ इलाकोंकी मालगुजारी (भूमिकर) नहीं भेजी थी । सरदार मियाँखान खुद तो जम्बूकी तरफ चला गया। परन्तु अपने छोटे भाई अलफखा-नको, राजा नाहन, राजा कहलूर, राजा नालागढ, तथा राजा चम्बा-के ऊपर चढाई करनेके लिये छोड गया । इसने फौरन् नादौन पहुं-चकर फाल्गुन मास संवत् १७४४ विक्रमीमें तमाम पहाडी राजाओं-पर इसकदर जोरसे दबाव डाला कि, पहाडप्रान्तमात्रमें चारोंतरफ हाहाकार मच गया । कृपालुचन्द्र कटौजिया तथा दयालुचन्द्र उसको भेंटले० कर जायमिले और सहकारी बनगये । पश्चात् भीमचन्द्र कह-लूरिये आदिके साथ लडाई होनेलगी । कुछ कालतक लडाई हुई । अन्तमें राजालोगोंकी फौज बादशाही सुशिक्षित फौजका सामना बहुत देरतक न करसकी । किन्तु पीठ दिखाकर भाग निकली । पीछे उसी कालमें राजा भीमचन्द्रादि पहाडी राजे मिलकर श्रीगुरुगोवि-न्दसिंहजी महाराजके पास सहायता लेनेको गये । और दशसहस्र रुपया बतौर भेंटके फौजका खर्च देकर श्रीगुरुजीसे अपनी सहायता-का अनुरोध किया । श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराज तो ऐसे अवसरका प्रतीक्षणही किया करते थे कि, कहीं यवनोंके साथ सामना होय तो उनको उचित शिक्षण दिया जावे । श्रीगुरुजीने उसी कालमें दीवान नन्दचन्द्र दीवान मोहरीचन्द्र तथा कृपालुचन्द्र इत्यादि अपनी सेना-के सरदार लोगोंको पांचसौ सवार साथ देकर उन लोगोंकी सहायता-के लिये मैदानमें भेजा। जिन्होंने पहुँचतेही एक थोडेसे समयमें बादशा-ही फौजके दांत खट्टे कर दिये और ऐसा धावा किया कि, शाहीफौ-ज पीछा देकर भाग निकली दूरतक श्रीगुरुजीके सवारोंने भी पीछा किया शेषमें विश्रान्त हुये । परन्तु राजा कृपालुचन्द्रका इनगडिये

तथा राजा हरिपुरकी सहायतासे बादशाही फोजने फिर हमला किया। जिसपर राजा दयालुचन्द्र स्वयं जाकर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजको अपने साथ लेकर आया। और दोनों तरफसे लडाई सुरूअ होगई। उसी कालमें राजा दयालुचन्द्र अपने शत्रुओंकी सेनाका बहुत जुटाव देखकर बहुतही अधीर होगया। श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने उसको बहुतही धैर्य्य दिया। और कहा कि हे राजन्! घबरावो मत तुमारी सेना तुमारे दुशमनोंको अपनी सेनासे कईगुणा अधिक दीख पडती है यदि हमारे कथनपर विश्वास न हो तो यह पीपलके पेड जो कि, हारीही तरफ समुदित होकर खडे हैं। इनको परिगणन करके देखलो। राजा दयालुचन्द्रने उसी कालमें उन पेडोंकी तरफ दृष्टि करी। और उनको गिनने लगा। परन्तु वह गिने नहीं गये। अर्थात् कभी दश कम दीख पडते और कभी बीश अधिक जिस जिसने गिने सभी कोई दशकम बतलाता और दूसरा बीश अधिक परन्तु निश्चय रूपसे उनकी संख्याको कोई न बतला सकता यही दशा उन पीपलके पेडोंमें अबतक भी दीख पडती है! उनकी निश्चित रूपसे गणना अबतक भी नहीं होसकती। उन पीपलके पेडोंकी विचित्र स्थितिको देखकर राजा दयालुचन्द्रके चित्तमें धैर्य्य हुआ। लडाई होने लगी। जंगका मैदान खूब गरम हुआ। श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने अपने साहस तथा शौर्य्यका परिचय पूर्णरूपसे बादशाही फौजको दिखलाया। ऐसे जोर शोरसे तीरोंकी वर्षा करी कि, शत्रुगणके रुधिरकी नदी बहनिकली। चारोंतरफ मार मार काट काटकी कोलाहल मच गया। श्रीगुरुजीके शिष्यलोग बादशाही फौजपर ऐसे टूटे कि, बादशाही फौजको पीछा छुडाना कठिन होगया। बादशाही फौजपर मानों आसमानी आफत आन गिरीं चारोंतरफ तोबा तोबाकी पुकार सुनाई देने लगी। एकदम सबकी सब बादशाही फौजने अपनी बाग पीछेको मोड लई। उस मैदान जंगमें बादशाही फौजकी विशेषरूपसे हानि हुई। श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी

महाराजका विजय हुआ । यद्यपि श्रीगुरुजीकी तरफके भी अनेक अच्छे शूरवीरोंने रणभूमिमें महानिद्रामें शयन किया । तथापि राजा दयालुचन्द्रभी शत्रुगणके अनेक समुदायको मारकर शेषमें स्वयं भी स्वर्ग लोकको चलागया । तथापि अति बिस्तारशील युद्ध भूमिमें विजयकी पताका श्रीगुरुगोविंन्दसिंहजी महाराजकीही फहराई जीती बची बादशाही फौज तो भागकर लाहौर चली गई । और श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराज आलसोन नामक ग्रामको जहाँके पठानलोगोंने इनपर हमला किया था बरबाद बैरान करते हुये अपने शहर आनन्दपुरमें चले आये । उसके पश्चात् भाद्रपद मास संवत् १७४९ विक्रमीमें लाहौरसे दिलावरखान नामक सूबेदारने बादशाही हुक्मसे पहाडी राजाओंका फिर चढाई करी । अपने पुत्र रुस्तमखानको उसने श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीको पहाडी राजा लोगोंका सहायक जानकर उयकी तरफ पृथक् रवाना किया । उसने पहुँचतेही उसी समय फौरन् श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजसे लडाई शुरू करदई प्रथम रोज तो खूब धूम धामसे लडाई दोनोंतरफके अनेक शूरबीर मारेगये बहुतसे जखमीभी हुये रात्रि होजानेसे लडाई शान्त हुई । दिन भरके शान्त हुये शूरबीर जहाँ तहाँ विश्रान्ति लाभ करने लगे । खान पानादि व्यवहारके अनन्तर सबने शयन किया रणभूमिके मध्यमें एक स्वल्पजलप्रवाहकी नदीभी बहती थी उसी नदीके आरपार दोनों सेनाओंका उतारा था ।श्रीगुरुजीकी सेना नदीप्रवाहसे कुछ उच्चस्थलमें उतरी थी । और बादशाही सेना सहजही शुष्कनदी प्रवाहकी ओटमें उतरी हुई थी । उसी,रात्रिमें दैवात् ऊपर पहाडमें बहुत वृष्टि हुई । उस नदीका वेग ऐसा पूरकर आया कि रुस्तमखानकी बादशाही फौज अपना आप न संभाल सकी । अनेक शूरबीर सोते हुयेही उस नदीमें बहगये । अनेकोंका सामान बहगया । बहुतसे घोडे बहगये । शस्त्र, वस्त्र, दारू, बारूदका तो ठिकानाही न रहा । उस नदी वेगसे जो जीते बचे खाली हाथ भाग निकले जहाँपर श्रीगुरुजीकी सेनाका

उतारा था वहाँतक नदीका वेग न पहुँचा दिन भरके थके हुये सभी शूरबीर आरामसे सारी रात्रि सोते रहे। प्रातः काल उठकर देखा तो मैदान जंग खाली दीख पडा। सभी शिष्य (सिक्ख) लोग जय जय श्रीगुरुजीकी बोलने लगे उस नालेको गुरुके शिष्यलोग अपना सहकारी समझकर उसी समयसे हिमायतीनालाके नामसे पुकारते हैं। क्योंकि इसने शत्रुगणको अपने वेगसे बहाकर श्रीगुरुजीकी सहायता करी है नदीके बहुत वेगके कारण रुस्तमखानकी कुछ पेश न गई। अन्तमें मार्गके छोटे २ ग्रामोंमें लूट मार करता हुआ पीछे लौट गया दिलावरखान रुस्तमखानकी ऐसी दशा सुनकर बहुतही शोकातुर हुआ और उसीकालमें दोहजार सवारोंको साथ देकर सरदार गुलामहसन-खानको रुस्तमखानकी सहायताके लिये भेजदिया। गुलामहसनखा-नने वहाँ जाकर ऐसी बहादुरी तथा शीघ्रतासे काम किया कि, राजा काहनगढ तथा राजा मण्डीको फौरन् स्वाधीन कर लिया और बाद-शाही आईनके मुताबिक उनसे कुछ मालगुजारी वसूल करके गुलेर तथा कहलूरकी तरफ रवाना हुआ। उधर जब राजा गोपालसिंह-गोलरीको समाचार मिला। तो उसने उसी कालमें श्रीगुरुगोविन्दसिंह जी महाराजकी सहायता ली। श्रीगुरुजीने कार्तिक मिति २ संवत् १७४५ विक्रमीमें तीनसौ सवार साथ देकर भाई संगीताको राजा गोपालसिंहकी सहायताके लिये भेज दिया। तीन दिनतक खूब लडाई हुई। परन्तु शेषमें चौथे दिन जब गुलामहसनखान स्वयं सहित कृपालुचन्द्र कठौजिया हरिसिंह हिम्मतसिंह इत्यादि मुख्य २ सरदा-रोंके जो कि, उसकी तरफसे लडरहे थे साथ चारसौ सिपाहियोंके मारा गया। तो रुस्तमखान ऐसी दशाको देखकर हैरान परेशान होगया। और मैदान जंगमें पीठ दिखलाकर भाग निकला। राजा कृपालुचन्द्र विजयका डंका बजाता हुआ बहुत खुशीसे अपने घर चला आया। और उसीदिन अनेकतरहकी नकद जिनस तोफा भेंट पूजा लेकर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजकी सेवामें हाजिर हुआ

श्रीगुरुजीभी राजाका विजय सुनकर बहुतही प्रसन्न हुये। परन्तु दिला-वरखानने फिर थोडे दिनोंके पीछे सफदरजंग सरूरखान तथा हुसे-नबेग इत्यादि शूरवीर सरदारलोगोंको बहुतसे सिपाही साथ देकर रुस्तमखानकी सहायताके लिये रवाना किया । और मार्गशीर्ष मास संवत् १७४५ विक्रमीमें बहलाननामक ग्रामके समीप जंगका मैदान नियत हुआ । और बहुत भारी जंग हुआ । परन्तु अन्तमें रुस्तम-खानने हार खाई । श्रीगुरुजीकी सेनाका विजय हुआ । जुझारसिंह राजपूत गजसिंह तथा चन्दनराय जस्सुवालिया इत्यादि जो कि उसकी तरफके मुख्य २ शूर वीर थे इसी लडाइमें काम आये । जब बादशाह औरंगजेबको देश पंजाबमेंसे इसतरहपर लगातार हलचलकी खबरें पहुँचने लगीं तो उसने अपने शाहजादे मुअजम शाहको देशमें शान्तिस्थापन करनेके लिये तथा राजविद्रोहदिलके शासन करनेके लिये देश पंजाबका तरफ रवाना किया । जिसके आनेकी खबर सुन कर पर्वती राजालोगोंमें ऐसी हलचल मचगई कि, सभीको अपनी २ जानकी पडगई शाहजादा मुअजमशाह आप तो सीधा लाहौरको चला गया । परन्तु एक अपने प्रधान सेनापति मिरजाबेग दशहजारी नामकको पर्वती राजाओंकी तरफ रवाना करगया । जब उस अके-लेसेभी काम बनता न दीखपडा । तो चार ओहदेदार लोगोंको उसकी सहायताके लिये फिर रवाना किया। जिन्होंने मिलकर पहाडी राजालोगोंको खूब सताया। हरएक जगहमें लूट मार मचा दई । बहुतसे पहाडी राजालोगोंके तथा हाकिमों सरदारोंके निवासस्थान मन्दिरोंको गिराकर खाकमें मिला दिया। और बहुतसे मुख्य २ लोगों-का दाढी मूछें मुण्डवाकर उनका कालामुख करके गधेकी सवारी करा कर इलाकामें गश्त करवाई । उसकालमें बादशाही फौजके मुकाबि-लेमें पर्वती राजालोगोंकी सहायता करनेकी प्रख्यातिका लांछन-श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजपर भी था । इसलिये एक ओहदेदार उनकी तरफभी भेजा गया । जिसने सिक्खोंपर बडे जोर शोरसे

हमला किया। और शहर आनन्दपुरकोभी खूब लूटा। परन्तु श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने जिनके पास उसकालमें बहुत कम सेना थी और जो अपने अवसरका प्रतिक्षण करते हुये शान्त चुप बैठे थे। ऐसी चाल चली कि, बादशाही फौजकी होश उड गई। अर्द्धरात्रिके समय जब बादशाही फौज दिनभर ग्रामकी लूट मार करती हुई थककर शहरसे बाहर मैदानमें बेखबर सोगई तो श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने अपने कतिपय सवारोंको साथ लेकर उनपर ऐसा छापा मारा कि, उनके छक्के छूटगये। हजारों सोतेही काटडारे बारूदमें अग्नि लगा दई जो जहाँ पडा था। सरसामान छोडकर वहींसे भाग निकला। तात्पर्य्य यह कि, रातही रात सिक्खलोगोंने उनका सात आठ कोशतक पीछा किया। और जो माल उन्होंने दिनको लूटा था। सभी छोडकर भाग गये। वह सिक्खलोगोंने पीछे ले लिया सैकडों मारे गये। सहस्रों जखमी हुये। बचे सो भागगये यहाँतक कि, फिर दोबारा चढकर आनेका किसीका साहस न रहा। शाहजादह मुअजमशाहने इनपर फिर दोबारा चढाई करनेका विचार किया। परन्तु मुन्शी नन्दलाल मुलतानी क्षत्रिय जो कि, शाहजादाका मीरमुन्शी था। और गुरुके घरका परम सेवक था। उसने श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजके विषयमें शाहजादेको बहुत कुछ कहा और गुरुघरके खानदानकी ऋद्धि सिद्धिका अनेक प्रकारका हाल सुनाया। जिसको सुनकर शाहजादेका चित्त श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीपर चढाई करनेसे उपराम होगया। प्रत्युत उसी कालसे शाहजादेके चित्तमें गुरुघरपर ऐसा प्रेम हुआ कि, दीवान नन्दलालके द्वारा श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजके साथ प्रेमपूर्वक पत्र व्यवहार करने लगा। इन सब ऊपर लिखी लडाईओंका सविस्तर वृत्तान्त श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने स्वयं अपने विचित्र नाटक नामक ग्रंथमें लिखा है। इसलिये उसीका संक्षेप यहाँपर दिखलाया गया है। श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजका जैसे युद्ध जंगमें बहुत प्रेम था वैसेही औरभी हरएक उत्तम विद्याके

साथ पूर्ण अनुराग था । पचास साठ मनुष्य तो आपके पास संस्कृत विद्याके पूर्ण पण्डित भाषा तथा संस्कृतके शीघ्रकवि विविध मतमतान्तरके पूर्ण मर्मज्ञ विद्वान्लोग अनेकतरहकी पुस्तकोंका अनुवाद करनेके लिये नौकर रक्खे हुये थे । इतिहास पुराण स्मृतियाँ महाभारतादि बडे २ ग्रन्थ आपने हिन्दीभाषामें करवा दिये थे । अनेकों मतमतान्तरोंके पुस्तकोंका अनुवाद सरल हिन्दीभाषामें करवा दिया था । जिसको यह किसीभी विद्याका विद्वान् समझते थे उसको वेतन उसकी योग्यताके अनुसार पूर्तिपूर्वक देते थे । जो विद्वान् आपके पास आया उसने जीविकाके लिये दूसरे धनीका घर कदापि न देखा । चैत्र मास संवत् १७४७ विक्रमीमें श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजके घरों माता जीतोजीके गर्भसे प्रथम जुझार सिंह नामक पुत्र रत्न उत्पन्न हुये । और मार्गशीर्ष मिति ९ संवत् १७९३ विक्रमीमें जोरावरसिंह उत्पन्न हुये । ऐसे फाल्गुन सुदि ७ संवत् १७९९ विक्रमीमें फतहसिंह, उत्पन्न हुये । जिनके उत्पन्न समयमें बहुतही खुशी मनाई गई । और अधिकारी समुदायको यथायोग्य दान किया गया । सेवकगणमें पारितोषिक वितरण किया गया । श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजका यद्यपि हरएक विद्यामें पूर्ण अनुराग था । तथापि जैसा आपको शूरवीरता सम्बन्धि विद्यामें प्रेम था । वैसा और विद्याओंकी तरफ न था । प्रतिक्षण अपने शिष्योंको सिपाही पनाही सिखलाया करते थे । संवत् १७९२ विक्रमीमें होलीके मेलेपर आती हुई । पोठोहारकी संगतको मार्गमें मुसलमानोंने लूट लिया । इस वार्ताको श्रीगुरुजीने सुना तो उस संगतके पोठोहारी लोगोंको बहुतही आश्वासन दिया । और कहा कि, विचारशील पुरुषको समयानुसार वर्ताव करना उचित तथा सुखका हेतु होता है । वर्तमान समय केवल परमेश्वरके भजन कीर्तनमें मग्न रहनेका जैसे कि, श्रीगुरुनानकादि महापुरुषोंका शासन है वैसा नहीं है । किन्तु वर्तमानकालमें परमेश्वरके भजन कीर्तनके साथ २ कुछ यथाशक्ति सबको

स्वात्मसंरक्षण भी सीखना उचित है। अर्थात् शस्त्रअस्त्रोंका चलाना तरहतरहके घोडोंका दौडाना हरएक पुरुषको यथासम्भव वर्तमान कालमें अवश्य सीखना चाहिये अन्यथा अन्यायशील डाकू लूटेरोंसे वर्तमान कालमें बचना कठिन है। श्रीगुरुजीका उचित उपदेश पोठोहारके सभी शिष्य लोगोंने स्वीकार किया। और उसी दिनसे शस्त्र अस्त्र विद्याके प्रेमी बनगये।

इति सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥

अथाष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

उन्हीं दिनोंमें एक पण्डित कालिदास नामक श्रीगुरुजीके दरबारमें प्रतिदिन तीसरे पहरके समय महाभारतकी कथा सुनाया करता था। प्रसङ्गानुसार जब २ भीम अर्जुनादि महाशूरवीरोंकी शूरवीरताका निदर्शन आता तो उसको श्रवणकर श्रीगुरुजी प्रेमसे शीश संचालन कर श्रीमुखसे उच्चारण करते कि, अहो शक्ति, अहो बल, अहो धैर्य्य, अहो साहस तथा अहो धर्म वीरता इत्यादि असाधारण परम पूज्य गुण किस महातपके फल हैं। इत्यादि समय २ पर अनेकवार श्रीगुरुजीके मुखसे श्रवणकर पण्डित कालिदासने श्रीगुरुजीके विनाही पूछे भरीसभामें यह कहा कि, गुरुजी भीम अर्जुनादि जितने शूरवीर हुये हैं सभी किसी न किसी देवताके वरप्रसादसे असाधारणशक्तियुक्त हुये हैं। ऐसा कोई भी अलौकिक शूरवीर नहीं हुआ है कि, जिसको किसी न किसी देवी देवताका इष्ट न हो। क्योंकि, असाधारणशक्ति इस मनुष्यमें सिवाय देवताके प्रसादके कदापि नहीं आसक्ती। इत्यादि पण्डितके प्रकृतानुपयुक्त तथा स्वार्थपूरित वचनोंको श्रवणकर श्रीगुरुजी किंचित् मुसुकुराये। और कहा कि पण्डितजी देवी देवताओंको शक्ति प्रदान करनेवाला कौन है। यदि मनको स्वयं शक्तिमन्त माने तो सबको राग द्वेष रहित निरवधिक

शक्तिमन्त होना चाहिये । परन्तु देवी देवता प्रतिपादक इतिहास पुराणादिकोंसे ऐसा श्रवण नहीं होता है । किन्तु सभी देवी देवता-ओंका एक दूसरेसे परस्पर राग द्वेष तथा शक्तिसे बाध्यबाधकभाव श्रवण होता है । इसलिये इनको स्वयं शक्तिमन्त मानना तो युक्ति प्रमाणसे शून्य है । शेष रहा इनका परतन्त्र शक्तिमन्त होना । सो जिस महाशक्तिमान्की अनुकम्पाके पात्र होकर देवी देवता शक्तिमन्त-होते हैं । यदि उसी परमदयालुकी दयाके पात्र भीम अर्जुनादि महा-शूरवीरोंकोभी मानलिया जाय तो कुछ अनुचित नहीं है इत्यादि श्रीगुरुजीके गूढ अभिप्रायके वचनोंका श्रवणकर पण्डित कालिदासा का मन स्तब्धसा होगया । और फिर बोला कि, गुरुजी आपने कहा सो यथार्थ है । परन्तु वर्तमान कालमें देवी भगवती बहुतही आशु-तोष प्रत्यक्ष देवता है । साधारण २ कामनाओंका पूर्ण करना तो इस देवताके सामने मानो हँसी खेल है । ऋद्धि सिद्धि तो भगवतीके उपा-सकोंकी दासी होकर आगे पीछे घूमा करती है । भगवतीके इष्टवाला पुरुष अपने शत्रुगणपरभी भगवतीहीकी तरह प्रबल रहता है । अर्थात् जैसे भगवतीने शुम्भ निशुम्भादि अनेक दानव शत्रुओंका अनायास विनाश किया है । वैसेही शत्रुशासनकी शक्ति भगवतीके भक्तमें भी अप्रतिहत आन विराजती है । इत्यादि पण्डितके वचनोंके श्रवणकर श्रीगुरुजी स्वल्पकाल शान्तभावसे विचार करने लगे समय विषम है अब प्रबल शत्रुगणका सामना अवश्य करना होगा । सिवाय इसके वर्तमानकालमें हिन्दुप्रजाका संरक्षण होना कठिन है श्रीगुरुनानकादि महापुरुषोंके सारपूरित सदुपदेशोंका यद्यपि लम्बायमान पंजाबदेशका देश अनुगामी बनरहा है । वर्तमानमें उनके नामपर एकत्र होकर हिन्दूप्रजाका किसीभी एक धर्मकार्यको कर डालना कुछ आश्चर्य नहीं है । तथापि " अधिकस्य अधिकं फलम्" इस न्यायसे यदि और भी कोई साम्यका उपाय करलिया जाय तो अनुचित नहीं है । यद्यपि श्रीगुरुनानकजीके सिद्धान्तके अनुसार

सिवाय परमेश्वरके दूसरे देवी देवताकी उपासना श्रेयस्कर नहीं है। तथापि वर्तमान समयमें अनेक स्वार्थी पुरुषोंके भिन्न २ उपदेशोंसे आर्य प्रजाके चित्तमें अनेक कल्पित देवी देवता घूसरहे हैं। जिनका निकालना सिवाय विधाताकी नूतन सृष्टिके वर्तमानमें दुर्घट है। जो लोग श्रीगुरुनानकजीके मूढ सिद्धान्तपर तनमनसे आरूढ हैं। उनके विषयमें तो मेरे अनुगामी होनेसे सन्देहही नहीं है। परन्तु जिन सरल स्वान्त पुरुषोंको स्वार्थीगणने विचित्र २ मन घटित गाथायें सुना २ कर स्वाधीन कर रक्खा है उन लोगोंका समयार मेरे पूर्णरूपसे अनुगामी होना दुर्घट है। इसलिये प्राप्त समयपर उनके अनुगामी बनानेके लिये कोई नीतिगर्भित उपायान्तर चिन्तनीय है। इत्यादि विचार करके श्रीगुरुजीने पण्डितजीसे कहा कि, पण्डितजी आपके कथनका भाव क्या है। आप स्पष्ट करके कहिये। पण्डितने कहा गुरुजी! मेरीराय है कि यदि आप शत्रुगणको विजय किया चाहते हैं तो प्रथम भगवतीको प्रसिद्ध कर उससे विजयार्थ वर माँगिये। भगवतीके वरप्रदानसे आपके अनायासही सभीकार्य्य सिद्ध होंगे। श्रीगुरुजीने किंचित् मुसकुराकर कहा कि, पण्डितजी क्या भगवती साक्षात् होसकती है ?

(पण्डित) गुरुजी! यदि विधिपूर्वक प्रयत्न किया जाय तो ऐसा कौन देवी देवता है जो प्रकट न हो।

(श्रीगुरुजी) तो क्या देवी प्रकट करनेकी विधिको आप जानते हैं।

(पण्डित) गुरुजी! यह कार्य्य कोई साधारण नहीं है यद्यपि मैं भी यथाबुद्धि जानताही हूँ तथापि इस महान कार्य्यके लिये कुछ देशान्तरसे भी अच्छे २ मन्त्र शास्त्रवेत्ता विद्वान् लोग बुला लिये जावें तो कार्य्यके निःसन्देह शीघ्र होनेमें कोई प्रत्यूह न होगा।

(श्रीगुरुजी) पण्डितजी कितने खर्चका काम है।

(पण्डित०) गुरुजी! ऐसे महान् कार्य्योंके लिये खर्चकी तरफ दृष्टि नहीं करी जाती।

(श्रीगुरुजी)-तथापि खर्चका जुटाव तो सबसे प्रथम आवश्यक है ।

(पण्डित०)-आपके अगाध कोषमें किस पदार्थकी कमती है ।

(श्रीगुरुजी)-तथापि आप अन्दाजसे जो बतलावें हम उसपर विचारकर हाँ या ना कहें ।

(पण्डित०)-मेरे विचारमें एक लाख रुपया इस कार्य्यके लिये पुष्कल है ।

(श्रीगुरुजी०)-अच्छी वार्ता है आपने जिन विद्वानोंको सहायताके लिये बुलाना है लिख भेजिये ।

पण्डितजीने उसी कालमें प्रसिद्ध २ पण्डितोंको लिख भेजा । श्रीकाशी तथा काश्मीरसे भी मन्त्रशास्त्रके प्रख्यात विद्वान् चालीस पचास पंडित बुलवा लिये । एक मास डेढ मासके भीतरही सैकडों ब्राह्मणोंका आन जुटाव हुआ । श्रीगुरुजीके देवी प्रकट करनेकी धूम देश मात्रमें मचगई । आनन्दपुर शहरके गली २ बाजार२में चारों तरफ ब्राह्मणही दीख पडने लगे । जब देशदेशान्तरके सभी ब्राह्मण एकत्र हुए तो कार्य्य प्रारम्भ करनेका विचार हुआ पण्डित कालिदासजीने सभी ब्राह्मणोंकी सभा करके मुख्य २ मन्त्र वेत्ता लोगोंसे भगवती प्रसिद्ध करनेकी हवनादिकी सामग्री तथा सबकी यथायोग्य दक्षिणाका हिसाब किया तो कोई रुपया दोलाखके करीब हुआ चालीस दिनके बृहत् हवनके लिये अगर, तगर, केसर, कस्तूरी, लवंग जायफल,जावित्री,घृत,मधु आदि मनोंके हिसाबसे लिखा दिये गये जिसको देखकर पण्डित कालिदासने कहा कि, खर्च बहुत है । क्योंकि० मैं प्रथम श्रीगुरुजीको एक लाख बतला चुका हूं । अब दुगुणा होना उचित नहीं है । विदेशियोंने कहा कि, यजमान कैसा है । अर्थात् कृपण है उदार है ? कहा हुआ खर्च करनेको समर्थ है या नहीं ? कालिदासने कहा यजमान उदार है खर्च करनेकोभी समर्थ है । तथापि मेरे कथनमें अप्रमाणता आती है । विदेशीय पण्डितोंने कहा वाहजी आपभी क्या भोले हैं । क्या ऐसे यजमान कहीं रोज रोज मिलते हैं । चलिये

आप चुप रहना हम उनको सभी समझाकर सुनादेंगे। पश्चात् सब मिलकर श्रीगुरुजीके पास गये। एक वावदूक विदेशीय पण्डितने श्रीगुरुजीसे बातचीत किया। श्रीगुरुजीने उसका सभी तात्पर्य्य समझ लिया। और खर्चके लिये दोलाखही रुपया स्वीकार किया। फिर श्रीगुरुजीने कहा कि, पण्डितजी अब तो आपकी देवीके प्रकट होने-में किसी वस्तुकी कमी तो नहीं है। यदि होय तो स्मरण कर लीजिये पण्डितने कहा बस गुरुजी अब अवश्य भगवती प्रगट होगी। चैत्र मिति १ संवत् १७५४ विक्रमीमें नयनादेवीका मन्दिर जोकि; शहर आनन्दपुरसे सातकोशपर एक पर्वतपर विद्यमान है। वहाँ जाकर कार्य्य आरम्भ किया। मन्दिरके सामने अतिविस्तृत हवनकुण्ड बनाया पण्डित केशवदास, विश्वम्भरदास तथा रामदयालु हवन करनेके लिये यथाक्रम होता उद्गाता तथा अध्वर्यु नियत हुये। पण्डित कालिदा-सजीको आचार्य्य तथा काशीके पण्डित देवदत्तशास्त्रीको ब्रह्मा नियत किया शेष सभी पण्डितलोग चण्डीपाठ करने लगे। बहुतसे दुर्गामं-त्रका जप करने लगे। पाँचसौ ब्राह्मणके समुदायका नयनादेवीपर नित्य कोलाहल होने लगा। श्रीगुरुजीने भाई गुरुबख्शराय, साहिब चन्द, दीपचन्द, लालचन्द तथा कृपालुचन्द्रादि अपने मुसाहिबों द्वारा वहांपर हरतरहसे उचित प्रबन्ध करवा दिया। हवन जपादि यावत् कार्य्य प्रारम्भ हुआ। सहस्रों लोग प्रतिदिन दर्शनको जाने आने लगे जो जाता खाली हाथ न जाता। धन धान्यादि पूजाको लेकर ब्राह्म-णलोग मालामाल होगये श्रीगुरुजीभी प्रतिदिन प्रातः घोडेपर सवार होकर नयनादेवीमें जाने आने लगे। एक मास व्यतीत हुआ तो एक दिन श्रीगुरुजीने पण्डित केशवदाससे कहा कि, पण्डितजी ! आपकी देवीके प्रकट होनेके कोई लक्षण नहीं दीख पडते। उस काल-में प्रत्युत्तरमें चतुर पण्डित केशवदासने कहा कि, गुरुजी हम कह नहीं सकते असलमें आपका शिकारादि खेलना देवीके प्रसिद्ध होनेमें प्रति बंधक है क्योंकि मन्त्रशास्त्रमें यजमानको परमसात्विक रहना लिखा

है । यहाँपर पण्डितके इस बहाना बनानेका केवल यही भाव था कि गुरुजी शिकार खेलना तो छोडेंहीगे नहीं । इसलिये देवी न भी प्रकट हुई तो यही कहेंगे कि, आपका शिकार खेलनाही प्रतिबन्धक रहा । परन्तु श्रीगुरुजीने उसी दिनसे शिकार खेलनाभी छोडदिया और पण्डितसे यहभी कहा कि, आप पहले कहते तो हम उसी दिनसे छोड देते । परन्तु अभीभी दश दिन बाकी हैं आप देवीके प्रसिद्ध करनेमें यत्न कीजिये । जब दश दिनभी बीत चुके अर्थात् चालीसदिन पूरे होगये तो ब्राह्मणोंने कार्य्यकी समाप्ति न करी । किन्तु कुछ हवनकी सामग्री बचा रक्खी जब श्रीगुरुजी अन्तके दिन गये तो केशव-दास शास्त्री बोला कि गुरुजी आज भगवतीके प्रकट होनेके अनेक चिह्न दीख पडे हैं । अर्द्धरात्रि कालमें पर्वत हिलहिलाया । चारोंतरफ मशालेंसी बलती हुई देख पडीं अनेक भूत, प्रेत, पिशाच नाच २ कर सबको डराते थे आजकी रात्रि बडीही भयानक थी । आप सब ब्राह्मणोंसे पूछ लीजिये । श्रीगुरुजीने कहा पण्डितजी जो आपने कहा सभी यथार्थ है हमको दूसरेसे पूछनेकी कुछ आवश्यकता नहीं है आप यह कहिये कि, विलम्ब कौन बातसे है । पण्डितने कहा कि, गुरुजी विलम्ब तो इतनाही है कि इस कालमें यदि किसी महापुरुष-की बलि दीजाय तो अभी भगवती प्रसिद्ध होसकती है । तो श्रीगुरु-जीने उक्त वार्तासे पण्डितका बहाना जानकर रक्तनेत्र कर खड्ग खैंच कर कहा कि, पण्डितजी मेरे विचारसे आपसे अच्छा इसकालमें शीघ्र महापुरुष मिलना कठिन है । पण्डितने कहा गुरुजी ब्राह्मणकी बलि देवताको स्वीकृत नहीं होती । क्योंकि, इसके मारनेमें ब्रह्महत्याका महापातक लिखा है । श्रीगुरुजीने कहा पण्डितजी पातक तो तब होय यदि आप मरेही रहें । परन्तु हम तो देवीके प्रकट होनेसे सबसे प्रथम आपके जीवित होनेहीकी प्रार्थना करेंगे पण्डित चुप होगया । और कहन लगा कि, मैं स्नान करके आता हूं । श्रीगुरुजीने अच्छा कहकर जाने दिया । वह पण्डित

केशवदास जो कि, वार्त्तालापमें भारी चंचल था वहाँसे स्नानके मिससे ऐसा भागा कि, फिर उसका पताही न मिला। ऐसेही मुख्य २ पण्डित लोग देखतेही देखते कर्पूर होगये। पश्चात् श्रीगुरु- जीने संपूर्ण हवनकी सामग्री एकबारही कुण्डमें डलवा दई। एक बारही महती अन्तिमाहुतिके डालनेसे अग्निका शिखा ऐसा उठा कि, चारों तरफ कोशोंतक दृष्टि पडा। लोगभी दूर २ ग्रामोंमें खडे उस दिन टक लगाकर देख रहे थे कि, आज देवीके प्रसिद्ध होनेका दिन है। अग्निका देदीप्यमान उच्चशिखा सबकी दृष्टिगोचर हुआ तो सबने निश्चय करलिया अब देवी प्रकट हुइ है। पश्चात् श्रीगुरुगोविन्दसिंह जी महाराज आनन्दपुरमें हस्तमें नग्न तलवार खैंचे हुये चले आये। जिसने पूछा उसको आपने तलवार दिखलाकर कहा कि, यह भगवती प्रकट हुई है। अप्रबुद्धलोगोंने जाना कि, भगवती प्रत्यक्ष हुई। यह तलवार भगवतीने श्रीगुरुजीको युद्धके लिये दई है और सुबुद्ध तो धर्मको जानतेही थे उनको जिज्ञासाही न हुई।

यह सब ऊपरका विचार नूतन विचारशील शिष्यवर्गके अभिप्रा- यसे लिखा गया है। और प्राचीन विचारशील शिष्यवर्गका सिद्धान्त तो यह है कि, श्रीगुरुजीने वास्तवहीमें भगवतीको साक्षात्कार किया। और उससे युद्ध करनेके लिये खड्गभी लाभ किया। कल्पना दोनों समूलक हैं। यदि श्रीगुरुजीके लेख वाणीकी तरफ दृष्टि करी जावे तो ऐसा प्रतीत होता है कि, यह महापुरुष सिवाय सर्वशक्तिमान् परमेश्वरके किसी देवी देवताके मानने मनानेवाले न थे। और यदि उस समयके प्राचीन इतिहासोंकी तरफ देखा जावे तो ऐसा कोई प्राचीन इतिहासही न होगा कि जिसमें श्रीगुरुजीका भगवती प्रकट करना न लिखा हो। इसमें प्रबल कोटि कौन है। इस वार्ताको विचा- रशील पुरुष स्वयं जानसकते हैं। परन्तु वर्तमानमें इस विषयको दो तरहके मानने वाले दो तड सिक्खलोगोंके अवश्य प्रसिद्ध हैं। कुछभी हो श्रीगुरुजीकी देवी प्रकट करनेकी चर्चा देश भरमें घर २ में फैल

गई । पश्चात् श्रीगुरुजीने एक भारी ब्राह्मण समुदायको भोजन कराया तथा गरीबों अनाथोंको बाँटा । पीछे नकद वस्त्राभरणादि अनेक विध यथायोग्य दक्षिणा देकर सबको प्रसन्नता पूर्वक रवाना किया ।

महान् कार्य्यके करनेवाले महापुरुषके जब लक्षों सहकारी मित्र होते हैं । तब सहस्रों अकारणिक शत्रुभी अवश्य बने रहते हैं । पंजाबदेशमात्रको श्रीगुरुजीका अनुगामी होनेसे भी बीच २ में स्वार्थिगणके बहकाये हुये बहुतसे ऐसे लोग थे कि, जिनसे प्राप्त समय पर धोखा होनेका भय बना रहता था । फिर ऐसे अधमोंके मिश्रीभावमें श्रीगुरुजीको कैसे अपने शिष्यवर्गपर विश्वास आता,तथा कैसे प्रबल शत्रगणका सामना करनेके लिये कटिबद्ध होते । फिर उपायान्तर विचारने लगे । कुछादिनके विचारनेसे एक दैवात् उत्तम उपाय मनमें आया संवत् १७५५विक्रमीके अन्तिम माससे श्रीगुरुजीने देशदेशान्तरमें अपने शिष्यवर्गको हुक्मनामें लिख भेजे कि, अमुक समय पर गुरुके दरबारमें एक भारी उत्सव होनेवाला है । उसमें हरएक प्रेमी शिष्यको आनकर दर्शनका लाभ उठाना चाहिये । श्रीगुरुजीके हुक्मनामेको सुनतेही सहस्रों शिष्यवर्ग उचित समयपर आन हाजिर हुये । उत्सवके लिये आनन्दपुरके पास केसगढके टीलेपर तम्बू कनातें चाँदनीयें खेमें लगा दिये गये । एक किनारेपर मैदानमें श्रीगुरुजीने अपना खेमा लगवाया । और नियत समयपर अपने शिष्यवर्गकी एक महती सभा भरकर आप चमचमाती हुई नग्न तलवार हाथमें लेकर भरी सभाके शिरपर आन खडे हुये । श्रीगुरुजीके खेमेंसे बाहर आतेही सभी शिष्यलोग उठकर हाथ जोडकर खडे होगये । श्रीगुरुजीने सभीको बैठनेकी आज्ञा करी । जब सब अपने २ स्थानपर निश्चल होकर बैठगये तो श्रीगुरुजीने हाथमें तलवारको ऊंचीकर उच्चस्वरसे सभाके सामने पुकारा कि,क्या कोई इस भरीसभामें ऐसा भी गुरुका प्यारा शिष्य है जो कि, अपना शिर गुरुके अर्पण करे हमको भी प्रियशिष्यकी बलि देकर एक महती देवता प्रसन्न

करनेकी आवश्यकता है। शिष्यको भी शास्त्रमें नांदीपुत्र लिखाहै। यदि आपलोगोंमें कोई नहीं उठेगा तो हम अपने बिन्दी पुत्रकी बलि तो अवश्य देवेहींगे। यह एक धर्मका कार्य्य है। यदि धर्मपर शीश देनेकी किसी शिष्यकी रुचि होय तो भरी सभामें उठ खडा होवे। श्रीगुरुजीके इन वचनोंके सुनतेही सारी सभाके शिष्य आश्चर्य्य होने लगे। सबके मुख एकबारही पीलेसे पडगये। चारोंतरफ सन्नाटा छा गया। किसीकी ऊपरको देखने तककी हिम्मत न रही। सभी नीचा मुखकर स्तब्ध होगये। बीच २ में कतिपय स्वार्थि शिष्यलोग धीरे २ एक दूसरेके पास श्रीगुरुजीको विक्षिप्त बतलाने लगे। सुनसुनाकर कई शिष्यलोगोंको यही निश्चय हुआ कि, गुरुजीकी बुद्धि इस कालमें ठिकाने नहीं है। थोडी देरके पीछे फिर गुरुजीने पुकारा कि, क्या हमारे शिष्यवर्गमें कोईभी धर्मपर शीश देनेवाला नहीं है? तब शहर लाहौरनिवासी क्षात्रियकुलतिलक भाई दयासिंह नामक हाथ जोडकर खडा होगया। कहा कि, श्रीगुरुजी! इस दासका शिर धर्मपर बलिप्रदान करनेके लिये आपकी सेवामें हाजिर है। जैसे चाहो कीजिये। श्रीगुरुजीने उसको अपने पास बुला लिया। और खेमेंके भीतर लेजाकर एक किनारे पर बिठला दिया। और प्रथमही खेमेंके भीतर जो पांच बकरे बान्ध रक्खे थे उनमेंसे एकको काट डाला। और रक्तालिप्त तलवारको लेकर फिर बाहर सभाके शिरपर आन खडे हुये। तथा पूर्वोक्तरीतिसे उच्चस्वरसे फिर पुकार कर कहा कि, एक शिरकी हमको और आवश्यकता है। किसी शिष्यको धर्मपर शीश देना होय तो उठे। तो दूसरे नंबर हास्तिनापुरनिवासी जाटजातिका एक धर्मसिंह नामक शिष्य उठकर हाथ जोडकर खडा हुआ। उसकोभी श्रीगुरुजीने पास बुलाकर साथ खेमेंमें लेजा बिठलाया। और प्रथमवत् दूसरे बकरेका शिर काटके फिर बाहर सभाके शिरपर आन खडे हुये। फिर बोले कि, अभी एक शिरकी औरभी आवश्यंकता है। तब तीसरे नंबर एक कहार

जातिका हिम्मत सिंहनामक शिर अर्पण करनेके लिये उठा। उसको भी वैसेही खेमामें बिठलाकर तीसरा बकरा काट डाला। फिर चौथेका शिर मांगा तो एक रजक (छीपा) जातिका मोहकमसिंह नामक उठा। ऐसेही पंचमका मांगा तो एक नापित (हजाम) जातिका साहिबसिंह नामक उठा। सभीको यथाक्रम लेजाकर श्रीगुरुजीने खेमाके भीतर बिठलाया। और पांचों बकरोंके शिर काट दिये। जिनका रुधिर बहकर नालीद्वारा बाहिर आता हुआ सबकी दृष्टिगोचर हुआ। रुधिरको देखतेही बहुतसे कातरोंके मुख म्लान होगये। तथा बहुतसे शूरवीरोंके चित्तमें उत्साहभी हुआ। एक दूसरेको देख २ कर धर्मपर शिर देनेके लिये यद्यपि उस महतीसभामें अनेक थे। तथा यथाक्रम श्रीगुरुजीके बुलानेसे उठनाभी चाहतेही थे। तथापि श्रीगुरुजीने पञ्चमें परमेश्वर विराजमान जानकर पांचहीपर विश्रांति करी। पश्चात् श्रीगुरुजीने उसी कालमें स्वयं स्नान करके तथा उन पांचोंको भी करवाकर उत्तम २ बादशाही ठाठके वस्त्र धारण किये। तथा उन पांचोंको धारण करवाये। विविध अस्त्रशस्त्रोंसे सजे हुये सहोदरों पाण्डवोंकी तरह प्रेमसे परस्पर हाथसे हाथ मिलाये हुये। श्रीकृष्णदेवस्वरूप श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजसे संरक्षित तथा प्रेरित बाहिर सभाके सामने आन खडे हुये। जिनको देखतेही सभी सभाके लोग आश्चर्य्य हुये। उसकालमें प्रायः सभीके चित्तमें इस वार्त्ताका शोक हुआ कि, हा धर्मनिमित्त शिर अर्पण करना हमसे न बन पडा। उसी कालमें श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने एक प्रेमपूरित गुरु सिक्खीका व्याख्यान देकर सबको आश्वासन दिया। और व्याख्यानके अनन्तर प्रेममयी दृष्टिसे समानरूपसे सभीकी तरफ देखते हुये। तीनवार उच्चस्वरसे उच्चारण किया कि, धन्य गुरु शिक्खी है ३। और भारी सभामें कहा कि, यह रचना हमने केवल अपने शिष्योंके परीक्षण करनेके लिये करी है। अब हम बहुतही प्रसन्न हैं। हमारे अनेक शिष्य परीक्षामें उत्तीर्ण हुये। तथा और भी होनेके लिये

तैयार हैं। इसलिये हमको पूर्ण विश्वास है कि, हमारे शिष्यलोग कृ-तकार्य होंगे तथा हमारे प्राचीन सिद्धान्तकी उन्नति होगी। और अब-हमको यहभी पूर्ण आशा है कि, हम अपने धर्मविरोधी वर्गपर अव-श्य विजय लाभ करेंगे। क्योंकि गुरु सिक्खीने बहुत उन्नति करी है। श्रीगुरुनानकजीके समयमें साधारण परीक्षण करनेसे भी एक गुरु अंगदही परीक्षामें उत्तीर्ण हुये थे। परन्तु अब तो परमेश्वरकी कृपासे महा कठिन परीक्षामें पांच उत्तीर्ण हुये हैं। अब किसी तरहका किसीसे कुछ भय नहीं है क्यों कि, एक चित्तके पांचपुरुषोंमें परमेश्वरका निवास लिखा है यह। पांच पांचों पाण्डवोंकी तरह अवश्य विजयी होंगे। तथा इनकी कीर्ति भी सर्वत्र व्याप्त होगी। श्रीगुरुजीने "दुयमिल कार्य्य उपजे" परन्तु यहाँ तो परमेश्वरकी कृपासे पाँच मिलगये हैं।

इत्यष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

अथैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ३९ ॥

दूसरे दिन वैशाखमासकी संक्रांतिके रोज संवत् १७५६ विक्रमीमें आदित्य वारके दिन कशवगढके किलेमें श्रीगुरुजीने आम शिक्खोंका दरबार लगाकर उन परीक्षोत्तीर्ण पाचों शिष्योंको समाजके सामने खडा कर दिया। और आप दरियाय शतद्रुमेंसे एक लोहपात्रमे जल भरके बतासोंका शर्बत बनाकर×जपजी जापजी सैवय चौपाई

× यह पाँचों गुरुओंकी उच्चारण करी हुई वाणिआँ हैं। इनमें जपजी मूलमन्त्र गुरुनानकजीने उच्चारण किया है। जापजी सवैये तथा चौपाई यह तीनों दशमगुरुने किये हैं। आनन्द तीसरे गुरुजीने उच्चारण किया है। यह पाँचों बाणीयाँ प्रायःपरमेश्वरकी स्तुतिरूप हैं।

तथा आनन्दका पाठ करते हुये उस सर्वतमें एक फुलादी खण्डेको फेरने लगे। जब सब वाणीका पाठ पूर्ण हुआ तो गुरुवाणीसे मन्त्रित हुये सर्वतका नाम गुरुजीने अमृत रक्खा। और उन पाँचों शिष्योंको अपने सन्मुख खडा करके सबसे प्रथम भाई दयासिंहजाको उस शर्वतके पाँच चुले पिलाये पाँचवार उसी सर्वतका उसकी आंखोंपर छाँटा दिया। तथा पाँचही वार उसके केशोंमें पाया प्रत्येक अमृतांजलिके पीछे "वाहिगुरुजीका खालसा श्रीवाहिगुरुजीकी फते है" इस मङ्गलमय शब्दका उच्चस्वरसे उच्चारण करवाया। ऐसेही यथाक्रम सबको इसी संस्कारसे संस्कृत किया पीछे उसी लोहपात्रमें पाँचोंको कडाहप्रसाद (हलुवा) खानेको दिया। जिसको पाँचोंने मिलकर एकपात्रमें प्रेमपूर्वक भक्षण किया। इस संस्कारकानाम श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने अमृत संस्कार रक्खा। अर्थात् इस संस्कारयुक्त पुरुष शूरवीर होकर अमर होजाता है। इस संस्कारका प्रचार सिक्ख लोगोंमें यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कारके स्थानपर हुआ करता है। श्रीगुरुजीने पाँचोंको प्रेमसे अमृत छका (पिला) कर नीचे लिखी शिक्षाओंके उपदेशके पश्चात्। फिर पूर्वोक्त पाँचों वाणीके पाठद्वारा उन पाँचोंसे अमृत तैयार करवाकर जैसे आप उनको छकाया (पिलाया) था। वैसेही उनसे आपभी छकिया। पश्चात् स्वयं श्रीमुखसे उच्चारण किया कि–"वाह २ गुरुके गोविन्दसिंह आपे गुरु चेला"। तथा यहभी कहा कि– "गुरु खालसा खालसा चेला"। इन पूर्वोक्त दोनों वचनोंसे श्रीगुरुजीने अपने शिष्योंको यह बोधन किया कि, परमेश्वरकी सृष्टिमें मनुष्य सभी बराबर हैं। कोई किसीके आश्रित नहीं है। इसलिये किसीकोभी किसी तरहका अभिमान नहीं करना चाहिये। किंतु परस्पर प्रेमसे वर्त्ताव करना चाहिये।

अमृतपानके अनन्तर श्रीगुरुजीकी पञ्चके उद्देशसे पंथखालसाकी शिक्षा।

१– आजसे तुम लोगोंका श्रीगुरुजीके घर नया जन्म हुवा है।

२– गुरु खालसा एकरूप है इसलिये आपलोगोंको अपना जन्म पटने तथा निवास आनन्दपुरजीका निश्चय करना चाहिये।

३– श्रीगुरुजीकी नांदीसन्तान होनेसे आपलोग सभी आपसमें सदृश भाई बन्धु हो इसलिये खान पान पहरानादि व्यवहार जैसा आपसमें भाई बन्धुओंका हुआ करता है आपलोगोंकोभी परस्पर वैसाही करना चाहिये.

४– आपलोगोंको आपसमें राग द्वेषसे युद्ध जंग करना उचित नहीं किन्तु अपनेको गुरुकी संतान जानकर महाराज दशरथकी सन्तानवत् अथवा महाराज पाण्डुकी सन्तानवत् प्रतिक्षण प्रेमसे रहना उचित है.

५– इस अमृतसंस्कारसे हमने आपलोगोंको सोढवंसके क्षत्रिय बनाया है इसलिये आपलोगोंकोअब साधारण जीवोंकी मौत मरणा उचित नहीं किन्तु सनातनधर्मकी रक्षाके लिये प्राण देने आपलोगोंका सबसे प्रथम मुख्य धर्म है।

६– अकालपुरुष, गुरुग्रन्थ तथा गुरु खालसा इन उपासनीय तीनके सिवाय त्रिलोकीको तुच्छ जानना आप लोगोंका मानासिक मुख्यधर्म है।

७–केश कंघा कृपाण कच्छ और कडा इन पांचोंको शूरवीरताके मुख्य साधन समझकर इनको प्रतिक्षण अंगसंग रखना आपलोगोंका कायिक मुख्यधर्म है।

८–जब बोलना तब दृढ, प्रिय, मधुर और सत्य बोलना यह आपलोगोंका वाचनिक मुख्यधर्म है।

९ परस्त्रीको मातासम जानकर कामवेगको रोकना, निर्बलकी अवज्ञाको अंग अवज्ञा जानकर क्रोधगवेको रोकना परसम्पदाको श्वान वमनवत् जानकर लोभवेगको रोकना यावत् सुन्दर पदार्थोंको क्षण परिणामी तथा विनाशी जानकर मोहवेगको रोकना एवं हरएक शुभ-गुणोंमें अपनेसे वृद्धोंकी ओर देखकर अहंभावको रोकना भी आपलो-गोंका परमधर्म है ।

१० मीणे मसन्दीये धीर मल्लीये तथा रामरायिये यह चारों गुरुघरके विरोधी हैं इसलिये आपलोगोंको इन लोगोंसे उपराम रहना उचित है

११–आपलोग अब शूरवीर क्षत्रिय हैं इसलिये नडीमार अर्थात् हुक्का-पीनेवाला कुडी (पुत्री) मार चिडीमार तथा शिरमुण्डा इनचारों तुच्छ पुरुषोंकी संगति करनी आपलोगोंको उचित नहीं है ।

१२ कसुम्भेका सूहारंग सोहागका सूचक स्त्रीवर्गका वेष है इसलिये शूरवीर खालसापन्थमें इसका प्रचार अच्छा नहीं है ।

१३–आजसे आपलोग अमृतपान करके सिंह बनगये अब सिंहोंको परस्पर आधेनामपर बोलना बुलाना एक निरादरकी बार्ता है इस लिये आपसमें निरादरका व्यवहार करना गुरुखालसाको उचित नहीं है–

१४–सिंहोंको स्नान करने समयके शिवाय नग्नशिर कदापि नहीं रहना चाहिये । उसमेंभी मल मूत्र परित्यागकालमें या गृहसे बाहिर गमनकालमें या भोजनकालमें नग्नशिर होना गुरुखालसाको बहुत ही बुरा है ।

१५–द्यूतादि व्यसनोंको क्षात्रधर्म जानकर भी उनमें प्रवृत्त होना पन्थ खालसाका धर्म नहीं है ।

१६–आमरण पञ्चकेशी जटाजूट रहकर दान मान स्नानादिसे हरवक्त पवित्र रहना खालसाका मुख्यधर्म है ।

१७–मलमूत्रका खाना पीना म्लेच्छके हाथका कुठा खाना यवनी आ-

दिके साथ मैथुन करना शिरके केशोंका छेदन करना चण्डू चरस-तमाखू गांजेका खाना पीना यह पाँच खालसाधर्मके महापातकहैं। इन पांचोंमेंसे किसी एकके भी करनेसे पुरुष पन्थखालसासे बहिष्कृत होजाताहै। ऐसे अधर्मीको फिर पन्थमें मिलना भी कठिन है। और न ऐसे नीचोंके निकालदेनेसे कुछ पन्थखालसाकी हानि है। प्रत्युत मलदूर होनेसे हरएक निर्मलवस्तु स्वल्पभी संसारमात्रमें सत्कारको प्राप्त होती है परन्तु उसी अधर्मपुरुषके यदि पुण्यसंस्कारोंसे काल पायकर फिरभी खालसाधर्मकी बडाई महत्व उसके मनमें बसे और पन्थ खालसामें मिलाचाहे तो पन्थखालसा उसको तीनवार क्षमा करके मिलाय सकता है। प्रथम वार मिलनेसे अमृतपान करके उसको एकमासकी कमाई (आमदनी) दण्ड देना होगा दूसरी बार मिलनेसे छः मासकी कमाई दण्ड देना होगा एवं तीसरी बार मिलनेसे एक सालकी कमाई दण्ड देना होगा। जानबूझकर यदि चौथीबार फिर पतित होगा तो फिर ऐसे अधमको पन्थ खालसा मिलाय नहीं सकता। और जो पतित आमदनी कुछभी न रखता होय वह यदि मिलनाचाहे तो उतने काल किसी गुरुस्थानमें पन्थखालसाकी सेवा करै।

१८–पन्थखालसाको यद्यपि हरएक विद्यामें प्रवीण होना उचित है तथापि यह पन्थ खालसा संसारमात्रमें शूरवीरताके लिये एक उदाहरणरूप होनेवाला है इसलिये सबसे प्रथम शस्त्र अस्त्र विद्या तथा घोडेकी सवारी पन्थ खालसाके प्रत्येक मनुष्यको सीखनी उचित है

१९–दीन, देश, और दीनोंके दुःख उठानेके लिये खालसाधर्मके प्रत्येक मनुष्यको अपना प्रादुर्भाव समझना चाहिये।

२०–दम्भ, कपट, छल, छिद्र मिथ्या, निन्दास्तुतिकरना, कराना, शूरवीर खालसाजातिका कर्म नहीं है।

२१–जहाँतक बनपडे गुरुवाणीसे प्रेमपूर्वक परमेश्वरके गुणानुवाद गायन करना साधु अभ्यागतकी सेवा करनी धर्मकृत्यसे धन उपा-

भनकर बांटखाना यह खालसाजातिका सहज धर्म है ।

इन पूर्वोक्त २१ शिक्षाओंका उपदेश श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने प्रथम अपने पांचशिष्योंको अमृत पिलाकर किया । पश्चात् उनके हाथसे पूर्व कही रीतिसे स्वयं अमृत पान करके भाई दयासिंहजीके मुखसे इन शिक्षाओंको आप सुना । और इन शिक्षाओंका पन्थ खालसामें प्रयत्नसे प्रचार किया । जैसे मुहम्मदसाहबने अपने अलीआदि चारवीरोंको अपने यार कहकर सन्मान किया वैसेही श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीनेभी इन पांचको अपने (प्यारे) प्रिय बतलाया । और इनके पश्चात् उसी कालमें जो चालीस शिष्य इस संस्कारसे संस्कृत होनेके लिये खडे हुये उनका नाम श्रीगुरुजीने चालीस मुक्ते रक्खा । इसीतरह प्रतिदिन अनेक शिष्यलोग इस संस्कारसे संस्कृत होकर सिंह बनबनकर श्रीगुरुजीके पीछे प्राण अर्पण करनेवाले दृढ अनुगामी होनेलगे । थोडेही दिनोंमें कई सहस्र मनुष्य इस संस्कारसे संस्कृत होगये । तथा गुरुजीके पीछे धर्मपर प्राणदेनेको तैयार हुये । उन्हीं दिनोंमें श्रीगुरुजीने अपने मुख्य २ शिष्यवर्गको एकत्र करके तथा आस पासके पर्वती राजालोगोंको बुलाकर एक बहुत भारी दीवान लगाया । और उसमें स्वयं विराजकर हिन्दू धर्मकी रक्षाके लिये एक लम्बायमान व्याख्यान सुनाया । जिसमें श्रीगुरुजीने अनेक दक्ष व प्रमाणोंके साथ शोकसे यह कहा कि, इस देशके निवासी प्रत्येक पुरुषको विचार करना चाहिये कि, हमलोग कैसी हीन दीन दशाको प्राप्त हुये हैं । हमलोग प्राचीनकालसे इस देशके निवासी हैं परन्तु शोक है कि वर्तमानकालमें विदेशियोंने हम लोगोंपर ऐसा पाँव जमाया है कि हम मारे बोझेके शिर नहीं उठासकते जिनके साथ स्पर्श करनाभी हमलोगोंको पापजनक था उनकी गुलामी हमलोगोंको उठानी पडरही है । हमारे देशके सम्भावित विद्वान् लोग निर्पराध पकड २ कर मारदिये जाते हैं । विदेशीलोग हमारे पर ऐसा अत्याचार कररहे हैं कि, जिसको कहती हुई हमारी जिह्वाभी संकोच

करती है। हमारे सुन्दर २ बच्ची बच्चोंको जो विदेशी चाहे लेसकता है परन्तु हमलोगोंमें आगेसे बोलनेतककी हिंमत नहीं है। हमारे धर्म-स्थान देवालय मन्दिर तीर्थ सभी वैरान कर दिये गये हैं परन्तु हम कुछ भी नहीं करसकते। हमारे अनेक भाई बन्धुलोग बलात् मुसलमान बनालिये गये परन्तु हमलोगोंमें शिर उठानेकी शक्ति नहीं है। वह भी एक समय था कि जिस कालमें इस देशके लोग चक्रवर्ती होते थे। कोई विदेशी इस देशकी ओर आंख उठाकर नहीं देखसकता था। क्या हुआ कैसा हुआ कुछ समझमें नहीं आसकता रामकृ-ष्णादि महानुभावभी तो इसी देशके महापुरुष थे। भीम अर्जुन आदि शूरवीरभी इसी भूमिके सुपुत्र थे। अब वह शूरवीरोंकी वंशपरम्परा कहाँ चलीगई। वह भारतभूमिकी क्षत्रिय कुलांगना जो कि, शूरवी-रोंको उत्पन्न किया करती थीं कहाँ लुप्त होगईं। इस देशकी प्रजामा-त्रमेंसे बल वीर्य्य साहस, शक्तिका विनाश कैसे होगया। इत्यादि आपलोगोंको विचार करना चाहिये और अपने धनधान्य धर्म तथा देशकी रक्षाके लिये कटिबद्ध होना चाहिये। न्यायशील परमेश्वर सदा न्यायपरायणोंकी सहायता करता है। इसलिये यदि आपलोग-भी न्यायपरायण होकर अपने धन धान्य धर्म तथा देशकी रक्षाके लिये तत्पर होंगे तो ईश्वर आपलोगोंकी अवश्य सहायता करेगा। आपलोगोंका विदेशीलोगोंके हाथसे क्लेश उठानाभी परस्पर कुसम्पके कारण है। यदि आपलोगोंका आपसमें सम्प होय तो आजही सर्व-सम्पत्ति आपकी दासी बनसकती है।

भिन्नानामतुलोनाशः क्षिप्रमेव प्रवर्तते।

तस्माद्विभागो भ्रातॄणां न प्रशंसन्ति साधवः ॥ १ ॥ महाभारत ॥

अर्थात् भिन्न २ होनेवाले भाईबन्धुओंका शीघ्रही विनाश होजा-जाताहै इसालिये साधुलोग भाईबन्धुओंके परस्पर विभागकी प्रशंसा नहीं करते हैं।

इत्यादि अनेक नीतिवचनभी आपही लोगोंकी शिक्षाके लिये आप-लोगोंके पूर्वज वृद्ध महापुरुषोंने कहे हैं । आजदिनतक गिरती मरती हुई आर्यसन्तानका अभी बीजमात्र शेष है । यदि अबभी आपलोग इस बीजकी रक्षाके लिये कटिबद्ध न होंगे तो इस हिन्दूप्रजाका इस संसारमें स्थिर रहना कठिन है प्यारे सज्जनो आपलोग लम्बी दृष्टिको फैलाकर देखो संसारमें कोईभी वस्तु विनारक्षकके नहीं रहसकती । आप तृणसे लेकर ब्रह्माण्डतक तथा चीटीसे लेकर ब्रह्मातक भी दृष्टि करें तो वेभी अवश्य किसी न किसीसे संरक्षित ही प्रतीत होंगे जिस संरक्षित पदार्थकी ओरसे संरक्षक एक वर्षभरभी उपराम होता है उस पदार्थकी उतनेही कालमें मृत्युदशासी दीखपडती है सर्वा-न्तर्य्यामी परमात्माने प्रत्येक जड चेतनपदार्थमें परस्पर संरक्षणका बीज डालाहुआ है । अर्थात् संरक्षकको संरक्षित पदार्थकी सर्वदा तत्पर होकर रक्षा करनेकी दैवी आज्ञा है। जो जीव इस दैवी आज्ञाके अनु-कूल व्यवहार करताहै वह आमरण सर्वदा सुखको अनुभव करता है। परन्तु जो इस दैवी आज्ञासे विपरीत व्यवहरण करताहै वह सदा क्लेशही क्लेशको अनुभव करता है। आपलोग भारतभूमिकी आर्य्यसन्तान हैं । भारतवर्ष आपकी मातृभूमि है । माताकी रक्षा करना पुत्रोंका सहजधर्म है। मातापर बलात्कार करनेवाले कुकर्मीओंके सामने प्राण देना पुत्रोंका सहजधर्म है । आपलोग दुनियाके इतिहासोंको उठाकर देखें क्या क्या विचित्र हाल देखनेमें आताहै । सैकडों देश बस बसकर बैरान होगये सहस्रों कौमें (जातियें) हो होकर धूलिमें मिलगई । जिस २ देशका या जातिका जिस २ समयपर कोई संर-क्षण बनारहा वह देश या जाति उस २ कालमें कुछ समयतक विद्युत चमत्कारकी तरह संसारमें दीखती रही । परन्तु यदि कदापि संरक्षक गफलतकी निद्रामें सोया तो उसी जातिका या देशका उसी समयमें नाश हुआ । ऐसेही अनेक देश वैरान होगये । सहस्रों जातियाँ उत्पन्न हो होकर विनष्ट होगई तथा उनके स्थानपर नूतन जातियाँ आनबसीं-

स्मरण रहे कि यदि आपलोग भी वर्त्तमानमें इस मृतप्राय आर्य्यजाति-
के संरक्षणमें तत्पर न होंगे तो इसका भी इस संसारमें रहना दुर्घट है
"आत्मा वैजायते पुत्रः" इस श्रुतिके तात्पर्यसे भी यही प्रतीत होता
है कि, भावीपुत्रादिरूप सन्तानसे भी हमही उत्पन्न होनेवाले हैं। यदि
यह सत्यही है तो हम वर्तमानमें अचिरस्थाई विनश्वर शरीरकी रक्षा-
करते हुये भावी सुख सम्पत्तिका प्रबन्ध न करें तो कैसी हानिकी
वार्त्ता है। क्या क्षात्रिय वीर्य्य होकर घासफूसकी तरह स्वय उत्पन्न
होकर नाश होना हमलोगोंका धर्म है। क्या बलात्कारसे परपुरुष हमारा
भाग छीने और हम क्षात्रिय वीर्य्य होकर चुपचाप बैठें यह हमारा
कर्म है आओ प्यारे सज्जनों परस्पर मेलकरो उपाय सोचो। इस
तिरस्कृत धिक्कृत जीनेसे तो मरना अनेक गुणा अच्छा है पन्तु क्षात्रिय
वीर्य्य होकर दूसरेकी गुलामी उठानी कलंकरूपहै। अब मुसलमानों-
का जोर जुलम अवधितक पहुँच चुका है। वर्तमानमें उनकी बादशाही
विगत तेल दीपककी तरह चमचमा रही है। मेरेको पूर्णआशाहै। कि
आपलोग यदि अपने क्षात्रभावको स्मरण करके अब थोडीभी हिंमत
करैंगे तो अवश्य विजय लाभ होगा और सदाकेलिये आपलोगोंके
नाम धार्मिक देशोपकारी महापुरुषोंकी गणनामें अंकित किये जांयगे
और साधारण जीवोंकी मौतमरना क्षत्रियोंका धर्मभी नहीं है।

जयो वधो वा संग्रामे धात्रादिष्टः सनातनः॥
स्वधर्मः क्षत्रियस्यैष कार्पण्यं न प्रशस्यते॥ १ ॥ भारत ॥

अर्थात् विजयलाभ करना या मरना इन दोनोंमें एक संग्राममें
अवश्य प्राप्त होता है इस वार्त्ताके लिये विधाताका नियम है। और
क्षत्रियका यह स्वधर्म है इस लिये कातरता क्षत्रियवीर्य्यको शोभा
नहीं देती॥ १॥

यस्य शूरस्य विक्रांतैरेधन्ते बान्धवाः सुखम्॥
त्रिदशा इव शक्रस्य साधु तस्येह जीवितम्॥ १॥ भारत॥

अर्थात् जिस शूरवीर पुरुषके बलवीर्य्यके प्रभावसे उसके संबन्धी

लोग ऐसा सुख पाते हैं कि जैसे इन्द्रके प्रभावसे देवलोगमें देवताओंको हो उसी क्षत्रिय वीर्य्यका इस संसारमें जीवन सफल तथा श्रेयस्कर है ॥ १ ॥

इत्यादि अनेक उत्तेजक तथा नीतिपूरित वचन आपलोगोंके पूर्वजोंने आपलोगोंके समयपर बोधके लिये निर्माण किये हैं । अब समय है इन वचनोंका गूढ अभिप्राय आपलोगोंको चित्तमें लाना चाहिये । तथा इस क्षण परिणामी विनश्वर कलेवरकी तरफ दृष्टि न देकर अपने कर्तव्य धर्मकी ओर विचार करके कटिबद्ध होना चाहिये । इत्यादि श्रीगुरु गोविंदसिंहजी महाराजके परमसारपूरित सत्यहृदयके सदुपदेशोंने सिक्ख लोगोंके चित्तोंपर तथा पर्वती राजा लोगोंके दिलोंपर ऐसा असर किया कि अनेक औरभी लोग अमृत पान कर २ सिंहबनने लगे तथा अपने तनमनसे श्रीगुरुजीके पीछे धर्मरक्षाके लिये लडनेको तयार होगये परन्तु पाषाणहृदय अनेक पर्वती राजालोगोंने श्रीगुरुजीके दरबारसे किनारे होकर परस्पर स्वयं विचार किया तो एक दूसरेकी बातें सुन २ कर सबोंके विचार फिरगये और सबने यही निश्चय किया कि गुरुगोविन्दसिंह हमलोगोंको मुसल्मानोंसे सामना कराकर हमारा विनाश कराया चाहता है । वर्त्तमानमें मुसल्मानलोग हमारे बादशाह हैं । हम इन लोगोंकी रियाया हैं । छः सौ वर्षसे यह हमारेपर राज्य करते चले आते हैं । अब उनके प्रबल प्रतापके आगे हमलोग क्या चीज हैं । हां गुरुगोविन्दसिंहके पिताको बादशाहने अवश्य मरवा डाला है । वह अपने पिताका वैर लिया चाहता है । परन्तु उसमें दखल देनेसे सिवाय हानिके हमलोगोंको क्या लाभ है इत्यादि डरपोक हीजडोंकेसे परस्पर विचार करके सभी राजालोग फिर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजके पासगये । और सभी अपने २ हीजडे पनकी बातें सुनाने लगे । कहने लगे गुरुजी मुसल्मानोंकी बादशाही हमलोगोंपर छःसौ वर्षसे चली आती है । नदीपूरकी तरह सर्वांग पूर्ण उन लोगोंके पास सेना तैयार है । हमलोगोंकी

या आपकी क्या ताकत है कि उन लोगोंके सामने खडे होसकें । यदि हठाग्रह दुराग्रहसे कदाचित् ऐसा कियाभी जाय तो सिवाय हानिके कुछ लाभ नहीं दीखता । दूसरी यह वार्त्ता है कि हमारा आपसमें मेल होनाभी कठिन है । क्योंकि, हम रजपूत क्षत्रियलोग हैं । और आपके शिष्य (सिक्ख) लोग प्रायः शूद्रजातिके हैं फिर उनलोगोंके साथ मिलकर हमलोग खानपानादि व्यवहार कैसे करसकें । और यज्ञोपवीत धोती तिलकादिको उतारकर सिक्ख बननाभी हमलोगोंके लिये बहुत कठिन है । मूर्त्तिपूजा जो कि चिरकालसे हमारे वंश परंपरासे चली आती है उसका छूटनाभी दुर्घट है इत्यादि राजालोगोंके वचनोंको सुनकर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने कहा कि, हम आपलोगोंके अच्छेमें सदा प्रसन्न हैं । हम तो आपलोगोंको इस देशके महाराजा बनाया चाहते हैं । परन्तु आपलोगोंकी प्रारब्ध । जिन गुरुके सिक्खोंको आपलोग 'शूद्र' बतलाते हो आशा है कि थोडेही कालमें आपलोग इनके स्वाधीन होंगे ।

श्रीगुरुजीकी उक्त भविष्यत् वाणी पर्वती राजालोगोंको कुछ बुरीसी लगी । और सबने मिलकर बादशाहके खैरख्वाह बननेके लिये श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके दरबारके व्याख्यानका यावत् वृत्तान्त आनुपूर्वी बादशाह औरंगजेबके पास दिल्लीमें लिखभेजा । पीछे नाजम सरहिन्दको भी लिखभेजा कि यदि इसी वक्तसे इन सिक्खलोगोंका कुछ उचित प्रबन्ध न होगा तो थोडेही दिनोंमें यह लोग ऐसा फतुर उठावेंगे कि, उसका सम्भालना बादशाहको भी कठिन होगा इत्यादि— उचित तो यह था कि, श्रीगुरुजीके पवित्र उपदेशका इन लोगोंके चित्तोंपर कुछ पवित्र प्रभाव होता । परन्तु दुर्दैवकी प्रेरणासे तथा अपनी जडतासे सबने मिलकर परस्पर कुसम्पका बीजही बोया ।

इत्येकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ३९ ॥

अथ चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥

उसी समयमें श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजके पास सहस्रों तरहके नये २ घोडे सैकडों हस्ती बलीवर्द इत्यादि बहुतही सामग्री जंगकी सहजही आन जुटी थी । आपने उन सबको भिन्न २ किलेंमें यथा-योग्य बांटके निवास स्थान दे रखा था । और उनकी रक्षाके लिये शूरवीर शिष्य (सिक्ख) लोगभी सहस्रों नियत कर रक्खे थे । श्री-गुरुजीके किले प्रायः सभी पर्वती राजालोगोंकी सीमामें थे । जिस २ राजाकी सीमामें जो जो किला था वहाँके रहनेवाले घोडे बैलोंके लिये घास लकडी इत्यादि अपेक्षित वस्तुभी उसी प्रान्तसे ली जाती थी । सिक्ख लोग जब घास लकडी इत्यादि वस्तु लेनेके लिये पहाडमें जाते तो पर्वती लोग प्रायः राजालोगोंके सीखे सिखलाये उनका सामना कर बैठते । परन्तु प्रबल सिक्खजातिके आगे डरपोक पर्वती कुछ ठहर न सकते स्वल्पसमय लडभिडकर मारखाकर तितर बितर होजाते । पीछे सिक्खलोगोंके जो वस्तु अपेक्षित होती सो लेकर अपने किलेमें चले आते । धीरे धीरे सभी पर्वती राजाओंको खबर हुई । परस्पर सेनाका मुकाबिलाभी होनेलगा । तो एकदिन राजा अजमेरचन्द्र बिलासपुरनिवासीने अपने आस पासके सभी राजालोगोंको बुलाया, और सभा भरकर कहा आपलोग इस सिक्ख जातिको देखते हैं कि कैसी प्रतिदिन वृद्धि पकडती जाती है ! तथा हमारे तुम्हारे इलाकोंमें भी हस्ताक्षेप कर रही है । अनेक तरहसे समझाने बुझानेसे भी सम-झती नहीं है । परमेश्वर न करे कोई ऐसा दिन न आवे कि, यह जाति जोर पकडकर हमारे आपके इलाकोंपरभी पाऊँ जमा लेवे । इत्यादि वचनोंको सुनकर सबने एकमत होकर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजको एक विज्ञापनपत्र लिखकर भेजा । कि, यदि आप हमलोगोंके इलाकेमें रहना चाहें तो जैसे प्रथम शान्तिपूर्वक स्वल्पसमाजसे आनन्दपूर्वक रहा करते थे वैसेही अबभी रहा करें परन्तु अब आपका सर सामान

समाज प्रतिदिन अधिकसे अधिक हुआ चला जाता है जिसकी बदौलत प्रतिदिन अनेकतरहकी शिकायतें प्रत्येक इलाकेके लोगोंके मुखसे सुननेमें आती हैं। यदि आपको इसी ठाटसे रहना स्वीकृत हो तो किसी खुलासे प्रदेशमें जाय निवास करें कि, जहाँ पर प्रजा लोगोंको आपके निवास करनेसे किसीतरहकी हानि न पहुँचे। इसके उत्तरमें श्रीगुरुजीने लिखभेजा कि भूमि सभी परमात्माकी है किसी मनुष्यके बापकी नहीं है। परन्तु हमने जिस स्थलमें निवास किया है वह भूमि हमारी जरखरीद है। इसलिये हम उसको छोड नहीं सकते। इसपर राजालोगोंको औरभी बुरा प्रतीत हुआ। और सबने मिलकर श्रीगुरुजीको फिर दोबारा लिखभेजा कि यदि आप अपने मालजानका संरक्षण चाहते हो तो पत्र देखतेही हमारे इलाके छोडदेनेकी तैयारी करो अन्यथा आपको बलात्कारसे निकाल दिया जायगा तथा अप्रतिष्ठाभी करी जायगी। इसके उत्तरमें श्रीगुरुजीने लिखा कि, यद्यपि हम निर्बल हैं तथापि सर्वान्तर्य्यामी अकालपुरुष जो कि, निर्बलोंका बलप्रदाता है वह हमारे सदा अंगसंग है। इसलिये हमको आपलोगोंसे कुछ विशेष भय नहीं है यदि आपलोगोंसे न रहाजाय तो बेशक अप्रतिहत चले आवें जो अकालपुरुष करेगा देखा जायगा इस उत्तरके सुनतेही सभी पहाडी राजे जलबलकर रक्त हो गये और परस्पर विचार करके युद्धकी तैयारी करने लगे। इतनेहीमें एकदिन कईएक सिक्खलोग मिलकर पर्वतके ग्रामोंमें सीधा सामान खरीदनेके लिये गये। तो बलियाचन्द तथा आलमचन्द दोनों जागीरदार राजपूतोंने राजा अजमेरचन्दकी सहायता पाकर उन सिक्खोंको घेर लिया दोनों तरफसे तीरों तथा बन्दूकोंकी झाड होने लगी। बहुतसे मनुष्य जखमी होगये। और कुछ मारेभी गये। बलियाचन्द स्वयंभी जखमी होकर घोडेसे गिरपडा। शेष रहे सो उसीकालमें इधर उधर कपूरकी तरह अदृश्य हुये। इसी तरह औरभी कईएक स्थलोंमें छोटी २लडाइयँ होती रहीं। अन्तमें राजा अजमेरचन्द बिलासपुरियाकी प्रेरणासे सभी

पहाडी राजालोग अपनी २ सेना लेकर आनन्दपुरके किलेपर चढ आये और चारों ओरसे किलेको घेरलिया । उस समय श्रीगुरुगोवि॰न्दसिंहजी महाराजके पास आठ हजारके करीब सिक्खलोग एकत्र थे दोनों ओरसे सनासन्न गोलियाँ बरसने लगीं । शूरवीर लोग अपने प्राणोंको तुच्छ समझकर धडाधड लडने लगे । तोपें गोले उगलने लगीं । तीरोंसे तनातन तनुबंध होने लगे । मार मार पुकारकर योद्धा लोग कूदने लगे । चारों ओर भूमि रक्तवेष्टित हुई । गृद्धादि पक्षिगणसे शवभक्षणार्थ आकाश आवृत्त हुआ । सभी सिक्खलोग दिनभर तो किलेके भीतर संरक्षित होकर लडाई करते । और रात्रिको किलेके बाहर चारोंतरफ थककर सोई हुई पहाडी राजाओंकी फौजपर छापा मारते । अर्थात् ऐसे टूटके जापडते कि, एक पलकभरमें अनेक शत्रुगणको महानिद्रामें शयन कराय डालते इसी तरहकी उच्छृंखल लडाईसे पर्वती राजालोगोंकी सेनाको बहुतही क्लेश हुआ । एकदिन राजालोगोंने एक मत्तहस्तीको शराब पिलाकर उसके माथेपर एक लोहेका तवा बाँधा । और उसके शुण्डमें तलवार पकडाकर किलेके दरबाजेके सामने उसके तोडनेके लिये छोड दिया । मत्तहस्ती किलेके किवाडोंको तहसनहस करने लगा । श्रीगुरुजीने मत्तहस्तीको देखकर एक दुनीचन्द्रनामक शिष्यको उसका सामना करनेको कहा । यह दुनीचन्द्र सूरवीरताके विषयमें अपने जैसा प्रायः किसी दूसरेको नहीं समझा करता था । तथा विशेषकर स्वात्मप्रशंसी था । इसी तात्पर्यसे श्रीगुरुजीने उसीसे कहा । वह तो मत्तहस्तीका सामना करनेकी आज्ञाको सुनताही किलेसे कूदकर भाग गया । पीछे उसी कालमें श्रीगुरुजीने एक विचित्रसिंह नामक लुवाना जातिके शिष्यको आज्ञा दई तो उसने उसीकालमें जाकर हस्तीके शिरमें एक ऐसी बरछी मारी कि, जिससे वह लोहका तवाभी टूटगया । और साथही हस्तीका शिर भी फूटगया । बरछीके लगतेही हस्ती चिकाचिकाता हुआ पीछेको भागा । उसीकालमें

सिक्खलोगोंने शत्रुगणपर धावा किया । अनेकों पहाडीलोग मारे गये । बचेसो पीछे भाग निकले । सिक्खलोगोंका सामना करनेसे छिन्नभिन्न होगये । किसीमें फिर मुकाबिला करनेका साहस न रहा । शेषमें सबने मिलकर एक आटेकी[1] गौ बनाकर श्रीगुरुजीके पास भेजी । और अपने। इष्टदेवकी शपथोंसे पूरित एक पत्रभी उसके साथ भेजा जिसमें लिखा कि, यदि आप पाँच सात दिनके लिये इस किले-को छोडकर कहीं दूसरी जगहपर चलेजावें तो हमलोग अपने २ घरको पीछे चले जावेंगे । श्रीगुरुजीने तो इस वार्त्ताको अंगीकार न किया । परन्तु माताजीके तथा मुसद्दीलोगोंके बहुत कहनेसे श्रीगुरु-जीने आनन्दपुरका किला छोड दिया । और शहरकीर्त्तिपुरकी तरफ रवाना होकर एक पर्वतके टीलेपर जाय विराजे वही पर्वतका टीला वर्त्तमानमें निर्मोहगढके नामसे प्रसिद्ध है । पर्वती राजालोगोंको सन्तो-ष न हुआ चाहा कि, अब गुरुगोविन्दसिंह मैदानमें निकला है ऐसे समयपर इसपर विजयलाभ करना उचित है सो सबने मिलकर उस पर्वतके टीलेको जाय घेरा खूब युद्ध हुआ । वहाँ परभी पर्वती लोगों-के दाँत खट्टे हुये । सबने निश्चय किया कि, सिक्खजातिका अब बहुत जोर होचुका है इनका सामना करना हमलोगोंकी ताकतसे बाहर होचुका है । इसालिये सभी मिलकर सरहिन्दके सूबाके पास चले गये । और उसके चरणोंपर शिर रखकर सहायतकी प्रार्थना कर-ने लगे सूबाने कहा कि, शाही फौज सिवाय उचित खर्चके किसीकी सहायताके लिये भेजी जानेका हुक्म नहीं है। पर्वती राजाओंने उसी-वक्त बीस हजार रुपया खर्चके लिये जमा किया। और दोहजार फौज-की प्रार्थना करी । सूबासरहिन्दने बीसहजार रुपया लेकर अपने सर-दार अलीमरदानखां तथा याकूबखांको दोसहस्र सवार और कुछ प्यादा देकर पर्वतीराजाओंकी सहायताके लिये रवाना किया । और

(१) हम लोग आपसे संरक्षित होना चाहते हैं । इस तात्पर्यकी सूचक पूर्वकालमें आटेकी गौ भेजनेकी परिपाटी थी ।

मार्गशीर्ष मिति १० संवत् १७५८ विक्रमीमें शहर कीर्तिपुरके किलेके समीप जंगका मैदान बना । दोनों ओरके शूरवीर सजबजकर जंगमें निकले । विशेष धूमधामसे युद्ध हुआ । दोनों तरफके अनेक वीर दीर्घनिद्रामें शयन कर गये । राजा अजमेरचन्द्रके हुक्मसे गोलन्दाजने एक गोलेका निशाना श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजको बनाया । आप उसकालमें उष्णीष (शिरका साफा) सज रहे थे । एक शिष्य रामसिंहनामक आपके शिरपर चामर फहरा रहा था दैवात् उस गोलेका लक्ष्य चामरकारकका शिर बन गया । परन्तु श्रीगुरुजीका बालवक्रभी न होने पाया । परन्तु उसीकालमें श्रीगुरुजीने अपने गोलन्दाजको हुक्म देकर उस गोलन्दाजको ऐसा लक्ष्य बनाया कि, उसका उसीकालमें शिर उडगया । औरभी बहुतसे शत्रुओंका विनशन किया । तबतक सायंकालभी होआया । लडाई शान्त हुई । सबलोग अपने २ ठिकानेपर विश्राम करने लगे । श्रीगुरुजी उसी रात्रिको आनन्दपुरके किलेमें आन दाखिल हुये । पीछे सूबासरहिन्दकी फौजनेभी किले आनन्दपुरको आन घेरा । सिक्खलोगोंने किलेके भीतरसे शाही फौजका उचित मुक़ाबिला किया । यद्यपि सिक्खलोगोंने सूबा सरहिन्दकी फौजको अपने किलेसे चार कोश पीछे हटा दिया और उनकी पांच खच्चरेंभी गोली बारूदकी लदी हुई सिक्खलोगोंके हाथ लगीं परन्तु मुहम्मदयाकूबखां तथा अमीरअलीखां नामक शाही अफसरोंने फिर पर्वती राजालोगोंको साथ लेकर ऐसे जोरसे सिक्खोंपर आक्रमण किया कि, सिक्खलोगोंको पीछे हटना पडा सभी सिक्खलोग फिर आनन्दपुरके किलेमें जा घुसे । और भीतरसे लडने लगे । अनेकादिन लडाई होती रही । परस्पर कोईभी विजय लाभ न करसका । शेषमें किलेका संगृहीत सीधा सामान पूर्ण हुआ । और शत्रुगणने बाहरसे आनेका मार्ग रोका किन्तु किलेमें जानेवाले सीधा सामानको बाहरहीसे लूट २ कर खाने लगे । सिक्खलोग किलेमें लाचार होगये

शेषमें मुष्ठी २ भर चनाभी मिलना कठिन हुआ। जबतक मुष्टिभर चनाभी मिलता रहा सिक्खलोगोंने खूब लडाई करी ॥ परन्तु जब सिक्ख लडते २ बहुत कम रहगये और प्रतिदिन उपवास होनेलगे तब श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराज अपने शिष्योंके समेत मैदानमें निकल खडे हुये। और शत्रुओंके आक्रमणको धैर्य्य पूर्वक रोकतेहुये दरियाय शतद्रुसे पार होकर शहर बसोहलीकी तरफ निकल गये इस लडाईमें सिक्खलोगोंकी हार हुई कारण उसमें यह हुआ कि, देशभरके सिक्खोंका जुटाव सदा तो आनन्दपुरके किलेमें रहताही नहीं-था। किन्तु आते जाते रहते थे। जिस कालमें सरहिन्दके सूबेने अपनी फौज भेजी थी उस कालमें सिक्खलोगोंका जुटाव बहुतही थोडा था तथा खानपानादि सामग्री भी किलेमें कम रह गई थी। क्योंकि थोडेही दिन प्रथमभी एक भारी लडाई होचुकी थी इसलिये इस लडा-ईमें सिक्ख पराजित होगये। तथा सूबेकी सेनाने विजय लाभ किया। परन्तु सूबेकी सेनाकीभी हानि पूर्णरूपसे हुई। पर्वती राजालोग तथा सूबेके सरदार लोग विजयका डंका बजाते हुये अपने २ घरको चले गये। और उधर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजको राजाबसोहलीने प्रेमपूर्वक अपने पास ठहरा लिया। तथा वे प्रतिदिन शिकारादि खेलकर प्रसन्न रहने लगे। एकदिन दैवात् शिकार खेलनेमें राजा भम्बूरसे भेंट हुई। और उसने श्रीगुरुजीको अपने मकानपर लेजानेके लिये प्रार्थना करी। श्रीगुरुजीने राजाबसो-हलीसे रवाना होकर उसके घरमें आन निवास किया। कुछ दिन उसके घर रहकर सिकन्दरकी धारादि प्रसिद्धस्थलोंको देखते हुये वैशाख सक्रांतिके मेलपर रवालसरपर आन विराजे। वहाँपर आपका स्मारक एक मन्दिर अबतकभी बना हुआ है मेलामें आनेवाले अनेक पहाडी राजा तथा अमीरलोग श्रीगुरुजीका आगमन सुनकर आपके दर्शनोंके लिये आन एकत्र हुये। उसीसमय भरेदरवारमें एक फरक्का-बादनिवासी उद्धवनामक राजपूतने श्रीगुरुजीके सामने बतौर भेंटके

एक उत्तम दोनाली बन्दूक आन रक्खी । उसी कालमें श्रीगुरुजीने उस बन्दूकको भरकर अपने दरबारमें उच्चस्वरसे कहा कि; कोई ऐसा शिष्यभी है जो इस बन्दूकका इस कालमें लक्ष्य बने ? । इस वार्ताके सुनतेही बहुतसे शिष्यलोग हाथजोरकर खडे होगये । और कहा कि, श्रीगुरुजी हमलोगोंका कहाँ भाग्य है जो आपकी बन्दूकके लक्ष्य बनजावें यह शरीर आपकी सेवामें हाजिर है चाहे अपने शस्त्रका लक्ष्य बनावें चाहे किसी दूसरेका बनावे । इस बातको देखकर पहाडी राजालोग बहुतही आश्चर्य्य हुये । और शिर फेर २कर वाह २ कहने लगे धन्य गुरुगोविन्दसिंहके सिक्ख हैं जिनको अपने गुरुकी सेवामें प्राणभी अदेय नहीं है । परन्तु सबके चित्तमें यह भीति अवश्य हुई कि,ऐसे सम्यक् लोग थोडेभी बहुतकरसमझने चाहिये । मेलेके पश्चात् वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी मण्डीवाले राजा शिवधरसेनके यहाँ आन-विराजे । राजाने आपका बहुतही प्रेमसे स्वागत किया और कुछ कालतक आपको बडे सत्कारसे अपने पास रक्खा । श्रीगुरुजीने चलते समय प्रसन्न होकर एक पुस्तक मण्डीके राजाको प्रदान करी राजधानी मण्डीमें दरियाय व्यासाके तीरपर जहाँ आपने मुकाम किया था वहाँपर आपके स्मरणके लिये एक उत्तम गुरुस्थान अबतकभी विद्यमान् है । यहाँ परही श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजको समाचार मिला कि,बहुतसे शिष्यलोग तरह २ की भेंट–तोफा लेकर दर्शनोंको चले आते थे कि, मार्गमें कलमोठाके राजाने उनकी सभी वस्तु लूट लई । ऐसे समाचारके सुनतेही श्रीगुरुजीने अपने ज्येष्ठ पुत्र अजितसिंहजीको कुछ सेना देकर कलमोठाके राजाके ऊपर भेजदिया उधर ज्वालामुखीके विजयभारती नामक महन्तने इस समाचारको सुना तो वह पाँचसौ नागे फकीरोंकी सेना लेकर राजा कलमोठाकी सहायताके लिये चलाआया । जब इस समाचारको श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने सुना तो स्वयं अपने पुत्रकी सहायताके लिये आन पहुँचे । दोनोंतरफसे खूब लडाई

हुई । अनेकों शूरवीरोंने महानिद्रामें शयन किया । अन्तमें कलमो-ठाके राजाकी हार हुई । सिक्खलोगोंने उस प्रान्तके ग्रामोंमेंभी कुछ लूट मार मचाई । पीछे ज्वालामुखीमें जाकर विजयभारतीके मठकोभी वीरान किया वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी वैशाखमासके अन्तमें संवत् १७५८ विक्रमीमें फिर अपने प्राचीन निवासस्थान शहर आनन्दपुरमें चले आये वहाँ आनकर फिर किलेकी मरम्मत कराई और युद्धके लिये अनेक तरहका सामानभी जुटाने लगे ऐसेही एकदिन सार्वज-निक दरबार लगाकर अपने चारों पुत्रोंका पूर्वोक्त रीतिसे अमृत संस्कार किया और अत्यन्त उत्साह मनाया पारितोषिक बाँटे सहस्रों गरीबों अभ्यागतोंको अतिउत्तम भोजन जिमाये । उसके पश्चात् आषाढमास संवत् १७५९ विक्रमीमें आनन्दपुरसे चलकर रोपडादि नगरोंमें होते हुये तथा अपने सदुपदेशोंसे अनेक शिष्योंके सन्देह दूर करते हुये सूर्य्यग्रहणके मेलेपर कुरुक्षेत्रमें आन विराजे । यहाँपर एक पूर्वदेशका चन्द्रनाथ नामक राजपूत श्रीगुरुजीके दर्शनके लिये आया । उसको अपनी तीरन्दाजीका बहुतही अभिमान था । श्रीगु-रुजीके पास भी वह वैसेही स्वात्मप्रशंसा करनेलगा श्रीगुरुजीने उसको शूरवीर जानकर सन्मान तो किया परन्तु उसको स्वात्मप्रशंसी जानकर उसका अभिमान भी दूर करना चाहा । श्रीगुरुजीने उसी-कालमें उसको तीर चलानेकी आज्ञा करी । उसने तीर तानकर खूब जोरसे छोडा तो एक कोशपर जाय गिरा । फिर उसने श्रीगुरुजीसे-भी तीर चलानेकी प्रार्थना करी । श्रीगुरुजीका तीर उससे भी आध कोश आगे जाकर पडा दर्शकलोग बहुतही प्रसन्न तथा आश्चर्य हुये और उसका अभिमान भी शान्त हुआ । सूर्य्यग्रहणके समयपर श्रीगुरुजी-ने ब्राह्मणोंको बहुतसा दान दिया और एक पण्डित मणिरामनामक ब्राह्मण जो कि उसकालमें बहुतही विज्ञपुरुष था उसको श्रीगुरुजीने बहुतसे धनदानके अतिरिक्त अपने हस्ताक्षर युक्त हुकमनामाभी (स्मा-रकपत्र) प्रदान किया वह पत्र उनकी वंशपरंपराके लोगोंके पास अब

तकभी विद्यमान है । मेलेके पश्चात् वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी चमकौर नामक ग्राममें आन विराजे । उन्हीं दिनोंमें बादशाही फौज [दोसहस्र सवार प्यादा] दिल्लीसे लाहौरको जा रही थी हयदरबेग तथा अलफखां नामक दो उनमें सरदार थे । उन्होंने श्रीगुरुजीको मैदानमें उतरे देखकर लटना चाहा । और अचाकन आक्रमण करने लगे । उधरसे श्रीगुरुजीके साथके शिष्यलोगभी उसी समय तैयार होगये । खूब लडाई हुई । दोनों ओरके अनेक शूरवीर मारे गये । अन्तमें शाही फौजने सीधा लाहौरका मार्ग लिया । और श्रीगुरुजी पीछे आनन्दपुरमें चले आये ।

इति चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४० ॥

अथैकचत्वारिंशोध्यायः ॥ ४१ ॥

उन्ही दिनोंमें एक पेशावर निवासी दीवान काबुली मल्लनामक क्षत्रिय सहस्रों रुपया नगद तथा अनेक तरहके तोफोंके अतिरिक्त पचास सिपाही काबुली श्रीगुरुजीकी भेंटके लिये लाया । जिनको देख कर श्रीगुरुजी बहुतही प्रसन्न हुये । उधर उन्हीं दिनोंमें राजा अजमेरचन्द-कहलूरिया जोकि, सदासे श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीका विरोधी चला आता था प्रथम उसने सूचक पुरुषोंद्वारा बादशाह औरंगजेबको यह सूचना दिलवाइ कि, एक गोविन्दसिंह नामक फकीर जिसका पिता बादशाही हुक्मसे संवत् १७३२ विक्रमीमें दीन इसलामके विषयमें कतल करवा दिया गया था । वह इस प्रान्तमें इसकदर जोर पकड गया है कि, जिसका सामना करना कठिनसा दीख पडताहै । उसने एक सिक्खोंका नूतन फिरका प्रचलित किया है जिसको वह अपने फिरकेमें लाता है उसको अपनी फौजमें भरती कर लेता है इसी तरहपर बहुतसी फौजभी उसने तैयार करली है अपना ठाट

बादशाहों जैसा रखता है और अपनेको सच्चा पादशाह कहलाता है। डाके मारनेवाले मार्गहर अनेकलोग उसके साथ रहते हैं। और प्रायः वेही लोग उसके नूतन धर्मके अनुगामी हुये हैं। यदि अभीसे उसका उचित प्रबन्ध नहीं किया जायगा तो कालान्तरमें बादशाहीमें एक वार हलचल मचनेकी सम्भावना है जिसका निवारण करना उसकालमें कठिन होगा। इत्यादि सूचनाके पश्चात् थोडेही दिन पीछे कई एक पर्वती राजाओंको साथ लेकर राजा अजमेरचन्द स्वयं बादशाह औरंगजेबके पास पहुँचा। और पूर्वोक्त सारी वार्त्ताको अपने मुखसे कह सुनाया। ऐसे समाचारको सुनतेही औरंगजेब जलबलगया। और पर्वती हिन्दूराजालोगोंका उनके विपरीत होना देखकर इस अवसरको अत्यन्त दुर्लभ समझा उसीकालमें सूबासरहिन्दके नाम शाही हुक्म श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके गिरफतार करनेका निकला। और अमीरखां आदि तीन सरदारोंके साथ कुछ फौजदेकर राजा अजमेरचन्दके साथ सूबासरहिन्दकी सहायताके लिये दिल्लीसे रवाना किया। शाही हुक्मके सुनतेही सूबा सरहिन्दने दिल्लीसे आई हुई फौज तथा पर्वती राजाओंको सांथ लेकर फाल्गुनमिति १३ संवत् १७५९ विक्रमीमें किले आनन्दपुरको चारोंओरसे घेर लिया। और चार पाँच दिन तक ऐसा भयानक युद्ध हुआ कि जिसका वर्णन करना भी कठिन है। दोनों तरफके सैकडों सूरवीर मारेगयें। परन्तु सिक्खोंकी फौजने इस वार्त्ताका कुछ विचार न किया। क्यों कि यह लोग बहुत जुटे हुये थे। अन्तमें छठवें दिन श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने अपनी फौजको साथ लेकर शत्रुकी सेनापर एकवारही ऐसा आक्रमण किया कि वे लोग दूरतक पीछे हटगये। उसी कालमें बादशाही फौजका सरदार अजीमखांनामक एक नामी पठान श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके सामने आया। और तलवारसे वार किया। उसके वारको बचाकर श्रीगुरु गोविन्दसिंहजीने उसके ऊपर वार किया तो वह दोटुकडे होकर घोडेसे नीचे गिरपडा उसके पीछे शाहीफौजका सरदार पैन्देखा

निकला । उसने भी आतेही श्रीगुरुजीपर तलवारका वार किया। जिसको ढालपर लेकर श्रीगुरुजीने उसकोभी अजीमखांके पीछे रवाना किया। ऐसेही उसकालमें श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके सामने जो जो हुआ वही तलवारकी नौकासे पारउतर । श्रीगुरुजीने अपनी फौजमें अनेक मुसलमान पठानभी भरती कर रक्खे थे। उसकालमें उनमेंसे सैयद-बेग तथा मामूखाँ नामक दोवीर निकले । और बादशाही फौजपर कूदपडे। अनेकों कातर उनके आगे अजावर्गकी तरह भाग निकले। शेषमें एक मियां हरिचन्दजसुवालिया मामूंखांके सामने हुआ। परन्तु एकही वारकरके मामूंखांके हाथसे हतहुआ। उसके पीछे क्रुद्ध होकर शाहीफौजका वीर दीनबेगनामक उक्त मामूंखांके सामने आया। मामूंखांने बहुत देरतक उसका मुकाविला किया । परन्तु अन्तमें थक कर उसके हाथसे मारा गया। अपने मित्रका वध देखकर सैयदबे-गको बहुतही क्रोध हुआ।और उसीकालमें दीनबेगके सामने आया। पटेबाजोंकी तरह एक दोवार परस्पर खाली गये । अन्तमें सैयदबे-गने ऐसा ठहराकर वार किया कि, दीनबेगका शिर जंग मैदानका कन्दुक बन गया । और उसके पीछे जिसने शिर उठाया उसकाभी वही हाल हुआ । उसके पश्चात् सिक्खलोगोंने एक बारही तलवारें खैंचकर ऐसा आक्रमण किया कि, शाहीफौज आगेसे भागने लगी राजा अजमेरचन्दकोभी आघात लगा । और उसका दीवानभी बहुतसे पर्वती सिपाहीयोंके साथ मारागया भागती हुई शाही फौजका बहुतसा सामान सिक्खोंके हाथ आया । शाही फौजके पराजित होनेका समाचार दिल्लीमें बादशाह औरंगजेबको पहुँचा । तो वह बहुत दुःखी हुआ । और उसने उसीकालमें लाहौर तथा काश्मीरके सूबोंके नाम हुक्म लिख भेजा कि, जैसे हो फौरन् गोविन्दसिंहको पकडकर कैदकरो । यदि हाथ न आवे तो उसका शिर काटकर शाही दरबारमें हाजिर करो दोनोंमें किसी एक वार्त्ताके करनेमें अधिक विलम्ब नहीं होना चाहिये । और एक सरदारको साथ देकर बहु-

तसी फौज दिल्लीसेभी आनन्दपुरको रवाना करी। उधरसे बादशाही हुकुमके पहुँचतेही सूबा लाहौर तथा काश्मीरभी अपनी २ सेना सजा कर चलपडे। और सूबा लाहौरके हुक्मसे हाकिम जालन्धर तथा हाकिम कसूरभी तैयार होकर आये। उधरसे पर्वती राजालोगभी अपनी २ फौज लेकर चले आये। और संवत् १७६० विक्रमीके पोषमासमें चारों-तरफसे आनन्दपुरके क़िलेको आनघेरा। उधर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने भी प्रथमहीसे पूर्ण प्रबन्ध करलिया था। जहाँ तहाँ पत्र भेजकर दशसहस्रके लगभग अपने शिष्य (सिक्ख) वर्गकी सेना जुटाली थी। और उसका इसतरह पर विभागभी करादिया था। अपने ज्येष्ठपुत्र अजीतसिंहके साथ दोसहस्र सवार सिपाही देकर उसको केसगढके किलेमें नियत किया। और नाहरसिंह तथा शेरसिंहको एक सहस्र सिपा ही सवार प्यादा देकर उनको लोहगढके किलेमें दृढ किया। ऐसेही आलमसिंह तथा संगतसिंहको तीन सहस्र सेनादे-कर किले दमदमेपर स्थिरकिया। उदयसिंह तथा ईश्वरसिंहको एक सहस्र सेनाके साथ आगमपुरमें ठहराया। और आप उक्त पांचों प्यारोंके तथा शेष सेनाके साथ आनन्दपुरके किलेमें स्थिर हुये। ऐसेही कोईभी मोरचा खाली न छोडा। प्रत्येक स्थलमें विभाग करके सिक्ख-लोग जमादिये। बादशाही फौज आतेही बन्दूकों तथा तोपोंकी झाड करने लगी। उधर किलेके भीतरसेभी तोपें बन्दूकें छूटने लगीं। दिन भर लडाई होतीरही। बादशाही फौजकी मैदानमें होनेके कारण बहुत ही हानि हुई। अनेक शूरवीर मारे गये। सायं होनेसे लडाई विश्रान्त हुई। दूसरे दिन प्रातः होतेही भाई दयासिंह तथा उदयसिंहने अपने मोरचेको कुछ आगे बढाया। जिसको देखकर शाही फौजके शूरवीरोंको बहुत क्रोध हुआ और एकदम ऐसे टूट पडे कि, सिक्खोंको फिर अपना मोरचा पीछे करना पडा। परन्तु किलेके भीतरसे तोपों बन्दू-कोंकी ऐसी झाड हुई कि, जिसने सहस्रों अच्छे २ शूरवीरोंको महानि-द्रामें शयन कराया किलेके भीतरसे गोली गोला तीर जोभी बाहर

आता खाली न जाता किन्तु कोई न कोई अपना लक्ष्य भेदन अवश्य करता परन्तु बाहरसे किलेमें जानेवाला गोली गोला या तीर शतमें एक लक्ष्यभेदन करता इसी कारणसे दोही दिनमें बादशाही फौजके सहस्रों सिपाही मारेगये परन्तु सिक्खलोग किलेके भीतर बहुतही कम मारे गये । तीसरे दिन श्रीगुरुजीके पुत्र अजीतसिंहजीने विचारा कि, शाही सारी फौज तो एक आनन्दपुरहीको घेरे बैठी है । इसलिये ऐसे अवसरपर हमलोगोंका इस किलेमें बैठ रहना उचित नहीं उसी कालमें अपने दोसहस्र सिंहोंको साथ लेकर सायंकालके समय दिनभर लड २ कर थकी हुई बादशाही फौजपर पीछेसे ऐसे जोरसे धावा करके आप-डा कि, बादशाही फौज सम्भाल न सकी । और जैसे तैसे आगेसे लडती हुई पीछे हटने लगी । बहुतसे सिपाही तो एकदम भाग निकले । ऐसा अवसर देखकर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजनेभी अपने पुत्रकी सहायताके लिये किला छोडदिया । और बाहर होकर एकवारही सभी सिक्ख मुसलमानोंपर टूट पडे । बादशाही फौज एकवारही मैदान खाली छोडकर भाग निकली । तीन कोशतक सिक्खोंने उनका पीछा किया । और पीछे भागते हुये भी अनेक सिपाही मारे-गये । अजीम खाँ दिलावरखाँ इत्यादि सरदारलोगभी मारेगये । सिक्ख-लोग विजयी होकर आनन्दपुरके किलेमें आनकर आराम करनेलगे । उधर सरहिंदका सूबा एक ऊंचे टीलेपर बैठकर उस भयानक युद्धका निरीक्षण कर रहाथा वह बादशाही फौजको सिक्खलोगोंसे पराजित देखकर बहुतही आश्चर्य हुआ । और राजा अजमेरचन्दको अपने पास बुलाकर विचार करने लगा कि सिक्खलोगोंके अतिन्यून होनेपर भी उनके विजयी होनेका कुछ कारण समझमें नहीं आता । क्या यह लोग सत्यही युद्धवीर हैं कि छलबलसे विजयलाभ किया करते हैं । इसपर राजा अजमेरचन्दने कहा सूबा साहब क्या जाने इनमें कौन बलाय आनबसती है । जो जो मनुष्य गोविन्दसिंहके हाथसे पानीमें लोहा घिसाहुआ पीकर उसका नये फिरकेका चेला बन जाता

है वह चाहें किसी वर्ण या जातिका हो मरने मारनेसे कुछभी भय नहीं करता। लडाईमें पीछे पाउँ हटाना तो इनके चेलोंमेंसे सौमें एकभी नहीं जानता युद्धमें मरना या मारना इनलोगोंने अपना धर्म समझ रक्खा है। अपने गुरुके कहने पर प्राण अर्पण करदेना तो मानों इन लोगोंका सहज कर्तव्य है। हम लोगोंने भी इनका अनेक वार का-बिला किया परन्तु इन लोगोंने एक बारभी हार न मानी। दाँव बचानेके लिये लुटेरोंकी तरह कदाचित् भागभी जाते हैं तो दूसरेही दिन फिर मिलकर सामना करनेको तैयार होते हैं। सम्पभी इन लोगोंमें ऐसा है कि मधुमाक्षिकाकी तरह जहाँ एक गिरे सभी वहाँही आन गिरते हैं। परमेश्वर न जाने इनको क्य घोलकर पिलाया जाता है तथा क्या शिक्षा दी जाती है। पाँच २ आदमी पचास २ का सामना करनेको तैयार हैं। परन्तु पीठ दिखलाना नहीं जानते। इत्यादि वार्त्ताको सुनकर हाकिम सरहिन्द औरभी चकित हुआ परन्तु सूर्य्यअस्त होनेके कारण उस दिनमें तो कुछ न होसका। दूसरे दिन प्रातः काल श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी एक उच्चस्थ-लपर विराजमान होकर अपने शिरका साफा सजा रहेथे। उसी कालमें राजा अजमेरचन्दके हुकुमसे गोलन्दाजने उस उच्चस्थलको गोलेका निसाना बनाया। अनेक गोले पडनेपरभी श्रीगुरुजीके तो कुछ आ-घात न हुआ परंतु और बहुतसे सिक्खलोग उन गोलोंसे मारे गये वहाँसे किनारे होकर श्रीगुरुगोविंदसिंहजीने शत्रुकी सेनापर तीरोंकी ऐसी वर्षाकरी कि उन लोगोंको अपने २ खेमें दूरतक पीछे हटालेने पडे। और किलेसे दोकोश दूरपर सिम्बलवृक्षके नीचे जहांपर सुबा लाहौर तथा काश्मीर परस्पर चौसर खेल रहेथे दोचार तीर श्रीगुरु-जीने वहांभी फेंके। जिनको देखकर उन लोगोंने कुछ करामातसी समझी। और फिर उनके संदेह निवारणके लिये श्रीगुरुजीने एक तीरके साथ पत्र लिखकर बांधादिया। जिसमें लिखा कि यह कोई करामात नहीं है किन्तु अभ्यासहै। ऐसेही कुछ देरतक लडाई चला

शेषमें जब बादशाही फौजने अपने विजयकी आशा न देखी तो चारों तरफसे आनन्दपुरके किलेको घेर बैठी । और किलेके भीतर सीधा सामान घास दाना इत्यादि सभी वस्तु जानेसे रोकदई । परन्तु सिक्खलोगोंके पास जबतक कुछभी आधार रहा अन्दरसे उचित रूपसे गोली गोलोंकी वर्षा करतेरहे । जब सीधा सामान घास दाना कुछभी न रहा तब उसी दिन अर्द्धरात्रिके कालमें सरदार नाहरसिंह, शेरसिंह बहादुरसिंह तथा दयासिंह इत्यादि शूरवीर लोग अपनी दो सहस्र सिक्ख सेनाको साथ लेकर बादशाही सेनापर अचानक आनपडे।और तलवोंर खैंचकर सोते हुये शत्रुगणका विनाश करने लगे । सिक्खलोगोंने ऐसा विशीर्ण होकर छापा मारा कि अबुद्धशत्रुगणको दोसहस्रका बीस सहस्र सूझपडा । चारोंओरसे खटाखट तलवारोंके शब्दके साथ ' जयश्रीगुरुजीकी ' यह शब्दभी सुनाई देता । शत्रुगणकी दृष्टिमें चारोंतरफ खालसाही खालसा दीखपडने लगा । बादशाही फौज दिनभर की थकी मांदी बेहोश पडी थी अचानक छापा पडनेसे सेनामें हलचल मचगई । अन्धकारमें उठकर घबराहटसे आपसमें लडकर मरनेलगे । और थोडी ही देरके पीछे होश सम्भालकर पीछे-भाग निकले । सूर्य्योदय होनेतक दश बीस कोश निकलगये । इस लडाईमें दो चार पर्वतीराजाभी मारेगये और उनके साथके पर्वती शूरवीरभी बहुतसे काममें आये । भाग निकली बादशाही फौजका सारसामान गोली बारूद इत्यादि सब सिक्खलोगोंके हाथ लगा ।

इत्येकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४१ ॥

अथ द्विचत्वारिंशोध्यायः ॥ ४२ ॥

शाहीफोजकी हार होनेके समाचार बादशाहको दिल्लीमें पहुँचे । तो वह बहुतही आश्चर्य हुआ । और फिर क्रुद्ध होकर पंजाबदेशमात्रके सभी सूबों और हाकिमोंको ऐसा लिख भेजा कि एकदम सबलोग मिलकर आनन्दपुरको बरबाद कर डालो और गोविन्दसिंह जो कि

देशमें फसाद मचारहा है उसको फौरन् गिरफ्तार करो । अथवा उसका शिर काटकर शाहीदरबारमें हाजिर करो जो वीर इस कामको करेगा उसका शाहीदरबारमें मर्तबावलन्द किया जावेगा । वरन् पीछे भागकर आनेवाले गीदड पकडकर सरेदरबार कतल किये जावेंगे इस अमरमें किसीका लिहाज या मुलाहिजा कुछभी न किया जावेगा । इत्यादि शाहीहुक्मके सुनतेही यावत् देश पंजाबकी शाहीफौज शीघ्रही एकत्र हुई । बाईस धारके पर्वती राजाभी अपनी २ सेना लेकर तैयार हुये मालेरकोटला, जालन्धर, कसूर, फगवाडा, पेशावर,लाहौर इत्यादि नगरोंके सबी सूबे हाकिम अपनी २ सेना लेकर किले आनन्दपुरपर चढ आये । और चैत्रमास संवत् १७६१विक्रमीमें दोनों तरफसे लडाई चल-पडी इस अवसरपर सिक्खोंके जुटावसे बादशाही सेनाका जुटाव बिस-गुणा अधिक हुआ । तथापि वीर सिक्खोंने उनका उचित मुकाबिला किया किलेके भीतरहीसे अनेक अन्याय शीलोंको यमपुरीका मार्ग बत-लाया तथा धीरे२बहुतादिनतक लडाई प्रचलित रक्खी।अन्तमें किलेके भीतरका सीधा सामान घास दाना सबी समाप्त हुआ और बाहरसे मुसलमानोंने उसका आना बन्द किया। किन्तु बाहरका बाहर लूट २ कर खाने लगे । दोचार दिनतक सिक्खलोगोंने भूँखे रहकरभी लडना नहीं छोडा । अन्तमें जब भूखसेभी प्राण जानेका अवसर आया तो सबकी यही इच्छा हुई कि किला छोडदेवें । किन्तु मैदानमें होकर लडें परन्तु श्रीगुरुजीकी इच्छा इससे उलटी थी । वह यह कहते थे कि दो चार दिन आप लोग धैर्य्य करें तो अवश्य हमाराही विजय होगा परन्तु भूखे सिक्खलोगोंने किलेके छोडनेहीकी सम्मति करी । उधर बादशाही फौजभी बहुत दिनतक लडती२दुःखित होही चुकी थी पहाडी राजालोगभी क्लेशित होगये थे । ऐसे अवसरपर सबने मिल कर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीको एक वंचना गर्भित प्रतिज्ञापत्र लिखभेजा कि हमलोग अपने दीनधर्मकी शपथपूर्वक आपके साथ प्रतिज्ञा करते है । कि यदि आप कुछ दिनके लिये किले आनन्दपुरको छोड कर

कहीं दूसरी जगहपर चलेजावें तो बादशाही हुक्मभी पूरा होजावे और आपके तथा हमारे जानमालकीभी सलामती बनी रहे । क्योंकि हम-लोगोंपर बादशाही हुक्म यह आया हुआ है कि यदि आप लोगोंमें कोईभी विना किले आनन्दपुरके वीरान किये पीछे भागकर आवेगा तो वह सेरशाही दरबार कतल किया जावेगा । इसलिये ऐसे अवसर पर सिवाय आपके किले छोडनेके अनेक जानोंका हलाक होनेसे बचना कठिन है । और यदि आप अपना धन माल लेकर किला छोडजावें तो हमभी उधर बादशाहको लिख भेजेंगे कि किला वीरान कर दिया गया है । और आपके निकलते हुये धन मालपर हस्ताक्षेप करनेकी हम लोग अपने २ दीनधर्मकी शपथ करते हैं । कि आपके धनमालपर कदापि हस्ताक्षेप न होगा । इत्यादि शाही फौजके सर-दारोंका पत्र बांचकर श्रीगुरुजीनें फिर अपने शिष्यवर्गके साथ स-म्मति करी । जिसपर सबके मुखसे यही निकला कि श्रीगुरुजी ! भूखे रहकर किलेमें मरना अच्छा नहीं है । किन्तु बाहर मैदानमें होके लडेंगे मारेंगे खोसेंगे खावेंगे आनन्द करेंगे । सबकी समान सम्मति जानकर श्रीगुरुजीने किला छोडदेनेका विचार किया । दूसरे दिन अर्द्धरात्रि-के समयमें श्रीगुरुजीने प्रथम अपने कुटुम्बको दोचार शिष्योंको साथ देकर किलेसे बाहर निकाला । पश्चात् धीरे २ समग्र सेनाके साथ कुटुम्बके पीछे आपभी निकलआये । जब किले को छोडकर थोडी दूरतक बाहर मार्गमें चले तो बादशाही फौजको भी खबर हुई । शाहीफौजने सिक्खोंपर उसीकालमें आक्रमण किया । उसी हलचलम श्रीगुरु गोविन्दसिंहजीका सबी कुटुम्ब आपसे ऐसा विप्रयुक्त हुआ कि जिसका इसलोकमें फिर मिलना असम्भव हुआ । श्रीगुरुजीकी गृहिणी तो दैवात् कतिपय शिष्यलोगोंसे संरक्षित हुई शहर दिल्लीमें पहुँचगई । और श्रीगुरुजीकी माता गूजरी अपने जोरावरसिंह तथा फतहसिंह नामक दोनों पौत्रोंको साथ लेकर दूसरे मार्ग चली ॥ सिवाय एक प्रामाणिक पाचक ब्राह्मणके मातागूजरीके साथ दूसरा कोई

शिष्यभी न रहा। माताने ब्राह्मणसे कहा कि मिश्रजी इस संकटके समय आप किसी ऐसे निर्भयके स्थानमें ले चलें कि जहांपर इन हमारे छोटे बच्चोंको क्लेश न उठाना पडे। पाचकने कहा माताजी आप भय मत करें मैं आपको अपने ग्राममें लेचलताहूं। वहाँपर आप अपने पौत्रोंसहित जबतक चाहो निवास करना वह ब्राह्मण बहुतवर्षसे इसी घरका पाचक था। इसलिये माता विश्वस्त होकर उसके साथ चलपडी वह पाचक ब्राह्मण सरहिन्दप्रान्तके खेडी-नामक ग्रामका निवासी था। दोनों बच्चोंसहित माता गूजरीको अपने घर ले गया। और बडे प्रेमसे सेवा चाकरी करने लगा माताके पास एक छोटीसी जवाहिरातकी पेटी थी। और कुछ मणिमय स्वर्णके आभूषण भीथे कुछ मुहरें भी थीं उन सबको सम्भालकर माता अपने पास रक्खे थी। उस नीच पाचकका चित्त प्रथमसेही विपरीत हो चुका था वह नीच स्वार्थसिद्ध करनेहीके लिये इन लोगोंको अपने ग्राममें लाया था. दिनभरके मार्गके थके हुये बच्चोंको साथ लेकर तथा अपनी हस्तगत सम्पत्तिको अपने सिरहाने रखकर माताने रात्रिको शयन किया तो पाचकने अपना नीच स्वार्थ सिद्ध किया। माताके सिर-हानेसे सभी सम्पत्ति निकालकर स्थलान्तरमें रख दई। पीछे चोर २ कर पुकारने लगा। आवाज सुनतेही माता तथा औरभी अनेक लोग उठ खडे हुये। माताने अपनी सम्पत्तिको न देखकर पाचकसे कहा कि चोर यहाँपर कहांसे आया एक तुमही तो यहां पर थे। जिसपर पाचक निमकहरामने कहा कि वाह अब क्या मेरेको यह जाती बारका इनाम देती हो? तीस वर्षतक आपके घरमें रोटी बनाई। औरभी जो बना चाकरी करी कभी आपके हीरे मोतियोंकी तरफभी न देखा। अब अन्तमें यह पारितोषिक मिला कि मैं चोर बनगया परन्तु मेरे उपकारकी तरफ आपने कुछभी दृष्टि न करी। आपलोग बादशाहके बागी चोर हैं परन्तु मैं अपनी जान जोखममें रखकर आपको अपने घरमें ले आया हूं नीतिवालोंने सत्य कहा है कि 'विनाशकाले विप-

रीत बुद्धिः' इसकालमें आपलोगोंकी बुद्धि ठिकाने नहीं है अन्यथा चिरकालसे अपने विश्वस्तपाचक उसमें भी जातिके ब्राह्मणको चोर कौन बता सकता है परन्तु मैंने भी मूर्खता करी जो आप लोगोंको साथ ले आया अभी किसी राज्याधिकारी पुरुषको खबर मिले तो मैं भी साथही पिस जाऊं इसलिये इसकालमें अब यही उचित है कि मैं स्वयं थानेमें इत्तलाअ देकर बादशाही जुर्मसे बचूं इत्यादि अनेक तरह की पाचककी बातें सुनकर माताने धैर्य्यसे कहा देवताजी मैंने आपको चोर नहीं बनाया है किन्तु यह पूछा है कि यदि आपने उठाकर कहीं सम्भालकर सब वस्तु रक्खी हो तो ठीक अन्यथा, यदि कोई चोर ले गया है तो उसका विचारही क्या है कदापि किसीके पास कोईभी वस्तु क्या सदा रह सकती है । आप गई वस्तुका कुछ विचार न करें किन्तु धैर्य्यसे बैठें परन्तु उस अधमको धैर्य कहां उसने सोचा कि यह लोग यदि अधिककाल मेरे घर निवास करेंगे तो यह सम्पत्ति मेरेको कदापि न पचैगी । उसी कालमें पासके ग्राममें थानेमें चलागया और जाकर यह इत्तिलाअ लिखादी कि गुरुगोविन्दसिंह जो कि आजकल राज्यविद्रोही प्रख्यात है । उसके छोटे २ दो बेटे तथा एक उसकी माता गतरात्रिसे मेरे घरमें आनके टिके हैं परिचित जानकर मैंने टिका लिये हैं परन्तु पीछेसे मुझ गरीबपर कोई जुल्म न हो इस लिये इत्तलाअ भी देता हूं थानेके हाकिमने सुनतेही उसके साथ पांच सिपाही देकर उनके पकड लेनेका हुक्म दिया जब बच्चोंके सहित माता पकडी गई तो उसने अपने माल चोरी जानेकी वार्त्ताभी सिपाहियोंसे कही । उन लोगोंने सन्देहानुसार उस पाचकके घरकी तलाशी (झडती) ली तो माल सब उसके घरसे निकला । उस बदनसीबको भी कुछ न मिला उक्तमाल तथा दोनों बच्चोंके सहित माता जानीखां नामक हाकिमके सामने पहुँची तो उसने उक्त पाचकके सहित सबका सूबा सरहिन्दके पास चालान किया । सूबा सरहिन्दने कुछ अच्छा २ माल आप रखलिया । और कुछ जानीखांको देदि-

था। पाचकको छोड दिया। और माताको बच्चोंसमेत एक किलेके बुर्जमें टिकाया। यह सूबासरहिन्द श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी पर बहुतही दुःखित था अनेक बार हार खाचुका था। अपने अच्छे २ शूरवीर मरवा चुका था। श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके हृदय पर चोट लगानेका अवसर शोच रहाथा। अब आन प्राप्त हुआ अपने सभासद् मन्त्री तथा काजीलोगोंसे विचार करने लगा कि, आज दीन इसलामके शत्रु तथा राजविद्रोही गोविन्दसिंहके दो बेटे अकस्मात् हमारे हाथमें आये हैं। इनके साथ कैसा वर्त्ताव करना चाहिये। दीवान लोगोंने कहा जो शरहका हुक्म हो वही करना उचित है। काजीलोगोंने कहा प्रथम दीन इसलाम कबूल कराना। यदि मानेंतो ठीक अन्यथा कतल करवाना ऐसे लोगोंके लिये येही दो शरहके हुक्म हैं। सूबासरहिन्दने रात्रिभर इस वार्त्ताको विचार कर यही स्थिर किया कि; इन बच्चोंको शीघ्रही मरवा डालनेसे इनके पिताके चित्तपर उतना आघात न होगा जितना कि, इनके मुसल्मान बनालेनेसे होगा। और ऐसे पुरुषोंके दीनमें लानेसे दीनइसलामकी प्रतिष्ठा भी अवश्य बढैगी इसलिये जहां तक बनपडे इनको दीन इसलामहीमें लाना उचित है। इत्यादि विचार स्थिर करके सूबासरहिन्दने अगले दिन प्रातःकाल सभा लगाकर दोनों बच्चोंको भरी सभामें अपने सामने बुलाकर पूछा ? स्मरण रहे कि, उसकालमें बडे-भ्राता जोरावरसिंहकी आयु केवल आठवर्षकी थी तथा छोटे भाई फतहसिंहकी उससेभी दोवर्ष कम थी दोनोंको वजीद्खांनामक सूबाने सभाने खडे करके पूछा क्या बच्चो तुमलोगोंको दीन इसलामकी गोदमें आना मंजूर है। या कि, कतलहोना. दोनों लडकोंने सुनकरभी कुछ जवाब न दिया और दृढ होकर खडे रहे फिर सूबाने कहा बच्चो क्या बधिर हो मेरा कहना तुम लोगोंने सुना है कि, नहीं (जोरावरसिंह) तुम क्या कहते हो (सूबा) तुम लोगोंको दीन इसलाम कबूल है या कि, कतल होना कबूल है (जोरावर सिंह) कतल होना (सूबा) प्यारे बच्चो यह बदनसीहत तुमको

किसने सिखलाई है जो तुम मरणसेभी दीनइसलामको बुरा समझ बैठेहो (जोरावरसिंह) बदनसीहतका साक्षी तो सर्वान्तर्यामी अकालपुरुष है । परन्तु हम लोगोंके चित्तोंपर कृत्रिम (बनावटी) धर्मोंका आभास पडना कठिन है । क्यों कि, हम सच्चे गुरुके चेले हैं । (सूबा) अरे बच्चो धर्मके धोखेपर अपना काहेको अमूल्य जीवन गँवाते हो । (जोरावरसिंह) धर्मका धोखा पशुवत् उदरंभरी अविचारशील पुरुषोंको होता है । परन्तु हमारा प्राणप्रिय धर्म तो गुरु परम्परासे विचारित है । और इस अमूल्य–जीवनका यदि कुछ मूल्य है तो एक धर्मही है (सूबा) बच्चो मैं तुमको बार २ कहताहूं समझो दीन इसलाममें आकर अपनी जिन्दगी बचावो (जोरावरसिंह) दीनइसलाम यदि जिन्दगी बचा सकता है तो तुम मतमारो परन्तु हमको इस विनश्वर संसारमें अधिक जीनेकी इच्छा नहीं है (सूबा) मेरी बहुत इच्छा थी कि, तुम दीन इसलाममें आकर अपने प्राण बचालेते । (जोरावरसिंह) दीनइसलाममें आनेवालोंके प्राण बचते दीखते तो हमभी ऐसा कर लेते । परन्तु हमको तो कबरपर कबर बनी देखकर हिन्दोस्तान देश भर पोला हुआ दीख पडता है (सूबा) क्या तुमको कतल होनाही मंजूर है । (जोरावरसिंह) अपने परमेश्वरीय सनातन धर्मको न त्यागकर कतल होना कोई आश्चर्य नहीं है । किन्तु हमारी कुल परम्परा तथा गुरुपरम्पराका सहज धर्म है । हमारे पञ्चम गुरु अर्जुनजीने इस उत्तमधर्मके लिये प्राणादिये । ऐसेही हमारे दादा गुरु तेगबहादुरजीने इस सत्यधर्मके लिये शिर दिया और दीन इसलामको तुच्छ समझा । ऐसेही हमारे पिता गुरुगोविन्दसिंहजीभी इसी परमेश्वरीय धर्मकी रक्षाके लिये लक्षोंके प्राण लेकर स्वयं प्राण देनेको कटिबद्ध हैं । हम दोनों भी उसी दादाके पौत्र तथा उसी पिताके पुत्र हैं । क्या हम लोगोंको इस अनस्थायी जीवनके लिये ऐसा घृणित काम करना उचित है कदापि नहीं । उसी कालमें सूबाने छोटे भाईको पृथक् करके कहा कि कहो बच्चे तुम भी अपने बडे–

भाईके साथही मरना चाहतेहो या कि, जुदा होकर जीना मंजूर है। तब छोटे भाई फतहसिंहनेभी यही उत्तर दिया कि, मेरेको अपने भाईसे जुदा होकर जीते रहना स्वीकार नहीं है। इत्यादि बच्चोंके वचनोंको सुनकर सूबाकी सभा चकित होगई। सूबाभी हैरान होने लगा। उसीकालमें सूबाके दीवानमें दो पठान वीर सूबाके मुलाजिम ऐसे बैठे थे कि, जिनके पिताको श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने युद्धमें मार डाला था। सूबाने उन दोनोंको बुलाकर कहा कि, मैं तुमको अपने पिताका बदला लेनेके लिये तुम्हारे शत्रुके पुत्रोंको तुम्हारे हवाले करताहूं। उन दोनों वीरोंने यह उत्तर दिया कि, यद्यपि यह हमारे पिताके शत्रुके पुत्र हैं तथा हमारे पिताको इनके पिताने युद्धमें मारा है। अब यह लोगभी यदि युद्धकी सामर्थ्य रखते हों तो सामने होकर लडकर मारना हमारा धर्म है। परन्तु यह तो अभी बच्चे हैं। इसलिये इनके मार डालनेसे हम अपने पिताके बदलेको नहीं चाहते। हां दीन इसलामकी तरफसे जो हमको हुक्म हो हम वही कर सकते हैं। इत्यादि वीर पठानोंके वचन सुनकर सूबा लज्जित हुआ। सभा शाबाश कहने लगी। सूबा काजीलोगोंसे फिर विचार करने लगा। बहुतसे सभासदोंके विचारभी बदल गये। कोई कहने लगा बेगुनाह बच्चोंका मरवा डालना गुनाह है। किसीने कहा छोटे २ बच्चोंके कैसे दृढ विचार प्रशंसनीय हैं। कोई बोला कि भाई इनके कुलमें ऐसा होना कौन बडी बात है। किसीने कहा अरेभाई! यह खुदापरस्त घरानेके लोग हैं। इसलिये सिवाय खुदाके किसी इन्सान या हैवानसे डरने वाले नहीं हैं। कोई बोला अब चाहो कुछ भी हो परन्तु इस सभामें इन बच्चोंने वह काम करादिखलाया है जो कि हरएक मुजीबूढाभी न करसके। किसीने कहा हम ज्यादा कहना नहीं चाहते लेकिन तालीम इनकी लायक तारीफके है। कोई बोला अरे भाई! एक तालीम क्या इनकी हरएक बात काबिल मिसाल (उदाहरणीय) है। इत्यादि सभालोगोंका परस्पर भिन्न २

विचार सुनकर सूबाने काजीलोगोंसे पूछा कि अब क्या करना चाहिये । सबकी सम्मतिसे काजी हुसैनखां बोला कि, सर्पका बच्चा सर्पही होता है । इसलिये इनका छोड देना तो वाजिब नहीं है । हाँ कुछ तकलीफ दिखलाकर दीनइसलाम मनाना जरूरी है । उसकी तरकीब अब ऐसी मनमें आती है कि एक दीवारमें इन दोनोंके धीरे २ चुननेका हुक्म दिया जावे । और साथही दीवारके ऊपर होते २ इनसे दो चार बार पूछा भी जावे । यदि इन्होंने खौफकर दीनइसलामको कदाचित् खुशकिश्मतीसे मान लिया तो वहांहीसें दीवार गिराकर निकाललिये जांयगे और यदि इन्होंने अपनी बदनसीबीसे मुखतक दीवारके ऊपर जानेसे भी न माना तो शरह मुहम्मदीके रूहसे मारना तो इनका लाजिमही है वैसे न मारा वैसे ही मारडाला सही सूबाने काजीके उक्त विचारको उचित समझा और उसी कालमें शहरके कोटका एक हिस्सा गिरवाकर उन दोन बच्चोंको दीवारमें चुनवानेका हुक्म दिया । दीवार गिराकर दोनों बच्चे परस्पर एक गजपरिमाण दूर प्रदेशमें एक दूसरेके खडे किये गये दीवार चुनीजाने लगी । जब पाउँ दोनों भाइयोंके दबचुके तो बडेने छोटेसे कहा कि,कहो भाई अब आपका चित्त कैसा है क्या आपके चित्तमें कुछ चिन्ता तो नहीं । प्रतीत होता है कि, अब हमारा दादागुरुजीके चरणोंमें प्राप्त होनेका बहुत ही समय समीप आता जाता है । छोटे भाईने कहा हे भ्रातः ! आपके अनुगामी होनेसे मेरेको सब आनन्द है । आपकी कृपादृष्टि तथा दादाजीके कई एक पवित्र वचन मेरे स्वच्छचित्तमें प्रतिबिम्बित हो रहे हैं । इसलिये मेरेको किसी तरहकी चिन्ताका लेश भी नहीं है । प्रत्युत दादाजीके चरणोंमें जानेका उत्साह अवश्य है । बडे भाईने कहा प्यारे भाई ! दादाजीके वे कौन वचन हैं जो कि, आपको धैर्य्य दे रहे हैं । छोटेने उसकालमें नीचेलिखे वचनोंका उच्चारण किया ।

चित चरणकमलका आसरा चितचरणकमल सँग जोडिये ।
मनलोचे बुरियाइआँ गुरु शब्दीं यह मन होडिये ॥
बाहं जिनादी पकाडिये शिरदीजे बाहं न छोडिये ।
गुरुतेगबहादुर बोलिया धर पइये धर्म न छोडिये । १ ॥

दोहा—चिन्ता ताकी कीजिये, जो अनहोनी होय ।
इह मार्ग संसारमें, नानक थिर नहिं कोय ॥ १ ॥

इत्यादि वचनोंको सुनकर बडेने छोटे भाईकी बहुतही प्रशंसा करी तबतक दीवार भी कमर (कटि) तक पहुँची । सूबाने कहा कि, कहो बचो अब भी तुमको दीनइसलाम कबूल हो तो दीवार गिराकर तुमको निकाल लिया जावे । बडे भाईने कहा अब शान्त रहो पापी अब तुम्हारे बोलनेका समय नहीं है । सहस्रों लोगोंके देखते ही देख ते दीवार बच्चोंकी छातीतक पहुँची तो फिर सूबाने वैसेही कहा जैसे प्रथम बोला था । जिसका उत्तर फिर बडे भाईने यह कह दिया कि अरे पतित ! यह समय तुम्हारे बकनेका नहीं है । चुप बैठ हमारे अकालपुरुषके ध्यानमें विघ्न मतडाल । थोडीही देरीमें दीवार दोनोंके गलेतक पहुँची तो काजीलोगोंके कहनेसे फिर सूबाने पूर्वकी तरह पूछा जिसके उत्तरमें बडे भाईने केवल तीनवार "धिक् ! धिक् !! धिक् ! इस शब्दके शिवाय कुछ उत्तर न दिया । शेषमें सूबा शरमिन्दा होकर घरको चलदिया । और दीवार बच्चोंके शिरके ऊपरतक चली, गई । चारों ओर हाहाकार मचगया । अनेक हिन्दू मुसलमान लोग हाथ मलने लगे । सूबा सरहिन्दके इस नीचकर्म पर अनेक लोगोंने शोक प्रगट किया । उधर दिनभर माता अपने बच्चोंका प्रतीक्षण करती रही । खाना पीना छोडकर उनके ही शोकसागरमें पडी थी । इतनेहीमें प्यारे पुत्रोंके दीवारमें दबाये जानेका समाचार पहुंचा सुनते ही माताने, गशखाई और बुर्जसे गिरकर प्यारे पुत्रोंके साथही प्राण दिये ।

इति द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४२ ॥

अथ त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥

इधर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीका ऐसा वृत्तान्त हुआ कि शाही फौजके आक्रमण करनेसे लडते लडवाते जैसे तैसे शत्रु समुदायके आक्रमणसे बचते हुये शहर चमकौरमें पहुँचे । वहाँ एक छोटासा किला था उसमें चले गये परन्तु बादशाही फौजने वहाँभी पीछा किया यद्यपि शाही फौज बहुतसी उसकालमें उधर आनन्दपुरके लूटनेहीमें तत्पर होगई थी इसलिये श्रीगुरुजीके पीछे कुछ शाही फौज अधिक न थी । तथापि लूटनेवाले जितने थ सभी मूंजी गीदी भगुरा पेटभरू थे परन्तु श्रीगुरुजीका पीछा करनेवाले सभी शूरवीर थे । इसलिये चमकौरमें फिर लडाईका मैदान गर्म हुआ । प्रातः काल होतेही तीर, तुपकें, बन्दूकें चलने लगीं । दोनों ओरके बहुतसे वीरोंने महानिद्रामें शयन किया । अन्तमें श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके ज्येष्ठपुत्र अजीतसिंहजीने देखा कि हमलोगोंका पक्ष सेनाके न्यून होनेसे बहुतही निर्बल है तो अपने पिताजीसे हाथ जोडकर कहनेलगा कि मेरेको आप मैदानमें जाकर लडनेकी आज्ञा देवें । कहीं ऐसा न हो कि अचानकही शत्रुकी गोलियाँ तीरादिकों का लक्ष्य बनना पडे । और चित्तका उत्कट वेग चित्तहीमें रुका रहजावे । श्रीगुरुजी अपने प्रियपुत्रके इस उत्साहके वचनको सुनकर बहुतही प्रसन्न हुए । और कहा कि, बहुतही उत्तम है । हमलोगों (क्षत्रियों) को सिवाय धर्म युद्धके मरनेके दूसरा कल्याणका मार्गही कौन है । और ऐसा अवसर अब फिर कब मिलनेका है । जिसमें हम अपनी बहादुरी दिखला सकें । इत्यादि उत्साहके वचनोंसे प्रेमपूर्वक प्रियपुत्रकी पीठ ठोंककर श्रीगुरुजीने उसको युद्धके मैदानम निकालदिया । वीर अजीतसिंह कइएक सवारोंको साथ लेकर बादशाही फौजमें बिजलीकी तरह जा पडा । बहुतसे वीरोंको अपने हाथसे महानिद्रामें शयन कराकर पीछे कुछ देरके पश्चात् आपभी वीर शत्रुके हाथसे कतल हुआ ।

श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीने अपने प्रियपुत्रको अपने नेत्रोंसे सहीद (वीरगतिको प्राप्त) होते देखा। परन्तु चित्तमें या मुखमें जराभी शोकावेश न हुआ प्रत्युत अत्यन्त प्रसन्न हुये। और वारंवार वाह वाह शाबास शाबास इत्यादि शब्दोंको उच्चारण करनेलगे। ऐसेही उसी कालमें 'सत्यश्री अकाल' इत्याकारक पवित्रशब्दका उच्चस्वरसे उच्चारण करके उसके छोटे भ्राता जुझारसिंहकी तरफ प्रेमदृष्टिसे देखने लगे। और श्रीमुखसे कहा कि हे पुत्र! अब धर्मयुद्धमें शीश देनेकी तुम्हारी वारी आई है। वह धर्मवीर सुपुत्र जिसकी आयु अभी केवल बारह वर्षसे अधिक नहीं है। पिताजीके नेत्रोंको अपनी तरफ देखतेही प्रणामकर उठ खडा हुआ। और बडी दिलेरीसे कहने लगा कि, मेरे लिये भी यदि आपकी आज्ञा हो तो मैंभी अपने बडे-भ्राताका अनुगामी बनूं। श्रीगुरुजीने अपने छोटेसे पुत्रके बडे साहसपूरित वचनको श्रवणकर अत्यन्त प्रसन्न हुये। और कई एक सिक्ख सवारोंको साथ देकर अपने प्रियपुत्रकी पीठ ठोककर चारोंतरफ चमकती हुई तलवार आवृत्त रणभूमिमें निकाल दिया। साहसी वीर जुझारसिंह भी शाही-फौजमें बिजलीकी तरह कडककर कूदपडा। जातेही दो चार अच्छे २ नामी सरदारोंका काम तमाम करके अन्तमें आपभी वीर शत्रुके हाथसे विनश्वर शरीरसे पृथक् होकर बडे भ्राताके पास जाय बैठा। श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीने देखकर किञ्चित् भी शोक प्रकाशित न किया। प्रत्युत वाह २ शाबास २ इत्यादि प्रसन्नतासूचक शब्दोंका अनेकबार उच्चारण किया इसके पश्चात् बाहर मैदानमें होकर लडना बन्द किया। किन्तु किलेके भीतरहीसे तीर, गोली आदिकी वर्षा सायंकालतक करते रहे। नाहरखां पठान मालेरी तथा नजीबखाँ सूबेदार जालन्धर तथा असमानखां कसूरिया इत्यादि वीरलोग जो उस किलेके समीप आये वे सभी मारे तीरोंके सदाके लिये इस संसारसे पार हुये। ख्वाजा खिजरखां मालेरी तथा मुहम्मदखां फगवाडिया, दिलावरखां कसूरिया तथा समन्दखां नायब सूबेदार

लाहौर, मिरजा जाफरवेग तूरानी इत्यादि बहुतसे नामदारे मशहूर सरदार लोग जख्मी भी हुये। अन्तमें सायंकाल होगया। परन्तु वह छोटीसी गढी शाहीफौजसे फतह न होने पाई। तब शाही फौजने लडाई बन्द करके उसी गढीके आस पास मैदानमें विश्रान्तिका मुकाम नियत किया। उधर किलेके भीतर अपनेसाथके सिक्खोंसे श्रीगुरुजी कहने लगे कि प्यारे वीरो ! अब प्रातःकाल होते ही आप लोगोंके तथा हमारे दोनोंके धर्मपर शिर अर्पण होनेका समय आन प्राप्त हुआ प्रतीत होता है उचितभी है कि, हम लोग धर्मविद्रोहीलोगोंके सामने होकर प्राण देवें और इस विनश्वर संसारसे किनारा पकडें। सब सिक्खोंने विचार कर कहा कि दीनबन्धो ! यों तो हम लोग धर्मके लिये अपने शिर अर्पण करही चुके हैं। परन्तु जहाँतक होसके प्रयत्न ऐसा करना उचित है कि जिससे धर्मका संरक्षण अधिक तथा पूर्ण-रूपसे हो। सो यह वार्त्ता क्या प्रातःकाल सामने होकर प्राण देनेसे होसक्ती है। कदापि नहीं। उसमें भी हम लोगोंके प्राण तो प्रातःकालही जावें तो भले जावें परन्तु आपके शरीर रहनेसे अभी हिन्दूधर्म पर तथा देशपर बहुत कुछ उपकार होसक्ता है। यहांसे आप निकलेंगे तो जिस तरफभी आप मुखकरके चलदेंगे। उधरही आपकी सेवामें फिर सहस्रों शिष्य लोग आन प्राप्त होंगे। इसलिये शीघ्रतासे प्राण अर्पण करने उचित नहीं। किन्तु जहाँतक बन पडे जैसे कैसे इनका बचाव करके धर्मकी रक्षा करनी उचित है। श्रीगुरुजीने कहा कि चारों तरफसे घिरे हुए शत्रुदलमें प्राणोंका बचाव होना भी तो कठिन है। इसलिये यही उचित है कि, पीठ दिखलाकर न मरें किंतु सामने होकर प्राण देवें इतनेमें एक नीति-कुशल-प्रवीण-शिष्यने कहा कि, श्रीगुरुजी घिरे हुए हैं तो क्या हुआ। अर्द्धरात्रिके पीछे आप जिस कालमें चाहे मैं आपको मार्ग साफ कर दूंगा। आप निर्भय होकर जहाँ चाहो चल देना। सब सिक्खोंको 'ओम्' कहकर श्रीगुरुजीने विश्राम किया। उचित समय अर्द्धरात्रि होनेके पीछे वह प्रवीण

शिष्य सब साथियोंको सचेत करता हुआ। आप घोडेपर सवार होकर धीरे २ चमकौरके किलेसे बाहर निकल आया। थकी हुई शाही फौज चारोंतरफ सोती थी। उन सबके किनारे होकर उच्चस्वरसे बार २ पुकारने लगा कि, 'हिन्दुओंका पीर जाता है पकडो' गाढान्धकारके प्रभावसे उक्त शब्द शाहीफौजने अपने पहरा देनेवाले सिपाहीको समझा। शाही फौज हुम हुमाकर उठ खडी हुई। और जिधरसे आवाज आती थी उधरहीको दौडी। अन्धेरी रात्रिमें विशेषकर अपने परायेका ज्ञान तो होताही न था। सहस्रों सिपाही एक तरफ मैदानमें भाग भाग आपसमें कट कटकर मरने लगे। उधर किलेका खाली भाग देखकर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी अपने शिष्योंसमेत किलेसे निकलकर देश मालवाको रवाना हुए। प्रातःकाल होते ही श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी एक खेडी नामक ग्राममें पहुँचे। वहाँके मामूं तथा अलफुनामक दो मनुष्य मुसलमान ग्वाल अपनी भैंसे चरा रहे थे। उन्होंने श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीको देखकर बादशाही खैरख्वाह बननेके लिये शोर (कोलाहाल) किया। जिसपर श्रीगुरुजीने उनकी तरफ पाँच २ अशरफी फेंकी। वे दोनों फिर भी चुप न हुये तब श्रीगुरुजीने उन दोनोंको अपने पास बुलाया। वे अधिक लालचसे चले आये। श्रीगुरुजीने तलवारसे उन दोनोंका शिर काट दिया। और आप फिर आगे चल दिये। चलते २ जब वह लोलपुरनामक ग्रामके समीप पहुंचे तो दिन अच्छी तरह प्रकाशित हो आया। उधर शाहीफौज जो कि, पीछे ही खोजमें चल पडी थी। उसके सिपाही भी जहाँ तहाँ चारों ओर दीखने लगे। उस कालमें श्रीगुरुजी एक गाढ जंगलमें एक जंडके वृक्षके नीचे जाय विराजे वहांपर आपके स्मरणार्थ एक गुरुस्थान जण्डसाहिबके नामसे अबतक प्रख्यात है। मार्गके थके हुये उसी वृक्षके नीचे दो पहर तक आराम किया। फिर चलनेका मार्ग खोजने लगे तो गाढ जंगलमें रात्रितक कोई मार्ग न मिला। अन्तमें उसी जंगलमें एक स्थानमें रात्रि भी

व्यतीत करी । वहाँ परभी अब झाडी साहिबके नामसे एक गुरुस्थान प्रख्यात है प्रातःकाल हुआ तो वहांसे चलकर शहर माछावाडाके पूर्व भागमें रुहेलखां नामक पठानके बागमें जा ठहरे । वहाँ भी एक गुरुस्थान आपके स्मरणार्थ बना हुआ है । उक्त पठानके बागमें श्रीगुरुजीने कुछ काल निवास किया । इस सफरमें सिवाय कुटुम्बके जो जो आपदें श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके शरीरपर आई यदि उनका स्मरणभी हो तो साधारण पुरुषका हृदय कांप उठता है । थोडी ही देरीके पीछे गनीखां तथा बनीखां नामक पठान उक्त बागके मालिकभी सैर करते २ जहाँ पर श्रीगुरु गोविन्दसिंहजी विराजे थे आपहुंचे । वे दोनों भाई श्रीगुरुजीकी ऐसी दशा देखकर बहुतही आश्चर्य्य हुये । प्रथम किसी कालमें श्रीगुरुजीने इनसे कईएक घोडे खरीदे थे । तभीसे श्रीगुरुजीके परिचित थे । परमेश्वरने दयासे आर्द्र होनेकी प्रकृति प्रायः प्रत्येक सत्पुरुषके हृदयमें रक्खी है । श्रीगुरुजीकी विपत्तिका वृत्तान्त सुनकर उन पठानोंके हृदय द्रवीभूत होगये । और श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके संरक्षण करनेके लिये अनेक उपाय शोचने लगे । उसीकालमें उनको अपने घरपर लेजाकर अनेक प्रकारकी खातरी करने लगे । और ग्राममें यह विदित किया कि हमारे घरमें हमारे पीर आये हैं । इसी स्थानपर भाई मानसिंह, धर्मसिंह दयासिंह इत्यादि शिष्य लोगभी खोजते २ श्रीगुरुजीको आन मिले उनके दोही दिन पीछे बादशाही फौज जो कि, श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीकी अन्वेषणामें थी माछीवाडा' ग्रामके आस पास फिरने लगी । उधर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीने गनीखां द्वारा अपने फारसीके अध्यापक काजीमीर मुहम्मदखांको तथा गुलाबराय नामक मसन्दको बुलवा भेजा । और उनके आतेही उनके साथ अपने सभी वस्त्र नीलवर्णके धारण करलिये अर्थात् हूबहु मुसलमानोंके पीरों जैसा वेष बनालिया । और गनीखां आदि अपने प्रेमी पुरुषोंको साथ लेकर वहांसे मुल्क मालवाको. चलदिये । उस समयमें यह

परिपाटी थी कि मुरीद् लोग अपने पीरोंको पीनस (पालकी) या खाटपर बिठलाकर अपने कांधेपर उठाकर सन्मानपूर्वक अपने ग्रामसे द्वितीय ग्राममें पहुंचा दिया करते थे वैसेही श्रीगुरुजीको भी एक पालकी पर बिठलाकर ले चले । मार्गमें जो कोई पूछे तो गनीखाँ उसको यह उत्तर देवें कि, यह हमारे उच्चके पीर हैं । ऐसेही शाहीफौजके सिपाहि लोगोंने भी माछीवाडासे निकलते ही रोका तो गनीखाने यही कहा कि यह हमारे उच्च दर्गाहके पीर हैं । उक्त प्रकारसे वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी घंगहाली नामक ग्राममें पहुँचे । और वहाँपर झण्डानामक मिस्तरी जिसके द्वारा अनेक बादशाही शस्त्र अस्त्र बना करते थे उससे कई एक सुन्दर २ शस्त्र लाभ किये । उसने अपनी तरफसे भेंटकी तौरपर एक कमान २२ तीर एक दो कब्जाकी तलवार तथा एक तमंचा श्रीगुरुजीको प्रदान किया । फिर वहाँसे चलकर कसबा हिहरमें महन्त कृपालदासके पास पहुँचे । उसने इनको अपने पास ठहरने भी न दिया । कहा कि आप बादशाहके मुकाबिलामें बागी हुये फिर रहे हैं । आपके यहां ठहरनेसे हमारी भी साथही जान जानेका अवसर आवेगा । जिसपर श्रीगुरुजीने क्रुद्ध होकर कहा कि तुमको तुम्हारी नियतका फल स्वयं ही मिलनेवाला है । दैवात् थोडेही दिनके पीछे वही महन्त एक डाका पडनेके सम्बन्धमें फाँसी दियागया । वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी एक जटपुरानामक ग्राममें पहुँचे । तो रायकोटके रईसने आपकी बहुत सेवा करी । और कुछ दिन अपने पास ठहरा लिया । उसी स्थान पर एक सौदागर सिक्ख आपके लिये एक उत्तम घोडा भी भेटमें लाया । एक घोडा और एक उत्तम तलवार रायकोटके जिमींदारनेभी श्रीगुरुजीकी भेंट किया । उसी स्थानपरसे श्रीगुरुजीने उस जिमींदारको कहकर अपने छोटे बच्चोंका समाचारभी सरहिन्दसे मंगवाया तो ज्ञात हुआ कि, प्रथम सूबा सरहिन्दने उनको मुसलमान होनेके लिये कहा । जब लाचार उन्होंने किसी तरहसे नहीं माना तो उसने उनको

शहरके कोटकी दीवारमें जीतेही चुनवा दिया । और वे लोग खेडी ग्राम निवासी गंगाराम नामक ब्राह्मण जो कि, आपका प्राचीन कालसे पाचक था । उसके विधर्मी होनेके कारण मुसलमानोंके पंजेमें फँसकर परलोक प्रयाण करगये । इस समाचारके सुनतेही श्रीगुरुजी-को तथा समीप निवासी अनेक सत्पुरुषोंको बहुतही शोक हुआ । यद्यपि उन छोटे २ बच्चोंके साहस तथा धर्मनिष्ठाको सुनकर सब सभ्यपुरुषोंके तथा स्वयं श्रीगुरुजीके भी मुखसे अनेकवार 'आफरीन २ तथा 'शाबास' २ इत्यादि स्फुट शब्दोंका प्रवाह निकला तथापि मुसलमानोंके अत्याचार तथा पाषाण हृदयपर सबने शोक प्रकाश किया । छोटे २ बच्चोंको विना अपराध पकडकर मरवाडालना किसी भी दीन या धर्मके योग्य नहीं स्मरणकर सबके नेत्रोंसे जल बहने लगा । और रोमावली खडी होगई । उसी कालमें श्रीगुरु-गोविन्दसिंहजीने अतिदुःखित होकर अपने कृपाणके साथ एक कुशा घासको मूलसे उखाड डाला । समीपवर्त्ती लोगोंने पूछा गुरुजी ! आप-ने यह क्या किया है । गुरुजीने कहा कि, अत्याचारी तुरकोंके राज्य की बुनियाद उखाडी है । हमारे सिक्खलोगोंमें ऐसी शक्तिवृद्धि होगी कि, इस सरहिन्दकी ईंटें उखाडकर दरियाय शतद्रुमें डाल देंगे । श्रीगुरुजीके इस वचनको सुनकर रायकोटके हाकिम रायकल्ला नाम-कने हाथ जोडकर कहा कि, गुरुजी यह शाप आपने मुसलमानजाति-मात्रके लिये कह दिया है परन्तु उसमें मेरा तो कोई दोष नहीं मैं तो आपका सेवक हूं । श्रीगुरुजीने कहा जो अत्याचारी हैं उनके लिये हमारा शाप है तुम्हारे जैसे भले पुरुषोंके उद्देशसे नहीं है । उसीकालमें प्रसन्न होकर श्रीगुरुजीने रायकल्लाको एक अपनी तलवारभी दई । और आज्ञा करी कि, जबतक यह तलवार तुम्हारे घरमें उत्तमरीतिसे सन्मानित रहेगी तबतक तुम्हारे घरमें हुकूमतभी अवश्य बनी रहेगी । परमेश्वरकी इच्छासे वैसाही हुआ । जबतक उस तलवारका उनके वंशपरंपरामें पूजन बना रहा तबतक उसके वंशमें हुकूमत भी जैसेकी

वैसी ही बनी रही । परन्तु जबसे उसकी वंशपरम्पराके लोग उस तलवार पूजनसे उपराम हुये । तभीसे उनसे हुकूमत भी उपराम हुई । शेष रहा सरहिन्द्के विषयमें जो श्रीगुरुजीने वचन किया था । वह भी ज्योंका त्यों सत्य हुआ इतिहाससे प्रतीत होता है कि, जिस क़ालमें सिक्खलोगोंने जोर पकडा सरहिन्द्की ईंट २ उखाड डाली और सरहिन्द्के सूबे समेत वहांके निवासी मुसल्मानोंको शहरमें आग लगाकर बीचहीमें जला दिया । पश्चात् संवत् १९२८ विक्रमीमें रियासत पटियालाके अधिपति महाराजा महेन्द्रसिंहबहादुरने उसी शहरके थेहको रेलवे महकमाके हाथ बेचकर वहांकी कबरोंकी भी ईंट २ उखडवाकर दरियाय शतद्रुके पार फेंकवा दई तात्पर्य यह कि, श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीकी भविष्यत्‌वाणी उत्तम रूपसे पूर्ण हुई ।

इति त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥

चतुःचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥

वहांसे चलकर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी देश मालवाके छोटे २ कई एक ग्रामोंमें निवास करते हुये तथा अपने सदुपदेशोंसे शिष्यवर्गको कृतार्थ करते हुये मार्गशीर्षमास संवत् १७६१ विक्रमीमें दीनानामक ग्राममें आन विराजे । इस ग्रामके लखमीरनामक चौधरीने आपको एक गढीमें उतारा । उसी गढीके स्थानपर वर्तमानमें एक लोहागढ नामक गुरुस्थान विद्यमान है । चौधरी लखमीरने श्रीगुरुजीकी बहुत ही सेवा भक्ति करी इस स्थानपर श्रीगुरुजीके शुभागमनको श्रवणकर मालवादेशके चारों ओरके शिष्यलोग अनेक प्रकारकी भेंट पूजा ले लेकर चरणोंमें हाजिर होने लगे । भाई रूपाके वंशके भाई धर्मचन्द तथा प्रेमचन्दने आपकी सेवामें एक उत्तम घोडा तथा एक बहुमूल्य पोशाक बहुतसे धनके समेत अर्पण करी । और कई एक शस्त्र जो कि श्रीगुरुहरिगोविन्दजी इनके पास अमानतकी तरहपर रखगये थे

वह भी श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीको अर्पण किये । ऐसेही देश मालवाके प्रसिद्ध २ अनेक सिक्खलोग श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके दर्शनको आये । और तरहतरहकी भेंट पूजा लाये । थोडेही दिनोंमें आपके पास फिर बादशाही ठाठका सामान आन एकत्र हुआ । इसी स्थानसे श्रीगुरु-गोविन्दसिंहजी महाराजने अपने छोटे दोनों बच्चोंके निरपराध मारे जानेके रंजमें बादशाही हाकिमोंके आनन्दपुरमें विश्वासघातकी तरफ दृष्टि देकर औरंगजेब बादशाहके पास फारसीकी नजम (कविता) में एक उपदेशकी तौरपर पत्र लिख पांच सिक्खोंके सहित भाई दया-सिंहके हाथ देकर रवाना किया । वह पत्र तभीसे पन्थखालसामें जफरनाम (विजयपत्र) के नामसे प्रख्यात है ।

इति चतुःचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥

अथ पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥

पत्रको भेज पश्चात् वहाँसे चलकर श्रीगुरुजी मध्यपाति अनेक ग्रामोंमें सदुपदेशका प्रचार करते हुये कोटकपूरा नामक ग्राममें आन विराजे । वहाँका सरदार उसकालमें कपूरानामक बराड था बादशाहकी तरफसे वह चौरासी ग्रामका मालगुजार हाकिम था वह बडे प्रेमसे श्रीगुरुजीके दर्शनको आया । और दो चार घोडे कुछ शस्त्र और कुछ नकद रुपयाभी श्रीगुरुजीकी भेंटके लिये लाया । और अनेक शिष्यगणके सहित श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजका अपने घरमें उस-ने निमंत्रण भी किया अनेक प्रकारके भोजन जिमाये । दूसरे दिन श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीने उससे कहा कि, तुम थोडे दिनके लिये अप-ना किला हमको देदो तो बहुत अच्छा हो परन्तु बादशाही भयसे उसने श्रीगुरुजीके वचनको स्वीकार न किया । प्रत्युत कहने लगा कि, गुरुजी जब आप अपना खास आनन्दपुरका किला जो कि, अतिदृढ था न रखसके तो इसको आप कैसे रख सकेंगे । यह कथन

उसका श्रीगुरुजीको बहुतही बुरा प्रतीत हुआ। और कहा कि जिस मृत्युसे भय मानकर तुमने हमको किला देनेका इन्कार किया है। उससे तुम्हारा बचाव कदापि होना दुर्घट है दैवात् ऐसाही हुआ। वह एक अलीखां नामक पठानके हाथसे बुरीतरहसे मारागया। फिर वहांसे चलकर श्रीगुरुजी ढिलवां नामक ग्राममें चले आये। यहाँपर एक कौल नामक सोढी पृथ्वीचन्दके वंशमेंसे निवास किया करते थे वह श्रीगुरुजीके आगमनको सुनकर दो घोडे कुछ बने हुये सफेद वस्त्र भेंट लेकर दर्शनको आये। और प्रार्थना करी कि, आप सफेद वस्त्र पहर लेवें। उन वृद्धोंके कथनसे श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीने नीलवस्त्र उतारकर उसी वक्त श्वेत वस्त्र पहर लिये और नील वस्त्रोंको जराजरा फाडकर अग्निमें फेंकते हुये श्रीमुखसे बार २ उच्चारण करने लगे कि, 'नीलवस्त्रले कपडे फाडे तुरक पठानी अमल गया'। यही वचन प्रथम श्रीगुरुनानकजीने 'फाडे' के स्थानमें 'पहरे' तथा 'गया' के स्थान में 'भया' कहकर उच्चारण किया था उन्हीं दिनोंमें जो सिक्ख युद्धके समय पर श्रीगुरुजीको आनन्दपुरके किलेमें छोडकर विमुख होकर अपने २ घरोंको चले गये थे। उनको जहाँ तहाँ अनेक लोगोंने धिक्कृत किया। कहा कि, ऐसे भयानक समय पर तुम लोगोंने जो श्रीगुरुजीको छोडा है बहुतही अधमता करी है। जो गुरु सारे देशकी भलाईके लिये अनेक दुःख उठारहा है जो गुरु हिन्दूधर्मकी रक्षाके लिये पिताकी तरह प्राण देनेतक तैयार है जो गुरु लोगोंकी स्वतंत्रताके लिये दिनरात्रि प्रयत्न कर रहा है। जो गुरु हम लोगोंके अभ्युदयके लिये अपने सरवस्वका विनाश कर रहा है जो गुरु साहस बलवीर्यहीन मृतप्राय हमलोगोंको अपने अमृतमय सदुपदेशोंसे नूतन जीवन शक्ति देरहा है क्या उस महापुरुष सद्गुरुसे आप लोगोंको ऐसे विषम कालमें विमुख होना उचित था। कदापि नहीं आप लोगोंसे बहुतही अनुचित हुआ है इत्यादि जनसमुदायके वचनोंको सुनकर जो सिक्ख श्रीगुरुजीको छोडकर चले आये थे वे

चित्तमें बहुतही पश्चात्ताप करनेलगे और अनेक स्थानसे परस्पर फिर मेलकरके अपना अपराध क्षमा करवानेके लिये श्रीगुरुजीकी सेवामें फिर आन हाजिर हुये अभीतक उन्होंने क्षमा मांगनेकी प्रार्थनाभी नहीं करी थी उसी कालमें सूबा सरहिन्दको समाचार मिला कि, गुरु-गोविन्दसिंहजीके पास फिर देश मालवाके अनेक सिक्ख लोग आन एकत्र हुए हैं। शंका है कि फिर फसाद उठखडा हो। इसी भयसे फौज लेकर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीपर चढकर चला आया और मार्गमें कोटकपुरा ग्रामका सरदार कपूराभी साथ सहकारी होगया। सरहिंदके सूबाके चढ आनेके समाचार देशमालवामें पहुँचे तो चारों ओरसे जाटलोग अनेकप्रकारके शस्त्र अस्त्र युद्धकी सामग्री जुटाकर श्रीगुरु-जीकी सेवामें आन हाजिर हुये। श्रीगुरुजीने सबसे युद्ध करनेका स्थान पूछा तो सबने यही उत्तर दिया कि, दीनबन्धो खदरानाके तालाबके सिवाय जो कि, वागहकी सरायके समीप है और कोई उत्तम स्थान नहीं है श्रीगुरुजी उसीकालमें अपने शिष्य मण्डलको साथ लेकर उस स्थानकी तरफ रवाना हुये। यद्यपि वे शिष्यलोग जो कि अपना अपराध क्षमा करवाने आये थे अभीतक प्रार्थना करके क्षमा नहीं मांगचुके थे तथापि ऐसे अवसर पर उन लोगोंने श्रीगुरुजीसे पृथक् होना उचित न समझा। किन्तु मनमें यह विचारा कि, अन्तको मरतो जानाही है सदा जीते रहना तो हैही नहीं फिर इस थोडेसे जीवनके लोभमें श्रीगुरुजीसे विमुख होना उचित नहीं उचित तो यह है कि हमलोग अपने गुरुके सामने बादशाही फौजके साथ लडकर मरें। जिससे लोक परलोक दोनोंका सुधार होवे यदि युद्धमें मारे जावेंगे तो स्वर्गमें जावेंगे। और यदि हमारा विजय होगा तो हम श्रीगुरुजीकी प्रसन्नताके पात्रभी अवश्य होंगे। इत्यादि विचार करके वह सभी सिक्ख श्रीगुरुजीके पीछे पीछे चलदिये। और जंगल खदरानामें पहुँचकर सबने जंग करनेके लिये अपनी २ मोरचे बन्दी करली। और श्रीगुरुजीने एक ऊंचे टीलेपर जहांसे सारी फौज दृष्टिगोचर रहे

अपना मोरचा बाँधा । उसी अवसरपर बादशाही फौजभी आन पहुँची जिसके सामने प्रथम उन गुरुके अपराधी सिक्खलोगोंने होकर खूब लडाई करी और प्रत्येकने अपनी २ सामर्थ्यानुसार जहांतक बनपडा पूर्ण रूपसे बादशाही फौजका सामना किया तीर तथा तोपोंकी गोलियाँ वर्षाकी तरह वर्षने लगीं शूरपुरुषोंके शवपर शव गिरने लगे अनेक कातर थर २ काँपने भी लगे । रक्तकी नदी बह निकली मार मारकी ध्वनिसे आकाश गुंजार करनेलगा । श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके अमोघ तीरोंनेभी अनेक अच्छे २ सरदारोंको महानिद्रामें शयन कराया परन्तु भेद केवल इतना था कि उस जंगलमें शिवाय उसस्थानके जहांपर सिक्खलोगोंकी फौजने प्रथमही आन डेरा डाला था दूर २ प्रदेशमें कहीं पानी न था । उस शिक्ख संरक्षित पानीपर प्यासी शाही-फौजने अनेक बार हमले किये । परन्तु सिक्खलोगोंने अपने अप्रतिहत तीरों तथा गोलियोंसे उनके सभी आक्रमण निष्फल किये । अन्तमें लाचार होकर बादशाही फौज प्यासी मरने लगी । उसकालमें सूबा सरहिन्दने सरदार कपूराने कहा कि क्या यहाँपर समीप कहीं पानी नहीं मिलेगा कपूराने कहा कि सूबासाहब यह जंगल बहुतही विकट है इसमें केवल इतनेही स्थानमें पानी था जिसको गुरुगोविन्दसिंहने प्रथमही आनके रोक लिया है अब सिवाय इसके चारोंओर बारा२कोशतक भी पानीका मिलना कठिन है । इस वार्त्ताको सुनकर सूबा बहुतही आश्चर्य्य हुआ । और कहा कि यदि यहां पानीही न मिला तो फौज क्या लडेगी । एवं सरदार कपूराके कहनेसे सूबा सरहिन्दने अपनी फौजको पीछे लौटनेका हुक्म दिया बादशाही फौजके पीछे हटतेही सिक्खोंने उसका तीन कोशतक पीछा किया । बहुतसे मनुष्य पीछे भागते हुये भी सिक्खोंके हाथसे मारे गये । और उनका असबाव सामान भी जो पाया सिक्खलोगोंने लूटलिया इस युद्धमें सिक्खोंका विजय हुआ । सभी लोग श्रीगुरुजीके पास आनकर जय जय शब्दका उच्चारणकर खुशीमनाने लगे । श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी अपने स्थान

मोरचेसे चलकर सारे जंगके मैदानको फिरकर देखने लगे। उनमें सबसे प्रथम अग्र प्रदेशमें मोरचा उन सिक्खोंका पाया जो कि आनन्दपुरके किलेमें श्रीगुरुजीको छोडकर अपने घरोंको चलदिये थे। अब इस युद्धमें उन्हींमेंसे बहुतसे ऐसे निकले जिन्होंने दश २ पांच पांचको मारकर अन्तमें अपने प्राण दिये। श्रीगुरुजीने उन मृताशिष्योंके मुख स्वयं अपने रूमालसे पोंछ २ कर एक बृहत् चिता बनाकर सभीको उसके ऊपर टिकाकर दाह क्रिया करी॥

उन्हीं सिक्खलोगोंमेंसे एक महासिंह नामक शिष्य कुछ प्राण अवशिष्ट जीवित पडा था श्रीगुरुजी उसके समीप गये तो देखा कि उसके शरीरपर अनेक घाव लगे हैं। प्राण रहनेकी प्रत्याशा नहीं है। श्रीगुरुजीने उसके सभी घाव अपने हाथसे पोंछे और उसके मुखमें पानी डालकर सचेत किया। उसने सचेत होकर श्रीगुरुजीको प्रणाम किया। तो श्रीगुरुजीने प्रसन्न होकर कहा कि जी तुम्हारा चित्त चाहे तुम हमसे मांगो उस गुरुप्रियभक्तने कहाकि दीनबंधो यदि आप कृपाकरके कुछ दिया चाहते हैं तो जो प्रातिज्ञापत्र हमलोगोंने आनन्दपुरके किलेमें लिखा था तथा आपसे विमुख होकर चलेगये थे उसको आप इसकालमें फाड डारें। और उस अपराधको क्षमा करें। श्रीगुरुजीने कहा यदि कुछ और वस्तु मांगता तो अच्छा होता परन्तु श्रीगुरुजीके तीन बार कहनेसेभी उस दृढ विचारवाले शिष्यने अपनी वाणीको न पलटा किन्तु बार २ यही मांगा कि वह कागज फाड दीजिये। श्रीगुरुजीने प्रसन्न होकर उसीकालमें अपने पाकटसे उस पत्रको निकाला और उसको दिखलाकर फाडादिया जिसको देखकर उस शिष्यका चित्त बहुतही प्रसन्न हुआ और प्रेमसे कहने लगा कि दीनबन्धो ! आपने कृपा करके अत्यन्त विमुखोंको फिर मिला लिया है। श्रीगुरुजीने भी उसको अपनी जातिपर उपकार करनेवाला जानकर अनेकवार धन्यवाद दिया। और पश्चात् श्रीमुखसे वारंवार उच्चारण किया कि धन्य गुरुकी

सिक्खी है! धन्य गुरुकी सिक्खी है!! धन्य गुरुकी सिक्खी है!!! इतनेहीमें उसके प्राण निकल गये। सभीको एकही चितापर जलाकर उनको मुक्तोंकी उपाधि प्रदान करी। अर्थात् जो इस युद्धमें श्रीगुरुजीका शिष्य मरा उसका श्रीगुरुजीने 'मुक्तः' इस शब्दसे पुकारा इसीही कारणसे उस तालाबका नाम भी अब मुक्तसर बोला जाता है। वहांपर 'मुक्तसर' नामहीसे अब एक भारी ग्रामभी बसा हुआ है। प्रतिवर्ष माघकी संक्रांतिको वहांपर एक भारी मेला भी हुआ करता है। यह उपरोक्त युद्ध माघ मास मिति १ संवत् १७६२ विक्रमीको हुआ था। उसी कालमें श्रीगुरुजीने अपने शिष्यलोगोंको यथायोग्य पारितोषिक देकर रवानाकिया। और आप वहांसे चलकर मार्गमें अनेक ग्रामोंके शिष्य लोगोंको अपने सदुपदेशोंसे कृतार्थ करते हुये शहर बठिण्डामें पहुँचे। आपका शुभागमन सुनकर डलानामक भक्त अनेक मनुष्योंके साथ आपकी सेवामें हाजिर हुआ। और प्रार्थना करके इनको अपने ग्राममें लेगया। और ग्रामके बाहर जहां अब दमदमा साहबके नामसे गुरुस्थान प्रख्यात है। वहां आपका उतारा कराया और बडे प्रेमसे सेवा चाकरी करने लगा। धीरे २ समीपवर्त्ती शिष्यलोगोंको भी खबर लगी तो आपके चरणोंमें भेंट ले लेकर हाजिर होने लगे। इसी स्थानपर श्रीगुरुजीकी गृहिणी भी कुछ दिनोंके पीछे भाई मनीसिंहादि शिष्यलोगोंसे सरंक्षित हुई श्रीगुरुजीके पास आन पहुँची और इसी स्थानपर बादशाह औरंगजेबका एक जवाबी पत्र भी आपके पास आया। जिसमें औरंगजेबने यह लिखा कि, आपका शिक्षापत्र मेरेको पहुँचा मैं बांचकर बहुतही प्रसन्न हुआ। मेरा आपसे मुलाकात करनेको बहुत चित्त चाहता है। परन्तु क्या करूं शरीर बहुत दिनसे बीमार है। कहीं आने जानेकी शक्ति नहीं है। यदि आप कदाचित् दिल्लीमें आनेका श्रमलेवें और मेरेको अपनी कदम-बोसी करनेका अवसर देवें तो बहुतही अनुग्रह हो और मैं तन मनसे अपने गत आचार-

र्णोंकी आपसे क्षमा माँगनेकी प्रार्थना करताहूं। और पंजाबके हाकिमोंके नामपर मैंने परवाने भेजदिये हैं कि, इससे आगे आपके ऊपर कोई भी फौजकशी न करे। इत्यादि औरङ्गजेब बादशाहके पत्रको बांचकर श्रीगुरुजीने उसका तात्पर्य्य समझ लिया। और उसके लिखनेपर पूर्ण विश्वस्त होकर दिल्ली जानेका विचार न किया। परन्तु उसके पीछे पंजाबके हाकिमोंकी अपनेपर कदापि फौजकशी न होनेसे श्रीगुरुजीने औरंगजेबके लिखनेका किञ्चित् विश्वासभी करलिया फिरभी कई एक कारण वशसे दिल्ली जानेका विचार न किया। प्रथम संवत् १७४९ विक्रमीमें एकवार श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीने अपने पिता गुरुतेगबहादुरजीकी वाणी दर्ज करनेके लिये करतारपुर निवासी सोढि धीरमल्लसे आद्य गुरुग्रन्थ साहब मांगा था। उसने राग द्वेषके वशसे देनेसे इन्कार किया था। प्रत्युत ऐसी तर्कमारी थी कि तुमतो सच्चे गुरु हो तुमको इस ग्रन्थ साहबकी क्या आवश्यकता है। और यदि आवश्यकता, भी होय तो तुम्हारे आगे ऐसा नूतन उच्चारण करके लिखलेना भी दुर्घट नहीं। इत्यादि धीरमल्लके वचनोंको श्रवण करके उस कालमें अनवसर जानकर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी शान्तही रहे थे। परन्तु उसके वचन मनमें अवश्य कभी २ स्मरण आयाही करते थे। इसलिये अब वर्त्तमानमें श्रीगुरुजीने तलवण्डी नामक ग्राममें आनकर जब हरएक तरफसे अवकाश पाया तो आश्विन मिति १ संवत् १७६२ विक्रमीमें अपनी मानसिक शक्तिसे आद्य गुरुग्रन्थ साहबका निर्माण करन लगे। प्रतिदिन प्रातःकाल एक खेमाके भीतर निर्विष्ट होकर आप बोलते जाते। और खेमाके बाहर बैठकर भाई मनीसिंहजी लिखते जाते। नवमास नवदिनके पश्चात् आद्य गुरुग्रन्थ साहब जैसेका वैसा तैयार हुआ। अर्थात् आद्य गुरुग्रन्थ साहबकी आनुपूर्वी जैसी गुरु अर्जुन साहबके हस्तसे निकली थी श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके उच्चारणसे तथा भाई मनीसिंहजीके लिखनेसे उससे एक मात्राका भी फर्क न पडा। किन्तु अपनी

इच्छासे श्रीगुरुगोविन्दहसिंहजीने 'कह कबीर जनभये खुलासे' इस पंक्तिके स्थानपर 'कह कबीर जन भये खालसे' इसका उच्चारण किया। सिवाय इसके और सब वर्ण २ मात्रा २ ज्योंकी' त्यों हैं। इसी स्व-निर्मित गुरुग्रन्थ साहबमें श्रीगुरुने अपने पिता, गुरुतेगबहादुरसाहब-की भी वाणी दर्ज करी। और इस गुरुग्रन्थ साहबको दमदमावाली बीडके नामसे प्रसिद्ध किया। फिर उससे बहुतसी प्रतियाँ लिख-ली गई। और फिर पीछे जब श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके अनुगामि सिक्ख-लोगोंका अधिक जोर हुआ तो करतारपुरवाले गुरुग्रन्थ साहब परभी गुरुतेगबहादुरजीकी वाणी चढाई गई। श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीने मालवा देशमें कुछ दिन निवास किया। और उस प्रान्तके लोगोंकी सेवा-भक्तिसे बहुतही प्रसन्न हुये। ऐसेही एकदिन जंगलमें शिकारको गये तो भाई डल्ला जो कि उन दिनोंमें आपके साथही रहा करता था। उसको सुनाकर और जण्ड करीरादिके वृक्षोंकी तरफ दृष्टि देकर कहने लगे कि क्या उत्तम आम्र पेड हैं। क्याही उत्तम अनारोंके वृक्ष हैं। जिसके उत्तरमें भाई डल्लाने कहा कि गुरुजी इस मरुभूमिमें आम्र-अनारादिके वृक्ष कहाँ यह तो जण्ड करीर हैं। श्रीगुरुजी चुपरहे और फिर थोडा आगे बढकर लम्बायमान प्राचीन कुशाकासकी तरफ दृष्टि देकर कहा कि क्या सुन्दर गेहूंके खेत हैं क्याही सुन्दर कपास फूल रही है। फिर डल्लाने कहा गुरुजी! यहाँपर गेहूं और कपास कहाँसे आई। यह तो फूली हुई कांहीं (दर्भ) है। श्रीगुरुजी फिरभी चुपरहे। और थोडा आगे बढकर मरुभूमिमें सूर्यकिरणसे जलवत् प्रतीति देखकर कहा कि, क्याही सुन्दर नहरें लहरें लेरही हैं। उसपर फिर डल्लाने कहा गुरुजी? क्या आपको आनन्दपुर प्रान्तका स्मरण आता है। यह तो मरुभूमि है यहाँपर नहरें या उनकी लहरें कहां। उसपर श्रीगुरुजीने अप्रसन्न होकर कहा वाहरे डल्ले झल्ले, हम कहते क्या हैं और तू समझता क्या है। हमारी इच्छा थी कि, यह गुरुभ-क्तदेश अभी सर्व समृद्धिसम्पन्न होवे परन्तु प्रतिबन्धकी भूत तेरी

वाणी विलम्बका सूचक हुई । अबभी परमात्माकी इच्छा होगी तो इसी देशमें उक्त समृद्धि कुछ काल पीछे होगी । यह श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीकी प्राचीन इतिहासोंमें सम्बद्ध भविष्यत् वाणी वर्त्तमान कालमें मालवा देशमें सार्थक होरही है । अर्थात् पंजाब देशके मालवा प्रान्तमें ग्राम २ में नहरें चल रहीं हैं बाग बगीचे लग रहे हैं । पानीके बहुतायतसे हरएक खेती सुगमतासे होरही है । मरुदेशमें कुछ दिन निवास करके पश्चात् श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीने दक्षिण देशके देखनेकी इच्छा करी । और दमदमासे पाँचसौ शिष्यों-के साथ रवाना होकर मार्गमें अनेक ग्रामोंमें निवासकरते तथा अपने सदुपदेशोंसे लोगोंको लाभ पहुँचाते हुये राजपूतानाके नारायण नामक ग्राममें आन खेमा जमाया । वहाँपर एक श्रीदादूजीके देहरेका स्थान है । उसकालमें उस स्थानके महन्त चेतराम नामकने श्रीगुरुजीकी बहुतही खातरी करी । और कई दिन तक अपने आश्रमपर टिकाया ।

इति पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥

अथ षट्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४६ ॥

फिर वहांसे चलकर श्रीगुरुजी उदयपुरमें आन विराजे वहांपर भी महाराजा उदयपुरने आपका बहुतही सत्कार किया । और कई दिन-तक अपने पास रक्खा । फिर वहांसे चलकर श्रीगुरुजी कार्तिक पूर्ण-मासी संवत् १७६३ विक्रमीमें पुष्कर तीर्थका मेला देखनेके लिये शहर अजमेर पधारे वहांपर अनेक भक्तलोगोंने आपको अनेक प्रकारकी भेंट पूजा चढाई । वहांपर जो भेंटका रुपया आया उसका उसी स्थानपर श्रीगुरुजीनें अपने नामका उस तीर्थका एक घाट बनवाया वह घाट अबतक भी गोविन्द घाटके नामसे प्रसिद्ध है । वहांसे चलकर श्रीगुरुजी एक भगोर नामक कसबामें आन विराजे यहांके एक धनीने

आपकी बहुतही सेवा करी और कई दिनतक अपने पास टिकाया। इसी स्थानपर श्रीगुरुजीको औरङ्गजेब बादशाहके मरनेकी खबर भी पहुँची। इस समाचारके सुनतेही सभी सिक्खोंने एक असाधारण प्रसन्नता प्रगट करी और बहुतही खुशी मनाई। और उसके मरनेका कारण केवल श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीकी अप्रसन्नता निश्चय किया। उधर औरंगजेब बादशाहके मरतेही उसके तख्तके लिये उसके बेटोंमें फसाद उठ खडाहुआ। अर्थात् आजमशाह जो कि, पिताके मरण कालमें उसके पासही था उसने अपने पिताके मरतेही औरंगाबादमें शाहीताजको अपने शिरपर रखलिया। और ताज रखनेसे प्रथमही अपने छोटे भाई कामबख्शको सूबा विहारसे अपने पास बुलवाकर फरेबसे मरवाडाला पीछे अपने बडे भाई बहादुरशाहके फिक्रमें दिल्लीकी तरफ रवाना हुआ। इधर पिताके मरनेको सुनकर बहादुरशाह भी कइ एक मुसाहिबोंकी सम्मतिसे दिल्लीके तख्तपर बैठचुका था। और सबसे बडा भाई होनेसे वस्तुतः तख्तका मालिकभी बहादुरशाही था तौ भी अपने भाई आजमशाहका अपने पर चढकर आना सुनकर बहादुरशाह बहुत घबराया। और अपने बचावके अनेक तरहके उपाय सोचने लगा। श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीकी शूरवीरताका भी उसको पूर्णरूपसे परिचय था उसने उसी वक्त सम्मति करके भाई नन्दलाल तथा हाकिमराय दीवानको श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके पास भेजा। और प्रार्थनापूर्वक यह निवेदन किया कि, मेरा छोटा भाई मेरसे तख्त खोसनेके लिये दिल्लीपर चढकर चला आता है। आप यदि इस कालमें मेरे सहायक होवें तो मैं आपका जन्मभर खिद्मतगार बना रहूं। इत्यादि तात्पर्य्यका एक खत लिखकर उनके हाथमें देकर रवाना किया। उस खतको देखकर श्रीगुरुजीने प्रथम तो यह विचारा कि इन कण्टकोंके आपसमें मरनेसे हमारी क्या हानि है। फिर थोडी दूर पीछे "महात्मानोनुगृह्णन्ति भजमानाग्रिपूनपि" अर्थात् महात्मा-लोग शरण प्राप्त शत्रुओंका भी पालन करते हैं। इत्यादि नीतिवच-

नोंको स्मरणकर विचारा कि, यद्यपि यह भी उसी बापका बेटा है जिसकी जबानका कुछ विश्वासही न था । तथापि वर्त्तमानमें यह शरण होकर हमारेसे सहायता चाहता है । इसलिये इस समयमें सिवाय सहायक होनेके हमारा दूसरा धर्म नहीं है । उसी कालमें श्रीगुरुजीने भाई दयासिंह, धर्मसिंह इत्यादि २५ सिक्खोंको अपने पाससे दिल्लीको रवाना किया । और बहादुरशाहको लिख भेजा कि तुम कुछ भय मत करो यदि जंग होगा तो हम ऐन् जंगके अवसरपर तुम्हारे पास आन पहुँचेंगे । उधर श्रीगुरुजीने देशमालवाके अपने शिष्योंको लिख भेजा कि वह लोग शीघ्र आनकर बहादुर शाहकी सहायतामें युद्ध करें । श्रीगुरुजीके हाथके पत्रोंको देखतेही सहस्रों सिक्खलोग दिल्लीमें आन पहुँचे । उधरसे श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीभी उचित समयपर आन प्राप्त हुये । और अपने कई हजार सिक्खोंकी सेना लेकर रणभूमिमें जा खडे हुये । बहादुरशाहके चित्तमें अपनी फतहका बहुतही सन्देह था । परन्तु श्रीगुरुजीकी सेनाको देखकर उसके चित्तमें धैर्य्य हो आया । और बडे उत्साहसे जंगकरनेको मैदानमें निकला । उधरसे आजमखांभी मैदानजंगमें डेरा डाले पडा था । दोनों ओरकी सेना सजकर युद्धक्षेत्रमें आन प्राप्त हुई । लडाई होनेलगी । योधे कट कट मरने लगे । शूर वीर शोर करने लगे । भीरु भागने लगे । चारों तरफ तलवारें चमकने लगीं । तोपें तडकनेलगीं । रणभूमि लोहूसे लिप्त होगई । उसी कालमें आजमशाह हस्तीपर बैठकर युद्धको देखरहा था । श्रीगुरुजीने दूरहीसे उसको अपने तीरका लक्ष्य बनाया । एकही तीरसे उसका महानिद्रामें शयन हुआ । दूसरे तीरके लगतेही हाथीपरसे गिरपडा आजमशाहके गिरतेही उसकी फौज पीछेको भाग निकली । और बादशाही फौजका विजयका नगारा बजनेलगा । बहादुरशाह श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीको साथ लेकर सहित सेनाके दिल्लीमें चला आया और मोतीबागमें श्रीगुरुजीका उतारा कराया । कुछ दिनतक बडे

प्रेमसे अपने पास रक्खा। बादशाह बहादुरशाह एकदिन स्वस्थचित्त होकर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके पास मोतीबागमें मुलाकात करनेको आया। और कृतज्ञ होनेकेलिये अनेकतरहकी बातें करनेलगा। कहा कि केवल आपहीके इकबालसे यह शाहीतक्खत हासिल हुआ है। बरन् कोई आशा न थी। अब मैं आपकी निगहबानीसे अपने मर्तबे पर पहुँचगया। मेरी इच्छा है कि, अब आप मेरेको कुछ खिद् मत फरमावें जो मैं बजालाऊं। श्रीगुरुजीने कहा सूबासरहिन्द आदि जितने पंजाबदेशके बादशाही हाकिम हैं उनलोगोंने तथा कतिपय पर्व-तीराजाओंने हमारे पर बहुतही अत्याचार किये हैं। उचित है कि उन सबको तुम चन्दूलालकी तरह हमारे हवाले करदो। अर्थात् जैसे जहाँगीर बादशाहने अपने दीवान चन्दूलालको गुरु अर्जुनके अपरा-धमें गुरुहरिगोविन्दजीके हवाले करदिया था वैसेही तुमभी करो। श्रीगु-रुजीकी इस वार्त्ताको सुनकर बहादुर शाहने कहा कि, गुरुजी! अभी अच्छी तरहसे जैसी कि, चाहिये रियासतमें शान्ति स्थापन नहीं हुईहै अभी ही उनपर हस्ताक्षेप किया जानेसे देशमें हलचल मचजानेकी संभावना अवश्य होती है। इसलिये जिसवक्त मेरी हुकूमत तथा दबदबा सर्वत्र नियमपूर्वक नियत होजावेगा तो उस कालमे मैं आ-पके हुक्मकी तामील अवश्य करूंगा। श्रीगुरुजी उसके इस जवा-बको सुनकर किञ्चित् हँसकर कहने लगे कि,हम तो पहलेहीसे जानते थे कि तू भी उसी वृक्षका फल है जो कि अपनेमें विषसे भी अधिक विष रखता था। क्या यह तख्त कयामतको तेरे पीछे थोडाही जानेवाला है। लक्षों इस तख्त पर होहोके चले गये। और करोडों और चले जाँयगे। परन्तु तख्त धरेका धराही रहेगा इसको साथ उठा लेजानेकी न किसीकी शक्ति हुई न होगी। दुर्लभ तथा उत्तम पुरुषोंकी परस्पर व्यवहारनिपुणता है। जो कि, हरएकसे बन नहीं पडती और हमने तो अपने कार्य्योंकी सिद्धिका भरोसा सिवाय एक अकालपुरुषके दूसरे किसी जीवजन्तुपर कदापि किया ही नहीं

यह तो केवल इतनाही है कि तुमने कुछ पूछा तो परीक्षणके लिये हमने भी कुछ कहदिया । यह कार्य्य जिससे तुम इन्कार करचुके हो । हमारा बन्दा नामक एकही शिष्य इस कार्य्यको उत्तम रूपसे पूर्ण करेगा । और आगेको हमारे शिष्यलोग ऐसे होंगे जो कि, अपनी तलवारके जोरसे स्वयं बादशाह होंगे । इत्यादि श्रीगुरुजीके अनेक तरहके वचन सुनकर बहादुरशाह चुप रहा । और चित्तमें विचारने लगा कि, आनन्दपुरके युद्धमें इनका बहुत नुकसान हुआ है। उसके बदलेमें कुछ देना उचित है ऐसे विचारकर बादशाहने श्रीगुरुजीको दसलाख रुपया भेंट किया । श्रीगुरुजीनेभी बादशाहका मन रखनेके लिये उससे ले लिया । परन्तु उसी कालमें अपने शिष्योंको बाँट दिया । श्रीगुरुजीने बादशाहके अनुरोधसे कुछ दिन उसके पासही निवास किया । पीछे बादशाहकी दक्षिण देशमें जानेकी तैयारी हुई तो उसने बहुत प्रार्थनासे श्रीगुरुजीको भी अपने साथही लिया । श्री गुरुगोविन्दसिंहजीनें अपने घरके सरसामानको दिल्लीमें टिका दिया । और आप दक्षिणदेशकी सैर करनेके लिये बादशाहके साथ हो लिये और राजपूतानाके जयपुर, जोधपुर, उदयपुर इत्यादि नगरोंमें मुकाम करतेहुये शहर उज्जैनमें जा निवास किया । वहांपर बादशाहने एक आम दरबार किया । जिसमें राजपूतानाके तथा दक्षिण प्रान्तके सभी राजालोग बुलाये गये सबने आनकर तरह २ की नजरें बादशाहके आगे रक्खीं । उसी दरबारमें बादशाहने सभी राजपूतोंके सामने श्री गुरुगोविन्दसिंहजीकी शूरवीरताकी बहुतही प्रशंसा करी । और कहा कि, मेरेको शाहीतख्त केवल इनहींके अप्रतिहत पराक्रमसे नसीब ।

इसी स्थानपर महन्त चेतराम दादूपन्थी भी अपने शिष्यलोगोंमें पर्य्यटन करता हुआ जमातके समेत उज्जैनमें आन पहुँचा । और श्रीगुरुजीके दोबारा मेल होनेसे बहुतही प्रसन्न हुआ । और उसीने श्रीगुरुजीको सुनाया कि, एक माधवदास उपनाम नारायणदास नामक

साधु नादेड नामक ग्राममें गोदावरीके तीरपर निवास करता है। वह वस्तुतः वैष्णव साधु है। परन्तु उसके पास मन्त्र तन्त्रादिका इतना बल है कि, ऋद्धि सिद्धि तो उसके मानो चरणोंमें निवास कर रही हैं। उस देशभरमें उसकी पूर्णरूपसे प्रख्याति होरही है। दोष है तो केवल इतना है कि, वह साधु लोगोंसे अच्छा वर्ताव नहीं करता। कोई भी साधु उसके स्थानपर जावे प्रथम तो उसकी बहुतही खातरी करता है यदि वह स्वयं स्थानपर न भी होय तोभी उसके चेले भी अच्छी तरहसे आये गयेका स्वागत करते हैं। उसके स्थानपर एक बहुतही उत्तम मञ्च है जो प्रतिष्ठित साधु महात्मा कोई जावे उसको उस मञ्चपर सत्कार पूर्वक बिठलाते हैं मञ्चमें विचित्र शक्ति यह है कि साधु बैठनेके थोडी देर पीछे वह मञ्च आपसे आप उलट पडता है बैठनेवाला साधु नीचे और मञ्च ऊपर होजाता है। पीछे वह अपने शिष्य वर्गसमेत ताली बजाकर हँसने लगता है मैंभी किसी एक कार्य्यवशसे वहांगया था। मेरे साथ भी वहाँ ऐसी ही हुई जो मैं आपको सुनाचुका हूं उसका जादू टोना भूत प्रेत मन्त्र यन्त्र मेरी तो कुछ समझमें नहीं आया। परन्तु बहुतसे साधु लोगोंका विचार है कि, उसके वशमें कई एक बीर रहते हैं वह सभी काम उन वीरोंहीसे लिया करता है। आपभी यदि कदाचित् वहाँ पर जावें तो मेरे कहेको स्मरण रखकर अवश्य जरा चौकसाईसे रहना। श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीने कहा महंतजी हम तो आपके कहनेके विनाही बहुत चौकस हैं। और वीरोंकी तो हमको भी बहुत आवश्यकता है; हम अवश्य उसके पास जावेंगे उसका तथा उसके वीरोंका भा परीक्षण करेंगे। और ऐसे पुरुषका परिचय देनेके बदलेमें हम आपकोभी धन्यवाद देते हैं। श्रीगुरुजीने उसी स्थानसे बादशाहका संग छोड दिया। और सीवन नागपुर अकोला इत्यादि शहरोंका सैर करते हुए नादेड नामक ग्राममें आन पहुँचे। नादेडमें जहाँपर आपने प्रथम जाकर निवास किया था वहाँपर वर्त्तमानमें एक गुरु-

स्थान संगत साहबके नामसे आपके स्मरणार्थ विद्यमान है । वहांपर डेरा जमाकर दूसरे दिन उस माधवदास साधुके मकान पर गये । दैवात् वह उस कालमें मकान पर न था। तथापि उसके शिष्य वर्गने श्रीगुरुजीको सत्कार पूर्वक उसी मंचपर बैठनेकी प्रार्थना करी श्रीगुरुजी मंचपर विराजे उसी कालमें एक माधवदासके शिष्यने जाकर माधवदासको श्रीगुरुजीके अपने स्थानपर आनेका तथा उनके मंचपर विराजनका समाचार दिया। जिसको सुनकर माधवदासने अपने तन्त्रसे श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीको मंचसे नीचे गिराना चाहा । बहुतही छल छन्द किये परन्तु श्रीगुरुजीके अप्रतिहत प्रतापके आगे उसकी कुछ भी न चली। श्रीगुरुजी यथावत् मंच पर विराजे रहे। माधवदास लाचार होकर अपने स्थान पर चला आया और आतेही श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके चरणोंमें गिरपडा। श्रीगुरुजीने पूछा कि, आप कौन हैं। उसने कहा दीनबन्धो ! मैं आपका बन्दा हूं। श्रीगुरुजीने कहा बन्दाका कामतो अपने स्वामीकी आज्ञा पालन करना है। किन्तु नाटक चेटक द्वारा लोगोंको व्यामोहमें डालना नहीं है। बन्दाने कहा तन मनसे आपकी आज्ञा पालनमें तत्परहूं । यदि मेरा शिरभी आप चाहें तो हाजिर है । श्रीगुरुजीने उसको वीर-पुरुष जानकर प्रेमसे अपने पास बिठलाया । और अनेक प्रकारके उपदेश किये। बन्दा भी श्रीगुरुजीके वचनोंको सुनकर सच्चा बन्दा बनगया। और अनेक तरहसे सेवा भक्ति करने लगा। श्रीगुरुजी बन्दाकी सेवासे बहुत ही प्रसन्न हुए। तब उसने प्रार्थना करी कि, आप मेरेको अपना शिष्य बना लीजिये। श्रीगुरुजीने कहा हम हर एकको शिष्य बनाकर अपना नाम वैरान किया नहीं चाहते किन्तु जो वीर पुरुष हिन्दू धर्मपर या अपने देशकी रक्षाके लिये प्राणोंको दिया चाहता है वही हमारा सच्चा शिष्य बन सकता है। तुम वीर पुरुष हो यदि देशपर या धर्म पर कुछ उपकारकी दृष्टि होय तो हम शिष्य बना लेते हैं। अन्यथा नाटक चेटक तो बाजीगर लोग घर २ में दिखलाते फिरते हैं। उससे अपने

देशको या धर्मको क्या लाभ है। बंदाने कहा आपकी आज्ञाका पालन करना मेरा धर्म है जैसे आप आज्ञा देंगे मैं करूंगा। श्रीगुरुजीने उस-को दृढ प्रत्ययका पुरुष जानकर अपना शिष्य बनाया। और एक तलवार और पांच तीर अपने पाससे उसको प्रदान किये। और आज्ञा करी कि तुम पंजाबदेशमें जाकर हिन्दूधर्मकी रक्षा करो। मुस-लमानोंका जोर तोड डारो। सरहिन्द शहरके सूबासे हमारे निरपराध मारे जानेवाले छोटों बच्चोंका बदला भी लेना। और जहांतक बनपडे पन्थखालसाकी उन्नतिमें प्रयत्न करना। श्रीगुरुजीकी इस आज्ञाको बन्दाने प्रसन्न होकर स्वीकार किया। और यात्राका सभी सामान तैयार करके देशपंजाबकी तरफ रवाना हुआ बन्दाकी पंजाबकी चढा-ईके समय श्रीगुरुजीने उसको अपने पाससे एक नगारा और पचीस शूरवीर लडाके शिष्य सहायताके लिये प्रदान किये। सिवाय इसके औरभी बहुत सामान जंगी देकर बन्दाको नीचे लिखी पांच शिक्षा पर नियत रहनेकी आज्ञाभी करी। प्रथम जितेन्द्रिय रहना अर्थात् परस्त्री सेवनसे बचना ॥ १ ॥ द्वितीय मिथ्या-भाषण न करना ॥ २ ॥ तृतीय अपना भिन्न पन्थ खडा न करना ॥ ३ ॥ चतुर्थ गुरुद्वारोंके स्थानोंमें गादी लगाकर मत बैठना ॥ ४ ॥ पञ्चम सिक्खलोगोंपर अपनी हुकूमत न दिखानी किन्तु भाइओंकी तरह वर्त्ताव रखना ॥ ५ ॥ बस यही पाँच शिक्षायें हैं। यदि इनके अनुकूल चलोगे तो बहुत कुछ करसकोगे और यदि विपरीत चलोगे तो हानि होगी। इधर बन्दा इन शिक्षा-ओंको स्वीकार करके देश पंजाबको रवाना हुआ। उधर श्रीगुरुजीने पंजाब देशके माझे मालवेके प्रसिद्ध २ सिक्ख लोगोंके नाम हुकमनामे लिखभेजे कि वह बन्दाके साथ होकर अपने शत्रुओंसे पूर्णरूपसे बद-ला लेवें। बन्दाके देश पंजाबमें पहुँचतेही श्रीगुरुजीके हुकमनामोंके अनुसार सहस्रों शिष्यलोग बन्दाको आगेसे आनमिले उन सिक्खोंको साथ लेकर बाबा बन्दाने पंजाबदेशमें जो जो काम किया है वह सभी

प्रसंगानुसार आगे लिखा जायगा । वन्दाके जानेके पीछे श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीने गोदावरी नदीके तीरपर एक उत्तम स्थल पसन्द करके वहाँही अपना खेमा जमादिया । और आनन्दपूर्वक निवास करने लगे श्रीगुरुजीके खेमेके समीपही एक सय्यद साबर शाह फकीर बहुत दिनसे वहांपर रहता था । और दूर २ तक आस पासकी भूमिपर उसने अपना अधिकार जमा रक्खा था । श्रीगुरुजीको उसने अधिक काल रहते देखकर वहाँसे उठादेना चाहा । तब श्रीगुरुजीने उस भूमिके असल मालिकको बुलाकर वह भूमि उससे जरखरीद करली । और वहाँही अपने निवासके स्थान बनालिये । वर्त्तमानमें श्रीअविचलनगर साहबके नामसे एक परमप्रतिष्ठित गुरुस्थानभी जिसमें सिक्खलोगोंकी बहुतही पूज्यबुद्धि है विद्यमान है । वहां निवास करनेसे धीरे २ आपके सद्गुणोंसे आकर्षित होकर आसपासके अनेक अच्छे २ लोग आपके सेवक बनगये । और वहां फीरोजखां नामक हाकिम भी आपको मानने लगा । हरएक फिर्कोंके साधु महात्मा लोग भी आपके पास आने जाने लगे । और हर वक्त हरिकीर्त्तन कथा वार्त्ता सत्संग इत्यादि सत्कर्मोंकी धूम लगी रहन लगी प्रतिदिन दोपहरके समय अनेक गरीबोंको भोजन दियाजाता । दोपरके पीछे गुरुग्रन्थ साहबकी कथा हुआ करती । कभी २ नदीके पार शिकार खेलनेको चलेजाया करते । जिस घाटसे नदी पार होकर आप शिकार खेलनेको जाया करते थे । वही स्थान अब शिकार घाटके नामसे प्रसिद्ध है और जिस घाटपर प्रतिदिन स्नान किया करते वह घाट अब नगीना घाटके नामसे प्रसिद्ध है । श्रीगुरुजीकी आज्ञासे एक संतति रहित नगीनानामक सौदागर भक्तने उसका निर्माण कराया था । इसलिये उसीके नामपर श्रीगुरुजीने उसका नाम नगीना घाट रक्खा ।

इति षड्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४६ ॥

अथ सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥

इन्हीं दिनोंमें पंजाबसे समाचार आया कि, पन्थखालसाकी सहायतासे बाबा बन्दाने १३ ज्येष्ठ संवत् १७६४ विक्रमीमें सूबा सरहिन्दको कत्ल करके शहरको खूब ही वैरान किया। और बच्चोंका बदला लेनेमें किसी तरहकी त्रुटि नहीं छोडी। इस वार्त्ताके सुनतेही श्रीगुरुजीके समीपवर्त्ति सिक्खलोगोंने भारी प्रसन्नता प्रकट करी। कुछ दिनके पीछे जब बहादुरशाह अहमदनगरको विजय करके गोलकुण्डाकी तरफ जाता हुआ श्रीगुरुजीके पास आया तो उस कालमें आप नदीके तीरपर विराजमान् थे। बादशाहने और अनेक तरहके नकद जिन्स तोफाके अतिरिक्त एक बहुमूल्य हीरा भी श्रीगुरुजीकी भेंटमें अपर्ण किया। जिसको उठाकर श्रीगुरुजीने बादशाहके देखते ही नदीमें फेंकदिया। बादशाहको हीरेका फेंकदेना बहुतही बुरा प्रतीत हुआ। श्रीगुरुजीने उसके सन्तोषके लिये कहा कि, यहांपर हीरेद्वारा बादशाहका स्मारक एक हीराघाटके नामसे प्रसिद्ध होगा। इसीसे वह घाट वहांपर वर्त्तमानमें भी हीराघाटके नामसे बोला जाता है। श्रीगुरु गोविन्दसिंहजी महाराजका हिन्दू मुसल्मान दोनों जातिपर सम प्रेमथा शिवाय धर्म-विरोधी अत्याचारी बादशाही घरानेके शेष स्वदेशी मुसल्मानोंसे भी बहुतही प्रेमसे वर्त्ताव किया करते थे इसलिये आपके पास बहुतसे मुसल्मान शूरवीर पठान भी नौकर रहा करते थे। आपके मुसल्मान नौकरोंहीमेंसे 'अताउल्लाखां' तथा 'गुलखां' नामक दो भाई पठान पैन्देखांके वंशके भी थे। उनके शूरवीर होनेसे श्रीगुरुजी उनके साथ विशेष प्रेम रखते थे वे दोनों भाई एकदिन वहांके हाकिम फीरोजशाहके जल्सेमें गये तो वहांपर परस्पर वार्त्तालापमें किसी मुसल्मानने इन दोनों भाइयोंसे तर्क करी। कहा कि, क्या तुम लोग भी इस दीन दुनियामें मुख दिखलानेके लायक हो जिसके बाप दादाने तुम्हारी वंशपरंपराका नाश किया हो तथा जिसने आप तुम्हारे बाप कोभी मारा हो उसकी नौकरी करके तुम पेट भरो। और अपने बापदा

दाका बदला न लो । और फिर अपनेको शूरवीर भी मानो क्या यह मनुष्योंका काम है कदापि नहीं । ऐसी तर्कके सुनते ही दोनों भाई लाल होगये। और चित्तमें यह निश्चय करलिया कि गुरु गोविन्दसिंहको अब जैसे बने मारके छोडना चाहिये । दृढ चित्त करके अवसरके अन्वेषणमें तत्पर रहने लगे इसी तरह भाद्र मिति ४ संवत् १७६४ विक्रमीके दिन गुलखांने श्रीगुरुजीको अकेले शयन करते पाया । उसी वक्त उसने श्रीगुरुजीके पेटमें कटार चला दई । परन्तु हाथ कांप जानेके कारण कटारका पूर्ण घात न हुआ । इसीसे श्रीगुरुजीके प्राण शेष रहगये । फिर उसी कालमें श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीने उठकर तलवारसे उस निमक हराम बेईमान पठानके दो टुकडे कर डाला । बातकी बातमें सारे ग्राममें कोलाहल मचगया । यावत् सिक्खलोग आन एकत्र हुए । और गुलखांके दूसरे भाई कोभी सिक्खोंने उसीवक्त कत्ल कर डाला । शेष जो मुसलमान थे सबको निकाल दिया । और उसी कालमें एक जर्राहको बुलाकर श्रीगुरुजीने अपने जख्मको सिलवाया थोडे ही दीन पीछे वह जख्म मिल भी गया। परन्तु अभीतक पूर्ण रूपसे दृढतर नहीं हुआ था । कि बादशाहकी तरफसे अनेक तरहका सामान तोफा सौगातकी तरहपर आया। जिसमें दो बडी करडी कमाने भी थीं । वे कमाने किसी प्राचीन समयकी थीं । बादशाहको कहींसे नजरमें मिली थीं अपने अनुपयोगकी जानकर उसने श्रीगुरुजीकी भेंटमे भेज दईथीं। उन कमानोंको देखकर सभी लोग यही कहते थे कि आज कल तो इनके चढाने वाला पुरुष संसारमें नहीं है। पूर्वकालमें कहीं कदाचित हो तो हो। ऐसेही श्रीगुरुजीके पासभी पुरुषोंने कहा। तो श्रीगुरुजीने उन कामानोंमेसे एकको उठाकर उसी कालमें खैंचकर चलादिया। परन्तु उस सख्त कमानके खैंचनेसे उस आघातपर जो कि अभी पूर्ण रूपसे ठीक नहीं हुआथा । ऐसा जोर आया कि वह फिर दोबारा खुलगया । और लोहू बहनेलगा । जर्राहने दोबाराभी उसके ठीक

करनेके लिये बहुत प्रयत्न किया। परन्तु दोवारा उसका अच्छा होना जर्राहकी बुद्धिसे न बन पडा अन्तमें श्रीगुरुजीभी उपराम होगये। औषधी करना छोडदिया। और अपने परलोक प्रयाणसमयको समाप्त जानकर सब सिक्खोंको जुटाकर एक सार्वजनिक दरबार लगाया। उसके मध्यप्रदेशमें गुरुग्रन्थ साहबका प्रकाश करके प्राचीन-रीतिके अनुसार एक नारियल तथा पाँच पैसे मँगाकर श्रीगुरुग्रन्थसाहबके आगे रखकर नमस्कार करादिया। और सब सिक्खोंको उच्चस्वरसे पुकारकर कहा कि हमारे पश्चात् तुमलोगोंके गुरु ग्रन्थसाहबही होंगे इसीके पाठसे तुमलोगोंको धर्म नीति ज्ञान वैराग्यादिके नानाविधि उपदेश अनायासही मिला करेंगे। इसके पाठ उपदेशहीसे आपलोगोंके सभी मनोरथ पूर्ण होंगे उसी कालमें श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीने नीचे लिखे दोहेका उच्चारण भी किया।

दोहा—आज्ञा भई अकालकी, तभी चलायो पन्थ।
सब सिक्खनको हुकम है, गुरूमानियो ग्रन्थ ॥

उसी ही कालसे ग्रन्थ साहबके नामके पूर्व गुरु शब्द और लगाय-गया उसके पश्चात् दूसरे दिन कार्तिक शुक्ल ५ संवत् १७६५ विक्रमीमें प्रातःकाल स्नानादि क्रियाके अनन्तर सभी अस्त्र शस्त्र लगाकर श्रीगुरुजीने कडाहप्रसाद (हलवा) वर्त्ताया और सर्वान्तर्यामी परमात्माके आगे एकाचित्त होकर अरदास (प्रार्थना करके यथेष्ट परमधाम पधारे। श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने स्वपरमधाम प्रयाणके पूर्वही अपनी चिता चन्दनकाष्ठकी तैयार करवा रक्खी थी। और उसके चारों ओर एक बृहत् कनातभी तनवादई थी। और अपने शिष्यलोगोंको यह आज्ञा करी थी कि कोई शिष्य हमारी अस्थि या भस्मादिको यहांसे न उठावे। तथा कोई किसीतरहसे हमारे नामसे क्रिया कर्मादिभी न करे। तथा कोई शिष्य हमारे समाधि देहरे आदिका निर्माण भी न करावे। परन्तु गुरुप्रेमाक्रान्त सिक्खलोगोंने न माना चौथे दिन चिताकी भस्मको हिला दिया। और अस्थियोंकी

अन्वेषणा करनेलगे। परन्तु उस चिताकी भस्ममेंसे सिवाय एक लोहेकी कारदके एक अस्थि भी न मिली। पीछे एक शिष्यने उनकी आज्ञाके विरुद्ध वहांपर एक समाधिदेहरा भी बनवादिया। और वही लोहेकी कारद उसके ऊपर लगादई वह कारद वहां अविचल नगरके गुरुस्थानमें अबतकभी विद्यमानहै। अनेक सिक्खलोग उसके दर्शनार्थ जाते हैं। प्रियपाठकवृन्द यह श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजका जीवनवृत्तान्त मैंने आपकी सेवामें अंकगणनाकी तरह यद्यपि बहुतही संक्षेप निरूपण किया है। तथापि यह इतनामात्र ही सनातनधर्मसंरक्षण, या स्वदेशपरिपालन, या स्वजाति उत्तेजन, या स्वअनुगामि वर्गमें नवजीवन संचारण या सर्वोत्तम परमेश्वरीय धर्मप्रचारणका यह प्रतिपादकत्वेन एकही असाधारण उदाहरणरूपेण ग्राह्य है। इस भारतभूमिमें सहस्रों धर्मप्रचारक तथा लक्षों देशसंरक्षक राजे महाराजे हो चुके हैं। परन्तु ऐसा एक भी नहीं हुआ कि जिसने अपने सनातनधर्मकी रक्षाके निमित्त अपना सर्वस्व हवन करके शेषमें अपने भी प्राण दिये हों श्रीगुरु तेगबहादुरजीका हिन्दूधर्मके लिये दिल्लीमें कतल होना तथा श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके छोटे छोटे बच्चोंका मारा जाना तथा सर्वस्व विनाशके अनन्तर श्रीगुरुगोविंदसिंहजीके शरीरपर अनेक प्रकारकी आपत्तियोंका आना सिवाय किसी एक नीचप्रकृतिके किस आर्य्यसन्तान व्यक्तिके सरलस्वान्तको स्मरणसे करुणार्द्र नहीं करता है। अत्याचारी विदेशी मुसलमानोंके राज्यके छिन्न भिन्न कारक या हिन्दूधर्मपर आती हुई अनेक तरहकी आपत्तियोंके हारक या मृतप्राय आर्य्यसन्तानके पुनः प्राणसंचारक यदि कोई महापुरुष हैं तो सिक्खसमाजके निर्माता तथा शासक धर्मगुरु येही एक श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजही हुये हैं। आपहीके सदुपदेशसे चारों वर्ण परस्पर भ्रातृभावसे व्यवहार करने लगे थे। आपहीकी सम्पूरित महाशक्तिसे वर्त्तमान सिक्खसमाजकी युद्धके विषयमें सर्वतो अग्रेसर गणना है। आपहीके बल वीर्य्य साहसके प्रभावसे निराश्रित आर्य्यसन्तानका

आर्य्यावर्तमें शेषसत्व दीखपडताहै। आपहीके अप्रतिहत महापौरुषसे सिक्खसमाजने यवनराज्य उन्मूलनपूर्वक अपने स्वराज्यका स्थापन किया था। आपहीके परमेश्वरीय स्वच्छ धर्मप्रचारके आगे अनेक पाखण्ड मतमतान्तरोंका एकवारही तिरस्कार हुआ था। तथा आपहीने सिक्खसमाजको अनेकों धूर्तों स्वार्थियोंके पंजेसे छुडाकर शुद्ध खालसा बनादिया। इस भारतभूमिपर अनेकों धर्मप्रचारक धर्मगुरु हुए हैं तथा आगे भी होंगे तथापि श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी जैसे धर्मप्रचारक धर्मगुरुका होना दोबारा इस दुनियामें दुर्घट है। अनेकों धूर्तोंने मिथ्या धर्मप्रचारक बनकर धर्मके धोखेसे इस सरलहृदय आर्य्यसन्तानके बल वीर्य्य साहस शक्तिका समूल निर्मूलन किया। परन्तु श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजके परमेश्वरीय धर्मप्रचारके प्रभावसे सिक्खसमाजमें बल वीर्य्य साहस शक्तिका ऐसा संचार हुआ कि, जिससे आज सिक्खसमाज शूरवीरताकी गणनामें प्रथम गिनाजाता है। स्व उदरपोषी अनेक मनुष्य उत्पन्न हो होकर मरणदशाको प्राप्त होते हैं तथापि अपने निर्मल यशःकायसे कल्पावधि जीनेवाले यह एक श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजही हैं। जबतक सुबुद्ध आर्य्यप्रजा रहेगी तबतक इनके अवर्णनीय उपकारोंको सन्मानपूर्वक चिन्तन किया करेगी। धन्य देश धन्य काल धन्य भूमि धन्य नगर धन्य गृह तथा धन्य वह माता है जिनके सकाशसे श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराज जैसे महापुरुषोंका प्रादुर्भाव होता है।

इति सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥

अथाष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥

श्रीगुरु गोविन्दसिंहजी महाराजने जिस बन्दानामक वीरको अपना शिष्य बनाकर सिक्खजातिके उत्तेजन तथा यवन जातिके परिभवार्थ पंजाब देशमें भेजा था उसका श्रीगुरुजीके शिष्य होनेसे प्रथम वृत्तान्त

ऐसा सुननेमें आता है । कि, यह पुणशके इलाकेमें जोरेके गढनामक ग्राममें रामदेव नामक राजपूतके घरमें कार्त्तिक शुक्ल १३ संवत् १७२७ विक्रीमें उत्पन्न हुआ था। और उस कालमें इसका नाम लक्ष्मणदेव रक्खा गया था । यह अपनी छोटीसी आयुहीमें अत्यन्त चंचल तथा दृढ हृदयका था । तरह २ के घोडोंकी सवारी करनी तथा दूसरेको लूट खसोटके खाना तो मानो इसने अपना सहज धर्म मान रक्खा था । शिकार खेलनेमें या तीर बन्दूकादिकोंसे लक्ष्य भेदनेमें भी यह अपने समयका एकही था । एक दिन बन्दा वीरने विना जाने शिकारमें गर्भवती हरिणीको तीरसे मारडाला। पीछेसे पास जाकर देखनेसे वह गर्भवती प्रतीत हुई । बच्चे जीते रखनेके लिये उसी कालमें हरिणीका पेट फडवाया । दो बच्चे जीवित निकलतो आये परंतु अधिक काल-तक जीवित न रहसके । किन्तु थोडेही कालमें बन्दाके सामने ही तडफ २ कर मरगये । उनकी मरणदशाको देखकर बन्दा वीरके चित्तमें बहुतही क्लेश हुआ । और उसीदिनसे शिकार खेलना छोड दिया । धीरे धीरे एक जानकीप्रसाद नामक वैरागी साधुका उसको संग होने लगा । और वह उसीके साथ लाहौर प्रान्तके कसूर शहरमें रहनेवाले बाबा रामथमनजीके स्थानपर पहुँचा उस कालमें बाबारामथमनजीके स्थानपर एक महापुरुष उनका पोता चेला था । उनके दर्शनसे बन्दा वीरका चित्त ऐसा आकर्षित हुआ । कि उसी कालमें उनका चेला वैरागी साधुबनगया उसकालमें इनका नाम लक्ष्मणदाससे नारायणदास बदल दिया गया कुछ काल गुरुस्थानमें निवास करनेके पश्चात् एक वैरागी साधुओंकी मण्डलीके साथ मिलकर तीर्थयात्राके निमित्तसे दक्षिण प्रान्तमें नासिकमें पहुंचे तो वहां मण्डलीसे पृथक् होकर पञ्चवटीके जंगलमें निवास कर तपश्चर्य्या करने लगे । बहुत वर्षतक एक गुहामें निवास कर एकान्तमें तपश्चर्य्या करते रहे उसी स्थान पर एक लानियां सिद्ध नामक औघड योगी आनकर बीमार होगया। बन्दावीरने अपनी तपश्चर्य्याको छोडकर उस योगीको साधु जानकर बहुत सेवा करी ।

अन्तमें वह इनकी सेवासे प्रसन्न होकर संवत् १७४८ विक्रममें। मरणकालमें एक मन्त्र यन्त्रकी पुस्तक इनको देगया। और उसके अनुष्ठान आचरणकी रीति भांति भी उत्तम रीतिस बतलागया। बन्दा वीरने उस पुस्तकको लाभ करके यथा विधि कईएक मन्त्रोंको सिद्ध किया। और समय २ पर उनका परीक्षण करने लगा। जब अनेक मन्त्र परीक्षित होगये तो बन्दावीर वहाँसे चलकर धीरे २ शहर नादेडमें पहुँचा। और गोदावरी नदीके तीरपर एक उत्तम स्थान देखकर-अपना आसन जमादिया। थोडेही दिनोंमें आपके मन्त्रोंकी ऋद्धि सिद्धिकी प्रख्याति चारों ओर दूर दूरतक फैलगई। अच्छे २ सहस्रों मनुष्य आपके चेले बनगये। इसी वार्त्ताको सुनकर एक दिन श्रीगुरु गोविन्दसिंहजी महाराज भी इनके पास पहुँचे। श्रीगुरुगोविन्द-सिंहजीके प्रतापके सामने अपने मंत्र यन्त्रोंको निष्फल जान कर बन्दावीर श्रीगुरुजीका शिष्य बनगया। और अपने मुखसे अपना नाम बन्दा अर्थात् गुरुका गुलाम रख लिया। उसी कालसे यह वीर लोकमें बन्दाके नामसे प्रख्यात होने लगा। श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने इसको अपना शिष्य बनाकर पंजाबदेशमें रवाना किया। जब यह बुन्देलखण्ड होता हुआ भरतपुर प्रान्तमें पहुँचा तो साथ चलनेवाले सिक्खलोगोंने कुछ खर्चके लिये रुपया मांगा। यद्यपि उस कालमें बाबा बन्दा वीरके पास सिक्खलोगोंके देनेके लिये रुपया कुछभी न था। तथापि उसी दिन कई एक गुरु घरके सेवक लुवाणा जातिके सौदागर लोगोंने बाबा बन्दाको गुरुका भेजा प्रतिनिधि जानकर पांचसौ रुपया भेंटमें आन रक्खा। बाबा बन्दाने उस रुपयेको उठाकर उसी कालमें सिक्खोंमें बांट दिया जिसको देखकर लुवाणे सौदागर भक्त तथा सिक्खलोग दोनों प्रसन्न होगये। हिसारप्रान्तमें जाकर बाबा बन्दाने पंजाबदेशके सबी प्रान्तोंमें अपने पत्र भेजदिये। जिनके देखतेही सारे देशके प्रसिद्ध २ सिक्ख-लोग युद्धकी सामग्री लेकर बाबा बन्दाको आगेसे आनमिले। माल-

वाप्रदेशके समीप होनेके कारण वहाँके निवासी सिक्खलोग बहुतही शीघ्र आन पहुँचे। उसी कालमें ३२ सिक्ख सूबा सरहिन्दके पास भी नौकर थे। बन्दाका पंजाबपर चढकर आना सुनकर सूबासरहिन्दने एकदिन उनको तर्क किया। कहा कि लो अब तुम लोगोंका दूसरा गुरु आता सुन पाया है पहलेका तो देश छोडकर भाग जानेसे पीछे कहीं पताही नहीं मिला। परन्तु हां यह अवश्य यहांही कतल कर दिया जायगा। यह सूबाका कथन सिक्खोंको बहुतही बुरा प्रतीत हुआ। और उसी वक्त कहा कि हम लोगोंको हमारी तन्खवाह मिलजावे क्योंकि हमलोग अपने २ घरोंको जाना चाहते हैं। सूबाने क्रुद्ध होकर उन सबको कैद करनेका हुक्म दिया। परन्तु वह लोग दारोगासे मिलकर तनूख्वाहें छोडकर भाग निकले और शीघ्रही बाबा बन्दाको आन मिले इसी तरह बन्दावीरके साथ एक सिक्ख लोगोंकी भारी फौज एकत्र होगई। और सबसे प्रथम उसने कसबा सामानाकी तरफ चढाई करी। साथही यह भी प्रसिद्धि करी कि, फाल्गुन वदी पंचमीके दिन सामाना नामक कसबाकी लूट होगी। उसमें जिस वीर पुरुषने लाभ उठाना हो वह उक्त समयपर अवश्य पहुँचे। और मार्ग प्राप्त मुसल्मानोंके अनेक छोटे २ ग्रामोंको लूटते हुये जब कयथल पहुँचे तो बादशाही खजाना जाता देखकर सिक्ख लोगोंने बाबा बन्दाके हुक्मसे उसपर छापा मारकर लूटलिया। और उसके संरक्षकोंको मारकर भगादिया बाबा बन्दाने उसी वक्त खजाना सिक्खोंको बांट दिया। और फिर कसबा सामानाकी तरफ रवाना हुये सामाना निवासी लोगोंको भी बन्दाके चढकर आनेकी प्रथमही खबर मिल चुकी थी। परन्तु उनको विश्वास न हुआ कि, वास्तवमें ही बन्दा ऐसी करसकेगा। इसलिये निर्भय होकर जैसेके वैसे बैठे रहे। इतनेहीमें दशकोश दूरसे धावा करके कुछ रात्रि शेष रहतेही सिक्खलोग तलवारें खैंचकर सामानापर कूदपडे। और सबको कतल करना शुरू करदिया सोते हुयेको जागने न दिया बैठेको

उठने न दिया खडेको भागने न दिया। एक बातकी बातमें सारा कसबा वैरान करदिया। उस लूटमें सिक्खोंको बहुतही धनमिला। अच्छे २ लोग सभी कतल करडाले जो गरीब बचे वह ग्राम छोडकर भाग गये। तीन दिनतक बाबा बन्दाका मुकाम वहाँ रहा। और चौथे दिन खुशी मनाकर वहाँसे रवाना होने लगे तो उसी स्थानपर सूबा-सरहिन्दके चार जासूस पकडे गये। सिक्खलोग उसी वक्त उनको गिरफतार करके बाबा बन्दाके सामने लेगये। उसने दोको कतल करवादिया और दोको उनके नाक कान कटवाकर सूबा सरहिन्दके पास पीछे भिजवादिया। इस खबरके सुनतेही पंजाबदेशके सहस्रों डाकू लुटेरे बाबा बन्दाको आन मिले और साथ रहकर लूटमार मचा-नेके लिये तैयार होगये। उधर बन्दाबहादुरने भी सामानासे कूंच किया। और मार्गके ठसका अम्बाला आदि अनेक ग्राम मुसलमानोंके लूटते हुए कसबा कंजपुरमें पहुँचे। यह कसबा सूबा सरहिन्दके बाप दादाका असल निवासस्थान है। उधर सूबा सरहिन्दने भी खबर सुन कर अपने कसबेकी रक्षाके लिये पांचसौ सवार और चार तोपें भेजदी। परन्तु उनके पहुँचनेके प्रथमही सिक्खलोगोंने उस कसबा-को लूटकर वैरान करदिया। और वहाँसे चलकर कसबा दाहलीके पठान लोग जो कि श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीको युद्धके अवसरपर छोडकर भाग आये थे उनकी उचित खबर लई। फिर वहांसे चले तो खबर मिली कि सूबा सरहिन्दने अपने कसबाकी रक्षाके लिये जो कुछ फौज भेजी थी वह यहांसे चारकोशपर ठहर रही है सिक्खलोगोंने उसी वक्त वहाँसे धावा किया। और फौजपर टूटपडे। थोडीही देरमें रक्तही रक्त वह निकला। बहुतसे शूरवीर मारे भी गये। जो बचे सो भाग निकले। पीछे सिक्खोंने उनका सब सामान लूटलिया। तोपें तथा कई एक अच्छे २ घोडे इत्यादि अनेक तरहका लूटका माल सिक्खोंको मिला। फिर वहाँसे चलकर सिक्खलोग एक टीहानामक ग्राममें पहुँचे-वहांपर बाहर खेमा लगाकर दश पांच सिक्खलोग सीधा सामान लेनेके

लिये ग्राममें चले गये । आगे देखा तो ग्राममें एक विशाल हातेमें बहुतसे मुसलमान इकठे होकर पांचसात गौओंको काटनेका प्रबन्ध कररहे थे। सिक्खलोगोंसे रहा न गया। उसी वक्त तलवारें खैंच कर मुसलमानोंपर कूदपडे। बहुतसे मारडाले। अन्तमें मुसलमानोंके अधिक होनेसे सिक्खलोगभी वहांही मारे गये। यह समाचार बाहर सिक्खोंके खेमेंमें पहुँचा। तो बाबा बन्दाने उसी वक्त उस ग्राममें लूट मचानेका हुक्म दिया आज्ञा पातेही सहस्रों सिक्खलोग तलवारें खैंचकर ग्राममें घुसगये । जो सामने मिला सो विना पूछे घासकी तरहपर काटादिया गया। जिसने यज्ञोपवीत या चोटी निकालकर दिखलानेमें शीघ्रता करी केवल उसने अपने प्राण बचालिये। जब हिंदूलोगोंने देखा कि बाबा बन्दा हमारे धर्मकी रक्षामें तत्पर है तथा हमारे धर्मके बचानेके लिये अपने अनेक शिष्योंको जहां तहां युद्धमें मरवा रहा है तो अनेक हिन्दूलोग भी बाबा बन्दाके साथ होगये। और सिक्ख बन बन कर धर्मकी रक्षा करने लगे । इसीतरह प्रतिदिन सिक्ख लोगोंकी वृद्धि होने लगी। इन्हीं दिनोंमें कसबा साढौराके बहुतसे हिन्दूलोग बाबा बन्दाकी वीरताका हाल सुनकर उसके पास अपना दुःख निवेदन करनेको आये। कहा कि हमारे ग्रामका उसमानखां नामक पीरजादा ऐसा सख्त और जालम है कि जिसका कहना भी कठिन है। प्रथम तो वह हमलोगोंसे माल गुजारीही दुगुनी वसूल करता है। दूसरे हमलोगोंको हमारे धर्मका श्राद्धक्रिया कर्मादि कोई काम भी नहीं करने देता बाजारमें या किसी खुलासे मैदानमें अनेक हिन्दुओंको दिखलाकर गोवध करवाता है । हिन्दूलोगोंको अपने मुर्दे जलाने नहीं देता किन्तु जबरन् दबवाता है। पीर बुद्धुशाह जो कि श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीकी सहायताके लिये फौज लेकर पहाडी राजाओंके साथ लडनेको गया था। उसको इसने उसी अपराधमें कतल करवा डाला है। अपने इलाके भरकी सुन्दर २ बहू बेटीयें जबरन् अपने पास बुलवालेता है और अनेकतरहकी उनको

बे इज्जती करता है । कहांतक सुनावें उसके हाथसे इस कालमें हिन्दूलोग ऐसे कष्ट पायरहे हैं कि यमपुरीमें भी होना दुर्घट है । बाबा बन्दावीरने इस समाचारके सुनते ही वहांसे कूचकिया । और मार्गशीर्ष मिति ११ संवत् १७६४ विक्रमीको कसबा साढौरा घेरलिया । एक ऊंचे टीले पर तोपें जमाकर गोले छोडने शुरू किये । उधर वहांके नव्वाबने भी अपने आसपासके अनेक मुसलमानलोग बटोरे लिये थे इसलिये दृढता पूर्वक सिक्खोंका मुकाबला करने लगा प्रातःसे सायंकालतक युद्धभूमि खूब गर्म रही । दोनों तरफके बहुतसे शूरवीर मारे गये । अन्तमें जब सिक्खलोगोंके सरदारोंने सायंकाल होता देखा । तो बाबा बन्दासे हुक्म लेकर एकबारही धावा किया । सिक्ख लोग तलवारें खैंच २ कर टूटपडे । अनेक मुसलमानोंको खरबूजोंकी तरह काट २ कर फेंक दिया । जो सामने हुआ एकभी न बचने पाया । हिन्दू लोगोंने भी बडी काठिनतासे अपने २ चिह्न दिखलाकर प्राण बचाये । मुसलमानलोग शहर छोडकर भाग निकले । सिक्खोंने दो दिनतक शहरको खूबही लूटा । और बाबा बन्दाने अबदुलहक तथा कुतबुद्दीन जैसे नामी २ मुसलमानोंके शवोंको अग्निमें जलादिया पीछे वहांके रईस उसमानखांको जीता पकडकर बांधकर एक वृक्षसे लटका दिया । उसके माल असबाबपर आधिकार जमाकर पीछे उसीके किलेमें अपना डेरा जमादिया । और फिर थोडेही दिनोंके पीछे सिक्खोंने मुखलसगढके किलेको भी लेलिया इसको मुखलसखां नामक सरहिन्दके सूबाने संवत१७३४ में बनवाया था इसी किलेमेंसे अनेक तरहका जंगका सामान भी सिक्ख लोगोंको मिला । उसी किलेकी बनावटमें थोडासा फेरफार करके सिक्खोंने उस किलेका नाम लोहगढ रखलिया । परन्तु बाबा बन्दाजीने अपना खास मुकाम साढौराके किलेहीमें रहने दिया ।

बाबा बन्दाके उक्त कर्तव्यको सुनकर आस पासके सबी मुसलमानलोग कांप, उठे । किसीमें दमभारनेकी ताकत न रही । और सिवाय

बन्दाबहादुरका आश्रय लेनेके किसीको कोई उपाय न सूझा। क्योंकि उन दिनोंमें बादशाह औरंगजेब मरही चुका था । सबकोई अपनी २ तर्फ खैंचा खैंची कररहे थे हरएक अपना २ मतलब साध रहा था । बहादुरशाह जो कि पीछे तख्त पर बैठा था वह भी दक्षिणदेशकी हलचलकी शांति करनेके लिये तत्पर था । ऐसेही चारों तरफसे जबकोई उपाय न दीखपडा । तो उस प्रान्तके अच्छे २ सबी मुसल्मान मिलकर बाबाबन्दाकी खिदमतमें हाथ जोडकर आन हाजिर हुये । और अनेक तरहकी नजरें पेशकरके उनकी स्वाधीनता स्वीकार करली । बाबाबंदानेभी उनपर कृपादृष्टि करी । और उनको अपने पासही रखलियाँ । थोडेही दिनोंके पीछे उन्होंने अवसर पाकर सूबा सरहिन्दको एक परवाना लिखदिया । कि, जैसे होसके बाबा बन्दाको कैद किया जावे तो शान्ति होगी । अन्यथा देशभरके मुसलमानोंके सताये जानेकी सम्भावना होती है । इत्यादि परवानेको एक बांसके पोले नेजेकी पोरीमें बन्द करके उन लोगोंने एक मुसल्मान कासिदके हाथमें देकर सूबा सरहिन्दके पास भेजा था । वह कासिद वहांसे रवाना होतेही दैवात् बन्दा बहादुरके ऊँटचरानेवालोंको मार्गमें मिलगया।उन्होंको उसके शीघ्र गमनपर सन्देह हुआ । फिर उन्होंने ऊंट हाँकनेको उससे वह बांसका नेजा मांगा । परन्तु उसने देना न चाहा । ऊंटवालेंने उससे जबरन् खोंसलिया और जोरसे मार २ कर ऊंट हांकने लगे । अन्तमें बाँस फटगया । और बीचसे परवाना निकलकर नीचे गिरपडा । उन्होंने परवानेको उठाकर बाबा बन्दासाहबके पास पहुँचाया । जिसको देखकर बाबा बन्दा बहुतही दुःखित हुआ । और कहनेलगा कि गुरुजीने सत्य कहा था कि मुसलमानोंका विश्वास नहीं करना । उसीवक्त उन निमकहराम मुसल्मानोंको अपने पास बुलाकर एक भारी मकानमें बन्द करके एक २ को निकालकर सबको कतल करवा दिया । और उनकी लहाशें एक गहरे गर्त्तमें फेंकवादी । जिस मकानमें बन्द करके उन मुसलमानोंको कतल कियागया था।वह मकान

अबतक कतलगढके नामसे पुकारा जाता है इस हालको सुनकर सभी मुसल्मान दुमदबाने लगे। किसीमें सामना करनेकी हिम्मत न रही।

इत्यष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥

अथैकोनपंचाशोऽध्यायः ॥ ४९ ॥

उसके पश्चात् एक दिन कसबा छतबनोडके कई एक ब्राह्मण क्षत्रिय मिलकर बाबा बन्दाक पास फरयादी हुये कि हमारे ग्रामके मुसल्मानलोग हमको बहुत दुःख देते हैं। कोई धर्म कर्म होने नहीं देते। यदि किसी हिन्दूका बैल या गाई एक दो दिन बीमार पडजावे तो उसीवक्त छुरियाँ लेकर उस हिन्दूके घर पहुँच जाते हैं। और जीते हीको मारकर बांटके लेजाते हैं इस वार्त्ताके सुनतेही बन्दावीरने उसी वक्त उस कसबापर चढाई करदई। और बातकी बातमें लूटलिया। उसके सबी मुसल्मान कतलकर डाले। और माल सिक्खोंको बांट दिया। उन्हीं दिनोंमें माझे देशके सिक्खलोग जो गुरुजीके हुक्मनामें सुन२ कर जहां तहां एकत्र होरहे थे। उन्होंने भी बाबा बन्दाके पास आनेके लिये बादशाही मार्गको छोडकर पर्वतके ग्रामोंके मार्गसे आना चाहा। चलते २ आनन्दपुरके मुकाम पर सभी एकत्र होगये। पिशावरसिंह तथा गुलजारसिंह नामक लुवाने तथा श्यामसिंह नामक सोढि इन लोगोंके सहायक थे। इस मुकामपर इन्होंने बन्दा वीरकी वीरताका सबी वृत्तान्त सुन पाया। बहुतही खुशी हुये। और स्वयं भी आस पासके छोटे २ मुसल्मानोंके ग्राम लूटमारकर वैरान करने लगे। पीछे रोपडके पठान जो कि गुरुगोविन्दसिंहजीसे बैर रखते थे उनपर जाय आक्रमण किया। उधर सूबा सरहिन्दने सुनकर दिलावरखां तथा गुलशेरखां नामक फौजदारोंको पांच हजार सवारोंके साथ १९ तोपें देकर उन पठानोंकी सहायताके लिये शहर रोपडमें भेज-दिया। जिनके साथ सिक्ख लोगोंका खूब जंग हुआ। दोनों ओरके चार चारसौ सिपाही युद्ध क्षेत्रमें शयन करगये। और दिलावरखाँभी

इसी युद्धमें मारागया । तथा शेरमुहम्मदखाँ जख्मी होगया । इसी कारण सूबा सरहिन्दकी फौज मैदानमें ठहर न सकी । किन्तु पीछेको भाग निकली । नवसंख्या तोपें तथा कुछ जंगी सामान सिक्खोंके हाथलगा। इस समाचारको सुनकर सूबा सरहिन्दने ख्वाजा खजरखांको एक कश्मीरकी फौज साथ देकर रोपडमें भेजदिया । उसने आतेही सिक्खोंके साथ बहुत जोर शोरसे मुकाबिला किया । दोनों ओरके वीर तनसे बाहर हो होकर लडनेको तैयार हुये दोनों ओरसे तीरों गोलियोंकी वर्षा होनेलगी।तलवारें चमकने लगीं दो पहरतक लडाईका मैदान खूब गर्म रहा । अनेकों शूरवीरोंने सदाके लिये शयन किया अन्तमें ख्वाजा साहब भी अपने कतिपय सहायकोंके साथ मारे गये । और फौजके सिपाही लोग हारकर भाग निकले परन्तु दूसरेही दिन फिर सरहिन्दसे बहुतही फौज उनकी सहायताके लिये चली आयी । उसको देखकर सिक्खलोगोंने वहां ठहरना उचित न समझा किन्तु वहांसे चलकर फौरन् बाबा बन्दा साहबके साथ आन मिले।जब माझा देशके सिक्खोंकी बहादुरीका समाचार बाबा बन्दाजीने सुना तो बहुतही प्रसन्न हुये और उनको अनेक तरहके पारितोषिक बांटकर प्रसन्न किया उसके पश्चात् अपनी सेनाके सरदारलोग बुलाकर यह हुक्म सुनादिया कि, फाल्गुन मिति २८ संवत् १७६४ विक्रमीमें शहर सरहिन्दपर चढाई करी जावेगी । इसलिये हरएक सिपाहीको अपने शस्त्र वस्त्रादि सामानको तैयार करके रखना चाहिये ॥ उधर सूबा सरहिन्दने भी उक्त खबरके सुनतेही अपनी सभी फौज तैयार करी । और शहरसे तीन कोश दूरपर सिक्खोंका जा सामना किया दोनों तरफसे लडाई शुरू होगयी । तोपें तीर बन्दूकें दनादन चलने लगीं । इस युद्धके धर्म संबन्धी होनेके कारण सहस्रों मुसल्मा-न लोग विना बुलाये सूबा सरहिन्दकी सहायताके लिये चले आये उधर हिन्दुलोगोंनेभी वैसेही किया । परस्पर खूब युद्ध हुआ दोपहर मात्रहीमें रक्तकी नदी बह निकली सिक्खोंने बहुतही धैर्य्यसे सामना

किया। परन्तु बादशाही तोपोंके आगे उनकी कहांतक चलती। सभी सिक्ख लडाईसे उपराम होकर पीछे हटनेको तैयार हुए। तब उसी कालमें बाबाविनोदसिंहजीने घोडा दौडाकर बाबा बन्दा साहब जो कि उसकालमें युद्धक्षेत्रसे तीन कोश पीछे परमेश्वरके भजनमें तत्पर थे जाकर युद्ध भूमिका संपूर्ण वृत्तान्त सुनादिया। जिसको सुनतेही बाबाबन्दा साहबने युद्धमें स्वयं पहुँचनेकी तैयारी करी और उसीवक्त घोडेपर सवार होकर युद्धभूमिमें आन पहुँचे। जिनको देख- तेही सिक्खलोगोंके चित्त चौगुने होगये बाबा बन्दासाहब एक ऊंचे स्थानपर बैठकर तीरोंकी वर्षा करने लगे। उनका एक२ तीर दश २ के प्राण लेने लगा मुसलमानलोग मारे तीरोंके हैरान होगये। और सिक्खलोग बाबाबन्दाजीकी सहायतासे आगे बढने लगे। थोडेही कालके पीछे जब एक तीर बाबा बन्दाजीने गुरुगोविन्दसिंहजीका दिया हुआ चलाया तो दैवात् उसी वक्त सूबा सरहिन्दकी फौज पीछे- को भाग निकली मुसलमानी फौजमें अचानक हलचल मच गई। इतनेहीमें सिक्खोंने तलवारें खैंच २ कर मुसलमानोंपर आक्रमण करदिया। और सत्यश्री अकाल, सत्यश्री अकालकी उच्च ध्वनि लगाते हुए मुसलमानोंपर बिजलीकी तरह टूटपडे। उसी भगा भगीमें वजीदखाँ नामक सूबा सरहिन्दभी घोडे परसे गिरपडा। सिक्खलोगोंने उसीवक्त उसको पकडलिया। और बाबा बन्दासाहबके सामने आन खडा किया। जिसको बाबा साहबने कैदरखनेका हुक्म दिया। उधर सिक्खोंने भागते हुए मुसलमानोंका ऐसा पीछा किया कि तीन २ कोशतक ल्हाशोंके ढेर लगादिये। और शहरमें घुसकर चारों तरफ लूट मार मचादई। जो जो सामनेमिला उसी वक्त तलवारसे दो टुकडे किया गया। अनेकलोग शहर छोड छोडकर भाग निकले। मुसलमा- न नव्वाबोंकी अच्छी २ स्त्रियां जिनको कभी बाहरकी हवाभी नहीं लगी थी गलियोंमें जंगलोंमें मारी मारी फिरने लगीं किसीने एक दूसरेकी खबर न पूछी। किन्तु सभीको अपनी २ पडगई। इसी

तरह शहर सरहिन्दको सिक्खोंने तीन दिनतक लूटा । पीछे बाबा बँन्दाजीने लूटमारके शांतिकी आज्ञा करी और जो मुसलमानलोग लूट-के समय पकडकर मकानोंमें कैद किये थे । उनको एक २ को निकालके सबको कतल करवादिया उसके पश्चात् वजीदखां सूबासर-हिन्दको जीतेंजी अग्निमें जलवा दिया । और गुरुगोविन्दसिंहजीके छोटे २ बच्चे मरवानेमें जिन २ दीवानों या काजीलोगोंने सम्मति दी थी उन सबको बाबा बन्दासाहबजीने खोज खोजकर पकडा । और बहुतही दुर्दशासे हैरान कर कर मरवाया शहरके भीतर या बाहरकी मसजिदों मयकबरोंको गिरवाकर भूमिके साथ मिला दिया । इसीतरह सात दिनतक बाबा बन्दाजीने वहांपर मुसल्मानोंके काटने मारनेका काम चलता रक्खा जिसको देख सुनकर मुसल्मान जातिमें त्राहि त्राहि मच-गई । लोकोक्ति प्रचलित है कि कभी खरगीन काठीपर और कभी काठी खरगीनपर जब मुसल्मानोंके जोरका समय था तब उन्होंने जहांतक बनपडा हिन्दुओंके सताने दुःखानेमें कुछ त्रुटि न रक्खी । जब हिन्दु-ओंमेंसे सिक्ख जातिका दावँ लगा तो उन्होंने भी उनके साथ वैसीही करी । अपने समयपर किसीने भीअपनी तरफसे कमती न रक्खी । सर्वान्तर्य्यामी परमेश्वर प्राणीमात्रको अपने २ आचरणोंके फलका प्रदाता है । और धर्मनीतिमें भी लिखा है कि 'अत्युग्रपुण्यपापानामत्रैव फलमश्नुत । ' अर्थात् अत्यन्त सत्कर्म्म या दुराचारका फल इसी लो-कमें शीघ्रही मिलजाता है । ऐसाही मुसल्मानोंके साथ हुआ है । इन्होंने हिन्दूजातिको परासीमातक सताया था । परमेश्वरन शीघ्रही उसका बदला लेनेकेलिये हिन्दूजातिमें शक्ति प्रदान करी । बाबा बन्दावीरने दरयाय शतद्रु तथा यमुनाके बीच २ अपना तहद जमाकर जहाँ तहाँ सिक्खलोगोंको हाकिम बना दिया । शहर सरहिन्दको भाई बाजासिंहके सुपुर्द किया । और भाई फतहसिंहको जहाँ तहाँ इतने प्रान्तमें शान्ति-के लिये दौरा करते रहनेका अधिकार दिया और आप फकीरके फकीर बनेरहे । थोडेही दिनोंमें बाबा बन्दाजीका उस देशमें ऐसा दब-

दवा जमगया कि अच्छे २ जिमींदारों रईसोंने आपसे आप इनके अधिकारमें रहना स्वीकार करलिया। सारे देशभरमें इनकी चारोंतरफ प्रख्याति होगई। कोई बाबा बन्दाको सिद्धकहता कोई पीर कहता कोई अवतार कहता कोई ग्यारहवां गुरु कहता कोई कलंकी अवतार बोलता। इसी तरह अनेक मनुष्योंके हृदयमें इनके विषयमें भिन्नप्रभावका आभास हुआ। इनके विचित्र तेज प्रतापको देख २ कर सहस्रों हिन्दूलोग इनके शिष्य बन गये। अर्थात् सिक्खधर्मके अनुगामी हुये उन्हीं दिनोंमें एकदिन भाई बुलाकीसिंह नामक रागी (गायक) ने बाबाजीके पास आनकर फरयाद करी। कि बाबाजी! घोडानी नामक ग्रामके निवासी बाबा रामरायके सिक्खलोग गुरुगोविन्दसिंहजीके सिक्खोंके साथ बहुत द्वेष रखते हैं। मुसल्मानोंको उभारकर गुरुके सिक्खोंपर मिथ्यादोषारोपणकर पकडवाकर मरवादिया करते हैं। और समय २ पर मेरेकोभी बहुत क्लेश दिया करते हैं बाबाने उसी वक्त उस कसबेपर चढाई करी। और सारे कसबेको लूटमारके बाबा रामरायके शिष्यलोगोंको सूधे करदिया। अन्तमें उन लोगोंने अपराधके क्षमाकी प्रार्थना करी। सिक्खलोगोंको अपने घरके जानकर दया आई उनको छोडदिया। और आप मालेरकोटलेकी तरफ रवाना हुये सिक्खलोगोंके आगमनका समाचार पातेही वहाँका रईस गुलशेर मुहम्मदखा तो इनके डरसे ग्राम छोडकर भाग गया। और शेष नगरवाले लोग कुछ रुपया तथा अच्छे २ घोडे भेंटके लिये लेकर बाबा बन्दाको आगेसे आन मिले। वहांसे भेंट लेकर बाबाजी मार्गके कई एक ग्रामोंमें लूट मार करते कसबा गजराँवमें पहुँचे वह कसबा रायकल्लाका था वह प्रथमही पांचसहस्र रुपया तथा पांच घोडे लेकर बाबा बन्दाजीको आगेसे आन मिला। और अपने ऊपर श्रीगुरुजीकी बख्शिशका वृत्तान्तभी सुनाया। जिसको सुनकर बाबाबन्दाजीने उसके इलाकेको लूटने मारनेसे छोड दिया।

इसीतरह अनेक ग्रामोंमें लूट मार करते हुये सिक्खलोग पीछे लुधि-

थानामें चलेआये । ऐसेही लुधियानासे लेकर दरयाय यमुनातक बावन लाखके मुल्कपर बाबा बन्दाने सिक्खलोगोंका अधिकार जमादिया । और प्रबन्ध उसका इस रीतिका किया कि बाबा विनोदसिंह तथा रामसिंह इत्यादि सरदार लोगोंको चार सहस्र फौज देकर करनाल पानीपत प्रान्तमें रहनेका हुक्म दिया । और बाजसिंह तो प्रथमही सरहिन्दमें नियत होचुका था इसलिये भाई फतहसिंह गुरुबख्शसिंह रामसिंह तिलोकसिंह और चौधरी फूलसिंहके पुत्र प्रेमसिंह तथा धर्मसिंह और भाई रूपाके वंशके लोगोंके हाथमें मालवादेशका प्रबन्ध करना सुपुर्द करके आप बाबा साहबजी शिमलाके पहाडमें तपश्चर्या करनेको चले गये ।

पीछे बाबा बन्दाके देशमें हल चल मचानेका समाचार दिल्लीके दरबारमें पहुंचा । तो वहाँसे हाजीइस्माईलखां हाजी मुहम्मदबेगशाहइनायतुलखां तथा मीरमुहम्मदखां इत्यादि फौजके सरदारोंको पांच हजार सवार साथ देकर सिक्खलोगोंके बल तोडनेके लिये रवाना करदिया जब शाही लश्कर दिल्लीसे चलकर कर्नालतक पहुँचा । तो आगेसे बाबा विनोदासिंहजीने उनका सामना किया दो दिनतक दोनों तरफसे खूब लडाई हुई अन्तमें वहांसे बाबा विनोदसिंहजी शाही फौजसे पराजित होकर सरहिन्दके सिक्खोंके साथ आन मिले । मुसलमानोंने सरहिन्दतकभी पीछा किया और उधरसे लाहौरकी शाही फौजभी चढकर चली आई । और आश्विन मास संवत् १७६५ विक्रमीमें भगवन्तराय कानूगोके किलेके समीप युद्धका मैदान नियत हुआ । वहाँपर भी खूब युद्ध हुआ । अनेक शूरवीरोंके प्राण हवा होगये अन्तमें वहांसेभी सिक्खलोग पराजित होकर लोहगढके किलेकी तरफ भाग निकले । मुसलमानोंने दूरतक पीछा किया । जिससे सिक्खलोग बहुत दुःखित होगये । शेषमें कसबा खररके समीप जाकर सिक्खलोग फिर बादशाही फौजके सामने होगये । और ऐसे दृढहोकर युद्ध किया कि, बादशाही फौज पीछेको भाग निकली । इतनेहीमें

बाबा बन्दासाहबकोभी सिक्खोंका सब समाचार पहुँचगया। उन्होंने उसीवक्त तपश्चर्याको छोडकर धर्मयुद्धके लिये सिक्खलोगोंकी सहायता आनकरी। इनके आनेहींसे सिक्खलोगोंकी दशगुणी शक्ति वृद्ध होगई। और मुसलमानोंके चित्तोंपर आपसे आप भीतिका अंकुर जागपडा।

मुहम्मदखां मुहम्मद जानखां नामक कसूरनिवासी पठानलोगोंने बहुतसी फौज जुटाकर सिक्खलोगोंका तीसरी बार फिर सामना किया। परन्तु बाबा बन्दासाहबके विद्यमान होनेसे उनसे कुछ बन न पडी। प्रत्युत अपनी जान बचानेके लिये युद्धभूमि छोडकर भाग निकले। पीछे बाबा बन्दासाहबने फिर सब सिक्खोंको एकत्र करके अपने साथ लिया। और मुसलमानोंपर दोबार जहां तहां आक्रमण करके सरहिन्द आदि प्रसिद्ध स्थानोंमें फिर सिक्खोंका अधिकार जमा दिया। तथा बादशाही फौजके ऐसे दाँत खट्टे किये कि, उसको पीछे देखनातक कठिन पडगया। उसके पश्चात् बाबा बन्दासाहबने अपनी फौजको चार हिस्सोंमें बाँट दिया। एक भाग फौजका कर्नाल पानीपतप्रान्तकी रक्षाके लिये नियत किया। दूसरा भाग सरहिन्दमें रक्खा। तीसरेको किले लोहगढमें भेजदिया। और चौथाभाग फौजको अपने साथ लेकर देशका दौरा करना प्रारम्भ करदिया। जिस ग्रामसे श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके छोटे २ बच्चे पकड लिये गये थे उस ग्रामको जा उजाडा। और गंगाराम ब्राह्मण जिसने उन बच्चोंको पकडवाया था। उसको उसके कुटुम्बसमेत तलवारकी धारसे निकलवा दिया। पीछे जिस दारोगाने उनका सरहिन्दमें चलान किया था। उसको भी पकडकर मरवादिया। और उसके ग्रामको लूटकर वैरान करडाला। उसके पश्चात् बाबा बन्दासाहब मुसलमानोंके अनेक ग्रामोंको लूटमारसे वैरान करते हुये। तथा उनपर अनेक प्रकारके अत्याचारके वर्त्ताव करते हुए संवत् १७६६ विक्रमीमें शहर सहारनपुरकी तरफ लौटे। उधर जब सहारनपुरके सूबा अली मुहम्मदखांको यह वृत्तान्त ज्ञात

हुआ । तो उसने आस पासके बडे २ सभी मुसलमानोंको बुलाकर बाबा बन्दाकी वीरताका तथा अत्याचारोंका हाल सुनाया । और अन्तमें सबोंसे कहा कि इसका कुछ उपाय अवश्य करना चाहिये । सभी मुसलमानोंने लडना स्वीकार किया । अनेकोंने अपने हाथोंमें महँदी लगाली और कंगना बाँध लिया । धर्मयुद्ध जानकर काजी बन २ कर युद्धक्षेत्रमें आनेलगे । सहस्रों मुसलमान लोग लडकर जान देनेको तैयार होगये । सबने वहाँके सूबाको सरदार बनाकर युद्धमें आगे करना चाहा । परन्तु वह कातर इस वार्त्ताको सुनताही कि, मेरेको युद्धमें आगे होना पडेगा अपने कुटुम्बको साथ लेकर दिल्लीकी तरफ रात्रिको चोरीसे भाग निकला । एक मुसलमान मौलवी इतिहासवेत्ताने बाबाबन्दासाहबके विषयमें यों लिखा है कि, संवत् १७६४ विक्रमीमें गुरुगोविन्दसिंहजीके चेले बाबा बन्दागुरुने जिसको मुसलमानोंका काल कहना चाहिये दक्षिण देशसे आकर सिक्खलोगोंको साथ मिलाकर दरियायशतद्रु तथा यमुनाके मध्यके देशोंमें ऐसा अत्याचार मचाया कि, जिसका कथन करनाभी कठिन है । चारोंतरफ गदर मचादिया । उस समयके स्मरण करनेसेभी आंसु (अश्रु) भर आते हैं । सबसे प्रथम शहर सामातो जिसमें बावनाखानदान बडे २ रईसोंके थे एक एक करके गारत करदिया पीछे सरहिन्द आदि अच्छे २ स्थानोंको वैरान किया । यद्यपि वजीदखां नामक सूबा सरहिन्दने अपने फौजदारों तथा सवारोंको साथ लेकर शहरसे तीनकोश बाहर होकर सिक्ख लोगोंका मुकाबिला किया । तीन दिनतक रणक्षेत्र गर्मभी रहा । दोनों ओरसे तोपों बन्दूकोंसे गोली गोलोंकी वर्षा होने लगी । रक्तकी नदी वह निकली । मृतशरीरोंके ढेर लगगये । तथापि शेषमें परिणाम इस जंगका यह हुआ कि, मुसलमानलोग भाग निकले । असंख्यात कतलभी होगये । सूबह वजीदखांको सिक्खोंने पकड लिया एक थोडेही कालमें सिक्खोंने ऐसी हलचल मचाई कि, जिससे मुसलमानोंके छक्के छूट गये । तीन दिनतक शहरमें लूट मार कतलका

बाजार खूब गरम रहा । आराम उसीको मिला जिसने अपना यज्ञोपवीत या शिखाको दिखलाया । बाकी जो सामने आता वह कतल किया जाता । वजीदखां सूबा तथा उनके अच्छे २ फौजदारोंको कतल करके उनकी लहाशें कुत्तोंको खिला दी गई । जो बाकी बचीं सो आगमें जलादी गई । अन्तमें बाबा बंदाबहादुरने बावन लाखके मुल्क सरहिन्दपर पूर्ण रूपसे अधिकार जमाकर किला मुखसलसगढमें अपना निवासस्थान बनाया । दो तीन वार बादशाही फौजभी दिल्लीसे सिक्ख लोगोंके वशवर्ती करनेके लिये भेजी गई । परन्तु सिक्खलोगोंके सामने ठहरनेका किसीका साहस भी न पडा । सिक्खलोगोंने सारे देशमें हलचल मचा दई । वही रईस या नव्वाब बचने पाया जिसने सिक्खोंके अधीन होकर रहना स्वीकार किया । शेष सभी मारेगये या भागगये ॥

इत्येकोन पंचाशोऽध्यायः ॥ ४९ ॥

अथ पञ्चाशोऽध्यायः ॥ ५० ॥

संवत् १७७० विक्रमीमें बाबा बन्दावीर चालीस पचास सहस्र वीरोंको साथ लेकर शहर सहारनपुर पर चढ आया । वहांके अवीनाबेग नामक नाजमने और मुसलमानोंको अपने साथ मिलाकर भिन्न २ तीस हजार फौज एकत्र करी । और शहरसे बाहर होकर सिक्खोंक सामना किया । सभी मुसलमानलोग बडीही वीरतासे लडे । परन्तु गालबखां आदि जो कि फौजक जनरल थे सभी मारेगये इसलिये हारखाकर सबको पीछे भागना पडा । सिक्खोंने शहरमें प्रवेश करके लूटमार कतल करना आरम्भ किया । सभीलोग भयभीत होकर अपने २ घर छोडकर भाग निकले । सिक्खोंके सामने किसीने शिरतक न उठाया । लुटेरे लोगोंने किसीके घरमें सुईतक न रहने दई । मसाजिद व कबरें हजारों तोड डाले गये जो सामने आया सिवाय हिन्दूके किसीकी जान न बची । अच्छे २ अमीरोंकी बहू

बेटिएँ जिन्होंने कभी घरसे बाहर पाँवतक नहीं निकाला था । जंगलों-में मारी २ फिरने लगीं । तात्पर्य्य सिक्खलोगोंने लूटमार मचानेमें या मुसलमानोंके सतानेमें कोई प्रयत्न बाकी नहीं रक्खा था ॥

जब लूटमार मचाकर सिक्खलोगोंका लश्कर लोहगढके किलेकी तरफ चलागया तो पीछे लोग अपने २ घरोंमें आरामसे बसने लगे परन्तु बन्दा बहादुरके विचित्र प्रभावने लोगोंके चित्तमें यही विश्वास कराया कि, यह कोई साधारण मनुष्य नहीं है किन्तु भगवानका अवतार है। या इमाम मेहदी है । अब यह हिन्दोस्थानमें मुसलमानोंका बीज नहीं रहने देगा उस अवसर पर मुसलमान लोग ऐसे शक्तिहीन होगये थे कि थोडेसे सिक्खोंके सामने हजारों बकरी भेडियोंकी तरह भाग भाग निकलते थे । सिक्खलोगोंके हलचल मचानेकी खबर सुनकर बादशाह दिल्लीने समन्दखांको जिसका घर प्रथम सहारनपुरमें सिक्खों द्वारा नष्ट होचुका था नूरखां फौजके सरदारके साथ बीस हजार फौज देकर सिक्खलोगोंका बल तोडनेके लिये भेजदिया। धर्मयुद्ध जानकर मार्गमेंसे औरभी मुसलमानलोग बादशाही फौजके सहायक बनगये नव्वाब अबीनवेगभी अपनी फौज लेकर उन्हीके साथ जामिला । उधर सिक्खलोग उस समय लूटमारका बहु पा माल लेकर अपने २ घरोंमें गये हुये थे । इस समाचारके सुनतेही बादशाही फौजने बीस हजार सिक्खोंके समेत बाबा बन्दा-बहादुरको घेरलिया । सिक्खलोगोंने बहुतही शूर वीरतासे बादशाही फौजका सामना किया । दोपहरतक तीरों तोपों बन्दूकोंकी खूब भरमार रही । सहस्रों वीर प्राणरहित होकर रणभूमिमें एक दूसरेपर पडगये । रक्तका प्रवाह बह निकला । घोडोंके शफभी ऊपर नीचेसे लोहूसे लिप्त होगये । यद्यपि इस जंगमेंभी सिक्खलोग बहुतही साहससे लडे । तथापि मुसलमानोंका देशका देश उनपर उलट पडा था । इस-लिये जिधरको जिसने मार्ग पाया सिक्खलोग भाग निकले । बहुतसे भागते हुए मारेभी गये बन्दावीरभी जखमी होकर एकओर भाग

निकला। दीनबेगके पुत्र नवाजखाने बाबा बन्दा बहादुरका पीछाभी किया। दश बारा कोसतक पीछे जाते सूर्य्य अस्त होगया। बन्दा-बहादुरका घोडा ऐसा थकगया कि चल न सका अन्तमें घोडा छोड कर जंगलमें घुसगया। उसी समय वर्षाभी ऐसी होने लगी कि किसी तरफका मार्ग या ग्राम बसती खोजनी कठिन होगई। बन्दा-बहादुर हैरान परेशान होकर कहीं जानेकी चिन्ता करने लगा। मार्गके क्लेश तथा भूखने बाबा बन्दाके दममें दममात्र शेष रहने दिया था। ऐसी क्लेशदशामें मार्ग खोजताही फिरता था कि थोडीसी दूरपर उसको अग्नि चमकती दीख पडी। उसतरफ जाकर देखा तो एक बगीचामें बागवान और उसकी स्त्री अपने खेतोंकी रक्षाके लिये अग्नि जलाकर ताप रहे हैं। प्रथम तो यह बाबा बन्दावीरको देखकर भयभीत हुए। तथा अपनी कुटीका किवाँड बन्द करलिया। परन्तु पीछे बन्दावीरकी प्रार्थना सुनकर उन्होंने उसपर दया करके किवाँड खोलदिया। और उसको अग्नि तपाई उन्होंने बाबा बन्दाको सिक्खलोगोंकी मुसीबतसे भागा हुआ जानकर बहुतही खातरी करी। इतनेहीमें बहुतसे घोडोंके शफोंकी शब्द सुनाई देने लगा। बन्दाबहादुरने समझा कि मेरी खोजमें चले आते हैं। इसलिये उनसे कहनेलगा कि मेरेको कहीं छिपजानेकी जगह बतलाओ। उन्होंने उसको कूपमें उतर जानेको कहा। बन्दा बहादुर कूपमें छिपकर बैठाही था कि खोजनेवालोंने बागवानसे पूंछा बागवानने प्रथम तो बताना न चाहा परन्तु फिर जब उन-लोगोंने भीति देकर पूँछा तो उसने कहदिया कि एक मनुष्य भागा हुआ कूपमें उतरा बैठा है। हम नहीं जानते कौन है। उस गाढ अन्धकारमें देखनेके लिये वह लोग प्रकाशका प्रबन्ध करनेलगे। तबतक बन्दावीर सब बातें सुनही रहा था। धीरेसे वहांसे निकलकर आगे भाग निकला उन्होंने प्रकाशसे देखा तो कुछभी न पाया। अन्तमें हैरान होकर पीछेको लौट पडे। उधर बन्दा बहादुरभी खेतोंमें चलता फिरता अन्धेरी रात्रिमें क्लेशके सागरमें बहने लगा

साराशरीर तलवारोंके घावोंसे पूरित होरहा है । थकावटसे होश उडरहे हैं । मारे भूखके प्राण शोष होते जाते हैं एक कदमभर चलनेकी शक्ति नहीं है । उधर वर्षाके मारे प्राणीमात्रके नाकमें दम आरहे हैं । ऐसे अवसरपर विद्युत्के चमत्कार होतेही दैवात् बाबा बन्दाको एक समीपही झोपडी दीखपडी । उसमें जाकर बन्दावीरने वर्षावायुसे बचकर कुछ आराम पाया । जैसे कैसे वहां रात्रिभर पडा रहा प्रातःकल होतेही उस खेतका मालिक चला आया । वह मुसलमान था । बाबाबन्दाको हिन्दूजानकर उसी वक्त बुरा भला कहने लगा । बन्दावीर अपने सिरहाने तलवार छिपाकर पडा था । उसीकालमें तलवार निकाल कर उस खेतवालेको दो टुकडे करदिया । और आप प्रातःही धीरे २ आगेको चलपडा उसी दिन किले लोहगढमें पहुँच गया। सिक्खलोगोंने बाबा बन्दा ब्रारको देख कर बहुतही खुशी मनाई । फिर कुछ दिन पीछे बाबा बन्दावीरने सिक्खोंका लश्कर तैयार करके शहर दिल्ली और लाहौरको तीन वर्ष तक खूब वैरान करा । और मुसलमानोंपर अत्यन्त अत्याचार करके सहस्रों सरदार लोगोंको कतल करवाडाला । सिक्खलोग ग्राम ग्राममें मुसलमानोंकी बरबादी करनेके लिये दौरा करने लगे । हजारों मसाजिदें मकबरें गिराकर भूमिमें मिला दिये । अच्छे २ मुसलमान लोग सिक्खोंसे दुखितः होकर दक्षिणमें जाकर बादशाहके पास फरयादी हुये । उस वक्त बादशाहने संवत् १७७४ विक्रमीमें कई सहस्र फौज समन्दखां सरदारके साथ भेजकर हुक्म दिया कि सिक्खलोगोंपर हमला करके उनको स्वाधीन करना और बन्दा बहादुरको दोनों पुत्रोंके सहित बाँधकर शाही दरबारमें हाजिर करना उस फौजके आतेही जगह जगहपर मुसलमान लोग चमक उठे । और अबीनाबेग आदि और सरदार लोग भी अपनी २ फौज लेकर शाही लश्करकी सहायताके लिये कटिबद्ध होगये । उस कालमें सिक्खलोगोंका लश्कर मीराकोटके समीप लूटमार करता फिर रहा था । वहांही शाही फौजके साथ सिक्खलोगोंका मुकाबला हुआ भारी युद्ध हुआ

अन्तमें सिक्खलोगोंने हार खाई । और भागकर सरस्वती नदीसे पार होगये । इस युद्धमें सिक्खोंकी बहुतही हानि हुई ।

जब पीछे भागते हुये सिक्खलोग सढोरहके समीप पहुँचे तो लोह- गढके किलेमेंसे निकलकर बन्दावीरने सिक्खोंके सहायक होकर फिर बादशाही फौजका मुकाबिला किया । परन्तु उस कालमें मुसलमान तो सहस्रों अपने २ घरोंसे उठकर बादशाही फौजकी सहायतामें पहुँच गये थे । और सिक्खोंका सहायक एक हिन्दू भी न हुआ था । किन्तु बादशाहकी भीतिसे अपने २ घरोंमें घुसे बैठे रहे थे । सीधा सामान आदिसे भी सिक्खोंको मदद न मिली । लोहगढके किलेमें सिक्खलोग घिरगये किलेमें सीधा सामानके कम होनेसे भी सिक्खोंने बादशाही फौजका मुकाबिला कई दिनतक किया । अन्तमें एक दिन बन्दा- वीरने अपने दोनों पुत्रों तथा सभी सिक्खोंके सामने खडे होकर कहा कि, हे वीरो ! आज आप लोगोंके धर्मयुद्धमें प्राण अर्पण करनेका समय आया है इसलिये उचित है कि, हमलोग इस कालमें सामने होकर युद्ध करें या तो इसी भूमिपर अपना धर्म पूर्वक अखण्ड निष्क- ण्टक राज्य जमावें । अथवा अपने सनातन धर्मकी रक्षाके लिये रण- भूमिमें सामने प्राणदेकर स्वर्गके सुखका अनुभव करें दोनोंमें एकका अवश्य सम्पादन करना शूरवीर क्षत्रियका सहजधर्म है आपलोग क्षत्रिय हैं । इसलिये साधारण प्राणियोंकी मृत्युसे मरना आपलो- गोंका धर्म नहीं है उसमेंभी यह धर्मयुद्ध है इसमें तो शूरवीर होकर पीठ दिखलानेवालेको महान् पापका भागी होना पडता है उचित तो यह है कि आपलोग इस दुर्लभ समयसे न चूकें । इसमें आपको दो लाभ होंगे । एक तो अपने गुरुजीके पुत्रोंका बदला लिया जायगा । दूसरे धर्मका संरक्षणभी होगा ! और यदि कोई रणक्षेत्रमें माराभी जायगा तोभी क्षति नहीं । क्योंकि धर्मयुद्धके कारण वह स्वर्गका भागी होगा । प्यारे वीरो ! आज आप लोगोंके लिये उस स्थानका किवाँड खुला है जहांपर हरएक नहीं जासकताहै । इस समयसे यदि चूकोगे

तो फिर ऐसा वक्त हाथ नहीं आवेगा । और मरनेसे डरनेवालेको मुक्तिके सुखका अनुभव होनाभी दुर्घट है । सदा तो कोई इस संसारमें जीता रहता ही नहीं । परन्तु यदि आपलोग धर्मपर शिर देनेसे मरोगे तो अपने यशरूप शरीरसे सदा जीते रहोगे । इस उपस्थित लाभकारक समयसे चूकनेवाले वीरोंको पीछे सिवाय पश्चात्तापके कुछ न मिलेगा । देखनेमें आता है कि, वीरकी वीरताको देखकर अनेक जीव ठहरने नहीं पाते । एकही सिंह सहस्रों हस्ती झुण्डोंको भगाकर सारे जंगलका स्वराज्य करता है तथा एकही व्याघ्र सहस्रों मृगोंके विनाशके लिये समर्थ होता है अथवा एकही श्येन (बाज) पक्षी अनेक पशु पक्षियोंका विघातक होता है इत्यादि स्थलोंमें सिवाय अप्रतिहत पौरुष या साहसके कोई दूसरा कारण नहीं है । ऐसेही आपलोगोंकोभी श्रीगुरुगोविन्दासिंहजी महाराजने सिंह बनाया है उचित है कि इस कालमें आपलोग सिंहके पौरुष तथा साहसको धारणकर एक २ बीस २ यवनके लिये पर्य्याप्त होवो । इत्यादि बाबा बन्दावीरके सदुपदेशोंको सुनकर सभी सिक्खलोग कटिबद्ध होकर मरने मारनेपर तैयार होगये । बन्दावीरने अपनी फौजको तीनभागोंमें बाँटकर द्वीपासिंह बाजासिंह तथा जोहदसिंह इन सिंहोंको उनके फौजदार सरदार नियत किया । और तलवारें खैंचकर सत्यश्री अकालकी ध्वनि पुकारते हुए किलेसे निकल पडे । उसीवक्त बादशाही फौजनेभी हमला करदिया । आगे सिक्खलोग तो परस्पर फंसकर युद्ध होनेके मानो प्यासेही थे चाहतेही थे कि, मुसलमान लोग सामने आवें दोनों ओरसे खूब खटाखट तलवारें पडने लगीं। शूरवीर आगे होहोकर परस्पर मरने मारने लगे । प्राण बचानेवालोंको ऐसा अवसर बहुतही भयानक दीखपडा । मरनेसे न डरनेवालोंकी तलवारोंको देख २ कर कितनोंके प्राण शोष होने लगे । शाहीलश्कर तो प्रथमहींसे जान बचा २ कर लडरहा था । और सिक्खलोग कूद कूद पडते थे । अंतमें सिक्खलोग मरते मारते एकतरफ निकल गये ।

बादशाही फौज उनको रोक न सकी। मार्गके अनेक ग्रामोंको बरबाद करते हुए पंजौरके पर्वतमें जा पँहुचे। इस जंगमें यद्यपि बादशाही फौजको पराजित होनेसेभी अधिक हानि हुई। तथापि सिक्खोंसे लोहगढका किला छुडवादेनेके कारण मुसलमान लोग विजयका डंका बजाते हुये सहारनपुरकी तरफ चलेगये। इस लडाईमें बन्दा बहादुरका अजीतसिंह नामक बडा पुत्र मारा गया। और जोरावरसिंह नामक छोटे पुत्रको समन्दखाँने कैद करलिया अजीतसिंह तथा और कई एक प्रसिद्ध २ शहीदसिंहोंके शिर एकत्र करके मुसल्मानोंने बादशाहके पास दिल्लीमें भेजदिये। और यह भी लिख भेजा कि बहुतसे सिक्खलोग मारे गये जो बचे वह पहाडोंमें भाग गये हैं। स्यात् उन्हींमें कहीं बन्दा बहादुर भी मारा गया होगा। और यदि कहीं जीता होगा तो तौभी शाहीलश्कर उसकी अन्वेषणामें तत्पर है। और बन्दा बहादुरका दूसरा पुत्र मेरे पास है। वहभी आपके दरबारमें हाजिर किया जावेगा। इत्यादि पत्रको बांचकर बादशाह बहुतही प्रसन्न हुआ और समन्दखांको एक उच्च उपाधिसे भूषित किया।

इति पंचाशोऽध्यायः ॥ ५० ॥

अथैकपञ्चाशोऽध्यायः ॥ ५१ ॥

इस धर्मसम्बन्धी लडाईके निमित्त कोई एक लक्ष मुसल्मान सहारनपुरमें फिर आन एकत्र हुये। इतनेहीमें बन्दाबहादुरभी मार्गपतित अनेक ग्रामोंको वैरान करता हुआ सहारनपुरमें चला आया। उसी वक्त दोनों ओरसे लडाई शुरू होगई। दोनों तरफके अनेक शूरवीर युद्धभूमिमें शयन करगये। तीन दिन तक बडी धूमधामसे लडाई होती रही। अन्तमें मुसल्मान भाग निकले। पीछे सिक्खलोगोंने शहर सहारनपुरको खूब लूटा बन्दावीरने अनेक मुसलमानलोगोंको पकड २ कर भेडी बकरीकी तरह कटवा दिया जैसे प्रथम मुसल्मानोंने हिन्दुओंका हाल किया था ऐन उसीतरह सिक्खोंने

मुसल्मानोंकाभी वही हाल किया उसके पीछे बन्दावीरने नव्वाब जलालखांको जलालाबादमें और शाह नवाजखांको नजीबाबादमें लिखभेजा कि आप लोगोंको सचेत रहना चाहिये दोमासक पीछे आपलोगोंपर चढाई करी जावेगी उन्हीं दिनोंमें सिक्खोंने गंगातीरके अनेक ग्राम लूट मारके वैरान करडाले मुसल्मानोंको खोज खोज कर मारा जहांतक बाबा बन्दावीरकी दृष्टिमें मुसल्मान पडजाता एकभी जीता न छोडा जाता प्रतिदिन यह नियम कर रक्खा था कि, बिना सौ पचास मुसल्मानोंके कतल किये पानी भी पीना उचित नहीं है॥

बाबा बन्दाबहादुरने अपनी उक्त प्रतिज्ञाके अनुसार दो मास पीछे प्रथम नजीबाबादको विजय किया। पीछे जलालाबादके नव्वाब पर चढाई करी वह आगेसे दो मासतक लडता रहा। रुहेल जातिके पठान लोग जानें तोड २ कर लडते रहे। दोनों तरफके अनेक सिपाही युद्धमें मारे गये। अन्तमें सिक्खलोग पराजित होकर पीछे हट आये। परन्तु देवबन्दके मुकामसे बन्दाबहादुरने सिक्खोंको फिर पीछे लडनेको भेजा। और देशमाझा मालवाके सिक्खलोगभी सभी मिलकर एकबारही जलालाबादपर टूटपडे। और चारों तरफसे सीढियाँ लगाकर ऊपर चढगये। अन्दरसे रुहेले पठानोंने बहुतोंको सीढी परसे गिराभी दिया। परन्तु एक गिरता तो दूसरा उसी सीढीसे चढजाता। इसी तरह थोडेही कालमें सिक्खलोग किलेके भीतर दाखिल होगये। और किलेके भीतर सिक्खोंने ऐसी तलवार चलाई कि पठानोंको दम लेना कठिन पडगया। बहुतसे पठान लोग कतल-कर डालेगये केवल वहांका नव्वाब बडी काठिनतासे अपनी जान बचाकर चार कोस समीपके किलेमें भागगया। हाथी, घोडे, माल खजाना जो कुछ उसकी सम्पत्ति थी सभी सिक्खोंके हाथ लगी। पीछे सिक्खलोग जलालाबादके किलेको स्वाधीन करके और वहांकी अच्छी २ कई एक तोपें लेकर लोहगढके किलेमें वापस चले आये वहांपर सभी सिक्खलोग लूटके मालका हिस्सा बांटके जहां तहां

अपने २ घरोंमें चलेगये । और बन्दावीरने अपना स्थान लोहगढके किलेमें रखकर नाहन प्रान्तका उचित रीतिसे शासन करना प्रारम्भ किया ।

इधर जब दक्षिण देशमें बादशाह बहादुरशाहको सिक्खलोगोंके पंजाबमें गदर मचानेकी खबर पहुंची तो उसने उसी वक्त अजग-रखां नामक फौजके सरदारके नाम १३ हजार फौज लेकर सिक्खोंपर चढाई करनेका हुक्म लिखदिया । उसने सरहिन्द पहुँचकर सिक्खोंके साथ ऐसी लडाई करी कि सिक्खलोग मैदान छोडकर पर्वतोंमें भाग-गये उसके पीछे अजगरखांने सरहिन्दका यावत् प्रबन्ध अपने चचा बजीदखांके अधिकारमें किया और आप पीछे लौट आया वजीद-खांने सरहिन्दकी हुकूमत अपने हाथमें लेतेही हिन्दुओंपर फिर वही अत्याचार करने प्रारम्भ करदिये । तालावों और कूपोंमें गायका मांस डलवा २ कर हिन्दू विचारोंको पानी पीनेसेभी लाचार करदिया जिन लोगोंने बन्दा वीरकी सहायता करी थी उनको पकडकर बलात् मुस-लमान बना लिया । उधर बन्दावीरनेभी इन समाचारोंको सुना । उसी वक्त पहाडोंसे सिक्खोंको साथ लेकर उतरा और रोपडके समीप संवत् १७६६ विक्रमीमें मुसलमानोंके साथ फिर मुकाबिला किया । इस युद्धमें बन्दावीरने मुसलमानोंकी बहुतही दुर्दशा करी बजी-दखां सरहिन्दको छोडकर दिल्लीको भागगया । पीछे बन्दा बहादुरने प्रत्येक स्थलमें फिर सिक्खलोगोंका अधिकार जमादिया । और दरियाय शतद्रु तथा यमुनाके मध्यप्रान्तमें जैसे प्रथम सिक्खोंकी हुकू-मत थी वैसेही फिर स्थिर होगई ।

इन्हीं दिनोंमें बहादुरशाह दक्षिणसे चलकर अजमेरमें पहुँचा । तो आगेसे बन्दाबहादुरके सताये हुये पंजाबदेशके अनेक मुसलमानलोग बादशाहके पास अपने संरक्षणके प्रार्थी हुये बादशाहने उन सबको धैर्य्य दिया और वहाँसे बहुतसे राजपूतोंको तथा दिल्लीमें आनकर मुहम्मद अमीनखाँके साथ बहुतसा लश्कर देकर सिक्खोंका बल

तोडनेके लिये पंजाबमें भेजदिया । और साथही यह हुक्मभी दिया कि मुसलमानोंको निकालकर सिक्खलोगोंने जहां जहाँ अपना अधि॰ कार जमालिया है उन सबी स्थलोंपर फिर मुसलमानोंका अधिकार जमाकर पीछे लौटना । बादशाही आज्ञा पातेही फौज दिल्लीसे चलकर पंजाब देशमें पहुँची । सबसे प्रथम शाहाबादके समीप सिक्खोंके साथ सामना हुआ उस कालमें सवार प्यादा मिलाकर कोई चालीस हजारके लगभग सिक्खलोग एकत्र होरहे थे । शाही फौजको देखतेही सिक्ख-लोग 'सत्य श्रीअकाल, इस ध्वनिको पुकारते हुए मुसलमानोंपर तल-वारें खैंच २ कर टूटपडे । अत्यन्त जोरशोरसे लडाई हुई । मुसलमा-नोंकी सेनाके बहुतसे प्रसिद्ध २ मनुष्य मारेगये । बन्दावीर अपने साधुवेशसे सिक्खलोगोंको उत्साहित करता फिरता था और सिक्खों-की तलवारेंभी विद्युतकी तरह काम कररही थीं । बहुत देरतक लडाई हुई । अनेक शूरवीर रणक्षेत्रमें सदाके लिये सोगये । रक्तप्रवाहका वेगभी कातरोंके प्राण शोषण करनेलगा । और वीरोंको मंगलरूप दीखने लगा । अन्तमें शाहीफौजके पांउ हिलगये । पीछेको भाग निकली । पीछे दूसरे दिन राजपूतलोगभी शाही फौजके सहकारी हुए और लाहौरसेभी शाहीफौज चलीआई । सबने मिलकर सिक्खोंपर ऐसा आक्रमण किया कि सिक्खलोग बहुत देरतक शाही फौजका सामना न करसके । परन्तु इतनेहीमें वर्षा होनेलगी और एकतार दश दिन तक होतीरही । सर्दीके दिन दूजे वर्षाके जोरसे जंगलमें पडी शाही-फौज आपसे आप मरने लगी । सीधा सामानभी वैरान होगया। वर्षा-के क्लेशसे सभी इधर उधर भाग निकले लोगोंके घेरोंमें घुस २ कर आश्रय लिया। बहुतसे घोडे सर्दीसे मरगये । सारी रणभूमि दुर्गन्धिसे पूरित होगई । ऐसे समयमें बादशाही फौजपर हमला करनेसे सिक्ख लोगोंकी भी बहुत हानि हुई परन्तु बादशाही फौजके भागनिकलने॰ से सिक्खलोगोंने विजयलाभ अवश्य किया । उधर जब बादशाहने इस समाचारको सुना तो उसने फिर वजीरखां शहाबुद्दीननामक फौज-

दारोंके साथ बहुतसा लश्कर देकर सिक्खलोगोंके सामने भेजदिया। सहारनपुरके समीप सिक्खलोगोंके साथ फिर युद्ध हुआ। बादशाही फौज ऐसे जोरसे जान तोडकर लडी कि सिक्खलोग पीछे भाग निकले अनेकोंने रणक्षेत्रमेंभी शयन किया बचे सो भागकर पर्वतोंमें जा घुसे बहुतसे बाबाबन्दाके साथ लोहगढके किलेमें आन विश्रान्त हुए। किलेमें आनकर बन्दावीरने सिक्खलोगोंको बहुतसा उत्साह दिया कहा कि आज वह दिन है कि जिस दिन चमकौरके किलेमें श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके दोपुत्र शहीद हुये थे। इसलिये इस अवसरपर जो वीर धर्मयुद्धमें लडकर प्राण देवेगा वह अवश्य सद्गतिको लाभ करके श्रीगुरुजीके लोकको प्राप्त होगा। इत्यादि उपदेशको सुनतेही सिक्खलोग जानें तोड तोडकर लडनेलगे। पंद्रह दिनतक दोंनो तरफसे तोपे बन्दूकें चलतीरही। और लडाईका मैदान खुब गरम रहा। तीरों और गोलोंकी वर्षा होती रही परन्तु सिक्खलोगोंने किलेको न छोडा। जब किलेमें सीधासामान न रहा। तब कई एक सिक्खलोग मुसलमान लबास पहरकर बाहर निकल आये। और सब वस्तु खरीदके रात्रिको रस्सोंसे बान्धकर किलेमें चढादई। पीछे दो दो तीन तीन सवार निकलकर रात्रिमें सोतेपडे मुसलमानोंपर ऐसा छापा मारने लगे कि मुसलमानोंके नाकमें दम कर दिये।

इन्हीं दिनोंमें एक आगरानिवासी दीवान हरिदयालु नामक जो कि बादशाहकी तरफसे सिक्खोंके साथ लडरहा था। उसने देखा कि बाबाबन्दा तथा सिक्खलोग हिन्दूधर्मकी रक्षाके लिये प्राण देदेकर लडरहे हैं। हमको हिन्दू होकर इनका सामना करना उचित नहीं। किन्तु जहांतक बनपडे सहायता करनी उचित है। ऐसा विचार कर उसी वक्त अपने सरसामान लश्कर समेत बाबा बन्दाबहादुरको आनमिला। और इनका शिष्य बनके बादशाही फौजके सामने लडने लगा। ऐसा दृढ होकर युद्ध किया कि बादशाही फौजको पीछे हटादिया।

पांचदिनके पश्चात् बादशाही फौजको कुछ और पीछेसे सहायता मिली । सबने मिलकर सिक्खोंपर फिर हमला किया । इधर सिक्खलोगोंका गोली बारूद प्रथमही खर्च होचुका था । इसलिये शाही फौजका अच्छीतरह सामना न करसके । बन्दावीर बहुतसे सिक्खोंको साथ लेकर आप तो पहाडोंमें चला गया । और एक मनुष्य जो कि उसीकी शकलका था उसको अपनी पोशाक पहराकर सारी फौजपर अधिकार देगया । पीछे जिसको एक मुसल्मानने पकड लिया । और खानखानाके पास लेगया । उसने उसका बादशाहके पास चालान किया इस बहादुरीपर प्रथम तो बादशाहने खानखानाका बहुत सत्कार किया । परन्तु पीछे जब प्रतीत हुआ कि यह वस्तुतः बन्दा नहीं है तो बादशाहने खानखानाको बहुतही बुराभला कहा । और लिखभेजा कि शोक है तुम्हारी जवांमर्दीपर जो कि तुम्हारेसे एक साधारण फकीरभी वशवर्त्ती नहीं होसका इसलिये अब यही उचित है कि तुम हमको मुख मत दिखलाना, खानखानाने उसी दिनसे बहुत दिनतक अपना निवास लोहगढके किलेहीमें रक्खा और बादशाही लश्करको सिक्खोंके पीछे पर्वतोंकी तरफभी भेजदिया साथही यहभी हुक्म दिया कि यदि बन्दा हाथमें न आवे तो वहांके राजाहीको कैद करके लेआना दैवात् ऐसाही हुआ । बन्दा वीर तो उनके हाथमें क्याही आना था परन्तु वे नाहड तथा हण्डूरके राजाको बाँधकर लेआये । उनके साथ कई एक सिक्खभी पकडे चले आये । खानखाना क्रोधमें आकर सिक्खलोगोंके बाल मुण्डवादेने चाहे । परन्तु सिक्खलोगोंका तो पंचकेशका रखना सहज धर्म है । वह अपने धर्मको कब छोडसकते थे । वह लोग उसीवक्त एक २ दो २ को मार कर मरगये परन्तु अपने धर्मसे विपरीत आचरण उचित न समझा

तात्पर्य्य इसी तरहसे खानखाना बहुत दिनोंतक बन्दावीरका पीछा करतारहा । परन्तु उसको पकड न सका । और इधर सिक्खोंने इसका ऐसा नाकमें दम करदिया कि इसकी फौज जरासी भी गाफि-

कहो तो झुण्डोंके झुण्ड सिक्खोंके हमला करके आन पडते । वहां जो सामने आता लूटमारके भाग जाते । उधर बादशाहकी नाराजगी इधर सिक्खोंका प्रतिक्षण क्लेश जानकर खानखाना उदास होकर अपने घर जा बैठा । उसके पीछे आश्विनमास संवत् १७६९ विक्रमी में बहादुरशाहने स्वयं बन्दावीरपर चढाई करनेका विचार किया । और दिल्लीसे चलकर मुहम्मदखाँ आदि फौजदारोंको बहुतसी फौजके साथ बन्दावीरके पीछे छोडकर स्वयं लाहौरको चलागया । उधर बादशाही फौजने तीन मासतक पहाडोंमें बाबा बन्दावीरकी अन्वेषणा करी । और जहां तहां सिक्खलोगोंके साथ मुकाबिला किया । परन्तु बन्दावीर उनके हाथमें न आया । प्रत्युत प्रत्येक मुकाबिलेमें सिक्खलोगोंने शाही फौजको बहुत नुकसान पहुँचाया । सिक्खलोगोंकी यह चाल थी कि, यह लोग कभी कहीं स्थिर होकर नहीं लडते । जब दाँउ देखते तब मारते । अन्यथा पर्वतोंमें भागजाते । फिर जब इनको गाफिल देखते तो अचानक आन छापा मारते । जहांतक बनता लूटमारके भागजाते ।

उन्हीं दिनोंमें ५ नवम्बर सन् १७१२ ईसवीमें बादशाह बहादुरशाहके मरनेका समाचार लाहौरसे आगया । और उनके शाहजादोंमें तख्तके लिये परस्पर राग द्वेष होना शुरू होगया । इसलिये बादशाही फौज जो कि बन्दावीरके पीछे फिररही थी हैरान होकर पीछे लौट आई । और सिक्खोंने मैदान खाली देखकर फिर लूटमार करनी शुरू करदी ।

बन्दा बहादुरभी उसी वक्त पहाडोंसे उतरकर सरहिन्दपर चलाआया मुसलमानोंको लूटमारकर अपना अधिकार जमाकर पीछे पर्वती राज लोगोंकी ओरभी हाथ फैलानेलगा । सबसे प्रथम आनन्दपुरमें गया । वहाँके गुरुस्थानोंमें बहुतसा रुपया अर्दास कराकर पीछे कडाह प्रसाद बनवाकर बँटवाया । और गुरुस्थानोंके जो २ मकान टूट फूटगये थे । सबकी मरम्मत कराई । और हरएक गुरुस्थानपर मुख्य २ सिक्खोंकी कार्य्यकारिणी सभा नियत करदई । पीछे पर्वती राजाओंपर

चढाई करी । परन्तु नालागढनिवासी कर्मप्रकाश तथा नाहन निवासी मेदनीप्रकाश तथा कहलूर निवासी अजमेरचन्द इत्यादि सभी राजालोग मिलकर प्रथमहीसे अपनी २ योग्यतानुसार भेंट पूजा लेकर बाबासाहिबके चरणोंमें आन हाजिर हुये । इस रीतिसे पर्वतप्रान्तमें अपना अधिकार जमाकर बाबा बन्दासाहिब पीछे सरहिन्दको चले आये ।

इत्येक पंचाशोऽध्यायः ॥ ५१ ॥

अथ द्विपञ्चाशोऽध्यायः ॥ ५२ ॥

उसके पश्चात् बाबा बन्दावीरने पंजाब देशके पश्चिमभागकी तरफ चढाई करी । लुधिहाना फगवाडा आदि अनेक अच्छे २ कसबे स्वाधीन कर लिये इन कसबोंके चौधरी चूहडमल्ल अमीनखां आदिने थोडी देरतक बन्दावीरका मुकाबिला किया । परन्तु अन्तमें जब देखा कि सिक्खलोगोंके अप्रतिहत बलके आगे किसीका चारा नहीं चलता तो दो उत्तम घोडे तथा पांचसहस्र रुपया लेकर बन्दावीरकी शरणागत आन हुये । उसके पश्चात् स्याफलखां तथा फयजुलखां नामक जालन्धर शहरके जागीरदारोंने इस वृत्तान्तको सुना तो वह प्रथमही बहुतसी भेंट पूजा लेकर बन्दावीरको पांचकोस आगेसे आनामिले । और प्रसन्नतापूर्वक बाबाबन्दाकी स्वाधीनता स्वीकार करली । परन्तु यह लोग प्रथम श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके साथ बहुतही द्वेष रक्खा करते थे इसलिये बन्दावीरने उनका आधा इलाका छीनकर फगवाडाके हिन्दू चौधरियोंको दिलवादिया और आधा उनके पास रहने दिया इसी तरह अनेक छोटे२ ग्रामोंपर मुसलमानोंका अधिकार तोडकर सिक्खोंका अधिकार जमाता हुआ बाबा बन्दावीर दरियाय व्यासासे पार होकर जब माझा देशमें पहुँचा तो वहांके जिमीदार लोगभी अपनी २ शक्तिके अनुसार भेंट पूजा लेलेकर आगेसे आनामिले ।

संवत् १७७० विक्रमीमें वैशाखकी संक्रांतिके मेलेपर बाबा बन्दा

साहब श्रीअमृतसरमें जा पहुँचा। श्रीदरबारसाहबकी यात्रा करी और अनेक प्रकारकी वहाँपर भेंट पूजा चढाई कडाह प्रसाद करवा कर सिक्खलोगोंमें बँटवाया। पीछे तरुत श्रीअकालके सामने अपना दरबार लगाकर बैठा और माझा मालवाके सब सिक्खोंको बुलाकर पारितोषक बाँटे जागरिंभी बांटी। और देशमात्रमें यह प्रसिद्ध करदिया कि जो पुरुष गुरुका सिक्ख अर्थात् अमृतपानकरके सिंह बनजावेगा उससे भूमिकी मालगुजारी नहीं लीजावेगी। इस वार्त्ताको सुनकर अनेक जिमींदार लोग गुरुके सिक्ख बनगये। इसलिये सिक्खजातिकी थोडेही कालमें बहुतही उन्नति हुई।

फिर बन्दावीरने नूतन फौज भरती करना प्रारम्भ करदई। और प्रत्येक स्थलमें सिक्खलोगोंका अधिकार जमाकर बहुतसी फौज करनाल पानीपतकी तरफ जिधरसे बादशाही फौजके चढकर आनेका भय था रवाना करदई। और आपभी श्रीअमृतसरजीसे चलकर बटाला गुरुदासपुर पठान कोटादि कईएक नगरोंको स्वाधीन करता हुआ पडवाल बसोहली इत्यादि पर्वत प्रान्तके नगरोंमें पहुँचकर पर्वती राजालोगोंको जा घेरा। उन सबनेभी प्रथमहीसे बन्दावीरके स्वाधीन होना स्वीकार करलिया। और यथायोग्य भेंट पूजा देकर बन्दावीरका स्वागत किया। ऐसे होतेही पंजाबदेशभरमें बन्दावीरके विषयमें अनेकप्रकारकी बातें उडने लगीं। कोई अवतार मानने लगा कोई सिद्ध बताने लगा। कोई कहता कि, यह कोई असाधारण जादूगर है। जो चाहे सो करडालता है। चाहे तो अग्निकी वर्षा करे। चाहे तो अभी अन्धकार करडाले। चाहे तो वायुवेगसे वनस्पतीको अभी निर्मूल करदेवे। पंचभूत तो मानों इसके वशवर्त्ती होकर आज्ञानुसार काम कररहे हैं। इसी तरह कोई कुछ कहता कोई कुछ कहता। इन वार्त्ताओंके उडनेसे देशभरमें इसका ऐसा दबदबा बैठगया कि, किसीका आगेसे शिर उठानेका साहस न रहा। बन्दावीर जो आज्ञा करता अमीर गरीब सभी प्रेमपूर्वक स्वीकार करते।

इन बातोंको सुनकर अजमखां नामक लाहौरका सूबाभी भयभीत हुआ । जिस फौजदारको बन्दावीरपर चढाई करनेको कहता।वही छुट्टीके लिये इस्तीफा दाखिल करदेता । परन्तु बन्दावीरपर चढाई करनी स्वीकार न करता। । उधर सिक्खोंका यह हाल था कि, यह लोग लूटमार करते लाहौरकी दीवारों तक पहुँच जाते थे । परन्तु आगेसे किसीका बोलनेका साहस न होता था । स्वयं सूबाभी भयका मारा लाहौरके किलेसे बाहर कदम नहीं निकालता था ।

उसके पश्चात् संवत् १७७० विक्रमीमें बन्दावीरने देखा कि, सारा देश अब स्वाधीन होचुका है । तब आगे लाहौरकी तरफ अपना अधिकार बढानेके लिये एक गुरुदासपुरमें किला तैयार करवाया ।और उसमें अनेक प्रकारका युद्धका सामान भरदिया । और पीछे आनन्दपुर पहुँचकर सभी पर्वती राजालोगोंको लिख भेजा कि या तो तुम लोग गुरुके सिक्खबनके हमारे साथ भ्रातृभावका परिचय दिखलावो और या हमारे साथ युद्ध करो । इस वार्त्ताके सुनतेही सभी पर्वती राजाओंने मिलकर लिखभेजा कि, हमलोग युद्ध करनेको तैयार हैं ।

इस उत्तरके सुनतेही बन्दावीरको अग्नि लगउठी । और उसीदिन अपने सिक्खवीरोंको साथ लेकर सभी पर्वती राजालोग जिस किलेमें एकत्र होरहे थे उस किलेको जा घेरा । तीन पहरतक दोनोंतरफसे तोप बन्दूककी खूब धूमधाम रही । अन्तमें सिक्खलोग किलेको तोडकर अन्दर घुस गये । और पर्वती सिपाहियोंको बकरिओंकी तरह काटने लगे । अन्तमें बहुतसी मार खाकर पर्वती राजालोगोंने सिक्खोंकी स्वाधीनता स्वीकार करली । उसके पश्चात् बन्दावीर पर्वती सैर करता हुआ खालसरके मुकामपर पहुँचा । वहांपर मण्डी नरेशको अपना चेला (शिष्य) बनाकर कई दिनतक उसीके घरमें आराम लेतारहा थोडेही दिनोंके पीछे मण्डीनरेशने अपनी जातिकी एक अति सुन्दरी सुशीला लडकीके साथ बन्दावीरका विवाह करदिया । जिसके गर्भसे संवत् १७७१ विक्रमीमें एक पुत्री और संवत् १७७२ विक्रमीमें एक पुत्र उत्पन्न हुआ ।

वहांसे बन्दावीर चम्बाके पर्वतकी सैर करनेको चलागया। चम्बाके राजाने सुनकर प्रथमही नौकाका पुल जो बन्धरहाथा तोड डाला। परन्तु बन्दावीर सिद्धपुरुष था उसने उसीवक्त दरियायके तीरसे नव-गज लम्बी तथा सात गज चौडी एक कालेपत्थरकी शिला लेकर दरियायमें फेंकदी और उसपर बैठकर पार उतरगया। जिसको देखकर वहांके सहस्रों लोग आश्चर्य होने लगे। वही पत्थरकी शिला अबत-कभी वहांपर बन्दावीरके स्मरणार्थ विद्यमान है। जिसकी वार्षिकमेले-पर बहुतसे पर्वतीलोग पूजाभी करते हैं। अनेक लोग उसको राजा हरिश्चन्द्रकी शिलाभी बोलते हैं। बन्दावीरकी इस सिद्धिको देखकर वहांका राजा शिष्य बनगया॥

इसीवर्षमें जब बन्दावीर पर्वतकी सैर करता हुआ कुलूकी रियासतमें पहुँचा तो वहांके राजाने उसको धोखादेकर कैद करलिया। और कहने लगा कि यदि तुम्हारेमें कुछ सिद्धि करामत है तो इस पिंजरेसे निकल-जावो मैं तुम्हारा शिष्य बनजाऊंगा। उधर अजमखां सूबा लाहौरको खबर भेजदी कि मैंने तुमलोगोंके शत्रु बन्दावीरको कैद करलिया है। उसने लिखभेजा कि उसको बांध करके हमारे पास लाहौरमें रवाना करदो। उधर मण्डीनरेशने इस समाचारके सुनतेही सिक्खलोगोंको साथ लेकर कुलूपर चढाई करदई। और कुलूनरेशको विजय करके बन्दावीरको उसके पिंजरेसे छुडालिया। बहुत लोग ऐसाभी कहते हैं कि कुलूनरेशने बन्दावीरको जब लोहेके पिंजरेमें कैद करके लाहौरमें भेजना चाहा तो उसी वक्त बन्दावीर पिंजरेसमेत आकाशमार्गसे उडकर मन्डीमें आन पहुँचा। जिसको देखकर अनेक लोग चकित हुए। मन्डीनरेश कुलूनरेशको परास्तकर सिक्खोंके साथ जब अपनी राजधानीमें आया तो आगे बन्दावीरको देखकर बहुतही प्रसन्न हुआ उन्हीं दिनोंमें जहांदारशाह जो कि बहादुरशाहके स्थान दिल्लीके तख्त-पर बैठा था मरगया। और उसके स्थानपर फरुखशेरशाह दिल्लीके तख्तका मालिक बना। उसने राजाधिकार हस्तगत करतेही देशमा-

त्रमें शान्ति स्थापनका प्रबन्ध शुरू किया। अर्थात् प्रसिद्ध २ फौजदारोंके साथ बहुतसी फौज देकर पंजाबदेशमें सिक्खलोगोंका बल तोडनेके लिये भेजदिया। और सूबा लाहौरकोभी पंजाबदेशमें शांति स्थापन करनेके लिये लिख भेजा इधरसे शाहीफौज सिक्खोंका अधिकार छीननेको निकल पडी। सबसे प्रथम बादशाही फौजका मुकाबिला करनाल प्रान्तके सिक्खोंके साथ हुआ। बाबा काहनसिंह रामसिंह दयासिंह इत्यादि सिक्खफौजके सरदारलोगोंने बादशाही फौजका उचित रीतिसे सामना किया। खूब जोरशोरसे युद्ध हुआ। दोनों ओरके सहस्रों वीर रणक्षेत्रमें शयन करगये। अन्तमें सिक्खलोग पराजित होकर सरहिन्दके किलेकी तरफ भागनिकले। उधर लाहौरकी फौजनेभी सिक्खोंको बेदखल करके भगादिया। इसीतरह दोनोंतरफसे भाग २ कर सिक्खलोग सरहिन्दमें आन एकत्र हुए और यहांपर एक मासतक मुसल्मानोंके साथ प्रतिदिन युद्ध होता रहा अन्तमें सिक्खलोगोंने यहांसेभी पराजित होकर भागके लोहगढके किलेका आश्रय जालिया। बादशाही फौजने वहांभी उनका पीछा किया। लोहगढके किलेको चारोंतरफसे जा घेरा परन्तु उन्हीं दिनोंमें उधर बन्दा वीरने इस समाचारके सुनतेही मन्डीसे चढाई करी। और अपनेसाथके सिक्ख लोगोंको साथ लेकर एक दिन रात्रिको तीस कोस दूरसे बादशाही फौजपर बेखकर अचानक टूटपडा। सोती हुई शाही फौजके सहस्रों सिपाही काटडारे। उधर लोहगढके किलेके भीतरके सिक्खलोगभी बन्दावीरके आनेको सुनकर बाहर निकलपडे। और तलवारें खैंच २ कर मुसल्मानोंको बकीरयोंकी तरह काटने लगे। बादशाही फौज ऐसी हैरान हुई कि, उसको अपना पीछा छुडाना कठिन होगया। सैकडों मुसल्मान लोगोंको सिक्खोंने जीतेही पकडकर अग्निमें जलादिया। अनेकोंके मुखमें सूकरका मांस भरकर मरवा दिया। बहुतोंको पकडकर वृक्षोंके साथ लटकादिया। इस भयानक

घटनाके होतेही शेष शाही फौज एकदम भागनिकली। पीछे सिक्खोंने फिर पूर्ववत् सारे देशपर अपना अधिकार जमालिया। यमुनानदीसे लेकर लौहारतक सिक्खलोगोंका पूर्ण स्वराज्य जमगया। और मुसल्मानलोग बन्दावीरसे ऐसा भय करनेलगे कि, किसीमें सामने आँखतक उठानेका साहस न रहा।

उसके पश्चात् बन्दावीरने अपना निवासस्थान गुरुदासपुरके किलेमें बनाया। और उसमें हरएकतरहका लडाईका सामान एकत्र करना शुरू करदिया।

थोडेही दिन पीछे सूबा काश्मीरकी सहकारतासे सूबा लाहौरने बहुतसा लश्कर एकत्र करके बाबा बन्दावीरको गुरुदासपुरके किलेमें आन घेरा। परन्तु बाहरके सिक्खलोगोंने एकत्र होकर चारों ओरसे धावा करदिया। अनेक मुसल्मान लोग मारेगये। सूबा लाहौरका बहुतसा नुकसानभी हुआ। अन्तमें लाचार होकर लाहौरको लौटगया उन्हीं दिनोंमें मुसल्मान शमसुद्दीन तथा ताहरखां नामक शहर कसूरमें रहनेवाले पठान जो कि,बादशाही जागीरदार थे। उन्होंनेभी बहुतसी मुसल्मानोंकी फौज मिलाकर शहर जालन्धरके समीप सिक्खोंका आन सामना किया। आशाभी थी कि, मुसल्मानोंके अचानक आक्रमणसे सिक्खलोगोंकी हार होवे। परन्तु बन्दावीर सुनतेही किले गुरुदासपुरमें कूच करके फौरन् मैदानजंगमें जालन्धर आन पहुँचा। बन्दावीरको देखकर सिक्खलोगोंका साहस वृद्ध होगया तलवारें खैंच २ कर मुसल्मानोंकी फौजमें कूदपडे। थोडीही देरमें रक्तकी नदी बहती देखकर पठानोंने पीठ दिखलादई। और बिना पूछे भागकर मैदानजंगको खाली करगये। उसके पश्चात् शहर जम्बूका एक वजीरखां नामक सूबा बादशाही हुक्मसे किसी कार्य्यविशेषके लिये पानीपतमें आयाहुआ था। उसकोभी बादशाही आज्ञानुसार सिक्खलोगोंपर आक्रमण करनेका अवसर मिला। उसने अपने भाई शमसुद्दीन तथा बहुतही फौजको साथ लेकर

सरहिन्दके समीप सिक्खोंपर आक्रमण किया । और उनको पराजित करके वहांसे निकाल दिया । सिक्खलोग भागतेहुए मार्गपतित बहुतसे ग्रामोंको बरबाद करतेहुए जब दरियाय शतद्रुसे पार पहुँचे तो आगेसे बन्दावीरभी सुनकर उनकी सहायताके लिये बहुतसे सिक्खोंको साथ लेकर उनके साथ आनमिला और तीन दिनतक मुसल्मानोंका खूब सामना किया चौथेदिन अन्तमें एक नाहरसिंह नामक सिक्खने वजीरखांको नमाज पढते हुए शिर काटदिया। और उठाकर बन्दावीरके सामने लारक्खा जिसको देखकर बन्दावीर बहुतही प्रसन्न हुआ । ऐसेही और भी बहुतसे अच्छे २ मुसल्मानलोग मारेगये । अन्तमें मुसल्मानी फौज हारकर भाग निकली ।

इसीतरह अनेक बार बादशाही फौजकी हारको देख सुनकर बादशाह दिल्लीके मनमें बहुत विचार होने लगा । शोचा कि, सिक्खजातिकी तलवार प्रतिदिन तीक्ष्ण होती जाती है । आशा है कि, बिना प्रयत्न किये यह जाति एक दिन दिल्लीकोभी आन घेरे । जिस सिक्खजातिने अतिविशाल पंजाब देशमें हलचल मचा रक्खी है । तथा प्रायः देशका देशही स्वाधीन करचुके हैं । वेही लोग कदाचित् दिल्लीपर भी मिलकर चढ आवें तो आश्चर्य्य ही क्या है । इसलिये इस स्वतन्त्र कामके लिये अब उपायान्तर शोचना उचित है । बादशाहने अपने दीवानोंके साथ बहुत विचार करके अन्तमें यह स्थिर किया कि, यहां शहर दिल्लीमें गुरु गोविन्दसिंहजीकी साहिबदेवी तथा सुन्दरी नामक दो स्त्रियें रहती हैं उन दोनोंको बन्दासमेत सभी सिक्खलोग अपनी माता करके मानते हैं इसलिये उनके हाथसे बन्दाबीरको यह लिखवा दिया जाय कि, तुम लोग अकारण देशको लूटमारकरके वैरान मत करो । किन्तु अपने निर्बाहके लिये जागीर इलाका जितना आपको इष्ट हो इस कालमें बादशाहकी तरफसे मिल सक्ता है । इत्यादि सभी कुछ जो बादशाहने कहा माता साहिबदेवीने बन्दावीरको लिख भेजा । जिसका उत्तर

बन्दावीरने यह दिया कि. माता ! क्या तू हमलोगोंको मुसलमानोंके दास बनाया चाहती है ? । बादशाह हमको जागीरें इलाके देनेवाला कौन है । हमलोग स्वयं अपना अधिकार जमावेंगे । और जिन लोगोंने आपके वंशको नष्ट करदिया तथा जिन लोगोंने श्रीगुरु गोविन्दसिंहजीके साथ सहस्रों मिथ्यापन फरेबके वर्त्ताव किये उन अधमोंसे हम बदला न लेवें किन्तु उनसे जागीरें लेकर सन्तुष्ट होजावें यह वार्त्ता क्या हमलोगोंको उचित है । कदापि नहीं । इत्यादि बन्दावीरके उत्तरको सुनकर बादशाहके चित्तमें बहुतही भय हुआ । और मातासाहिब देवीसे फिर दोबारा सख्त तौरपर लिखवाया कि, यातो तुम हमारी आज्ञा मानो । अन्यथा यह लिख दो कि, हम गुरुके सिक्ख (शिष्य) नहीं हैं । तब बन्दाने लिख भेजा कि, माताजी मैंने कब कहा है कि, मैं गुरुका सिक्ख हूं । मैं तो वैरागी साधु हूं । गुरुजीके साथ दैवात् मल मुलाकात होगई । प्रेम होगया । उन्होंने मेरेको इस धर्मकार्य्यमें प्रेरणा करी तो मैं पंजाबमें चला आया । बन्दाके इस उत्तरको सुनकर मातासाहिब देवी बहुतही रुष्ट हुई । और मार्गशीर्ष संवत् १७७३ विक्रममें बन्दाके विषयमें मातासाहिब देवीजीने शाप-दिया कि, हे बन्दे अकलके अन्धे ! तुमने हमारी आज्ञा भङ्गकरी । और जिस गुरुके प्रतापसे तुम्हारा इतना प्रभाव हुआ उससे भी तू विमुख हुआ इसलिये परमेश्वर करे आजहीसे तेरा तेज प्रताप क्षीण होनेलगे और अन्तमें तेरी मुसलमानोंहीके हाथसे मरण होवे । इस प्रकारका शाप बन्दाको देकर मातासाहिब देवीने अपने सिक्खलोगोंके नाम पृथक् पत्र लिख भेजा और कहा कि तुमलोग पन्थ खालसा गुरुजीके शिष्य हो तुमलोगोंको उचित है कि मेरे पत्रके देखतेही बन्देका साथ छोडकर किनारे होजावो । गुरुपरमात्मा तुमलोगोंका सहायक होगा । प्रतिदिन आपलोगोंकी उन्नति होगी इत्यादि माताजीका हुक्मनामा बाँचकर सिक्खलोगोंने शिरोधारण किया । और बन्दावीरसे तो प्रथमही बहुतसी बातोंसे सिक्खलोग विपरीत होचुके थे क्योंकि बन्दा सिक्खलो-

गोंपर अपनी हुकूमत चलाया करता था। और अपना पन्थभी खालसा-पन्थसे भिन्नही बनाया चाहता था और अपने सिक्खोंको खण्डेके अमृत पिलानेके स्थानमें अपने चरण धोकर पिलाया करता था और श्री वाहगुरुजीकी फतहकी जगहपर बन्दाकी दर्शनी फतह, बुलवाता था। इत्यादि बन्दाके विपरीत आचरणोंको देखकर सिक्खलोग प्रथमहीसे बहुत दुःख मान रहेथे। माताके पत्रको देखतेही उससे पृथक् होगये।

बहुतसे सिक्खलोगोंका उसकालमें बन्दावीरपरभी दृढ विश्वास श्रद्धा भक्ति प्रेम होरहा था। इसलिये उसकी प्रतिष्ठामें कुछ अधिक क्षति न हुई। पीछे संवत् १७७४ विक्रमीमें वैशाख संक्रान्तिके मेलेपर बन्दावीर अपने शिरपर जिगा कलँगी सजाकर श्रीअमृतसरजीके खास हरिमन्दिरमें गादी लगाकर बैठा। और अपनेको ग्यारवां गुरु कहवाने लगा। जिसको देखकर गुरुके सिक्खोंके चित्तमें बहुतही बुरा प्रतीत हुआ। इसलिये बाबा काहनसिंह भल्ला बाबा विनोदसिंह त्रेहन फतह-सिंह गुरुबखासिंहादि भाई भक्तुकी वंशके तथा धर्मसिंह प्रेमसिंहादि भाई रूपाकी वंशके तथा रामसिंह तिलोकसिंहादि भाई फूलकी वंशके इत्यादि बहुतसे मुख्य २ सिक्खलोगोंने परस्पर सम्प करके बन्दाको हरिमन्दिरमेंसे उसीवक्त उठादिया और प्रथम तो सबने मिलकर स्वयं श्रीअकालबुंगासाहिबके सामने भारी दरबार भरके बन्दाके अनुचित व्यवहारका सब सिक्खोंको प्रदर्शन कराया पीछे मातासाहिबाका पत्र जो कि यावत् पन्थ खालसाके नाम आया हुआ था सिक्खोंको भरी सभामें बांचके सुनाया। और पीछे पुकारकर कहा कि जो जो श्रीगु-रुजीके घरके सच्चे सिक्ख हैं उनको उचित है कि वे लोग अभी बन्देका संग छोडकर हमलोगोंके साथ आन मिलें। इस वार्ताके सुन-तेही सहस्रों सिक्खलोग बन्दासे औरभी विपरीत होगये। और उसका पीछा छोड २ विचारशील सिक्खोंमें आन २ मिलने लगे फिर उन विचारशील सिक्खलोगोंने बडे उत्साहसे नगारा बजाकर अपना डेरा बन्दासे पृथक् तालाब विवेकसर पर जा जमाया उसी दिनसे बन्दासे

विपरीत होनेवाले विचारशील सिक्खलोगोंको लोग तत्त्वखालसाके नामसे बोलने लगे।

शेष रहे बाजसिंह, मानसिंह; ईश्वरसिंह, बुलाकी सिंह इत्यादि बहुतसे शिष्य जिन लोगोंकी बन्दापर श्रद्धा प्रेम भक्ति अधिक होचुकी थी और वेही लोग उस वक्तमें उसके मुसाहिबभी थे वे बन्दाकी तरफ रहगये। उन्हींका नाम लोगोंमें बन्दई खालसा प्रसिद्ध हुआ॥

इति द्विपंचाशोऽध्यायः॥ ५२॥

अथ त्रयःपंचाशोऽध्यायः॥ ५३॥

इस पूर्वोक्त रीतिसे सिक्खलोगोंके भारी दो दल होगये। उचित तो यह था कि दोनोंही दल फिरभी आपसमें राग द्वेष न बढाकर मुसलमानोंके साथही विरोध रखते। परन्तु इन लोगोंने ऐसा न किया किन्तु आपसमें अनेक प्रकारके टंटे बखेडे करने लगे। अन्तमें दोनों दल परस्पर खैंचा खैंची करते २ अमृतसरके तालावपर दर्शनी दरवाजाके पास युद्धमें जुटगये। आपसमें चली हुई तलवारनेभी अनेक मनुष्योंका नाश करडाला। अन्तमें अनवसर जानकर बन्दाने अमृतसरसे कूच किया और जिस किला गुरुदासपुरमें प्रथम रहा करता था वहां चलाआया।

उधर मुसलमानोंने सिक्खलोगोंके परस्पर रागद्वेषका वृत्तान्तभी सुनपाया। उसी वक्त बादशाही फौजने बन्दापर फिर चढाई करी। और पठानकोटके समीप जंगका मैदान पडा यद्यपि इस परस्पर फूटके कारण बन्दावीरकी शक्ति बहुतही न्यून होचुकी थी तथापि फिरभी ऐसे २ स्थलोंमें विजय लाभ करनेके लिये उसका बल वीर्य, तथा साहस अप्रातिहत था। थोडेही कालके युद्धमें रुस्तमखां नामक फौजका सरदार मारागया। और फौज बची सो लाहौरको भागगई।

उधर बादशाह फर्रुखशेरने सिक्खोंके दो फिरके हुए सुनकर इस अवसरको बहुतही कार्य्य सिद्धिकारक समझा ।

और बन्दासे विपरीत होनेवाले तत्त्वखालसाको बादशाही सत्कार-सूचिक खिलतके साथ यह लिखभेजा कि तुमलोगोंके बुजुर्ग बाबा नानकसाहिबने हमारे बुजुर्ग बाबर बादशाहपर इनायत फर्माकर यह सल्तनत बखशीथी इस लिये हम तुम दोनों एक हैं।आपलोगोंको चाहिये कि लूटना मारना छोडकर अपने निर्वाहके उपयुक्त जागीरें मुआफी लेकर शान्त रहें । और जिनको नौकरी करनेकी इच्छा हो वे लोग सूबा लाहौर या जहांपर जिसकी इच्छा हो प्रसन्नतापूर्वक यथायोग्य अधिकारपर नियत होवें । नौकरी करनेवाले खालसाकोभी तनख्वाह उसकी पूर्त्तिके मुताबिक दी जावेगी इत्यादि बादशाही पत्र तथा खिल्लतको लेकर बादशाहका प्रतिनिधि दूत श्री अमृतसरजीमें तत्त्वखालसाके पास पहुँचा । और अनेक प्रकारकी फन्द फरेबकी बातें करके तत्त्व खालसाको बादशाही दूतने अपने पंजेमें ले लिया । एवं उसके पंजेमें आनकर बाबा काहनसिंह अमीरसिंह तथा फतहसिंह यह तीन सरदार अपने पाचसौ सहायक सिक्खोंके साथ सूबा लाहौरके पास मुलाजिम होकर रहने लगे । और पांच सहस्र रुपया मासिक तथा जागीर परगना हुबाल जो कि प्रथम बादशाह अकबरके समयसे श्रीगुरुजीके नाम मुआफी चली आती थी देना लेना स्वीकार करके बादशाह तथा सिक्खलोगोंमें परस्पर नीचे लिखे अहदनामे (प्रतिज्ञापत्र) लिखे गये ।

१–प्रथम पन्थ खालसा आगेको किसी बादशाही देशमें हस्ताक्षेप नहीं करा करेगा ।

२–द्वितीय बन्दाकी सहायतामें भी कभी न जावेगा ।

३–तृतीय यदि कोई शत्रु देश पंजाबपर चढाई करके आवेगा तो तत्त्वखालसा हाकिम पंजाबका सहायक होकर उसका पूर्णरूपसे सामना करेगा ।

४–चतुर्थ जो मासिक या जागीर बादशाहकी तरफसे मिली है उसमें हस्ताक्षेप करनेका किसीका अधिकार न होगा।

५–पञ्चम आगेको देश पंजाबमें कोई हिन्दू जबरन् मुसल्मान नहीं बनाया जावेगा। और न किसीके भजन पाठमें कोई विरोध डालसकेगा न कोई परस्पर देवस्थान या मसजिदें गिराने पावेगा यदि कोई ऐसा करेगा तो वह दोनों तरफसे बादशाहीदण्डसे दण्ड-नीय समझा जावेगा।

६–षष्ठ हिन्दुओंपर कोई मुसल्मान किसीतरहका अत्याचार नहीं करने पावेगा और न उनके धर्मके विपरीत कोई उनके सामने गोवधादि विपरीत क्रिया करसकेगा। जो करेगा वह बादशाही दण्डसे अवश्य दण्डित होगा।

पूर्वोक्त प्रकारसे सिक्खोंके दो दल होजानेसे तथा आपसमेंकी राग-द्वेषसे बन्दावीरका बल यद्यपि बहुत कम होगया था तथापि उसने अपना कर्तव्य जिसको कि वह बडे साहससे किया करता था उसको छोडा नहीं। अर्थात् गुरुदासपुरसे बाहर हजार सिक्खोंकी फौज तथा चौबीस तोपें लेकर शहर कलानौरके नव्वाबपर चढाई करदी। और चारों ओरसे शहर कलानौरको जा घेरा। परन्तु नव्वाब फतह दीन हाकिम कलानौरने अपनेमें मुकाबिला करनेकी शक्ति न समझी। इस लिये पांच सहस्र रुपया तथा पांच उत्तम घोडोंकी भेंट लेकर बन्दावीरको आगेसे आन मिला।

उसके पश्चात् बन्दावीरने दरियाय रावीके पार होकर इलाका स्यालकोट गुजरान्वाला वजीराबाद इत्यादि सभी प्रान्तोंको अपने वशमें करालिया उस देशके मुसल्मानोंको पकड २ कर वही हाल किया जो कि कुछ दिन पहले वे लोग हिन्दुओंको किया करते थे। फिर वहांसे चलकर दडप धन्नी पोठोहार इत्यादि प्रदेशोंमें लूटमार मचाता हुआ दरियाय अटकके तीर तक पहुँचा। फिर वहांसे पीछेको लौटता हुआ वैशाख संक्रांतिके मेला पर कटाक्षराज नामक तीर्थपर

चलाआया वहांपर इसके बहुतसे लोग शिष्य बन गये । और अनेक स्थानोंमें इसने अपने नामसे मकान गुरुद्वारेभी तैयार करवाये । पीछे वहासे कूचकरके किले गुरुदासपुरमें चला आया ।

इस पश्चिम प्रदेशकी यात्रामें बन्दावीरका इतने बडे लम्बे चौडे देश किसी हिन्दू मुसलमानने मुकाबिला न किया इसलिये बन्दावीरके चित्तमें बहुतही अभिमान हुआ और साहसभी आगेसे दशगुण अधिक होगया ।

कुछ दिनके पश्चात् मण्डीके राजाने बन्दा वीरको प्रेमसे अपने पास बुलाया । और बहुतदिनतक अपने पास ठहराकर उसको ऐश आराममें निमग्न किया कि वह अपने आपकोभी भूलगया । अन्तमें एकदिन उसको अचेत देखकर मण्डीके राजाने उसकी वह जादूकी पुस्तक जिसके प्रतापसे वह सर्वत्र विजयी होता था तथा जिसको वह प्रतिक्षण अपने गातमेंही रक्खा करता था चुराली । पीछे बन्दा अपनी शक्ति छिनाकर मण्डीके राजासे अप्रसन्न होकर फिर गुरुदासपुरके किलेमें चलाआया । कुछ दिन पीछे बन्दाके चित्तमें यह विचार उठा कि क्या हमारेमें उस जादूके किताबहीकी शक्ति थी या उसके विनाभी कुछ है परीक्षण तो अवश्य करना चाहिये । ऐसा विचारके अपने कई सहस्र सिक्खोंको साथ लेकर बन्दावीरने शहर लाहौरकी तरफ चढाई करदी अ असलमखां नामक नाजम लाहोरनेभी बन्दावीरका आगमन सुनकर प्रथमही अपनी फौजको सजाकर लाहौरसे आठ कोस दूरपर बन्दावीरका आन मुकाबिला किया । दो दिन तक परस्पर खूब युद्ध हुआ । अन्तमें अपने साथके कई एक अच्छे २ पुरुषोंको मरवाकर जब बन्दावीरने अपनी विजयका ढंग कोई न देखा तो मैदान जंगको छोडकर सीधा किले गुरुदासपुरमें चला आया । और किलेमें विश्रान्त होकर अपने विपरीत रहनेवाले तत्वखालसाके नाम एक पत्र लिखा कि आपलोगोंको मुसलमानोंने धोखा देकर मेरेसे फोडदिया है । वस्तुतः हम लोग आपलोग एक हैं । यदि हमलोग

मिले रहेंगे तो किसी द्वेषी शत्रुका बल हमलोगोंपर चढ नहीं सकेगा अन्यथा भिन्न २ होनेसे द्वेषियोंके अवसर मिलनेकी आसा होसकती है। भेद तो सर्वही निन्दनीय है उसमें भी परस्पर भाइयोंमें भेदका वर्त्ताव तो मूलविनाशक है और परस्पर मेलकी प्रशंसा तो "मिलवेकी महिमा बरन न सकों नानक परे परीला" इत्यादि वचनोंसे श्रीगुरुजीनेभी बहुत करी है। इसलिये आप लोगोंको गुरुजीके वचनोंके अनुगामी होकर परस्पर मेल करना उचित है। इत्यादि बन्दावीरके पत्रका तत्वखालसाने यह उत्तर लिखा कि हमलोग स्वयं मेल करनेको तैयार हैं परन्तु साथही श्रीगुरुजीके वचनोंसे विमुख होनाभी नहीं चाहते। पन्थ खालसा तुमको ग्यारहवां गुरु नहीं मानसकता क्योंकि श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराज स्वयं श्रीमुखसे कहगये हैं कि अब आगे ग्यारहवां गुरु कोई न होगा। दूसरे पन्थखालसामें तुम अपनी चरणपाहुलका प्रचार न करसकोगे। किन्तु सब सिक्खोंको खण्डेका अमृतपान करना होगा। और जिन सिक्खोंको तुम चरणपाहुल दे चुके हो मेलके पश्चात् उनकोभी खण्डेहीका अमृतपान करके फिर दोबारा पन्थ खालसामें मिलना होगा। यह ऊपर लिखी बातें स्वीकृत हों तो आप अपने सब सिक्खसमाजको साथ लेकर श्रीअमृतसरजीमें चले आइये। हमलोग आपसे मेल करनेको तैयार हैं। इत्यादि पत्रको बांचकर बन्दा चुपरहा। क्योंकि उसके अभिमानसे उसको मेल करनेसे विमुख रक्खा। अन्तमें जब फर्रुखशेर नामक बादशाह दिल्लीने सिक्खलोंमें परस्पर फूट डालदेनमें अपनेको कृतकार्य्य समझा। तो उसी वक्त हाकिम लाहौर तथा हाकिम जालन्धरके नाम बन्दावीरके गिरफतार करलेनेका हुक्म भेज दिया। और दिल्लीसेभी अच्छे २ नामी फौजदारोंको बीसहजार फौज साथ देकर बन्दाकी तरफ रवाना किया। उस कालमें बन्दावीर आठ सात सहस्र फौजके साथ गुरुदासपुरके किलेमें निवास करता था। उसी समय लाहौर जालन्धर तथा दिल्लीसे

आई बादशाही फौजने मिलकर बन्दाको चारोंओरसे घेरलिया। दोनों ओरसे परस्पर युद्ध होना शुरू हुआ। चार मासतक एकतार प्रतिदिन युद्ध होता रहा। पर मुसलमानोंने किलेके घेरेको न छोडा। सहस्रों मुसलमान मारेभी गये। अन्तमें किलेके अन्दरकी रसद सीधा सामान सभी खुटगया। और बन्दाकी फौज अन्दर भूखी मरने लगी तो उसकालमें बहुतसे सिपाही ता एकरदा २ होकर रात्रिको किलेसे कूदकर भागगये। शेष जो बचे उनके साथ यह वर्त्ताव हुआ। प्रथम तो सूबा लाहौरने एक ऊंचा झण्डा खडा करके यह हुक्म सुनाया कि जा सिपाही अपने प्राण बचाया चाहे वह शस्त्र छोडकर इस बादशाही झण्डेकी छायामें आन खडा होवे बहुतसे सिक्ख बन्दाको छोडकर उस झण्डाके नीचे जा खडे हुये। धीरे २ एकको देखकर दूसरा दूसरेको देखकर तीसरा जब सिक्खलोग किलेसे बाहर आते दीखपडे तब मुसलमानलोग अपने वचनसे विमुख होकर सिक्खोंको कैद करने लगे। उसकालमें जो उन लोगोंके हाथमें पडे सभी कतल करादिये गये। परन्तु जब बन्दावीरने सिक्खोंकी यह दशा देखी तो उसको उसकी वीरताने शान्त बैठने न दिया। और उसी वक्त अपने सहायक सिक्खोंको साथ लेकर किलेसे बाहर निकलपडा। तलवारें खैंच २ कर सिक्खलोग तथा बन्दावीरने मुसलमानों पर ऐसा हमला किया कि, उनको अपना आप भूलगया। एक थोडेही कालमें बन्दावीरने अपनी तलवारका मुसलमानोंको ऐसा रस आस्वादन कराया कि, वे लोग दिनों तक स्मरण रक्खें। अब यहांसे आगे बन्दावीरका इतिहास लेखकोंके भेदसे भिन्न २ मिलता है। मुसलमानलोगोंने लिखा है कि, बादशाही फौजने बन्दाको कैद करके दिल्लीमें पहुँचाया। बादशाहने उसको मस्त हस्तीके पाउँ साथ बँधवाकर मरवादिया और उसके मृतशरीरको शहरके बाहर एक खातमें फेंकवादिया। अंगरेज लोग लिखते हैं कि, दिल्लीमें लेजाकर बन्दावीर बादशाही हुक्मसे कतल किया गया। बन्दाके सिक्खलोग कहते हैं कि

जब बादशाहने हाथीके पाउं साथ बाँधकर मरवानेका हुक्म दिया। उसी कालमें बन्दाने समाधिमें स्थित होकर अपने प्राणोंका निरोध करलिया। और प्राकृत लोगोंको मुरदेकी तरह दीखने लगा। जब मुरदा जानकर खातमें फेंकवाया गया तब उसी कालमें उसके शिष्योंने जो कि, राजामण्डीके भेजेहुए मुसलमानवेशसे प्रथमही दिल्लीमें फिररहे थे उसको उठाकर सचेत करलिया। और छिपाकर लाहौर-प्रान्तके एक ग्राममें जहां उसकी स्त्री रहती थी लेकर चले आये। वहांपर औषधादिके सेवनसे बन्दावीरका शरीर फिर ठीक होगया। परन्तु फिर उसने अपने आपको सिक्ख समाजसे विपरीत जानकर प्रकट करना उचित न समझा। किन्तु अपनी स्त्रीको साथ लेकर जम्बूके इलाकेमें एक भँवर नामक ग्राममें जाकर रहने लगा। उसी ग्रामके समीप एक पर्वतकी गुहामें दीर्घकालतक तप करता रहा। और वहांही अतिवृद्ध होकर अपनी मृत्युसे मरभी गया। वर्त्तमानमें उसी स्थानपर उसके स्मरणार्थ एक बडा भारी तथा सुन्दर समाधि देहराभी बना हुआ है। और वहां पर प्रतिवर्ष उसके सिक्खोंका एक बडा भारी मेलाभी हुआ करता है।

सिक्ख लोगोंकी शूरवीरताका वृत्तान्त कई एक मुसलमान मौलवी लोग अपनी आंखोंसे देखा लिखते हैं। कि जब एक समुदाय बन्दाके सहायक सिक्खलोगोंका कैद करके दिल्ली भेजा गया। और वहांपर उनको बादशाही हुक्म कोतवालीके सामने कतल करनेका हुआ। तो हरएक सिक्ख प्रसन्न हो होकर जल्लादके सामने जाते थे। और बडे दृढ चित्त होकर खुशी २ से अपनी गरदन कटवालेते थे। आश्चर्य्य तो यह है कि शत्रुकी तलवार की तीक्ष्ण धाराहीको अपनी मुक्तिका मुख्य मार्ग समझते हुए सिक्खलोग मरनेके लिये भी आपसमें विवाद किया करते थे। अर्थात् एक कहता था प्रथम मैं गरदन कटवाता हूं। दूसरा कहता था नहीं मैं कटवाता हूँ। उसी समयकी वार्त्ता है कि एक वृद्ध माताका नवयुवा सिक्ख पुत्र बन्दाके सिक्ख समुदायमें

कैद होकर बादशाहके सामने चलागया। उसकी माताभी रोती पीटती पीछे २ बादशाहके पास पहुँची और बादशाहसे कहने लगी कि बादशाह सलामत! मेरा पुत्र बेगुनाह पकडा गया है। क्योंकि वह वस्तुतः सिक्ख नहीं है। हां सिक्खोंके पास कभी २ जाकर बैठा करता था। सिक्खोंने झूठेही धोखा देकर उसको सिक्ख बना लिया। वृद्ध माईके वचनोंपर रहमदिल होकर बादशाहने उस नवयुवकासि-क्खको अपने पास बुलाया। और पूछा कि तुम कौन हो? नवयु-वकने उत्तर दिया कि मैं गुरुका सिक्ख हूँ। बादशाहने उसकी माता-से कहा कि माई तेरा पुत्र क्या बोलरहा है। माताने बादशाहके आगे सिवाय रोदेनेके कुछ उत्तर न दिया। उधर नवयुवकसिक्ख यह कहता था कि मैं अपने संगी सिक्खोंसे पीछे इस झूंठी दुनियामें कभी नहीं रहने चाहता। किन्तु इन सबसे प्रथम स्वर्गमें जाना चाहता हूँ। इसलिये मेरा शिरही सबसे प्रथम काटना चाहिये। वृद्धमाताके क्लेशको देखकर तथा नवयुवक सिक्खके दृढ निश्चयको देखकर बादशाहके चित्तमें दया आगई। उसी वक्त नवयुवकके संगी एकसौ सिक्खोंके समेत नवयुवकको छोडदेनेकी आज्ञा करी।

प्रियपाठकवृन्द यह ऊपर लिखी बातें कोई नाटक चम्पू या उप-न्यास रूपसे नहीं हैं किन्तु भारत भूमिके सुपुत्रोंके साथ बीता हुआ सच्चा-इतिहास है। आपने अनेक जातियोंकी सबल निर्बल दशाके देखला-नेवाले अथवा भारतभूमिके शूरवीरोंकी वीरताके बतलानेवाले बहुतसे इतिहास देखे सुने होंगे।

परन्तु इस समय आप सबकी तरफ दृष्टि करके देखलीजिये जैसे श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने अपने सनातनधर्मके आगे सर्वस्वको तुच्छ समझके अपने धर्मकी रक्षा करी है या जैसे बाबा बन्दावीरने मुसलमानोंके अत्याचारोंका हाथोहाथ बदला चुकाया है वैसा उदाहरण आपको इतिहासमात्रमें दूसरा मिलनेवाला नहीं है जगन्नियन्ता सर्वा

न्तर्यामी परमात्मा एक दूसरेका बल तोडनेके लिये एकसे दूसरेको अवश्य प्रबल बनाता है । जब मुसल्मानोंका अत्याचार अवधितक पहुँच चुका तो उसके विपरीत उसी वक्त परमात्माने बन्दावीरको शक्ति देकर उनकीभी वही दशा करवादी जो कि थोडेही दिन प्रथम मुसल्मानलोग हिन्दुओंके साथ करचुके थे । सरल इतिहासमें किसीकी निन्दा या अप्रकृत प्रशंसा करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है । परन्तु इतना कहना किसीकोभी अनुचित या बुरा न प्रतीत होगा कि यही बन्दावीर यदि श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजके दिये शिक्षणपर अन्तपर्य्यन्त स्थिर बना रहता किन्तु स्वयं गुरु बनकर सिक्खोंमें परस्पर फूटका कारण नहीं होता तो थोडेही दिनोंके पश्चात् दिल्लीके तख्तका मालिक यही एक होता.।

इति त्रयः पंचाशोऽध्यायः ॥ ५३ ॥

अथ चतुःपञ्चाशोऽध्यायः ॥ ५४ ॥

बन्दावीरको अबदुल्समदखां तौरानी पकडकर दिल्लीमें लाया था उसीके पारितोषिकमें बादशाह दिल्लीने उसको लाहौरका नाजम बनाकर भेजदिया था उसने फरुखशेर बादशाहके मरनेके पीछे अभिमानमें आकर तत्त्वखालसासे विरोध करना प्रारम्भ किया । प्रथम तो जो बादशाहने प्रतिज्ञा पत्र पूर्वक जागीरें मुआफी लिखदी थीं सब जब्त करली उसीसे बहुतसे अच्छे २. सिक्खलोग बादशाही आश्रयको छोडकर अपने २ घरोंमें चले आये । कई एक गुरुस्थानोंमें रहकर निर्वाह करनेलगे । बहुतसे राजपूतानाके राजालोगोंकी फौजमें जा भरती हुए । और कई एक जो बडे २ सरदार सिक्खलोग थे वह अपने साथ सौ सौ दो दो सौ सिक्खोंको लेकर अपने घरोंमेंजाबैठे । ऐसेही जब बहुतसे सिक्ख इधर उधर होगये तो पांचसौ सिक्ख जो कि एक रुपये रोजपर लाहौरकी नव्वाबोंमें रहते थे उनकीभी तनख्वाह आधी करदी गई । इससे उनमेंसेभी बहुतसे

सिक्खोंने नौकरी छोडदई । शेष जो गरीब थे वह आधी तनख्वाह परभी पडे रहे। अब अबदुलसमदखां नाजम लाहौरने देखा कि इस वक्त मैदान खाली है । सिक्खोंके मुख्य सरदार बन्दावीरके मरनेसे इन लोंगोकी ताकत बहुतही कम हो चुकी है। जो कुछ थोडी बहुत शेष बची दिखाती है उसकाभी तोड डालना आवश्यकीय है और बन्दाके पीछे लागकर इन लोगोंने जो मुसल्मान जातिपर अत्याचार किये हैं उनका बदला चुकाना भी आवश्यकीय है। इत्यादि अनेक तरहके रागद्वेष पूरित विचारकरके नाजम लाहौरने प्रथम तो यह हुक्म दिया कि अब मार्गशीर्ष संवत् १७७८ विक्रमीसे सिक्खकौमसे और कौमोंकी अपेक्षा दुगुन महसूल लिया जावेगा। दूसरा प्रजामात्रमें यह हुक्म सुनाया कि जिन लोगोंकी सम्पदा या कुछ माल सिक्खोंने कभी लूटलिया हो वह लोग हमारे दरबारमें अर्जी देवें तो सुनाई होगी। इस हुक्मके जारी होतेही सहस्रों अर्जियां पेश हुई। जिन ग्रामीण सिक्खोंने कबी लूटमारका मार्गभी नहीं देखा था । किन्तु अपने घरहीमें जैसे कैसे खेती बाडीसे निर्वाह किया करते थे । उनपर भी मुसल्मानोंने अर्जियें देदेकर उनका सब माल सम्पदा जब्त करवालिया। इसी अत्याचारमें कईएक हिन्दुओंनेभी सिक्खोंपर अपनी सम्पत्ति लूटलेनेकी अर्जियें पेश करीं। पंजाब देशभरमें कोई सिक्ख ऐसा शेष न रहा जिसपर पांच २ छः छः नालिशें न दायर हुई हों। जिस सिक्खपर किसीने खूनका मुकद्दमा पेश किया । वह सिक्ख बिना जांच भालके उसी वक्त कतल किया गया। इत्यादि अनेक तरहके अत्याचार प्रतिदिन सिक्खजातिपर गुजरने लगे। अनेक सिक्खलोग पंजाबको छोड २ कर राजपूतानामें जा बसे । पीछे मुसल्मानोंने सिक्खलोगोंके गुरुद्वारोंको गिराकर वैरान करदिया। अनेकों मन्दिरभी गिरादिये। हिन्दुओंको फिर मुसल्मान करना शुरू किया। उधर राजपूतानामें सिक्खोंको अपने गुरुस्थानोंकी वैरानीका तथा मुसल्मानोंके घोर अत्याचारका सब वृत्तान्त मिला । तो सिक्खोंने

फिर एकत्र होकर चैत्रमास संवत् १७८१ विक्रमीमें पंजाबदेशकी तरफ कूच करदिया। आगे पंजाबमें रहनेवाले सिक्खलोग प्रथमही दाँत चबारहे थे। सबने मिलकर मुसलमानों पर ऐसा आक्रमण किया कि जहां जो मिला विना कतल किये न छोडा। अनेकों ग्राम लूटमारके बरबाद करदिये। जिन लोगोंने मिथ्या नालिशें पेश करके सिक्खोंको सताया था उन सबको चुन चुनके काट डाला देशभरमें त्राहि त्राहि मचगई। कारागारोंको तोड फोडकर सिक्खलोगोंने सहस्रों कैदी अपने साथ सहकारी मिला लिये।

उस कालमें जो मुसलमान सिक्खोंकी दृष्टिमें आया बचने न पाया अच्छे २ मौलवीओंको पकडकर उन्हें जिन्हें जिन्देही अग्निमें जलादिया अनेकों अच्छे २ काजियोंको जो कि, दीन इसलामका उपदेश करते हुए हिन्दु जातिकी मुसीबतका मूल थे सूकरके कच्चे मांसका बलात् आस्वादन करना पडा। अर्थात् सिक्खोंने जबरन् उनके मुखमें ठोंसा और धर्मभ्रष्ट करके पीछे कतल करडाला। भाव यह कि उस समयमें सिक्खोंनेभी मुसलमानोंकी दुर्दशा करनेमें कुछ त्रुटि नहीं रक्खी किन्तु जैसी प्रतिष्ठाके योग्य जो मुसलमान सामने आया उसकी वैसीही प्रतिष्ठा करी देश मात्रमें हा हाकार मचगया। मुसलमानोंके बच्चे बच्चे सिक्खोंका नाम सुन २ कर भय खाने लगे। चारों ओर इल्ला बिल्ला कहकर मुसलमान लोग जान बचानेके लिये इधर उधर लुकने छिपने लगे। सिक्खोंने अनेक मुसलमानोंकी सम्पत्तिको लूटलिया। और नाजम लाहौरने जो जागीरें जब्त करली थी उनपर सिक्खोंने स्वयं अधिकार जमालिया। तात्पर्य तीन वर्ष तक लगातार बराबर इसी तरह सिक्खोंने अपनी तलवारसे खूनका बाजार गर्म रक्खा। जिस २ सिक्खकी जायदात जब्त होगई थी उसने फिर अधिकार जमालिया। मुसलमानोंका मारना या लूटना सिक्खलोगोंने अपना प्रतिदिन कर्तव्य या खेल समझ रक्खा था। बादशाही हाकि-

मोंने सिक्खजातिको वशवर्त्ती करनेके लिये बहुत प्रबन्ध शोचे तथा किये । परन्तु सिक्खोंकी अप्रतिहत खूनबहानेवाली तलवारके सामने किसीसे कुछभी न बन पडा ।

जब सिक्खलोगोंने पंजाबदेशमात्रमें अपना पूर्ण रूपसे बल देखा तो उन्होंने श्रीअमृतसरजीका दीपावलीका मेला जो कि, मुसल्मानोंने संवत्१७७८विक्रमीसे बन्द कर रक्खा था फिर प्रचलित करना चाहा । इसलिये जगह२में सिक्खलोगोंने पत्र लिख भेजे किं, संवत्१७८२विक्रमीमें दीपमालिकाके मेलाके अवसरपर यावत् गुरुके सिक्खोंको आना चाहिये । और श्रीअमृतसरजीमें एकत्र होकर मेलेके उत्सवकी शोभा बढानी चाहिये पत्रोंको सुन २ कर सब सिक्खोंने वैसेही किया । मेलेके अवसर पर चारों ओरसे सिक्खोंके झुण्डोंके झुण्ड आनकर एकत्र होगये । मेलेका उत्साह अतिउत्तम रूपसे हुआ । सहस्रों रुपया नगद तथा अनेक प्रकारकी जिनस पूजा हरिमन्दिरमें आई । जिसके बांटनेके लिये बन्दाके सिक्खोंका तथा गुरुके सिक्खोंका परस्पर विवाद होपडा । यहां तक कि थोडी देरतक दोनों तरफसे तरवारभी चलगई बहुतसे सिक्खलोग आपसमें मारेभी गये । अन्तमें एक भाई मनी सिंहनामक वृद्ध सिक्खने सबको समझा बुझाकर शान्तकिया । और दोनों दलोंका फैसला करनेके लिये यह उपाय शोचा कि दोनों दलोंकी दो चिट्ठी लिखकर हरिकी पावडीपर जलमें डाल दी जावें । उनमें एक चिट्ठीपर यह लिखा रहे कि " श्रीवाहगुरुजीकी फतह है " और दूसरीपर " श्रीबन्दाजीकी दर्शनी फतह है ", ऐसा लिखा रहे । सिरनामा करके दोनों पत्र लिखकर हारकी पावडीके जलमें डालदिये जावें । जिनकी चिट्ठी प्रथम डूबजावेगी वह लोक हरिमन्दिरकी पूजाके अनधिकारी समझे जावेंगे । और जिनकी चिठी पानीपर अधिक देरतक तरती रहेगी वह लोग अधिकारी समझे जावेंगे । और यदि दोनों चिट्ठी समान कालमें डूबेंगी तो दोनों दलोंका अर्द्धोअर्ध भाग समझा जायगा । इस भाई

मनीसिंहके युक्तियुक्त न्यायको उभय पक्षके सिक्खोंने प्रसन्न होकर स्वीकार करलिया। एक कागजके समान दो टुकडे कर ऊपर लिखी दोनों तरहकी अक्षर पंक्ति दोनोंपर लिखके सहस्रों सिक्ख समुदायके सामने हरिकी पावडीके जलमें दोनों चिट्ठा डालदी गई। दैवात् थोडी देरके पीछे दर्शनी फतहकी चिट्ठी डूबगई। और गुरुके सिक्खोंकी तरती रही। जिसको देखकर गुरुके सिक्खोंका पक्ष प्रबल होगया। और बन्दाके सिक्ख लोग शान्त होकर बैठगये। श्रीअमृतसरजीके हरिमन्दिरकी पूजाका अधिकार पूणरूपसे गुरुके सिक्खोंको मिला। उसके साथही और गुरुस्थानों परभी गुरुके सिक्खोंहीका सर्वथा अधिकार हुआ। बन्दाके सिक्खलोग ऐसे दबगये कि मारे शर्मके मुखभी न दिखलाना चाहे। उस चिट्ठीके डूबजानेसे बहुतसे सिक्ख लोगोंने ऐसा शोचा कि जिसके नामकी चिट्ठी भी तर नहीं सकी अर्थात् डूबगई है उसके पीछे हमलोग कैसे तरसकेंगे। इसलिये बन्दई सिक्खोंमेंसे अनेक सिक्ख गुरुके सिक्खोंमें आनमिले। और आपसमें प्रेमपूर्वक मेल करके हरएक तरहसे लाभ उठानेलगे। दीपावलीका मेलाभी प्रतिवर्ष लगना शुरू होगया। सिक्खलोगोंने तीन तीनसौ चार चारसौकी अपनी जमात बनाकर सारे पंजाबदेशपर अपना अधिकार जमालिया। प्रथमकी तरह मुसलमानोंको लूटमारसे बरबादी करनेलगे। और झुण्डोंके झुण्ड सिक्खोंके पंजाबदेशके प्रान्त प्रान्तका दौरा करके मुसलमानोंकी दुर्दशा करनेलगे। जिस मुसलमानको जिस प्रान्तमें प्रतिष्ठित या मालदार देखा उसीको मिलकर पकड लेते। और उसका धन धान्य लूटके पीछे उसकोभी मारडालते।

अन्तमें जब इस गदरका समाचार मुहम्मदशाह बादशाह दिल्लीको पहुँचा तो उसने सूबा लाहौरको नालायक जानकर मुलतानमें बदल दिया। और मुहम्मद जिकारियाखाँ नामक उसका पुत्र जो कि प्रथम दिल्लीहीमें रहा करता था उसको अतिप्रबन्धकुशल जानकर बादशाहने लाहौरका नाजम बनाकर भेजादिया। उसने लाहौर पहुँचतेही दीवान

लखपतरायके साथ सलाह करके सिक्खोंके प्रबन्धके लिये एक गश्ती-फौज नियत करदी। य गश्तीफौज पंजाबके भिन्न २ प्रान्तोंमें बँटकर जहां तहां सिक्खोंके साथ मुकाबिला करके उनका बल तोड़-नेके लिये स्थिर हुई ।

उन्हीं दिनोंमें लाहौर प्रान्तके नौशहरा नामक ग्राममें कई एक सिक्ख लोग काश्तकारी करके निर्वाह किया करते थे। परन्तु साहि-बराय नामक उस ग्रामका चौधरी जानबूझकर सिक्खोंके खेतोंमें अपनी घोडियोंको चरने छोडदिया करता। जब सिक्खलोग उसके पास इस वार्त्ताकी शिकायत किया करते तो बहुतही दुर्वचनोंसे पेश आता सिक्खोंको आगेसे ऐसा कहने लगता कि जबतक मैं तुमलोगोंके केश मुसल्मानोंके हाथोंसे मुण्डवाकर अपनी घोडियोंके बाँधनेके रस्से नहीं बनवाता और जबतक तुमको लाहौरके कारागा-रमें डलवाकर तुम लोगोंके पांउमें जंजीर नहीं डलवाता तबतक मेरे दिलकोभी आराम आना कठिन है। मैं जानता हूँ कि तुमलोग डाकू हो सदा लूटमारका माल खानेपर तुमने कमर बाँध रक्खी है। यह खेती बाडी तुम लोगोंका लोक दिखलावा है। तथापि हरएक वस्तुका प्रबन्ध या विनाश समय आनेपर होता है। अब तुम लोगों-के प्रबन्धका समय बहुत समीप आता जाता है। इत्यादि चौधरी साहबरायके दुर्वचन सुनकर नौशहराके सिक्ख लोग बहुत दुःखित हुए। और दूसरेही दिन भाई बघेलसिंह तथा अमरसिंहको पास-के ग्रामसे बुलवाकर साहबराय चौधरीकी घोडियोंको चुराकर देश मालवामें सरदार आलासिंहके पास भेज दिया। सरदार आला-सिंहने उन घोडियोंको उसी वक्त बेचकर उनका दाम शहीद तारा-सिंहजीके सदावर्तमें भेजदिया सिक्खजातिमें भाई तारासिंह एक बडा नामदार शूरवीर होचुका है ।

यह अमृतसर प्रान्तके पट्टीपरगनाके समीप एक अपनी छोटीसी गढी बनाकर रहा करता था। और गरीबलोगोके लिये एक सदावर्त रक्खा करता था। एक बडी भारी सिक्खोंकी जमात

हरवक्त उसके पास रहा करती थी । मुसल्मानलोगोंकी दिहात लूटमार करनेसे जो कुछ हाथ आता था वह सब सदावर्तमें डाल दिया जाता था । बहुतसे बादशाहके अपराधी लोगभी इसका आश्रय आन लिया करते थे । इसलिये चौधरी साहब राय पट्टीके थानेदारको साथ लेकर वीर तारासिंहजीके पास पहुँचा। और कहा कि, आपके यहां हमारी घोडियाँ चोरी आई हैं । बहुतसे सिक्खलोग उसकालमें बाहर दौरा करने गये हुए थे । इसलिये शहीद तारासिंहजीने बहुत नम्रता पूर्वक बातचीत करी । चौधरी साहबरायने थानेदारको कहकर तारासिंहजीके घरकी तलाशी लेनी चाही । परन्तु तारासिंहजीने अपने घरकी तलाशी देनी अस्वीकार करी । थानेदार कुछ अपनी हाकिमीका जोर दिखलाने लगा । दोनों तरफसे मुकाबिला होगया । परस्पर तलवार चलनी शुरू होगई अन्तमें थानेदार अपने कईएक सिपाहीयोंके साथ वहांही कतल हुआ । और चौधरी साहबरायको शहीद तारासिंहने बाँधकर अपने सिक्खोंको हुक्म दिया कि, इसके शिरमें जूते लगा २ कर इसके शिरके सभी बाल उडादो । क्योंकि यह बहुत दिनोंसे तुम लोगोंके केश कटवादेनेको कहा करता था । यह जब कटवावेगा तब जो होगा सो देखा जायगा । प्रथम तुमलोग तो इसके केश जूतोंसे उडादो । तारासिंहजीके हुक्म होतेही चौधरीके शिरमें ऐसे जूते बरसे कि शिरपर एक बाल न रहा । पीछे चौधरीको छोडदिया । और कहा कि, यदि कोई औरभी तुमसे बने तो अपना सहायक लेकर चले आना । चौधरी साहबरायने अपनी सारी दुर्दशाका वृत्तान्त जफरबेगनामक पट्टीपरगनाके हाकिमको सुनाया । और वह पांचसौ सवार प्यादाकी फौज अपने साथ लेकर फाल्गुन मास संवत् १७८२ विक्रमीमें शहीद तारासिंहपर चढ आया । उधरसे सिक्खलोग भी जो उसकालमें एकसौ परिमित वहां विद्यमान थे तलवारें खैंच २ कर अपनी शूरवीरताके हाथ दिखलानेके लिये तैयार होगये । यद्यपि पांचसौ मुसल्मा-

नोंके दलके आगे एकसौ सिक्खा समुदाय कुछभी न था । तथापि थोडीही देर तलवारके खटाखट होनेसे मुसल्मानलोग बकरियोंकी तरह भाग निकले । फौजदारका छोटाभाई बहुतसे मुसल्मानोंके साथ मारा गया और हाकिम आप जख्मी होकर चारकोश पीछे माडीनामक ग्राममें चलाआया ।

इति चतुःपंचाशोऽध्यायः ॥ ५४ ॥

अथ पञ्चपंचाशोऽध्यायः ॥ ५५ ॥

उसके पश्चात् पट्टीपरगनाके हाकिमने अपना सब वृत्तान्त खानबहादुर नामक नाजम लाहौरको लिखभेजा और अपने सहायक होनेकी प्रार्थना भी करी । नाजम लाहौरने इस समाचारके पातेही एक फौजदारके साथ चार हजार सवार देकर शहीद तारासिंहकी गिरफतारीका हुक्म दिया । उधर जबतक मोमनखां फौजदार अपनी फौजको लेकर पहुँचा । तब तक शहीद तारासिंहनेभी अपने पास पांचसौ परिमित सिक्खोंका जुटाव कर लिया । जब मुकाबिलेका समय आया तो शहीद तारासिंहने सब सिक्खोंकी ओर दृष्टि करके कहा कि प्यारे भाइयो यह समय धर्मपर प्राण देनेका है । जिसको अपना जीवन धर्म पर मरनेसे अच्छा प्रतीत होता हो वह प्रसन्नतापूर्वक अभी अपने घरको चलाजावे । क्योंकि पीछेसे कोई एक पीछे भागकर सारे सिक्ख मण्डलको कलंकित करे यह वार्त्ता उचित नहीं है हां जिसको युद्धमें प्राण देकर अचल वीर गतिको प्राप्त होना वह पुरुष आज युद्धक्षेत्रमें अवश्य अपने अप्रतिहत पराक्रमको दिखलावे । गुरुका सिंह होकर धर्मयुद्धके मैदानसे पीछे हटे तो उसको क्या लज्जा नहीं है ? इत्यादि शहीद तारासिंहजीके जोशीले उपदेशको सुनकर उसी वक्त हजारों सिक्खलोग मरने मारने पर तैयार होगये । और स्नान ध्यान कर भोजन करके शस्त्र वस्त्र लगाकर मूछोंपर ताउदेते युद्धभूमिमें जाकर

गर्जने लगे। एक तालाबके किनारेपर मोरचा बाँधकर शत्रुगणके दलमें बन्दूकों गोलोंकी वर्षा करने लगे। जब गोली बारूद चुकगया तो तीरोंसे काम लेने लगे। पीछे तलवारें खैंच २ कर मुसलमानी फौजमें सिंहोंकी तरह कूदपडे। ऐसी तलवार चली कि सहस्रों मनुष्योंको एक साथ मृत्यु मार्गमें चलना पडा। मुसलमानोंकी फौजके अच्छे२सरदार लोग मारेगये। अन्तमें सिक्खलोगोंकी संख्या बहुतन्यून थी। मुसलमानोंकी फौज बहुत अधिक थी। एक २ सिक्ख चार २ पांच २ मुसलमानको मारकर आपभी मरगया। परन्तु शहीद तारासिंहके साथ होकर लडनेवाले सिक्खोंमेंसे पीछेको पाँउ एकनेभी न रक्खा। इस युद्धमें जहां शहीद तारासिंहके समेत सभी सिक्खलोग युद्धक्षेत्रमें वीरगतिको प्राप्त हुए। वहां पर अबतक एक शहीद गंजके नामसे उत्तम स्थानभी बना हुआ है।

यद्यपि सिक्खलोगोंका गदर दूर करनेके लिये एक गश्ती फौज नियत होचुकी थी। तथापि सिक्खलोगोंको उस गश्तीफौजका कुछभी भय न था। जहां चाहते थे लूटमार करडालते थे बाहर तहसीलोंसे एकत्र होकर लाहौरको जाता हुआ खजाना बादशाही अमृतसरके सिक्खोंने अनेक वार रास्तेमें लूटलिया। और साथके संरक्षक सिपाहियोंको मारडाला एकवार बहुतसे सिक्खोंने मिलकर तहसील कसूरका खजाना लाहौरको जाता हुआ मार्गमें लूटलिया। और साथके रक्षकोंको कतल करडाला। और जब गश्तीफौज उनके वशवर्ती करनेके लिये आई तो वह लोग भागकर एक गहन जंगलमें घुसगये। गश्ती फौजने उनका बहुत पीछा किया परन्तु वह लोग उनके हाथमें न आये।

उन्हीं दिनोंमें मुरतिजाखां कन्धारी सौदागर कईएक अच्छे २ कीमती घोडे बेचनेके लिये दिल्लीमें लिये जाता था। उसकोभी सिक्खोंने अमृतसरके समीप लूटलिया। उसके पश्चात् एक जफरखां नामक दशहजारीको जो कि दिल्लीके बादशाहका साला था तथा सकु-

टुम्ब काबिलसे दिल्लीको जा रहा था गोयन्दवालके घाटपर सिक्खोंने लूटलिया । और उसका वह हाल किया कि दिनोंतक स्मरण रक्खे । सिक्खलोग सिवाय मुसल्मानोंके हिन्दुओंपर कभी आक्रमण नहीं करते थे । और न कभी किसी हिन्दूका धनमाल लूटते थे । एकवारका वृत्तान्त है कि, स्यालकोटनिवासी एक प्रतापचन्द नामक क्षत्रिय सौदागरके कईएक ऊंट पश्मीनेके लदेहुए दिल्लीको जारहे थे । सिक्खोंने किसी मुसल्मान सौदागरका माल जानकर सभी लूटलिया । पीछेसे सिक्खोंको ज्ञात हुआ कि, यह माल एक हिन्दू सौदागरका था । सिक्खोंने उसीवक्त जैसेका तैसा पीछे लौटा दिया । और उस सौदागरसे अपनी भूलकी क्षमाभी कराई । इसी तरह उनदिनोंमें सिक्खलोग सौ सौ दो दो सौका झुण्ड होकर पंजाबदेशका दौरा किया करते थे । और जहांतक बनपडे मुसल्मानोंको लूटकूटकर अपना निर्वाह किया करते थे । अनेकवार लाहौरके बाजारोंमेंभी मुसल्मानोंकी दुकानोंको लूटमारकर भाग जाते । परन्तु गश्तीफौजसे उनके लिये कुछभी न बन पडता ।

उसी वर्ष संवत् १७८२ विक्रमीके अन्तमें अमृतसर प्रान्तके चविण्डा नामक ग्रामनिवासी सरदार बहादुरसिंहके पुत्रके विवाहका अवसर आया तो वहांपर बहुतसे सिक्खलोग एकत्र हुए । उधर माडीनामक ग्रामके मुसल्मानोंने पट्टीपरगनाके हाकिमके पास मुखबरीकरके गश्ती फौजको मँगा भेजा ।

खबर पातेही गश्ती फौजने सिक्खोंको चारोंओरसे आनघेरा । परन्तु वीरसिक्खलोग तलवारें खैंच २ कर मुसल्मानोंपर कूदपडे । ऐसी तलवार चली कि मुसल्मानोंके दम बन्द हो गये । सिक्खलोग मारपीटके भाग गये । गश्तीफौज मारखाकर देखतीही रहगई पीछे गश्ती फौजने उनके कुटुम्बको सताना चाहा । तब सिक्खलोगोंकी स्त्रियोंने भी उनको ऐसे हाथ दिखलाये कि गस्तीफौज दिनोंतक स्मरण रक्खे अन्तमें गश्तीफौज अपनी कई तरहकी हानि करवाकर पीछेको लौट

आई। तात्पर्य्य यह कि पंजाबदेशमें उनदिनोंमें जगह जगहपर ऐसा ही हुआ करता था गश्तीफौज बहुत प्रयत्नसे सिक्खोंके गदरको शान्त करना चाहती थी। परन्तु बहुतदिनोंतक उससे कुछ भी बन न पडा।

सिक्खलोगोंकी लूट मारको देखकर पंजाबदेशमें बसनेवाले और-जातियाके लोगभी देखादेखी लूट मार करने लगे। पचादे भट्टी डुगर स्याल बलोच इत्यादि अनेक जातियोंके लोग सिक्खोंकी तरह लूट मार करके खाने लगे। इनलोगोंने सिक्खोंके साथ मिलकर डकैतीका ऐसा बाजार गर्म किया कि थोडेही दिनोंमें अनेकों दिहात वैरान कर डाले सारे देशमें हाहाकार मचने लगा।

अन्तमें जब हाकिम लाहौर जालन्धर तथा सरहिन्द आदिने देखा कि दिन बादिन देशकी बरबादी होती जाती है तो उनलोगोंने मिलकर सम्मतिसे एक विज्ञापन पत्र निकाला। और उसको ग्राम ग्राम नगर २ में बटवा दिया। उस विज्ञापनपत्रमें यह लिखा हुआ था कि जो पुरुष किसी सिक्खकी मुखबरी करेगा उसको १०) रुपया और पकडनेवालेको २५) रुपया और थानामें पकडकर लानेवालेको ५०) रुपया तथा शिर काटकर लानेवालेको १००) रुपया बादशाहकी तरफसे पारितोषक दिया जावेगा। और जो पुरुष इससेभी अधिक सहायक होगा उसका जागीर दीजावेगी। इस विज्ञापन पत्रको बांचकर अनेक हिन्दू मुसल्मान लोगोंके चित्तमें लालच आन पैदा हुआ। दश २ बीस २ मिलकर सिक्खोंकी अन्वेषणामें फिरने लगे। जो सिक्खलोग देशकी बरबादीका मूल थे उनको तो कोई क्या पकड सकता था। परन्तु जो लोग अपने घरोंमें खेती बाडी करते शान्तभावसे बैठे थे उन गरीब सिक्खोंपर बादशाही विज्ञापनपत्रसे अत्याचार अवश्य होनेलगा। हिन्दू या मुसलमान किसी साधारण सिक्खकोभी पकडकर लेजाते तो बादशाही नियमानुसार उचित रुपया इनाम लेकर चले आते।

थानेदार उन गरीब सिक्खोंको जो कि उसके पास पकड़कर आते। अत्यन्त क्लेश देदेकर मरवाडालता। तथापि इतने परभी सिक्खलोगों-का लूटमार करना जो कि, देशकी बरबादीका कारण था उसकी कुछभी शान्ति न हुई। उस समयमें पंजाब देश बहुतही वैरान हो-चुका था लोगोंके घरोंमें लोहेके तवे तक बाकी न था। किन्तु मट्टीके चढने लगगये थे उधर सिक्खोंका गदर डाकू लुटेरोंका जोर उधर बादशाही महसूलका तगाजा विचारी प्रजाका नाकमें दम आगया था। दरियाय यमुनासे लेकर दरियाय अटकतक पंजाब देशकी ऐसी दुर्दशा हुई कि, सभी लोग भूखे मरने लगे। सभोने एक दूसरेके लूट-नेपर कमरबांधली। कोई किसीका पूछनेवाला न रहा। चारों तरफ अन्धेर मचगया। हाकिमोंका भय प्रजामात्रके चित्तसे उठगया। किन्तु डाकू लुटेरोंके भयसे पीडित हुए लोग त्राहि २ कर उठे।

उन्हीं दिनोंमें नजामत लाहौरकी मालगुजारीका रुपयाभी तीनव-र्षतक दिल्लीमें न पहुँचा। अन्तमे बादशाह दिल्लीने दो फौजदारोंके साथ दो हजार फौजको देकर लाहौरके निजामसे तीनवर्षका बादशाही खराज्यका खजाना वसूल करनेको भेजदिया। और साथही यह हुक्म दिया कि, जबतक बादशाही खराज वसूल न हो तबतक प्रति-दिन पांच हजार रुपया अपने रोजाने खर्चके लिये लेते रहना। उन लोगोंने लाहौर पहुँचकर बादशाही हुक्मके अनुसार वैसेही किया। अन्तमें खान बहादुर नामक सूबा लाहौरने दुःखित होकर बादशाही फौजदारोंको कुछ रिश्वत देकर तथा कईलाख रुपया बादशाही खरा-जका भी देकर दिल्लीको रवाना किया।

जब सिक्खलोगोंको यह समाचार मिला कि,कईलाख रुपया वसूल होकर लाहौरसे दिल्लीको जारहा है। तो बहुतसे सिक्ख एकत्र होकर दो भागोंमें बँटगये। और परगना तरनतारनके समीप नूरखांकी सरा-यमें पहुँचकर सिक्खोंके एक दलने खजाना लेजाती हुई बादशाही फौजपर प्रातःकाल आक्रमण किया। दोनों ओरसे खूब जुटकर युद्ध

होने लगा। युद्धके साथही सिक्खलोग धीरे २ पीछे भी हटते गये। बादशाही फौजने दो कोशतक पीछा किया। परन्तु युद्धकी तबभी समाप्ति न हुई। उधर शाहीफौजका खजानेसे दो कोशका अन्तर देख कर सिक्खोंके दूसरे दलने खजानेपर धावा किया। संरक्षकोंको मार-कर सभी खजाना लूटलिया। और घोडोंपर लाद लादकर जंगलमें घुसगये। पीछे बादशाही फौज तथा गश्तीफौजने खजाना लूटनेवाले सिक्खोंकी बहुतही अन्वेषणा करी। परन्तु सिक्खवीर इनके हाथमें न आये। उन्हीं दिनोंमें उस रुपयेसे सिक्खोंने अनेक तरहका युद्धका सामान तैयार करलिया। और निर्भय होकर जहां तहां विचरने लगे।

उधर जब खजाना लूटे जानेका समाचार मुहम्मदशाह बादशाहको पहुँचा। तो उसने संवत् १७८७ विक्रमीमें उसी वक्त सिक्खोंके वश-वर्त्तीकरनेके लिये बीस हजार रुहेले सवारोंकी फौज देकर पंजाबके नव्वाबोंके सामने अपने फौजदारोंको भेजदिया। और पंजाबके हाकि-मोंके नामभी भिन्न २ परवाने ताकीदके लिखे। कि वहलोगभी अपनी अपनी फौज लेकर सिक्खलोगोंके बल तोडनेका प्रयत्न करें। और जैसे बनपडे देशमें शान्ति स्थापन करनेमें तत्पर होवें।

उधर जब सिक्खोंको बादशाही फौजके आनेका समाचार मिला तो वह लोग समय देखकर अपने बचावके लिये कुछ पर्वतोंमें चढ-गये और कुछ देश राजपूतानेमें चलेगये। बादशाही फौजने आन-कर काश्तकारी करके निर्वाह करने वाले सिक्खोंको जहांतक बनपडा सताया। कतल करडाले या जबरन्, मुसलमान बनालिया। जो मनुष्य दाढी या केशवाला मुसलमानोंको दीखपडा वह चाहे सिक्ख हो या न हो जीता न बचने पाया। या मुसलमान बना लिया गया। अन्तमें बादशाही फौज कुछ दिनोंतक पंजाब देशका दौरा करके पीछे दिल्लीमें चलीगई।

उसके पीछे विचार शील सिक्खलोगोंने मिलकर जो सिक्ख

जबरन् मुसलमान बनालिये गये थे। उनको फिर अमृतपान कराकर पन्थखालसामें मिला लिया। इस वार्त्ताको देख सुनकर बहुतसे हिन्दू-लोग पन्थखालसासे विपरीत होगये। बहुतसे ब्राह्मणोंने कहा कि, मुसलमानको हिन्दू बनाना धर्मशास्त्रसे विरुद्ध है। जिसका उत्तर विचारशील सिक्खोंने यह दिया कि धर्मशास्त्र निर्माण करनेवाले पण्डितोंकी सम्मतियां हरएक विषयमें भिन्न २ हैं। यावत् धर्मशा-स्त्रोंके अनुसार किसी हिन्दूका आचरण भी नहीं है। पन्थखालसाभी भाइयोंमें फूट डालनेवाले धर्मशास्त्रको नहीं मानता है। किन्तु श्रीगु-रुगोविन्दसिंहजी महाराजका अनुगामी होकर यदि कोई भाई जबरन् मुसलमान किया जावे तो उसको पन्थखालसा फिर पीछे लेसकता है क्योंकि श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीने भी संवत् १७६० विक्रमीमें एक रामसिंहनामक सिक्ख जो कि आनन्दपुरके युद्धमें जबरन् मुसलमान बनाया गया था उसको अमृतपान कराकर फिर पन्थखालसामें मिला लिया था वैसेही हमलोग भी मिला सकते हैं। इत्यादि प्रत्युत्तरको सुनकर हिन्दूलोग चुपरहे।

संवत् १७८४ विक्रमीमें जब सिक्खोंने देखा कि बादशाही फौज पीछे दिल्ली लौटगई है और नव्वाब खानबहादुरभी दिल्लीके बादशाह-को लिखचुका है कि पंजाबदेशमें अब सिक्खजातिका नाम निशानत-कभी नहीं है। तब पर्वतोंसे निकल २ कर पंजाबदेशमें आन दाखिल हुए और जो सिक्खलोग राजपूतानामें, चलेगये थे वह भी चलेआये सारे पंजाबदेशमें पर्य्यटन करके फिर मुसलमानोंको सताने लगे। जहां तहां लूटमार करके भागजाते अनेकबार दिनको लाहौरका बाजार भी लूटलिया सब लोग देखतेही रहे। परन्तु सिक्खोंके सामने किसीका हाथ ऊंचा करनेका साहस नहीं था। ऐसी दशा देखकर विचारे खान-बहादुरकाभी कंठ शोष होने लगा। और रात्रिदिन शोकातुर होकर सिक्खजातिके दमन करनेके लिये अनेक उपाय शोचने लगा।

इति पञ्चपञ्चाशोऽध्यायः ॥ ५५ ॥

अथ षट्पञ्चाशोऽध्यायः ॥ ५६ ॥

अन्तमें नव्वाब खानबहादुरने काजीलोगोंकी सम्मतिसे एक दीन-का 'हैदरी' नामक झण्डा खडा किया। और देशमात्रके मुसलमा-नोंको दीन इसलामके निमित्त लडनेके लिये बुला भेजा। थोडेही कालमें देशमात्रके मुसलमान अपने शस्त्र वस्त्र सजाकर लाहौरमें आन एकत्र हुये। संवत् १७८८ विक्रमीमें लाहौरके सूबाने बहुतसा जंगका सामान हैदरी झण्डाके साथ देकर मीर इनायतुल्लाको सिक्खोंके मुका-बिलेमें भेजदिया। बहुतसे हिन्दूलोगभी मुसलमानोंके भयसे हैदरी झण्डेके साथ होगये। ऐसेही एकलाख मनुष्योंका समुदाय सिक्खों पर चढाई करके चलपडा। उधर सिक्खलोगोंनेभी उक्त समाचार-को सुनकर लडाईका प्रबन्ध करना शुरू किया। देशभरके शूर वीर सिक्खलोग जंगकी अनेक प्रकारकी सामग्री लेलेकर नियत स्थलमें एकत्र हुये। जब शूरवीर सिक्ख बीसहस्र परिमित एकत्र होगये तब सभी मिलकर गुरुदासपुर प्रान्तके कहानुवालके जंगलमें चलेगये। और हैदरी झण्डेका लश्करभी उसी जंगलके चारोंतरफ आन उतरा परन्तु सिक्खोंके भयसे मुसलमानलोग जंगलके अन्दर न घुससके और सिक्खलोग समय २ पर जंगलसे बाहर निकलकर हैदरी झण्डेपर छापा अवश्य डालते। अनेक मुसलमानोंको मार लूटकर फिर उस गहनबनमें घुसजाते। एक मासतक लगातार बराबर यही हाल बनारहा। सिक्खलोग सूकर हरिणादिका शिकार करके अपना निर्वाह चलाते रहे। रात्रिको जंगलसे बाहर निकलकर हैदरी झण्डेपर हमलाभी करते। सोते पडे अनेक मुसलमानोंको काट फाट जाते। उनका सीधा सामान शस्त्र वस्त्र जो मिलता सो लेकर जंगलमें घुसजाते। अन्तमें जब ऐसेही बहुतसे मुसलमानलोग मारे गये। और समझा कि, इन डाकू लुटेरों सिक्खलोगोंके साथ हमारी कुछ पेस नहीं आती। तो दुःखी होकर उस जंगलको आग लगा दई। सिक्खलोग

निकलकर सो सौ दो दो सौके झुण्ड होकर भागकर फिर पंजाब देशमें इधर उधर लूटमार करनेलगे। हैदरीझण्डा पीछे २ फिरे और सिक्ख आगे २ लूटमार करते फिरे। परन्तु भिन्न २ प्रान्तोंमें बैटकर लूटमार करनेवाले सिक्खोंपर हैदरी झण्डेका कुछ जोर न पड सका। दूसरा कारण यह था कि हैदरी झण्डेके पीछे कोई युद्धक्रिया कुशल बादशाही फौज न थी। किन्तु दीन २ पुकारके अपने अज्ञानसे प्राण देनेवाले बहुतसे ग्रामीण अशिक्षित मुसलमान थे। उनको प्रतिदिन लूटमारके खानेवाले तथा शस्त्रक्रियामें निपुण साहसी सिक्खलोग सम-झतेही क्या थे। हैदरी झण्डा यदि एकसौ दोसौ सिक्खसमुदायका पीछा करता तो दूसरा सिक्ख समुदाय उनको आनकर रात्रिको लूटमार-जाता। इसी तरह बहुतादिनोंतक होता रहा। कभी हैदरी झण्डा सिक्खोंका पीछा करता फिरता। और कभी सिक्खलोग हैदरी झण्डेका पीछा करते फिरते। यद्यपि मुसलमानोंने सिक्खोंके अनेक ग्रामभी बरबाद करडाले। और इनके वशवर्त्ती करनेके लिये प्रतिदिन-तरह २ के नये २ यत्नभी किये। तथापि शूरवीर सिक्खजातिके आगे इनके सभी यत्न निष्फल होगये। और सिक्खलोग उसी तरह लूटमार मचातेही रहे।

ऐसेही हैदरी झण्डा देशमात्रमें फिरता हुआ जब लाहौरके १५ कोस पर भीलोवालनामक ग्राममें आया तो मुसलमानोंने वहां बहुत दिन-तक मुकाम किया बेखटके होकर आराम करनेलगे। रण्डी लौंडोंके नाच गाने बजानेकी ध्वनि हरएक मुसलमानके चित्तको आकर्षित करने लगी तरह २ के खानोंकी खुशबूसे मुसलमानोंके दिमाग पूरित होगये। अनेक प्रकारके नशेकी घूर्णतासे एक दूसरे पर गिरने लगे इत्यादिसभी समाचार एक सूचकने सिक्खोंको जा सुनाया। सिक्खोंने उसी वक्त एकत्र होकर उन मद्यघूर्णित गफलतकी निद्रामें शयन करनेवाले मुसलमानोंपर प्रातःकाल एक ऐसा छापा मारा कि उनको सातों भूलगई। अर्द्धरात्रिसे भी पीछेतकका गाना बजाना देख सुन-

कर सोनेवाले मुसलमानोंपर सिक्खलोग बिजलीकी तरह टूटपडे। जहांके तहां पडे सहस्रों काटडाले। अच्छे २ सरदार लोगोंके तम्बुओंमें घुसकर उनका सबसे प्रथम काम तमाम किया। चारों ओर भूमिमें रक्तही रक्त दीख पडने लगा सबको अपनी २ पडगई। बहुतसे मारे गये। बचे सो सभी कुछ छोडके भागनिकले। किसीको अपने घोडेपर सवार होनेतककी ताकत न रही जो जहां जैसे पडा था सिवाय भागनेके दूसरी न सूझी। उस कालमें जो सिक्खोंके पंजेमें आया सो मरा। जो भागनिकला सो लाहौर पहुंचा पीछे रहा अनेक प्रकारका युद्धका सामान शस्त्र वस्त्र दारू बारूद तथा अच्छे २ घोडे सभी सिक्खोंके हाथ लगे। उस कालमें कुछ परमेश्वरकी कृपाही ऐसी थी कि यदि कहीं पांच सिक्ख मारेभी जाते थे। तो दैवात् पचास उनके स्थानपर फिर खडे होजाते थे।

अन्तमें जब खान बहादुर नामक सूबा लाहौरने सिक्खोंका वशवर्त्ती करना सर्वथा असम्भव देखा तो उसने दिल्लीके बादशाहके पास एक नीचे लिखे मजमूनकी अर्जी लिखभेजी।

गरीब परवर सलामत।

मैंने सिक्ख कौमके नेस्त नाबूद करनेके लिये हजारहों कोशिशें करीं। उनको गिरफतार करके बडी २ सख्त सजाएँभी दीं। सैकडों दफा उनपर लश्कर कशीभी करी। मगर यह कुछ ऐसी जबरदस्त कौम है या खुदाकी मरजीही ऐसी है कि यह बिल्कुल मगलूब (पराजित) नहीं होती। अगर एक हजार कतल किये जाते हैं तो चार हजार और पैदा होजाते हैं। अगर इन लोगोंका यही हाल रहा तो उम्मेद होती है कि एक दिन हमारा काम तमाम करके हुजूरकी दीवारोंतकभी जरूर पहुँच जावेंगे। और उस वक्त इनका संभालना बहुत

मुश्किल हो जावेगा। इसलिये मेरी रायमें पहलेकी तरह अगर इनको कुछ जागीर अता हो जावे तो शायद् अमन कायम होजावे। ज्यादा नियाज—

सूबा लाहौरकी इस अर्जीके पातेही दिल्लीके बादशाहनेभी समयकी दशा देखकर अर्जीको स्वीकार किया। और सिक्खोंके लिये एक लाखकी जागीर एक बहुमूल्य खिलत और नव्वाबी खिताब देकर अपने प्रतिनिधि दूतको लाहौर भेज दिया। लाहौरके सूबाने उसी वक्त शाहबेगसिंह नामक वकीलको बुलाकर बादशाही प्रतिनिधिके साथ देकर वैशाखमास संवत् १७९० विक्रमीमें श्रीअमृतसरमें सिक्खोंके पास भेजदिया। आगे तख्त अकालबुंगाके सामने पन्थखालसाका एक भारी दीवान लगरहा था। शाहबेगसिंह वकील तथा बादशाही प्रतिनिधि दोनोंने मिलकर दीवान दरबारा सिंहजीके सामने बादशाही खिलत नव्वाबीके खिताब तथा एक लाखकी जागीरका बादशाही मुहरांकित पत्र निकालकर रखदिया। जिसको देखकर दीवान दरबारासिंहजीने अस्वीकार किया। उसी वक्त वकील शाहबेगसिंहने हाथ जोड खडे होकर प्रार्थना करी कि यह जागीर बादशाहकी तरफसे पन्थखालसाके घोडोंके दाने आदिके लिये दी जाती है। किन्तु स्वाधीन करनेके लिये नहीं है। इत्यादि वकीलके नम्र वचन सुनकर दीवान दरबारासिंहजीने जागीर तो स्वीकार करली। परन्तु खिलतका विचित्र दृश्य हुआ। जिस सिक्खको दीजाती वही पीछे फेंककर कहता कि, हमलोग अपने गुरुके प्रतापसे स्वयं बादशाह हैं। हमलोगोंको मुसलमानोंके वशवर्त्ती होनेमें क्या लाभ है ? । कुछ देरी तक खिलतकी यही दशा होती रही। तब फिर वकील साहबने हाथ जोडकर पंथखालसाके आगे प्रार्थना करी। तो एक कपूरसिंह-नामक जिमीदार जो कि, उसकालमें सिक्खसमाजको पंखा कर रहा था सबकी सम्प्रीतिसे बादशाही खिलत तथा खिताबका अधिकारी बनाया गया।

उसी दिनसे कपूरसिंह नव्वाबके खिताबसे प्रख्यात हुआ। और सिक्खलोगभी जागीर पाकर लूट मारको छोड आनन्दपूर्वक श्रीअमृतसरमें निवास करने लगे। सिक्खोंका शान्त भाव देखकर लाहौरके नाजमने वह जागीरें जो कि प्रथम जब्त करीगई थीं सभी फिर सिक्खोंको देदीं। और बहुतही प्रेमसे वर्त्ताव करनेलगा। सिक्खलोगभी उसके साथ शिष्टाचारका वर्त्ताव रखने लगे। जो कुछ जागीरकी आमदनी या श्रीहरिमन्दिर की पूजाका पैसा आता वह सब हरिमन्दिरके कोषमें जमा किया जाता। और उसमेंसे दीवान दरबारासिंह तथा नव्वाब कपूरसिंहके द्वारा समय २ पर यथायोग्य सब सिक्खोंको अन्न वस्त्रादि बांटदिया जाता। उस कालमें सिक्खजातिका परस्पर बहुतही सम्प था। जाति पांतिकी मिथ्या ऊंच नीचताका किसीके चित्तमें संकल्पभी नहीं फुरा करता था। सभी आपसमें एक दूसरेको सहोदर भाइयोंकी तरह माना करते थे। जो मनुष्य बाहरसे कुछभी पैदाकरके लाता गुरुके खजानेमें लाकर जमा करदेता। हर एक सिक्ख आपसमें बहुतही प्रेमसे वर्त्ताव करते। सभी मिलकर एक पंक्तिमें खाना खाते। एकही स्थानमें बैठते तथा सोते। यदि दैवात् कोई किसी पर शिकायत करता तो अकालबुंगेके दीवानमें उनका ऐसा न्याय होता कि वादी प्रतिवादी दोनों प्रसन्न हो जाते। उस समयमें सिक्खलोगोंका प्रबन्ध एक दर्शनीय था। और श्रीअकालबुंगेके दीवानका न्याय सिक्खजातिमें बहुतही सन्मानपूर्वक स्वीकार किया जाता था।

दीवान दरबारासिंह नव्वाब कपूरसिंह हरिसिंह द्वीपसिंह जस्सासिंह रामसिंह कर्मसिंह अतरसिंह विनोदसिंह शेरसिंह गुरुबख्शसिंह भूमासिंह काहनसिंह सज्जनसिंह तथा भाई मनीसिंह इत्यादि बहुतसे सिक्ख लोग जिन्होंने स्वयं श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजसे श्रीगुरुग्रन्थ साहबजीके गुह्यार्थ श्रवण किये थे। यह लोग दिल्लीसे माता सुन्दरीजीके भेजे हुए सिक्खोंके दोनों दलोंका फसाद शान्त करनेके लिये श्रीअमृतसरजीमें आये थे। तबसे यह लोग अमृतसरहीमें निवास करने लग

गये प्रतिदिन पन्थखालसाको गुरुग्रन्थसाहबकी कथा तथा श्रीगुरुजी-के खालस सिद्धान्तके सचाईसे भरेहुए सदुपदेशोंको सुनाकर लाभ पहुँचाया करते थे । प्रथम आद्य गुरुग्रन्थसाहबमें श्रीगुरुनानकादि गुरुओंकी तथा कबीर नामदेवादि भक्त जनोंकी वाणी मिश्रित रूपसे लिखी हुई थी । अर्थात् किसीभी रागका कोई शब्द गुरुजीका या भक्तोंका शीघ्रतासे मिलना बहुतही कठिन था । क्योंकि रागोंका या वाणीका कोई भी क्रम न था । भाइ मनीसिंहजीने रागोंका तथा वाणि-योंका क्रम बाँधकर नूतन गुरुग्रन्थ साहब तैयार किया अर्थात् जैसे सबसे प्रथम श्रीराग लिखा । उसमें सबसे प्रथम श्रीरागमें कही हुई गुरुनानकजीकी वाणीका संग्रह । फिर गुरु अंगदजीकी ऐसेही गुरु-ओंकी वाणियोंके पीछे उसी रागकी भक्तोंकी वाणियोंका संग्रह किया । ऐसेही सब रागोंमें सभी गुरुओं तथा भक्तजनोंकी वाणियोंका क्रम बाँधके भाई मनीसिंहजीने अतिश्रद्धाभक्तिसे नूतन गुरुग्रन्थसाहिब तैयार करके खालसा दीवानमें प्रसन्नता लाभ करनेके लिये पेश किया । पन्थखालसामें यद्यपि भाई मनीसिंहजी जैसे विचारशील दीर्घदर्शी विद्वान् लोग बहुतही न्यून संख्याके थे तथापि श्रीगुरुजीके वचनोंमें प्रेम तथा दृढ विश्वास रखनेवाले सहस्रों नहीं लक्षों थे । और वेही लोग पूर्वोक्त श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके वचनानुसार श्रीगुरुग्रन्थसाहबके पूर्णभक्त थे । यहांतक कि श्रीगुरुजीके पश्चात् गुरुग्रन्थसाहबहीको गुरुजीका शरीर मानते । जो अदब कवायद श्रद्धा भक्ति श्रीगुरुजीके संबन्धसे सिक्खलोग किया करते । ऐन वैसेही गुरुग्रन्थसाहबकी मर्य्यादाका भी पालन करते । उस श्रद्धापूरित सिक्खसमाजने भाई मनीसिंहजीके सत्कार्यकी श्लाघा तो क्याही करनी थी उल्टा यह शाप दिया कि भाईजी जैसे आपने गुरुग्रन्थसाहबजीके बन्द बन्द जुदा करडाले हैं वैसेही आपके भी होने चाहिये । ऐसेही कई एक सिक्खोंके मुखसे एकदम सहसा निकला यद्यपि भाई मनीसिंहजी जैसे असाधारण गुरुके सिक्खका किया हुआ सार्वजनिक सत्कार्य

श्रीगुरुजीके सद्गुण ग्राही हृदयके प्रतिकूल या उसीद्वारा औरही किसीके अनिष्टका हेतु कदापि नहीं होना चाहिये। तथापि दृढप्रत्यय पूर्वक कहा हुआ सिक्खसमाजका शाप भाई मनीसिंहजीको स्वल्पकालहीके पीछे अनुभव करनाही पडा । उन्हीं दिनोंमें संवत १७९१ विक्रमीमें दीवान दरबारासिंहजीका शरीर शान्त होगया । उनके पश्चात् नव्वाबकपूरसिंह फतहसिंह बुद्धासिंह सुचेत सिंह इत्यादि विचारशील सिक्खोंने विचार किया कि इसकालमें सिक्ख समाजके अधिक होजानेके कारण इन सबका खान पानादि व्यवहार एक स्थानमें चलना कठिन है। इसलिये प्रमुख विचारशीलोंने विचार करके सिक्खोंको दो दलोंमें बांटदिया। चालीस वर्षसे कम आयुवालोंका एक दल बनाकर उसको फिर पांच भागोंमें बांटदिया। उन पांचों भागोंमें अफसरोंको नियतकरके उन सबका नाम तरुणदलखालसा रक्खा और पांचों दलोंके खान पानका प्रबन्ध पाँचस्थलोंमें किया गया । शेषरहा कपूरसिंह रामसिंह इत्यादि वृद्धलोगोंका समाज वह कुछ न्यून होनेके कारण चार भागोंमें बैटकर निर्वाह करनेलगा तरुणदल खालसामें पंचम दल मजबी सिक्ख तथा खदासी सिक्खोंका भी था। इन सभी दलोंके सिक्खोंने प्रथम श्रीअमृतसरजीके तालाबके चौतरफे अपने निवासके स्थान तैयार किये।

पश्चात् शस्त्र वस्त्र सजाकर तथा निशान नगारोंको साथ लेकर सबने देशमें पर्यटन करना शुरू कर दिया। इन वृद्ध तथा युवा सिक्खोंके हरएक दलमें पांच २ छः छः सौ सिक्ख नियत थे। यह लोग देशमें जहां तहां शान्तिपूर्वक दौरा किया करते थे जो कुछ बाहरसे भेंट पूजा मिला करता लेकर अमृतसरमें चलेआते। बहुत दिनोंतक सिक्खलोगोंने इसी तरह शान्तिपूर्वक निर्वाह किया। पीछे बहुतसे सिक्खलोग अपने २ घरोंको चलेगये । और कई लोग भिन्न २ गुरुस्थानोंमें जाकर निवास करने लगे और बहुतसे सिक्ख जो कि प्रतिष्ठित थे उन्होंने अपने निवासके स्थान श्रीअमृतसरजीहीमें निर्माण

करवालिये । वृद्ध सिक्खोंका दल वहांसे हसारकी तरफ दौरा करता निकलगया । कईएक जो कि बहुत वृद्ध थे अमृतसरमें ही बनेरहे ।

इति षट्पंचाशोऽध्यायः ॥ ५६ ॥

अथ सप्तपंचाशोऽध्यायः ॥ ५७ ॥

उधर खान बहादुर सूबा लाहौरने भी देखा कि बहुतसे सिक्खलोग इधर उधर बिखरगये हैं । इनका फिर एकस्थानमें एकत्र होना दुर्घट है । तो उसने दीवान लखपतरायको जो कि, जागीरोंके प्रबन्धपर नियत था दिल्लीके बादशाहकी तरफ़से सिक्खलोगोंकी जागीरें जब्त करलेनेका हुक्म दिया । और कहा कि, जिसको आवश्यकता हो वह सिक्ख बादशाही नौकरी कर सकता है । दीवान लखपतरायने वैसेही सिक्खोंको लिखभेजा जिसके जवाबमें सिक्खोंने यह लिखा कि हमको किसीकी ताबेदारी करनी स्वीकार नहीं है । हां यदि बादशाहपर कदाचित् कोई शत्रु चढकर आवेगा तो उस समयमें हमलोग सहायक अवश्य होंगे । परन्तु जागीरोंका जब्त करना परस्पर प्रतिज्ञाके विरुद्ध होनेसे फूटका या फसादका कारण अवश्य होगा । फिर नव्वाब खानबहादुरने लिखभेजा कि, तुमलोग काश्तकारी करके अपना निर्वाह करो । तुमलोगोंसे भूमिकर मालगुजारी नहीं लिया जावेगा । परन्तु देशमें शान्ति बनाये रक्खो । इसका जवाब सिक्खोंने कुछभी न दिया । खानबहादुर सिक्खजातिको जैसे कैसे निर्बल करनेके अनेक प्रकारके प्रबन्ध किया करता था । परन्तु सिक्खलोग भी उसके फरेबोंसे खूबही परिचित थे । इसलिये उसके पेचमें नहीं आते थे । अन्तमें जब जागीर सब जब्त करली गई । तो सिक्खलोगोंने भी वैशाखमास संवत् १७९२ विक्रमीसे फिर वही अपना लूटमारका प्रथम चलनही स्वीकार किया । और दूर दूरतक मुसलमानोंके अच्छे २ ग्राम एक थोडेही दिनोंमें लूटके तबाह करदिये । अन्तमें सूबा

लाहौरने इस समाचारको सुनकर दशसहस्र गश्तीफोजको अपने छोटे भाई तथा दीवान लखपतरायके साथ देकर सिक्खोंका बलवा शान्त करनेके लिये रवाना किया और प्रजामात्रमें यहभी बुनियादी सुनाई कि, जो मनुष्य सिक्खोंको मुखबरी करके पकड़वावेगा उसको शाहीदरबारकी तरफसे इनाम मिलेगा चार मासतक गश्तीफौज सिक्खोंके पीछे लगी रही जगह २ पर मुकाबिलाभी होता रहा। कभी गश्तफौज सिक्खोंको भगा देती और कभी सिक्ख गश्तीफौजको भगा देते। परन्तु मुसलमानोंके जब मुखलसखानादि बहुतसे प्रसिद्ध २ सरदारलोग मारेगये। तौ लाचार होकर खानबहादुर नामक सूबा लाहौरने उनकी सहायताके लिये और बहुतसी फौज रवाना करी। उस सहायतासे गश्तीफौजने सिक्खोंको दरियाय शतद्रुसे पार भगादिया। परन्तु तरुणदल खालसाने आपसमें मिलकर थोडेही दिन पीछे फिर पंजाब देशपर चढाई करी। और दरियाय शतद्रुसे पार होकर बहावलपुर मुलतानकी तरफ लूट मार मचानेलगे॥

उधर वृद्ध सिक्खोंका दलभी हांसी हसार प्रान्तमें लूटमार करता हुआ बरनाला प्रान्तमें ठीकरीवाले ग्राममें आन पहुँचा। मालवादेशके सिक्खोंने उस वृद्धदलकी बहुत सेवा भक्ति करी और अपनी कमाईका दशम अंश जो कि उन लोगोंने बहुत दिनोंसे जमा कर रक्खा था सभी वृद्धदलको अर्दास करदिया। और नव्वाब कपूरसिंहजीकी पृथक् पूजा करी उन दिनोंमें नव्वाब कपूरसिंहजी सिक्खोंमें बहुतही पूज्य थे। सिक्खलोग उनको सिद्धि ऋद्धि सम्पन्न महापुरुष समझते थे इसी वृद्धदलको राजा आलासिंह नामक बहनालिया अपने घर बहनालोंमें ले गया। और अपने पुत्र लालसिंह तथा दौहित्र अमरसिंहजीको नव्वाब कपूरसिंहजीके हाथसे अमृत छकवाया। बहुतसा नकद रुपया तथा बारा घोडे अर्दास कराकर सन्मान पूर्वक वृद्धदलको रवाना किया। पश्चात् यही वृद्धदल धीरे २ यात्रा करता हुआ संवत् १७९३ विक्रमीके दीपमालिकाके मेलेपर श्रीअमृतसरजीमें चला

आया । इस वार्त्ताके सुनतेही सूबा लाहौरने चार सरदारोंके साथ बहुतसी फौज देकर उनकी तरफ रवाना कर दिया । कार्तिक मिति २ संवत् १७९३ विक्रमीमें नव्वाब कपूरसिंहजीका लाहौरके सूबाकी फौजसे अमृतसर प्रान्तके वासरके ग्रामके समीप गुरुकी बीडमें मुकाबिला हुआ। बहुतही भारी युद्ध हुआ । दोनों तरफके अनेक शूरवीर मारेगये । अन्तमें सिक्खलोग पराजित होकर चूहानीयाँके जंगलमें भाग गये ।

उस कालमें तरुणदल खालसाभी भिन्न २ प्रान्तोंमें दौरा कररहा था। उन सबने वृद्धदल खालसाके पराजित होनेका हालभी सुन पाया। उसी वक्त कूच करके आन वृद्धदलके सहायक हुए । तरुण दलखालसाके आतेही फिर युद्धका मैदान गरम हुआ । दोनों तरफके बहुतसे शूरवीर मारेगये । अन्तमें बादशाही फौज पराजित होकर भाग गई । और सिक्खोंने प्रान्त २ में पर्यटन करके मुसलमानोंकी दिहातोंको मारना लूटना शुरू किया । यद्यपि स्यालकोट वजीराबाद रावलपिण्डी पठानकोट गुरुदासपुर इत्यादि शहरोंके हाकिमोंने सिक्खोंका बलवा शान्त करनेके लिये बहुतही प्रयत्न किये तथापि स्वतन्त्र स्वभाववाली तथा अप्रतिहत बलवीर्य्यवाली सिक्खजातिके आगे उनकी एकभी न चली । प्रत्युत अवनतिके स्थानमें सिक्खजातिकी प्रतिदिन उन्नतिही होती चली गई ।

अन्तमें बहुत दुःखी होकर खानबहादुर नामक नाजम लाहौरने अपने विचारशील काजी मौलानोंकी सभा लगाकर सिक्खकौमके प्रतिदिन वृद्धि पकडनेका कारण पूँछा । उन लोगोंने मिलकर यह जवाब दिया कि ऐसा मालूम होता है कि इन लोगोंके पेशवा गुरुओंमेंसे किसीने अर्श (स्वर्ग) से आवहयात (अमृत) लाकर इस अमृतसरके तालावमें डाला होगा । जिसके स्नान पान करनेसे यह प्रतिदिन दुगुन चौगुन होते जाते हैं । हम लोगोंके विचारसे जबतक वह तालाब मट्टीसे पूरित न किया जावे और सिक्खलोगोंको उसमेंसे

स्नान करनेसे बन्द न किया जावे तबतक सिक्खोंकी अवनतिका होना दुर्घट है । नाजम लाहौरके चित्तमेंभी इस वार्त्ताका सम्भव प्रतीत हुआ । और उसी वक्त दो प्रसिद्ध काजियोंके साथ गश्ती फौज देकर अमृतसरमें भेजदिया । हुक्म दिया कि चारों ओरसे अमृतसरके तालाबकी चौकशी करी जावे । कि कोई सिक्ख उस तालाबमें स्नान न करने पावे । और आगेको दीपमालिकाका मेला न होने पावे । बादशाही फौजने अमृतसर पहुँच कर वैसेही किया । उस कालमें बाहर दौराकरनेवाले सिक्खोंका कोई दलभी वहांपर विद्यमान न था ।

मुसलमानोंने सिक्खोंको उस तालाबमें स्नान करनेसे तथा हरिमन्दिरमें जाने आनेसे सर्वथा बन्द कर दिया । और जो सिक्खलोग उस तालाबके आसपास रहा करते थे, उनको दूर जाकर रहनेका हुक्म दिया । और हिन्दू या मुसलमान लोग चाहे आवें जावें परन्तु सिक्ख शकलके पुरुषका जाना आना तो बहुतही कठिन होगया । उधर सिक्खलोगोंनेभी विचारा कि यह स्थान जंगका नहीं है । यदि यहांपर जंग हुआ तो हमारे गुरुस्थान हरिमन्दिरकी बेअदबी अवश्य होगी । इसलिये सिक्खलोग शान्तरहे और जैसे कैसे मुसलमानोंका अनुसरण करने लगे । उन्हीं दिनोंमें भाई मनीसिंह जो कि बन्दई सिक्खोंके तथा गुरुके सिक्खोंके परस्पर विवाद शान्त करनेके लिये दिल्लीसे आये थे खास श्रीहरिमन्दिरजीकी सेवामें रहा करते थे जब उसनेभी मुसलमानोंकी बहुत सख्ती देखी तो अपना वेश ऐसा बनालिया कि कोई निर्णयही न करसके कि क्या यह सिक्ख है या हिन्दू है कि मुसलमान है । भाई मनीसिंहजीका हरिमन्दिरकी सेवाके सिवाय प्रतिदिन कुछ सदुपदेश करनेकाभी नियम था । उन दिनोंमें उपदेशभी ऐसी मध्यराशिका करने लगे कि हिन्दू मुसलमान दोनों सुनकर वाह वाह किया करते । भाई मनीसिंहजी अपने उपदेशमें साधु फकीरोंकी अधिक प्रशंसा किया करते । इसलिये उनके पास हिन्दू मुसलमान श्रोताओंके अतिरिक्त अनेक साधु फकीर भी आन जमा

होते । भाई मनीसिंहजी साधु फकीरोंका सन्मानभी बहुतही किया करते । आपके प्रेममय उपदेशमेंभी ऐसी शक्ति थी कि हिन्दू मुसल्मान जो एकबार सुनता था पीछे लगजाता था । अच्छे २ प्रतिष्ठित मुसलमान फकीरोंके साथ आपका ऐसा प्रेम बँधगया कि प्रतिदिन बिना मिले न रहते । उन मुसलमान फकीरोंहीके सम्बन्धसे बादशाही हाकिमोंके साथभी मेल मुलाकात अच्छी तरहसे होगया था । आपका सादा फकीराना वेश तथा मीठी वाणी हरएक हिन्दू मुसल्मानके चित्तको आकर्षित किया करती थी । अनेक इतिहास पुराणोंके प्रसंगोंका विचार तथा कुरान हदीसोंके आयतोंका उच्चार हरएक हिन्दू मुसल्मानके चित्तको संतुष्ट करदेता था । आपके साधुवेश तथा सरल स्वभावको देखर किसीको सिक्ख होनेकी शंकाभी नहीं होती थी । प्रतिदिन हरिमन्दिरके आसपास रहकर जैसे बनता उस स्थानकी उन्नतिका प्रयत्न किया करते ।

यदि कोई मुसल्मान सिपाही किसी मनुष्यको हरिमन्दिरमें आनेकी रोक टोक करता तो उसको अपनी प्रेममयी मधुर वाणीसे समझा बुझाकर ऐसा सूधा करते कि वह फिर कदापि किसीके आने जानेमें प्रतिबन्धक न होता । दो वर्षतक इसी तरह होता रहा । पश्चात् भाई मनीसिंहजीने विचारा कि सर्वतरहसे शान्ति है । और मुसलमान हाकिमभी प्रायः मानते हैं । तो श्रीअमृतसरजीमें दीपमालिकाका मेला जिसमें सिक्खसमाजके परस्पर मेलसे एक अपूर्व आनन्दका दृश्य उत्पन्न होता है फिर नियत करना चाहा उसीके प्रबन्धके लिये भाई मनीसिंहजीने मुसलमान फकीरोंद्वारा काजी अबदुलरजाक नामक अमृतसरके हाकिमसे सम्मति पूंछी तो उसने यह उत्तर दिया कि नाजम लाहौरको लिखनेसे इस वार्त्ताका निश्चय होसकता है यदि वह हुक्म देवें तो शान्ति पूर्वक मेला होजानेमें कोई क्षति नहीं है । भाई मनीसिंहजीके कहनेसे काजी अबदुलरजाकने सूबा लाहौरको लिख-भेजा । उसने यह उत्तर लिखा कि यदि पांच हजार रुपया महसूलका

देना स्वीकार हो तो मेला होनेकी इजाजत मिल सकती है। क्योंकि मला होनेमें अनेक तरहके लोग आन जमा होते हैं। उनका प्रबन्ध करनेके लिये पुलिस आदिका खर्च अवश्य अधिक पडता है। वह यदि किसीको देना मंजूर हो तो होनेकी इजाजत दी जावेगी। इधर भाई मनीसिंहजीने शोचा कि यदि मेला होगा तो पांच हजार रुपया महसूलका देना कुछ वस्तु नहीं है। अनेक श्रद्धालु गुरुजीके सौदागर भक्तोंके एकत्र होनेसे बहुतसा नकद जिन्स हरिमन्दिरमें पूजाका आवेगा। उसमेंसे पांचसहस्र निकाल कर महसूलका दिया जावेगा। शेष हरिमन्दिरकी मरम्मत आदिके कार्योंमें खर्च किया जावेगा। इत्यादि विचारसे पांचसहस्र रुपया महसूलका देना स्वीकार करके भाई मनीसिंहजीने दीपमालिकाके मेले लगनेकी आज्ञा लाभ करी और देश देशान्तरमें प्रसिद्ध २ सिक्खों तथा गुरुके श्रद्धालु भक्तों सौदागरोंके नाम जहां तहां पत्र लिख भेजे कि संवत् १७९५ विक्रमीमें दीपमालिकाका मेला श्रीअमृतसरजीमें हाकिमोंकी आज्ञाके अनुसार बडी धूम धामसे होगा इसलिये श्रीगुरुजीके प्रेमी भक्तोंको इस मंगलसमयपर अवश्य दर्शन देकर मेरे जैसे अधिकारी पुरुषोंको कृतार्थ करना चाहिये। मेला लगनेके समाचार सर्वत्र पहुँच गये। बहुतसे लोग पत्र देखतेही उत्साहसे चलभी पडे। धीरे २ दीपमालिकाका मेला समीप आता जाय त्यों त्यों श्रीअमृतसरजीमें देश देशके सिक्ख सौदागर भक्त तथा साधुलोगोंका जुटाव भी होता जाय उधर सूबा लाहौरका चित्त अपनी प्रतिज्ञापर दृढ न रहा। उसने शोचा कि मेलेके अवसरपर अमृतसरमें अच्छे २ सिक्ख एकत्र होंगे। इसलिये ऐसे कालमें उनके गिरफतार करलेनेमें कुछ अधिक श्रम न होगा। अन्यथा ऐसा समुदाय फिर एकस्थलमें मिलना कठिन होगा। ऐसा विचार कर दीपावलीके मेलेमें १५ दिन प्रथम कई सहस्र सेना अमृतसरके चारों ओर घेरा डालकर रहनेके लिये भेजदिया। भाई मनीसिंहजीने फिर पूछा कि यदि मेला लगनेकी इजाजत है तो इतनी

फौज भेजनेका कौन काम है ? । जिसका उत्तर सूबा लाहौरने यह लिखा कि यह फौज केवल मेलेके प्रबन्ध करनेके लिये भेजी गई है । भाई मनीसिंहजीने कहा कि शहरकी पुलिस प्रबन्ध करनेके लिये बहुत है नव्वाब लाहौरने लिखा कि पीछे कुछ फसाद होजावे पुलीससे उसका प्रबन्ध न बनसके तो उसका जुम्मेदार कौन होगा ? । इसलिये प्रथमहीसे अच्छा प्रबन्ध किया गया है । परन्तु सिक्खोंके मनमें सूबा लाहौरकी सभी बेईमानी खटक गई । जो अमृतसरमें आये थे सभी एक २ दो २ होके चलदिये । और मार्गमें आनेवालोंकोभी फौजका हाल सुनाकर पीछे फेर दिया । इसी तरह सभी सिक्ख भक्तलोग मेलेमें आनेसे रुकगये । और जो आये थे धीरे २ चलेगये । दीपमालिकाके दिन केवल दो चारसौ साधु अभ्यागत हरिमन्दिरके आसपास देखनेमें आये । पूजाका एक पैसाभी न आया अर्थात् बादशाही फौजके भयसे मेला कुछभी न लगा ।

इतिसप्तपञ्चाशोऽध्यायः ॥ ५७ ॥

अथाष्टपंचाशोऽध्यायः ॥ ५८ ॥

उधर सूबा लाहौरने मेला लगने न लगनेका कुछ विचार न किया किन्तु दीपमालिकाके दिनसे दो चारदिन पीछे भाई मनीसिंहजीसे मेला लगनेके हुक्म देनेका रुपया वसूल करनेका हुक्म दिया । परन्तु भाई मनीसिंहजीके पास उसकालमें नकद रुपया कुछभी न था । इसलिये गिरफ्तार होकर लाहौरमें भेजे गये । वहांपरभी उन्होंने सूबाके सामने पहुँचतेही और किसी तरहके अदब कायदेके शब्दको न कहकर केवल “ श्रीवाहगुरुजीकी खालसा श्रीवाहगुरुजीकी फतह है ” इसी वाक्यका उच्चस्वरसे उच्चारण किया । जिसको सुनकर सूबा औरभी जलबलकर कोला होगया । और भाई मनीसिंहजीको रुपया दाखिल करनेका सख्त हुकम सुनाया ।

यद्यपि भाई मनीसिंहजीने बहुत कुछ कहा कि यदि मेला होता कुछ पूजा आती तो उसमें महसूलका रुपयाभी अवश्य दिया जाता। परन्तु मेला न भरनेके कारण आमदनी एक पैसा-कीभी नहीं हुई तो महसूल कहांसे दिया जावे। तथापि सूबाने इन बातोंमें एक न सुनी और रुपया वसूल करनेके लिये प्रथम तो अनेक तरहका क्लेश देना आरम्भ किया। अन्तमें जब देखा कि रुपया वसूल होनेकी कोई शकल नहीं देखपडती तो उसी वक्त काजी लोगोंसे बुलाकर पूछा। कि जा मनुष्य अपने वचनका पालन न करे उसके लिये शरह मुहम्मदीमें कौन दण्ड देनेका हुक्म है। काजीलो-गोंने सम्मति करके कहा कि यदि कोई दीन इस लामका मनुष्य ऐसा करे तो उसका एकवार माफ करना लिखा है। और यदि कोई दीन इसलामके न माननेवाला पुरुष ऐसा करे तो उसको इसी अपराधमें दीन इसलाम कबूल कराया जाय। लाचार अपनी बदनसीबीसे यदि दीन इसलामको न स्वीकार करे तो उसके बन्द बन्द जुदा करके मरवा डालनेकी आज्ञा है। सूबा लाहौरने काजी लोगोंके मन्तव्यानुसार भाई मनीसिंहजीको मुसलमान होनेके लिये कहा जिसका जवाब भाई मनी-सिंहजीने यह दिया कि मैं इस स्वल्प जीवनके लिये अपने धर्मसे विमुख होना नहीं चाहता। सूबाने कहा भाईजी जानसे धर्म अच्छा नहीं है। भाईजीने कहा सूबाजी आपके निश्चयमें जो हो परन्तु मैं तो अपने पवित्र धर्मपर ऐसी २ लाखों जानें होंतो वारकर धर्मको फिरभी न छोडूं। भाई मनीसिंहजीके दृढनिश्चयको देखकर लाचार सूबाने बन्द २ जुदा करनेका हुक्म दिया। भाई मनीसिंहजी प्रसन्न होकर जल्लादोंके साथ चलपडे। परन्तु लाहौर शहरमें इस हुक्मके सुनतेही हाहाकार मचगया। कई एक सिक्खलोग जो उसकालमें लाहौ-रमें रहा करते थे उन्होंने उसी वक्त चन्दा करके पांच हजार रुपया एकत्र कर लिया। और भाई मनीसिंहजीके छुडानेके लिये जल्लाद जो कि दरवाजासे बाहर बन्द २ जुदा करनेके लिये जाते थे उनको

मार्गमें जामिले। और उनके साथके सिपाहियोंको कहा कि जिस रुपयाके लिये तुम भाई मनीसिंहजीको कतल करनेके लिये जाते हो वह रुपया हाजिर है। इसको लेलो और इनको छोडदो। सूबाके भयसे सिपाहियोंने तथा जल्लादोंने इस वार्त्ताको अंगीकार न किया। किन्तु ऐसे कहा कि रुपया हाकिमके पास सामने लेजावो यदि वहांसे हुक्म आवेगा तो हम स्वयं इनको छोडदेंगे। इस वार्त्ताको सुनकर सिक्ख बेचारे अनेकतरहके विचारमें पडगये। कोई कहने लगा कि अभी सूबाकी कचहरीमें जाकर रुपया जमा करके रिहाईका हुक्म लिखालाना चाहिये। दूसरेने कहा कि मुसलमानी कचहरीसे इतनी जल्दी कार्य्य होनेकी आशा नहीं है। तीसरेने कहा कि यदि हम रुपया भरकर रिहाईका हुक्म लिखाभी लाये तो आनेतक जल्लादोंने इनके प्राण लेडाले तो दोनों तरफसे हाथ धोकर बैठना होगा। चौथेने कहा कि भाई मनीसिंहजीसे सम्मति पूछके जैसे वह कहें करना उचित है। अन्तमें सबने मिलकर भाई मनीसिंहजीसे पूछा तो उन्होंने प्रसन्न होकर यह उत्तर दिया कि अय मेरे प्यारे बन्धुओ! यह समय अब अधिक विचार करनेका नहीं है। जैसे सर्वान्तरयामी परमात्माकी इच्छा है वैसेही होगा। अवश्य भावि कार्य्योंमें अधिक विचार करना बुद्धिमता नहीं है। यह शरीर कदापि सर्वदा रहनेवाला नहीं है। और जो मेरा वास्तवस्वरूप है उसका कोई विनाश नहीं करसकता। ऐसे साधारण मृत्युसे इस धर्मनिमित्तसे मरनेकी मेरेको औरभी प्रसन्नता है। आपलोगोंको इसकालमें मेरेलिये कुछ विचार नहीं करना चाहिये। मैं इसी अवसरपर मरनेको बहुतही प्रसन्न हूं। श्रीगुरुतेगबहादुरजी जैसे महापुरुषोंने धर्मपर प्राण देनेमें आहतक न करी। तो मेरे जैसे साधारण पुरुषोंके अकिंचितकर शरीरकी कौन गणना है। मैं अपने दुःखकी सहानुभूतिके बदलेमें आपलोगोंको कोटिशः धन्यवाद देता हूं। आपलोगोंके धैर्य्य तथा दृढविश्वाससे जैसे चाहोगे वैसेही होगा यवनोंके अत्याचारकी सीमा पूरी हुई चाहती है। आप-

लोग श्रीगुरुजीके चरणोंमें विश्वास रखके निरन्तर प्रयत्न किये चले जावो। एक समय ऐसा होगा कि आपलोगोंके सामने कोई दम नहीं मार सकेगा। सिक्खोंने कहा भाईजी आपके पुण्यरूप शरीरके रहनेसे हमलोगोंका बहुतही उपकार था। आपके सदुपदेश हमारे कलुषित चित्तोंको पवित्र किया करते थे। भाई मनीसिंहजीने कहा हे भाइयो! आपका कहना सत्य है। परन्तु मुझे पन्थखालसाके शापकोभी ता अङ्गीकार करना है। गुरुग्रन्थसाहिबकी वाणीके क्रम बाँधनेके अपराधमें मेरेको पन्थखालसाका शाप मिला था कि जैसे तैंने गुरुग्रन्थसाहिबके बन्द २ जुदा करडाले हैं वैसे तुम्हारेभी होना चाहिये। सो उस शाप भोगसे मुक्त होनेका अकस्मात् उचित समय आन प्राप्त हुआ है। इसमें दूसरा विचार करनेकी आवश्यकता नहीं है। और नीतिका वचनभी है कि-

सर्वे विनाशिनो भावाः पतनान्ताः समुच्छ्रयाः॥
संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तं हि जीवितम्॥ १॥

अर्थात् सम्पूर्ण भावकार्य्य विनाशी हैं। वृद्धिंगत अधःपतन होनेवाले हैं। संयुक्त पदार्थ वियुक्त होनेवाले हैं। तथा जन्मको प्राप्त हुए मृत्यु होनेवाले हैं॥ १॥ जब वस्तुमात्रकी यही दशा है तो इस आगमापायी सांसारिक पदार्थोंमें अधिक आसक्तिकी आवश्यकताही क्या है। श्रीगुरुतेगबहादुरजीकाभी वचन है कि-

चिन्ता ताकी कीजिये, जो अनहोनी होय।
इह मारग संसारको, नानक थिर नाहिं कोय॥ १॥

इसलिये मेरेको इसकालमें कुछभी शोक नहीं है। प्रत्युत अपने अहोभाग्य समझता हूँ। इसी तरहके सदुपदेश करतेहुए भाई मनीसिंहजी उस नियत स्थानपर पहुँचगये। सिक्खोंको हाथ जोड फतह बुलाकर पीछे लौटादिये। और आप जल्लादोंके सामने अपना बन्द २ जुदा करवानेके लिये बैठगये। उस समयका आपका दृढ प्रत्यय तथा

धैर्य धर्मवीरोंका एक अपूर्व दृश्य तथा प्रशंसनीय था । जब जल्लादने आपके बन्द२ जुदा करडालनेके लिये प्रथम हाथ पाउं पर शस्त्राघात करना चाहा । तो आपने जल्लादसे कहा कि भले पुरुष इतनी शीघ्रता मतकर किन्तु धीरेसे प्रत्येक बन्दको जुदा करदो । प्रथम हरएक अंगुलीके तीन २ टुकडे करो । पीछे हाथ पाउं काटो । उसके पश्चात् टांग तथा बांहुको मध्यसे काटो । फिर दोनोंको मूलसे काटो । तो बन्द बन्द काटनेका हुक्म पूर्ण होगा । जल्लादने सुनकर वैसेही किया आपने श्रीवाहगुरु, इस महामंत्रका जाप करते हुए जल्लादसे सभी अंग प्रत्यङ्ग जुदा करवालिये परन्तु मुखसे सिवाय भजन पाठ के 'आह' या 'सी' तक न उच्चारण किया । उसकालमें जल्लादकी बेहरमी तथा आपका धैर्य दोनोंही एक अपूर्व उदाहरण रूप थे । अन्तमें जल्लादने जब धडसे शिरको जुदा किया । तो साथही गुरुवाणीका पाठभी बन्द होगया । धन्य धैर्य धन्य निष्ठा धन्य विश्वास धन्य दृढप्रत्यय तथा धन्य गुरुकी सिक्खी है । स्मरणकर रोमांच हो आता है । लेखनीभी लिखती हुई । थरथराती है । अश्रुपातसे पत्र भीगने लगता है । चित्त वृत्ति स्तब्ध हुई जाती है । बस सूक्ष्मविचारके न करनेहीसे चित्त ठहरसकता है ।

अन्तमें प्रेमी सिक्खलोगोंने भाई मनीसिंहजीके कटे हुए अंग प्रत्यंग एकत्र करके ममतीदरवाजेके पास लेजाकर दाहक्रिया करी । और वहांपर उनके स्मरणार्थ एक सुन्दर समाधि देहरा बनवादिया । वह समाधि देहरा लाहौरके ममतीदरवाजेके पास अबतक विद्यमान् है । और वह स्थल शहीदगंजके नामसे प्रख्यात है ।

भाई मनीसिंहजीके इस असह्य क्लेशने फिर सिक्खोंको उत्तेजित किया । क्योंकि सिक्खजातिमें श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके पीछे भाई मनीसिंहजीही सबसे अधिक प्रतिष्ठित तथा पूज्य समझे जाते थे । इनकी मृत्युने सिक्खोंको फिर उत्तेजन दिया । सिक्खोंने फिर वही अपना प्रथमवाला चाल पकड लिया । मुसल्मानोंको अनेक

तरहकी तकलीफ देनी शुरूकरदी। जैसे काजी अबदुलरजाक नामक अमृतसरके हाकिमने भाई मनीसिंहजीको बांधके लाहौर भेजा था उसको सिक्खोंने मारडाला। औरभी अनेक मुसल्मान कतल कर दिये। जो मुसल्मान सिक्खोंके सामने आता विना प्राण दिये न जाता। चारों तरफसे तोबा तोबाकी पुकार मचगई अनेक मुसल्मानलोग अपने घर ग्राम छोडकर भागगये। परन्तु इस वार्त्ताका हाल जब सूबा लाहौरको पहुंचा तो उसने सिक्खोंके गदर शान्त करनेके लिये जहां तहां गश्तीफौजको नियत किया। और देशभरमें विज्ञापन पत्र बांट दिया कि जिस ग्राममें कोई सिक्ख दीख पडेगा वह ग्राम उसीवक्त उजाड दिया जावेगा। इसीतरह हर एक प्रान्तके बडे २ जिमींदार ताल्लुकेदार नंबरदारोंको बुला २ कर उनसे प्रतिज्ञापत्र लिखवा लिये। कि तुमलोग अपने २ इलाकेमें किसी सिक्खको नहीं रहने देना। अन्यथा दण्ड दिया जावेगा। इस सख्त हुक्मको सुनकर क्या हिन्दू क्या मुसल्मान सब सिक्खजातिके शत्रु बनगये। जो सिक्ख लूट मार द्वारा फसादका मूल थे। उनपर तो किसीकाभी पानी नहीं चढता था। क्योंकि वह लोग न तो किसी ग्रामके निवासी थे। और न किसी ताल्लुकेमें रहते थे। किन्तु लूटमार करके गहर जंगलोंमें चले जाया करते थे। वहांसे उनको निकालनेकी किसीकी सामर्थ्यही क्या थी। शेष रहे विचारे वह सिक्खलोग जो ग्रामोंमें रहकर काश्तकारीसे अपना पेट पालन किया करते थे। सूबाके इस सख्त हुक्मके होतेही उन लोगोंको विपत्तिका मुख अवश्य देखना पडा। जो सिक्ख जहां कहीं रहता था एक २ के पीछे पचास २ हिन्दू मुसल्मान लगगये। हमारे ग्रामसे निकलजावो जहां चाहो चले जावो। अन्यथा हमारा ग्राम वैरान करदिया जावेगा। इत्यादि वचन कहकर सब प्रान्तोंसे सब सिक्खोंको निकालदिया। बहुतसे सिक्खलोग पंजाब छोडकर मालवा प्रदेशमें चलेगये। और बहुतसे राजपूतानामें जाकर रहने लगे।

उस कालमें बादशाही प्रबन्धभी ऐसा बुरा था कि चाहे कोई कुछ करता रहो मगर कोई पूछनेवालाही न था। इसी कारणसे देशमात्रमें गदर मचा रहता था। हरएक मनुष्य अपनेको स्वयं स्वतन्त्र तथा बादशाह समझता था उसी समयमें एक बूटासिंह नामक डाकू सिक्ख एक दूसरे मजबी सिक्खको साथ लेकर तरनतारनके समीप जंगलोंमें लूटमार करके अपना निर्वाह किया करता था और प्रतिदिन प्रायः छिपा रहा करता था। एक दिन दैवात् उसको दो जिमींदारोंने देख-लिया। तो एक जिमींदारने दूसरेसे कहा कि क्या यह कोई सिंह है? उसने जवाब दिया कि नहीं यह तो कोई शृगाल प्रतीत होता है। क्योंकि यदि यह सिंह होता तो क्या इसी तरहसे छिपा छिपाया फिर-ता? । लुटेरा बूटासिंह उस जिमींदारके तर्क वचनको समझगया और उसी वक्त अपने साथीको साथ लेकर वहाँसे चलदिया। आमृ तसरप्रान्तमें नूरुद्दीनकी सरायके पास बादशाही सडकपर आन बैठा। और केवल अपने हुक्मसे प्रतिगाडी एक आना तथा प्रति गधा या घोडा एक पैसा महसूल लेना शुरू करदिया। बहुत वर्षतक यही हाल होता रहा। उससे किसीने न पूछा कि तुम कौन हो यह महसूल तुम कौन बातका लेतेहो या किसके हुक्मसे लेते हो? । सैकडों बाद-शाही अहलकारभी उसी मार्गसे जा आ चुके परन्तु उससे किसी-नेभी न पूछा अन्तमें उसने बहुतवर्षके पीछे बादशाही प्रबन्धम अन्धेर देखकर सूबा लाहौरके नाम एक पत्र लिखभेजा कि तू बहु-तही अदूरदर्शी है। तथा विचारशून्य नालायक है। मैं कई वर्षोंसे यहांपर महसूल लेरहा हूं। परन्तु तुमको खबरतक नहीं हुई। तू चाहता है कि मैं सिक्खकौमको नेस्तनाबूद कर डालूं। परन्तु तेरेसे कुछ न बन पडेगा यह सिक्खजाति ऐसी जबरदस्त है कि किसी दिन तेरेही-को नेस्तनाबूद करडालेगी। इसके सिवाय और बहुतसी गाली भी लिखभेजी। जिसको देखकर नव्वाब खान बहादुर बहुत दुःखित हुआ।

और उसीवक्त जलालुद्दीन फौजदारके साथ एकसौ सवार देकर बूटासिंहकी गिरफ्तारीके वास्ते रवाना किया ।

इत्यष्टपञ्चाशोऽध्यायः ॥ ५८ ॥

अथैकोनषष्टितमोऽध्यायः ॥ ५९ ॥

जब जलालुद्दीन फौजदार बूटासिंहको गिरफ्तार करनेको गया तो उसने अपने साथी मजबी सिक्खको साथ लेकर उसका खूब सामना किया । आधेसे अधिक सवार मारडाले । अन्तमें दोनों वीर सामने लडकर सर्वोत्तम वीरगतिको प्राप्त हुए । परन्तु जीवितदशामें मुसल्मानोंके हाथ न आये ।

उन्हीं दिनोंमें नौरंगाबाद ग्रामके समीप भाई राम सिंह तथा दयासिंहका बीस पचीस सिक्खोंके सहित हैबतखां रुहेला सरदारसे मुकाबिला हुआ । यह रुहेला सरदार एक सौ सवारको साथ लेकर ताहरखां नामक स्यालकोटके हाकिमकी स्त्रियोंके रक्षामें सरहिन्दको जारहाथा । परस्पर सामना हुआ । प्रथम तो सिक्खोंने उससे किनारा करना चाहा । परन्तु हैबतखान उनको बहुत थोडे जानकर उनपर हमला करदिया । और उच्चस्वरसे पुकारकर कहनेलगा कि अब यहांसे जीते न जाने पाओगे । मैं तुमको एक २ को गिरफ्तार करके लाहौर भेज देऊंगा । सिक्खभी इस वार्त्ताको सुनकर वहांही ठहर गये । और तलवारें खैंच २ कर उनके सामने हो पडे । एक थोडेही कालमें उन सबके दाँत खट्टे करदिये । यद्यपि मुसलमान लोग सिक्खोंसे संख्यामें पांच गुण अधिक थे तथापि उनके सामने उसने कुछभी न बनपडा । हैबतखां सरदार मारागया । बचे सो भागनिकले । पीछे माल असबाब सब सिक्खोंने लूटलिया । जबसे भाई मनीसिंहजी अमृतसरजीको छोडकर चलेगये उससे पीछे मुसलमानोंने किसी हिन्दू या सिक्खको हरिमन्दिरमें या तालाबके समीपतक जाने न दिया ।

प्रत्युत एक मस्सा नामक मुसल्मान जागीरदारने अमृतसरके हरिम-न्दिरमें अपना डेरा आन जमाया और प्रतिदिन हिन्दू तथा सिक्ख-लोगोंके चित्तोंको दुःखित करनेके लिये वहांपर अनेक प्रकारके अनर्थ करने लगा। खास हरिमन्दिरके मध्य प्रदेशमें खाट बिछवाकर बैठकर हुक्का पीने लगा तथा अनेक प्रकारके रण्डी भडुओंके नाच गाने वहां पर बैठकर सुनने लगा। अन्तमें एक बुलाकासिंह नामक सिक्ख अपने परमपूज्य गुरुस्थानकी ऐसी दशा देकर बहुत दुःखी हुआ। और उसी दिन वहांसे रवाना होकर बीकानेर प्रान्तमें जहां पर बहुतसे-सिक्खोंके झुण्ड रहा करते थे आन पहुँचा। और उसी दिन सब सिक्खोंको एकत्र करके श्रीअमृतसरके गुरुस्थानका सभी वृत्तान्त सुनाया। जिसको सुनकर वीरसिक्खोंने बुलाकासिंहको यह तर्क करी कि हमलोगोंको तुम्हारे पर बहुत शोक है कि तुमने अपने पवित्र तीर्थका इसतरहका अपमान देखा और फिर जीते हमारे पास चले आये। उसी कालमें एक बुढॉसिंह नामक सिक्खोंके सरदारने अपनी तलवार मियानसे निकालकर सब सिक्खोंके सामने कहा कि कोई ऐसा वीर सिक्ख है जो इस तलवारसे मस्सा म्लेच्छका शिर काटकर हमारे पास लेआवे। इस वार्त्ताके सुनतेही एक मीरांकोट ग्रामनिवासी महताबसिंह नामक सिक्ख तथा एक माडी ग्रामनिवासी सुक्खाँ-सिंह नामक सिक्ख दोनों उठ खडेहुये। और दीवान खालसाके सामने हाथ जोडकर मस्सा म्लेच्छके शिर काटकर लानेकी प्रतिज्ञा करी। आज्ञापाकर सरदार बुढॉसिंहजीकी उसी तलवारको उठाकर घोडोंपर सवार होकर अमृतसरजीकी तरफ उसी वक्त रवाना हुए ज्येष्ठ मास संवत् १७९७ विक्रमीमें उक्त दोनों सिक्ख अमृतसरमें आन पहुँचे प्रथम तो उक्त दोनोंने अपना वेश मुसल्मानोंका बना-लिया। पीछे दो चार थेलियां पैसोंसे भरकर इलाकाकी मालगुजारी देनेके मिससे दर्शनीदरवाजेपर पहुँचगये।

दोपहरके समय वायु खूब चलरहा था चारोंओर धूलिभी

उडरही थी। इसलिये दोनों सिक्खोंने अपने मुखोंपर कपडे बाँधलिये। और अपने घोडोंकी इलायची बेरके साथ बाँधकर अपने कांधोंपर थैलियां उठाकर हरिमन्दिरके अन्दर चलेगये। मस्सा म्लेच्छ उसकालमें चारपाईपर बैठकर हुक्का पीरहा था। और रंग राग नाच तमाशाभी होरहा था। दस बीस मुसल्मानोंका मण्डल शराब कबाबमीं उडरहाथा। कोई अधिक पीकर मस्तीमें झूम रहा था। मस्सा म्लेच्छकी आंखेंभी नशेमें चूर हो रही थीं। दोनों सिक्खोंने थैलियाँ कन्धेसे उतारकर मस्सा म्लेच्छके सामने रखदी। मस्सा उन थैलियोंकी तरफ देखनेही लगाथा।कि एक सिक्खने तलवार खैंचकर उसका शिर कलम कर लिया। शेष वहांपर जो और मुसलमान बैठे सोते थे उनकोभी मार काट डाला। नाचने गानेवालेभी कतल किये। अन्तमें मस्सेका शिर अपनी थैलीमें डालकर बाहर निकल पडे। और उसी वक्त घोडोंपर सवार होकर चलपडे। बातकी बातमें सभी काम करके कोसों मार्ग निकलगये। पीछे मस्साकी फौजके सिपाहियोंने खबर पाकर उनका पीछाभी किया। परन्तु उनके कुछ हाथ न आया। उधर दोनों बहादुर सिक्ख मस्सा रंघडका शिर लेकर तबतक बीकानेर प्रान्तमें सिक्खोंके मण्डलमें जा पहुँचे। सिक्खोंके मण्डलने उन वीर दोनों सिक्खोंको बहुतही धन्यवाद दिया। और परस्पर अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट करी।

उन्हीं दिनोंमें उधर कुतुबुद्दीन नामक जालन्धरके हाकिमने बडभागसिंह नामक सोढिको करतारपुरके गुरुद्वारेसे निकाल कर उस गुरुद्वारेको जलादिया था। और वहांपर गोवध करवाने लगा। हिन्दू तथा सिक्खोंके पूजास्थानोंको गश्तीफौज वैरान करने लगी। तथा उनकी स्त्रियोंका सतीत्व भ्रष्ट करने लगी। अन्तमें सरदार जस्सासिंह अहलूवालिया जो कि उन दिनोंमें पहाडोंका दौरा कररहा था। उसको इस मुसलमानोंके अत्याचारका समाचार मिला। तो वह अपने साथके सिपाहियोंको साथ लेकर दरियाय व्यासाके किनारेके जंगलमें

मान उतरा। और एकदिन उसी जंगलमें शिकार खेलने आये हाकिम जालन्धरसे उसकी दैवात् भेंट होगई । तो उसने हाकिम जालन्धरका शिर काट डाला । और फिर कूच करके उसी वक्त पर्वतोंमें चलागया । इसी तरहसे सिक्खोंके भिन्न २ झुण्ड जो कि दश २ बीस २ के मिलकर देशमें फिरा करते थे अच्छे २ मुसल्मानोंको जो कि हिन्दूलोगोंपर अत्यार किया करते थे चुन २ कर मार डाले। जब इस वार्त्ताका समाचार सूबा लाहौरको मिला तो उसने अपने देशभरके यावत् जागीरदार जिमींदार तथा नंबरदार लोगोंको बुलाकर कहा कि तुम सब लोगोंने यह कहदिया था कि अब इस देशभरमें सिक्खकौमका एक मनुष्य नहीं रहा है। और इसीही बहादुरीमें आप लोगोंने शाही दरबारसे सहस्रों रुपये इनामकेभी पाये हैं। परन्तु अब तक भी कुतुबुद्दीन जैसे नामी तथा शाही हितचिन्तक हाकिमोंका सिक्खोंके हाथसे नाश हुआ चला जाता है । इसलिये आपलोगोंके कथनपर कैसे विश्वास कियाजावे। इत्यादि अनेक बातें कहकर अन्तमें सूबा लाहौरने मिथ्या बोलकर इनाम लेनेवाले पुरुषोंकी सरेदरबार डाढी मूंछें मुण्डवाडालीं। पश्चात् गश्तीफौजको प्रत्येक प्रान्तमें भेजकर यह हुक्म दिया कि सिक्खोंके स्त्री बच्ची बच्चा बडा छोटा जो सामने आवे सब कतल करदिये जावें और जो हिन्दूलोगभी उनके सहायक प्रतीत हों उनके साथभी वैसाही किया जावे अथवा जबरन् मुसल्मान बनालिये जावें ।

इस हुक्मके हातहा गश्ती फौजने देशमात्रमें आफत मचादई । काश्तकारी करनेवाले सिक्खोंके अनेक ग्राम उजाड दिये । लुटेरे सिक्खोंके झुण्ड उस कालमें प्रायः बीकानेर हांसी हसार प्रान्तमें फिर रहे थे। पंजाब देशमें सर्वथा मैदान खाली था अनेक अच्छे २ हिन्दू पकडकर जबरन् मुसल्मान बनालिये गये । जो कोई खेती बाडी करके पेट पोषण करनेवाला सिक्ख दीख पडता उसी वक्त सकुटुम्ब कतल करादिया जाता। जब इन अत्याचारी मुसल्मानोंका अत्याचार

अवधि तक पहुँचगया । तो उसी वक्त सर्वान्तर्यामी परमेश्वरकी प्रेरणासे इस हिन्दोस्थान देशपर ईरानदेशसे नादिरशाह बादशाहने चढाई करदई । फाल्गुन मिति १० संवत् १७९७ विक्रमीमें नादिरशाहभी अफगानस्थानको विजय करके लाहौरके समीप शाहदरामें आन पहुँचा सूबा लाहौरने तेरालाख रुपया नगद और अनेक प्रकारके जवाहिरात आदि उत्तम २ पदार्थ भेंटमें देकर खुदावन्द २ कहकर अपना पीछा छुडाया ।

उसके पश्चात् नादिरशाहने दिल्लीपर चढाई करी । और करनालके समीप दिल्लीके बादशाह मुहम्मदशाहसे मुकाबिला हुआ । नादिरशाहकी सुशिक्षित फौजने सामना होतेही हमलेपर हमला करना शुरू किया । ऐश आरामसे रहनेवाली मुहम्मदशाहकी फौज उसके सामने ठहर न सकी । थोडेही देरमें परेशान होगई । बहुतसे सरदार लोग मारेभी गये । एवं मुहम्मदशाहकी हार हुई । अन्तमें दिल्लीके बादशाहने दो कोटि रुपया भेंटमें देकर नादिरशाहको वहांहींसे पीछे लौटाना चाहा परन्तु उसकालके दिल्लीके मुसाहिब लोगोंकी परस्पर फूटने नादिरशाहको दिल्ली पहुँचनेका अवसर दिया । ईद कुरबानीके दिन नादिरशाहने दिल्लीमें प्रवेश किया उस दिन मसजिदमें कुरबानीका खुतबा (संकल्प) भी नादिरशाहहीके नामका पढा गया । परन्तु उस ईदकी कुरबानीने दिल्लीके लक्षों मनुष्योंको अपनी कुरबानीमें लपेटा । अर्थात् कुरबानीके समयतक तो दिल्ली शहरमें शान्ति बनी रही । परन्तु पीछे जब मुहम्मदशाह नादिरशाहको प्रेम पूर्वक अपने प्रासादोंमें लेगया तो उधर भंगड खानेमें एक भांग पीकर मस्त हुये भंगडने उच्चस्वरसे यह कहा कि वाहरे वाह मुहम्मदशाह रंगीले बादशाह अन्तमें अपना बादशाही पेच खेलही गया और नादिरशाहको अपने महलोंमें बुलवाकर कतल कराही डाला इत्यादि भंगडके वचनको सुनकर शहरके मनुष्य बहुत दिलेर होगये । और नादिरशाहकी फौजके सिपाहियोंको जहां वहां गली

कूचेमें सैर करते देख पकडकर कतल करडाला । इसी तरह नादिर-शाहके सातसौ सिपाही मारे गये । इस वार्त्ताका समाचार नादिर-शाहको पहुँचा तो वह घोडेपर सवार होकर उसी वक्त शहरमें घूमने लगा । नादिरशाह इस विचारसे घूमने लगा था कि मेरेको लोग जीवित जानकर शान्त रहें । परन्तु लोगोंने इसका कुछ विचार न किया । प्रत्युत नादिरशाहकोभी पत्थर मारने लगे । अन्तमें नादिर-शाहके चित्तमें बहुत क्रोध हुआ । और समझगया कि दिल्लीके लोग बडे बदमाश हैं । अन्तमें शिरं धुनता हुआ सुनहरी मसजिदमें जाकर तलवार मियानसे निकाल अपने सामने रखकर बैठगया । उसकी फौज अपने बादशाहके इशारेको समझगई । नादिरशाहके तलवार मियानसे बाहर रखतेंही उसकी फौज शहर दिल्लीको तबाह करने लगी । सहस्रों मनुष्य एकदममें कतल करडाले । अच्छे २ राज्याधिकारी लोगभी घास फूसकी तरह कटगये । अति स्वल्पही कालमें रक्तकी नदी वहने लगी । घरोंमें अग्नि लगगई । भूमिसे आकाशतक धूमही धूम दीखपडने लगा । मानो परमेश्वरका कोप प्रतीत होने लगा । लक्षों मनुष्य कतल होगये । दिल्लीका बादशाह तथा दीवान लोग सभी देख रहे थे । परन्तु नादिरशाहके क्रोधाक्रान्त स्वरूपके आगे किसीकी दम मारनेकी ताकत न थी । अन्तमें एक वृद्ध ख्वाजा सराप (हीजडा) ने मुहम्मदशाहसे रोयकर कहा कि हे बादशाह सलामत् ! आपके पितापितामहके प्रेमसे पाली हुई यह विचारी दीन प्रजा जंगलके घासकी तरह कटरही है । कुछ इसका उपाय करना चाहिये । जिसका उत्तर महम्मदशाहने नेत्रोंसे जल बहाकर यह दिया कि यह समय पश्चात्ताप पूर्वक परमेश्वरकी रचना देखनेका है । क्यों कि मैं जानता हूं कि मेरेही आचरणोंने नादिरशाहकी शकल ग्रहण करी है ।

एवं जब दो पहरतक यही हाल रहा । नादिरशाहके सिपाहियोंने दिल्लीकी प्रजाके अनेक लोग कतल करडाले । सारी प्रजामें हाहाकार मच गया । तो आसफजाह दीवान नंगी तलवार गलेमें डालकर चुप

चाप नादिरशाहके सामने जा खडा हुआ। और बहुत रोने लगा। उसकी वृद्ध सूरत सफेद डाढीको देखकर नादिरशाहके चित्तमें दया आगई और पूछने लगा कि तुम क्या चाहते हो ? । आसफजाहने कहा कि बादशाह सलामत आप जैसे वीरोंकी तलवार शत्रुओंपर चले तो अच्छी लगे। यह तो आपकी प्रजा है आपके आश्रयसे जीवन लाभ किया चाहती है किन्तु आप उसपर तेग चलारहे हैं नादिरशाहने उसी वक्त अपनी तलवारको मियानमें करलिया। और उससे कहा कि तुम्हारी डाढी सफेद देखकर क्षमा किया जाता है। अन्यथा दिल्लीमें एक मनुष्य जीता न छोडा जाता। नादिरशाहके तलवार मियानमें करतेही कतल करनेवाले उसके सिपाहियोंका हाथ वहांका वहांही ठहर गया। और एकदम भरमें चारों तरफ शान्ति होगई उसके पश्चात् फिर दोनों बादशाह आपसमें प्रेमपूर्वक बातचीत करने लगे। नादिरशाहने अपनी इच्छा अनुसार कुछ दिन दिल्लीमें निवास किया। पीछे कोहनूर हीरा तथा और अनेक प्रकारके जवाहिरातके साथ वीसकोटि नगद रुपया दिल्लीसे लेकर इरानको चलपडा।

उधर सिक्खोंकोभी खबर लगी कि नादिरशाह दिल्लीके बादशाहसे बहुत भारी भेंट पूजा लेकर अपने देशको जारहा है। तो उन्होंने एकत्र होकर रात्रिके समय उसपर छापा मारा। और अनेक तरहका माल असबाब लूटलिया। उसके संरक्षक सिपाहियोंको मारडाला। और बहुतसी दौलत लूटकर बाहर जंगलोंमें भूमिमें गाडदई। पीछे दिन होतेतक कई कोस दूर निकल गये। और नादिरशाहकी फौजके हाथमें एक सिक्खभी न आया।

इत्येकोनषष्टितमोऽध्यायः ॥ ५९ ॥

अथ षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६० ॥

जब नादिरशाह लाहौर पहुँचा तो उसने मार्गमें अपने धन माल लूटे जानेका सब हाल सुना । तब उसी वक्त खानबहादुर नामक सूबा लाहौरसे पूछने लगा कि काबिलसे लेकर दिल्लीतक मेरा किसीने सामना न किया । परन्तु यह लोग कौन हैं जिन्होंने मेरे धन माल-पर रात्रिको छापा मारके लूटलिया और मेरी फौजमेंभी हानि पहुँचाई यदि तुम मेरेको उन लोगोंके चिह्न बतलादो तो मैं प्रथम उन्हीका अच्छी तरहसे प्रबन्ध करूं । और फिर पीछे अपने देशमें जाऊं । इसके जवाबमें खान बहादुरने नादिरशाहको यह कहा कि जहांपनाह ! यह एक विचित्र जबरदस्त कौम है । जिसका न तो कोई घर है । न स्थान है । वर्षाऋतुके कीटोंकी तरह भूमिसे अपने आप उत्पन्न होते चले जाते हैं यदि रात्रिको यहां हैं तो दिनको एकसौ कोस दूर-पर जा ठहरते हैं । जंगलोंके फल फूल शाक पात कन्द मूल इनकी खुराक है । खाट बिछाईका तो नामतक नहीं जानते । घोडोंपर चलते फिरतेही सो लेते हैं । लडकर मरने मारनेके बहुतही प्रेमी हैं । शीत उष्ण या वर्षा वायु उनके लिये समान हैं एक मरता है तो चार पैदा होजाते हैं । शिरपर साफा गलेमें चोला कटिमें कच्छ (जांघिया) रखते हैं । शिकार करने या लडकर मरनेके बडे शौकीन हैं । मुस-लमानोंके दिली दुश्मन हैं । उनका एक २ मनुष्य पचास २ पर भारी होता है । मृत्युका तो उनको जराभी भय नहीं है । उनके शरीरके जख्म गैण्डे पशुकी तरह आपसे आप अच्छे होजाते हैं । रात्रिको या दिनको सिवा लूटमार करनेके और उनका कोई पेशा नहीं है । हमारे लक्षों मनुष्य इनके हाथोंसे मरचुके हैं । परन्तु यह लोग कम नहीं होते । प्रतिदिन दुगुन चौगुन होते जाते हैं । मजहब इनका हिन्दू मुसलमान दोनोंसे भिन्न है । एक परमेश्वरके सिवाय किसीका पूजन नहीं करते । सिक्खोंके नामसे पुकारे जाते हैं । परस्पर मिल-

नक समय न सलाम न राम २ किन्तु " वाह गुरुजीकी फतह " बोलते हैं। और परस्पर बहुतही इत्तिफाक रखते हैं। भूख या प्यास कीभी कुछ परवाह नहीं करते। चाहो उपवास पर उपवास बीतने लगें तोभी लडने मरनेसे पीछे नहीं हटते युद्धभूमिमें पीछे हटना तो जानतेही नहीं। इस कौमने हमारा तो नाकमें दम कररक्खा है। इत्यादि खानबहादुरके कथनको सुनकर नादिरशाह आश्चर्य्य होगया। और सूबा लाहौरसे कहने लगा कि यदि यह कौम वस्तुतः ऐसी है तो आशा होती है कि यह लोग एक दिन तुम्हारे मुल्कपरभी हाथ डालें। और विजयको लाभ करें। इसलिये तुमलोगोंको इस कौमके साथ मेलसे रहना चाहिये। इत्यादि बातें कहकर नादिरशाहतो आषाढ मास संवत् १७९७ विक्रमीको लाहौरसे कूच करके अपने देशको चलागया। पीछे खानबहादुरने सिक्खोंके प्रबन्ध करनेके लिये गश्तीफौजको प्रान्त २ में नियत किया। जो सिक्ख उसकालमें गश्तीफौजके हाथमें आया उसी वक्त मारा गया। अनेक हिन्दूभी उस कालमें जबरन् मुसलमान बनालिये गये। मुगलोंकी बादशाहीपर नादिरशाह आदिके अनेक हमले होचुके थे। और हिन्दोस्थानके पश्चिमी हिस्सेमें सिक्खोंने पश्चिमोत्तरदेशमें जाटोंने दक्षिण प्रान्तमें महाराष्ट्रोंने मुगलोंकी बादशाहीको सर्वथा हिला रक्खा था। जिसमें जाटलोगोंने तो अपने राजाओंके पीछे लागकर अपना काम कुछ ऐसा दृढ किया था कि मुसलमानलोग उनसे दबते थे। छोटे २ बहुतसे किले जाटोंके हाथमें थे। उधर मराठे लोगोंनेभी कईएक ऐसे विषम पर्वतोंका आश्रय लेरक्खा था कि वहाँ पहुँचनाभी जरा मुगलोंको कठिन दीखपडता था। शेष रहे विचारे सिक्ख उसकालमें न तो कोई इनमें मुख्य राजाही था। और न कोई इनके पास किला कोटही था। केवल दश २ बीस २ मिलकर जंगलोंमें रहा करते थे। उनमेंभी बहुतसे तो राजापूताना मालवा प्रान्तोंमें चले गये थे। बहुतही थोड ऐसे थे जो कि पंजाबमें फिरके लूटमार

करके अपना पेट पालन करते थे। कुछ ऐसेभी थे। जो कि पंजाबमें काश्तकारी करके अपना पेट पालन करते थे। इसलिये ऐसा अवसर जानकर सूबा लाहौरने फिर सिक्खजातिको नेस्तनाबूद करना चाहा। खानबहादुर नामक सूब लाहौरने अपने देशके यावत् जागीरदारों तथा नंबरदारोंसे तो प्रथमही इकरारनामें लिखवाये हुए थे कि तुमलोगोंके ग्रामोंमें कोई सिक्ख न रहने पावे। और यदि किसीके ग्राममें होगा तो वह उसी वक्त गिरफतार कर लिया जावेगा पंजाब मात्रमें एकभी ऐसा न होगा कि जिसने सूबा लाहौरके हुक्मकी तामील न करी हो। किन्तु सबने चुन चुनके अपने ग्रामोंसे सिक्ख निकाल दिये थे।

हिन्दूलोग जिनके धर्मकी रक्षाके लिये सिक्खजाति अपने हालसे बेहाल हुई फिरती थी वहभी एकबारही सिक्खोंके शत्र बनगये थे। किसी हिन्दूके मुखसे भी यह नहीं निकलता था कि यह सिक्ख ग्राममें बनारहे। किन्तु यही कहते थे कि निकालो २ अन्यथा हम-लोगोंको बादशाही दण्ड सहन करना पडेगा। उन्हीं दिनोंमें सैकडों हिन्दू मुसलमानोंने गरीब २ सिक्ख जो कि अपने खेत जोतकर निर्वाह किया करते पकडवा २ कर इनाम लाभभी किये। तथापि मरती गिरती हुई भी इस कौमने बादशाही बलकी कुछ अपेक्षा न करी। किन्तु सिक्खवीर अपने कर्तव्यको एकतार करतेही चले गये। यद्यपि बन्दावीर जैसे सिक्खजातिके सरदारक मरजानेसे तथा सिक्खोंके आपसमें फूट जानेसे सिक्खोंका बल बहुतही न्यून होगया था। तथापि स्वतन्त्रप्रिय सिक्खजाति बादशाही स्वाधीनतासे सर्वदा बहुतही दूर रहाकरती थी।

उन्हीं दिनोंमें बहुतसे सिक्खलोग प्रायः बहुतही बुरीदशामें थे। अनेक पंजाब देशको छोडकर देशान्तरोंमें चलेगये। अनेक सिक्ख-धर्मको छोडकर हिन्दुओंमें मिलगये। और अनेक जो कि धर्मवीर थे वह जंगलोंमें शाक पात फल फूल खाकर निर्वाह करने लगे।

दैवात् यदि कहीं कोई मुसलमान मिलजाता तो उसको लूटमार लेते-
और यदि कहीं ऐसा अवसर न मिलता तो उपवासहीसे दो दो चार २
दिन निकाल देते । परन्तु अपने धर्मसे विमुख कभी न होते ।

श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीने अपने स्थानपर पन्थ खालसाहीको नियत
किया था । इसी कारणसे बहुतसे सिक्खलोग पन्थखालसाकी सेवाको
गुरुकी सेवा समझते थे । और अपने ग्राममें खेतीवाडीमें जो कुछ
उपज होती उसका दशम हिस्सा पन्थ खालसाकी सेवामें अर्पण
करते । अर्थात् बाहर जंगलमें रहनेवाले सिक्खोंको समय २ पर पहुँचा
आते । अथवा वह लोग नियत समयपर आनकर स्वयं लेजाते ।
इसी तरहसे एक माझादेशके पोलापुर नामक ग्राममें निवास करनेवाला
श्रीगुरुजीका परमभक्त एक तारुसिंह नामक था । उसकी आयु अभी
केवल २५ वर्षहीकी थी । पिता उसका मरगया था । एक उसकी
वृद्धा माता और एक तेरा चौदह वर्षकी कुवाँरि भगिनी थी । बस
एक घरके तीनही प्राणी थे । माता बेटी दोनों ग्राममें रहा करती थीं ।
आर भाई तारुसिंह अपने खेतके किनारेपर झोंपडी बाँधकर रहा
करता था । पिताके मरनेके पीछे भूमिका अधिकार भाई तारुसिंह-
जीको मिला । उसीमें खेती वाडी करके अपने दिनाबिताया करते ।
परन्तु उस भूमिसे जो उपज होती उसमेंसे एक पैसा या एक दाना
भी अपने खर्चमें न लाते । किन्तु समय २ पर पन्थखालसाकी सेवाके
लिये भेज देते । और आप शाक पात खाकर निर्वाह किया करते ।
माता अपनी बेटीके साथ ग्राममें पीसना पकाना करके पेट पूर्ण कर-
लेती । तीनों प्रतिक्षण परमेश्वरके भजनमें तत्पर तथा प्रसन्न रहते ।
श्रीजपजी, जापजी, तथा सुखमनीका पाठ मुखस्थ प्रतिदिन प्रेमसे
तीनों किया करते । हर एक प्राणीके साथ बहुतही प्रेमसे व्यवहार
करते । परमेश्वरकी भक्तिमें प्रतिक्षण प्रेम तथा दशों गुरुओंके वचनोंपर
पूर्ण विश्वास रखते थे । अपने धर्मके पूर्ण विश्वासी तथा पन्थखाल-
साकी सेवा करनी अपना मुख्य कर्तव्य समझते थे । सत्य संतोष

दया धर्म करुणा मैत्री इत्यादि दैवी सम्पदाके सद्गुण तो मानों इनमें सहज निवास किया करते थे । अधिक क्या कहें ऐसे २ पुरुषोंका प्रादुर्भाव किसी समय विशेषहीमें हुआ करता है किन्तु सर्वदा नहीं होता । भाई तारुसिंहजीने अपना विवाहभी नहीं किया था । किन्तु तन मन धनसे सचाई भलाईमें तत्पर एक परमेश्वरपरायण रहा करते थे । सिक्खजातिके सिवाय हिन्दुओंपरभी इनका कम प्रेम न था किन्तु जो घर आता देखकर बहुतही प्रसन्न होता और यथाशक्ति सेवन पूजन करता । उन्हींका मरणभी आर्य्यसन्तानके लिये स्मरणीय है । अर्थात् संवत् १८०७ विक्रमीमें एक जंड्याला नगरनिवासी परम स्वार्थी अधम हिन्दूने सूबा लाहौरके पास जाकर चुगली खाई कि एक तारुसिंह नामक सिक्ख जो कि हमारे समीप पोलापुर नामक ग्राममें रहता है । वह अपनी सारी खेतीकी उपज उन सिक्खोंको खानेको देता है जो कि डाकू लुटेरे बादशाहके विरोधी हैं । तथा जिनके गदर शान्त करनेके लिये गश्तीफौज आदि अनेक तरहके प्रयत्न किये जाते हैं । जिस समयपर किसीतरहकी कोई जिन्स उत्पन्न होती है उसी कालमें या तो यह खुद उनको जंगलोंमें पहुँचा देता है । या वह लोग स्वयं दो दो चार २ होकर लेजाते हैं ।

परन्तु यह अन्नकी सहायता उनको बेखटक करता है इसमें सन्देह नहीं सूबाने खुश होकर उस निस्स्मरणीय नाम नीच हिन्दूको कुछ इनाम दिवाया । और भाई तारुसिंहजीके गिरफ्तार करनेके लिये उसी कालमें दश सिपाही भेजादिये । जब सिपाहीलोग ग्राममें पहुँचे भाई तारुसिंहजीने सुना कि मेरे गिरफ्तार करनेके लिये इनका आना हुआ है । तो चुपचाप आपही उनके पास चलेगये । और कहनेलगे कि जहां आपको लेचलना हो लेचलिये । सिपाहीलोग उसी वक्त भाई तारुसिंहजीको गिरफ्तार करके लाहौरको रवाना हुये । दिनके न्यून होनेके कारण रात्रिको मार्गमें एक ग्राममें रहना पडा । वहांपरभी पांच सात घर सिक्खोंके थे । उन्होंने भाई तारुसिंहजीको गिरफ्तार

हुआ देखकर चाहा कि छुडवा लेवें। भाई तारुसिंहजीसे कहने लगे कि यदि आप कहैं तो हमलोग इन सिपाहियोंको मारडालें और आपको छुडालें। जिसपर भाई तारुसिंहजीने बहुत शान्तिपूर्वक उन सिक्खोंसे कहा कि प्यारे भाइयो! आपलोग जो विचारते हैं सबी सम्भव है। परन्तु पुरुषको हरएक कार्य्य अपनी हानि लाभके विचार पूर्वक करना उचित है। प्रथम तो मेरेको आशा है कि मैं लाहौरसे स्वयं छूटजाऊंगा क्योंकि मैंने कोई किसी तरहका अपराध नहीं किया है। और यदि न भी छूटा कैद होगया। या माराभी गया तो फिर भी क्या है। मेरी एक जानपर जो होगा मेरेको प्रसन्नतापूर्वक सह्य होगा। परन्तु यदि आपलोग मेरेको छुडालो और यहांही रहें तो कलहीको बादशाही फौज़ आकर ग्रामको वैरान करदेगी। इसलिये मेरे एकके लिये अनेक अच्छे २ प्राणियोंको क्लेश हो यह मेरेको इष्ट नहीं है और यदि आपलोग यहांपर न रहेंगे किन्तु मेरेको छुडाकर जंगलोंमें भागजावेंगे तौ भी एक मेरी जानके लिये आपलोगोंको सबको क्लेश होवे घर बार छोडकर जंगलोंमें हैरान होते फिरो यह वार्त्ता उचित नहीं है इसलिये यही उचित है कि आपलोग शान्त रहैं मेरे शरीर साथ जो होगी मैं प्रसन्नतापूर्वक सहन करूंगा। मनुष्यको उचित यह है कि यह सदा न्यायपरायण तथा धर्मपरायण रहे ऐसी दशोंमेंभी यदि विपत्ति आनकर प्राप्त होवे तो उसको अपना अनिवार्य्य भोग जानकर प्रसन्नतापूर्वक भोगे यह शरीर सदा रहनेवाला नहीं है किन्तु किसी न किसी निमित्तको लेकर अवश्य गिरनेवाला है फिर अवश्यं भाविकार्य्योंमें अधिक विचार करनेकी आवश्यकताभी क्या है पुरुषको उचित है कि अपनी तरफसे सदा सन्मार्गका सेवन करे उसमें यदि किसी तरहके क्लेश आनकर प्राप्त होवें तो उनका अनायासही सहन करना हमलोगोंकी गुरुपरंपरा दीक्षा है। श्रीगुरु अर्जुनदेवजीने अपने एकवचनके पीछे प्राण देदिये। परन्तु वचन विपरीत न किया। ऐसेही श्रीगुरु तेगबहादुरजीने अपने सनातन धर्म तथा

हिन्दूप्रजाके लिये अनायास प्राण देदिये । एवं श्रीगोविन्दसिंहजीमहा-राजने अपने धर्म देश तथा कौमकी रक्षाके लिये प्राणप्रिय चार पुत्र अपनी आंखोंके सामने मरवादिये । भाई मनीसिंहजीने धर्मके पीछे अपने शरीरको अर्पण किया । जब ऐसे २ महा पुरुषोंका यह विचार है इन सबने प्रसन्नतापूर्वक इन कार्य्योंको करा और जराभी चित्तमें क्लेश न माना । तो मैंभी उनका अनुगामी होकर इस विनश्वर शरीरसे प्रेम कर धर्मविमुख आचरण करूं क्या मेरेको उचित है ? । मेरी तो पूर्ण रूपसे यही इच्छा है कि यदि शरीर रहा तो पन्थखालसाकी सेवाका लाभ उठाऊंगा । और यदि न रहा तो श्रीगुरुजीके लोकको प्राप्त होऊंगा । स्वयंविनाश होनेवाला यह शरीर एक धर्मके मिससे विनाश होवे इससे अधिक और मेरा भाग्य क्या होगा । इत्यादि अनेक तरहके सदुपदेशोंसे समझाकर भाई तारुसिंहजीने उन सिक्खोंको अपने छुडानेसे शान्त रक्खा ।

इति षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६० ॥

अथैकषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६१ ॥

रात्रिको उस ग्राममें निवास करके दूसरे दिन प्रातःकालसे चलकर सायंकाल तक भाई तारुसिंहजी लाहौर पहुंचे । रात्रिको हवालातमें रक्खे गये । अगले दिन प्रातःकाल सूबा लाहौरने अपने दरबारमें बुलाया । भाई तारुसिंहजीने दरबारमें जातेही " श्रीवाहगुरुजीका खालसा श्रीवाहगुरुजीकी फतह " इस उच्चध्वनिसे सूबा खानबहादुरसे शिष्टाचार किया । जिसको सुनताही सूबा जलबलकर रक्त होगया । और भाई तारुसिंहजीसे कहने लगा । कि हमने सुना है कि तुम बादशाहके विरोधी डाकूलुटेरोंकी सहायता किया करते हो । जिसके जवाबमें भाई तारुसिंहजीने कहा कि मैं किसी डाकू लुटेरेका परि-चितभी नहीं हूं । हां पन्थखालसाका मैं अवश्य सेवक हूं । जो कुछ बनपडता है पन्थखालसाकी सेवामें खर्च किया करता हूं ।

पन्थ खालसा मेरा पूज्य इष्ट देव है। अपना अपना इष्टदेव सभीको मान्य होता है। इसलिये मैंभी मानता हूँ। सूबाने कहा कि तेरा पन्थखाल॰ साही तो मुल्ककी बरबादी कररहा है। और बादशाहीको विनाश किया चाहता है। उसीके प्रबन्धमें तो हम रात दिन हैरान हैं और तुम उसके मददगार हो। इसलिये किसी सख्त सजाके लायक हो। भाई तारु॰ सिंहजीने कहा कि पन्थखालसा चाहे मुल्कको बसावे या उजाडे बादशाहीको भी चाहे विनाश करे या बनी रहने देवे इन बातोंसे मेरा कुछ सम्बन्ध नहीं है। मैं तो केवल अपना कर्तव्य पालन करने जानता हूं। सूबाने कहा तेरा कर्तव्य यही है कि बादशाहके विरोधि- योंकी सहायता करना। भाई तारुसिंहजीने कहा मेरा काम पन्थखा- लसाकी सेवा करना है। वह चाहे बादशाहका विरोधी होवे या मित्र होवे इससे मेरेको कुछ सम्बन्ध नहीं है। सूबाने उसी वक्त काजीलोगोंको बुलाकर पूछा कि जो मनुष्य राज्य विद्रोही पुरुषोंकी सहायता करता है। उसके लिये शरह मुहम्मदीमें क्या दण्ड लिखा है? काजीलोगोंने सम्मति करके कहा कि यदि दीन इसलामका हो तो उमर कैद रखने॰ का हुक्म है। और यदि दीनइसलामका विरोधी होय तो उसको प्रथम दीनइसलाम कुबूल कराया जावे यदि कुबूल करे तो बख्शा जा॰ वे न कुबूल करे तो एक भारी चरखके साथ बांधकर उसकी जान निकालनी लिखी है। सूबाने प्रथम भाई तारुसिंहजीको मुसल्मान बनानेके लिये बहुत यत्न किया। जब प्रथम यत्न सर्वथा निष्फल देखा प्रत्युत दीन इसलामके कई एक दोष सुने तो क्रुद्ध होकर चर॰ खपर चढानेका हुक्म दिया। जल्लादोंने उसी वक्त चरखके साथ बांध कर भाई तारुसिंहजीके अंग प्रत्यंग तोड डाले। चरखकी घुमावटसे सब शरीर पिसगया। अस्थियें चूर होगई। चारों ओरसे रक्त बहने लगा। परन्तु इतने परभी भाई तारुसिंहजी प्रसन्न वदन बने रहे। किन्तु मुखसे आह तक न निकाली। सूबाभी देखकर आश्चर्य होग॰ या। उसी वक्त चरखसे उतारनेका हुक्मदिया। और फिर दीनइस॰

लाम कुबूल करानेके लिये पूछा। कुछ शाही अधिकार प्राप्तिका तथा सुन्दर स्त्री आदिका लोभभी दिखलाया। जिसका उत्तर भाई तारुसिंहजीने संक्षेपसे एक यही दिया कि इस मेरे परमेश्वरीय खालसाधर्मके आगे और कृत्रिम दीन या धर्म अथवा विनश्वर लौकिक पदार्थोंकी कुछ नहीं चलसकती। ऐसेही थोडी देरके पीछे सूबा लाहौरने भाई तारुसिंहजीको फिर चरखपर चढवाकर क्लेश दिया। फिर उतारकर दीनइसलामको स्वीकार करवाना चाहा। जिसका उत्तर फिर भाई तारुसिंहजीने यही दिया कि मैं अपने पवित्र धर्मपर दीनइसलाम जैसे बनावटी धर्म सहस्रों कुरबान करता हूं। और स्वयंभी साथही कुरबान होताहूं। दो बार चरखपर चढनेसे भाई तारुसिंहजीके शरीरकी दशा यद्यपि बहुतही विपरीत होचुकी थी तथापि इनके चित्त तथा मुखकी प्रसन्नता ज्योंकी त्यों बनी रही थी। जिसको देखकर सूबाभी हैरान परेशान था। अन्तमें सूबाने तीसरी बार फिर चरखपर चढवाकर उतारके पूछा तो भाई तारुसिंहजीने कहा कि यह धर्मखालसा मेरे प्राणोंके साथ है। और तुम जो अपनी बादशाहीहुकूमत तथा कुछकाल जीवित रहनेकी आशासे यह अत्याचार कररहे हो तो वह गुरु (परमेश्वर) की इच्छासे मेरेसे प्रथमही तुमभी इस हुकूमतको छोडकर खाली हाथ चले जावोगे इस वचनको सुनकर सूबा लाहौरने और भी भाई साहिबजीको बहुत तकलीफ देनी शुरू करी। परन्तु भाई तारुसिंहजी अनेक तरहकी पीडा सहनेपरभी अपने धर्मके दृढविश्वासी बने रहे अन्तमें नव्वाब अपने अनुचित निरपराध अत्याचारसे आपही कॉप उठा। और मृतप्राय भाई तारुसिंहजीको चरखसे उतरवाकर हिंन्दूलोगोंके हवाले करदिया। हिन्दूलोग भाईतारुसिंहजीको उठाकर एक धर्मशालामें लेगये। पीछे नव्वावभी अपने घरको चलागया। और घरमें पहुँचतेही दैवात् बीमार होगया। शौच पेशाब दोनों बन्द होगये। अनेक औषधियोंसेभी कुछ आराम न हुआ। अन्तमें जब प्राणान्त होनेपर आये तो उसको स्मरण हुआ

कि शायद यह बीमारी मेरेको भाई तारुसिंहजीके अपराधसे हुई हो। इसलिये उसी वक्त भाई सबेगसिंह नामक वकीलको अपने पास बुलाकर सब वार्त्ता समझाके भाई तारुसिंहजीके पास भेजा। कहा कि यदि भाई तारुसिंहजी मेरे अपराधको क्षमा करें तो मेरेको पूर्ण आशा है कि मैं अच्छा होजाऊँगा। और इसके एवजमें वकीलकोभी एक अच्छा अधिकार देनेको कहा। शाहबेगसिंह वकील भाई तारुसिंहजीके पास पहुँचा। सूबाकी कही वार्त्ता सुनाई। जिसके उत्तरमें भाई तारुसिंहजीने यह कहा कि मेरे कुछ आधीन नहीं है। जो कुछ होरहा है सब अकालपुरुषकी आज्ञामें होरहा है। जो जैसी करणी करता है उसको वैसाही फल होता है। अन्तमें उसी बीमारीमें सूबा मरगया उसीही दिन स्वल्पकाल पीछे भाई तारुसिंहजीनेभी अपने प्राण त्यागदिये। भाई तारुसिंहजीका समाधि देहरा शहर लाहौरके दिल्लीदरवाजेके बाहर शहीदगंजके नामसे प्रख्यात है।

भाई शाहबेगसिंह वकीलके नामसे तो पाठक लोग परिचितही हैं क्यों कि सिक्खोंको एक लाखकी जागीर स्वीकार करवानेके लिये सूबा लाहौरके भेजेहुये अमृतसरमें येही गये थे। यह जातिके जिमीदार तथा लाहौर प्रान्तके एक ग्रामके निवासी थे। फारसी पढलिखके बादशाही नौकरीसे निर्वाह करना इनका पिता पितामहसे चला आता है भाई शाहबेगसिंहजीभी अपनी विद्याके कारण छोटीही उमरमें सूबा लाहौरके दरबारमें प्रविष्ट होगये थे। सूबा लाहौरके दरबारमें इनकी अच्छी प्रतिष्ठा जमगई थी इसी कारणसे इनको दश बारा ग्रामोंकी हाकिमी मिलनेका सौभाग्य प्राप्तभी होचुका था। जैसे आप फारसी इलममें कुशल थे वैसेही अपने सिक्खधर्मके गुरुमूर्त्ति धर्मपुस्तकोंके भी पूर्ण मर्मज्ञ थे। इनके सर्वतरहसे कुशल होनेके कारणही जब कभी सूबा लाहौरके साथ सिक्खोंका कार्य्य पडता तो प्रायः येही वकीलकी तौरपर सिक्खोंके पास भेजे जाते। इसलिये सूबा लाहौरके दरबारमें सब लोग इनको सिक्खोंके वकील बोलते।

सूबा लाहौरने भाई तारुसिंहजीके पास भेजनेके प्रसंगमें इनको लाहौरका कोतवालभी बनादिया था । उस कालमें इन्होंने सिक्खोंके विषयमें अपने धर्मसम्बन्धसे कई एक कार्य्य अच्छे २ भी किये थे । जैसे सूबा लाहौरने जिन सिक्खोंको किसीकालमें दीवारोंमें चुनावदिया था अथवा जीतोंको भूमिमें गडवादिया था इन्होंने अपने कोतवाल होनेकालमें सबको निकलवाकर जलवाया । और उनके समाधि देहरे बनवादिये । जिनको देखकर अनेक काजी मुल्लालोग जला बला करते थे । पीछे सूबा लाहौरके मरनेके पश्चात् जब उसका पुत्र उसके अधिकारपर बैठा तो सब काजीलोगोंने मिलकर भाई शाहवेगसिंह वकीलकी चुगली खाई । कि यह मनुष्य शाहीदरबारमें रखनेके योग्य नहीं है । क्यों कि यह बहुत दिनसे जब कभी अवसर मिले देखा है कि हिन्दुओं तथा सिक्खोंहीकी तरफदारी करता है । दीन इसलामको कुछभी नहीं जानता । जिस दिन काजीलोगोंने सूबाके पुत्रको कहा दैवात् उसी दिन शाहवेगसिंहजीका शाहबाजसिंह नामक पुत्र भी अपने फारसी पाठकसे धर्मविषयक चर्चा कर बैठा था । यह शाहबाजसिंह अपनी १८ वर्षहीकी आयुमें फारसी तथा अपने धर्मकी गुरुमुखी विद्यामें असाधारण था । इसका सर्वांग सौंदर्य तथा मनोहर भाषण प्रत्येक पुरुषके चित्तको आकर्षित किया करता था । अपने फारसी पाठक मौलवीके साथ विवाद इसका धर्मकी श्रेष्ठतापर होपडा था । अर्थात् इसका पक्ष था कि खालसा धर्म परमेश्वरीय है इसलिये सर्वोत्तम है । और मौलवीका पक्ष यह था कि दीन इसलाम खुदाकी तरफसे है । इसलिये सबसे अच्छा है । परस्पर इतना मात्र कहकरही सन्तोष न था किन्तु अनेक प्रकारकी युक्ति उक्तिभी स्वपक्षसाधनके लिये कही जाती थी । जिसमें शाहबाजसिंहने अपने मौलवीसे यह कहा कि यदि दीन इसलाम खुदाकी तरफसे है तो सुन्नत जन्मके साथही क्यों नहीं होती । फिर वह लाबजूद हाजर नाजर है तो उसके लिये पश्चिमहीमें क्यों शिर झुकाना ।

कुरान यदि खुदाकी तरफसे धर्मपुस्तक है तथा मनुष्यमात्रके लिये है तो अर्बदेशहीकी बोलीमें क्यों है । इत्यादि तर्क सुनकर मौलवी कुछ उत्तर न देसका। और क्रुद्ध होकर कईएक काजियोंको जामिला ! बहुत कुछ कहकर शाहबाजसिंहके ऊपर दीनिइसलामकी निन्दा करनेका अपराध स्थिर किया । इसके पिताके विषयमें तो काजी लोग प्रथमही कहचुके थे । फिर दोबारा इसके विषयमेंभी काजियोंने मिलकर कहा । तो पिता पुत्र दोनों लाहौरके दरबारमें बुलालिये गये । अन्तमें यह न्याय काजीलोगोंके ऊपर डालागया उन्होंने यह फैसला किया कि प्रथम तो इन दोनों पिता पुत्रोंको दीन इसलाम स्वीकार कराया जावे । यदि न स्वीकार करें तो चरखपर चढवाकर पीडित करके मरवादिये जावें जब यह हुकम दोनोंको सुनाया गया तो भाई-शाहवेगसिंहने कहा अहो हमारे धन्य भाग्य । जो हमलोगभी धर्मपर प्राण देनेवालोंकी गणनामें गिने जावेंगे । इस स्वल्पजीवनके लिये सदाके साथी अपने धर्मसे विमुख होना मनुष्यका काम नहीं है । यदि कोई धर्म इस मृत्युके पंजेसें बचानेकी ताकत रखता होय तोभी प्रथमको छोडकर उसको ग्रहण करना उचित है । परन्तु यदि यह सामर्थ्य किसीमेंभी दीख न पडे प्रत्युत और धर्मोंमें अनेकतरहके दोष प्रतीत हों तो ऐसी दशामें अपने पवित्र धर्मसे विमुख होना अधर्मियोंका काम है । स्त्रीधनादिके लोभलालचसेभी अपने पवित्र धर्मसे विमुख होना नीचपुरुषोंका काम है । परन्तु हम तो उन गुरुओंके शिष्य हैं जिन्होंने अपने समेत धर्मपर लाखों जाने कुरबान करी हैं । जो नीचपुरुष धिःकृत कलुषित जीनेको मरनेसे अच्छा जानता है वही अपने धर्मको पलट सकता है । परन्तु जिस पुरुषको धिःकृत कलुषित होकर जीना क्षण क्षणमें मरणके क्लेशको अनुभव कराता है वह कदापि ऐसे जीनेको अच्छा न समझेगा ? । धर्म एक ऐसी वस्तु है जो कि लोक परलोक दोनोंसे संरक्षक है । जो मनुष्य अपने धर्मपरही स्थिर नहीं उसका विश्वास करनाभी भारी भूल है ।

धर्मशासन उपदेशसे तथा राज्यशासन तलवारसे करनेका प्राचीन-कालसे व्यवहार चला आता है । परन्तु शोक है कि बादशाही राज्यमें दोनों काम तलवारसे होरहे हैं । धर्म एक हृदयका मन्तव्य है जिसको तलवारकी पलटनेकी ताकत नहीं है किन्तु एक उपदेशहीमें ताकत है । जो मनुष्य मरणके भयसे अपने धर्मको पलटेगा वह चित्तसे अवश्य नीच होगा । हमसे अपना धर्म छूटना कठिन है । यह विनश्वर शरीर चाहे रहे चाहे अभी छूटजावे हम अपने धर्मसे विमुख कभी न होंगे । सूबा लाहौर तथा काजीलोग यद्यपि भाई मनीसिंह भाई तारुसिंहजी जैसे धर्मवीरोंके चरित्रोंसे इस सिक्ख कौमकी धर्मदृढताको अच्छीतरहसे जान चुके थे । तथापि भाई शाहवेगसिंहजीको इल्मफारसीके मर्मज्ञ होनेसे तथा इनकी यावत् उमर मुसल्मानोंहीमें निकलनेसे इनको पूर्ण विश्वास था कि वकील शाहवेगसिंह कदाचित् किसी पेचमें आनेसे कदापि दीन इसलामसे घृणा न करेगा । किन्तु अवश्य मुसल्मान होही जावेगा । परन्तु अब शाहवेगसिंहके मुखसे उक्त बातोंको सुनकर काजीलोग चकित होगये । और थोडी देरतक विचारमें पडगये कि अब क्या हुक्म देना चाहिये । काजीलोग इस सिक्खजातिको नेस्तनाबूद तो कियाही चाहते थे । थोडी देरके पीछे फिर हुकम दिया कि दोनों बाप बेटा चरखपर चढआदिये जावें । आज्ञा पातेही जल्लादोंने दोनोंको चरख पर बांधदिया । और चरखको घुमाकर उनके बन्द बन्द तोड डाले पिता पुत्र दोनोंकी अस्थियें टूट गईं । अंग २ फूट गया शरीरमात्रसे रक्त बहने लगा । तो फिर काजीलोगोंने दोनोंको उतरवाकर दो घटिका विश्रान्ति देकर दीनइसलाम कुबूल करानेके लिये दोनोंसे पूछा । परन्तु फिरभी दोनोंने स्वीकार न किया । फिर दोनों चरखपर चढाये गये । और चरख फिराकर क्लेशभी असह्य दिखलाया गया । परन्तु दोनों धर्मवीरोंने उस क्लेशको 'सत्य श्री अकाल' 'सत्य श्री अकाल' का उच्चारण करते हुये काटकी

पीडाकी तरह सहन करलिया जिसको देखकर सभी लोग आश्चर्य्य होने लगे। थोडी देरके पीछे दो घटिकाकी विश्रान्तिके लिये फिर उतार लिये और विश्रान्ति देकर दीनइसलाम स्वीकार करानेके लिये फिर पूछा। जिसका उत्तर भाई शाहबेगसिंहजीने यह दिया कि दीनइसलाममें यदि कुछ सार होता तो हमको इतना क्लेश काहेको उठाना पडता। काजीलोग इस वार्त्ताको सुनकर जलगये। और अबकी बार पिता पुत्रको पृथक् पृथक् करके चरखपर चढानेकी आज्ञा करी। दोनों भिन्न २ चरखपर चढाये गये। और वैसेही पीडा देनेके लिये चरख फेरागया। थोडी देरके पीछे जब सुकुमार शाहबाजसिंह पीडित होकर बेहोश होनेलगा तो एक काजीने पास जाकर उसका चरख बन्द करवादिया। जब वह कुछ सचेत हुआ तो काजीने कहा कि बच्चे तुम काहेको अपने पिताके पीछे प्राण देते हो। वह तो बूढा है दुनियाके मजे ले चुका है। तू अभी नौजवान है इस दुनियामें आकर कुछ देखा नहीं। तेरेको धर्मके पचडोंसे क्या काम है। यदि तुझे दीन इसलाममें आना मंजूर हो तो मैं तुम्हें अभी उतरवाले-ताहूं। और आपके शरीर अच्छे होजाने पर एक सुन्दर स्त्रीके साथ विवाहभी करवा दूंगा। और शाही दरबारमें कह कर आपके किसी उच्च अधिकारका प्रबन्धभी करवादिया जावेगा इत्यादि काजीके बच-नोंको सुनकर कुमार शाहबाजसिंहने कहा कि मेरेको उतरवा लीजिये मैं नीचे उतरकर मुसल्मान होनेका विचार करूंगा। काजीने उसी वक्त हुक्म देकर उसको चरखसे उतार लिया। और इसी पुत्रका पिता जो कि अबकी बार थम्बोंसे बाँधकर कोडोंसे मारा जारहा था। तथा जिसके शरीरके साथ लोहके कन्दल तपाकर लगाये जारहे थे। उसको भी जाकर एक काजीने कहा अरे बदनसीब काफर तेरे पुत्रने तो दीन इसलाम कुबूल करलिया है। तूभी कुबूल कर और अपनी जानको इस सख्त अजाबसे बचाले। इस वार्त्ताको सुनकर शाहबेग-सिंह आश्चर्य्य हुआ। और कहनेलगा कि मेरेकोभी छोड दीजिये।

अपने पुत्रके साथ विचार करके मैंभी दीनइसलामको स्वीकार करूंगा स्वल्पकाल विश्रान्तिके लिये पिता पुत्र दोनों छोडकर एकत्र किये गये। उस कालमें पिताने पुत्रको कहा क्या बेटा यह समय धर्मसे विमुख होनेका है। क्या आपको अपने वृद्धोंके इतिहास सभी भूल गये ? क्या श्रीगुरु तेगबहादुरजीके अनुगामी होना आपको बुरा प्रतीत हुआ ? । क्या श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके पुत्रोंकी आयु तुमसे कुछ अधिक होचुकी थी। क्या मुसलमान होनेवाले इस दुनियामें स्थायी बने रहते हैं । क्या भाई मनीसिंह या भाई तारुसिंहजीके धर्मपर प्राण अर्पण करने तुमको भूल गये ?। यदि नहीं तो हे पुत्र ! तुम काहेको थोडेसे जीनेके लिये अपने वंशको कलंकित करते हो। पुत्रने कहा हे पिता ! आप कौन विचारसे कहरहे हैं। क्या आपको कदापि सम्भावना है कि मैं आपका पुत्र होकर स्वधर्मसे विमुख होऊं। मेराधर्म मेरे प्राणोंके साथ है । मैं तो केवल आपका अन्तिम दर्शन करनेके लिये इनलोगोंसे छूटकर विश्रान्त हुआ था। और मैंने किसीके साथ मुसलमानहोनेकी प्रतिज्ञाभी नहीं करी। किन्तु विचार करनेके लिये उतरा था। सो अब विचार करलिया है कि मैं अपने धर्मपर अवश्य प्राण देऊंगा। पिताने प्रसन्न होकर पुत्रको अनेक बार धन्यवाद दिया। और तबतक शाहीहुक्मसे फिर दोनों बुलवाये गये। दोनोंने सरेदरबार फिर यही कहा कि दीन इसलाममें कुछ सार होता तो हम लोग अपना ऐसा हाल काहे करवाते जिसको सुनकर सूबा समेत काजीलोग जलबल गये। अन्तमें फिर चरखपर चढवानेका हुक्म दिया। जल्लाद उन दोनोंको चरखपर चढाके घुमाते रहे, जबतक प्राण अन्त न हुये इन दोनोंके मुखसे 'श्रीवाहगुरु' के जापकी ध्वनि निकलती रही। अन्तमें प्राण संचारकी शान्तिके साथही शान्त हुई।

इत्येक षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६१ ॥

अथद्विषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६२ ॥

इन्हीं दिनोंमें स्यालकोट निवासी हकीकतराय नामक एक क्षत्रिय लडकेने भी अपने प्राण धर्मपर अर्पण किये हैं। कार्तिकवदी द्वादशी संवत् १७९१ विक्रमीमें शहर स्यालकोटमें बाघमल्ल नामक पुरी क्षत्रियके घर हकीकतरायजीका जन्म हुआ। इनके पिता अमीरबेगनामक स्यालकोटके हाकिमके दफ्तरमें नौकर थे। हकीकतरायजी अपने माता पिताकी वृद्धावस्थामें उत्पन्न हुए एकही पुत्र था। इनके माता पिता हिन्दुओंके अनेक देवी देवताओंको मानते हुएभी श्रीगुरुजीके घरके अनन्यभक्त थे। इसी कारणसे इन्होंने अपने प्रिय पुत्रका विवाह एक बडालाग्रामके गुरुके सिंहकी पुत्रीसे किया था। सिक्खजातिमें जो लोग श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीकी महत्मर्यादाका पालन करें उनको सिंह कहा जाता है। जैसे हकीकतरायजी अपने माता पिताके घर एकही पुत्र थे। वैसेही इनकी पत्नीभी अपने माता पिताके घरमें एकही पुत्री थी। इनका पिता स्वयं बहुतही धर्मपरायण था। इसीलिये समय २ पर अपने पुत्रकोभी धर्मकी अनेक प्रकारकी शिक्षा तथा धर्म वीरोंके इतिहास सुनाया करते थे। जिनको सुनकर उत्तम संस्कारयुक्त हकीकतरायजी गदगद होजाते। इनका सौन्दर्य्य तथा मधुर भाषण हरएक मनुष्यके चित्तको आकर्षण किये रहता था। इतर लडकोंकी तरह खेल कूदमें अनुरागका तो इनमें लेशभी न था किन्तु खाने सोनेके अतिरिक्त प्रतिक्षण अपने विद्याभ्यासमें या धर्मविचार श्रवणमें तत्पर रहा करते थे।

इनके पिता फारसी विद्या अभ्यासके लिये इनको एक मौलवीके पास मसजिदमें भेजा करते थे। वहांपर हिन्दू मुसल्मानोंके औरभी बहुतसे लडके पढा करते थे। एक दिनका वृत्तान्त है कि मौलवीको किसी कार्य्यवशसे स्वल्पकालके लिये सब लडकोंको मसजिदमें छोडकर ग्राममें जाना पडा। पीछे सभी लडके भिन्न २ प्रकृतिके अनुसार

बहुतसे खेलने कूदने लगे । बहुतसे हाँसी मसखरी करने लगे । बहुतसे परस्पर विवाद करनेमें तत्पर होगये । उसी अवसरमें कई एक मुसल्मान लडकोंने हिन्दू लडकोंको दुखानेके लिये देवी भगवतीके विषयमें कुछ अनुचित शब्दका प्रयोग किया । जिनको सुनकर बहुतसे हिन्दू लडके दुःखित हुए कुछ बोल न सके । परन्तु ऐसे अवसरपर हकीकतरायजीसे रहा न गया । इन्होंने उन्हीं शब्दोंका प्रयोग बीबीफातमा जो कि मुहम्मदसाहिबकी पुत्री होनेके कारण मुसल्मानोंकी इष्टदेवता है उसके विषे किया जिनको सुनकर मुसल्मानोंके सभी लडके चमक उठे । और हकीकतरायजीको बुरा भला कहकर मारनेको तैयार हुए । इतनेहीमें पाठक मौलवीभी आन पहुँचे । लडकोंका परस्पर कोलाहल सुनकर मौलवीने सबसे भिन्न २ पूछा तो सब मुसल्मान लडकोंने हकीकतरायजीपर दोषारोपण किया । हकीकतरायजीसे पूँछा तो इन्होंने कहा मैंने अनुचित शब्दोंका प्रयोग किया तो अवश्य है । परन्तु इन लोगोंके पीछे किया है । अर्थात् इन्होंने प्रथम हमारी देवी भगवतीको बुरा कहा तो पीछे वैसेही मैंने भी बीबीफातमाको बुरी कहा । हकीकतरायजीकी इस वार्त्ताको सुन कर मौलवीभी दग्धसा होगया । और इस लडकोंके परस्पर साधारण बिवादका स्वयं फैसला न करके विचार करनेके लिये काजीलोगोंकी समाजमें भेजदिया । काजीलोगोंने विचार करके अन्तमें यह निश्चय किया कि ऐसे अनुचित् भाषी लडकेको प्रथम दीन इसलाम कबूल करवाना उचित है यदि न माने तो पीछे कतल किया जावे । काजी समाजके इस फैसलेको सुनकर बहुतसे मुसल्मान लोग चित्तसे प्रसन्न भी हुए । परन्तु बहुतसे हिन्दू मुसल्मानोंने इस न्यायको अति अनुचितभी समझा । इस फैसलेके होतेही शहर स्यालकोटके घर २ में कोलाहल मचगया । अनेकों नरनारी हाहाकर करने लगे । हकीकतरायजीके माता पिताभी शोकसागरमें डूबने लगे । कईएक दुर्जन मुसल्मानपुरुषोंने इसी न्यायके अनुसार स्यालकोटके

हाकिमकोभी प्रवृत्त होनेके लिये कहा । न्यायशील अमीरबेग नामक हाकिमने प्रथम तो इस वार्त्ताको सर्वथा अस्वीकार किया । कहा कि लडकोंमें प्रायः ऐसे वादाविवाद हुआ ही करते हैं । इनकी बातोंपर बडेपुरुषोंको विचार करना उचित नहीं है । अन्यथा किसी लडकेका निर्दोष होना दुर्घट है । हाकिमकी इस वार्त्तापर मुसलमानलोग बहुत अप्रसन्न हुए । सबने मिलकर काजीलोगोंके अनुरोधसे फिर हाकिमको इस न्याय करनेके लिये व्यग्र किया । अमीरबेग नामक हाकिमने हकीकतरायजीको अपने दरबारमें बुलाकर पूछा कि कहो लडके तुमको मुसल्मान होना मन्जूर है ? या कि कतल होना । हकीकतरायजीने अपनी ८ वर्षकी छोटीसी आयुमें श्रीगुरुतेगबहादुरजी जैसे अनेक महापुरुषोंके इतिहास सुने हुए थे । इसलिये अपने चित्तको दृढ करके बोले कि मेरेको मुसल्मान होना तो मन्जूर नहीं है बाकी जो तुमलोगोंकी इच्छा हो करो । अमीरबेग हाकिम बहुतही कोमल हृदयका मनुष्य था । इसलिये हकीकतरायजीके मुसल्मान न होने परभी किसी तरहका दण्ड देनेमें असमर्थ था । शेषमें दो चार बार पूछके कहने लगा कि इस विवादका फैसला यहांपर होना कठिन है । इसका लाहौर भेजना मेरेको उचित प्रतीत होता है । स्यालकोटके सभी मुसल्मान लोग इस विषयमें एक मत हुए । तो हकीकतरायजीका लाहौरमें चालान करदिया गया । साथमें इनके माता पिताके सिवाय औरभी अनेक सम्बन्धी लोग गये । माता विचारी वृद्धा जिसका अन्तिम अवस्थाका एकाकी पुत्र था रोती रोती हैरान होगयी । माताने अपने शहर स्यालकोटमें अपने पुत्रके छुडानेका बहुतही प्रयत्न किया । बहुतसे काजीलोगोंके पाउँमें अपना माथा रगरा । अपने पासका सभी द्रव्य आभूषणभी दे देनेको कहा परन्तु उस विचारीकी किसीने एक न सुनी । अन्तमें हाय हाय करते सभी लोग हकीकतरायजीके साथही चौथे दिन लाहौरमें पहुँचे । सूबा लाहौरनेभी इस फैसलेको काजीलोगोंपर डाला । जिसको विचारकर लाहौ-

रके काजीलोगोंनेभी स्यालकोटके काजियोंके फैसलेका समर्थन किया-जब सूबा लाहौरके दरबारमें बुलाकर हकीकतरायजीसे फिर मुसल्मान होनेके लिये कहा गया तो हकीकतरायजीनेभी फिर वही स्यालको-टवाला उत्तर दिया। जिसको सुनकर सारी सभाके मुसल्मानलोग हैरान परेशान होने लगे एकने धीरेसे कहा वाहरे हिन्दू लडके क्याही तेरी खुब सूरती है। क्याही तेरा अपने धर्मपर विश्वास है। दूसरेने कहा कि अरे भाई यह तो अपने गुरुगोविन्दसिंहके सरहिन्दवाले लड-कोंके साथहीका निकला। तीसरेने कहा अरे मियां क्या जाने हिन्दू-कौमको क्या खुदाकी मार है धर्म धर्म करते हजारों जानें कुरबान करते जाते हैं। चौथेने कहा अरे मियां यह कौम अव्वल दर्जेकी जाहल है। दुनियाके मजोंकी इनको कुछभी लियाकत नहीं है। वृथा एकको देखकर दूसरा दूसरेको देखकर तीसरा मरते चले जाते हैं। यदि इनको दुनियाके मजों (रसों) का कुछभी अनुभव होय तो ऐसे व्यर्थ जानें न गँवावें। पांचवाँ कहनेलगा कि खुदाकी कसम हमें तो खुबसूरत औरत या कोई शकील लौंडा या बहुतसी दौलत देकर जो दीन चाहे अभी कबूल करवाले। दीनकी अदलाबदली कोई इन सानि-यतके बिगाडनेवाली वस्तु नहीं है। किन्तु एक समाजसे दूसरे समा-जमें जाना मात्र है। छठा कहने लगा अरे दोस्त यह दानाई इस जा-हल कौममें कहां है यह तो खाली मरना जानते हैं। सातवेंने कहा अरे मियाँ धर्मपर कुरबान होनेकी चाली हिन्दुओंमें तो सिक्ख कौमके होनेसे चलपडी है। वरना पहले हजारों मुसलमान बनालिये जाते थे कोई हिन्दू चूंतक नहीं किया करता था। हकीकतरायजीके दृढ उत्त-रको सुनकर सूबा लाहौरभी विचारमें पडगया। थोडी देरके पीछे कहने लगा कि अरे लडके तुम काहेको किसीके सीखे सिखाये अपने प्राण गँवाते हो। दीन इसलाम कबूल करो। चैनसे अपनी उमर बसर करो ?। हम तुम्हारा विवाहभी एक खुबसूरत लडकीसे करवादेंगे। और शाहीदरबारमें किसी उच्च अधिकारपरभी नियत करवादेंगे इन

सब बातोंका उत्तर हकीकतरायजीने एक यही दिया कि मेरेको अपना धर्म छोडकर दुनियाके किसी पदार्थकी इच्छा नहीं है। अन्तमें सूबाने काजीलोगोंकी सम्मातिसे हकीकतरायजीके कतल किये जानेका हुक्म दिया। जल्लादोंने उसी वक्त पकड लिया। कतिपय क्रूर पुरुषोंके सिवाय सभी लोग हाहाकार करने लगे। वृद्धा माताभी शिर पीट २ रोने लगी। परन्तु धर्मवीर हकीकतरायजीके चित्तमें या मुखपर मरणभीतिकी म्लानताका लेशभी नहीं प्रतीत होता था। सत्य तो यह है कि यदि ऐसे २ धर्मवीर इस आर्य्यसन्तानमें न होते तो आजतक इस आर्य्यजातिके मूल उच्छेद होनेमें कुछभी सन्देह न था। जब जल्लाद लेकर बाहर कतलखानेकी तरफ चले। तो वृद्धा माता अपने पुत्रको गले लगाकर कहने लगी। हे पुत्र तुम अभी मुसलमानही होजावो तो अच्छा। यदि तुम मुसलमान होकरभी मेरी आखोंके सामने रहोगे तो तौभी मेरेको सन्तोष रहेगा। हकीकतरायजीने कहा माताजी आप मेरेको धर्मसे गिरनेकी शिक्षा मत दीजिये। क्यों कि आपके थोडेसे स्वार्थके लिये मेरे तथा आपके महाउद्देशमें अवश्य हानि होगी। धर्मविमुख पुरुष कदापि सद्गतिको प्राप्त नहीं होसकता इस विनश्वर जीवनके लिये धर्मसे विमुख होना उत्तम पुरुषोंका काम नहीं है। हे माता! सिवाय धर्मके इस दुनियाका कोई पदार्थ पुरुषका साथी नहीं है। एवं सदाके साथी धर्मसे विमुख होकर दुर्मिल दुनियाँके पदार्थोंके पीछे ललचाते फिरना अधम पुरुषोंका काम है। मैं नहीं चाहता कि मैं इस दुनियामें जीवों और अपनी गणना अधम पुरुषोंमें करावों। इसलिये हे माता! आप कृपा करके मेरेको धर्मपर दृढ रहनेका आशीर्वाद दीजिये। जिससे कि मैं इस विनश्वर शरीरको छोडकर सद्गतिको लाभ करूं। इत्यादि पुत्रके वचनोंको सुनकर माता रोती हुई कुछ बोल न सकी और हकीकतरायजी माताको छोडकर जल्लादोंके साथ आगे चलदिये। अन्तमें कतल घरमें लेजाकर जल्लादोंने कतल करदिया परन्तु धर्मवीर हकीकतरायजीने आहतक न करी।

पीछे उनका कतल शव लेकर हिन्दुओंने दाहाकिया करी। और एक उत्तम समाधि देहरा बनाया। जहांपर प्रतिवर्ष लाहौर शहरमें वसन्त पंचमीके दिन एक बडाभारी मेला लगा करता है। महात्मा हकीकत-रायजी अपने विनश्वर शरीरसे केवल आठही वर्षतक इस संसारमें रहे परन्तु विचारस्थायी पवित्र यशोरूप शरीरसे अद्यावधि जीवित हैं तथा बहुतही कालतक आगेभी जीवित रहेंगे प्रियपाठकगण! इस वार्त्ताको कौन मनुष्य नहीं जानता कि इस संसारमें सदा स्थायी कोई नहीं रहता। तथा बलात्कारसे आन प्राप्त हुए क्लेशको कौन पुरुष अपने माथेपर सहन करके प्राण नहीं दे देता। प्रतिदिन असंख्यात मनुष्य रोगाक्रान्त होहोकर मर मर जाते हैं। सहस्रों मनुष्य बलात् शूलीपरभी चढादिये जाते हैं। परन्तु एकतरफ संसारको वैभवके साथ तलवारकी धार चमकती दीखपडे तथा दूसरी तरफ विश्वास मात्र शेष अदृश्य धर्मका अवलम्ब हो इन दोनों पक्षोंमें द्वितीय पक्षका अनुस-रण करनेवाले प्रातिसहस्र या प्रतिलक्ष कितने महापुरुष निकल सकते हैं इस वार्त्ताका आपही अपने स्वान्तमें विचार करसकते हैं। धर्म नाम वस्तुतः जनसमुदायके सजातीय शुभमन्तव्यका है। जिसका विवरण हमने इसी ग्रन्थके आदिमें भूमिकामें सविस्तर किया है उसी धर्मके निमित्त कईएक धर्मवीर अपने प्राणोंकोभी तुच्छ समझते हैं। परन्तु धर्मसे विमुख नहीं होते। और बहुतसे ऐसेभी हैं कि प्राणोंके आगे धर्मको तुच्छ समझते हैं। इन दोनों तरहके मनुष्योंमेंसे कौन (जाति) को हानिलाभ पहुँचानेवाले कौन हैं। इस वार्त्ताका विचारभी विचारशीललोग स्वयं करसक्ते हैं। मेरी सम्मतिसे तो अपने प्राण देकर भावि कौममें जीवन डालनेवाले महात्मा हकीकतरायजी जैसे महापुरुष परमपूज्य हैं। केवल अपने पेटके लिये जातिमात्रके विघा-तक नीच मनुष्य किसी जातिमें भी श्रेयस्कर नहीं हैं।

जिन दिनोंमें हकीकतरायजी कतल किये गये हैं उन्हीं दिनोंमें भाई महताबसिंहजी जिन्होंने मस्से म्लेच्छको श्रीअमृतसरजीके दरबा-

रमें कतल किया था। वहभी जण्डयाला ग्रामके निवासियोंकी नीच सूचना द्वारा पकडे गये। और नाजम लाहौरके दरबारमें चरख पर चढवाकर मरवादिये गये। प्रिय पाठकगण ! इसी तरह सहस्रों नहीं किन्तु लक्षों हिन्दूलोग धर्मपर प्राण देदेकर इस संसारसे चले गये। और अपने प्राणोंके बदले अपनी भावि कौमके शरीरोंमें प्राण डालगये यह मृतप्राय हिन्दूकौम यदि नाममात्रसे अभीतक दीख पडती है तो इन्हीं महापुरुषोंके धर्मपर प्राण देनेका नतीजा है। इन पांच सात प्रसिद्ध २ महापुरुषोंका इतिहास प्रदर्शन तो केवल निदर्शनमात्र समझना चाहिये। अन्यथा यवनोंके राज्यकालमें तो हिन्दूलोग गाजर मूलीकी तरह काटे फाटे जाते थे। कौन कौनका इतिहास लिखा जावे।

इति द्विषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६२ ॥

अथ त्रिषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६३ ॥

इन ऊपर लिखे धर्मवीरोंके धर्मपर प्राण देनेके कुछही दिन पीछे अहमदशाह अबदालीका हिन्दोस्थानपर प्रथम आक्रमण हुआ। जब अहमदशाह सिन्ध मुलतानके मालिक सूबोंको फतह करके लाहौरमें पहुँचा तो लाहौरके सूबानेभी इसका सामना किया। कुछ देरतक जंग हुआ। परन्तु अन्तमें लाहौरके सूबाने पराजित होकर अनेक प्रकारकी भेंट पूजा देकर अपना पीछा छुडाया। उसके पश्चात् अहमदशाह दिल्लीके तरफ रवाना हुआ। परन्तु शतद्रु नदीके आसपास सिक्खोंने उसकी फौजपर हमला किया। रात्रिको बहुतसा माल लूटकिया। और जंगलोंमें भागगये। तथा अहमदशाहसे सूबा लाहौरका पराजित होना सुनकरभी सिक्खलोग बहुत प्रसन्न हुए। और पंजाबमें फिर जहां तहां लूटमार मचाने लगे। उन्हीं दिनोंमें गिलजी जातिके मुसल्मानोंकी बादशाही फौजभी पंजाबमें आई हुई थी। इस फौजके

शूरवीर योद्धे युद्धके विषयमें अपने समान दूसरेको नहीं मानते थे । इन लोगोंने सिक्खोंकी बहादुरी सुनकर उनको लिखभेजा कि रात्रिको लुक छिपकर लूटमार करना शूरवीरोंका काम नहीं है । यदि आपलोग सच्चे सिंह हैं तो आप लोगोंको मैदानमें हाथ दिखलाना चाहिये । हमारी आपलोगोंकी धर्मकी लडाई है । इसलिये धर्मपूर्वक होनी चाहिये । आप जहां चाहें स्थल नियत करलें । एक वीरके साथ एकही वीरका जोड होगा । शेष देखते रहेंगे । जो वीर जिस वीरके साथ चाहे जुटके देखलेवे । हमारी तरफसे या आपकी तरफसे तीसरा उनमें कोई नहीं पडेगा । यदि आपलोग वस्तुतः सिंह हैं तो इस परीक्षणात्मक धर्मयुद्धको अवश्यही स्वीकार करियेगा । अन्यथा आगेको सिंह कहाना छोड दीजियेगा किन्तु और हिन्दुओंकी तरह शिर मुख मुण्डवाकर रहा कीजियेगा । इस पत्रके बांचतेही सिंहों (सिक्खों) ने लडाईकी तैयारी करदई । और लाहौरके पांच सात कोस समीप युद्ध भूमि नियत हुई ।

प्रथम मुसल्मानोंकी फौजमेंसे एक सिपाही घोडेपर सवार होकर निकला और सिक्खोंकी तरफसेभी एक अपने जोडका बुलाया । तो श्रीगुरुचरणोंका स्मरण करके एक सिक्खभाई सुखाँसिंह नामक घोडे पर सवार होकर रणक्षेत्रमें निकला । परस्पर दोनोंके वार होनेलगे प्रथम वार मुसल्मान सिपाहीने किया जिसको भाई सुखाँसिंहजीने अपनी ढालपर बचाया । फिर इनोंने अपना वार किया तो उसनेभी वैसेही अपनी ढालपर लेलिया । ऐसेही थोडी देरतक होती रही अन्तमें भाई सुखाँसिंहजीने ऐसा सफाईसे हाथ चलाया कि उस मुसल्मानका शिर काटके नीचे फेंक दिया । मुसल्मानी फौजसे उसीकालमें एक दूसरा पहलवान क्रुद्ध होकर अभिमानसे निकला । भाई सुखाँसिंहजीने दोचार वार खेलकर उसकाभी वही हाल किया । पीछे मुसल्मानी फौजमेंसे एक और वीर क्रुद्ध होकर निकला । उसका सामना भाई चडतसिंहजीने किया । दोचार वार खेलकर भाई चडत-

सिंहजीने उसकाभी काम तमाम किया ऐसेही एक और पठान निक-ला। दो तीन बारहीमें भाई चडतसिंहजीके हाथसे वहभी पार बोला। इसी तरह चौदा पठान मारेगये। और चार सिक्खभी शहीद हुए। एवं जब पठानोंनें देखा कि सिक्ख प्रबल होते जाते हैं। तो उन्होंने आवेशमें आकर एकबारही सिक्खोंपर हमला करदिया। परन्तु सिक्खोंने उसकालमें वीरतापूर्वक देरतक सामना किया। और पठान सिपाहि-योंको बहुत हानि पहुँचाई। जब लडते २ सायंकाल होगया तो पठानोंकी फौज वहांसे कूचकरके लाहौरकी तरफ चलपडी। और सिक्खलोग प्रथमकी तरह जंगलोंमें चले गये।

अहमदशाहका दिल्लीके बादशाह मुहम्मदशाहके साथ करनाल पानीपतके मैदानमें मुकाबिला हुआ दिल्लीके बादशाहके पास राजपू-तोंकी तथा मराठोंकी एक जबरी फौज थी। कुछ देरतक खूब लडाई हुई। अन्तमें अहमदशाह पराजित होकर पीछे लौटपडा। और देश पंजाबको लूटता मारता अपने देशको चलागया।

जब अहमदशाह देश पंजाबमें लूटमार करता जारहा था उसी कालमें प्रसिद्ध २ सिक्खोंने भी अपने उन शत्रुओंसे जिन्होंने नाजम लाहौरके पास सिक्खोंकी अनेक प्रकारकी शिकायत चुगली करके इनाम लाभ किये थे अवसर जानकर बदला लेनेका प्रयत्न किया। पंजा-बदेशके माझे प्रान्तके बहुतसे ग्राम सिक्खोंने लूटलिये। और साहब राय चौधरी जैसे अनेक बादशाही खैरख्वाहोंको पकडकर कतल कर-दिया। आगे २ अहमदशाह मुल्कको वैरान करता जाही रहा था। पीछे २ सिक्खोंनेभी अपना उचित रीतिसे बदला लेलिया। उन्हीं दिनोंमें एमनाबाद ग्रामके समीप रोडी साहिब नामक गुरुस्थानका मेला जो कि प्रतिवर्ष वैशाख मासमें हुआ करता है होनेवाला था। उसी अवसर पर दो चार झुण्ड सिक्खोंकेभी इधर उधर फिरते चलते पहुँचगये। जिनको देखकर लखपतराय दीवानके भाई जसपतरायने अपनी बादशाही खैरख्वाही जतलानेके लिये उनको मेलामें एकत्र होनेसे

बारण किया। यह जसपतराय उसी शहर एमनाबादहीका रहनेवाला था। सिक्खलोगोंने मिलकर इससे कहा कि आप मेलेमें विघ्न मतडालिये हमलोग प्रतिज्ञा पूर्वक कहते हैं कि मेला बहुत शान्तिपूर्वक होगा। परन्तु जसपतरायने अपनी हाकिमीके मदमें सिक्खोंके कथनपर कुछ लक्ष्य न दिया। प्रत्युत सिक्खोंके साथ दुर्वचनोंसे पेश आया। कहने लगा कि यदि आपलोग मेरे हुक्मको नहीं सुनोगे तो स्मरण रखना मैं आपलोगोंके शिरके केश हुक्केके पानीसे मुण्डवाऊंगा। इत्यादि जसपतरायके दुर्वचनोंको सुनकर सिक्खलोग अपने स्थानपर चले आये। और जसपतरायकी कुछभी परवाह न राखके गुरुस्थानमें डेरा लगाकर बैठे रहे। मेलाके दिन एकसौ सवारको साथ लेकर तथा आप हाथीपर सवार होकर जसपतराय सिक्खोंको गिरफ्तार करनेके लिये आया। उधर इसके दुर्वचनोंसे दग्ध हुये सिक्ख तो चाहतेही थे कि जसपतराय कहीं घरसे बाहर निकले तो ठीक हो। मेलेमें प्रवेश होतेही एक सिक्खने जसपतरायको अपनी बन्दूककी गोलीका निशा-ना बनालिया। एकही गोलीसे उसका काम तमाम हुआ। पीछे बहु-तसे सिक्खलोग तलवारें खैंचकर उसके साथके सवारोंके पीछे पडे। बहुतसे सवार मारे गये। शेष भाग निकले। पीछे ग्राममें जाकर सिक्खोंने जसपतरायका घर बार सब लूटलिया। और मला करके जंगलोंमें चले गये।

जब उधर दीवान लखपतरायको अपने भाईके मारे जानेकी तथा घरबार लूटे जानेका समाचार लाहौरमें पहुंचा। तो उसने उसी वक्त नाजम लाहौरके पास जाकर अपनी पगडी उसके पावँपर उतारके रखदई। और कहने लगा कि सिक्खोंने मुझको वैरान करडाला है। यदि आप मेरेको सहायता दें तो मैं इनसे अपने भाईका बदला लेवों और इस सिक्खजातिको इस देशसे नेस्तनाबूद करडालों। नाजम लाहौर तो प्रथमही इस वार्त्ताका अभिलाषी था। उसने उसी वक्त कईएक अच्छी २ तोपें तथा बहुतसी फौज साथ देकर सिक्खोंके

विनाशके लिये दीवान लखपतरायको रवाना किया। सबसे प्रथम दीवान लखपतरायने लाहौरमें रहनेवाले सिक्खोंपरही हाथ उठाया। पकड २ कर अनेकों मरवाडाले। बहुतसे मारे डरके शहर छोडकरभी भागगये। प्रतिदिन खोज करनेसे जितने सिक्ख मिलें सबको दीवान अपने सामने कतल करवाता था बहुतदिनतक ऐसेही करता रहा। शहरके अच्छे २ प्रतिष्ठित हिन्दुओंने लखपतरायको इस वार्त्तासे वारणभी किया कहा कि वस्तुतः यह लोग हमारेही भाई बन्धु हैं। इनकी तबाहीसे हमारी अपनी ही तबाही होगी। इनलोगोंके बाहुबलसे हमारे धर्मकी बहुत रक्षा हुई है तथा आगेको होनेकी आशा है। इत्यादि बहुत कुछ कहा परन्तु उस कालमें भ्रातृदुःखदग्ध दीवान लखपतरायने उनकी एकभी न सुनी। किन्तु सिक्खोंको पकड २ मरवाताही रहा। सिक्खधर्मकी पुस्तकें जलवादीं। कईएक गुरुस्थानभी गिरवाकर भूमिमें मिलादिये। उन्हीं दिनोंमें मुसल्मानोंकी फौजने जो कि शहर अमृतसरके चारोंओर रहा करती थी गोवध करके श्रीअमृतसरजीके तालाबमें डालदिया। और सर्वत्र प्रख्यात करदिया कि जो सिक्ख अब इस तालाबमें स्नान करने आवेगा वहांही कतल किया जावेगा। इस खबरके सुनतेही भाई सुखासिंहजीने श्रीअमृतसरजीके तालाबमें स्नान करनेके लिये कमर बाँधी। एक दिन दोपहरके समय घोडेपर सवार होकर श्रीअमृतसरजीके तालाबपर पहुँचकर स्नान करलिया। पीछे घोडेपर सवार होकर मुसल्मानोंकी फौजको अपने स्नान करनेकी सूचना देते हुए चले आये। फौजके दो चार सिपाही इनके पीछे दौडे। जिनको इन्होंने वहांही रक्खा। दूरतक मुसल्मानोंने इनका पीछा किया। परन्तु किसीके हाथमें न आये। पीछे लखपतराय दीवानके कहनेसे मुसल्मानोंने अमृतसरके तालाबको मट्टीसे पूरके जमीनके साथ मिला दिया।

उधर सिक्ख समुदायको जब यह हाल मालूम हुआ कि दीवान लखपतराय एक बडी शूरवीर फौज लेकर पंजाब देशमें जहां तहां

सिक्खोंकी बरबादी कररहा है तो चारों ओरसे चल २ कर सिक्खलोग काहनूवानके जंगलमें आन एकत्र हुए । यह जंगल उसकालमें कई कोसोंकी लम्बाई चौडाईमें विराजमान था । यात्री मनुष्यके गमना-गमनका मार्ग तो इसमें किसीतरफसेभी न था । अनेक तरहके जंगली जीवोंका निवासस्थान था । प्रायः डाकू लुटेरे लोगभी इधर उधरसे लूटमार करके उसी जंगलमें आन घुसा करते थे । अपरि-चित पुरुषका प्रवेश होना तो उस जंगलमें दुर्घट था । उसी जंगलमें चारोंओरसे सिक्खोंके झुण्डोंके झुण्ड आन घुसे । लखपतराय दीवान-नेभी अपनी सेना समेत उसीके किनारेपर आन डेरा जमाया । सिक्खलोग दिनभरतो जंगलमें शिकार खेलते फिरें । और रात्रिको जंगलसे बाहर निकलकर दीवानकी फौजपर छापा मारें । जो मिले लूटलेजावें । जो सामने आवे उसको काट फाट जावें । और फिर उसी जंगलमें घुसजावें दीवानकी फौज इस जंगलसे सर्वथा अपरि-चित थी । इसलिये किसीका उसमें घुसनेका साहस न हुआ । परन्तु सिक्खलोग तो उस जंगलके निवासी थे । इसलिये उसके पूर्ण परिचित थे । इसी तरह तीन मासतक होता रहा । सिक्खलोग बादशाही फौजके पेचमें न आये । परन्तु इनकी फौजको प्रतिदिन रात्रिको छापा मारके कुछ न कुछ हानि पहुँचाही जाते । अन्तमें सिक्खोंके पास जंगलमें गोली बारूद कुछ न रहा । और सीधा सामान शिकारादिकीभी तंगी होने लगी । तो सब सिक्खोंने सम्मति करके उस जंगलको छोडदिया । और अर्धरात्रिके समय दीवानकी फौजपर छापा मारके पर्वतोंकी तरफ भागनिकले । और सूर्य्य निक-लेतक कई कोस दूरतक पहुँच गये । उधर प्रातःकाल होतेही दीवान लखपतरायने पर्वतीराजाओंको सिक्खोंके पीछे पडनेके लिये लिख-भेजा । और आपभी उनके पीछे पर्वतोंहीकी तरफ चलपडा । जब सिक्खोंके झुण्ड बसोहलीके समीप पहुँचे तो आगेसे पर्वतीराजाओंकी फौज उनके मार्गमें आनखडी हुई । पीछेसे दीवान लखपतरायभी

अपनी फौजको साथ लेकर आन पहुँचा। तीसरी तरफ एक दुर्गम ऊँचा पर्वतखडा था चौथी ओर व्यासानदी अतिवेगसे बहरही थी। इसलिये सिक्खोंका मार्ग चारों ओरसे रुकगया। यह समय सिक्खोंके लिये बहुतही भयानक था। बहुतसे सिक्खोंने तो साहस करके अपने घोडे व्यासानदीहीमें ठेलदिये। परन्तु जब देखा कि इस प्रबल प्रवाहवाली नदीमें बहुतसे सिक्ख घोडोंसमेत बहगये हैं। तो फिर पीछे किसीका नदीमें घोडा ठेलनेका साहस न हुआ। शेष जिस तरफ पर्वत था। वह ऐसा बिकट था कि घोडेकी तो क्या मनुष्य पैदलभी उसपर नहीं चढसकता था तथापि बहुतसे सिक्खलोग पैदलहोकर उस पर्वतपर चढगये। यह समय सिक्खोंको एक बहुतही भयानक था। आगे पीछेसे गोली गोलोंकी वर्षा होरही थी। कहीं इधर उधर भागनेके लिये मैदान न था। अन्तमें लाचार होकर सिक्खोंने दोनोंतरफ लडाई शुरूकरी कुछ सिक्ख तलवारें खैंच २ कर पर्वतीराजाओंकी फौजके सामने हुए। और कुछ सिक्ख दीवान लखपतरायकी फौजसे लडनेलगे। दोनों ओरसे खूब तलवारें चलनेलगीं। कुछ देरतक सिक्खोंने दोनोंही फौजोंके साथ खूब मुकाबिला किया इसी लडाईमें भाई सुखाँसिंहजीकी टांगपर एक गोलीका घाव हुआ परन्तु आपने उसका कुछ ख्याल न किया। किन्तु बराबर लडतेही रहे। इतनेहीमें रात्रि होगई। अन्धकार छागया। दोनों ओरके शूरवीर युद्धसे उपराम होकर विश्रान्ति करने लगे। युद्ध सफरके थके हुए शूरवीर गाढनिद्रामें शयन करगये। परन्तु चारों ओरसे घिरेहुये सिक्खोंको निद्राका आराम दुलर्भ था। अर्द्धरात्रिके समय सम्मति करके दीवानकी फौजपर छापा मारतेहुए सिक्खलोग फिर पीछेको भाग निकले। प्रातः काल होतेतक तीस चालीस कोसतक पहुँच गये। दीवान लखपतरायनेभी उनका बहुत पीछा किया। परन्तु फिर सिक्खलोग उनके हाथमें न आये किन्तु दारियाय शतद्रुसे पार होकर मालवादेशमें प्रविष्ट होगये। और कुछ दिन वहां निवास करके

अपने कटे फटे जखमोंको ठीक किया । मालवादेशके सिक्खोंनेभी इन लोगोंकी बहुतही सेवाकरी जो सिक्ख पर्वतोंपर चढगये थे वह लोगभी इसीस्थानपर धीरे २ चलते फिरते आन मिले ।

इति त्रयःषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६३ ॥

अथ चतुः षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६४ ॥

जिकरय्याखां नामक नाजम लाहौरके दो पुत्र थे । बडे पुत्रका नाम यहीय्याखां जो कि अपने पिताके मरनेके पीछे लाहौरका हाकिम नियत हुआ था । छोटे पुत्रका नाम शाहनवाजखां था । यह शहर मुलतानका हाकिम था । इसने अपने पिताके मरनेके कुछ दिन पीछे पिताकी संपदाका भाग अपने बडे भाई हाकिम लाहौरसे बांटना चाहा । इसी कारणसे कुछ फौज साथ लेकर लाहौर आन पहुँचा । और शालामारबागके समीप अपने खेमे गाडकर दीवान सूरतसिंहद्वारा अपने भाईके पास पिताकी सम्पत्ति बांटनेका संदेश भेजदिया । अभीतक दोनों भाइयोंका कुछ निपटारा नहीं हुआ था कि ईदका त्योहार आगया । और उस दिन दोनों भाइयोंकी मुलाकातके समय परस्पर बातोंहीमें तकरार होपडी । परस्पर दोनोंतरफकी खैंचा खैंचीसे युद्धका समय आन पहुँचा कुछ देरतक मारकूट चली । अन्तमें छोटे भाईने बडे भाईको दीवान लखपतरायके समेत कैद करलिया । और आप विना बादशाह दिल्लीकी आज्ञासे लाहौरका हाकिम बनके बैठगया । दीवान कोडामल्लको मुलतानसे बुलाकर लाहौरमें अपना दीवान बनालिया । उन्हीं दिनोंमें बडाभाई कारागारके दारोगासे मिलकर कैदसे छूटकर दिल्लीको भागगया । इधर छोटे भाई शाहनवाजखांने जब बडेभाईका कैदसे दिल्लीको भागना सुना तो उसने यह विचारा कि मैंने बादशाह दिल्लीके हुक्मसे विनाही यह काम किया है । सम्भव है कि दिल्लीका बादशाह मेरे भाईका सहा-

यक होकर मेरेको क्लेश देनेका प्रयत्न करे। इत्यादि विचार करके इसने उसी कालमें काबुलमें अहमदशाह दुर्रानीको लिखभेजा कि यदि आप इस अवसरपर यहाँ पहुँचे तो आशा है कि विना युद्ध जंगके किये सभी पंजाबदेश आपके पंजेमें होजावे। अहमदशाह अबदालीने इस पत्रके बांचतेही पंजाबकी तैयारी करदई। उधर बादशाह दिल्लीने जब अहमदशाहका इस देशपर आना सुना तो उसने अपने कमरदीनखां नामक वजीरद्वारा शाहनवाजखांको यह लिखवा भेजा कि यदि तुम अहमदशाह अबदालीके हमलेको अपनी जवांमरदीसे रोको तो हम तुमको प्रसन्नतापूर्वक लाहौरका हाकिम बनाये रक्खेंगे। वजीर कमरदीनखां शाहनवाजखांका चाचा था। इसलिये उसने चचेके लिखनेपर विश्वास करके अहमदशाह अबदालीसे अपना चित्त हटालिया। परन्तु अब इस विचारमें पडा कि अहमदशाहकोभी तो हमनेही बुलाया है उसको क्या जवाब देवें? बहुत देरतक शोचा कोई तदबीर दीख न पडी। अन्तमें ढीठ होकर बैठरहा। उधर अहमदशाह अबदालीने पेशावर पहुँचकर शाहनवाजखांके पास एक अपना वकील भेजा जिसने लाहौरें जाकर शाहनवाजखांके साथ कुछ परस्पर अहद्नामेकी बातचीत करी परन्तु वकीलको जब यह प्रतीत हुआ कि इसने अपना सम्बन्ध दिल्लीके साथ जोड लिया है। इसीसे हमलोगोंकी तरफसे उदास है तो वह उसीवक्त वहांसे चलकर अपने बादशाहके पास पहुँचा। और लाहौरका सभी हाल अपने बादशाहको आन सुनाया। अहमदशाह अबदालीने इस वार्त्ताकी कुछ परवाह न करी कि शाहनवाजखां हमसे उपराम होगया है। और बादशाहदिल्लीके साथ अपना सम्बन्ध जोड बैठा है। इसलिये हमको पीछे हटजाना चाहिये। किन्तु अपने विचारको दृढ-रखकर लाहौरकी तरफ चढाई करदई। जब रुहतासके मुकामपर पहुँचा तो वहांसे अपने मुरशद (गुरु) के साबरशाह नामक पुत्रको उपदेशक बनाकर लाहौर भेजा। और यह कहा कि जिस तरहसे

सम्भव हो शाहनवाजखांको अच्छे २ उपहारके पदार्थ देकर तथा मीठे २ वचन सुनाकर अपने हाथमें करो । और दिल्लीसे तोडकर उसका सम्बन्ध हमारेसे जोडो । यदि प्रेमसे न माने तो अनेक प्रकारका भयभी दिखलाना । इत्यादि नीतिके उपदेशकी सम्मति लेकर साबदशाह वहांसे चलकर लाहौरमें पहुँचा । यह साबदशाह बडे सख्तमिजाजका आदमी था । उपदेशमें तो कुशल था परन्तु शान्तिपूर्वक नहीं करसकता था । इसने जातेही नवाजखांके साथ प्रेमकी बातचीत तो क्याही करनी थी तुम बडे प्रतिज्ञा हीन हो । तुम बडे मिथ्यावादी हो । तुम बडे धोखेबाज हो । तुम दण्डके लायक हो । इत्यादि शब्दोंका प्रयोग करने लगा । जिनको सुनतेही शाहनवाजखां रक्तनेत्र हो गया । और उसीवक्त जल्लादोंको हुक्म दिया कि इस साबदशाहको पकडकर कतल करडालो । हुक्म होतेही जल्लादोंने पकडलिया । और सरे दरबार कतल करडाला । शेष उसके सभी सहायकलोग भागकर अहमदशाहके पास चले गये । और लाहौरमें होनेवाला यावत् वृत्तान्त जा सुनाया । इधर साबदशाहके मरवाडालनेके पीछे शाहनवाजखांनेभी अनेक प्रकारकी युद्धकी तैयारी करी । और इधर उधर बिखरी हुई फौजको एक स्थानमें एकत्र किया । शहरके चारोंओर मोरचे बाँधके गोली बारूदके ढेर लगादिये । और सेनाभी मोरचोंपर लडनेके लिये नियत कर दई । इसी अवसरपर शाहनबाजखांभी मिरजा अजमत वेगखां नामक फौजदारको साथ लेकर लडाईके मुकाबिलेमें आन खडा हुआ । दोनों ओरसे लडाई शुरू होगई । उस कालमें अहमदशाहके पास केवल दससहस्र फौज थी । और शाहनवाजखांके पास पचास सहस्र थी परन्तु जय पराजय परमेश्वरके अधीन है । थोडीही देर लडनेके पीछे शाहनवाजखांकी फौज ढीली होगई । और सब पीछेको भागनिकली अहमदशाहदुर्रानीकी फौज शहरमें घुसपडी । और खूब लूटमार मचाई । मुगलपुरा नामक महल्लेमें बडे २ धनीलोग रहा करते थे । उनके घरोंको ऐसा लूटा कि

किसीके घरमें एक कौडी न छोडी। उसी लूटके मालसे दुर्रानी फौ-जके सिपाही खूब धनी होगये। शाहनवाजखांभी हार खाकर दिल्लीको भागगया। दीवान लखपतराय तथा कसूरनिवासी पठान मीरमोमनखां दोनों यहय्याखांके भगा देनेके अपराधमें कैद किये हुए थे। उन दोनोंको अहमदशाहने छोडदिया। और अपनी फौजको लूटमारसे हटाकर लाहौरकी हाकिमीका अधिकार दीवान लखपतरायको देदिया। तथा मोमनखाँको दीवान लखपतरायका सहायक बनादिया। स्वयं अहमदशाह काबुलसे और फौज आनेकी प्रतीक्षामें कुछ दिन-तक लाहौरहीमें ठहरा रहा। और जब काबुलसे फौज आगई तो लाहौरसे दिल्लीकी तरफ रवाना हुआ। जब अहमदशाह दुर्रानी सर-हिन्दके समीप पहुँचा तो उधर बादशाह मुहम्मदशाहका पुत्र शाह-जादा अहमदशाहभी दिल्लीसे लाहौरको जाता हुआ मार्गमें इनके मुकाबिलामें ठहरगया। दोनों तरफसे खूब युद्ध शुरू हुआ। अनेक शूरवीर कटकटकर रणभूमिमें गिरने लगे। दोनों तरफसे किसीने कोई लडाईका दाँव बाकी न रक्खा। वजीर करीमुद्दीन जो कि शाहजादाके साथ लाहौरकी नजामतका खराज लेने जारहा था वहभी इसी लडाईमें मारागया। इस लिये प्रथम दिवस अहमदशाह अबदालीने विजय लाभ किया। परन्तु दूसरे दिन फिर युद्ध होनेलगा। वजीर करीमुद्दीनका पुत्र नवाबमुअय्यनमलक जो कि लाहौरके सूबाका अधिकार पाकर शाहजादाके साथ लाहौरको जारहा था अपने पिताके मरनेपर दुर्रानि-योंकी फौजके साथ खूब जोरशोरसे मुकाबिला करने लगा। कुछका-लतक ऐसा पांउ जमाकर लडा कि ईरानी पठानोंकी फौज पीछेको भाग निकली। अन्तमें अहमदशाह अबदाली पीछेको लौट गया। नव्वाब मुअय्यनमलकने दुर्रानी पठानोंकी फौजका दरियाय शतद्रुतक पीछाकिया। परन्तु वहांपर दिल्लीके बादशाहके बीमार होनेका समाचार पहुँचा। इसालिये शाहजादा अहमदशाहको लाचार दिल्लीकी तरफ पीछे जाना पडा। और मुअय्यनमलक लाहौरमें चलागया। वहाँ पहुँचकर

उसने नजामत लाहारकी सब हुकूमत अपने हाथमें लेली । और दीवान लखपतराय जो वहाँका हाकिम बन बैठा था उसको कैद कर-लिया । तथा तीस लाख रुपया उसपर जुर्मानाभी किया । जिसमें बाईस लाख तो उसकी जायदादसे वसूल हुआ । और बाकी वसूल करनेके लिये दीवान कोडामल्लको हुकुम हुआ । दीवान कोडामल्लका लखपतरायसे बहुतदिनसे भीतरी राग द्वेष चला आता था । इसलिये उसने अवसर पाकर लखपतरायको कैद करके सिक्खोंके सपुर्द करदिया । सिक्खोंने उसको छः मासतक कैदमें अनेक प्रकारके क्लेश देकर अन्तमें मारडाला । यह सभी वृत्तान्त संवत् १८०९ विक्रमीमें हुआ है ।

जिन दिनोंमें अहमदशाह अबदाली इस देशमें आया था । और बादशाह दिल्लीकी फौजने उसका सामना किया था । उन्हीं दिनोंमें सिक्खोंकोभी लूटमार करनेका खूब अवसर मिला था । अच्छे २ अनेक ग्राम नगर लूटलिये थे । बहुतबार लाहौरकी दुकानेंभी लुटगई थीं । उन्हीं दिनोंमें सिक्खोंने एक अमृतसरमें किला बनाकर उसका नाम रामगढ रखलिया था । और इसमें अनेक प्रकारका लडाईका सामानभी एकत्र करलिया था । परन्तु जब मीरमुअय्यन मलकने लाहौरकी हुकूमत अपने हाथमें ली और सिक्खोंकी शिकायत चारों तरफसे सुनने लगा । तो उसने देशमें गश्तीफौज भेजकर जहाँ तहाँ सिक्खोंका शोर शान्त करना शुरू किया । पर्वती राजाओंकोभी लिख भेजा कि वह लोग अपने इलाकोंमें किसी सिक्खको आश्रय न देवें । और जो सिक्ख गिरफ्तार होकर आता वह सरेबाजार कतल किया जाता । परन्तु सिक्ख जातिमें कुछ ऐसी दैवी शक्ति थी कि कोई सिक्खभी किसीके पंजेमें सहजसे नहीं आसकता था । उन्हीं दिनोंमें मुअय्यन मलक नामक सूबा लाहौरने दीवान कोडामल्ल तथा अदीन-वेग नामक हाकिम जालन्धरके साथ एक उम्दी लडाकी फौज देकर सिक्खोंके रामगढ नामक किलेपर चढाई करी । उधर सिक्खोंके पास

भी सब सामान तैयारही था। मुसल्मानी फौजके पहुँचतेही लडाइ शुरू होगई। इसी लडाईमें जस्सासिंह रामगढिया जिसके कारण विशेषसे सिक्खोंने अपनी जातिसे निकाल दिया था और वह हाकिम जालन्धरके पास नौकर होजारहा था। वहभी अपने एकसौ सवारके साथ मुसल्मानोंकी तरफसे सिक्खोंके साथ लडरहा था। परन्तु जातिस्नेहसे उसका सिक्खोंकी हानि करनेको मन नहीं चाहता था इसलिये उसने अपने तीरके साथ एक पत्र बाँधके सिक्खोंकी तरफ चला दिया। उसमें लिखा कि यदि आपलोग इस अवसरपरभी मेरेको अपने साथ मिलालो और पूर्व अपराधको न स्मरण करो तो मैं अबभी आपलोगोंमें आनेको तैयार हूं। अन्यथा लाचार हूं। सिक्खोंने ऐसे अवसरपर ऐसे शूरवीर पुरुषका मिला लेना बहुतही उचित समझा। और सबकी सम्मतिसे एक पत्र लिखके तीरके साथ बाँध भाई जस्सासिंहके सामने चला दिया जिसको बांचतेही भाई जस्सासिंह अपने एकसौ सवारके साथ उसी वक्त सिक्खोंमें आन मिला। उसके आनेसे सिक्खोंने परस्पर बहुत प्रसन्नता प्रकट करी। और उसी किलेमें बहुत दिनतक लडते रहे। रात्रिको किलेसे बाहर निकलकर कुछ सीधा सामान भी लेजाते कई एक सिक्ख मुसल्मानी फौजपर छापा मारके रात्रिको लूटमारभी करते। जिससे मुसल्मानी फौजको बहुतही हानि पहुंची। परन्तु अभीतक सिक्खलोग मुसल्मानी फौजसे पराजित नहीं हुए थे कि पंजाब देशभरमें फिर अहमदशाह अबदालीके आनेकी खबर फैल गई। इसी कारणसे मीर मुअय्यनमलकको सिक्खोंका सामना छोडकर उस तरफ जाना पडा। यह अहमदशाह अबदालीका हिन्दोस्थानपर तीसरी वार आना है। इस आनेको सुनकर मीर मुअय्यन मलकके चित्तमें बहुतही विचार हुआ। यह अपनी फौजको कईवार सिक्खोंके मुकाबिलेमें देखही चुका था। इसलिये इसने अपनी फौजको अहमदशाहका मुकाबिला करनेमें समर्थ न समझा।

इसी कारणसे इसने दीवान कोडामल्लकी सम्मतिसे अहमदशाह

अबदालीको सन्धिपत्र लिख भेजा। कि मैं आपका वशवर्ती हूं । जैसे चाहें आप मुझसे प्रतिज्ञा पत्र लिखवा सकते हैं । जब यह सन्धिपत्र अहमदशाह अबदालीके पास पहुंचा । तो उसने उत्तरमें यह लिख भेजा कि यदि हमको प्रतिवर्ष लाहौरकी निजामतका खराज जैसे कि नादिरशाहको मिला करता था मिला करे तो हम यहींसे पीछे लौट जाते हैं । मीर मुअय्यन मलकने तंग अवसर जानकर सभी स्वीकार किया । और प्रतिज्ञापत्रादिको लिखा पढाकर अहमदशाह अबदाली फिर पीछे काबुलको लौट गया ।

जब इस प्रबन्धका समाचार दिल्लीके बादशाहको मिला तो उसने अपनी अप्रसन्नताका एक परवाना मीर मुअय्यन मलकके नाम लिख भेजा । और उससे मुलतानका इलाका छीनकर शाहनवाजखां जो कि अहमदशाह अबदालीके प्रथम हमलेसे भागकर दिल्लीमें आया था उसको देदिया । तथा एक प्रबल फौजकी सहकारतासे उसका मुलतानपर अधिकार जमा दिया । दिल्लीके बादशाहके इस अनुचित कार्य्यपर मीर मुअय्यनमलकको बहुतही शोक हुआ । और उसने उसी वक्त दीवान कोडामल्लके साथ कुछ फौज देकर मुलतानपर भेजनेका विचार किया । दीवान कोडामल्ल श्रीगुरुजीका परमभक्त तथा सिक्खजातिका हृदयसे शुभचिन्तक था । इसलिये जब उसको मुलतानपर चढकर जानेका हुक्म मिला तो उसने अवसर जानकर मीर मुअय्यन मलकके पास सिक्खजातिकी बहादुरीकी बहुतही प्रशंसा करी । और साथही यहभी कहा कि यदि इस कालमें सिक्खोंकी सहायता लीजावे तो मुलतानका फतह होना कुछ दुर्घट नहीं है । इस वार्त्ताको मीरने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया । दीवान कोडामल्लने उसीवक्त सिक्खोंको अमृतसरमें लिखकर एक भारी फौज उनकी अपनी सहायतामें लेली । और सवारको प्रतिदिवस एक रुपया तथा प्यादेको प्रतिदिवस आठ आने खर्चा देना स्वीकार किया । सभी एकत्र होकर लाहौरसे कूच करके मुलतानमें पहुँचे । किलेको चारों तर-

फसे घेरलिया । दोनों तरफसे युद्ध शुरू होगया । धीरे २ छः महीने तक लडाई चलती रही । अन्तमें किलेके अन्दर सीधा सामान न रहा । फौजके सिपाही भूखे मरने लगे । तो लाचार होकर शाहनवाजखां किलेसे बाहर निकल आया । और अति समारोहके साथ शत्रुओंका सामना करनेलगा । परन्तु अन्तमें दो पहरके समय सिक्खोंकी शूरवीर फौज जो कि बीस सहस्रके लगभग थी तलवारें खैंच २ कर शाहनवाजखांकी फौजपर ऐसी टूट पडी कि सहस्रों शूरवीर सिपाही रणभूमिमें महानिद्रामें शयन कर गये । और इतनेहीमें एक भीमसिंह नामक शूरवीर सिक्ख अत्यन्त शीघ्रतासे शाहनवाजखांके पास पहुँचकर उसका शिर काटकर लेआया । उस शिरको अपने नेजेपर टांगके फतह२ शब्दको पुकारता हुआ दीवान कोडामल्लके सामने चला आया । दीवान कोडामल्ल उस सिक्खकी बहादुरीपर बहुतही प्रसन्न हुआ और उस वीरसिंहको अनेक प्रकारका पारितोषिक देकर सन्तुष्ट किया एवं दीवान कोडामल्लने सिक्खोंकी सहायतासे मुलतानपर अपना अधिकार जमालिया जब यह समाचार लाहौरमें मीर मुअय्यन मलकको पहुँचा तो उसने प्रसन्न होकर दीवान कोडामल्लको महाराजकी उपाधिसे भूषित किया । और मुलतानकी हाकिमीका अधिकारभी उसीको देदिया ॥

इति चतुःषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६४ ॥

अथ पञ्चषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६५ ॥

दीवान कोडामल्ल इस वार्त्ताको अच्छी तरह जानता था कि यह विजय प्रतिष्ठा मेरेको शूरवीर सिक्खजातिकी सहायताहीसे मिली है । इसलिये उसने मीर मुअय्यन मलकके पास सिफारिश करके सिक्खोंके नाम फिर जागीर इलाका चूहनीयां तथा चुभालकी जिसकी आमदनी डेढ लाख रुपया वर्षकी थी जारी करवादी और स्वयंभी अमृतसरमें जाकर हरिमन्दिरमें प्रसाद करवाया तथा अनेक प्रकारकी भेंट

पूजा चढाई । उसी कालमें श्रीअमृतसरजीका तालाव जो कि दीवान लखपतरायके वक्तमें मुसल्मानोंने मट्टीसे पूरदिया था मट्टी निकल्वामें-कर साफ करवादिया । और उसमें सुन्दर निर्मल जलभी भरवादिया ।

उधर जब सूबा लाहौरकी प्रतिज्ञाके अनुसार एकवर्षतक अहमदशाह अबदालीको खराज न पहुँचा तो उसने फिर संवत् १८१० विक्रमीमें पंजाबदेशपर चढाई करी और लाहौरके समीप आनकर जीवनमल्ल वकीलद्वारा मीर मुअय्यन मलकसे बादशाही खराज मांगा । जिसका उत्तर मीरने यह दिया कि आपकी फौजके इस देशमें आनेके कारण देशभरमें हलचल मचरही है । इस लिये खराजका वसूल होना कठिन होरहा है । आप यदि अपनी सेनाको पीछे लौटादें तो मैं शीघ्रही सारे देशका खराज वसूल करके आपकी सेवामें भेजदूं परन्तु अहमदशाहने इस उत्तरको कच्चा जानकर स्वीकार न किया । और लाहौरपर आक्रमण करनेकी तैयारी करदी उधर मीर मुअय्यन मलकनेभी अदीनबेगनामक फौजदार तथा दीवान कोडामल्लको लिखभेजा । वह लोग पत्र देखते ही अपना २ युद्धका सामान लेकर लाहौर आन पहुँचे । उधर अहमद-शाहभी बहुतदिनतक सन्धिकी प्रतिक्षा करके युद्ध करनेको तैयार होगया । दोनों ओरके लश्कर लाहौरके बाहर आनकर जमगये । कुछ थोडीसी लडाईभी परस्पर हुई । परन्तु मीर मुअय्यन मलकने अपने मोरचे प्रथमहीसे शहरके किलेके भीतर मजबूत कररक्खे थे । थोडीसी लडाई करके वह अपनी सेनासमेत उन मोरचोंपर घुसके जा बैठा । इधर अहमदशाहभी लाहौरके बाहर चारमासतक पडारहा नाजम लाहौर या उसका कोई सिपाही न लाहौरके किलेसे बाहर निकला न कुछ लडाई हुई । परन्तु जब किलेके भीतरका सीधा सामान सभी खुट गया । । और बाहरसे आना बन्द होगया तो मीर मुअय्यन मलक मोरचोंमें बैठा २ बहुत तंग आगया । घोडोंके लिये घासतकभी न रहा किन्तु पुराने बँधे हुए घासके छप्पर तोड २ खिला दिये । अन्तमें

सबने सम्मति करके यह निश्चय किया कि बाहर मैदानमें निकलकर युद्ध किया जावे। इस विचारके अनन्तर मीर मुअय्यन मलक दीवान कोडामल्ल तथा अदीनबेग फौजदार सभी अपनी २ फौजलेकर लडनेके लिये बाहर मैदानमें आन खडे हुए। उसीकालमें दीवान कोडामल्लकी सम्मतिसे सूबा लाहौरने एक सिक्खोंकी फौजभी अमृतसरसे अपनी सहायताके लिये बुलालई थी। उधर अहमदशाहनेभी अपनी फौजको तैयार करदिया। दोनों तरफसे लडाई होनेकी तैयारी हुई। प्रथम अहमदशाहकी फौजने लाहौरके सवारों पर हमला किया। दोनों ओरसे मार मार होने लगी। अनेक शूरवीर काटे फाटे गये। दो पहरतक युद्धभूमि खूब गरम रही। पीछे पठानोंकी फौजने अपना ऐसा जोर दिखाया कि लाहौरी फौजके पाउँ हिलनेका समय आन पहुँचा। उसी समय दीवान कोडामल्लने एक तरफसे बढकर ऐसा जोरसे सामना किया कि पठानोंकी फौजको दूरतक पीछे हटा दिया। परन्तु उसी अवसर पर दीवान कोडामल्लके हस्तीका पाउँ एक पोली भूमिमें धँस गया। जिसके कारण सवार तथा हस्ती दोनों भूमिपर गिरपडे। इनके गिरतेही एक वीर सवार पठानने आगे बढकर दीवान कोडामल्लजीका शिर काटडाला। दीवान कोडामल्ल एक भारी दब-दबेवाला प्रतापी वीर पुरुष था। इनके प्राणान्त होतेही मीर मुअय्यन मलकका चित्त टूटगया। फौजभी अधीर होकर भाग निकली। उसके पश्चात् थोडी देरतक सिक्खोंने पठानोंका मुकाबिला किया। परन्तु उनका सरदार सुखाँसिंहभी एक तोपके गोलेसे मारा गया इसलिये सिक्खभी लडनेसे उदास होगये। अन्तमें मीर मुअय्यन मलकने बादशाह अहमदशाहके वशवर्त्ती होना स्वीकार करलिया। अहमदशाहने शान्त होकर शालामारबागमें अपना उतारा किया। वहांपरही मीर मुअय्यन मलक अनेक प्रकारकी भेंटपूजा लेकर बाद-शाहकी मुलाकात करनेको आया। बादशाहने बडे प्रसन्न होकर मीरसे मुलाकात करी। और पूछा कि हमको आपके साथ अब कैसा

वर्त्ताव करना चाहिये । मीरने कहा जैसे आपकी इच्छा हो कीजिये । यदि आप रहमदिल हैं तो बख्श दीजिये । दौलतकी इच्छा हो तो जितनी चाहो लेलीजिये और यदि आप रहमदिल नहीं हैं किन्तु संग-दिल हैं तो मेरेको कतल करवादीजिये । बादशाह अहमदशाहने मीरसे कहा कि यदि हम तुम्हारे हाथमें आते तो तुम हमसे कैसा वर्त्ताव करते मीरने कहा हुजूर यदि आप मेरे हाथ आते तो मैं अवश्य आपका शिर काटके अपने बादशाहके पास दिल्लीमें भेजने बिना न रहता । अहमदशाह मीरके इस स्वामी भक्ति प्रदर्शक बचनको सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ । और कुछ देरतक वार्त्तालाप करके पचासलाख रुपया मीरसे वसूल करना ठहराया । और सिवाय इसके ग्यारा सुन्दर घोडे तथा सरसामान सजावटके समेत एक बहुत कीमती हस्तीभी मीर मुअय्यन मलकसे भेंटमें लिया उसके पश्चात् इलाका काश्मीरके बिना सारे पंजाबदेशकी हकूमतका प्रतिज्ञापत्र मीरको प्रसन्न होकर लिख दिया । और एक अत्यन्त सुन्दर तथा कीमती खिलअत मीरको अपनी तरफसे प्रदान करके लाहौरको रवाना किया तथा स्वयं शालामारबागसे अपना मुकाम उठाकर शाहदरेके मुकामपर जा ठहरा । वहांसे अपने सरदार अबदुल्लाखानके साथ कुछ फौज देकर उसको काश्मीरकी तरफ भेज दिया । कहा कि वहां परसे दिल्लीके बादशाहका अधिकार उठाकर अपना जमा देना । जब अबदुल्लाखां वहां पहुँचा तो वहांके सूबाने जो कि बादशाह दिल्लीकी तरफसे बैठा था वह विना रोक टोकके अहमदशाही अधिकारको स्वीकार करलिया और बिना लडाई फसादसे सारे मुल्कका अधिकार उनके सपुर्द कर दिया । जब इस वार्त्ताका समाचार बादशाहको पहुँचा तो उसने शाहदरेसे काबुलको कूच कर दिया । और जीवनमल्लको सूबा काश्मीरका अधिकार देकर अबदुल्लाखांको अपने पास पीछे बुलालिया ॥ अहमदशाहके पीछे लौटजानेके समय पंजाबदेशकी बहुतही बुरी दशा थी ॥ राज्यप्रबन्धकी शिथिलताने देशको वैरान करडाला था

सिक्खोंने अनेक ग्राम नगर लूटमार करके वरवाद करडाले थे। और जहां तहां बहुत प्रबल होगये थे। दीवान कोडामल्लके मरनेसे मीरमुअय्यनमलकने इनकी जागीरभी जब्त करलई थी और जहां तहां इनका बल तोडनेके लिये एक गश्तीफौजभी नियत कर दई थी उसकालमें जो सिक्ख कहीं पकडा जाता विना विचारके कतल करवा दिया जाता था। मीर मुअय्यनमलकने सिक्खोंके छोटे २ बचे तथा स्त्रियों तकभी मरवानेका प्रबन्ध किया था। उन दिनोंमें एक मलापुरनामक ग्राममें बहुतसे सिक्खलोग रहा करते थे। मीरमुअय्यनमलकने कुछ फौज साथ लेकर उनपर चढाई करदई सिक्ख बहुतही थोडे थे। इसलिये मुकाबिला न करसके किन्तु अपने घर छोड २ कर जंगलोंमें भाग गये। उसी ग्राममें मीरने एक किला बनवाकर वहांपर थोडीसी फ़ौज सिक्खोंके प्रबन्धके लिये नियत करदई। और आप लाहौरको चला आया। परन्तु मार्गमें शिकारखेलनेके समय दैवात् वह घोडेसे खिसलपडा। नीचे गिरते समय रकाबमें पाउँ उलझगया। घोडा वेगसे भागही रहा था इस लिये भूमिपर घसीटते हुये मीरसाहिबजीके प्राणान्त होगये। साथ होनेवाली फौजके सिपाहीलोग उसके शवको लाहौरमें लेआये। परन्तु सिपाहियोंको बहुतदिनोंसे तन्ख्वाह नहीं मिली थी इसी कारणसे उन्होंने अपनी तनख्वाहका तीनलाख रुपया उसकी बेगमसे वसूल करके मीरका मुरदा उसके हवाले किया॥

उस कालमें मीरका पुत्र अभी केवल तीनही बर्षकी आयुका था। वही अपनी माताके प्रबन्धसे अपने पिताके अधिकारपर नियत हुआ। मीरमुअय्यनमलककी बेगमभी एक गणनाकी बुद्धिमती स्त्री थी। उसने अपने पतिके मरतेही देशमात्रका प्रबन्ध अपने हाथमें लेलिया और उत्तमरीतिसे निर्वाह करनेलगी। परन्तु छःमासके पीछे उसका पुत्र जिसका कि उसका बहुतही आश्रय था चेचक (माता) की बीमारीसे मरगया। फिरभी सुधीरा स्त्रीने अपना साहस न छोडा। किन्तु दीवान मंत्रीलोगोंके साथ मिलकर अपना अधिकार जमाही

रक्खा थोडेही दिनोंके पीछे उसस्त्रीने काबुल तथा दिल्लीमें अपने वकीलोंको भेजकर देश पंजाबकी हुकूमतके आज्ञापत्र अपने नामपर दोनों तरफसे मँगवालिये । और अतिसचेत होकर हुकूमत करनेलगी । जब इसका अच्छीतरहसे पाऊँ जमगया तो प्राचीन राज्याधिकारी पुरुषोंको एक २ करके निकालने लगी । जब दो चार अच्छे २ मुसाहिब राज्याधिकसे अलग करदिये गये तो इस विचित्र चरित्र-वाली स्त्रीसे सबको भय होनेलगा । अन्तमें सबने मिलकर यह विचार किया । कि इसको इस अधिकारसे उठादिया जावे और इसके स्थान-पर कोई दूसरा सुयोग्य पुरुष नियत किया जावे । मुसाहिबलोगोंके इस विचारका समाचार बेगमकोभी मिलगया । उसने उसी वक्त एक प्रार्थनापत्र काबुलको अहमदशाहबादशाहके पास लिखभेजा जिसमें लिखा कि प्राचीन राज्याधिकारीलोग सर्वथा मेरे अनुकूल नहीं हैं आप मिहरबानीकरके कोई सुयोग्य पुरुष प्रबन्ध कर्त्ता मेरेको भेज दीजिये । जो कि मेरी इच्छाके अनुकूल होकर देशका प्रबन्ध करे । बादशाह अहमदशाहने इसके प्रार्थना पत्रको स्वीकार किया । और अपने यहांसे एक जहांदारखां नामक अमीरको कुछ फौज साथ देकर लाहौरमें भेजदिया । वह वहां पहुँचकर बेग-मकी इच्छाके अनुकूल वर्त्ताव करने लगा । उसी कालमें एक भका-रीखां नामक वजीर जिसने लाहौरमें सुनहरी मसजिद बनवाई थी और बेगमके दरबारका एक प्रतिष्ठित पुरुष था । उसको बेगमने अपने महलोंमें बुलाकर अमीर जहांदारखांके सामने कतलकरवादिया । बेगमके इस अत्याचारसे सभी दरबारके लोग बहुतही भयभीत हुए । और सभीलोग राज्यप्रबन्धमें दखल देना छोडकर शान्त होकर घरमें बैठगये ।

अमीर जहांदारखां जो कि प्रबन्ध करनेके लिये काबुलसे आया था सर्वथा अपरिचित होनेके कारण शीघ्रतासे उचित प्रबन्ध कर न सका प्राचीन अहलकारोंके किनारे होतेही देशभरमें कोलाहल फैल-

गया। सिक्खोंनेभी अवसर पाकर लूटमार करना शुरू किया। प्राचीन अहलकारोंकी उत्तेजनासे सिक्खोंने देशभरमें अशान्ति फैलादई। जिमींदारोंसे बादशाही भूमिकर का वसूल करनाभी दुर्घट होगया। जहांदारखां अपनी तरफसे बहुत प्रयत्न करता। परन्तु नये नये कामदारोंके कारण कुछ बन न पडता।

जब सारे देशमें अशान्ति फैलगई तो प्राचीन मुसाहिबलोगोंने देशकी बरबादीका वृत्तान्त बादशाह दिल्लीको लिखभेजा। इस खबरके सुनतेही गाजी उद्दीनखां नामक वजीर जो कि वास्तवमें दिल्लीका बादशाहही था एक शूरवीर फौज अपने साथ लेकर देशके प्रबन्ध करनेके लिये लाहौरके तरफ रवाना हुआ। जब इस वार्त्ताका वृत्तान्त बेगमको ज्ञात हुआ तो उसने प्रथमही वजीरको अपने साथ निकाह करनेका संदेश भेजकर अपने स्वाधीन करलिया। और माछीहाडाके मुकामपर पहुँचकर बडी प्रसन्नता पूर्वक वजीरसे निकाहभी करलिया। निकाहके पीछे दो मासतक दोनोंने उसी स्थानमें मुकाम रक्खा और प्रसन्नतापूर्वक अनेक प्रकारके ऐश आरामसे दिन बिताये। उसके पश्चात् वजीरने प्रसन्न होकर लाहौरकी हुकूमतका अधिकार बेगमहीके नाम नियत रक्खा। किन्तु प्रबन्ध करनेके लिये सय्यद जमील नामक एक योग्य मनुष्य बेगमके साथ लाहौरमें भेज दिया। और आप दिल्ली लौटआया।

सरदार जहांदारखां तो बेगमके लाहौर पीछे जानेक प्रथमही काबुलको चला गया था। सय्यद जमीलने लाहौर पहुँचतेही हरएक कामको अपने हाथमें लेलिया। और नये मुलाजिमोंको किनारे करके प्राचीन मुसाहिबलोगोंको सन्मानपूर्वक बुलाकर जहां तहां यथायोग्य अधिकारपर नियत किया। इस वार्त्तापर बेगमसाहिबा सय्यदजमीलपर बहुतही नाराज हुई। और उसके निकालनेकेभी अनेक उपाय किये। परन्तु जब कुछ चारा न चला तो वजीर दिल्लीके नाम पत्रपर पत्र सय्यद जमीलकी शिकायतोंके भेजने लगी। परन्तु वजीरने

उसके पत्रोंपर कुछ लक्ष्य न दिया । और न कुछ उसको प्रत्युत्तर लिखा । प्रत्युत समय २ पर सय्यदजमलिके नामपर देशमें शान्ति स्थापन करनेके आज्ञापत्र भेजता रहा । जब बेगमको दिल्लीकी तरफसे अपनी सहायताकी आशा न रही । और उसने शोचा कि यदि मैं यहांपर रहकर कुछभी चूंचां करी तो औरभी विपत्ति पडजानेका सम्भव है । तो भागकर काबुलमें जापहुँची । तथा वहांपर जहांदारखांके द्वारा अहमदशाह अबदालीके पास हाजिर होकर उसको दिल्लीपर चढाई करनेके लिये उत्तेजित किया ।

इति पञ्चषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६५ ॥

अथ षट्षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६६ ॥

उस बेगमकी उत्तेजनासे संवत् १८१२ विक्रमीमें अहमदशाहने फिर देश पंजाबपर पांचवीं बार आक्रमण किया । अभी अहमदशाह अपने लश्कर समेत लाहौर नहीं पहुँचा था किन्तु मार्गहीमें चला आता था । कि सय्यद जमीलखां नामक सूबा लाहौर जो कि दिल्लीके वजीरकी तरफसे लाहौर प्रान्तके प्रबन्ध करनेके लिये मुरादबेगमके पास भेजागया था और मुरादबेगमके काबुल जानेके पीछे स्वयं हाकिम बन बैठा था अहमदशाहके आनेकी खबर सुनकर दिल्लीको भागगया और मिरजा अमीन बेग नामक जालन्धरका हाकिमभी भयभीत होकर पर्वतोंपर चलागया । अहमदशाहने लाहौर पहुँचतेही अपना अधिकार जमालिया । और मीर मुनजमखां नामक अपने सरदारको लाहौरका सूबेदार बनाकर आप दिल्लीकी तरफ चलपडा जब जालन्धर पहुँचा तो वहांकी हुकूमतभी खाली देखकर एक अपने सरदारका नियत करदिया । पश्चात् दिल्ली पहुँचकर वहांके बादशाहको अपने वशवर्त्ती किया उसी कालमें दिल्लीके बादशाहसे सिवा भेंट पूजा लेकर मिलनेके और कुछ न बन पडा । वहांपर अहमदशाहने दिल्लीके

बादशाह मुहम्मदशाहकी एक सुन्दरी पुत्रीके साथ विवाह भी किया। और उसके पुत्रकी पुत्रीका अपने पुत्र तैमूरशाहके साथ विवाह किया। पीछे दिल्लीसे बहुतसा धन लेकर सरहिन्दमें चला आया। वहांपरभी अपना अधिकार जमाकर पीछे लाहौरमें आन पहुँचा। कुछ कालतक वहां निवास कर सिक्खोंके प्रबन्ध करनेके लिये अपनी फौजको जहां तहां रवाना किया। परन्तु सिक्खलोग उसके हाथमें न आये। किन्तु जहां तहां जंगलोंमें घुसगये। अन्तमें जब सिक्खोंके प्रबन्धमें सफलता न देखी तो अहमदशाह अपने पुत्र तैमूरशाहको लाहौरका सूबा बनाकर तथा जहाँदारखांको उसका सहायक बनाकर आप काबुलको चला गया। जब अहमदशाह नासरअलीखांको जालन्धरका नाजम बनाकर दिल्लीको चलागया था तब उसने पीछे सिक्खोंपर अनेक प्रकारके अत्याचार करने प्रारम्भ करदिये थे बहुतसे खेतीबाडी करनेवाले गरीब सिक्खोंको पकडकर अपने रुआबजमानेके लिये उनको कतल करवाडाला था शहर करतारपुरके थंभसाहिब नामक गुरुस्थानको अग्नि लगाकर जलवा दिया था। और उसमें गोवध करके गौका शव वहांपर फेंकवा दिया था। तथा सोढि बडभागसिंहको ऐसा क्लेश दिया था कि वह विचारा अपनी जान लेकर पर्वतोंमें भाग गया था। तब वहां हुशयारपुर प्रान्तके बडही नामक ग्राममें सोढी बडभागसिंहकी अदीनबेगसे मुलाकात हुई। दोनों विचारे विपत्तिके मारे हुए परस्पर प्रेमपूर्वक दुःख सुनाने लगे। पीछे जब अहमदशाह काबुलको चला गया तो अदीनबेगने सोढी बडभागसिंहद्वारा सिक्खोंकी सहायतासे अपनी जालन्धरकी हाकिमीका अधिकार पानेका प्रयत्न करना आरम्भ किया। अदीनबेगके प्रेमसे सोढी बडभागसिंहने मुख्य २ सिक्खोंके नाम पत्र भेजकर उनको अपने पास बुला लिया। और अदीनबेगके सहायक होकर नासरअली नामक जालन्धरके सूबापर चढाई कर दई। उधर जब नासरअलीको यह समाचार मिला तो वहभी अपने कतिपय सरदारों समेत

फौज सजाकर शहरसे बाहर निकल खडाहुआ । और जहाँ तहाँ तोपोंके मोरचे बांधके सिपाही लडनेको तैयार करलिये । परन्तु लडाई शुरू होनेके प्रथमही नव्वाब कपूरसिंहजीने अदीनवेगसे कहा कि जैसा वेश शत्रुकी फौजके सिपाहियोंका है वैसाही आपके सिपाहियोंकाभी है इससे सिक्खोंको लडनेके कालमें अपने परायेका ज्ञान होना कठिन है । आपके सिपाहियोंका ज्ञापक कोईभी चिह्न विशेष अवश्य होना चाहिये । इस वार्त्ताको अदीनवेगनेभी उचित समझा । और नव्वाब कपूरसिंहजीसे कहने लगा कि जिस चिह्नको आप उचित समझे मेरे सिपाहियोंको कर दीजिये । नव्वाब कपूरसिंहजीने अदीनवेगके सब सिपाहियोंके शिरमें सब्ज गोधूम (गेहूं) के अंकुर टांगनेका हुकुम दिया । तथा सबसे प्रथम नव्वाब कपूरसिंहजीने अपने हाथसे अदीनवेगके शिरमें गोधूमके सब्ज अंकुर टांग दिये । जिससे अदीनवेग उन सब अंकुरोंको अपना विजयसूचक शकुन समझकर बहुतही प्रफुल्लित हुआ । और अति उत्साहसे लडनेको तैयार होगया । दोनों ओरसे तोपें बन्दूकें चलने लगीं । अनेक शूरवीर रणभूमिमें सदाके लिये शयन करने लगे । प्रबल वीर सिक्खलोग तलवारें खैंच२कर कूद पडे । जस्सासिंह अहलूवालियाने स्वयं अपनी तलवारसे सरदार बुलन्दखांको तथा सरदार करोसिंहने खैरशाहसैय्यदको कतल करडाला । इन सरदारलोगोंके मारे जानेसे नासरअलीखांकी फौजने पीठ दिखलादई । सिक्खलोग पीछा करके शहरमें घुसकर लूटमार मचानेलगे । सब शहरके लोग भयभीत होकर शहर छोडकर भाग गये । और नासरअलीखांको सिक्खोंने गिरफ्तार करके जीवितही बांधकर अग्निमें जलवा दिया । उसके पश्चात् आदीनवेगने जालन्धरपर अपना अधिकार जमालिया । और सिक्खोंको पांच सहस्र रुपया श्रीगुरुजीके कडाहप्रसादके लिये तथा बीस सहस्र रुपया नगद अर्दासके लिये देकर प्रसन्नतापूर्वक सिक्खोंको धन्यवाद दिया । उसके पीछे सिक्खलोग आदीनवेगसे प्रसन्नतापूर्वक प्रस्थान करके करतारपुरमें चले आये ।

और वहांपर अपने गुरुस्थानको तैयार करके उसके नाम कुछ जागीर आदीनबेगसे मुआफ करवाई उसी जागीरमेंसे कुछ शेष सरकार गवर्नमेंटकी तरफसे उसी गुरुस्थानके नाम अबतकभी विद्यमान है।

अहमदशाह अबदालीके काबुल लौटजानेके पीछे उसके पुत्र तैमूरशाहने लाहौर प्रान्तका बहुत उत्तम प्रबन्ध किया। यह तैमूर बहुतही रहमदिल तथा भलामनुष्य था। इसलिये सिक्खोंने भी उसको सतना उचित न जानकर लूट मार करनेसे अपना हस्त संकुचित रक्खा। एक वर्षभर पंजाबदेशमें सर्वथा शान्ति बनी रही। परन्तु पीछे तैमूरशाहका तथा आदीनबेगका परस्पर द्वेष पडगया। इसी कारणसे देशमें फिर अशान्ति फैलने लगी। तैमूरशाहका मन था कि आदीनबेग हमारे वशवात्त होकर रहे। परन्तु आदीनबेग एक स्वतंत्र प्रकृतिका पुरुष था इसलिये उसको पराधीन होकर रहना कठिन प्रतीत होता था उन्हीं दिनोंमें तैमूरने मुलाकात करनेके लिये आदीनबेगको लाहौरमें बुला भेजा। लिखा कि, आप यदि लाहौर आवें तो मिलकर देशमें प्रबन्धके करनेका विचार करेंगे। जिसका उत्तर आदीनबेगने यह लिखा कि, इन दिनोंमें मेरा आना नहीं हो सकता क्योंकि मेरे इलाकेमें सिक्खोंकी वस्ती बहुत है। और यह लोग प्रायः दंगा फसाद मचातेही रहते हैं।

एकभी ऐसा दिन नहीं होता कि जिसदिन दस बीस जगहसे सिक्खोंपर शिकायतें न आवें। ऐसे समय पर यदि मैं अपने इलाकेको छोडकर स्थलान्तरमें जाऊंगा तो सिक्खोंसे और भी अनेकतरहकी हानि होनेका सम्भव है। इस पत्रको देखतेही तैमूरको बहुत क्रोध हुआ। और आदीनबेगका बहानेका मिथ्या पत्र जानकर उसकी तरफ एक मुलतानी फौज उसके गिरफतार करनेको भेज दई। जब यह फौज जालन्धर पहुँची तो आदीनबेगने फौजके सरदारकी ऐसी खातरी करी कि, उसको अपनाही बनालिया। और उसके समेत सारी फौजको अपनेपासही रखलिया थोडेही दिनोंके पीछे आदीनबेगने सेन्धिया

महाराष्ट्रके पास लिखभेजा कि, आजकल पंजाबदेश शून्य पडा है । यदि आप अपने किसी सरदारको थोडीसी भी फौज देकर भेजदें तो अनायासही हाथ आनेका सम्भव है । और मैं भी जहाँतक बन पडेगा आपकी सहायता करूंगा । यदि आपकी फौज आवे तो दरियाय शतद्रुके पार होतेही फौजका खर्च मैं देऊंगा । अर्थात् लाहौर पहुँचने- तक प्रतिदिन लाख लाख रुपया भी खर्च होगा तो मैं प्रसन्नतापूर्वक देऊंगा उन दिनोंमें महाराष्ट्रजातिका सितारा इसदेशमें बहुतही चमक- रहा था । दिल्लीका बादशाहभी एकतरहसे इनलोगोंका वशवर्त्ती होकर रहा करता था । आदीनबेगका पत्र पहुंचतेही मल्हारराव ठकुराव तथा राघवराव यह तीन सरदारलोग तीनलाख महाराष्ट्र सवारोंको साथ लेकर पंजाबको रवाना हुए । अनेक प्रकारका युद्धका सरसामान लेकर संवत् १८१३ विक्रमीमें जब सरहिन्दके मुकामपर पहुँचे तो वहांके हाकिम अबदुल्लाखांने बडी शूरवीरतासे उनका मुकाबिला किया । परन्तु अदीनबेगके सहायक सिक्खलोगोंने उसकालमें ऐसे हाथ दिख- लाये कि,महाराष्ट्रलोगभी उनकी वीरताको देखकर वाह वाह करने लगे । अर्थात् सिक्खोंने सबसे प्रथम नगरकी दीवारोंपर कूदके शहरके किलेके किवाडे खोलदिये । और,शहरमें मनमानी लूट मार मचाई । बहुतसे अच्छे २ लोग कतल करडाले । अबदुल्लाखांको बान्ध लिया । और उसके स्थानपर मिरजा सदीकबेगखाँको सरहिन्दका नाजम बना- दिया । पीछे महाराष्ट्र (मराठा) लोगोंने सिक्खोंसे लूटका माल खोसनेका विचार किया । और इसी विचारसे खन्नाग्रामके समीप महा राष्ट्रोंने सिक्खोंपर आक्रमण भी किया । परन्तु सिक्खवीरोंने सिवाय उनके हानि पहुँचानेके अपने पासकी एकपाई न दई । अन्तमें महा- राष्ट्रलोग अपनी अधिक हानि देखकर सिक्खोंका पीछा छोडकर सूधे मार्ग चलपडे । और सिक्खलोग लूटके मालको लेकर अमृतसरमें रामगढ नामक किलेमें जा प्रविष्ट हुए । उधर जब महाराष्ट्रलोगोंको पंजाबमें आनेके समाचार देशमें फैले तो उनको सुनकर तैमूरशाह

सहायकों समेत लाहौरसे भागकर काबुल चलागया। पीछे महाराष्ट्रोंने लाहौर पहुँचकर अपना अधिकार जमा लिया। और शाहजादा तैमूरशाहका यावत् धन माल जिसको वह शीघ्रताके कारण भेजा नहीं सका था महाराष्ट्रलोगोंने लूट लिया। पीछे अदीनबेगकी सिफारससे लाहौरकी हुकूमतका अधिकार ख्वाजा मिरजा मुलाजिमको मिलगया। और श्यामजी रामजी नामक दो महाराष्ट्र सरदारोंको मुलतानकी हुकूमतका अधिकार मिला। तथा साहिबा नामक महाराष्ट्र सरदार दश सहस्र सेनाके साथ अटकके किलेमें सरहद्दकी रक्षाके लिये भेजा गया। शेष अदीनबेगने अपने अधिकारपर जालन्धरमें बैठा रहा।

थोडेही दिन पीछे लाहौरकी हुकूमतका अधिकार ख्वाजासे महाराष्ट्रोंने छीन लिया। ख्वाजाने लाहौरमें गोवध करवाया था। इस वार्त्ताको अटकके किलेमें सरदार साहिबानेभी सुन पाया। उसने उसी वक्त ख्वाजाको लाहौरके अधिकारसे अलग करदिया। लाहौरसे निकलकर ख्वाजा जालन्धरमें अदीनबेगके पास गया परन्तु उसनेभी अनवसर जानकर उसको कुछ आश्रय न दिया उसके पश्चात् अबधूराव तथा बासराव नामक दो महाराष्ट्र सरदार लाहौरके हाकिम नियत हुए। परन्तु उन दिनोंमें पंजाबदेशमें महाराष्ट्रलोगोंका अधिकार एक नाम मात्र था। क्योंकि सिक्खोंकी लूट मारका अत्याचार देशभरमें फैल रहा था। सिक्खलोग जोर पकडकर सभी अपने २ घरोंके हाकिम बने बैठे थे। कोई सिक्ख किसीको भूमिकर नहीं देता था। न इन लोगोंसे कोई तन्देई करके मांगनेका साहस रखता था। हां उन दिनोंमें जालन्धर प्रान्तमें शान्ति अवश्य स्थापित थी उसकाभी कारण यही था कि अदीनबेग हाकिम सिक्खोंके साथ बहुतही मेल रखता था। जो कुछ देशसे उपज होवे इन लोगोंके साथ बांटके खाता था। जस्सासिंह अहलवालियासेभी इसका बहुत मेल था। इतने होनेपरभी सिक्ख जाति शान्त नहीं रहती थी। कहीं न कहीं कुछ न कुछ खटपट कियाही करती थी। एकवार सिक्खोंने किसी थोडी बातपर रुष्टहोकर अदीन

बेगपर भी चढाई करदई । अदीनबेग भी लडनेको तैयार हुआ । परन्तु इस दैवी आफत सिक्खजातिके आगे उसकी अधिक काल ठहरनेकी शक्तिही क्या थी । अन्तमें अदीनबेगने सरदार जस्सासिंहद्वारा दशसहस्र रुपया देकर सिक्खोंसे मेल करके अपना पीछा छुडाया उसके पश्चात् सिक्खोंने सरहिन्दपर चढाई करदई । और फाल्गुनमास संवत् १८१३ विक्रमीको सरहिन्दप्रान्तको लूटमारके वैरान करना आरम्भ करदिया । सदीकबेग नामक वहांके हाकिमने अपनी फौजको सिक्खोंके मुकाबिलेमें लडनेको तैयार किया दोनों तरफसे लडाई शुरू होगई कुछ देरतक लडाई हुई परन्तु उनकी तोपोंके आगे सिक्खोंकी कुछ पेशनगई । सैकडों सिक्ख इस लडाईमें थोडेही कालमें मारे गये । परन्तु जब इस लडाईका वृत्तान्त आनन्दपुरके सिक्खोंको पहुंचा तो वे लोग उसी वक्त वहांसे रवाना होकर सरहिन्दके मैदानमें विद्युतकी तरह आन पडे । दोपहरतक खूब युद्ध हुआ । अन्तमें सरहिन्दके हाकिमकी हारहुई वह भागकर सरहिन्दके किलेमें घुसगया । सिक्खोंने उद्वेगमें आकर उसके इलाकेको वैरान करना आरम्भ किया । अन्तमें दशसहस्र रुपया देकर नाजम सरहिन्दने सिक्खोंसे अपना पीछा छुडाया । उन दिनोंमें सिक्खजातिका बहुतही जोर होगया था । यह लोग जिसतरफ मुख उठाते थे किसीमें इनका सामना करनेकी ताकत न थी । महाराष्ट्रलोगभी इनसे आँख छिपाया करते थे । अनेक वार सिक्खोंने दिनके समय लाहौरकी बाजार भी लूटली । परन्तु किसी महाराष्ट्र सिपाहीने इनकी तरफ आँख उठाकरभी न देखा । सिक्खलोगभी प्रायः मुसल्मानोंहीको लूटा करते थे । क्यों कि उस कालमें अधिक धनवान लोग प्रायः मुसल्मानलोगही थे । इसलिये महाराष्ट्रलोगभी उनके लिये कुछ विशेष प्रबन्धमें प्रयत्नशील नहीं होते थे । और सिक्खोंके साथ छेडछाड करनेमें महाराष्ट्रलोग अपनी हानिभी समझते थे । इसलिये इनलोगोंके साथ सामना नहीं करते थे ।' जब शाहाजादा तैमूरशाह काबुलको चलागया तो अहमदशाहको महाराष्ट्रोंके पंजाबमें आनेका

वृत्तान्तभी मालूम हुआ। उसने सुनतेही संवत् १८१४ विक्रमीमें अपने साथ डेढलाख दुर्रानी पठानोंकी फौज लेकर महाराष्ट्रलोगोंके प्रबन्ध करनेके लिये कूच करदिया। अहमदशाहके आनेके समाचार पातेही महाराष्ट्रलोग पंजाबदेशको छोडकर अपने देशको भागगये। पंजाब देशमें कोई महाराष्ट्र नाममात्रभी न रहा अहमदशाहने लाहौर पहुँचकर अपने सरदार करीमदादखांको लाहौरका हाकिम बनादिया।

फिर अबदुल्लाखांको कुछ फौज देकर सिक्खोंके प्रबन्ध करनेके लिये पंजाबमें छोडकर आप दिल्लीकी तरफ चला गया। वहां पहुँचकर गाजी उद्दीनखां नामक वजीरको उसके सहायकों समेत कतल करवादिया। और उसके स्थानपर अपने सरदार नजीबखांको दिल्लीका हाकिम बनाकर आप अलीगढ मथुराकी तरफ चला आया। वहांपर महाराष्ट्रलोगोंसे कुछ थोडीसी लडाई हुई। अन्तमें अहमदशाहहीका विजय हुआ। महाराष्ट्रलोग भागगये। वहांपर मथुरा वृन्दावनके अनेक अच्छे २ मन्दिरोंको तुडवाकर जो कुछ उनमेंसे चांदी स्वर्ण, हीरा, पन्ना मिला सब माल लूटकर तीन मासके पीछे अहमदशाह फिर पीछेको लौट गया। जब सरहिन्दके समीप पहुँचा तो मालीरकोटलाके पठानोंने तथा रायकोटके राजपूतोंने राजाआलासिंहजीकी शिकायत करी। कहा कि यह हमारे इलाकापर बलात्कारसे अपना अधिकार जमाता जाता है। इस शिकायतको सुनकर अहमदशाहने कुछ फौज राजाआलासिंहजीके गिरफ्तार करनेके लिये भेजदई फौजने राजा आलासिंहजीके इलाकोंमें पहुँचकर उसको वैरान करना शुरू किया। परन्तु राजाआलासिंह एक अतिविचारशील बुद्धिमान् पुरुष था। उसने तीनलाख रुपया प्रतिवर्ष अपने इलाकेका खराज देना स्वीकार करके अपना इलाका बचालिया। प्रत्युत इसी शिष्टाचारसे बादशाहसे खिलत और महाराजाकी उपाधिभी लाभ करलई।

उसके पश्चात् जीनखांनामक सरदारको सरहिन्दका सूबेदार बनाकर बादशाह लाहौरकी तरफ चला गया। अभी मार्गहीमें जारहा था

कि सिक्खोंने उसकी फौजपर रात्रिको आक्रमण करके जो माल वह लोग लूटकर लाये थे सभी लूट लिया। कुछ बादशाही खजानाभी लूट लिया। लूटमार करके सिक्खलोग जंगलोंमें घुसगये। परन्तु इस वार्त्ताको सुनकर बादशाहको बहुतही आश्चर्य्य हुआ। उसने उसी वक्त बुलन्दखांनामक फौजदारके साथ पचांसहस्र फौज देकर सिक्खोंके गिरफ्तार करनेका हुक्मदिया। और आप लाहौरमें जा ठहरा। बुलन्दखां फौजदारने फौज साथ लेकर देश पंजाबके कई एक प्रान्तोंमें पर्य्यटन किया। और सिक्खोंके पकडनेके लिये बहुत कुछ प्रयत्नभी किया। परन्तु वीरसिक्ख इसके हाथमें एकभी न आये। सिक्खलोग समय २ पर उसकी फौजपर हमला करके जंगलोंमें घुस जाया करते थे। ऐसे गह्वर जंगलोंमें दुर्रानी फौजका प्रवेश होना कठिन था इसलिये सिक्खलोग सदा स्वाधीन रहा करते थे। किन्तु किसीके हाथमें नहीं आते थे। अन्तमें बहुत प्रयत्न करके कई एक मुखबरों द्वारा सरदार बुलन्दखांने दस बीस सिक्खोंको गिरफ्तार करलिया। बहुतसे काश्तकार सिक्खोंके ग्राम उजाडदिये। उनके बच्ची बच्चोंको मरवाडाला सिक्खलोग अपने घर बार छोड २ कर जंगलोंमें भाग गये। अन्तमें गिरजासिंह केहरसिंह बागडसिंह इत्यादि कई एक सिक्खोंक गिरफ्तार करके बादशाहके पास लाहौरमें भेजदिया। गिरफ्तार होकर सिक्खलोग जब लाहौर पहुँचे तो वीरप्रेमी बादशाहने पूंछा कि तुमलोग कौन हो? सिक्खोंने कहा कि हम गुरुके सिंह है। अहमदशाहने कहा कि सिंह (शेर) तो हाथीके साथ मुकाबिला करसकता है क्या तुमलोगभी करसकते हो?। एक सिंहने कहा कि बादशाह! पिंजरेमें कैद किया हुआ सिंह हाथीका सामना नहीं करसकता किन्तु खुलासा हो तो करसकता है। यदि मुझको छोडकर मेरी तलवार मुझको मिले तो मैं हाथीका सामनाभी करके दिखलासकता हूं। बादशाहने उसीवक्त उस सिक्खको छुडवादिया। और एक मस्तखूनी हस्ती शराब पिलाकर उस सिक्खके सामने करादिया। सिक्खभी

अपनी तलवार खैंचकर मैदानमें आन खडाहुआ। अनेक दर्शक लोगभी उच्च स्थानमें चढ २ कर बैठगये जब हाथी छूटताही सिंहपर कूदा तो सिंहने उछलकर एक तलवार उसके शुण्डपर ऐसी लगाई कि उसका शुण्ड कटगया । और वह चिकचिकाता मैदान छोडकर पीछेको भाग निकला । अहमदशाह बादशाह देखकर बहुतही प्रसन्न हुआ ।

फिर एक दूसरे सिक्खके साथ अपने एक दुर्रानी पहलवानकी कुश्ती देखनेलगा यह दुर्रानी उन पठानोंमें रुस्तम कहलाता था । उसके जोडका सिक्खभी कुश्ती विद्याका अभ्यासी था । थोडीही देरमें सिक्खने दुर्रानीको गिराकर नीचे लेलिया । और जोरसे उलटा कर उसकी कमर भूमिके साथ लगाकर छातीपर बैठगया । जिसको देखकर बादशाह बहुतही प्रसन्न हुआ । और जो सिक्खलोग कैद किये थे सबको छुडवा दिया । कहा कि ऐसे शूरवीर पुरुषोंको कैद-करना या कतलकरवा डालना इन्साफ नहीं है । क्योंकि दुनियाँमें शूरबीर लोग अधिक पैदा नहीं होते हैं ।

इतिषट्षष्टिमोऽध्यायः ॥ ६६ ॥

अथ सप्तषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६७ ॥

पीछे अहमदशाह तो लाहौरसे काबुलको चला गया। और सिक्खोंको राजा बीकानेरने एकलाख रुपया देना करके अपनी सहायताके लिये जेसलमेरकी चढाईपर बुलाया। राजा बीकानेरके बुलानेसे नव्वाब कपूरसिंह, जस्सा सिंह अहलवालिया, जस्सासिंह रामगढिया इत्यादि बहुतसे सिक्ख सरदार लोग अपने २ सिंहोंके समुदायको साथ लेकर राजा बीकानेरकी सहायताके लिये पहुँचे ।

परन्तु सिक्खोंकी चढाई सुनतेही विरुद्धपक्षवालोंके चित्तमें कुछ ऐसा भय बैठा कि वह लोग राजा बीकानेरके मुकाबिलेमें न आसके । किन्तु परस्पर सन्धिपत्रकासमाचार भेजदिया । और दोनों औरसे प्रेमसे

मेलमुलाकात होगई। परन्तु पीछे राजा बीकानेरने सिक्खोंको एकलाख रुपया देनेमें कुछ आनाकानी करी। जिसका फल यह हुआ कि सिक्ख-लोगोंने उसके देशको बरबाद करना आरंभ करदिया। अनेक ग्राम उजाडदिये। अच्छे २ धनीलोग लूट लिये अन्तमें राजा बीकानेरने आधालाख रुपया देकर सिक्खोंसे फिर मेल करलिया। सिक्खोंनेभी आपसमें विरोध करना अच्छा न जानकर आधेलाखपरही सन्तोष किया। फिर बीकानेरसे चलकर सिक्खलोग सरसा प्रान्तके अनेक ग्रामोंमें लूटमार करते हुए पंजाबकी तरफ चले आये। मार्गमें मुह-म्मदहसनखां फतहखां तथा शहादतखां इत्यादि अनेक राजपूतलोग जो कि शमसुद्दीनके समयमें मुसलमान होगये थे उन्होंने कईबार अपने प्रान्तके निवासी लोगोंको मिलाकर सिक्खोंपर हमला किया। परन्तु सिवा अपनी हानिके सिक्खोंका कुछ न बिगाडसके। उसके पश्चात् फतहगढादि अनेक कसबोंको बरबाद करते हुए सिक्खलोग टोहाना नामक कसबाके बाहर राजा अनंकपालके तालाबपर जाठहरे। वहांके निवासी शाहबाजखां आदि पठानोंने इनपर हमला किया परन्तु कुछ कर न सके। अन्तमें हार खाकर ग्राममें घुसगये।

उसके पश्चात् पन्थखालसा उन पठानोंके ग्रामोंको वैरान करके हांसी हिसारकी तरफ रवाना हुआ। यहांपर एक जारज टामसनसाहिब महाराष्ट्रलोगोंकी तरफसे जारज गढके किलेमें रहा करता था। उसने सिक्खोंके साथ मुकाबिला किया। सारादिन परस्पर लडाई होती रही। परन्तु सन्ध्याकालतकभी जब टामसनसाहिबने इन प्रबलवीरोंके सामने अपनी कुछ सफलता न देखी तो लड़ाईको बन्द करके अपने किलेमें जा घुसा। पीछे सिक्खोंने रातोरात हिसारपर धावा करके शह-रको ऐसी बुरीतहरसे लूटा और बरबाद किया कि वह शहर बहुत कालतक उसी तरह वैरान पडा रहा। जो जो वहांपर प्रसिद्ध २ स्था-न थे जैसे जुमामसजिद, फीरोजशाहकी लाट इत्यादि सभी सिक्खोंने गिराकर भूमिके साथ मिला दिये। फिर वहांसे दोजाना तथा पाटो-

दीकी तरफ रवाना हुए। अबदुलसमदखां नामक दोजाना कसबाके रईस तथा नजाबत अलीखां नामक पाटोदी कसबाके रईस तथा इस्माईलखां दलोरी कसबाके रईस इन सबने अपनी २ फौजके साथ सिक्खोंका मुकाबिला किया। परन्तु सिक्खोंने बहुतही शीघ्र नव्वा॰ बोंको पराजित किया। और इनके सभी इलाके लूटकर वरान कर दिये उसकालकी लूटमारसे सिक्खोंको बहुतही धन मिला।

और उसतरफ इनके मुकाबिलेमें कोई ठहर न सका। इसालिये इन लोगोंका औरभी साहस बढगया। वहांसे चलकर सिक्खलोग जय- पुरकी तरफ रवाना हुये। परन्तु वहांका राजा सिक्खोंकी शूरवी- रतासे अच्छी तरह परिचित था। इसालिये उसने पचीस सहस्र रुपया नकद तथा पांच सुन्दर घोडे 'सिक्खोंकी भेंटपूजामें देकर अपने देशको वैरान होनेसे बचा लिया औरभी अनेक तरहकी सेवा करके सिक्खोंको अपना बना लिया।

कुछ दिन सिक्खोंने प्रसन्नतापूर्वक जयपुरमें निवास किया। पीछे नजीबखां नामक रुहेलाके इलाकेपर हाथ डाला। नजीबखांनेभी इनके साहसका समाचार सुना और उसी वक्त सरदार गुलाम कादरके साथ बहुतसी फौज देकर सिक्खोंका बल तोडनेके लिये भेजदिया। तथा उधर सूबा लाहौरकोभी इनकी सहायता देनेके लिये लिख भेजा जब सिक्खोंका समुदाय जयपुरसे चलकर मार्गमें लूटमार मचाता हुवा शहर मेरठके समीप पहुँचा। तो फाल्गुन मास संवत् १८१५ विक्रमी- में लाहौर तथा दिल्ली दोनों तरफके लश्करोंने सिक्खसमुदायको आन घेरा। उसकालमें 'सिक्खोंके साथ सैकडों छकडे तथा ऊंट लूटके मालके लदे हुये जारहे थे। मुसलमानोंकी दोनों तरफकी फौज उनको लूटनेके लिये हमला करने लगी। सिक्खोंने उनका ऐसे जोरसे सामना किया कि वह लोग वहांतक पहुँचनेभी न पाये। परन्तु मालकी रक्षा करनेके लिये भी बहुतसे सिक्ख प्रवृत्त थे इस लिये मुसल्मानोंको अच्छी तरहसे हाथ न दिखासके। आधे सिक्ख तो

मुसल्मानोंके सामने होकर उनका आक्रमण रोकते थे । और आधे जहां तहां मालकी रक्षा करके उसको मालवा देशमें पहुँचानेके फिकरमें थे । इसी कारणसे सिक्खोंकी इस युद्धमें बहुत हानि हुई । परन्तु सरदार मितसिंह , कर्मसिंह तथा करोडासिंह आदिने मुसल्मानोंकी फौजके साथ अन्तिम दिन ऐसा जोरसे सामना किया कि इनके सहस्रों सिपाही युद्धभूमिमें महानिद्रामें शयन करगये । और मालके छकडों या ऊंटोंकी तरफ एक पाँवभी आगे न बढा सके । सारादिन एकही स्थानमें जमकर लडाई होती रही । दोनों तरफके बहुतसे सिपाही मारे गये । अन्तमें सायंकालके समय आपभी उसी रणक्षेत्रमें वीरगतिको प्राप्त हुये । इधर जो सिक्खलोग मालके संरक्षक थे । वह तबतक कई कोस दूर निकल गये । और रात्रिभर सफर करके सारे लूटके मालको मालवा देसमें पहुँचा दिया ।

पीछे मुसलमानलोगोंने मृतसिक्खोंके शिरकाटके अपना विजय सूचन करनेके लिये छकडोंपर लादकर सूबा लाहौरके पास भेजनेका प्रबन्ध किया परन्तु इस समाचारको वृद्धसिक्खदलने जो कि उसकालमें मालवा देशमें भ्रमण कररहा था सुनपाया तो उसी कालमें मुसल्मानोंका मार्ग रोकनेके लिये चढाई करदई दरियाय घगरके तीरपर दोनों दलोंका फिर मुकाबिला होगया । सिक्ख तलवारें खैंच २ कर मुसल्मानोंपर टूटपडे । सहस्रों मुसल्मान एकबातकी बातमें काटडारे अन्तमें मुसल्मानलोग उन छकडोंको जिनमें सिक्खोंके शिर काटकर लदे हुये थे छोडकर भागनिकले । सिक्खोंने थोडी दूरतक पीछा किया पीछे मृतक सिक्खोंके शिर छकडों समेत अग्निमें जलादिये । और उनके स्मणार्थ एक वहांपर शहीदगंजके नामसे सुन्दर समाधि देहरा बनवादिया । वह समाधिदेहरा वहांपर अबतकभी विद्यमान है । उसकेपश्चात् सिक्खोंने फिर भिन्न २ भण्डलोंमें होकर देशको वैरान करना शुरू किया । अम्बाला, थानेसर, जगाधरी, शाहाबाद सहारनपुर, साढौरा, दामन इत्यादि अनेक अच्छे २ शहर कसबे लूटमारके वैरान

करदिये जब इस वार्त्ताका समाचार सरहिन्दके हाकिमको मिला तो वह इनके बल शान्त करनेके लिये अपनी फौज लेकर साढौराकी तरफ रवाना हुआ। परन्तु पीछेसे उन सिक्खोंने जो कि रायकोट मालीरकोटलाकी तरफ लूटमार करते फिरते थे छः सहस्रके समुदायने मिलकर पौषमास संवत् १८१५ विक्रमीमें खास सरहिन्दपर चढाई करदई। और शहरको चारपहरतक अच्छीतरहसे लूटते रहे। सभी मुसल्मान शहर छोड २ कर भागगये किसीने आगेसे सामना न किया। उधर जब हाकिम सरहिन्दको यह समाचार मिला तो उसने साढौरके आक्रमणसे उपराम होकर सरहिन्दकी तरफ कूच किया। परन्तु उसकालमें करही क्या सकता था उसके आनेसे प्रथमही सिक्खलोग सरहिन्दका तत्व खैंचकर चले गये थे। यह आनकर शहरकी वैरानी देखकर हाथही मलता रह गया। परन्तु कुछ बन न पडा। उधर निजामत लाहौरकाभी सिक्खोंने यही हाल कर रक्खा था। अनेकवार लाहौरके बाजारोंपर हमला करके लूट लाये थे। सूबा लाहौरने शहरके चारों तरफ तोपोंके मोरचेभी हर वक्त बाँधके तैयार रखनेका हुक्म दिया। सिक्खोंके मारनेको गश्ती फौजभी नियत करी। परन्तु फिरभी कुछ इनका इन्तिजाम न हो सका। सिक्खलोग जब चाहते लूट ले जाते। समय पर किसीसे कुछ न बन पडता किन्तु देखतेही रह जाते। उन दिनोंमें एक सिरेसे लेकर दूसरे सिरेतक पंजाब देश भरमें सिक्खोंने गदर मचा रक्खा था। देशभरमें इन्हींका राज्य था। जो चाहते थे एकदमभरमें कर-डालते थे। किसीमें इनके रोकनेकी शक्ति न थी। मुसल्मान हाकिम तो नाम मात्रके जहां तहां पडे थे। न कोई सरकारी भूमिकरही वसूल करसकता था। और न कोई किसी तरहका प्रबन्ध ही था। ग्राम ग्राम तथा घर २ में लोग बादशाह बनके बैठ गये थे। हां जालन्धर प्रान्तमें कुछ शान्ति अवश्य थी। उसका कारण यही था कि वहांका हाकिम आदीनबेग सिक्खोंके साथ बहुतही मेल रखता था जो कुछ

उपज होती थी सरदारजस्सासिंह अहलवालिया द्वारा बांट खाता था उसी वर्ष संवत् १८१५ विक्रमीमें दैवात् अदीनबेग हाकिम भी मरगया । इसलिये सिक्खलोग उसके इलाकेमें भी लूटमार करनेलगे ।

उन्हीं दिनोंमें विश्वासरावादि कईएक महाराष्ट्रसरदारोंने तीन लाख सवारोंको साथ लेकर दिल्लीपर हमला करदिया । बादशाही फौजने उनका खूब मुकाबिला किया । कईदिनतक घोर युद्ध हुआ । दोनों तरफके सहस्रों वीर मारेभी गये । अन्तमें बादशाही फौज भागनिकली । और महाराष्ट्रलोगोंने दिल्लीपर अपना अधिकार जमालिया । जब दि ीका तख्त महाराष्ट्रलोगोंके अधिकारमें हुआ तो नजीबखांने तीन कोटि रुपया देना करके अहमदशाह अबदालीको बुलाभेजा । इसी प्रतिज्ञापर अहमदशाह काबुलसे चलकर फाल्गुनमास संवत् १८१६ विक्रमीमें डेढलाख दुर्रानी पठानोंकी फौजके साथ पंजाबमें आन पहुँचा । जब पानीपतके समीप पहुँचा तो विश्वासराव आदि महाराष्ट्रसरदारोंने दोलाख सवारोंकी जमातके साथ बादशाहका मुकाबिला किया । दोनों ओरसे खूब युद्ध हुआ । अन्तमें एक भयानक युद्धके पश्चात् अहमदशाह बादशाहकी विजय हुई । उसी युद्धमें कोई अस्सी सहस्रके करीब महाराष्ट्रसिपाहीलोग दुर्रानी पठानोंके हाथसे मारेगये । सरदार विश्वासराव तथा दत्ता सेंधियाभी इसी युद्धमें समाप्त हुए । और लाखों रुपयेका सामान अहमदशाहके हाथमें आया । बीसलाखका सामान तो केवल विश्वासरावके ठाकुरपूजा पाठहीका था और एक उसके हाथकी छडी ९९ सहस्र रुपयाके दामकी था । वहभी बादशाह अहमदशाहके हाथ लगी । उसके पश्चात् अहमदशाह जब आगे बढा तो हुलकरनामक महाराष्ट्र एकलाख अस्सीहजार महाराष्ट्रोंकी फौज लेकर अहमदशाहके सामने हुआ । बहुतही जोर शोरसे युद्ध हुआ । दोनों तरफके अनेक शूरवीर मारेगये । अन्तमें हुलकर पराजित होकर यावत् सामानको छोडकर भागगया । पीछे बादशाही फौजने सब लूटलिया । उसके पश्चात् तीसरी वार

शिवदेवराव नामक महाराष्ट्र सरदारने एकलाख चालीस सहस्र फौजको साथ लेकर अहमदशाह अबदालीका सामना किया। यह युद्ध यमुना-नदीके तीरपर हुआ था। इसमेंभी यमुनासे पार होकर अहमदशा-हकी फौजने महाराष्ट्रोंकी फौजपर ऐसा धावा किया कि उनको सिवाय निकलनेके दूसरी बात न सूझी। पठानोंने पीछे पडके सहस्रों महाराष्ट्रसिपाही काट डारे। और उनमेंसे बाईस हजार सिपा-हियोंको कैदभी कर लिया। पचासलाख रुपया नकद लाखों रुप-येका सामान तथा पांच हजार बहुमूल्य घोडे अहमदशाह बादशा-हको प्राप्त हुये।

जिन दिनोंमें बादशाह महाराष्ट्रलोगोंके अत्याचार शान्त करनेके लिये दिल्लीकी तरफ जारहा था। उन्हीं दिनोंमें उसने सरहिन्द पहुँ-चकर सरबुलन्दखांको जो काबुल जाता था नौकर रखलिया। और उसको लाहौरकी सूबेदारीपर नियत करदिया। उस कालमें सरबु-लन्दखांके पास सरसामान कुछभी न था। इसलिये उसने सरसामान तैयार करनेके लिये बादशाहसे एक मासकी छुट्टी मांगी। बादशाहने छुट्टी (रजा) देनी स्वीकार करी तो सरबुलन्दखांने जालन्धर पहुँचकर अदीनवेगके उमरावोंकी सम्मतिसे सूरत सिंहको नौकर रखकर अपने स्थानपर लाहोर भेजदिया। करिम-दादखां सूबा लाहौर तथा फौजदारखां नामक पसरूरका हाकिम तो प्रथमही पानीपतमें बादशाहके बुलानेसे महाराष्ट्रोंके मुकाबिलेपर पहुँच चुके थे। अब मानों सारे पंजाब देशके प्रबन्धका अधिकार सूरतसिंहको मिला। परन्तु सिक्खोंकी लूटमारसे यह ऐसा भयभीत हुआ कि बहुतही शीघ्र घबरा उठा। और लाहौरकी हुकूमतसे उदास होकर सरबुलन्दखांको अपने स्थानपर किसी दूसरे हाकिमके भेजनेको लिख भेजा। सरबुलन्दखां उसकालमें जालन्धर प्रान्तका प्रबन्ध कर रहा था। इसलिये उसने अपने स्थानपर अमीर मुहम्मदखांको पांचसौ-सवार साथ देकर लाहौकी हुकूमतपर भेज दिया। उसकालमें पंजाब

देशके प्रायः यावत् हाकिमलोग अपनी २ फौज समेत बादशाहके सहवर्त्ती होकर महाराष्ट्रोंके मुकाबिलेमें आचुके थे। पीछे शून्य देश पंजाबको सिक्खोंको लूटनेका खूब अवसर मिला। प्रथमतो जस्सासिंह रामगढिया आदि अनेक सरदार लोग, जो कि वैशाख संक्रांतिके मेलेपर अमृतसरजीमें एकत्र हुये थे सबने मिलकर लाहौरपर हमला करनेकी सम्मति करी। यावत् मेलेके सिक्खोंको साथ लेकर एक बारही लाहौरपर चढाई करदई। शहरके कोटके बाहर जितनी आबादी थी। सिक्खोंने सब लूट मारकर वैरान करडाली। अच्छे २ मकान आग्निलगाकर जलादिये। उस कालमें लाहौर शहरकी बस्ती प्रायः मुसलमानी अधिक थी। सिक्खोंने पकड २ कर सहस्रों मुसलमान कतल करडाले। लाखों रुपयोंका माल लूटलिया। उसके पश्चात् सिक्खलोग शहरके अन्दरके भागको बरबाद करनेके लिये विचार करने लगे। अमीर मुहम्मदखांने शहरके दरवाजे बन्द करवादिये। परन्तु सिक्खोंने शहरके चारोंतरफ घेरा डालकर भीतर अरसामान जाना बन्द करदिया और सूबाको अन्दर कहला भेजा कि यदि तुम खालसाको कुछ कडाहप्रसादके लिये भेंट पूजा देदो तो हमलोग यहांसे चले जावेंगे। अन्यथा शहरके भीतर दाखिल होकर अन्दरसे भी इसका वही हाल करेंगे जैसा कि बाहर कर दिया है। अन्तमें मीर मुहम्मदखांने तीस सहस्र रुपया सिक्खोंको भेंट देकर अपना पीछा छुडाया। सिक्खलोग पूजाका रुपया लेकर अमृतसरजीमें चले आये।

उधर हिन्दुओंके सहस्रों मन्दिरोंको तोडकर अहमदशाह मालोमाल होकर लाहौरमें आया। तो उसने सुना कि मीर मुम्मदखांने सिक्खोंको कुछ रुपया देकर अपना पीछा छुडाया है। इसी अपराधमें बादशाहने उसका बहुत तिरस्कार किया। और कैद भी करडाला। परन्तु शहरके प्रतिष्ठित लोगोंने मिलकर बादशाहको समझाया कि वस्तुतः मीर मुहम्मदका कुछ दोष नहीं है वह समयही ऐसा था।

यदि ऐसे न किया जाता तो बहुत ही हानि होनेका सम्भव था। सारे शहरके वैरान होजानेका भय था। इत्यादि अनेक प्रकारके वचनोंको सुनकर बादशाहने मीर मुहम्मदको कैदसे छोडदिया।

उसके पश्चात् बादशाहने ख्वाजा हमीयदखांको लाहौरका हाकिम बनाया तथा जीनखांको सरहिन्दका हाकिम बनाया तथा सरबूलन्द खांको मुलतानका हाकिम बनाकर सिक्खोंके प्रबन्ध करनेकी ताकीद करके आप काबूलको कूच कर दिया। मार्गमें सिक्खोंने अहमदशाह अबदालीके लश्कर परभी अनेकबार आक्रमण किया। तथा रात्रिके समय हमला करके उनको लूट लिया।

इति सप्तषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६७ ॥

अथाष्टषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६८ ॥

अहमदशाह अबदालीके दिल्लीसे पीछे काबुलकी तरफ लौटने कालमें उसकी फौजके सरदारलोगोंने थानेसर आदि अच्छे २ शहरोंसे सहस्रों हिन्दूलोग गुलाम बनानेके लिये कैद करालिये थे। इस वार्त्ताको सिक्खोंनेभी सुनपाया। जिस समय अहमदशाहकी फौज दरियाय व्यासाको गोयन्दवाके पत्तनसे पार होनेलगी तो सिक्खोंने मिलकर उनपर ऐसा हमला किया कि उनके होश उडगये। दोनों ओरसे खूब लडाई हुई। अन्तमें पठान भाग निकले। सिक्खोंने पीछा करके सहस्रोंके प्राण लेलिये। पठानोंके भागनेसे कैदी हिन्दुलोगभी छूटकर सिक्खोंका जयजयकार मनाते अपने घरोंको चलपडे। अहमदशाह अपनी फौजका सिक्खोंके सामने भागना सुनकर बहुत क्रुद्ध हुआ। और फौजके सरदारलोगोंका अनेक प्रकारका तिरस्कार किया। अहमदशाहकी यहभी इच्छा हुई कि कुछदिन लाहौरमें निवास करके सिक्खोंका उचित प्रबन्ध किया जावे। परन्तु किसी कार्य्य विशेषसे व्यग्र होकर उसको उसी-

कालमें काबुलकी तरफ रवाना होना पडा । वहां जाकर उसने एक नूरुद्दीन नामक सरदारको सात सहस्र फौज देकर सिक्खोंके अत्याचार शान्त करनेके लिये भेजदिया । सरदार नूरुद्दीन बादशाहकी आज्ञा पातेही सात सहस्र फौजके साथ पंजाबमें आन पहुँचा । उधरसे शकरचक्क निवासी सरदार चडतसिंह आदि कईएक सिक्खसरदार लोग उसके मुकाबिलेमें जा खडे हुये । दोनों ओरसे अत्यन्त साहससे लडाई हुई । अनेक बीर महानिद्रामें शयन करगये । अन्तमें नूरुद्दीन पराजित होकर भाग निकला । भागकर स्यालकोटके किलेमें जा घुसा । सिक्खोंने पीछा करके स्यालकोटके किलेकोभी चारों ओरसे जा घेरा । जब उस किलेमेंभी सीधा सामान न रहा तो नूरुद्दीन वहांसेभी रात्रिको भाग निकला । भागकर जम्बूमें पहुँचा तो वहांके राजाने उसको आश्रय दिया ।

जब नूरुद्दीनके पराजित होनेका समाचार लाहौरके सूबा ख्वाजा हमैयदखांने सुना तो वहभी अपनी फौजको साथ लेकर सिक्खोंके साथ मुकाबिला करनेक लिये निकल पडा । और गुजरानवालाके समीप पहुँचकर उसका सिक्खोंके साथ एक भयानक युद्ध हुआ । परन्तु अन्तमें विजयलक्ष्मी यहांभी सिक्खोंहीके हाथ रही । और हमैयदखां भागकर लाहौर चला गया ।

उन्हीं दिनोंमें सरदार जहानखां जो कि बादशाहके हुक्मसे कुछ फौज साथ लेकर सिक्खोंके शोर शान्त करनेके लिये पंजाबमें फिरा करता था उसके साथभी सिक्खोंका कईएकवार मुकाबिला होपडा । जिसमें हरएक मुकाबिलामें प्रायः सिक्खही प्रबल रहे । प्रथम जहानखां दुर्रानीने अमृतसर पहुँचकर अमृतसरके तालाबको मट्टीसे पुरवादिया । और हरिमन्दिरकोभी कईएक तरहसे बेअदबी करनेलगा । सिक्खोंका वहाँपर आना जाना सर्वथा बन्द करादिया । परन्तु जब इस अत्याचारके समाचार सिक्खोंने सुने तो उनकोभी धर्मके साहसने शान्त न बैठने दिया । सरदार दीपसिंह, गुरुबख्शसिंह,

नत्थासिंह, तथा हीरासिंह इत्यादि वीर सरदारलोगोंने पांच सहस्र सिक्ख सिपाहियोंको साथ लेकर जहानखांदुर्रानीपर हमला कर दिया अमृतसर तथा तरन तारनके मध्यप्रदेशमें गोलवड नामक ग्रामके समीप युद्धभूमि नियतहुई। दोनोंओरसे लडाई शुरू होगई। यह लडाई विशेषरूपसे धर्मसम्बन्धी थी। इसलिये सिक्खोंको इस लडाईमें बहुतही आवेश था। एक दम भरमें सहस्रों मुसल्मान काट डारे। सिक्खलोग मुसल्मानोंपर विद्युत्की तरह टूट २ कर पडने लगे। मुसल्मानी फौजका पांव पीछे हटने लगा। ऐसेही मुसल्मानलोग लडते २ अमृतसरकी दीवारोंतक पीछे हटते चले आये। यहांपर सरदार द्वीपसिंह कईएक वीर मुसल्मानोंके प्राण लेकर रामसरतालावके तीरपर स्वयंभी वीरगतिको प्राप्त हुये इस युद्धमें सरदार द्वीपसिंहके सिवाय औरभी बहुतसे शूरवीर सिक्खलोग वीरगतिको प्राप्त हुये हैं। जिनके स्मरणार्थ वहांपर समाधि देहरे अबतक विद्यमान हैं। और वह स्थल शहीदगंजके नामसे प्रख्यात है। अन्तमें सिक्खोंने ऐसा पीछा किया कि मार्गशीर्ष मास संवत् १८१७ विक्रमीमें दुर्रानी पठानोंको मारके अमृतसरसे निकाल दिया। दूसरीबार फिर जहानखांने सूबा लाहौरसे सहायता पाकर सिक्खोंपर चढाई करी। लाहौर अमृतसरके मध्यप्रदेशका सूबा अटारीके समीप युद्धभूमि नियत हुई। यहांपरभी सिक्खोंने ऐसे जोरसे सामना किया कि थोडोही देरमें जहानखांको अपनी फौज समेत पीछे हटकर लाहौरका मार्ग लेना पडा। सिक्खोंने उनका लाहौरकी दीवारोंतक पीछा किया। और पीछे भागते हुये सहस्रों आदमी काट डाले। अन्तमें बहुतसा सामान लूटकर सिक्खलोग पीछे अमृतसरजीमें चले आये।

इन दो चार मुकाबिलोंने सिक्खोंका साहस वृद्धि कर दिया। मुसल्मान हाकिमलोग सिक्खोंके प्रबल प्रतापके सामने दिवस दीपकी तरह निस्तेज प्रतीत होने लगे। सिक्खोंके चित्तोंमेंभी देशकी हुकूमतका शौक जाग उठा। इन लोगोंने अपने बाहुबलसे दरियायअशवद्धसे लेकर

चन्द्रभागानदीतक सर्वथा अपना अधिकार जमा लिया था । लाहौर जालन्धरादि मुख्य २ प्रदेशोंमें बादशाही पुरुष नाम मात्रके पडे थे । उस कालमें उनका कुछभी अधिकार न रहा था किन्तु घरोंसे या शहरोंसे बाहर पाँउ देते हुएभी सिक्खोंसे प्रतिक्षण भयभीत रहते थे ।

सिक्खजातिका मुख्यस्थान श्रीअमृतसर था । इसीलिये इसस्थलमें प्रायः सिक्खलोग एकत्र बने रहते थे । श्रीअमृतसर सिक्खोंका एक मुख्य तीर्थ स्थान है । उसकी उन्नतिके लिये सिक्खलोगोंका प्रतिदिन प्रयत्न था । उस कालमें सिक्खोंने अमृतसरके तालावकी मट्टी निकालकर फिर साफ किया । और हरिमन्दिरकीभी मरम्मत करवाकर शोभा बढाई । तथा प्रतिदिन दरबार लगाकर श्रीअकालबुंगाके सामने शान्तिपूर्वक बैठनेलगे । एक दिन सुन्दर दीवान लगरहा था । गायकलोग श्रीगुरुजीकी वाणीका गायन कर रहे थे । सिक्खलोग तलवारें कमरमें बांधे वीरासन लगाकर अपने शौर्य्यके अभिमानमें मूछोंपर ताव देते हुए श्रवण कर रहे थे । तथा अपनी वीरताके मदमें मस्त हस्तियोंकी तरह झूम रहे थे । इतनेहीमें शहर कसूरका रहनेवाला एक घायल ब्राह्मण सिक्ख समाजमें आकर पुकार करने लगा । कहने लगा कि खालसाजी मैं घायल होकर आपके पास फरयादी आया हूं । आपलोग समर्थ हैं कृपाकरके मेरे दुःखको सुनो और मेरी सहायता करो । क्योंकि श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजने आपका पन्थ केवल धर्मकी रक्षाके लिये निर्माण किया है । इसीलिये इस पन्थमें शौर्य्य तेज धृति युद्धसे पीछे न हटना इत्यादि क्षात्रियोंके धर्म प्रायः देखनेमें आते हैं । और प्राणान्ततक धर्मके रक्षक होना क्षत्रिय वीरोंका सहज धर्म है । यदि आपलोगोंके विद्यमान कालमें भी ऐसा अनाचार अनर्थका प्रचार हो तो बडीही आश्चर्य्यकी वार्त्ता है । दीनबन्धो ! जैसा कि आजकल शहर कसूरके पठानलोग हिन्दुओंपर अत्याचार कर रहे हैं मैंने न कभी आगे देखा न कानोंसे सुना । किसी भी भले पुरुष हिन्दूकी सुन्दर बहू बेटी हो

पठांनलोग बलात्कारसे मँगवालेते हैं और कई दिनतक उनके साथ बुराभला करके निकाल देते हैं। कसूर शहरके प्रान्तभरमें किसी हिन्दूकी सुन्दर बहू बेटी घरमें टिकने नहीं पाती।

गोवध सरे बाजार होता है। हिन्दुओंके नाकमें दम आरहे हैं। ऐसेही मेरी स्त्रीकोभी एक पठानने छीन लिया है। यदि मुसल्मान हाकिमोंके पास फरियाद करी जाती है तो वहभी कुछ सुनाई नहीं करते। प्रत्युत हिन्दुओंकोही दण्डित करते हैं। बिना आपलोगोंके इस अत्याचारके शान्ति करनेकी किसीमें सामर्थ्य नहीं दीख पडती। सिवाय आपलोगोंके दूसरा कौन है जो कसूरके पठानोंके भुजाबलको तोडकर मेरी स्त्री मेरेको दिलवादे। परन्तु यदि आपलोगभी मेरी पुकार न सुनेंगे तो मैं कटार खाकर यहांही आपलोगोंके सामने मरजाऊंगा। फिर परमेश्वरके दरबारमें आपका तथा मेरा फैसला होगा। ब्राह्मणकी इस पुकारने सिक्खोंको ऐसा आवेशित किया कि सबसे प्रथम सरदार हरिसिंह जंगीने अपने तीन सहस्र वीर सवारोंके साथ दरबारमेंसे उठकर अरदास (प्रार्थना) करके ब्राह्मणके साथ शहर कसूरकी तरफ कूच करदिया। और प्रथम दिन गुरुकी बडालीके पास अपना खेमा जा लगाया॥ दूसरे दिन औरभी सिक्ख सरदारलोग अपनी २ फौज लेकर सरदार हरिसिंहके साथ आन मिले। और ज्येष्ठमास संवत् १८१८ विक्रमीमें दोपहरके वक्त शहर कसूरपर आक्रमण कर दिया। कसूरके निवासीलोग इस अचानक आफतसे सर्वथा अज्ञात थे। सभी सिक्खलोग खुले किवाँड शहरमें प्रविष्ट होगये। और यावत् मुसल्मानोंको कतल करना आरम्भ करदिया। कसूरके उमरावलोग उसकालमें सर्वथा गाफिल बैठे थे। कोई शतंरज चौसरकी बाजी खेलरहा था। कोई ताशके पत्ते घिसरहा था। कोई गाना बजाना सुनरहा था। कोई खाना खाकर सोरहा था। कोई नशेमें चूर झूमरहा था। सिक्खलोग एकबारही समीपर विद्युत्की तरह जापडे। किसीको मुकाबिला करनेका अवसर न मिला। सैकडों जहांके तहांहीं कटगये। बचे

सो भाग निकले। परन्तु भागकरभी जावें कहां चारोंतरफ सिक्खलोग छायरहे थे। सबके सब तलवारके नीचे निकाल दिये गये। जो पठान सामने हुआ दो टुकडे कर दिया गया। एक थोडेसे कालमें सिक्खोंने पठानोंकी सातों गंढी गारद् करडाली। उन दिनोंमें यह शहर बहुतही दौलतवाला था। तीन दिनतक एकतार सिक्खोंने लूट-मारका बाजार गरम रक्खा। इस लूटमें प्रत्येक सिक्ख मालोमाल हो गये। परन्तु सबसे अधिक धन सरदार जस्सासिंह रामगढियाके हाथ लगा कारण उसमें यह था कि शाहजहां बादशाहकी बेगम नूर-जहाके मरनेके पीछे उसकी सभी सम्पत्ति उसके सहायक दीवान दिलारामको मिल गई थी। और नादिरशाह अहमदशाह तथा सिक्खोंकी लूटके भयसे दीवान दिलाराम उस सम्पदाको शहर कसूरमें ले आया था। उसके घरपर दैवात् सरदार जस्सासिंह रामगढियेका हमला होगया था। उसने उसको कैद करके उसका यावत् माल लूटलिया था। उसी लूटमें साधारण जवाहिरातके सिवा एक चन्द्रसेन नामक जवाहिरातका हार पचासलाख रुपयेकी कीमतका था। उस ब्राह्मणकी स्त्री छीननेवाले असमानखां नामक पठानकोभी सिक्खोंने कतल करडाला। और असमानखांकी सम्पदासमेत ब्राह्मणकी स्त्री ब्राह्मणको देदई। फिर वहांसे विजयका डंका बजाते हुए सिक्खलोग श्रीअमृतसरजीमें चले आये। आनकर बहुतकुछ धन माल श्रीहरिम-न्दिरकी भेंट पूजामें अर्पण किया। और कडाहप्रसाद करवाकर क़सूरकी विजयकी एक भारी खुशी मनाई।

उसके पश्चात् सिक्खोंने देशपर पूर्णरूपसे अपना अधिकार जमा-नेके विचारसे अमृतसरजीसे जालन्धरको कूच किया। उधर अदीन-बेगके पुत्र जाफरबेगने अपने कामदार विश्वम्भरदयालद्वारा सिक्खोंको कहला भेजा कि तुमलोग हमारे इलाकेपर हस्ताक्षेप मतकरो अन्यथा आपलोगोंके लिये अच्छा न होगा। प्रथम तो सिक्खलोग अदीनबे-गके इलाकेपर इस तात्पर्य्यसे हस्ताक्षेप नहीं किया करते थे कि वह

इन लोगोंके साथ बहुत मेल रखता था । जो कुछ उपज होती थी बांट खाता था परन्तु उसके पुत्रका उससे विपरीत विचार सुनकर सिक्खोंने आवेशमें आकर उसके इलाकेको लूटमार कर वैरान करना शुरू किया। इस खबरका सुनकर विश्वम्भरदयाल अपनी फौजको साथ लेकर कार्त्तिकमास संवत् १८१८ विक्रमीमें सिक्खोंपर चढआया । और कसबा बटालाके समीप युद्धभूमि नियत हुई । दोनों ओरसे खूब युद्ध हुआ अन्तमें मुसलमान पराजित हुए । और विश्वम्भर-दयालको सिक्खोंने मारडाला । सिक्खोंने उसके सारे इलाकेपर तथा सम्पत्तिपर अपना अधिकार जमालिया ।

उसके पश्चात् सिक्खलोग भिन्न २ जमातें बांधकर देशमें फिरने लगे । उनमें दो जमातें सरहिन्दकी तरफ चली गई । और कुछ लाहौर प्रान्तमें लूटमार मचाने लगीं । कुछ कसबा जण्डियालाके वैरान कर-नेको चलीगई इसी तरह सारे देश पंजाबमें अपना अधिकार जमानेके विचारमें सिक्खलोग जहां तहां देशमें फैलगये । जो सिक्खलोग लाहौर प्रान्तमें गये थे । उनका प्रमुख सरदार जस्सासिंह रामगढिया था । उसने प्रथम लाहौर प्रान्तके यावत् ग्राम नगरोंको वैरान करके बाहर अपना अधिकार जमालिया । पीछे खास लाहौर शहरपर आक्रमण करके अपना अधिकार जमालिया । केवल एक ख्वाजा हमीयदखां किलेके भीतर होकर लडता रहा परन्तु किलेके बाहर सारे शहरपर सिक्खोंने अपना अधिकार जमालिया था ।

उधर दूसरे सिक्ख जो कि सरहिन्दकी तरफ गये थे उन्होंने वहां पहुँचकर वहांके हाकिमके नाकमें दम करदिये । एक शहर मात्रके सिवाय बाहरके यावत् इलाकेपर सिक्खोंने अपना अधिकार जमा-लिया । मालीरकोटलाभी इस तात्पर्य्यसे वैरान करडाला कि वहांका अधिकारी प्रायः हाकिम सरहिन्दकी सहायता किया करता था ।

कसबा जण्डियाला जो कि अमृतसरसे पूर्वदिशामें सातकोस दूर-पर बसरहा है उसमें एक आंकलदास नामक महन्त बडा मालदार

था। एक प्राचीन गादीका अधिकारी था इसीलिये उसके पास धन बहुत था। एक समय उसने अहमदशाहको भी धनसे सहायता दई थी। राजदरबारी-मुसलमान लोगोंका वह बडाही मेलमुलाकाती तथा प्रेमी था। सिक्खोंने उसके लूटनेके तात्पर्य्यसे कसबा जण्डियालापर चढाई करदई। उसने भी अपनी सहायताके लिये अहमदशाहको काबुल लिखभेजा। अहमदशाहके पास पंजाबके हाकिमोंकी और भी बहुत शिकायतें सिक्खोंपर पहुँच चुकी थीं। इसलिये वह इस तरफ आनेके लिये तैयारही बैठा था। महन्त आकलदासका प्रार्थना-पत्र देखतेही बादशाने काबुलसे पंजाबकी तरफ़ कूच करदिया।

इत्यष्टषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६८ ॥

अथैकोनसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ६९ ॥

संवत् १८१९ विक्रमीमें अहमदशाह अबदाली चालीस हजार दुरानी सवारोंकी फौजके साथ आठवीं बार फिर हिन्दोस्थानपर चढकर आया। बादशाहके आनेसे प्रथमही सिक्खलोग जण्डियाला प्रान्तको छोडकर शतद्रुनदीके पार पायल जगरावां मालीरकोटला सरहिन्द इत्यादि प्रान्तोंको वैरान कर रहेथे। और जीनखां नामक सरहिन्दका सूबाभी सिक्खोंके साथ लडाई कररहाथा। बादशाहके आगमनको सुनकर सिक्खलोग प्रायः मालवादेशमें एकत्र होगये थे।

बादशाह बहुतही शीघ्र चलकर थोडेही कालमें जहां लडाई होरही थी वहां पहुँच गया। इतनेहीमें भीकनखांभी बादशाहके आनेकी खबर सुनकर आपसे आप बादशाहकी सेवामें आन हाजिर हुआ। और सिक्खोंके अत्याचारका वृत्तान्त सुनाने लगा। बादशाहने कुछ फौज साथ देकर उसको जीनखांकी सहायताके लिये पीछे भेज दिया। और साथ यहभी लिखभेजा कि, तुमलोगोंने घबराना मत मैं पहुँच गया हूं भीकनखांकी सहायता लेकर इन सिक्खोंको रोकना। परमे॰

अरने कुशल रक्खी तो कल दो पहरतक मैंभी आप लोगोंके पास पहुँच जावोंगा । भीखनखां उसी वक्त कूचकरके शीघ्र पहुँचकर दुरानी फौजकी सहायतासे सिक्खोंके मुकाबिलेमें जा खडा हुआ । और दोनों तरफसे खूब युद्ध होने लगा । उधर दूसरी तरफसे जीनखांभी पहुँच गया । परन्तु सिक्खोंने उसकालमें अपनी तलवारकी ऐसी सफाई दिखलाई कि, शत्रुकी फौज त्राहि त्राहि कर उठी । और उसी-कालमें वहांसे कूचकरके रायकोट तथा जगरावांमें जा बैठे । दूसरे दिन प्रातःकाल अहमदशाह दुरानीभी सेना समेत आन पहुँचा । और रायपुर गुजरवालके समीप आनकर सिक्खोंको घेर लिया । सिक्खोंने भी अवसर जानकर दुरानी फौजके साथ खूब मुकाबला किया । तलवारें खैंच २ कर दुरानी पठानोंपर विद्युतकी तरह ऐसे टूटके पडे कि, उनको अपने बहुतसे बीर मरवाकर अन्तमें पीछे हटना पडा । इनके पीछे हटतेही सिक्खलोगोंनेभी अपने लूटके मालकी चौकसी करते हुये मालवा देशकी तरफ पांव बढाया । सिक्खलोग जब तीन कोस दूरपर पहुँचे तो दुरानी पठानोंने पीछेसे फिर हमला कर दिया । उधर आगेसे जीनखां नामक सरहिन्दके नाजमने तथा लक्ष्मीराय नामक रायकोटके दीवानने तथा मालीरकोटलाके रईस पठानोंने अपनी बीस सहस्र फौज मेलकर सिक्खोंका मार्ग बन्द कर दिया । इन दोनों लश्करोंने सिक्खोंको चारों तरफसे घेर लिया । दोनों तरफसे लडाई शुरू हो गई । दोपहरतक युद्धका मैदान खूब गरम रहा । अन्तमें सिक्खोंने लाचार होकर किला बांधकर अर्थात् वर्तुलाकार होकर लडना शुरू किया । धीरे २ शत्रुगणके वारोंका जवाब देते हुए मालवाकी तरफ निकले । यह समय सिक्ख जातिपर बहुतही विपत्तिका था । चारों तरफसे शत्रुगणने घेर रक्खा था । कहीं कोई किसी तरहका अवलम्बभी न था । अनेक वीर सिक्ख शत्रुओंके हाथसे मारेभी गये थे । तथापि सरदार जस्सासिंह अहलूवालिया तथा सरदार जस्सासिंह रामगढिया इत्यादि सरदार लोग अपने घोडे

दौडा २ कर सब सिक्खोंको धैर्य्य देते थे तथा शत्रुओंका मुकाबला भी करते जातेथे जिस तरफ शत्रुकी फौजका अधिक झुकाव देखते उस तरफ स्वयं आप चले जाते । एकबार बादशाह स्वयं हमला करके सिक्खोंके समीप आया । तो उसकालमें सरदार जस्सासिंह रामगढिया तथा आहलुवालियाने एक सहस्र सिक्ख सवारके साथ दूसरी ओरसे होकर उसके हमलेको ऐसा रोका कि, वह आश्चर्य होकर पीछे हटगया । और उसकालमें दोनों सिक्ख सरदार कई एक दुर्रानी पठान सरदारोंके प्राण लेकर अहमदशाहके समीप जा पहुँचे । पास होकर सरदार जस्सासिंहने ललकार कर कहा कि, अय अहमद-शाह बादशाह ! यह समय जवांमरदी दिखलानेका है । जरा हमको दो हाथ तो दिखला दो । परन्तु बादशाहका यह साहस न हुआ कि, उनका सामना करें । किन्तु उसी वक्त औरभी पीछे हटगया । और सिक्खसरदारलोग अपने लश्करमें चले आये । इस अवसरपर सहस्रों पठानोंके सिवाय बहुतसे सिक्खभी वीरगतिको प्राप्त हुये । इसी कारणसे यह लडाई सिक्खोंमें बहुतही भयानक प्रख्यात है । अहमदशाह दुर्रानी सिक्खोंका पीछा बराबर करताही रहा । और इसबार दश बारह सहस्र सिक्खलोग दुर्रानीओंके हाथसे मारेगये । परन्तु जब सिक्खलोग धीरे २ मालवामें पहुँचगये और उधरसे कई सहस्र वैराड मलवई सिक्खलोग उनके सहायक होगये तथा पानी बिना अत्यन्त क्लेश होने लगे तो अहमदशाहने सिक्खोंका पीछा छोडदिया । और सिक्खोंनेभी उस समयको भयानक जानकर भाठिण्डेका मार्ग लिया । इस लडाईमें जितने सिक्ख मारेगये सबके सिर काटकर लाहौर पहुँचाये गये थे । और वह दिल्लीदरवाजेके बाहर मीनारोंपर कलशोंकी तरह चुनवादिये गये ।

उपरोक्त घटनाके स्थानसे जब अहमदशाह लौटा तो मार्गमें अमृ-तसर पहुँचकर उसने अपने चित्तका गुबार सिक्खोंके मन्दिरपर निकाला । अर्थात् यह आज्ञा करी कि, अमृतसर तालाबकी इमारत

गिरवाकर इसको मट्टीसे भरवादिया जावे। और बारूदकी सुरंगें लगाकर मन्दिरभी गिरवाकर भूमिसे मिला दिया जावे। बादशाही आज्ञाका पालन उसीवक्त हुआ। हरि मन्दिरकी इमारत तथा तालाबकी बनावट सभी दो तीन दिनमें भूमिके साथ मिलगये। बारूदकी तीक्ष्णतासे। मन्दिरकी ईंटे मुडकर विपक्षी पुरुषोंके शरीरोंपर लगी। और एक छोटासा ईंटका टुकडा अहमदशाहके नाकपरभी लगा। जिसकारणसे वह बहुतदिनतक बीमार पडा रहा। उसके पश्चात् जब अहमदशाह लाहौर पहुँचा तो उसको काश्मीरके जीवनमल्ल नामक सूबाके बागी होजानेका समाचार मिला। बादशाहने नूरदीनखांको कुछ फौज देकर काश्मीरकी तरफ भेजदिया। उसने जातेही प्रथम राजा जम्बूको अपना सहायक बनालिया। पश्चात् उसकी सहायतासे काश्मीरमें पहुँचकर जीवनमल्ल सूबापर आक्रमण किया। उसनेभी आगेसे दृढ होकर सामना किया। परन्तु थोडीसी लडाई होनेके पश्चात् पराजित होकर पकडा गया। और पाँवमें जंजीर डालकर लाहौर भेजदिया गया। बादशाहने प्रथम उसकी आँखें निकलवाडालीं। फिर कुछ दिनके पीछे मरवाभी डाला। बादशाहने सरबुलन्दखाँको बुलाकर काश्मीरकी सूबेदारीपर भेजादिया। और नूरदीनको अपने पास बुलाकर काबुलकी तरफ रवाना हुआ।

बादशाह अभी चंद्रभागानदीसे पारभी न हुआ था कि, सिक्खलोग फिर पंजाबमें चलेआये और जहां तहां अधिकार जमानेके लिये अपना बल दिखलाने लगे। रायकोट मालेरकोटला सरहिन्द अम्बाला जगाद्री इत्यादि शहरोंके वैरान करनेमें तत्पर होगये। सबसे प्रथम बागांवाला नामक कसबाको वैरान किया यहांपर श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके दोनों छोटे पुत्रोंको पकडकर सरहिन्द पहुँचानेवाले जानीखाँ मानीखां तथा गुलशेरखां नामक तीन पठान रहा करतेथे। इसीकारणसे सिक्खोंने उनपर हमला करके लूटलिया। और उनको गिरफ्तार करके उनकी करनीका फल उनको देदिया। अर्थात् सबको अनेक तरहके क्लेश दिखला २ कर मरवादिया।

बागांवालाको वैरान करके सिक्खसमुदायने सरहिन्दकी तरफ चढाई करदई । तेरा १३ ज्येष्ठ संवत् १८२० विक्रमीमें हमला करके दिवशकालमेंही सिक्खलोग शहर सरहिन्दमें घुसगये । जीनखां नामक हाकिमने बहुत दत्तचित होकर सामना किया । परन्तु अन्तमें सिक्खोंके हाथसे मारा गया । और उसकी फौजभी कटगई कुछ शहर छोडकर भागगई अबकी बार सिक्खोंने सरहिन्दको बहुतही वैरान किया । जितने अच्छे २ मकान महलये सब गिरवाकर भूमिसे मिलादिये छोटे २ मकान झोंपडियोंको अग्नि लगाकर जलादिया । यह शहर उसकालमें बहुतही रौनकपर तथा मालदार था । परन्तु सिक्खोंने उसका निशानतक शेष न छोडा ।

बादशाह आलमगीरके समयमें इस शहरमें श्रीगुरुगोविन्दसिंहजीके छोटे २ दो पुत्र यहांके हाकिमने बडा क्लेश देदेकर बेरहमीसे मरवादिये थे । इसी कारणसे इस शहरकी आबादी देखकर स्वाभाविकही सिक्खोंके नेत्रोंमें रक्तभर आता था । अबतकभी वही दशा है कि, जो सिक्ख उसमार्गसे निकलता है उस प्राचीन गारत हुए सरहिन्दकी दोचार ईंटे उठाकर दरयाय शतद्रुमें फैंक देताहै । इसी कारणसे यह शहर सिक्खोंके हाथसे अनेकबार वैरान होचुका है । परन्तु अबकी बार सिक्खोंने इसको ऐसा बरबाद किया कि, नाम निशानतक शेष न छोडा । बहुतलोग वहांसे भाग २ कर और शहरोंमें जा आबाद हुए लुदहाना, पटियाला इत्यादि शहरोंमें उसकालके भागकर बसेहुए मनुष्योंकी वंश अबतक सरहिन्द नामसे प्रख्यात है । सरहिंद प्रान्तके यावत् इलाकोंपर सिक्खोंने अपना पूर्ण अधिकार जमालिया । और प्रदेश बाँटकर जहाँ तहाँ अपने थाने नियत करदिये । पटियालाधिपति राजा आलासिंहभी सिक्खधर्मका होनेके कारण सरहिन्दके वैरान होनेमें प्रसन्न था । इसलिये उसने २५ सहस्र रुपया सिक्खोंको देकर वैरान हुई सरहिन्दकी भूमि अपने आधिकारमें करलई । सरहिन्दको वैरान करके सिक्खलोगोंने पूर्वकी तरफ

चढाई करदई। सबसे प्रथम सहारनपुर जो कि उसकालमें महाराष्ट्रोंके अधिकारमें था उसको खूब लूटा। उससे पश्चात् उस प्रान्तके मीरापुर; मुजफरपुर, ज्वालापुर, कनखल इत्यादि अनेक कसबोंमें लूटमार मचानेलगे। पीछे गंगापार होकर कईएक पर्वतीराजाओंसे भेंट पूजा लेते हुए सिक्खलोग पंजाबकी तरफ चले आये। इस लूटमें सिक्खलोग स्वर्णचान्दीके अनेक थैले भरकर अपने घरोंमें लायेथे। जो सिक्ख लोग इस यात्रामें सहवर्ति नहीं थे उनके चित्तमेंभी लूटमारका उत्साह हुआ। और तीस चालीस सहस्र सिक्ख सरदारलोग मिलकर देशमें लूटमार मचानेके लिये फिर तत्पर हुए। शहर मेरठपर धावा करके लूटलिया। वहांके रईसोंने मिलकर सिक्खोंका मुकाबलाभी किया। परन्तु सिक्खोंकी तेज तलवारोंके आगे उनकी पेश न गई। थोडीही देरमें भाग निकले। सिक्खोंने शहरके भीतर प्रवेश करके अच्छीतरहसे लूटलिया। इस लूटमेंभी सिक्खोंको लाखों रुपये नगद तथा स्वर्ण चान्दीका बनाहुआ अनेक तरहका बहुतसा माल मिला। यह शहर दिल्लीके वजीरसे विशेष संरक्षित होनेके कारण आगे कभी लूटा नहीं गया था। इसीकारणसे इसमें मालदार लोग अधिक थे। सिक्खोंने सबको लूटके तबाह करदिया। और सभी माल अपने स्वाधीन करलिया।

दैवात् उन्हीं दिनोंमें सरदार जाबतखां कई हजार शाहीफौज लेकर सिक्खोंके मुकाबलेमें चला आया। परस्पर बडा भारी जंग हुआ। इस युद्धमें सहस्रों सिक्ख कतल हुए। चालीस सहस्र सिक्ख जो कि शहर मेरठपर चढकर आये थे उनमेंसे दस सहस्र भागके बचे। शेष सभी वहांही मारे गये। और मेरठके लोग जो कि सिक्खोंकी कैयदमें आगये थे वहभी छूट गये।

उसकालमें सिक्खोंका पंजाबदेश मात्रमें सर्वत्र जोर होगया था हिन्दोस्थानसे पीछे जाकर सिक्खोंने जालन्धरके हाकिम शाहअली खाँको मार डाला। और उसके इलाकेपर अपना अधिकार जमा-

लिया । पश्चात् अमृतसरमें आनकर अमृतसरके तालावमें अहमदशाहकी भराई हुई मट्टीको निकलवाकर उसको तलपानी निकलनेतक गहरा करदिया । उसके पीछे हरिमन्दिर बनवानेकाभी प्रबन्ध करदिया ।

ख्वाजा हमीयदखाँके पीछे लाहौरका हाकिम काबुलीमल्ल नियत हुआ । परन्तु उसकी हुकूमत शहरकी चार दीवारोंके भीतर रही । बाहर सर्वत्र सिक्खोंका अधिकार जम चुका था । काबुलीमल्लभी इनके भयसे शहरके भीतरही बैठा कापाँ करता था । और विना इन लोगोंकी सम्मतिके कोईभी काम नहीं करता था । सिक्खलोग उसको जैसा कहते वह वैसाही किया करता दूसरा कारण यह कि, वह हिन्दू था । इसलिये सिक्खजातिके साथ कुछ दिलीप्रेमभी रखता था । सिक्खोंने उससे कहा कि, जो लोग गोवध करनेवाले लाहौरमें रहते हैं तुम उनको पकडकर कतल करवा दो । अन्यथा हम तुमको कतल कर डालेंगे । सिक्खोंके इस कथनसे काबुलीमल्लको बहुत भय हुआ । और अवसर पाकर कई एक गोवधक पुरुषोंको पकडकर उनके नाक कान कटवाकर शहरसे बाहर निकलवा दिया । इस वार्ताका समाचार अहमदशाहकोभी किसी तरहसे पहुँच गया । इसी कारणसे वह काबुलीमल्लपर अप्रसन्न होकर काबुलसे पंजाबकी तरफ रवाना हुआ ।

इत्येकोनसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ६९ ॥

अथ सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७० ॥

जब अहमदशाह अबदाली नववीं बार पंजाब देशमें आया तो उसने सारे देशको खाली पाया । जो सिक्खलोग पंजाबमें फिर रहे थे अहमदशाहके आनेका समाचार सुनके सब जंगलोंमें जा घुसे बादशाह अन्तमें हैरान होकर पीछे अपने देश काबुलको चला गया । और जाता हुआ सूबा लाहौरके अधिकारपर दावरखांको नियत करके

काबुलीमल्लको बूचडोंके नाक काटनेके अपराधमें उसके नीचे नायब बनागया। और जहानखांको दश हजार फौज देकर सिक्खोंका बल तोडनेके लिये पंजाबमें छोडगया। तथा गुजरात रुहतासके इलाकेका प्रबन्धभी उसके अधीनही करगया। जहानखांने पंजाबमें जहां तहां सिक्खोंका बहुतही पीछा किया। प्रथमतो वह सरदार चढतसिंह सखरचकीयाके फिकरमें शहर गुजराँवालामें चलागया। परन्तु सरदार चढतसिंहको इसके आनेकी प्रथमही खबर मिलगई थी। उसके पास इसका सामना करनेकी कुछ सामग्री तैयार न थी। इसलिये वह शहर गुजरांवालेको छोडकर कहीं दूसरे स्थानमें चलागया।

उधर बादशाहके चले जानेके पीछे काबुलीमल्लको दावरखाँके नीचे काम करना बहुतही बुरा प्रतीत हुआ और उसने थोडेही दिन पीछे दावरखाँको कैदमें डालकर लाहौरकी हुकूमतका अधिकार स्वाधीन करलिया। तथा सर्वथा स्वतंत्र होगया। परन्तु यह सब काम उसने बादशाही आज्ञाके बिना किया था। इसलिये उसको अपने प्राणोंकाभी पूर्ण भय होगया था। उसने सिक्खोंको बुलाकर यह सम्मति दई कि, अब अवसर है प्रथम तुमलोग अपने शत्रु जहांनखांका काम तमाम करडालो। पीछे सारा पंजाबदेश आपही लोगोंके हाथमें है। जैसे चाहना वैसे करना। उसकालमें जहानखां स्यालकोटमें ठहरा हुआ था। सिक्खोंने उसीवक्त उसपर चढाई करदई। और नियत स्थलपर जाकर लडाई शुरू करदई। तीन २ चार २ सौ सिपाही दोनों ओरके युद्धमें मारेगये परन्तु अन्तमें जहानखाँ पराजित होकर रुहतासके किलेमें भागकर जाघुसा। सिक्खोंने उसका वहांतक पीछा किया। और वहांपरभी एक भारी युद्धके पीछे उसको वहांसे भगाकर काबुल पहुँचा दिया। तथा सरदार चढतसिंह सँखरचकीयाने रुहतासके किलेपर अपना अधिकार जमालिया।

जब जहानखांने काबुलमें जाकर बादशाहको अपनी दुर्दशाका वृत्तान्त सुनाया तो अहमदशाह दुर्रानीने दशवीं बार फिर देश पंजाब

पर चढाई करी और लाहौर पहुँचकर काबुलीमल्लका सब सरसामान लूटके उसको कैदमें डालदिया परन्तु शहरनिवासी छोटे बडे सभीलोग काबुलीमल्लपर बहुतही प्रसन्न थे। इसलिये उसके कैद किये जानेका सबको शोक हुआ। शहरके सब प्रतिष्ठित लोगोंने मिलकर बादशाहके आगे काबुलीमल्लके छोडदेनेकी प्रार्थना करी। बादशाहनेभी प्रजाकी प्रार्थनाको न स्वीकार करना उचित न समझा। किन्तु उसी वक्त काबुलीमल्लको कैदसे निकालकर उसको लाहौरकी हुकूमतका अधिकार देदिया। पीछे सिक्खोंकी खोज करनेके लिये बादशाहने अपनी फौजको जहाँ तहाँ शहर शहर ग्राम ग्राममें भेजा। परन्तु उनका एक पुरुषभी बादशाही फौजके हाथ न आया। सन्दलबार तथा झालका हनूबान इत्यादि गहरजंगलोंमें घुसगये। सर्वथा अज्ञात दर्रानी फौजको सिक्खोंका खोजतकभी मिलना कठिन होगया।

अबकी बार शाहजादा तैमूरशाहके बादशाहके साथही आयाथा। वह कारणविशेषसे अपने पिताके साथ अप्रसन्न होकर बारा सहस्र फौज अपने साथ लेकर बादशाहकी आज्ञाके विनाही पीछे काबुलको चला-गया। उसपर अहमदशाह बादशाहको बहुतही क्रोध हुआ। और वह उसीवक्त लाहौरसे कूचकरके मुलतानको चलदिया। वहां जाकर अली-मुहम्मदखाँ नामक मुलतानके सूबाको कैद करलिया। वह शाहजादा तैमूरका मित्र था। और उसीने शाहजादेको बादशाहसे विरोध करा कर काबुलको भेजादिया था इसीसे बादशाहने उसको कैद करलिया। और दिन पीछे उसका पेट फडवाकर मरवाडाला। तथा उसके स्थानपर एक शाजखाँ नामक पठानको नियत करके आप लाहौरको चला आया। पीछे जम्बूके मार्गसे होता हुआ काबुलको चलागया। काबुलीमल्ल लाहौरसे जम्बूतक बादशाहके साथ आगे पहुँचानेको गया। परन्तु फिर पीछे न आसका कारण उसमें यह हुआ कि, बादशाहके पंजाबसे निकलतेही सिक्खोंने पंजाब देशपर सर्वत्र अपना अधिकार जमा लिया। सरदार लहनासिंह, शोभासिंह तथा गुजरसिंहने धावा

करके लाहौरपरभी अपना अधिकार जमा लिया। प्रथम तो उन्होंने लाहौर शहरको खूब लूटा। पीछे जहां तहां अधिकार बांटके अपना अधिकार जमा लिया। काबुलीमल्लके मालकोभी उक्त तीनों सरदारोंने आपसमें बांट लिया। और उसके घरों स्त्रीको कैद कर लिया। इस बावत् समाचारको काबुलीमल्लने जम्बूमें सुना तो बहुतही दुःखित हुआ। और पचीस सहस्र रुपया नगद भेंट देकर उन सिक्खसरदारोंसे अपनी स्त्रीको छुडवाकर अपने पास जंबूमें मँगवा लिया। तथा इस बावत् समाचार युक्त प्रार्थनापत्र लिखकर बादशाहके पास भेजदिया।

उन्ही दिनोंमें जवाहिरमल्ल नामक महाराजा भरतपुरने नजीबखां वजीरसे अपने पिताका बदला लेनेके लिये दिल्लीपर चढाई करदई। कारण उसमें यह था, कि, संवत् १८१३ विक्रमीमें राजा सूर्यमल्ल-नामक उसके पिता आगराके किलेको फतह करके उसमेंसे १९ कोटि रुपया जो कि अकबरबादशाहके वक्तका वहां एकत्र था निकालकर अपने किले भरतपुरमें लेआया था। परन्तु पीछेसे नजीबखांने बहु-तसी फौजके साथ वहां पहुँचकर राजा सूर्यमल्लको कतल करके आ-गरेका किला छुडवालिया था। सिक्खोंके बलवीर्य्य शौर्य्यकी प्रख्याति तो उन दिनोंमें देशदेश ग्राम २ घर २ में फैलरही थी राजा भर-तपुरनेभी तीन लाखरुपया देनेकी प्रतिज्ञा करके सिक्खोंको अपनी सहायतामें बुलालिया। यह लोगभी राजाके आह्वान पत्रको सुनकर तैयार होगये। सरदार जस्सासिंह आहलूवालिया गणेशसिंह गुरुबख-शसिंह तथा कर्मसिंह इत्यादि बहुतसे सरदारलोग तीनसहस्र सिक्खोंकी जमातके साथ मध्य प्रांति देशको वैरान करते हुए अमृतसरसे चलकर महाराजा भरतपुरकी सहायतार्थ दिल्लीमें आन पहुँचे। राजाने युद्धका सामान गोली बारूद अस्त्र शस्त्र इत्यादि सब प्रथमही तैयार कररक्खा था। दोनों तरफसे लडाई शुरू होगई। छः मासतक एक-बार लडाई प्रचलित रही। अन्तमें जब नजीबखाँने अपनी विजयका कोई चिह्न न देखा तो आने जानेका खर्च देना स्वीकार करके बादशाह अहमदशाहको अपनी सहायताके लिये बुलाभेजा।

उन्हीं दिनोंमें बादशाह अहमदशाहके पास काबुलीमलका प्रार्थनापत्रभी पहुँच चुकाथा इसीसे प्रथम उसने संवत् १८२२ विक्रमीमें काबुलसे कूच करके पंजाबमें आनेका विचार किया । परन्तु रुहतासतक पहुँचकर किसी कारणविशेषसे वह फिर काबुलको चला गया। और चार मासके पीछे फिर पंजाबको चला आया। उसकालमें यावत् सिक्खलोग प्रायः दिल्लीके चौतरफ घिर रहेथे । इसी कारणसे जो सिक्खसरदार उसकालमें लाहौरके अधिकारी थे बादशाहके आगमनको सुनकर इधर उधर किनारे होगये । और जो सिक्खलोग पंजाबके अन्यप्रांतोंके अधिकारी थे वहभी बादशाहके आनेका समाचार सुनके गह्वरजंगलोंमें जाघुसे। बादशाह सिक्खोंसे विनाशून्य पंजाबको देखकर बहुतही हैरान हुआ । और दाँत पीस २ रह गया । बादशाहका मन था कि यदि सिक्खलोग मेरे हाथमें आवें तो इनका बीज नाश करडालूं । तथा इस सिक्खजातिका इस भूमिसे नाम निशानभी उठा दूं । परन्तु प्रबल दैव संरक्षित महावीर सिक्खलोग बादशाहके हाथहीमें कब आते थे । बादशाही लश्करने पंजाबदेशका ग्राम ग्राम छान डाला परन्तु कहींभी किसीको सिक्खकी शकलतक न दीखपडी । अन्तमें लाचार होकर मौलवी अबदुल्लाखाँ जो कि, लाहौरहीका निवासी था । उसको लाहौरकी हकूमतका अधिकार देकर बादशाहने दिल्लीको कूच करदिया । परन्तु अम्बालाप्रान्तमें उसके लश्करमें ऐसी विषूचिका (हैजे) की बीमारी फैली कि, प्रतिदिन सौ सौ सिपाही मरने लगे । इसी कारणसे अनापत्या बादशाहको वहांही ठहरना पडा ।

इतनेंहीमें उधर नजीबखाँनेभी सिक्खोंके हमलोंसे दुःखित होकर राजा भरतपुरको सन्धिपत्रका सन्देश भेजदिया । राजा भरतपुरने नजीबखाँको लिख भेजा कि, यदि तुम अपनी पुत्रीका विवाह हमारे साथ करना तथा हमारे खर्चेका दो कोटि रुपया देना स्वीकार करो तो हम अभी आपसे मेल करनेको तैयार हैं । नजीबखाँने इस बार्त्ताको स्वीकार किया । और किसी हिन्दूकी सुन्दरसी लडकी लेकर राजा

भरतपुरको अपनी पुत्री कहकर विवाह दिया। और बहुतसा सरसा-मान तथा खर्चका रुपया देकर राजा भरतपुरको अपने सम्बन्धिकी तरह प्रसन्नतापूर्वक रुकसत किया। राजाने अपनी प्रतिज्ञानुसार तीनलाख रुपया सिक्खोंको देकर सन्मानपूर्वक पंजाबको विदा किया नजीबखाँने विचारा कि यदि बादशाह दिल्लीमें आवेगा तो अवश्य कुछ उलट पलट होनेका सम्भव है। इसलिये उसने कुछ रुपया भेंट लेकर बादशाहकी अम्बालाहीमें जा भेंटकरी। और कहा कि, अब आपके प्रतापसे दिल्लीमें शान्ति है। इसलिये आपको व्यर्थ वहांतक पहुँचनेका श्रम उठाना उचित नहीं। इत्यादि वचनोंसे बादशाहको सन्तोष करके नजीबखाँ पीछे दिल्लीमें आ गया।

और उधर अहमदशाहने अम्बालासे कूचकरके सरहिन्दमें डेरा जा जमाया। परन्तु उस शहरकी वैरानी देखकर उसके चित्तमें बहुत ही रंज हुआ उस कालमें उसके लश्करमें विषूचिकाकी बीमारी चल-रही थी। इसलिये कुछ कर न सका उसी मुकामपर राजा आलासिंह पटियालाधिपतिका पुत्र राजा अमरसिंह कुछ भेट पूजा लेकर बादशा-हकी सेवामें आन हाजिर हुआ। और अपने पिताके मरनेका शोक सूचन करके दोलाख रुपया बादशाहकी भेंटमें अर्पण किया। तथा इससे पृथक् तीनलाख अपने देशकी मालगुजारीकाभी अदाकर दिया इसी कारणसे बादशाह राजा अमरसिंहपर बहुतही प्रसन्न हुआ। और उसको महाराजा राजगान मालवेन्द्रकी उपाधिसे विभूषित करके यथा रीति पटियालाकी राजगादीपर नियत करादिया। और अपना एक चिह्न देकर सिक्का प्रचलित करनेकीभी आज्ञा देदी। उसकालमें बाद-शाहने गुलाम बनानेके लिये बहुतसे हिन्दूलोगोंको अपने साथ कैद किये हुए था। महाराजा अमरसिंहजीने देखकर दयार्द्र होकर बाद-शाहसे प्रार्थना करके उन सबको छुडवादिया। और अपने पाससे मार्गव्यय देकर जहाँ तहाँ उनके अपने २ घरोंमें भेजादिया उन दिनोंमें महाराजा अमरसिंहका बहुतही यश हुआ। और सभी लोग इसको बन्दीमोचकके नामसे पुकारने लगे।

अहमदशाहने सरहिन्दप्रान्तका यावत् इलाका मालेरकोटलाके पठानोंको देदेना चाहा परन्तु उन लोगोंने सिक्खोंके भयसे लेना अस्वीकार किया । और कहा कि यदि आपसे हम लेभी लें तो पीछे सिक्खलोग हमसे अवश्य छीनहीं लेंगे । तब बादशाहने दोलाख रुपया लेकर वही इलाका राजा अमरसिंहको देदिया । प्रथम वही इलाका बादशाह अपनी तरफसे सिक्खोंको दिया चाहता था । तथा सिक्खोंको देनेके लिये सूचनाभी दई थी । परन्तु सिक्खोंने यह कह भेजा था कि,इस इलाकेका अधिकारी राजा अमरसिंह है जो कि मुसलमानोंके आगे शिर झुकाता फिरता है । हमलोग किसीका दान दियाहुआ लेनेवाले नहीं हैं । हां यदि वह गुरुसहायक होगा तो अपनी तलवारके बलसे शत्रुओंसे देशको छुडावेंगे । बादशाह सिक्खोंके इस उत्तरको सुनकर उनकी बहादुरीकी प्रशंसा करनेलगा । और सरहिन्दके इलाकेका अधिकार राजा अमरसिंहको देकर काबुलको रवाना हुआ ।

इति सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७० ॥

अथैकसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७१ ॥

अहमदशाहके पीछे काबुल लौटनेके समय इसकी फौज बहुतसी तो हैजेकी बीमारीसे मरही चुकी थी । और जो कुछ सिपाही शेष थे वे भी सर्वथा आरोग्य नहीं थे । ऐसे अवसरपर सिक्खोंनेभी अपने कतल आम करवानेका बदला लेलेना उचित समझा । और तीस पैंतीस सहस्र सिक्खसमुदायने मिलकर कपूरथलाप्रान्तमें अहमदशाहकी फौजपर हमला करदिया । और सहस्रों पठान रात्रिको पडेहुये घासकी तरह काटडाले । बहुतही काठिनतासे जैसे कैसे अहमदशाह जण्डियालातक पहुँचा । वहांपर मुकाम करके अपनी फौजको सिक्खोंके सामने करदिया । बहुतही जोरशोरसे लडाई हुई । परन्तु विजयलक्ष्मी सिक्खोंको मिली ।

और दोहजार दुर्रानी पठानोंको रहीमखान नामक उनके सरदारसमेत सिक्खोंने युद्धभूमिमें सदाके लिये शयन कराया। बादशाह पराजित होकर कसबा बटालाकी तरफ चला गया। उसके पश्चात् अहमदशाहका चचा बुलन्दखाँ पर्वती राजाओंसे आठ हजार फौज लेकर अपने भतीजेकी सहायताके लिये पहुँचा। और बटालाके समीप सिक्खोंके साथ फिर दूसरा मुकाबिला हुआ। परन्तु उसमेंभी बहुतसे सिपाही सिक्खोंके हाथसे मारे गये। और सरबुलन्दखाँ जखमी होकर भागगया। पीछे रही दुर्रानी फौजको सिक्खोंने घासकी तरह काटना शुरू किया। दुर्रानी पठान शृगालोंकी तरह सिक्खोंके आगे भाग निकले। ऐरावती नदीके तीरतक सिक्खोंने दुर्रानियोंका पीछा किया। समय आनेही पहुँचा था कि, सिक्खलोग अहमदशाहको पकडकर कतलकरडालते, परन्तु इतनेहीमें उधरसे उसका पुत्र शाहजादा तैमूर तथा कलानौरका हाकिम अबदुल्लाखाँ दोनों मिलकर बारा सहस्र फौज साथ लेकर उसकी सहायतामें आन पहुँचे। उनके आतेही अहमदशाहने सिक्खोंपर फिर चढाई करदई। यह चढाई दुर्रानी पठानोंकी ऐसे प्रबलवेगसे थी कि, सिक्खलोग उनका सामना करनेसे प्रथमही दीनानगरके पर्वतोंके बीच जाघुसे। बादशाहनेभी सिक्खोंसे पीछा छुडाकर बजीराबादकी तरफ कूचकर दिया। जब दरयाय जेहलमसे पार होनेलगा तो सिक्खोंने फिर पीछेसे अचानक हमला करदिया। उस स्थानमेंभी सिक्खों तथा दुर्रानी पठानोंकी बहुतही भारी लडाई हुई। बादशाही तोपखाना दरयायमें डूबगया। और अनेक किश्तियां सिक्खोंने जिनपर दुर्रानी फौजके सिपाही अपने सामानोंके समेत पार जा रहेथे हमला करके जलमें डुबादई। अबकी बार सिक्खोंके पराजित करनेके लिये अहमदशाने बहुतही प्रयत्न किया। परन्तु इस परमस्वतन्त्र जातिके सामने उसकी कुछ पेश न गई। अन्तमें हैरान परेशान होकर काबुलको चला गया। उसके पश्चात् अहमदशाहको घरके अनेक प्रकारके कार्य्योंने फिर कभी हिन्दोस्थानपर चढकर आनेका अवसर न दिया

और सिक्खोंका पंजाबदेश मात्रमें सर्वत्र अधिकार जमगया। सरदार गुजरसिंह लहनासिंह तथा शोभासिंहने माघ मिति १७ संवत् १८२२ विक्रमीमें फिर लाहौरपर अपना अधिकार जमालिया। काजी अबदुल्लाखाँ लाहौरहीका निवासी था तथा सिक्खोंसे द्वेषभी नहीं रखता था इसलिये सिक्खोंने उसको कुछ न कहा। परन्तु दावरखाँको किलेके तहखानेमें कैद करदिया। उसके पश्चात् दुर्रानीपठानोंका आना जाना देश पंजाबसे बन्द होगया। और पंजाबदेशके शहर २ कसबा २ ग्राम २ में सिक्खसरदारलोग स्वयं अधिकारी बनकर देशका प्रबन्ध करने लगे।

वैशाख संक्रांति संवत् १८२५ विक्रमीमें मेलाके जुटावपर पन्थखालसाने मिलकर श्रीअमृतसरजीके हरिमन्दिरकी इमारतको फिर तैयार करवानेका विचार किया। यह विचार श्रीअमृतसरके दीवानमें पन्थखालसाका चलही रहा था कि, इतनेहीमें जलालाबाद लोहारी नामक कसबाका एक ब्राह्मण खालसा दीवानमें आनकर बडी दीनताके साथ प्रार्थना करने लगा। कहा कि खालसाजी मेरे ग्रामके सैयद मुहम्मदखाँ मुसलमानने मेरी पुत्रीको बलात्कारसे अपने घरमें डाललिया है। मैंने इस अपने दुःखकी पुकार राजपूतानाके प्रत्येक राजाके पास जाकर करी। परन्तु मेरेको गरीब जानकर किसीने कान नहीं दिया। अब अन्तमें आपलोगोंकी शूरवीरता धर्मरक्षा तथा दीनवत्सलताको सुनकर आपकी शरणमें आया हूँ। आपलोग मेरी सहायता करें। अन्यथा आपके सामने मैं यहीं प्राण देदेउँगा। उसकालमें सभी सिक्खलोग हरिमन्दिरके बनवानेके विचारमें थे। ब्राह्मणकी प्रार्थना सुन कर यह विचार ठहराया कि, वर्तमानकालमें इस ब्राह्मणकी सहायता करी जावे। इसीके साथ पूर्वदेशकी यात्राकी लूटमें जो कुछ पन्थखालसाके हाथमें आवेगा वह सभी धन हरिमन्दिरकी सेवामें लगाया जावेगा। इस विचारको निश्चित करके पन्थखालसाने अमृतसरसे मेलेके पश्चात् उक्त ब्राह्मणके साथ पूर्वदिशाको चढाई करदई। मार्गमें प्रथम सिक्खोंके

इनने अम्बाला सहारनपुर मुजफ्फरनगर इत्यादि शहरोंको लूटा। पीछे जलालाबाद लुहारीपर आक्रमण करके सैयद मुहम्मदखां नामक वहांके हाकिमको पकडकर बांध लिया। और उसके शहरको लूटकर वैरान करदिया। पीछे वह लडकी अपने पिता ब्राह्मणको मिलगई। परन्तु उसीदिन उस ब्राह्मणपर दूसरी आफत आन पडी। ब्राह्मणोंने उस गरीबको नातबाहर करदिया उसने फिर सिक्खोंके आगे जाकर अपना दुःख रोदिया। सिक्खोंने उस ब्राह्मणकी यावत् जातिको निमन्त्रण करके तलवारके जोरसे सबको उस लडकीके हाथसे भोजन करवादिया। पीछे सैयद मुहम्मदखांको अनेक प्रकारके क्लेश दे देकर जीतेको अग्निमें जलवादिया। और उस गरीब ब्राह्मणको बहुतसा लूटका धन माल देकर पन्थखालसाने शहर मेरठकी तरफ कूचकरदिया। यहांपर जाबतखां नामक मेरठके रईससे कुछ भेंटपूजा लेकर जिला बिजनौरके कसबोंमें लूटमार जा मचाई। उस प्रान्तके अनेक कसबोंमें लूटमारके पीछे सम्बल मुरादाबाद चन्दोसी कासगंज अलीगढ इत्यादि शहरोंको लूटकर खुरजा भेजा दाखल हुए खुरजाकी लूटमें सिक्खोंने यह प्रतिज्ञा करी कि, यहांसे जो कुछ मिलेगा वह सब श्रीअमृतसरजीके हरिमन्दिरकी सेवामें अर्पण किया जावेगा। इस केवल खुरजामात्रकी लूटमें सिक्खोंको चार लाख रुपया तथा कुछ स्वर्ण चांदीके जेवर असबाब सामान हाथ लगा। उसके पश्चात् दिल्ली करनाल, पानीपत इत्यादि शहरोंको लूटते हुए सिक्खलोग अमृतसरमें जा पहुंचे। और खुरजाकी लूटका चारलाख रुपया परमप्रमाणिक गुरुभक्त भाई देशराजा क्षत्रिके सुपुर्द कर दिया। तथा सिक्ख सरदारलोगोंसे बहुतसा चन्देकेद्वारा औरभी रुपया एकत्र करके भाई देशराजजीके हवाले किया। और मन्दिर बननेके लिये कार्य्य आरम्भ करदिया।

स्मरण रहे कि, प्रथम सिक्खलोग दो दलोंमें विभक्त थे। अर्थात् एक वृद्धदलके नामसे प्रख्यात था। द्वितीय तरुणदल कहा जाता था फिर वह एक २ दल पांच हिस्सोंमें बटा था। यद्यपि यह सभी

सिक्खलोग अपने आपको समरूपसे श्रीगुरुगोविन्दसिंहजी महाराजकी फौज समझा करते थे। तथापि जिन जिन सिक्खोंका जिन२ प्रतापी सरदारलोगोंके साथ प्रेम अधिक हुआ वेही २ उन सरदारोंके साथ मिल कर देशपर अपना अधिकार जमाकर हकूमत करने लगे। पंजाबदेशके शहर २ नगर २ ग्राम २ में यथायोग्य अधिकारोंपर नियत होकर सिक्खलोग देशका शासन करने लगे। जो सबसे बडे अधिकारी सिक्खसरदार नियत हुए थे उनका नाम मिसलोंवाले बोला जाता था। और उनके नीचे नीचे काम करनेवाले अधिकारी सिक्खलोग खैरख्वाहके नामसे प्रख्यात थे। अधिकारोंके न्यून अधिक होनेसेभी सिक्खमात्रका मेल परस्पर सहोदरोंकी तरह हुआ करता था सिक्खोंने जब सारे पंजाबदेशपर अपनाही अधिकार समझा तो पंजाबदेशको बारा हिस्सोंमें बांटकर जहां तहां हुकूमत करनेलगे । प्रत्येक भाग जो कि मिसलके नामसे प्रख्यात हैं अति प्रतिष्ठित वंशके दो २ चार २ सम्भावित पुरुषोंके भागमें आया। और उन्हींके नामसे प्रत्येक मिससलकानाम पृथक् २ प्रख्यात होगया।

प्रथम मिसल भंगीओंकी-इसके अधिकारी सरदार हरिसिंह झण्डासिंह तथा गुजरसिंह इत्यादि सिक्खलोग हुए ॥ १ ॥

द्वितीय मिसलनाकियोंकी-इसके अधिकारी हीरासिंह सदासिंह तथा मिहरसिंह इत्यादि सिक्खसरदारलोग हुए ॥ २ ॥

तृतीय मिसल बनियोंकी-इसके अधिकारी जयसिंह हकीकतसिंह तथा रामसिंह इत्यादि सिक्खसरदारलोग हुए ॥ ३ ॥

चतुर्थी मिसल सुकर चक्कियोंकी-इसके अधिकारी सरदार चढतसिंह मानसिंह इत्यादि सिक्खलोग हुए ॥ ४ ॥

पञ्चम मिसल शहीदोंकी-इसके अधिकारी कर्मसिंह सदासिंह इत्यादि सरदारलोग हुए ॥ ५ ॥

छठवीं मिसल डलेवालीयोंकी-इसके अधिकारी तारासिंह गुरुदयालसिंह इत्यादि सिक्खसरदारलोग हुए ॥ ६ ॥

सप्तम मिसल निशानवालोंकी इसके अधिकारी सरदार संगतसिंह गुरुबखशसिंह तथा भंगासिंह इत्यादि सिक्खवीर हुए ॥ ७ ॥

अष्टम मिसल करोडियोंकी इसके अधिकारी सरदार करोडासिंह बघेलसिंह तथा श्यामसिंह इत्यादि सिक्खलोग हुए ॥ ८ ॥

नवम मिसल फैजुल्लापुरियोंकी इसके अधिकारी नव्वाब कपूरसिं-हादि सरदारलोग हुए ॥ ९ ॥

दशम मिसल आहलूवालियोंकी इसके अधिकारी सरदार जस्सासिंह दीवानासिंह तथा गण्डासिंह इत्यादि सरदारलोग हुए ॥ १० ॥

ग्यारवीं मिसल रामगढियोंकी इसके अधिकारी सरदार जस्सासिंह आलीसिंह तथा मालीसिंह इत्यादि सिक्खलोग हुए ॥ ११ ॥

बारहीं मिसल कलसियोंकी इसके अधिकारी सरदार गुरुबखशसिंह मानसिंह तथा वृद्धसिंह इत्यादि सिक्ख सरदारलोग हुए ॥ १२ ॥

इस रीतिसे सारा पंजाबदेश सिक्खोंने बारा मिसलों (हिस्सों) में बांट लिया । और जहां तहां अधिकार जमाकर हुकूमतभी करने लगे । तबतक उधर काबुलमें अहमदशाहभी मरगया । और उसके पुत्र शाहजादा तैमूरशाहने अपने पिताके अधिकार पर नियत होकर फिर पंजाबपर चढाई करी । इधर प्रथम मिसलके अधिकारी सिक्खलोगोंने चढाई करके सूबा मुलतानको अपने अधिकारमें लेलिया । इस वा-र्त्ताको सुनकर शाहजादा तैमूरने संवत् १८२४विक्रमीमें पेशावर पहुंच-कर हाजी अलीखां वकीलको सिक्खोंके पास लाहौर भेज दिया । कि, तुम लोग यदि लाहौरके अधिकारपर नियत स्थित रहना चाहते हो तो हमारी स्वाधीनता स्वीकार करो । परन्तु स्वतन्त्र प्रकृतिके सिक्खलोग कब इस वार्त्ताको स्वीकार करसकते थे । जब तैमूरके वकीलने सिक्खोंके दरबारमें जाकर बादशाहके वशवर्ति होनेकी चर्चा चलाई तो सिक्खोंने क्रोधमें आकर उस वकीलको कतल करडाला और कहा कि, हमको अकालपुरुषने स्वतन्त्र देश रहनेके लिये दिया है उसमें तुर्कोंकी ताबे-दारी उठानेका कौन काम है । जब भागे हुए वकीलके साथियोंद्वारा

इस समाचारको शाहजादा तैमूरने सुना तो उसने उसी वक्त जंगीखां दुर्रानीको पांच सहस्र सेना साथ देकर सिक्खोंकी तरफ रवाना करदिया । रुहतासके समीप जंगीखांका सिक्खोंसे मुकाबला हुआ । परन्तु उसकालमें सिक्खलोग पंजाबदेश मात्रमें जहां तहां छायरहे थे । सभी एकस्थलमें नहीं थे किन्तु भिन्न २ स्थलोंमें बँटरहे थे । सिक्खोंकी थोडीसी जमात जंगीखांके मुकाबलेमें खडी हुई । इसी कारणसे इस स्थलमें सिक्खोंकी हार हुई । सिक्खलोग भागकर पीछे हटआये । उधर तैमूरने मुलतान पहुँचकर वहांसे भी सिक्खोंका अधिकार उठादिया । उसके पश्चात् तैमूरने लाहौरकी तरफ आनेका विचार किया । सिक्खलोगोंने इधर उधरसे मिलकर कशवा शेखपुराके समीप उसका मुकाबला तो किया परन्तु कृतकार्य्य न हुए । तैमूरशाहने लाहौर परभी अपना अधिकार जमालिया । पीछे फतहखांको कुछ फौज देकर सिक्खोंके बल तोडनेके लिये देशमें पर्यटन करनेका हुक्म दिया तीन मासतक बराबर देशमें गदर मचा रहा ।

मुकाबलेभी बहुतस्थलोंमें हुए । कभी सिक्ख प्रबल होजाते । कभी दुर्रानी लोग विजयको लाभ करते । उसकालमें सिक्खलोग किसी एक स्थलमें नियत न थे । किन्तु देशमात्रमें बँटे हुए थे इसी कारणसे प्रायः दुर्रानी फौज प्रबल पडती । और दुर्रानीफौजने देशमें फिरकर जहां तहां सिक्खोंको बेदखल करना शुरू किया । उन्हीं दिनोंमें यावत् सिक्खोंने एक स्थलमें एकत्र होकर सम्पकिया । और एक भारी जमात होकर जालन्धरके समीप दुर्रानियोंपर हमला करादिया । इस अवसर पर सिक्खोंने अपनी तलवारका ऐसा हाथ दिखलाया कि, दुर्रानी पठान पराजित होकर शृगालोंकी तरह भाग निकले । सिक्खोंने मिलकर दुर्रानियोंका लाहौर तक पीछा किया । और वहांसेभी उनका अधिकार उठा दिया ।

इत्येकसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७१ ॥

अथ द्विसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७२ ॥

तैमूरशाहने जब पंजाब देशका प्रबन्ध करना अपनी शक्तिसे बाहर समझा तो उसी वक्त काबुलकी तरफ लौटगया। सिक्खोंने दरयाय अटतक उसका पीछा किया। और स्थान२ पर हमलोंसे उसको चलनाभी कठिन करदिया। तथा पीछे पडके उसके सहस्रों सिपाही मार डाले और उनका सारा सामान लूट लिया। तैमूरके चले जानेके पीछे फिर सिक्खलोग जहां तहां अपने २ अधिकारोंपर नियत होकर शासन करने लगे। प्रथम मिसलके सरदार लोगोंने आक्रमण करके फिर मुलतानके हाकिमको निकाल दिया। और वहांपर अपना अधिकार जमालिया।

उन्हीं दिनोंमें नव्वाब बहावलपुरभी काबुलके बादशाहसे विरुद्ध होगया था। इसी कारणसे तैमूरशाहने बहुतसी फौज साथ लेकर संवत् १८२७ विक्रमीमें दूसरी बार फिर देश पंजाबपर चढाई करी। और आनकर नव्वाब बहावलपुरको स्वाधीन करके मुलतानसे सिक्खोंका अधिकार भी उठा दिया। तथा मुजफ्फरखांको मुलतानका हाकिम नियत करके शीघ्रही पीछे काबुलको चला गया और वहां जाकर संवत् १८२८ विक्रमीमें दैवात् अपनी मौतसे मरगया। उसके पीछे उसके पुत्रोंमें शाहीतख्तके अधिकारका परस्पर भारी विवाद हुआ। उसी विवादके कारण उसकी लाश (शव) सात दिनतक बिना भूमिमें दबानेके धरी रही। अन्तमें शाहजादा जमानशाहको काबुलकी बादशाहीका अधिकार मिला।

उसने अपने दूसरे भाइयोंको विचारार्थ एकान्तस्थलमें बुलाकर धोकेसे कैद करालिया। और आप बादशाही तख्तपर बैठ गया। उसके पश्चात् कन्धार पर चढाई करते शाहजादा हिमायुंको कैद करके उसकी आँखोंमें अपने हाथसे गरम शलाका फेरफेर उसको अन्धाकर डाला। और दो वर्षतक अपने देशमें राज्य प्रबन्ध करके संवत् १८३१ विक्रमीमें हिन्दोस्थानकी तरफ रवाना हुआ। जब रुहतासके

पास पहुँचा तो वहांसे मीर अहमदखांशाहजी अर्थात् तोपखानाके आतशबाज दारोगाको पंजाबदेशकी तरफ रवाना किया । उसने पंजाबमें प्रवेश करतेही एक गदर मचादिया और अटक प्रान्तके यावत् सिक्खोंको बेदखल करके भगा दिया । परन्तु शहर गुजरातके समीप जब सिक्खोंने एकत्र होकर उसका मुकाबिला किया तो वह पराजित होकर शृगालकी तरह सेनासमेत भाग निकला। फिर सिक्खलोग अपनी २ जगहपर यथायोग्य नियत होगये । और स्वतन्त्र रूपसे देशअधिकारी बनकर शासन करनेलगे । संवत्१८३३ विक्रमीमें शाहजमानने फिर पंजाबकी तरफ चढाई करी । इसके भयसे सिक्ख लोग जंगलोंमें भागगये । और यह सीधा लाहौरमें आया वहां आकर इसने शहरनिवासी लोगोंको बहुतही क्लेशदिया । शहरके लोग अपने घर छोड २ कर भागगये । इतनेहीमें सिक्खोंने शेखूपुराके किलेमें एकत्र होकर लाहौरपर हमला करनेकी तैयारी करी । परन्तु इस वार्ताका समाचार उधर जमानशाहको भी मिलगया । उसने शेर मुहम्मदख नामक फौजके सरदारको कुछ फौज देकर सिक्खोंकी तरफ उसी वक्त रवाना किया । उसने शेखूपुरामें पहुँचकर सिक्खोंसे लडाई शुरू करदई एक भारी रक्तमय युद्धके पीछे सिक्खोंकी हार हुई । परन्तु सिक्खोंने मैदानमें पराजित होनेका कुछविचार न करके रात्रिको उनपर हमले करके लूटमार करना शुरू करादिया । ऐसा करनेसे जमानशाहकी फौजको बहुतही हानि पहुँची । अन्तमें बहुत हानिके पश्चात् जमानशाहने पंजाबदेशका प्रबन्ध करना अपनी शक्तिसे बाहर समझा । शोचा कि यह सिक्खोंकी अतिप्रबल जाति मेरेको कदापि सुखाश्वास लेने न देगी । इत्यादि बहुत विचारके अनन्तर पंजाबदेशसे अपना हाथ संकोच करके शान्त होकर काबुलके मार्ग चलदिया । और पीछे सिक्खोंने फिर जहां तहां अपना अधिकार जमालिया । इसी तरह संवत् १८४९ से लेकर संवत् १८५६ विक्रमीतक जमानशाहने अनेकबार पंजाबदेशपर हमला किया । परन्तु सर्वथा परमप्रबल विजयिनी सिक्खजातिके सामने वह एकबारभी कृतकार्य्य न हुआ।

प्रत्युत उदास होकर पंजाबसे सदाके लिये अपना हाथ संकोच कर बैठा उसके पश्चात् धीरे २ सिक्खजातिमें ऐसी दैवी शक्तिका प्रवेश होता गया कि, पचास वर्षके भीतर सिक्खलोग सवर्था स्वतन्त्ररूपसे बेखटक होकर पंजाबदेशके राज्यशासनके अधिकारी बनगये । और इस जातिपर परमेश्वरकी ऐसी कृपादृष्टि हुई कि, भूमण्डलमात्रकी युद्ध प्रबलजातियोंमें यह जातिभी एक प्रथमगणनामें गिनी जाने लगी। यवनजातिके बादशाही घरानेके अच्छे २ प्रबल पुरुष इस सिक्खजातिसे दबकर दिन बिताने लगे । यवन सम्राटोंके राज्यवैभवका तेज प्रातःकालके तारागणकी तरह प्रतिक्षण फीका दीखने लगा । विश्वविजयी अंगरेज वार यदि थोडेही काल पीछे इस हिन्दोस्थानदेशपर न आक्रमण करते तो आशा की जातिथी कि आसमुद्रदेशमात्रमें सिक्खजातिके सिवाय या सिक्ख महाराष्ट्र दोनों जातिके सिवाय तीसरेकी दमा मारनेकी जगा न रहती परन्तु परमपिता परमेश्वरको यह वार्त्ता मंजूर न थी। उसको सदुद्योगशाली ब्रिटिश जातिके प्रति इस देशके वैभवका अप्रतिम सुख अनुभवकरवानाही सर्वथा इष्ट था । इसलिये सिक्खों तथा महाराष्ट्रद्वारा मुसल्मानोंकी प्रबलसत्ताका विनाश करके पीछे अनायासही ब्रिटिश वीरोंको इस देशके अधिपति बनादिया । परमपिता परमेश्वरने ब्रिटिशजातिको हमारे देशके अधिपति योग्यतासे बिना बनाया या अनुचित किया ऐसा मानना महाभूल तथा मूढता है, क्योंकि परमात्मा न्यायकारी तथा सदुद्योगी है । उसका सदुद्योग इस जीवके सम्यक् उद्योगका सहकारी होता है । तथा असम्यक् उद्योगका विरोधी होता है । उसमेंभी परमेश्वरका सदुद्योग सर्वतो महान् है । इसलिये वह सर्वथा जीवके सर्वत उत्कृष्ट सम्यक् उद्योगहीका सहकारी होता है अन्यथा नहीं होता वर्तमानकालमें सर्वत उत्कृष्ट तथा सम्यक् प्रयत्न ब्रिटिशजातिके वीर पुरुषोंका है । ऐसे उद्योगके अनुकूल परमेश्वरके सदुद्योगका होना कोई आश्चर्य तथा अन्याय नहीं है ।

गर्वप्रहारी न्यायशील परमात्माने जो कुछ किया है सब उचितही

है। महाराष्ट्र तथा सिक्खजातिका समयपर सम्यक् उद्योग न होता तो आजतक यह सारा देश एकरूपसे यवनमय होता। हिन्दू या आर्य्यजातिका नाम निशानतक इस भूमण्डलमें खोजा न मिलता। परन्तु परम पूज्य पिता परमेश्वरको यह वार्ता स्वीकृत न थी। उसको आर्य्यजातिका बीज कुछ कालके लिये इस पृथ्वीपर रखनाही मंजूर था। इसलिये उसने महाराष्ट्र तथा सिक्खजातिके सम्यक् लघु उद्योगके साथ अपना महान् प्रयत्न मिलाकर यवनराज्यका उच्छेद करदिया। और आर्य्यजातिको भूमण्डलकी जातियोंसे गिरीदशामें जानकर परमन्यायशील ब्रिटिश कम्पनीको इसका संरक्षक नियत किया। अब ब्रिटिश जातिके संरक्षणकालमें आर्य्यजातिका बलात्कारसे विनाश करनेका किसीका सामर्थ्य नहीं है। परन्तु फिर भी आर्य्यजातिको अपने आचरणोंसे विनाशका सम्भव प्रतीत होता है। क्योंकि यह जाति वर्तमानमें और जातियोंकी अपेक्षा बहुतही हीन दीन तथा गिरीहुई दशामें है। जनसमुदायकी भीडमें गिराहुआ। दुर्बल पुरुष विना किसीके मारे आपसे आप मनुष्योंके पाँवके नीचे आनकर प्राण त्याग देता है। उसी जनसमुदायमें अनेक दयालु पुरुषोंका पाँवभी उस दुर्बलपर विवश पडजाता है। उसीसे वह प्राणरहित होजाता है। ऐसी दशामें जनसमुदायमें कोई अपराधी नहीं कहा जाता। क्योंकि किसीने बुद्धिपूर्वक इस अपराधको नहीं किया है किन्तु अनेकजन समुदायकी भीडमें विवश होकर हुआ है। इसलिये ऐसे स्थलमें उस दुर्बलके मरणका मुख्य कारण एक केवल उसकी दुर्बलता है। ऐन यही दशा इस आर्य्यजातिकी है। हरएक तरहसे प्रबल जातियोंके समुदायके संघट्टमें पडी है। तथा प्रतिक्षण पाँवके नीचे दली मली जारही है। यद्यपि यूरोपदेशकी दयाशील कई एक जातियां इस दुर्बल जातिके संरक्षणके लिये बहुधा संकोच पूर्वक पादारोपण करतीहै तथापि जैसे जनसमुदायकी भीडमें गिरेहुए अनेक पाददलितपुरुषको विशेष शक्तिसे विना उठकर अपने प्राण बचाना कठिन होता है। वैसेही इस आर्य्य-

जातिकाभी विशेष शक्तिसे विना (जिसका कि सम्पादन करनाभी इस जातिके प्रयत्नसे अलग प्रतीत होता है) बचना दुर्घट है । बहुतसे अदूरदर्शी लोगोंका यह विचार है कि, इस परमात्माकी रचनामें किसीभी वस्तुका निर्मूल नाश नहीं होता किन्तु समय २ पर पदार्थोंका वृद्धि ह्रास अवश्य होता रहताहै । ऐसी ही हमारी आर्य्यजाती या हमारा सनातनधर्म यद्यपि वर्तमानमें दीन हीन दशाको प्राप्त हो रहे हैं । तथापि फिरभी कोई समय एक ऐसा अवश्य आवेगा जिसकालमें आर्य्यजाति तथा सनातनधर्म दोनों पूर्णरूपसे अपने उन्नतिके शिखरपर पहुँचेंगे। इत्यादि विचार मेरे मन्तव्यसे सर्वथा विपरीत हैं।

क्योंकि पदार्थ इस संसारमें दोतरहके प्रतीत होते हैं । एक प्राकृत हैं दूसरे वैकृत हैं । प्रकृतिनिर्मित पदार्थोंका नाम प्राकृत हैं । तथा मनुष्य बुद्धिकल्पित पदार्थोंका नाम वैकृत हैं उनमें पृथिवी जलादि प्राकृत हैं । तथा घटपटादि वैकृत हैं यहांपर यद्यपि पृथिवी जलादि प्राकृत पदार्थोंका निर्मूल नाश दुर्घट है । तथापि घटपटादि जो कि मनुष्यकी बुद्धिने अपने उपभोगार्थ कल्पना किये हैं । उनका उत्पत्ति विनाश तो प्रतिक्षण अनुभवसिद्ध है । अब इतने हीमें विचारशील पुरुष समझ सकता है कि, यह आर्य्यजाति या सनातन धर्म प्राकृत है या वैकृत हैं । यदि प्राकृत होंगे तो इनके विनाशकी सम्भावना नहीं है । और यदि वैकृत होंगे तो इनका संरक्षण अभावप्रयुक्त विनाश अवश्य होगा । क्योंकि संरक्षक संरक्षित वैकृत पदार्थभी दीर्घकालतक स्थायी रहसकते हैं परन्तु प्राकृत पदार्थोंका यहभी एक स्वभाव है कि, यह सजातिजीवोंको समानरूपसे उपभोगसाधन होते हैं जैसे जल सबको शीत तथा अग्नि उष्णही प्रतीत होता है । अथवा जल वायु आदि प्राकृत पदार्थ प्राणिमात्रके सहकारी हैं । वैकृत पदार्थ अनुगतप्राणीमात्रके सहकारी नहीं होते । एवं आर्य्यजाति या सनातधर्म यावत् प्राणिमात्रमें अनुगत नहीं है । इसलिये यह दोनों प्राकृत नहीं हैं । किन्तु वैकृत हैं । वैकृतपदार्थका प्रवलशक्तिमत् पदार्थके योगसे अथवा संरक्षकके अभावसे विनाश अनु-

भव सिद्ध है। वर्तमानमें आर्य्यजातिपर या सनातनधर्म उक्त दोनों तरहके कारण उपस्थित हैं। इसलिये इनका बना रहना असंभव सांप्रतीत होता है। क्योंकि जातिके संरक्षक प्रायः नीतिनिपुण पुरुष होते हैं तथा धर्मके संरक्षक धर्मगुरुलोग होते हैं। वर्तमानमें नीतिनिपुण वकील बारिस्टर लोग हैं। तथा धर्म गुरु संप्रदायी आचार्य लोग हैं। इन दोनोंहीके आचार व्यवहारसे कोईभी लिखा पढा पुरुष अनभिज्ञ नहीं है इसलिये मेरेको अधिक विवरण करनेकी आव-श्यकता नहीं है धर्मगुरुलोग जबतक गुरुतेगबहादुरजीकी तरह या गुरुगोविन्दसिंहजीकी तरह धर्मपर प्राण अर्पण करनेवाले या धर्मपर सर्वस्वार्पण करनेवाले न होंगे तबतक धर्मका स्थायी रहना कठिन है। एवं नीतिनिपुण लोगभी यदि नीच स्वार्थको छोडकर स्वजातिकी रक्षामें तत्पर न होंगे तो आर्य्यजातिका स्थायी रहना भी दुर्घट है। अब मैं इस अकाण्डताण्डवलेखको समाप्त करता हुआ सर्वान्तर्यामी परमात्माके आगे वारंवार यही प्रार्थना करताहूँ कि हे दयामय हे परमात्मन् यदि आपको यह अनाथ आर्य्यजाति इस भूमण्डलपर कुछ काल स्थायी रखनी अभीष्ट है तो आप इस जातिको सुबुद्धिप्रदान कीजिये। तथा इस देशके धर्माचार्य्यलोगोंकी कुछ दिनके लिये देशान्तरमें तबदीली कर दीजिये। यह मेरी प्रार्थना अतिसरल हृदयसे है। इसलिये मैं आशा करता हूं कि कदाचित् सुनी जावेगी।

इति द्विसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७२ ॥

इति गुरुखालसा समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
कल्याण-मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस.
खेतवाडी-मुम्बई.

ॐ सद्गुरुप्रसाद.

नानकविनय।

(भजन.)

गौडी महला ९

साधो मनका मान तियागऊ काम क्रोध संगत दुरजनकी ताते अहनिसि भागऊ ॥१॥ रहाऊ॥ सुख दुख दोनों सम करि जानै और मान अपमाना। हरख सोग तेरहै अतीता तिन जगत तु पछाना॥१॥ उसतति निन्दा दोऊ तियागै खोजै पद निर्वाना। जन नानक यह खेल कठिन है किनहूँ गुरुमुख जाना ॥ २ ॥ १ ॥

गौडी महला ९

साधो रचना राम बनाई। इक विनसै इक असथिर मानै अचरज लखिउ न जाई ॥ १ ॥ रहाऊ ॥ काम क्रोध मोह बसि प्रानी हरि-मूरति बिसराई। झूठा तन साचा करि मानिउ जिउं सुपना रैनाई।१॥ जा दीसै सो सकल बिनाशै ज्यों बादरकी छाई। जन नानक जग जानिउ मिथिया रहिउ राम सरनाई ॥ २ ॥ २ ॥

गौडी महला ९

प्रानी कउ हरिजस मन नहिं आवै। अहनिस मग्न रहै माया मैं कहु कैसे गुन गावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूत प्रीत माया ममता शिव यह विधि आप बँधावै ॥ मृगतृष्णा जिउं झूठो यह जग देख तास उठ धावै ॥ १ ॥ भुगति मुकतिका कारन स्वामी मूढ ताहि बिसरावै ॥ जन नानक कोटन मैं कोउ भजन रामको पावै ॥ २ ॥ ३ ॥

गौडी महला ९

साधो यहु मन गहिउ न जाई। चंचल तृष्णा संग बसतु है याते थिर न रहाई ॥ रहाउ ॥ कठिन क्रोध घटहीके भीतर जिह सुधि

सब बिसराई । रतन ज्ञान सबको हर लीना तासिउ कछु न बसाई ॥ १ ॥ जोगी जतन करत सब हारि गुनी रहे गुनगाई । जन नानक हरि भए दयाला तउ सब विधि बनिआई ॥ २ ॥ ४ ॥

गौडी महला ९

साधो गोबिंदके गुन गावउ । मानस जनम अमोलक पायो बिरथा काहि गँमावउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पतित पुनीत दीनबन्धु हरि सरनि ताहि तुम आवउ । गजको त्रास मिट्यो जिह सुमिरत तुम काहे बिसरावउ ॥ १ ॥ तजि अभिमान मोह माया पुनि भजन राम चित लावउ । नानक कहत मुकत पंथ यह गुरुमुख होय तुम पावउ॥२॥५॥

गौडी महला ९

कोऊ माई भूलिउ मन समझावै । बेद पुरान साध मग सुन करि निमक न हरि गुन गावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुर्लभ देह पाये मानसकी बिरथा जनम सिरावै ॥ २ ॥ माया मोह महा संकट बनतासिउ रुच उपजावै ॥ १ ॥ अंतरि बाहरि सदा संग प्रभु तासिउ नेह न लावै । नानक मुकति ताहि तुम मानहु जिह घटि राम समावै ॥ २ ॥ ६ ॥

गौडी महला ९

साधो राम सरनि बिसरामा । वेद पुरान पढेको यह गुन सिमरे हरिके नामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लोभ मोह माया ममता पुनि औ बिख-अनकी सेवा । हरख शोक परसै जिह नाहनि सो मूरतहै देवा ॥ १ ॥ स्वर्ग नर्क अमृत विष ए सम तिउ कंचन अरु पैसा ॥ उसतति निंदा ये सम जाकै लोभ मोह फुन तैसा ॥ २ ॥ दुख सुख ये बांधे जिह नाहनि तिह तुम जानउ ज्ञानी । नानक मुकति ताहि तुम मानउ याहि विधिको जो प्रानी ॥ ३ ॥ ७ ॥

गौडी महला ९

मन रे कहा भयउ तै बउरा । अहानास अऊध घटै नहीं जानै भयउ लोभ सँगि हउरा ॥ १ ॥ रहाउ । जो तन तैं अपने कीर

मानिउ अर सुन्दर गृह नारी । इन मैं कछु तेरो रे नाहनि देखो सोच बिचारी ॥ १ ॥ रतन जनम अपनो तैं हारिउ गोविंद गति नहीं जानी । निमख न लोन भयउ चरनन सिउ बिरथा अउध सिरानी ॥ २ ॥ कहु नानक सोई नर सुखिया राम नाम गुन गावै । और सकल जगु माया मोहिया निरभै पदु नहीं पावै ॥ ३ ॥ ८ ॥

गौडी महला ९

नरु अचेत पाप ते डर रे । दीनदयाल सकल भै भंजन सरन ताहि तुम पर रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद पुरान जास गुन गावत ताको नाम हीएँ मो धरुरे । पावन नाम जगत मैं हरिको सिमरि कसमल सभ हर रे ॥ १ ॥ मानस देह बहुर नह पावै कछु उपाव मुकतका कर रे । नानक कहत गाय करुनामै भवसागरके पारि उतर रे ॥ २ ॥ ९ ॥

राग आसामहला ९

ॐ सतिगुरु प्रसादि ॥ बिरथा कहउ कउन सिउ मनकी । लोभ ग्रसिउ दसहू दिस धावत आसा लागिउ धनकी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुख के हेतु बहुत दुख पावत सेव करत जन जनकी । दुआरहि दुआरि सुआन जिवो डोलत नहसुध राम भजन की ॥ १ ॥ मानस जनम अकारथ खोवत लाज न लोक हसन की । नानक हरि जस किओं नहीं गावत कुमति बिनासै तनकी ॥ २ ॥ १ ॥ १० ॥

देवगंधारी महला ९

ॐ सति गुरु प्रसादि ॥ यह मन नैक न कह्यो करै । सीख सीखाई रह्यो अपनी सी दुरमति ते न टरै ॥१॥ रहाउ ॥ मद मायाके भयो बावरो हरि जसु नहिं उचरै ॥ करि परपंचु जगत कव डहकै अपनो उदर भरै ॥ १ ॥ सुआन पूछ जियो होये न सूधो कह्यो न कान धरै ॥ कहु नानक भजु राम नाम निति जाते काजु सरै ॥ २ ॥ ॥ १ ॥ ११ ॥

देवगंधारी महला ९

सभ किछु जीवत को बिवहार । मात पिता भाई सुत बंधव अरु पुन गृहकी नार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनते प्रान होत जब न्यारे टेरत प्रेत पुकार ॥ आध घरी कोऊ नहिं राखै घरते देत निकार ॥ १ ॥ मृग तृष्णा जिव जग रचना यह देखहु हृदै बिचार ॥कहु नानक भजु राम नाम नित जाते होत उधार ॥ २ ॥ २ ॥ १२ ॥

देवगन्धारी महला ९

जगत मैं झूठी देखी प्रीत ॥ अपनेही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरौ मेरौ सभै कहत हैं हित सिउ बांध्यो चीत ॥ अन्तकाल संगी नह कोउ यह अचरज है रीत ॥ १॥ मन मूरख अजहू नहिं समझत सिख दै हारिउ नीत ॥ नानक भवजल पार परै जउ गावै प्रभुके गीत ॥ २ ॥ ३ ॥ १३ ॥

राग बिहागडा महला ९

ॐ सतगुरु प्रसादि ॥ हरकी गति नहिं कोऊ जानै ॥ जोगी जती तपी पचिहारे अरु बहु लोग सिआने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खिन मह राव रंक कउ करई राव रंक करडारे ॥ रीते भरे भरे सखनावै यह ताको बिवहारे ॥ १ ॥ अपनी माया आप पसारी आपहि देखनहारा ॥नाना रूप धरे बहु रंगी सबते रहै निआरा ॥ २ ॥ अगनत अपार अलख निरंजन जिह सभ जग भरमायो ॥ सगल भरम तज नानक प्राणी चरण ताहि चित लायो ॥ ३ ॥ १ ॥ १४ ॥

सोरठ महला ९

ॐ सतगुरु प्रसादि ॥ रे मन राम सिउ कर प्रीत ॥ श्रवण गोविन्द गुन सुनउ अरु गावो रसना प्रीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कर साधु संगत सिमर माधो होह पतित पुनीत ॥ काल बिआल जिउ परिउ डोलै मुख पसारे मीत ॥ १ ॥ आज काल पुन तोहि ग्रासिहैं समझ राखो चीत॥कहै नानक राम भजिले जात अवसर बीत ॥२॥१॥१५॥

सोरठ महला ९

मनकी मनही माहि रही ॥ना हरि भजेवो न तीरथ सेये चोटी काल गहीं ॥ १ ॥रहाउ॥ दारा मीत पूत रथ सम्पत धन पूरन सब मही॥ अवर सकल मिथ्या ये जानउ भजन राम को सही॥१॥फिरत फिरत बहुते युग हारिउ मानस देह लही ॥ नानक कहत मिलनकी बरीआ सिमरत कहां नहीं ॥ २ ॥ २ ॥ १६ ॥

सोरठ महला ९

मनरे कवन कुमत तैं लीनी । परदारा निंदा रसरचित राम भगति नहिं कीनी । १ ॥ रहाउ ॥ मुकत पंथ जानिब तै नाहिन धन जोरन कउ धाया । अन्त संग काहू नहीं दीना बिरथा आप बँधाया ॥ १ ॥ ना हरि भजिउ न गुरुजन सेवउ नहिं उपजिउ कछु ज्ञाना । घटही माहिं निरंजन तेरे तै खोजत उद्याना ॥ २ ॥ बहुत जनम भरमत तैं हारिउ असथिर मत नहीं पाई । मानस देह पाये पद हरि भजु नानक बात बताई ॥ २ ॥ ३ ॥ १७

सोरठ महला ९

मनै रे प्रभुकी सरन बिचारी । जिन्ह सिमरत गनकासी उधरी ताको जश उरधारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अटल भयो ध्रुव जाके सिमरन अरु निरभै पद पाया । दुख हरता यह विधिकी सुआमी तै काहे बिसराया । जबही सरन गही किरपानिध गज गराहते छूटा । महिमा नाम कहां लउ बरनौ राम कहत बन्धन तिह तूटा ॥ २ ॥ अजामिल पापी जग जानै निमख माहि निस्तारा । नानक कहत चेत चितामन तैंभी उतरहि पारा ॥ ३ ॥ ४ ॥ १८ ॥

सोरठ महला ९

प्रानी कउन उपाय करे ॥ जाते भगति रामकी पावै जमको त्रास-हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कउन करम विद्या कहु कैसी धरम कओन फुन करई । कओन नाम गुरु जाकै सिमरै भवसागर कउ तरई ॥ २ ॥

कल मैं एक नाम किरपानिधि जाहि जपै गति पावै । और धरम ताके समनाहना यह विध वेद वतावै ॥ ३ ॥ सुख दुख रहित सदा निरलेपी जाकउ कहत गुसांई । सो तुमही मैं बसै निरंतर नानक दरपन निआई ॥ ४ ॥ ५ ॥ ११ ॥

सोरठ महला ९

माई मैं किहि विधि लखउ गुसाई ॥ महामोह अज्ञानि तिमर मो मन रह्यो उरझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल जनम भरमही भरम खोयो नहिं अस्थिर मत पाई ॥ बिखिआ सकत रह्यो निसिबासर नहि छूटी अधमाई ॥ २ ॥ साधु संग कबहूं नहीं कीना नाहिं कीरत प्रभु गाई ॥ जन नानक मैं नाहिं कोऊ गुन राखि लेहु सरनाई ॥ ३ ॥ ६ ॥ २० ॥

सोरठ महला ९

माई मन मेरो बसु नाहि ॥ निसिवासर बिखियन कउ धावत किह विधि रोकउ ताहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वेद पुरान सिमरतके मत सुनि निमख न हिए बसावै ॥ पर धन पर दारा सिउ रच्यो बिरथा जनम सिरावै ॥ २ ॥ मद मायाके भयो बावरो सूझत नहिं कछु ज्ञाना ॥ घटही भीतर वसत निरंजन ताको मरम न जाना ॥ ३ ॥ अबही सरन साधुकी आयो दुरमति सगल बिनासी ॥ तब नानक चेत्यो चिंतामन काटी जमकी फांसी ॥ ४ ॥ ७ ॥ २१ ॥

सोरठ महला ९

रे नर यह साची जीअ धारि ॥ सकल जगत है जैसे सुपना बिनसत लगत न वारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बारू भीत बनाई रचि पचि रहत नहीं दिन चार ॥ तैसेही यह सुख माया के उरझो यो कहा गँवार ॥ १ ॥ अजहु समझ कछु बिगयो नाहिन भजिले नाम मुरारि ॥ कहु नानक निज मत साधन कउ भाखिउ तोहि पुकारि ॥ २ ॥ ८ ॥ २२

सोरठ महला ९

यह जग मीत न देख्यो कोई ॥ सकल जगत अपने सुखि लाग्यो

दुख मैं संग न होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दारा मीत पूत सम्बन्धी सगर धन सिउ लागे ॥ जबही निर्धन देख्यो नरकौ संग छाँड सभ भागे ॥ १ ॥ कहौ कहां यआ मन बौरे कउ इनसिउ नेह लगायो ॥ दीना-नाथ सकल भै भंजन जस ताको बिसरायो ॥ २ ॥ सुआन पूछ जिउ भयो न सूधौ बहुत जतन मैं कीनो ॥ नानक लाज बिरदकी राखहु नाम तुहारौ लीनो ॥ ३ ॥ ९ ॥ २३ ॥

सोरठ महला ९

मनरे गह्यो न गुरु उपदेश । कहां भयो जउ मूँड मुँडायो भगवउ कीनो भेस ॥१॥ रहाउ । साँच छाडिकै झूठहि लागिउ जनम अकारथ खोयो ॥ कारि परपंच उदर निज पोख्यो पसुकी न्याई सोयो ॥ १ ॥ राम भजनकी गति नहीं जानी माया हाथ विकाना ॥ उरझ रह्यो बिखिअन सङ्ग बउरा नाम रतन बिसराना ॥ २ ॥ रह्यो अचेति न चेत्यो गोविन्द बिरथा अउध सिरानी ॥ कहु नानक हरि बिरद पिछा-नो भूले सदा प्रानी ३ ॥ १० ॥ २४ ॥

सोरठ महला ९

जो नर दुखमें दुख नहीं मानै ॥ सुख सनेह अरु भै नहीं जाके कंचन माटी मानै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नह निन्दिया नह उस्तति जाके लोभ मोह अभिमाना । हरख सोकते रहै नियारउ नाहि मान अप-माना ॥ १ ॥ आसा मनसा सगल तिआगै जगते रहै निरासा ॥ काम क्रोध जिह परसै नहानि तिह घटि ब्रहम निवासी ॥ २ ॥ गुरु किर-पा जिह नर कउ कीनी तिह यह जुगति पछानी । नानक लीन भयो गोविंदा सिउ जिउ पानी संग पानी ॥ ३ ॥ ११ ॥ २५ ॥

सोरठ महला ९

प्रीतम जानि लेहु मन माहीं ॥ अपने सुख सिउही सब जग फांधे उको काहूको नाहीं ॥ १॥ रहाउ ॥ सुखमें आनि बहुत मिल बैठत

रहत चहूं दिशि घेरे । बिपति परी सबही संग छाँडति कोउ न आवत नेरै ॥ १ ॥ घरकी नारि बहुत हित जासिउ सदा रहत संग लागी । जबही हंस तजी यह काया प्रेत प्रेत कर भागी ॥ २ ॥ यह विधिको बिउहार बनिऊ है जासिउ नेह लगायो । अंतवार नानक बिनु हरिजी कोऊ काम न आयो ॥ ३ ॥ १२ ॥ २६ ॥

धनासरी महला ९

ॐ सतिगुरु प्रसादि ।

काहेरे बन खोजन जाई । सरब निवासी सदा अलेपा तोही संग समाई ॥ १ ॥ रहाऊ ॥ पुहप मध जिउ बास बसतु है मुकर माहि जैसे छाई तैसेही हरि बसे निरन्तर घटही खोजहु भाई ॥ १ ॥ बाहर भीतर जानहु यह गुरु ज्ञान बताई जन नानक बिन आपा चीनै मिटै न भ्रमकी काई ॥ २ ॥ १ ॥ २७ ॥

धनासरी महला ९

साधो यह जग भरम भुलाना राम नामका सिमरन छोडिया माया हाथ विकाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता भाई सुत बनिता ताकै रस लपटाना ॥ जोबन धन प्रभुता कै मद मैं अहि निसि रहै दिवाना ॥ १ ॥ दीन दयाल सदा दुख भंजन तासिउ मन न लगाना । जन नानक कोटन मैं किनहू गुरुमुखि होए पछाना ॥ २ ॥ २ ॥ २८ ॥

धनासरी महला ९

तिह जोगी कउ जुगति न जानउ । लोभ मोह माया ममता पुनि जिह घटि माहि पछानउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पर निन्दा उसतति नहिं जाकै कंचन लोह समानो । हरख सोकते रहै अतिता जोगी ताहि बखानो ॥ १ ॥ चंचल मन दह दिस को धावत अचल जाहि ठहरानो ॥ १ ॥ कहु नानक यह विधिको जो नर मुकति ताहि तुम मानो ॥ २ ॥ ३ ॥ २९ ॥

धनासरी महला ९

अब मैं कउन उपाय करउ । जिहि विधि मनको संसा चूकै भवनिधि पार परउ ॥ १ ॥ रहाउ । जनम पाए कछु भलो न कीनो ताते अधिक डरउ । मन बच क्रम हरि गुन नहीं गाए यह जीअ साच धरउ ॥ १ ॥ गुरुमति सुन कछु ज्ञान न उपजिउ पशु जिउ ऊदर भरउ । कहु नानक प्रभु बिरद पछानउ तब हो पतित तरउ ॥ २ ॥ ॥ ४ ॥ ३० ॥

जैतसरी महला ९

ॐ सतिगुरुप्रसादि ।

भूल्यो मन माया उरझायो । जो जो करम कीओ लालच लगि तिहि तिहि आप बंधायो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ समुझ न परी बिखै रस रचिउ जस हरिको बिसरायो । संग सुआमी सो जान्यो नाहिन बन खोजनको धायो ॥ १ ॥ रतन राम घटही के भीतरि ताको ज्ञान न पायो ॥ जन नानक भगवंत भजन बिनु बिरथा जनम गँवायो ॥ २ ॥ १ ॥ ३१ ॥

जैतसरी महला ९

हरि जू राखि लेहु पति मेरी । जमको त्रास भयो उर अन्तर सरन गही किरपानिधि तेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा पतित मुगध लोभी पुनि करत पाप अब हारा ॥ भै मरिबे को बिसरत नाहिन तिह चिन्ता तनु जारा ॥ किए उपाय मुकतिके कारण दह दिसको उठि धाया । घटही भीतरि बसै निरंजन ताको मरम न पाया ॥ २ ॥ नाहनि गुन नाहिन कछु जप तप कौन करम अब कीजै ॥ नानक हारि परिउ सरनागति अभै दान प्रभु दीज ॥ २ ॥ २ ॥ ३२ ॥

जैतसरी महला ९

मन रे साचा गहो बिचारा । राम नाम बिनु मिथ्या मानो सगरो

यह संसारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाको जोगी खोजत हारे पायो नाहिं तिहि पारा—सो सु आमी तुम निकट पछानो रूप रेख ते निआरा ॥ १ ॥ पावन नाम जगत मैं हरिको कबहूँ नाहिं सँभारा । नानक सरनि परचो जग वंदन राखहु बिरद तुम्हारा ॥ २ ॥ ३ ॥ ३३ ॥

टोडी महला ९

ॐ सतिगुरु प्रसादि ।

कहौ कहा अपनी अधमाई ॥ उरझ्यो कनक कामनीके रस नहिं कीरत प्रभु गाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगु झूठेको साच जानिकै तासिउ रुच उपजाई ॥ दीन बंधु सिमरचो नहिं कबहूँ होत जु सङ्ग सहाई ॥ १ ॥ मगन रह्यो माया मैं निसदिन छुटी न मनकी काई । कहि नानक अब नाहिं अनत गति बिनु हरिकी सरनाई ॥ २ ॥१॥ ३४॥

तिलंग महला ९

ॐ सतिगुरु प्रसादि ।

चेतना है तौ चेतले निसदिन मैं प्रानी । छिन छिन अवध बिहातु है फूटै घटि ज्यों पानी ॥ १॥ हरि गुन काहि न गावही मूरख अग्याना झूठे लालचि लागिकै नहिं मरनु पछाना ॥ १ ॥ अजहू कछु बिगरचो नहीं जो प्रभु गुन गावै । कहु नानक तिह भजनते निरभै पदु पावै ॥ २ ॥ १ ॥ ३५ ॥

तिलंग महला ९

जागि लेहुरे मना जागि लेहु कहा गाफल सोया । जो तनु उपजिआ सङ्गही सोभी सङ्ग न होया ॥ १॥ रहाउ ॥ मात पिता सुत बंध जन हितु जासिउ कीना ॥ जीव छटचो जब देहते डार अगनि मै दीना ॥ १ ॥ जीवत लौ बिवहारि है जगको तुम जानौ ॥ नानक हरि गुन गाएले सब सुपन समानौ ॥ २ ॥ २ ॥ ३६ ॥

तिलंग महला ९

हरि जस रे मना गाएलै जो संगी है तेरो। औसर बीत्यो जातु है कह्यो मानलै मेरो॥ १॥ रहाउ॥ संपत रथ धन राज सिउ अति नेह लगायो॥ कालफाँस जब गल परी सब भयो परायो॥ १॥ जान बूझके बावरे तैं काज बिगारेउ। पाप करत सुकचेउ नहीं नह गरब निवारिउ॥ २॥ जिह बिधि गुरु उपदेस्या सो सुनरे भाई। नानक कहत पुकारके गहु प्रभु सरनाई॥ ३॥ ३७॥

बिलावल महला ९

दोपदे

ॐ सतिगुरु प्रसादि।

दुख-हरता हरिनाम पछानो। अजामल गनका जिह सिमरत मुकत भए जिय जानो॥ १॥ रहाउ॥ गजकी त्रास मिटी छिनहू महा जबही राम बखानो। नारद कहत सुनत ध्रुव बारिक भजन माहि लपटानो। अचल अमर निरभै पद पायो जगत जाहि हैरानो। नानक कहत भगत रच्छक हरि निकट ताहि तुम मानो॥ २॥ १॥ ३८॥

बिलावल महला ९

हरिके नाम बिना दुख पावै। भगत बिना सहसा नह चूकै गुरु यह भेद बतावै॥१॥ रहाउ॥ कहा भयो तीरथ ब्रत कीये राम सरन नाहिं आवै। जोग जग निफल तिह मानो जो प्रभु जस बिसरावै॥१॥ मान मोह दोनों कउ कहु परहरि गोबिंदके गुन गावै। कहु नानक यह बिधिको प्रानी जीवन मुकत कहावै॥ २॥ २॥ ३९॥

बिलावल महला ९

जामै भजन रामको नाहीं। तिह नर जनम अकारथ खोया यह राखहु मन माहीं॥ १॥ रहाउ॥ तीरथ करै बरत फुन राखे नह

मनुआ बस जाको । निहफल धरम ताही तुम मानो साच कहत मैं याकउ ॥ १ ॥ जैसे पाहन जल महि राख्यो भेदै नाहि तिह पानी । तैसेही तुम ताहि पछानो भगति हीन जो प्रानी ॥ २ ॥ कलमैं मुकति नामते पावत गुरु यह भेद बतावे । कहु नानक सोई नर गरूआ जो प्रभुके गुन गावै ॥ २ ॥ ३ ॥ ४० ॥

रामकली महला ९

ॐ सतिगुरु प्रसादि ।

रे मन उठ लेहु हरिनामा । जाकै सिमरनि दुरमत नासै पावै पद निरबाना ॥ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बडभागी तिह जन को जानौ जो हरिके गुन गावै । जनम जनमके पाप खोयकै फुन बैकुण्ठ सिधावै ॥ १ ॥ अजामलकौ अंतिकालमैं नारायन सुध आई ॥ जागतिकौ जोगी सुर बाछत सो गति छिनमह पाई ॥ २ ॥ नाहिन गुन ना न हिन कछु विद्या धरम कौन गज कीना ॥ नानक बिरद रामका देखहु अभै दान तिह दीना ॥ ३ ॥ १ ॥ ४१ ॥

रामकली महला ९

साधो कौन जुगत अब कीजै । जाते दुरमत सगल बिनासै राम भगति मन भीजै ॥ १ ॥ रहाउ । मन मायामै उरझि रह्यो है बूझै नह कछु ग्याना ॥ कौन नाम जग जाकै सिमरे पावै पद निरबाना ॥ १ ॥ भए दयाल कृपाल सन्त जन तब यह बात बताई । सरब धरम मानो तिह किए जिह प्रभु कीरत गाई ॥ २ ॥ राम नाम निसिबासरमै निमख एक उरधारै । जमको त्रास मिटै नानक तिह अपनो जनम सवारै ॥ ३ ॥ २ ॥ ४२ ॥

रामकली महला ९

प्रानी नारायन सुधि लेह । छिन छिन औध घटे निसिबासर वृथा जातु है देह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तरनापो बिखिअन सिउ खोयो बालपन

अज्ञाना। बिरध भयो अजहू नहीं समझै कौन कुमति उरझाना ॥ १ ॥ मानस जनम दियो जिह ठाकुर सो तैं किउ बिसरायो। कुमति होत नर जाके सिमरै निमख न ताको गायो ॥ २ ॥ मायाको मदु कहा करतु है संग न काहू जाई। नानक कहत चेत चिन्तामनि होइहै अन्त सहाई ॥ ३ ॥ ॥ ४३ ॥

मारू महला ९

ॐ सतिगुरु प्रसादि।

हरिको नाम सदा सुखदाई। जाको सिमिर अजामल उधरचो गनकाहु गति पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंचालीको राजसभामें राम नाम सुधि आई। ताको दूख हरचो करुणामैं अपनी पैज बढाई ॥ १ ॥ जिह नर जसु किरपा निधि गायो ताको भयो सहाई। कहु नानक मैं यही भरोसे गही आन सरनाई ॥ २ ॥ १ ॥ ४४ ॥

मारू महला ९

अब मैं कहा करौंरी माई। सगल जनम बिखिअन सिउ खोयो सिमरचो नाहिं कनाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कालफाँस जब गरमें मेली तिह सुधि सब बिसराई। राम नाम बिनु या संकट मैं को अब होत सहाई ॥ १ ॥ जो संपति अपनीकर मानो छिनमें भई पराई। कहु नानक यह सोच रही मन हरि यस कबहुँ न गाई ॥ २ ॥ २ ॥ ४५ ॥

मारू महला ९

माई मैं मनको मानु न तियाग्यो। मायाके मद जनम सिरायो राम भजन नहिं लाग्यौ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जमको डण्ड परचो सिर ऊपर तब सोवत तैं जाग्यो। कहा होत अबकै पछताए छूटत नाहिन भाग्यो ॥ १ ॥ यह चिन्ता उपजी घटमैं जब गुरु चरनन अनुराग्यो। सुफल जनम नानक तब हूआ जो प्रभु जसमैं पाग्यो ॥ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४६ ॥

वसंत हिंडोला महला ९

ॐ सतिगुरुप्रसादि ।

साधो यह तनु मिथ्या जानौ । या भीतर जो राम बसतु है साचा ताहि पछानो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ यह जग है संपति सुपनेकी देखि कहा ऐडानी । संग तिहारै कछू न चाले ताहि कहा लपटानो ॥ १ ॥ उसतति निन्दा दोउ परहर हरि कीरत उर आनो । जन नानक सबही मैं पूरन एक पुरख भगवानो ॥ २ ॥ १ ॥ ४७ ॥

वसंत महला ९

पापी हीऐ मै काम बसाये । मनु चंचल याति गह्यो न जाये ॥ १ ॥ जोगी जंगम अरु संन्यास । सबही परि डारी यह फास ॥ १ ॥ जिह जिह हरि को नाम समारि । ते भउसागर उतरे पारि ॥ २ ॥ जन नानक हरकी सरनाये । दीजै नाम रहै गुन गाये ॥ ३ ॥ ॥ २ ॥ ४८ ॥

वसंत महला ९

माई मै धन पायो हरिनाम । मन मेरो धावन ते छूट्यो करि बैठौ बिसराम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माया ममता तनते भागी उपज्यो निर्मल ग्यान । लोभ मोह यह परसि न साकें गही भगति भगवान ॥ १ ॥ जनम जनमका संसा चूका रतन नाम जब पाया । त्रिसना सगल बिनासी मनते निज सुख माहि समाया ॥ २ ॥ जाको होत दयाल कृपानिधि सो गोविंद गुन गावै । कहु नानक यह बिधिकी संपै कोऊ गुरुमुख पावै ॥ ३ ॥ ३ ॥ ४९ ॥

वसंत महला ९

मन कहा बिसरचो राम नाम । तन बिनसै जम सिउ परै काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ यह जग धूँयेका पहार । तैं साचा मानिया किह बिचार ॥ १ ॥ धनु दारा संपति गेह । कछु संग न चालै समझि

नेह ॥ २ ॥ एक भगति नारायण होय संग । कहु नानक भजु तिह एक रंग ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५० ॥

वसंत महला ९

कहा भूल्यो रे झूठे लोभ लाग । कछु बिगरचो नाहिं अजहु जाग ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सम सुपनै कै यहु जग जानु । बिनसै छिनसै साची मानु । संगि तेरै हरि बसतु नीति । निसिबासर भजु ताहि मीत ॥ २ ॥ बार अन्तकी होय सहाय । कहु नानक गुन ताके गाय ॥ ३ ॥ ५ ॥ ५१ ॥

राग सारङ्ग महला ९

ॐ सतिगुरुप्रसादि ।

हरि बिन तेरो कौन सहाई । काकी मात पिता सुत बनिता को काहूको भाई ॥१॥ रहाउ ॥ धन धरनी अरु संपति सगरो जो मान्यो अपनाई । तन छूटै कछु संग न चालै कहा ताहि लपटाई ॥ १ ॥ दीन दयाल सदा दुख भंजन तासिउ रुच न बढाई । नानक कहत जगत सब मिथ्या जिउ सुपना रैनाई ॥ २ ॥ १ ॥ ५२ ॥

सारङ्ग महला ९

कहा मन बिख्या सिउ लपटाही । या जगमैं कोऊ रहन न पावै एक आवै एक जाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काको तन धन संपति काकी कासिउ नेह लगाही । जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादरकी छाही ॥ १ ॥ तजि अभिमान सरणी सन्तन गहु मुकति होहि छिन माहीं । जन नानक भगवन्त भजन बिनि सुख सुपनै भी नाहीं ॥ २ ॥ ॥ २ ॥ ५३ ॥

सारङ्ग महला ९

कहा नर अपनो जनम गमावै । माया मदि बिखा रसि रच्यो राम सरनि नहीं आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ यहु संसार सगल है सुपनो देख

कहा लोभावै । जो उपजै सो सकल बिनासे रहनु न कोऊ पावै ॥ १ ॥ मिथ्या तनु साँचो कर मान्यो यह बिधि आप बँधावै । जन नानक सोऊ जग मुकता राम भजन चित लावै ॥ २ ॥ ३ ॥५४ ॥

सारङ्ग महला ९

मन कर कबहूँ न हरि गुन गायो । बिख्या सकति रह्यो निसिबासर कीनो अपनो भायो ॥ १॥ रहाउ ॥ गुरु उपदेश सुन्यो नहिं कानन पर दारा लपटायो । पर निन्दा कारन बहु धावत समझ्यो नहिं समझायो ॥१ ॥ कहा कहौ मैं अपनी करनी जिहि बिधि जनम गँवायो । कहि नानक सब औगन मों में राखि लेहु सरनायो ॥ २॥४॥५५ ॥

१ ॐ सति-नाम करता-पुरख निर-भउ निर-वैर
अकल मूरति आजूनी सैभं गुरु प्रसादि ॥

राग जैजैवंती महला ९

राम सिमर राम सिमर यहै तेरै काजि है । मायाका संग त्याग प्रभुजीकी सरनि लाग जगत सुखमान मिथ्या झूठी सभ साजु है॥१॥ रहाउ ॥ सुपने जिउ धनु पछानु काहे पर करत मानु बारूकी भीत जैसे बसुधाको राजु है ॥ १॥ नानक जन कहत बिनासि जैहै जैहै तेरो गात छिन छिन करि गयो काल तैसे जातु आजु है ॥ २ ॥१॥५६॥

राग जैजैवंती महला ९

राम भजु राम भजु जनम सिरातु है । कहौ कहा बार बार समझत नहिं क्यों गँवार बिनसत नहिं लगै बार उरे सम गातु है॥१॥रहाउ । सगल भरम डार देहु गोविन्दको नाम लेहु अंतिबार संग तेरे यहै एकजात है ॥ १॥ बिख्या बिख ज्यों बिसरा प्रभुको जस हीय धार नानक जन कहि पुकार औसर बिहातु है ॥ २ ॥ २ ॥ ५७ ॥

जैजैवंती महला ९

रे मन कौन गति हुई है तेरी । यह जगमैं राम नाम सो तउ नहीं सुन्यों कान बिखियन सिउ आति लुभान मति नाहडु फेरी ॥ १ ॥

रहाउ ॥ मानसको जनम लीन सिमरन नह निमख कीन दारा सुख भयों दीन पगहु परी बेरी ॥ १ ॥ नानक जन कहि पुकार सुपनै जिउ जग पसार सिमरत नहिं क्यों मुरारि माया जाकी चेरी ॥ २ ॥ ३ ॥ ५८ ॥

जैजैवंती महला ९

बीत जैहै बीत जैहै जनम अकाज रे । निसदिन सुनकै पुरा समझत नाहिं रे अजान काल तो पहुँच्यो आनि कहां जैहै भाजि रे ॥ १ ॥ रहाउ॥ असथिर जो मान्यो देह सो तौ तेरो हुइहै खेह क्योंन हरिको नाम लेहु मूरख निलाज रे ॥ १ ॥ राम भगति हीए आन छाँडिदे तैं मनको मान नानक जन यह बखान जग मैं बिराज रे ॥ २ ॥ ॥ ४ ॥ ५९ ॥

सलोक महला ९

१ ॐ सतिगुरुप्रसादि ।

गुन गोविन्द गायो नहीं जनम अकारथ कीन । कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जलको मीन ॥ १ ॥ बिखिअन सिउ काहे रच्यो निमख न होहि उदास । कहु नानक भजु हरि मना परै न जमकी फाँस ॥ २ ॥ तरनापो योंही गयो लीउ जरा तन जीत । कहु नानक भजु हरि मना औध जात है बीत ॥ ३ ॥ बिरध भयो सूझै नहीं काल पहूँच्यो आन । कहु नानक नर बावरे क्यों न भजै भगवान ॥ ४ ॥ धनु दारा संपति सकल जिन अपनो करि मान । इनमैं कछु सङ्गी नहिं नानक साँचौ जान ॥ ५ ॥ पतित उधारन भै हरन हरि अनाथके नाथ । कहु नानक तिह जानिऐ सदा बसतु तुमसाथ ॥ ६ ॥ तनु धनु जिह तोकौ दियो तासिउ नेह न कीन । कहु नानक नर बावरे अब क्यों डोलत दीन ॥ ७ ॥ तन धन संपै सुख दियो अरु जिह नीके धाम । कहु नानक सुन

रे मना सिमरत काहि न राम ॥ ८ ॥ सब सुख दाता राम है दूसरै नाहिन कोए। कहु नानक सुनरे मना तिह सिमरत गति होए ॥ ॥ ९ ॥ जिह सिमरत गति पायै तिह भजु रे तैं मीत । कहु नानक सुन रे मना औध घटत है तीन ॥ १० ॥ पांच तंतुको तन रच्यो जानहु चतुर सुजान। जिहते उपज्या नानका लीन ताहि मैं मान ॥ ११॥ घट घट मैं हरजु बसै सन्तन कह्यो पुकार । कहु नानक तिह जजु जभु मना भौ निधि उतराहि पार ॥ १२ ॥ सुख दुख जिह परसै नहिं लोभ मोह अभिमान। कहु नानक सुन रे मना सो मूरति भग-वान ॥ १३ ॥ उसतति निंद्या नाहिं जिह कञ्चन लोह समान। कहु नामक सुन रे मना मुकाति ताहि तै जानि ॥ १४ ॥ हरख सोग जाकै नहीं बैरी मीत समान । कहु नानक सुन रे मना मुकाति ताहि तै जानि ॥ १५ ॥ मै काहू को देत नहीं नहिं मैं मानत आनि। कहु नानक सुनरे मना ग्यानी ताहि बखानि ॥ १६ ॥ जिह बिखिआ सगलो तजी लीवो भेख बैराग। कहु नानक सुन रे मना तिह नर माथै भाग॥ १७॥जिह माया ममता तजी सभते भयो उदास। कहु नानक सुन रे मना तिह घटी ब्रह्म निवास॥ १८॥जिह प्रानी हउमें तजी करता राम पछान। कहु नानक वह मुकाति नर यह मन साँची मान१९ भै नासन दुरमति हरन कलमै मै हरिको नाम।निसदिन जो नानक भजै सफल होहि तिह काम॥२०॥जिहवा गुन गोविंद भजहु करन सुनहु हरि-नाम।कहु नानक सुन रे मना परहि न जमकै धाम ॥२१॥ जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहँकार। कहु नानक आपन तरै औरन लेत उधार ॥ २२ ॥ ज्यों सुपना अरु पेखना ऐसे जगको जानि। इनमै कछु साँचो नहीं नानक विनु भगवान ॥ २३ ॥ निस दिन माया कारने प्रानी डोलत नीत । कोटिन मै नानक कोऊ नारायन जिह चीत ॥ २४ ॥ जैसे जलते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत। जग रचना तैसे रची कहु नानक सुन मीत॥ २५ ॥ प्रानी कछु न चेतई मद मायाकै अंध। कहु नानक बिन हरि भजन परत ताहि जम फंद॥२६॥

जो सुखको चाहै सदा सरन रामकी लेह । कहु नानक सुनरे मना दुरलभ मानुख देह ॥ २७॥ माया कारनि धावही मूरख लोग अजान कहु नानक बिन हरि भजन बिरथा जनम सिरान ॥ २८॥ जो प्रानी निस दिन भजे रूप राम तिह जान। हरि जन हरि अंतरि नहीं नानक साँची मान ॥ २९ ॥ मन माया मैं फँधि रह्यो बिसरयो गोविन्द नाम । कहु । नानक बिन हरि भजन जीवन कौने काम ॥ ३० ॥ प्रानीराम न चेतई मदि मायाके अन्ध । कहु नानक हरि भजन बिन परत ताहि जम फंद ॥ ३१ ॥ सुखमें बहु संगी भये दुखमैं संग न कोए । कहु नानक हरि भजु मना अन्त सहाई होए ॥३२ ॥ जनम जनम भरमत फिरयो मिटयो न जमको त्रास । कहु नानक हरि भजु मना निरभै पावहि बास ॥ ३३ ॥ जतन बहुतैं करि रह्यो मिटयो न मनको मान । दुरमतिस्यो नानक फँध्यो राखिलेहु भगवान ॥ ३४ ॥ बाल जुवानी अरु बिरध पुनि तीन अवस्था जानि । कहु नानक हरि भजन बिन बिरथा सबही मान ॥ ३५ ॥ करणो हुतो सो ना कियो पर्‍यो लोभके फंद । नानक समयो रमि गयो अब क्यों रोअत अंध ॥ ३६ ॥ मन मायामै रम रह्यो निकसत नाहिन मीतैं । नानक मूरति चित्र ज्यों छाँडत नाहिन भीत ॥ ३७ ॥ नर चाहत कछु और औरकी औरै भई । चितवत रह्यो ठगौर नानक फाँसी गल परी ॥ ३८ ॥ जतन बहुत सुखके किये दुखको कयोन कोए । कहु नानक सुनरे मना हरि भावै सो होए ॥ ३९ ॥ जगत भिखारी फिरत है सबको दाता राम । कहु नानक मन सिमर तिहि पूरन होवहिं काम ॥ ४० ॥ झूठो मान कहा करै जग सुपने जिउ जान । इनमै कछु तेरो नहीं नानक कह्यो बखान ॥ ४१ ॥ गरब करतु है देहको बिनस छिनम मीत । जिह प्रानी हरि जस कह्यो नानक तिह जग जीत॥४२॥ जिह घट सिमरन रामको सो नर मुकता जान । तिह नर हर अंतर नाहीं नानक साचीं मान ॥ ४३ ॥ एक भगति भगवान जिंह प्रानीकै नाहि मंनु । जैसे सूकर सुआन नानक मानो ताहि तनु ॥ ४४ ॥

सुआमीको गृह जिउ सदा सुआन तजत नहीं नित्त । नानक या विधि हरि भजो एक मन होय एक चित्त ॥ ४५ ॥ तीरथ बरत अरु दान करि मनमै धरै गुमान । नानक निहफल जात तिह जिउ कुंजर इसनान ॥ ४६ ॥ सिर कंप्यो पगु डगमगै नैन जोतते हीन । कहु नानक यह विधि भई तऊ न हरि रस लीन ॥ ४७॥ निज कर देख्यो जगतमें को काहूको नाहिं । नानक थिर हरि भगति है तिह राखो मन माहिं ॥ ४८ ॥ जग रचना सब झूठ है जानि लेहु रे मीत । कहि नानक थिर ना रहै जिउ बालूकी भीत॥ ४९ ॥ राम गयो रावण गयो जाको बहु परवार । कहु नानक थिर कछु नहीं सुपने जिउ संसार ५० चिंता ताकी कीजिए जो अनहोनी होय । यह मारग संसारको नानक थिर नहीं कोय ॥ ५१ ॥ जो उपज्यो सो बिनास है परो आजुकै काल । नानक हरि गुन गाइले छाँडि सकल जञ्जाल ॥ ५२ ॥ दोहरा--बल छुटक्यो बंधन परे कछू न होत उपाय । कहु नानक अब ओट हरि गजि ज्यों होहि सहाय ॥ ५३ ॥ बल होआ बन्धन छुटे सब कछु होत उपाय । नानक सब किछ तुमरे हाथ मैं तुमही होत सहाय,। ॥ ५४ ॥ संग सखा सब तजि गये कोऊ न निबह्यो साथ । कहु नानक यह बिपतिमें टेक एक रघुनाथ॥५५॥नाम रह्यो साधू रह्यौ रह्यो गुरु गोविन्द । कहु नानक यह जगत मैं किन जप्यो गुरु मन्त॥५६॥ राम नाम उरमैं गह्यो जाकै सम नहिं कोय । जिह सिमरत संकट मिटै दरस तुम्हारो होय ॥ ५७ ॥ १ ॥ इति ॥

इति नानक विनय समाप्त।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना:-

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
कल्याण-मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
खेतवाडी-मुंबई.